श्री चैत्यवंदन स्तुति स्तवनादि संग्रह

भाग त्रीजो.

शा. हुकमाजी बालाजीनी विधवा भार्या रुपाबाई
गाम देलंदर जिल्हा सीरोही देश मारवाड तरफथी प्रत १२५

शा. खामाजी भबुतमल हस्ते लखमीबाई
गाम देलंदर जिल्ला सीरोही देश मारवाड तरफथी प्रत २५

शा. सुराजी केसरीमलजी गाम बलदूट जिल्हा
सीरोही देश मारवाड तरफथी प्रत ७५

प्रकाशक

शा. शिवनाथ लुंबाजी-जैन पुस्तकालय.
वेताळपेठ घर नंबर ३५८ पुना सिटी.

आवृत्ति बीजी   प्रत ५००

संवत १९८०   सन १९२४

किंमत बे रुपीया.

परोपकाराय सतां विभुतयः

श्री चैत्यवंदन स्तुति स्तवनादि संग्रह

भाग त्रीजो.

चतुर्विध संघने हंमेश उपयोगमां लेवा निमित्ते.

अनेक सद्ग्रहस्थो तरफथी ज्ञानखाते खर्च करवा निमित्ते तथा आ पुस्तक प्रसिद्ध करवा निमोत्ते तथा आवीज अनेक जातनी पुस्तकोना वेचाणथी आवेल द्रव्यनी सहाय वडे छपावेल छे.

साधु साध्वीने तथा जाहेर संस्थाने फक्त पोष्ट खर्च लेई भेट.

छपावी प्रसिद्ध करनार

शा. शिवनाथ लुंबाजी-जैन पुस्तकालय.

वेताळ पेठ घर नंबर ३५६ मु० पुनासिटी.

सुधारा वधारा साथे आवृत्ति बीजी प्रत ५००.

संवत १९८० वीर संवत २४५० सन १९२४ शके १८४६.

धी सूर्यप्रकाश प्रिन्टिंग प्रेसमां मूळचंदभाइ त्रीकमलाले छाप्यो. कालुपुर टकशाळ-अमदावाद

किंमत बे रुपीया.

पुस्तक भेट अथवा किंमतथी मगाववनारे पृष्ट २ उपर लखेली सूचना वांची पछी मंगाववी.

पुस्तक भेट अथवा किंमतथी मंगावनारने सूचना.

१ कोइ पण साधु साध्वीने अथवा जाहेर संस्थाने आ पुस्तकनो खप होय तो तेमने पोष्ट पेकींग खर्चना बदले आठ आनानी पोष्ट टीकीटो मोकली आपवाथी एक नकल भेट तरीके मोकलवामां आवशे. एकथी वधारे नकल भेट तरीके कोइए मंगाववी नही. तेमज वी. पी. थी पण मंगाववी नही.

२ बाकीना ग्रहस्थोए दरेक नकलना किंमतना बे रुपीआ अने पोष्ट पेकींगना आठ आना मळी अढी रुपीआनी मनिओरडर अमने मोकलवाथी पुस्तक बुक पोष्टथी मोकलवामां आवशे. वी. पी. थी मोकलवामां वांधो नथी. पण कोइ ग्रहस्थो वी. पी. मंगावीने नही स्वीकारता पाछु मोकले छे. तेथी अमारी मेहनत नकामी जाय छे अने पोष्ट पेकींग खर्च फोगट जवाथी ज्ञानखातामां नुकसान थाय छे. वास्ते वी. पी. थी मंगावनारे मंगावती वखते पोष्ट पेकींग बदले आठ आनानी टीकीटो मोकलशे तो तेमने वी. पी. थी मोकलाशे. अने तेमने दरेक नकलना किंमतना बे रुपीया अने वी. पी. रजीष्टर विगेरेना चार आना मळी सवाबे रुपीया वी. पी. लेती वखते पोष्टमां भरवा पडशे.

३ अमारो उद्देश पुस्तको वेचीने तेना लाभमां आजीवीका चलाववानो नथी. ज्ञाननो उद्धार करवा निमीत्ते कोइ भाग्य-

शालीओना द्रव्य सहायथी अमो घणा भागे शास्त्री टाइपमां पुस्तको प्रसिद्ध करी ते अमारा नियम प्रमाणे भेट अने किंमतथी आपीए छीए. अने कींमतना आवेला द्रव्यमांथी पाछा आवाज बीजा पुस्तको छपावीए छीए.

४ पुस्तक मंगावनारे पोतानु चोकस सरनामुं, नाम, गाम, पोष्ट, जील्हा विगेरे शुद्ध शास्त्री अथवा गुजराती अक्षरथी लखवुं.

५ जुवाप मंगावनारे पत्र साथे टीकीट अथवा रीपल्हाय क्याट मोकलवुं ते शिवाय जुवाप आपवामां आवशे नही.

आ पुस्तक छपावा निमीत्ते नीचे लखेला सद्ग्रहस्थो तरफथी द्रव्यनी सहाय मळी छे तेमना नामोनु लीष्ट.

---

२५० शा हकमाजी वालाजीनी विधवा भार्या चंगावाई.
गाम देलंदर जिल्हा सीरोही–देश मारवाड.

५० शा. खासाजी भबुतमल हस्ते लखमीबाई.
गाम देलंदर जिल्हा सीरोही–देश मारवाड.

१५० शा. भुराजी केसरीमलजी. गाम बलदुठ जिल्हा सीरोही देश मारवाड.

---

४५० एकंदर रूपीआ चारसो पचास.

उपर प्रमाणे साडाचारशो रुपीआनी मदद खास आ पुस्तक छपावा निमीत्तेज उपर लखेला सद्‌ग्रहस्थो तरफथी मळेली छे, ए शिवाय बीजा अनेक सद्‌ग्रहस्थोए ज्ञान खाते खर्च करवा वास्ते अमारी पासे आपेली रकम शीलक हती अने पुस्तक वेचाणनी आवेली रकम शीलक हती ते मेळवी आ पुस्तक छपावी छे.

संवत १९८०
वैशाख शुद १
रविवार.
ता. ४ मे सन १९२४

प्रसिद्ध कर्ता.
शिवनाथ लुंबाजी-जैन पुस्तकालय.
वेताळपेट घर नंबर ३५६ मु. पुनासिटी.

बीजी आवृतिनी प्रस्तावना रुपे बे बोल.

आ पुस्तकनी प्रथम आवृति एक हजार नकलनी अमारा तरफथी संवत १९७३ना वरसमां प्रगट थया पछी ते अमारा नियम प्रमाणे भेट तरीके अने कींमतथी आपता थोडाज वखतमां ते पुस्तको खलास थइ गया. आ पुस्तक खास साध्वीजी तथा श्राविकाओने विशेष उपयोगी थइ पडी छे. आ पुस्तकनी मागणीओ विषे अमारी पासे घणा पत्रो आव्या पण द्रव्यनी सहाय न मळवाथी आजसुदी बीजी आवृति छपावानो प्रसंग आव्यो नथी. छेवटे आ पुस्तकनां पृष्ट ३ मां जणाव्या प्रमाणे द्रव्यनी सहाय मळवाथी आ पुस्तकनी बीजी आवृति ५०० नकलनी प्रसिद्ध करवामां आवी छे.

छपामणीना कागळना बाइडींगना विगेरे सरवेना भाव घणाज

वधी जवाथी आ पुस्तकनी ५०० नकलना खरचनो एकंदर हीसाब गणतां एक नकल बे रुपीआथी पण वधारे कीमते पडवा जाय छे. पण तेना उपर लक्ष न देना अमारा नियम प्रमाणे साधु साध्वी अने जाहेर संस्थाने पोष्ट खरच पुरता पइशा लेइ भेट तरीके अने बीजाओने पडतर करता पण ओछी कीमते आपवानी गोठवण करी छे.

अमारो उद्देश पुस्तको प्रगट करीने स्वार्थ साधवानो अथवा तेना उपर आजीवीका चलाववानो नथी. पण हालमां पुस्तको घणा भागे गुजराती टाइपमां प्रसिद्ध थता होवाथी तेवा पुस्तकोनो मारवाड, मेवाड, पंजाब, माळवा, दक्षीण महाराष्ट्र, विगेरे देशोमां जेओ गुजराती लीपीना जाणकार न होय तेवाओने सदर पुस्तक उपयोगी थता नथी. ए कारणथी अमारा तरफथी संवत १९७० ना वरसथी शास्त्री टाइपमां पुस्तको प्रसिद्ध थवा लाग्या छे. जेम जेम द्रव्यनी सहायता मळती गइ तेम तेम वखतो वखते पुस्तको प्रसिद्ध थयेला छे अने तेमांथी केटलाक पुस्तको खलास थयेला छे.

आ पुस्तकनुं काम शरु कर्युं ते वखते एवो विचार हतो के प्रथमनी आवृतिमांनां कांइक विषयो ओछा करी तेना बदलामां बीजा नवा विषयो दाखल करवानो विचार हतो अने ते प्रमाणे काम शरु कर्युं पण पाछळथी ए विचार बदलावाथी प्रथमनी आवृतिमानां बधा विषयो आ पुस्तकमां लेइ नवा विषयोनो वधारो करतां प्रथमनी आवृति करतां १३ फारमनो एटले पृष्ट २०८ नो

वधारो आ आवृत्तिमां थयेलो छे. अने प्रथमनी आवृत्तिमां आवेला बधा विषयो आवीने आ आवृत्तिमां चैत्यवंदनो (७०) थोय-जोडा (३०) छुटी थोयो (१०) छुटा स्तवनो (९) मोटा ढालबंध स्तवनो (५) सज्झायो (२०) उपदेशकारक पदो (१०) छंदो (१०) लावणीओ (१०) तथा बीजी पण परचुरण बाबतोनो वधारो आ बीजी आवृतिमां थयेलो छे.

प्रथमनी आवृतिमां जे क्रमवार विषयो छापेला हता ते क्रमवार विषयो आ पुस्तकमां आवेला नथी. पण प्रथम आवृतिमांनां बधा विषयो छुटा छुटा ठेकागे आ पुस्तकमां आवी गया छे.

आ पूस्तकनां प्रुफो तपासवा छतां अल्प बुद्धीथी अथवा दृष्टी दोषथी अथवा प्रेस दोषथी अथवा बीजा कोइपण कारणथी अशुद्धी रही गइ होय अथवा छापतां अक्षरो उडी गया होय तो वांचनार सज्जनोए पुस्तकमांज सुधारी पछी पुस्तकनो वांचवा भणवामां उपयोग करवो. अने एवी भुलो अमने पण जणाववाथी एमनो आभार मानी त्रीजी आवृति छपावानो प्रसंग आवशे ते वखते ते प्रमाणे सुधारवामां आवशे. इतिश्रम.

संवत १९८० वीर संवत २४५० शाके १८४६. वैशाख शुद १ रविवार. तारीख ४ मे सन १९२४.

प्रसिद्ध कर्ता.
शिवनाथ लुंबाजी–जैन पुस्तकालय.
ठे. वेतालपेठ घर नंबर ३५६ मु० पुनासिटी.

विषयानुक्रमणीका.

॥ चैत्यवंदन १९५ नी अनुक्रमणीका. ॥

॥ स्तुति (थोय) जोडा १०५ नी अनुक्रमणीका ॥

॥ स्तुति (थोय) छुटी एक गाथानी ३५ नी अनुक्रमणीका ॥

॥ स्तवनो छुटा ४५ नी अनुक्रमणीका ॥

॥ स्तवनो मोटा ढाळबंध ३५ नी अनुक्रमणीका ॥

॥ सज्झायो ९५ नी अनुक्रमणीका ॥

॥ उपदेशकारक अने वैराग्यकारक पद १५ नी अनुक्रमणीका ॥

॥ छंदो १५ नी अनुक्रमणीका ॥

॥ लावणीयो १५ नी अनुक्रमणीका ॥

॥ परचुरण पद्यात्मक विषयो १५ नी अनुक्रमणीका ॥

॥ परचुरण गद्यात्मक विषयो ६नी अनुक्रमणीका ॥

एकंदर विषयः—चैत्यवंदन[१०५]ः थोय जोडा[१०५]ः छुटी थोय[३५]ः स्तवनो छुटा[४५]ः स्तवनो मोटा[३५] ढाळबंध एकंदर ढाळ २१३ः सज्झायो[६५]ः उपदेशकारक पद[१५]ः छंद[१५]ः लावणीः परचुरण पद्यात्मक[१५]विषयः परचुरणगद्यात्मय[६]विषय

ब्रह्मचर्य विषे सुभाषित (दोहरा)

निरखीने नव यौवना, लेश न विषय निदान ॥ गणे काष्टनी पूतळी, ते भगवान समान ॥ १ ॥ आ सघळा संसारनी, रमणी नायक रुप ॥ ए त्यागी त्याग्युं बधुं, केवळ शोक स्वरुप ॥ २ ॥ एक विषयने जीततां, जीत्यो सौ संसार ॥ नृपति जीततां जीतिये, दळ पुरने अधिकार ॥ ३ ॥ विषयरुप अंकूरथी, टळे ज्ञानने ध्यान ॥ लेश मदिरा पानथी, छाके जेम अज्ञान ॥ ४ ॥ जे नव वाड विशुद्धथी, धरे शियल सुख दाई ॥ भव तेनो लव पछी रहे, तत्व वचन ए भाई ॥ ५ ॥ सुंदर शीयळ सुरतरु, मन वाणी ने देह ॥ जे नर-नारी सेवशे, अनुपम फळ ते लेह ॥ ६ ॥ पात्र विना वस्तु न रहे, पात्रे आत्मिक ज्ञान ॥ पात्र थवा सेवो सदा, ब्रह्मचर्य मतिमान ॥७॥

उपदेशकारक दोहरा.

बिना नयन पावे नहीं, बिना नयनकी बात ॥ सेवे सदगुरु चरन, सो पावे साक्षात ॥१॥ बुझी चहत जो प्यासको, है बुझनकी रीत ॥ पावे नही गुरुगम बिना, एही अनादि स्थीत ॥ २ ॥ एहि नहि हे कल्पना, एहि नहि विभंग ॥ कयि नर पंचम कालमें, देखी वस्तु अभंग ॥ ३ ॥ नहि दे तुं उपदेशकुं, प्रथम लेहि उपदेश ॥ सबसें न्यारा अगम है, वो ज्ञानीका देश ॥ ४ ॥ जपतप और व्रतादि सब, तहां लगी भ्रमरुप ॥ जहां लगी नहि संतकी, पाई कृपा अनुप ॥ ५ ॥

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

॥ चैत्यवंदन स्तुति स्तवनादी संग्रह ॥

॥ श्री रुषभदेवजीनुं चैत्यवंदन पहेलुं. ॥

॥ प्रथम नमुं श्री आदीनाथ, शत्रुंजय गीरी सोहे ॥ नाभिराया मारुदेवी नंदन, त्रिभुवन मन मोहे ॥ १ ॥ लाख चोराशी पूर्व आय, सोवनमय काया ॥ राणी सुनंदा सुमंगला, तस कंत सोहाया ॥ २ ॥ लंछन वृषभ बीराजतुए, धनुष पांचशे देह ॥ विनीता नगरीनो धणी, रूप कहे गुणगेह ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री ऋषभदेवजिन चैत्यवंदन बीजुं ॥

॥ सर्वार्थ सिद्ध थकी, चविया आदि जिणंद ॥ प्रथम राय वनिता वसे, मानवगण सुखकंद ॥१॥ योनिनकुल जिणंदने, हाथ[1] न एकहजार॥ मौनाती[2] ते केवली, वड हेठे निरधार ॥२॥ उत्तराषाढा जन्म छे ए, धनराशि अरिहंत ॥ दशसहस परिवारशुं, वीर कहे शिवकंत ॥ ३ ॥ इति ॥

---

१ वर्ष. २ छद्मस्थपणुं व्यतित थये.

॥ आदि जिन चैत्यवंदन त्रीजुं. ॥

॥ जय त्यादिम तीर्थेश, त्रिलोकी मंगल द्रुमः ॥ श्रेयः फलं सदालोका, यथालोका दुपासते ॥ १ ॥ श्रीमन्नाभि कुलादित्य, मरुदेव्यं गजप्रभो ॥ संसाराब्धि महापोत, जयत्वं वृषभ ध्वजं ॥ २॥ नमस्ते जगदानंद, मोक्षमार्ग विधायक ॥ जैनेन्द्र विदिताशेष, भाव-स्तद्भाव नायकः ॥ ३ ॥ प्रक्षीणाशेष संस्कार विस्तार परमेश्वर ॥ नमस्ते वाक्यथातीत, त्रिलोक नर शेखर ॥ ४ ॥ भवाब्धि पतिता-नंत, सत्त्व संसार तारक ॥ घोर संसार कंतार, सार्थवाह नमो-स्तुते ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री ऋषभदेवजीनुं चैत्यवंदन चोथु ॥

॥ पढम जिनवर पढम जिनवर, पाय पणमेव ॥ शेत्रुंजा गिरि-वर मंडणो, नाभिराय कुल चंद सामी ॥ सत शाखा जे परवर्यो, करे सेव नित दिवस गामी ॥ जुगला धर्म निवारीओ, सुगति रमणी उरहार ॥ वृषभ लंछन दुःखभंजणो, मरुदेवी तणो मल्हार ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री ऋषभदेव जिन चैत्यवंदन पांचमुं ॥

अरिहंत नमो भगवंत नमो, परमेश्वर जिनराज नमो ॥ प्रथम जिनेश्वर प्रेमे पेखत, सिद्धां सघलां काज नमो ॥ अरि० ॥ १ ॥ प्रभु पारंगत परम महोदय, अविनाशी अकलंक नमो ॥

अजर अमर अद्भुत अतिशय निधि, प्रवचन जलधि मयंक नमो ॥ अरि० ॥२॥ तिहुयण भविय जण मण वंछिय, पूरण देव रसाल नमो ॥ ललि ललि पाय नमुं हुं भावे, करजोडीने त्रिकाल नमो ॥ अरि० ॥३॥ सिद्ध बुद्ध तुं जग जन सज्जन, नयना नंदन देव नमो ॥ सकल सुरासुर नरवर नायक, सारे अहो निश सेव नमो ॥ अरि० ॥ ४ ॥ तुं तीर्थंकर सुखकर साहिब, तुं निःकारण बंधु नमो ॥ शरणागत भविने हितवत्सल, तुंही कृपारस सिंधु नमो ॥ अरि० ।.५॥ केवलज्ञाना दर्शे दर्शित, लोकालोक स्वभाव नमो ॥ नाशित सकल कलंक कलुषगण, दुरित उपद्रव भाव नमो ॥ अरि० ॥ ६ ॥ जग चिंतामणि जगगुरु जगहित, कारण जगजन नाथ नमो ॥ घोर अपार भवोदधि तारण, तुं शिवपुरनो साथ नमो ॥ ॥ अरि० ॥ ७॥ अशरण शरण नीराग निरंजन, निरुपाधिक जगदीश नमो ॥ बोधि दीओ अनुपम दानेसर, ज्ञानविमल सूरीश नमो ॥ अरि० ॥८॥ इति ॥

॥ श्री अजितनाथनुं चैत्यवंदन ॥

॥ आव्या विजय विमानथी, नयरी अयोध्या ठाम॥मानवगण रिख रोहिणी, मुनिजनना विशराम ॥१॥ अजितनाथ वृष राशिए, जनम्या जगदाधार॥ योनि भुजंगम भयहरु, मौने वर्ष ते बार ॥२॥ सप्तपर्ण तरु हेठळेए, ज्ञान महोत्सव सार ॥ एक सहसशुं शिव वर्या, वीरधरे बहु प्यार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजुं. ॥

॥ अजित अयोध्यानो धणी, गज लंछन गाजे ॥ जीतशत्रु विजया तणो, सुत अधिक दीवाजे ॥१॥ साडाचारशे धनुष्य देह, हेमवरण वीराजे ॥ बहोंतेर लाख पूर्व आयु, त्रिभुवन पति छाजे॥ ॥२॥ समेतशिखर अणसण करीए, पहोत्या मुक्ति मोझार ॥ रूपविजय कहे साहीबा, आवागमन निवार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री संभवनाथजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ संभवनाथ सदा जयो, मन वंछीत पुरे ॥ हय लंछन हेम वरण देह, टाळे दुःख दुरे ॥ १ ॥ राय जीतारी कुळ तिलो, सावथ्थी राया ॥ सेना माता जनमीयो, जग सुजश गवाया ॥ २ ॥ धनुष चारशे देहडीए, साठ लाख पूर्व आय ॥ श्री विनय विजय उवझायनो, रूप नमे नीत पाय ॥ ३ ॥इति ॥

॥ बीजुं. ॥

॥ सप्तमग्रेवेज चवन छे, जनम्या मृगशिर मांहि ॥ देवगणे संभव जिना, नमीये नित्य उत्सांहि ॥१॥ सावथ्थी पुरी राजीयो, मिथुन राशि सुखकार ॥ पन्नाग योनि पामिया, योनि निवारण हार ॥२॥ चौद वरस छद्मस्थमांए, नाण शाळ तरु सार ॥ सहस प्रतीशुं शिव वर्या, वीर जगत आधार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री अभिनंदन जिन चैत्यवंदन ॥

॥ चव्या जयंत विमानथी, अभिनंदन जिनचंद ॥ पुनर्वसुमां

जनमिया, राशि मिथुन सुखकंद ॥ १ ॥ नयोरी अयोध्यानो धणी, योनिवर मंजार ॥ उग्रविहारे तप तप्या, मूलक वरस अढार ॥२॥ वळी रायण पादप तळेए, विमलनाण गणदेव ॥ मोक्ष सहस मुनिशुं गया. वीर करे नित्य सेव ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

उंचपणे त्रणेशह, पंचाश धनुष प्रभु देह ॥ संवर राया सिद्धार्था, सुत सुमुज नेह ॥ १ ॥ लाख पंचाश पूर्व आयु, अयोध्यानो राणो ॥ सोवन वान वीराजतो, कपी लंछन जाणो ॥२॥ अभिनंदन प्रभु विनतोए, अंतरजामी देव ॥ श्री विनय विजय उवझायनो, रुप नमे नीत मेव ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री सुमतिनाथजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ मेघराय अयोध्यानो धणी, मंगला पटराणी ॥ धनुष त्रणशें देहमान, लंछन क्रौंच जाणी ॥ १ ॥ हेमवरण वीराजतो, सुमति जिन सेवो ॥ लाख चाळीश पूर्व आय, आपे शिव मेवो ॥ २ ॥ समेतशिखर मुक्ते गयाए, जगजीवन जगदीश ॥ रुपविजय कहे साहेबा, तुं मुज मळीयो इश ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

॥ सुमतीजयंत विमानथी, रत्ना अयोध्या ठाम ॥ राक्षस गण पंचम प्रभु, सिंह राशि गुणधाम ॥१॥ मघा नक्षत्रे जनमिया, सुचक

योनी जगदिश ॥ मोहराय संग्राममां, वरस गयां छवीस ॥२॥ जीत्यो त्रिपंच्यु तकेए, सहस मुनि परिवार ॥ अविनाशी पदवी कर्या, वीर नमे सोवार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री पद्मप्रभुजिन चैत्यवंदन ॥

॥ ग्रैवेयक नवमा थकी, कोसंबो घरवास ॥ राक्षस गण नक्षतरु, चित्रा कन्या राशि ॥१॥ वृश्चिक योनि पद्मप्रभु, छद्मस्था षट्मास ॥ तरु छत्रोवे केवली, लोका लोक प्रकाश ॥२॥ त्रण अधिक शत आठशुं ए, पाम्या अविचळ धाम ॥ वीर कहे प्रभु माहरे, गुण श्रेणी विश्राम ॥ ३ इति ॥

॥ थोय. ॥

॥ पद्मप्रभ छठ्ठा जयो, वरणे प्रभु रातो ॥ धरराय कौशंबी धणी, सुसीमा जस माता ॥१॥ कमळ लंछन अढीसें धनुष, शिव संपती दाता ॥ त्रीश लाख पूर्व आय, त्रिभुवननो त्राता ॥२॥ चोंतीस अतिशय वीराजताए, सेवे सुरनर कोड ॥ श्री विनय विजय उवझायनो, रुप नमे कर जोड ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री सुपार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ जगतारण जीन सातमो, मनोहर राणानंद ॥ पृथ्वी माता उदरे भर्यो, सुत पुनमचंद ॥ १ ॥ वीस लाख पूर्व आयु, मनो कनक तनु दीपे ॥ स्वस्तिक लंछन श्री सुपास, अरीयणने जीपे ॥ २ ॥

जन्मठाम वणारशीए, देह कनकनो वान ॥ रूपविजय कहे साहेबा, दीये शीवरमणी दान । ३ ॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

॥ सेविन छठेथी चव्या, वाणारसी पुरी वास ॥ तुला वैशाखा जनमिया, तप तपिया नव मास ॥१॥ गण राक्षस वृक योनिये शोभे स्वामी सुपास ॥ सरिस तरु तले केवली, शेष अनंत विलास॥२॥ महानंद पदवी लहीए, पाम्या भवनो पार ॥ श्री शुभवीर कहे प्रभु, पंचसया परिवार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री चंद्रप्रभजिन चैत्यवंदन ॥

॥ चंद्रप्रभु चंद्रावती, शुरि चविया वैजयंत ॥ अनुराधायें जनमीया, वृश्चिक राशि महंत ॥१॥ मृगयोनि गण देवनो, केवल विण त्रिक मास॥ पाम्या नाग तरु तले, निर्मल नाण विलास ॥२॥ परमानंद पद पामियाए, वीर कहे निरधार ॥ साथे सलूणा शोभिता, मुनिवर एकहजार ॥३॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

॥ महसेन मोटो राजीओ, सती लखमणा राणी ॥ चंद सम उज्वल वदन कांति, जनम्यो जयकारी ॥ १ ॥ चंद्रा नयरी जेहनी, चंद लंछन कहीए ॥ चंद्र प्रभजिन आठमा, नामे गहगहीए ॥२॥ धनुष दोढशे जोन तनुए, दश लख पूर्व आय ॥ रूपविजय प्रभु नामथी, दोन दोन बहु सुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री सुविधिनाथजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ सुविधी भली विध सेवतां, भय भावठ भांजे ॥ सुग्रीव राय सुत सेवतां, दुस्मन नवी गांजे ॥ १ ॥ मगर लंछन मन मोहतुं, नयरी काकंदी ॥ दोय लाख पूर्व आयु जोन, बोले जय वंदी ॥२॥ एकसो धनुषवर देहडीए, उज्वल वर्ण उदार ॥ रूपविजय प्रभु भवी नमो, रामा मात मल्हार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

॥ सुविधिनाथ सुविधि नमुं, श्वान योनि सुखकार ॥ आव्या आणंत स्वर्गथी, काकंदी अवतार ॥१॥ राक्षस गणगुणवंतने, धनराशि रिखमूल ॥ वरस चार छद्मस्थमां, कर्म शशक[1] शार्दूल[2] ॥२॥ मल्लितरु तले केवलीए, सहस मुनि संघात ॥ ब्रह्म महोदय पदवर्या, वीर नमे परभात ॥३॥ इति ॥

॥ श्री शीतलनाथस्वामीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ दशमा स्वर्ग थकी चव्या, दशमा शीतलनाथ ॥ भद्दिलपुर धन राशिए, मानव गण शिवसाथ ॥ १ ॥ वानर योनि जिणंदनी, पूर्वा षाढा जात ॥ तिग वरसांतरे केवली. प्रियंगु विख्यात ॥२॥ संयम धर सहसें वर्या ए, निरुपम पद निर्वाण ॥ वीर कहे प्रभु ध्यानथी, भव भव कोडी कल्याण ॥ ३ ॥ इति ॥

---

१ हरण २ सह.

॥ बीजुं. ॥

॥ भद्दीलपुर दृढ रथ राय, नंदा पटराणी ॥ शीतल जिनवर जन्मतां, जननी कीर्ती गवाणी ॥ १ ॥ श्री वच्छ लंछन नेवु धनुष, देह सोवन समाणी ॥ एक लाख पूर्व आयु मान, कहे केवलनाणी ॥ २ ॥ सुखदायक दशमो सदाए, दे दोलत भरपुर ॥ रुपविजय कहे भवि नमो, मह उगमते सुर ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री श्रेयांसनाथजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ वीष्नुराय कुल केशरी, माता विष्णु जायो ॥ खडग लंछन एंशी धनुष, सवी सुरपती गायो ॥ १ ॥ लाख चोराशी वरस आयु, भवियण मन भायो ॥ श्री श्रेयांस जीनेश्वरु, दीठे सुख पायो ॥ २ ॥ सोवन वरणी देहडीए, सींह पुरीए अवतार ॥ रुपविजय कहे मुज मल्यो, त्रिभुवन तारण हार ॥३॥ इति ॥

॥ बीजुं. ॥

॥ अच्युतथी प्रभु उतरया, सींहपुरे श्रेयांस ॥ योनि वानर देवगण, देवकरे परशंस ॥१॥ श्रवणे स्वामी जनमीया, मकर राशि दुगवास ॥ छद्मस्था तिंदुक तले, केवल महिमा जास ॥ २ ॥ वाचंयम सहसे सहिए, भव संततिनो छेह ॥ श्रीशुभ वीरने सांइशुं अविचल धर्म सनेह ॥ ३ ॥

॥ श्री वासुपूज्य जिन चैत्यवंदन ॥

॥ प्राणत थकी प्रभु पांगर्या¹, चुंपे चंपा गाम ॥ शिवमारग

---

१ चव्या.

जातां थकां, चंपा तरु विश्राम ॥ १ ॥ अश्वयोनि गण राक्षस, शत-भिषा कुंभराशि ॥ पाडल हेठे केवली, मौनपणे इगवासि[1] ॥ २ ॥ षटशत साथें शिव थयाए, वासुपूज्य जिनराज ॥ वीर कहे धन्य ते घडी, जब निरख्या महाराज ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजुं. ॥

॥ देवलोकथी दीपवी, नयरी वर चंपा ॥ वासुपूज्य जिन जन्म ठाम, वसे लोक सुसंपा ॥ १ ॥ वसुपूज राजा राजीयो, जया जस पटराणी ॥ सीतेर धनुष वर देह राती, महीष लंछन जाणी ॥ २ ॥ वरस बहोतेर लाखनुए, आयु कहे जगनाथ ॥ रूप विजय कहे मुज मल्यो, शीव मार्गनो साथ ॥ ३ ॥ इति ॥

श्री विमलनाथजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ वंदो विमल जीनंद चंद, सुख संपति दाता ॥ कंपीलपुर कृतवर्मराय, श्यामा जश माता ॥ १ ॥ साठ धनुष वर देहमान, दीपे विख्याता ॥ सोवन वान विराजता. गुण सुर नर गाता ॥२॥ साठ वरस लख आउखुए, शुकर लंछन पाय ॥ श्री विनयविजय उवझायनो, रुपविजय गुण गाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजुं. ॥

॥ अष्टम स्वर्गथकी चवी, कंपीलपुरमां वास ॥ उत्तरा भाद्रपदे जनम, मानव गण मीन राशि ॥ १ ॥ योनि छाग सुहंकरुं,

१ एकवर्ष छद्मस्थ.

विमलनाथ भगवंत ॥ दोय वरस तप निर्जली, जंबुतले अरिहंत ॥२॥
षट्सहस मुनि साथशुं ए, विमल विमल पद पाय ॥ श्री शुभवीरने
सांइशुं, मळवानुं मन थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री अनंतनाथजिन चैत्यवंदन ॥

॥ देवलोक दशमा थकी, गया अयोध्या ठाम ॥ हस्ति योनि
अनंतने, देवगणे अभिराम ॥ १ ॥ रेवतीए जनम्या प्रभु, मीन-
राशि सुखकार ॥ त्रण वरस छद्मस्थमां, नहि प्रश्नादि उच्चार ॥२॥
पींपळ वृक्षे घातीघाए, केवळ लक्ष्मी निदान ॥ सात सहसशुं शिव
वर्या, वीर कहे बहु मान ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजुं. ॥

॥ अनंत जिनेश्वर चौदमां, अयोध्याए अवतरीया ॥ सींह-
सेन कुळ केशरी, सुजसा उर धरीया ॥ १ ॥ देह धनुष पंचाश
मान, गुणशुं भरीया ॥ वरस त्रीश लाख आउखुं श्री केवळ वरी-
या ॥ २ ॥ सींचाणा लंछन तनुए, कनक वर्ण, देह ॥ रूपविजय
कहे साहेबा, तुजशुं अविहड नेह ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री धर्मनाथजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ धर्म धुरंधर धर्मनाथ, धन सुव्रता जायो ॥ भानुराय सुत
भानु जेम, सुरवधु फुलरायो ॥ १ ॥ धनुष पीस्तालीश देहमान,
वज्र लंछन गायो ॥ वरस लाख दश आउखु, हेमवान सुहायो ॥२॥

रतन पुरी नयरी धणीए, पंदरमो भगवंत ॥ रुपविजयनो साहिबो, केवल कमळा कंत ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

॥ विजय विमान थकी चव्या, रत्नपुरे अवतार ॥ धर्मनाथ गण देवता, कर्क राशि मनोहार ॥ १ ॥ जनम्या पुष्य नक्षेतरें, योनि छाग विचार ॥ दोय वरस छद्मस्थमां विचर्या धर्म दयाळ ॥ २ ॥ दधिपर्णाधो केवलीए, वीर वरया बहु रिद्ध ॥ कर्म खपा वीने हुवा, अडसय साथे सिद्ध ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री शांतिनाथजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ सर्वारथ सिद्धे थकी, चविया शांति जिणेश ॥ हस्ति नागपुर अवतर्या, योनि हस्ति विशेष ॥१॥ मानव गण गुणवंतने, मेष राशि सुविलास ॥ भरणीए जनम्या प्रभु, छद्मस्था इगवास ॥२॥ केवल नंदी तरुतलए, पाम्या अंतर ज्ञाण ॥ वीर करमने क्षय करी, नव शतशु निर्वाण ॥३॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

॥ जय जय शांति जिणंद देव, हथ्थिणापुर स्वामी, विश्वसेन कुलचंद सम, प्रभु अंतरजामी ॥ १ ॥ अचिरा उर सर हंस जिम, जिनवर जयकारी ॥ मारी रोग निवारके, कीर्ति विस्तारी ॥ २ ॥ शोलमा जिनवर प्रणमीयें ए, नित उठी नामी सीस ॥ सुरनर भूप प्रसन्न मन, नमतां वाधे जगदीस ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजुं. ॥

॥ शांतिकरण श्री शांतिनाथ, गजपुर धणी गाजे ॥ वीस्वसेन अचीरा तणो, सुत सबळ दीवाजे ॥ १ ॥ धनुष चालीश हेमवर्ण काय, मृग लंछन छाजे ॥ लाख वरसनुं आउखुं, अरीयण मद भांजे ॥ २ ॥ चक्रवर्ती प्रभु पांचमाए, शोळमां श्री जगदीश ॥ रुपविजय कहे मुझ मल्यो, पुरण सकल जगीश ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री कुंथुनाथजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ सतरमां श्री कुंथुनाथ, श्री राणी जायो ॥ गजपुर नयरी सुरीराय, जाडवायस पायो ॥ १ ॥ सहस पंचाणुं वरस आयु छाग लंछन धायो ॥ धनुष पांत्रीश वर देहडी, हेम वर्ण सुहायो ॥ २ ॥ चोसठ सहस वधु धणोए, पायक संख्या न पार ॥ रुपविजय कहे साहेबा, तुतर्यो मुज तार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

॥लव[1] सत्तम सुरभव तजी, गजपुर नयर निवास ॥ राक्षसगण कृतिका जनि, कुंथुनाथ वृषराशि ॥१॥ शोल वरस छद्मस्थमां, जिनवर योनि छाग ॥ घातिकर्म घातें करी, तिलक तळे वीतराग ॥२॥ शैलेसी करणे करीए, एकसहस परिवार ॥ शिव मंदिर सिधावतां, वीर घणुं हुंशीयार ॥३॥ इति ॥

---

१ सर्वार्थसिद्धना देव.

॥ श्री अरनाथजिनुं चैत्यवंदन ॥

॥ ठाण सवठ थकी चव्या, नागपुरें अरनाथ ॥ रेवती जन्म महोत्सवा, करता निर्जर नाथ ॥१॥ जयकर योनि गजवरु, राशि मीन गणदेव ॥ त्रण वरसमां थिर थइ, टाळे मोहनी टेव ॥ २ ॥ पाम्या अंब तरू तलेंए, खायिक भावेनाण ॥ सहस मुनिवर साथशुं, वीर कहे निर्वाण ॥३॥ इति ॥

॥ बीजुं. ॥

॥ राय सुदर्शन गजपुरी, देवी पटराणी ॥ लंछन नंदावर्त जास, अरजीन गुणखाणी ॥ १ ॥ त्रीश धनुष वर देहडी, हेमवर्ण जाणी ॥ सहस चोराशी वर्ष आयु, करे केवल नांणी ॥ २ ॥ चक्रवर्ती प्रभु सातमोए, अढारमो मुज देव ॥ रुप कहे भवि एहने नमो, करो नीरंतर सेव ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री मल्लीनाथजीनुं चैत्यवंदन ॥

मल्लीनाथ ओगणीशमां, मीथीलापती वंदो ॥ प्रभावती माये जनमीयो, कुंभराय कुळचंदो ॥ १ ॥ सहस पंचावन वरस आयु, नील वर्ण जीणंदा ॥ धनुष पंचवीश प्रभु देहमान, टाळे भव फंदा ॥ २ ॥ लंछन कळश सोहामणुए, सेवे सुर नर वृंद ॥ श्री विनय विजय उवझायनो, रुप लहे आणंद ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

॥ मल्लिजयंत विमानथी, मिथिलानयरी सार ॥ अश्विनी

योनि जयंकरु, अश्विनीयें अवतार ॥ १ ॥ सुरगण राशि मेष छे, वंदित स्वर्गलोक ॥ छद्मस्था अहो रातिनी, केवल वृक्ष अशोक ॥ ॥ २ समवसरणे बेशो करीए, तीर्थ प्रवर्त्तनहार ॥ वीर अचल सुखने वर्या पंचसया परिवार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री मुनिसुव्रतजिन चैत्यवंदन. ॥

॥ सुव्रत अपराजितथी, राजगृही रेहठाण ॥ वानर योनि राजती, सुंदर गण गिर्वाण ॥ १ ॥ श्रवण नक्षत्रे जनमिया, सुरवर जय जयकार ॥ मकरराशि छद्मस्थमां, मौन मास अगियार ॥२॥ चंपक हेठे चांपिया ए, जे घनघाति चार ॥ वीरवडो जगमां प्रभु, शिवपद एरुहनार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

॥ जपो नीरंतर नेहशुं, वीशमो जीनराय ॥ मित्रराय पद्मावती, सुतसुं सुन माया ॥ १ ॥ कछप लंछन धनुष वीश, श्याम वर्णि काया ॥ त्रीश सहस वरस आउखु, हरीवंश दीपाया ॥ २ ॥ मुनीसुव्रत महिमा नीलोए, जन्म राजग्रही जास ॥ रुपविजय कहे साहेबा, नामे लील वीलास ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री नमिनाथजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ विजय राय विप्रा धणी, मीथीलानो नाथ ॥ धनुष पंदर

हेम वर्ण देह, मेळे शिवसाथ ॥ १ ॥ लंछन नीलुं कमळ जास, करीया भव पाथ ॥ नमी नमतां नेहसुं, हवे थया सनाथ ॥ २ ॥ दश हजार वरसनुं आउखुए, एकवीशमो मुनि स्वामी ॥ रुप कहे प्रभु सांभळो, मन मोयुं तुमसुं स्वामी ॥ ३ ॥

॥ बीजु. ॥

॥ दशमा प्राणत स्वर्गथी, आव्या श्री नमिनाथ ॥ मिथिला नवरी राजियो, शिवपुर केरो साथ ॥ १ ॥ योनि अश्व अलंकरी, अश्वनी उदयो भाण ॥ मेष राशि सुरगण नमुं, धन्य ते दिन सुविहाण ॥ २ ॥ नव मासांतरे केवळीए, बकुल तळें निरधार ॥ वीर अनोपम सुख वर्या, मुनि परितंव हजार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री नेमीनाथजिन चैत्यवंदन ॥

॥ नेमीनाथ बावीसमा, अपराजितथी आय ॥ सोरीपुरमां अवतर्या, कन्याराशि सुहाय ॥ १ ॥ योनि वाघ विवेकीने, राक्षस गण अद्भुत ॥ रिख[१] चित्रा चोपनादिन, मौनवता मनपुत[२] ॥२॥ वेतस हेठे केवळीए, पंचसयां छत्रीश ॥ वाचंयमशुं शिववर्या, वीर नमे निशदिश ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजु. ॥

॥ ॐ नमो विश्वनाथाय, जन्मतो ब्रह्मचारीणे ॥ कर्मवल्ली वनच्छेद, नमयेऽरिष्ट नेमये ॥ १ ॥ यदुवंश समुद्रेंदु, कर्म कक्ष हुताशनः ॥ अरिष्ट नेमिर्भगवान्, भूयाद्वोऽरिष्ट नाशनः ॥ २ ॥ अनंत परमानंद, पुर्णधामस्यवस्थितः ॥ भवंतं भवता साक्षी, भव्यतीह

१ नक्षत्र, २ पवित्र.

जिनो खिल ॥३॥ स्तुवंत रतावकं बींव, मन्यथा कथमीदशं ॥ प्रभो-
दाति श्रयश्चित्ते, जायते भुवनातिग ॥ ४ ॥ इति ॥

त्रीजुं.

॥ समुद्रविजय कुलचंद नंद, शिवादेवी जाया ॥ यादव वंश
नभोमणि, सौरीपुर ठाया ॥ १ ॥ बालथकी ब्रह्मचर्यधर, गतमार
प्रचार ॥ भोक्ता निज आत्मिकगुण, त्यागी संसार ॥२॥ निःकारण
जग जीवने ए, आशानो विसराम ॥ दीनदयाल शिरोमणि, पूरण
सूरतरु काम ॥ ३ ॥ पशुआं पुकार सुणी करी, छांडी गृहवास ॥
तत्क्षण संयम आदरी, करी कर्मने नाश ॥४॥ केवल श्री पामी
करीए, पहोता मुगतिमोझार ॥ जन्म मरण भय टालवा, ग्यान
सदा सुखकार ॥ ५ ॥ इति ॥

चोथुं

॥ बावीशमा श्री नेमनाथ, नित्यउठी वदो ॥ समुद्रविजय
सुत भानुसम, भविजन सुखकंदो ॥ १ ॥ सघन श्याम दूति देहनी,
दश धनुष्य शरीर ॥ अमित कांति यादव धणी, भांजे भवतीर ॥२॥
राजिमती रमणी तजीए, ब्रह्मचर्य धरधीर ॥ शिवरमणी सुख विल-
सतां, भूप नमे धरी धीर ॥ ३ ॥ इति ॥

पांचमुं.

॥ राजुल वर श्री नेमीनाथ, शामलीओ सारो ॥ शंख लं-
छन दश धनुष देह, मनमोहन गारो ॥ १ ॥ समुद्रविजय राय कुल

तीलो, शिवादेवी सुत प्यारो ॥ सहस वरस प्रभु आउखुं, पाम्युं सुखकार ॥ २ ॥ श्री गीरनारे मुक्ते गयाए, सौरीपुर अवतार ॥ रुपविजय मन वालहो, जगजीवन जीनराज ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री पार्श्वनाथजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ जयोजयो श्री पार्श्वनाथ, सुख संपतीकारी ॥ अश्वसेन वामा तणो, नंदन मनोहारी ॥ १ ॥ नील वर्ण नव हाथ देह, अही लंछन धारी ॥ एकसो वरसनुं आउखुं, वरीया शिवनारी ॥ २ ॥ जन्म ठाम वणारशीए, प्रत्यक्ष परचयोदेव ॥ सानिधकारी साहीबा, रुप कहे नितमेव ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजुं. ॥

॥ नयरी वाणारसीयें थया, प्राणतथी परमेश ॥ योनि व्याघ्र सुहंकरी, राक्षस गण सुविशेष ॥१॥ जन्म विशाखायें थयो, पार्श्व प्रभु महाराय ॥ तुलाराशि छद्मस्थमां, चोराशी दिन जाय ॥२॥ धवतरु पासे पामीयाए, क्षायक दुग उपयोग ॥ मुनि तेत्रिशें शिव वर्या, वीर अक्षय सुख भोग ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ त्रीजुं. ॥

॥ पुरिसां दाणी पार्श्वनाथ, नमीय मन रंग ॥ नीलवरण अश्वसेन नंद, निरमळ निस्संग ॥ १ ॥ कामीत दायक कल्पसाख, वामा सुतसार ॥ श्री गवडीपुर स्वाम नाम, जपियें निरधार ॥२॥

त्रिभुवन पति त्रेवीसमोए, जास अखंडीत आण ॥ एक मनें आराधतां, लहियें कोड कल्याण. ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ चोथुं. ॥

॥ सकल भविजन चमत्कारी, भारी महिमां जेहनो ॥ निखिल आतम रमा राजित, नाम जपीये तेहनो ॥ दुष्ट कर्माष्टक गजारी, भविक जन मन सुखकरो ॥ नित्य जाप जपीये, पाप खपीये, स्वामी नाम शंखेश्वरो ॥१॥ बहु पुण्यराशी देश काशी, तथ्थ नयरी वणारशी ॥ अश्वसेन राजा राणी वामा, रूपे रति तनुं सारशी ॥ तस कुखे सुपन्न चौद सूचित, स्वर्गथी प्रभु अवतर्यो ॥ नित्य० ॥२॥ पोश मासे कृष्णपक्षे, दशमि दिन प्रभु जनमीया ॥ सुरकुमरि सुरपति भक्ति भावे, मेरु श्रृंगे स्थापिया ॥ प्रभाते पृथ्वी पति प्रमोदे, जन्म महोच्छव अति कर्यो ॥ नित्य० ॥३॥ त्रण लोक तरुणी मन प्रमोदी, तरुण वय जब आविया ॥ तब मात तातने परण्य चाते, भाभिनि परणावीया ॥ कमठ शठकृत अग्निकुंडे, नाग बळतो उधर्यो ॥ नित्य० ॥४॥ पोश वदि एकादशी दिन, प्रवर्ज्यां जिन आदरे ॥ सूर असूर राजी भक्ति ताजी, सेवना झाझी करे॥काउस्सग्ग करतां देखी कमठे, किध परिसह आकरो ॥ नित्य०॥५॥ तव ध्यान धारारुढ जिनपति, मेघ धारे नवि चळयो ॥ तिहां चलित आसन धरण आयो, कमठ परिसह अटकळयो ॥ देवाधि देवनी खरी सेवा, कमठने काढी परो ॥ नित्य० ॥ ६ ॥ क्रमे पामी केवळज्ञान कमळा, संघ चउवीह स्थापीने, प्रभु गया मोक्षे समेत शिखरे, मास अणसण

पाळीने ॥ शिवरमणी संगे रमे रसियो, भविक तस सेवा करे ॥ ॥ नित्य० ॥ ७ ॥ भुत प्रेत पिशाच व्यंतर, जलण जलोधर भय टळे ॥ राज्य रमणी रमा पामे, भक्ति भावे जो मळे ॥ कल्पतरुथी अधिक दाता, जगत त्राता जयकरो ॥ नित्य० ॥ ८ ॥ जरा जर्जरी भूत यादव, सैन्य रोग निवारता, वढीयार देशे नित्य बिराजे, भविक जीवने तारता ॥ ए प्रभु तणा पद पद्म सेवा, रूप कहे प्रभुता वरो ॥ नित्य जाप जपोये, पाप खपीये, स्वामीनाम शंखेश्वरो ॥९॥ इति ॥

॥ पांचमुं ॥

॥ ॐ नमः पार्श्वनाथाय । विश्व चिंतामणीयते ॥ ह्रीं धरणेंद्र वैरोट्या । पद्मादेवी युतायते ॥१॥ शांति तुष्टि महा पुष्टि । धृतिकीर्त्ति विधायिने ॥ ॐ ह्रीं ध्विद् व्याल वैताल । सर्व्वाधिव्याधिनाशने ॥२॥ जया जिताख्या विजया । ख्यापरा जितयान्वित ॥ दिशापाळ ग्रहैर्यक्षै । र्विद्यादेवी भिरन्वितः ॥३॥ ॐ असिआउसायनमः । स्तत्रस्त्रैलोक्य नाथतां ॥ चतुः षष्ठिसुरेंद्रास्ते । भाषंते छत्र चामरैः॥४॥ श्री संखेश्वर मंडन । पार्श्व जिन प्रणत कल्पतरु कल्प ॥ चूरय दुष्ट व्रातं ॥ पुरयमे वांछितं नाथ ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ छठुं. ॥

॥ प्रभु पासजी ताहरुं नाम मीठुं, त्रीलोकमां एटलुं सार दीठुं॥ सदा समरतां सेवतां पाप नाठुं, मन माहरे ताहरू ध्यान बेठुं ॥ १॥ मन तुम पासे वसे रात दीवसे, मुख पंकज नीरखवा हंस हीसे ॥

धन ते घडी जे घडी नयण दीसे, भली भगति भावे करी वानविषे ॥२॥ अहो एह संसार छे दुःख दोरी, इंद्रजालमां चित लागी ठगोरी ॥ प्रभु मानीए विनती एक मोरी, मुज तार तुं तार बलीहारी तोरी ॥३॥ सही सुम्र जंजालमां संग मोह्यो, घडीआलमां काल रमतो न जोयो ॥ मुधा एम संसारमां जन्म खोयो, अहो घृत तणे कारणे जल विलोयो ॥४॥ एतो भ्रम लोके सुवा भ्रांति धायो, जइ सुकतणी तंतु मांहे भरायो ॥ सुके जंबु जाणी ग्रभे दुःख पायो, प्रभु लालचे जीवडो एम वाह्यो ॥ ५ ॥ भम्यो भ्रम भुल्यो रम्यो कर्म भारी, दयाधर्मनी वात नवी वीचारी ॥ तोरी नम्र वाणी परम सुखकारी, तीहुं लोकना नाथ नवी संभारी ॥ ६ ॥ विषय वेलडी सेलडी करी जाणी, भजी मोह तृष्णा तजी तोरी वाणी ॥ एवो भलो भुंडो नीज दास जाणी, प्रभु राखीए बांहनी छाह प्राणी ॥ ७ ॥ मारा विविध अपराधना कोड सहीए, प्रभु सरणे आव्या तणी लाज वहीए ॥ वली घणी घणी विनति एम कहीए, मुज मानस परमहंस रहीए ॥ ८ ॥ कलस ॥ कृपामूर्ति पार्श्वस्वामी मुगती गामी ध्याइये। अति भक्ति भावे विपत जावे तास संपती पाइए ॥ प्रभु महिमा सागर गुण वैरागर पास अंतरीक जे स्तवे । तस सकल मंगल जयजयारव आनंद वर्धन विनवे ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ सातमुं ॥

॥ जय चिंतामणि पार्श्वनाथ, जय त्रिभुवन स्वामी ॥ अष्टकर्म रिपु जीतीने, पंचम गति पामी ॥ १ ॥ प्रभुनामे आनंदकंद,

सुख संपत्ति लहीयें ॥ प्रभुनामे भवभय तणा, पातक सब दहियें ॥ २ ॥ ॐ ह्रीँ वर्ण जोडी करीए, जपीये पारस नाम ॥ विष अमृत थई परगमे, पावे अविचल ठाम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ आठमुं ॥

॥ श्रीपार्श्वनाथ नमस्तुभ्यं, विघ्न विध्वंस कारिणे ॥ निर्मलं स प्रभानंदे, परमानंद दायिने ॥ १ । अश्वसेना वनीपाल, कुल-चूडामणि प्रभो ॥ वामासुनो नमस्तुभ्यं, श्रीमत्पार्श्व जिनेश्वर ॥२॥ क्षितिमंडल मुकुटं, धार्मिक निकटं, विश्वप्रगटं, चारुभटं ॥ भवरेणु समीरं, जलनिधितीरं, सुरगिरिधीरं गंभीरं ॥ जगत्रयं शरणं, दुर्गति हरणं; दुर्द्धर चरणं; सुखकरणं ॥ श्रीपार्श्वजिनेंद्रं; नत नागेंद्रं; नमत सुरेद्रं कृतभद्रं ॥ ३ ॥ कमठे धरणेंद्रे च, स्वोचितं कर्म्म कुर्व्वती ॥ प्रभुस्तुल्य मनोवृत्तिः, पार्श्वनाथ श्रियेऽस्तुवः ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ नवमुं. ॥

॥ प्रणमामि सदा प्रभु पार्श्वजिनं, जिननायक दायक सुख घनं ॥ घनचारु महोत्तम देहधरं, धरणी पति नित्य सुसेवकरं ॥ ॥ १ ॥ करुणा रस रंचित भव्य फणि, फणि सप्त सुशोभित मौलि-मणि ॥ मणि कंचन रूप त्रिकोटि घटं, घटितासुर किन्नर पार्श्वतटं ॥२॥ तटिनीपति घोष गंभीर स्वरं, स्वरनाकर अश्व सुसेन नरं ॥ नरनारी नमस्कृत्य नित्यमुदा, पद्मावती गावती गीत सदा ॥ ३ ॥ सहनेंद्रिय गोप यथा कमठं, कमठासुर वारण मुक्तहठं ॥ हठ हेलित

कर्म कृतांतबलं, बलधाम धुरंधर पंकमलं॥४॥जलजध्वय पत्र प्रभा-नयनं, नयनंदित भव्य नरेश मनं ॥ मन मन्मथ महीरुह वन्हिसमं, समतामय रत्नकरं परमं ॥५॥ परमार्थ विचार सदा कुशलं, कुशलं कुरुमे जिननाथ अलं ॥ अलिनी नलिनी नलिनील तनुं, तनुताप्रभु पार्श्वजिनं सुधनं ॥ ६ ॥ धन धान्यकरं करुणा परमं, परमामृत सिद्धि महासुखदं ॥ सुखदायक नायक संतभवं, भवभूत प्रभु पार्श्वजिनं शिवदं ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ श्री महावीरस्वामीजीनुं चैत्यवंदन ॥

उर्ध्व लोक दशमा थकी, कुंडपुरे मंडाण ॥ वृषभ योनि चोवीशमा, वर्द्धमान जिन भाण ॥ १ ॥ उतरा फाल्गुणो उपना, मानवगण सुखदाय ॥ कन्यारशि छद्मस्थमां, बार वरस वही जाय॥२॥ शाल विशाल तरु तलेए, केवलनिधि प्रगटाया ॥ वीर बिरुद धरवा भणी, एकाकी शिव जाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजुं ॥

॥ वर्द्धमान जिनवर धणी, प्रणमुं नित्य मेव ॥ सिद्धारथ कुल चंदलो, सुर निर्मित सेव ॥ १ ॥ त्रिसला उयर सर हंस सम, प्रगट्यो सुखकंद ॥ केसरी लंछन विमल तनु, कंचनमय वृंद ॥२॥ महावीर जगमां वडोए, पावापुरि निर्वाण ॥ सुरनर भूप नमे सदा, पामे अविचल ठाण ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ त्रीजुं. ॥

॥ नव चोमासी तप कर्या, त्रणमासीदोय ॥ दोय दोय अ-ढीमासी, तिम दोय मासी होय ॥१॥ बहोत्तेर पास खमण कर्या, मास खमण कर्या बार ॥ षट मासी आदर्यां, बार अठम तप सार ॥ २ ॥ षटमासी एक तिम कर्यो, पण दिन उण षटमास ॥ बसं ओगणत्रीस छठभला, दिक्षा दिन एक खास ॥ ३ ॥ भद्र प्रतिमा दोय तिम, महाभद्र दिन च्यार ॥ दस दिन सर्वतो भद्रना, लागट निरधार ॥ ४ ॥ विण पाणी तप आदर्यो, पारण दिन जास ॥ द्रव्या हारण नक कह्यो, त्रणसें उगण पंचास ॥५॥ छद्मस्थे एणीपरे रह्या, सह्या परिसह घोर ॥ शुकल ध्यान अनले करी, बाल्या कर्म कठोर ॥ ६ ॥ शुकल ध्यान अंतर रह्या ए, पाम्या केवलनाण ॥ यशविजय कहे प्रणमतां, लहीये नित्य कल्याण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ चोथुं. ॥

॥ वर्धमान चोवीशमां, क्षत्रीकुंडे जाणो ॥ सिधार्थ त्रिशला तणो, नंदन सुर राणो ॥ १ ॥ सोवन वरणी सात हाथ, सींह लंछन सोहे ॥ वरस बहोंतेर आयु जास, भवियणना मन मोहे ॥ २ ॥ अपापाये शीवपुर गयाए, वीर जिनेश्वर राय ॥ श्री वि-नय विजय उवझायनो, रूपविजय गुण गाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पांचमुं ॥

॥ छत्र शिरपर छत्र शिरपर, त्रण सोहंत ॥ चामर सुरपति

चालवे, मधुरी वाणी त्रिभुवन मोहे ॥ सिद्धारथ कूल अवतरया, त्रिशला देवो जननी सोहे ॥ चरणें मेरु चळाविओ, समरथ लंछन सिंह ॥ महावीर जिन नित नमु, मह उगमते दह ॥१॥ इति ॥

श्री चोवीश तीर्थंकरनुं चैत्यवंदन.

॥ श्री शंखेश्वर इश्वरं, प्रणमी त्रिकरणयोग ॥ देवनमन चउ-मासीये, करशुं विधि संयोग ॥ १ ॥ रोषभाजित संभव तथा, अभिनंदन जिनचंद ॥ सुमति पद्म प्रभु सातमा, स्वामीसुपास जिणंद ॥ २ ॥ चंद्र प्रभु सुविधिजिन, श्री शीतलश्रेयांस ॥ वासुपूज्य विमल तथा, अनंत धर्म वरवंश ॥ ३ ॥ शांतिकुंथु अर प्रभु, मल्ली सुव्रत-स्वामी ॥ नमो नेमीसर पासजिन, वर्द्धमान गुणधामि॥४॥ वर्त्तमान जिन वंदतांए, वंद्या देव त्रिकाल ॥ प्रभु शुभ गुण मुगता तणी, वीर रचे वरमाल ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ बीजुं. ॥

॥ ऋषभ अजित संभव नमो, अभिनंदन जिनराज ॥ सुमती पदम सुपास जिन, चंद्रप्रभु महाराज ॥ १ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य सुख वास ॥ विमल अनंत श्रीधर्म जिन, शांतिनाथ पूरे आश ॥ २ ॥ कुंथु अर मल्लि जिन, मुनीसुव्रत जगनाथ ॥ नमी नेमी पारस वीर, ए साचो शिवपुर साथ ॥ ३ ॥ द्रव्य भावथी सेवीये, आणी मन उल्लास ॥ आतम नीर्मल कीजीये, जिम

पामी जे सिववास ॥ ४ ॥ एम चोवीस जिन समरतां ए, पोंचे मननी आश ॥ अमीकुमर एणी परे भणे, ते पामे लील वीलास ॥५॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ श्री सिमंधरजिन चैत्यवंदन ॥

॥ वंदु जिनवर विहरमान, सिमंधर स्वामी ॥ केवल कमला कांत दांत ॥ करुणारस धामी ॥ १ ॥ कंचनगिरि सम देह कांत, वृष लांछन पाय ॥ चोराशी लख पूर्व आय, सेवित सुर राय, ॥२॥ छठ भक्त संयम लीयोए, पुंडरिगिणि भाण ॥ प्रभु श्रो दरिसण संपदा, कारण परमकल्याण ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजुं ॥

॥ जंबुद्विप पूरव दोशे, पुष्कल वइ विजये ॥ नयरी पुंडरगिणी निरमली, धर्म सदा जिहां रुजीए ॥ १ ॥ श्रेयांस नरेसर नंद चंद, सत्यकी मात मल्हार ॥ रुखमणी राणी वाल्हो, शिववधु उरहार ॥ २ ॥ धनुष पांचसे देहमान, कंचन वरणी काय ॥ वृषभ लंछन रलियामणो, पूर्व चोराशी आय ॥ ३ ॥ शांति कुंथु अंतर जन्म, श्रीमंधर जिनराज ॥ वीस लाख पूर्व कुमर पद, त्रेशठ लाख पूर्वराज ॥ ४ ॥ श्री मुनीसुव्रत जव विचरता, तव प्रभु लीये दीक्षा ॥ कर्म खपावो केवल लही, दोये बहू जन शिक्षा ॥ ५ ॥ उदय नाथने शासने, वरशे शिव पटराणी ॥ सो कोड मुनीराजजी, दस-

लाख केवल नाणी ॥ ६ ॥ सकल गुणे करी शोभता ए, शिवरमणी शिणगार ॥ श्रीरूपविजय कविरायनो, माणेक कहे सुझतार ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ त्रीजुं ॥

॥ श्री सीमंधर विचरता, सोहे विजय मोझार ॥ समवसरण देवे रच्युं, बेसे परखदा बार ॥ १ ॥ नव तत्व दीये देशना, सांभळे सुरनर कोड ॥ षट द्रव्यादिक वरणवे, छे समकित कर जोड ॥ २ ॥ इहां थकी जिन वेगळा, सहस तेत्रीश शत एक ॥ सत्तावन जोजन वलि, सत्तर कला विवेक ॥ ३ ॥ द्रव्यथकी प्रभु वेगला, भावथी हृदय मोझार ॥ त्रण काळ वंदन करुं, स्वास माहे सोवार ॥ ४ ॥ श्रीसीमंधर जिनवरु ए, पुरे वंछित कोड ॥ कांतिविजय प्रभु प्रणमतां, भक्ते बेकर जोड ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ चोथुं ॥

॥ पूर्व दिशि इशान कूण, पुख्कलमें विजया ॥ नयरी पुंडरिगिणी तिहां, सीमंधर थुणीया ॥ १ ॥ पूर्वायु चोराशी लख, कांचन मय काया ॥ उंचपणे सय धनुश्य पंच, प्रणमे सुरराया ॥ २ ॥ जयवंता जिन विचरंता, केवल दीपक देव ॥ श्री सीमंधर स्वामीजी, देजो तुम पद सेव ॥ ३ ॥ वीशलाख पूर्व कुंवर वास, भोगवी जिनेश्वर ॥ त्रेसठ लाख पूर्व राजऋद्धी, पाली अलवेश्वर ॥ ४ ॥ मुनीसुव्रत जिन विहरमान, तइये तुम दीक्षा ॥ तीर्थंकर

पद लहिय स्वामी, महियल द्यो दिक्षा ॥ ५ ॥ एह अमे ओलग करू, सुणज्यो बीजा चंद ॥ वंदणा हमारी वीनंती, जइ कहेज्यो जिनचंद ॥६॥ समवसरण बेठा जिणंद, उपदेशे जिनधर्म ॥ भविक जिव वाणी सुणी, बांधे जे शुभ कर्म ॥ ७ ॥ आठ कर्म चारे कषाय, अढार दोष छंडाय ॥ लही नाण चैातीश अतिशया, वाणी गुण कहेवाय ॥ ८ ॥ भरत क्षेत्रनां भविकजन, वांछे तुम आशिष ॥ हर्षपणे धर्मलाभ द्यो, पूरो संघ जगीश ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ पांचमुं ॥

॥ जय जय त्रिभुवन आदिनाथ, पंचम गति गामी ॥ जय जय करुणा शांत दांत, भविजन हित कामी ॥ १ ॥ जय जय इंद नरिंद वृंद, सेवित सिरनामी ॥ जय जय अतिशयानंत वंत, अंतर्गत जामी ॥ २ ॥ पूर्व विदेह विराजताए, श्री सीमंधर स्वामी ॥ त्रिकरण शुद्ध त्रिहुं कालमें, नितपति करुं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ सिद्धाचल शिखरे चढो, ध्यानधरो जगदीश ॥ मन वच काय एकाग्रशुं, नाम जपो एकवीश ॥ १ ॥ (१) शत्रुंजय गिरि वंदीये, (२) बाहुबली गुणधाम ॥ (३) मरुदेवने (४) पुंडरिक गीरि, (५) रेवतगिरि विश्राम ॥ २ ॥ (६) विमलाचल

(७) सिद्धराजजी, (८) नाम भगोरथ सार ॥ (९) सिद्ध- क्षेत्रने (१०) सहस्र कमल, (११) मुक्तिनिलय जयकार ॥३॥ (१२) सिद्धाचळ (१३) शतकूटगिरि, (१४) ढंकने (१५) कोडीनीवास ॥ (१६) कदंबगिरि (१७) लाहितनमो, (१८) तालध्वज [१९] पुण्यराशि ॥ ४ ॥ [२०] महाबल (२१) दृढशक्ति सही, ए एकवीशह नाम ॥ साते शुद्धि समाचरी, करीए नित्य प्रणाम ॥ ५ ॥ दग्ध शून्य ने अविधि दोष, आति प्रवृति जेह ॥ चार दोष छंडी भजो, भक्तिभाव गुण गेह ॥ ६ ॥ मणुय जन्म पामी करीए, सद्गुरु तीरथ योग ॥ श्री शुभवीरने शासने, शिवरमणी संयोग ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ बीजुं. ॥

॥ श्री आदिनाथ जगन्नाथ, विमलाचल मंडन ॥ जयनाभि कुलाकाश, प्रकाशन दिवाकर ॥ १ ॥ तवदेव पदांभोज, सेवापि दुर्लभा भवेत् ॥ पुण्य संभार हीनानां ॥ कल्पवल्ली व देहिनाम् ॥२॥ ते धन्या मानवा देवा, योगमन्तव शासनं ॥ वंदनीया विभातोये, वंदंते भवतः पदौ ॥ ३ ॥ प्रचंड मम रागादि, रिपुसंतति घातकं॥ श्रीयुगादि जिनाधीशं, देवं वंदे मुदा सदा ॥ ४ ॥ श्री शत्रुंजय कोटीर, कृतं राज्यश्रिया विभो ॥ सर्वोघनाशनं मेस्तु, शासनं ते भवे भवे ॥ ५ ॥ पाताले यानि बिंबानि, यानि बिंबानी भूतले ॥ स्वर्गेपियानि बिंबानि, तानिवंदे निरंतरम् ॥ ६ ॥ इति ॥

चैत्री पुनमनुं चैत्यवंदन.

॥ श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, सिद्धाचल साचो ॥ आदीश्वर जिनरायनो, जोहां महिमा जाचो॥१॥इहां अनंत गुणवंत साधु, पाम्या शिववास ॥ एह गिरि सेवाथी अधिक, होय लील विलास ॥२॥ दुष्कृत सवि दूरे हरे ए, बहु भव संचित जेह ॥ सकल तीर्थ शिर सेहरो. दान नमे धरी नेह ॥ ३ ॥

बीजुं.

॥ ए तीरथ उपर अनंत, तीर्थंकर आव्या॥ वली अनंता आवशे, समतारस भाव्या ॥१॥ आ चोवीशी मांहि एक, नेमीश्वर [३]पांखे॥ जिन तेवीश समोसर्या, एम आगम भांखे ॥२॥ गणधर मुनिवर केवली, समोसर्या गुणवंत ॥ प्रेमे ते गिरि प्रणमतां, हरखे दान हसंत ॥ ३ ॥ इति ॥

त्रीजुं.

॥श्री शत्रुंजय सिद्ध क्षेत्र, पुंडरिक गिरि साचो ॥ विमलाचलने तीर्थराज, जस महिमा जाचो॥१॥ मुक्ति निलय शतकुट नाम, पुष्पदंत भणीजे॥ महापद्मने सहस्रपत्र,गिरिराज कहीजे ॥२॥ इत्यादिक बहु भांति शुं ए, नाम जपो निरधार ॥ धीरविमल कविराजनो, शिष्य कहे सुखकार ॥ ३ ॥

चोथुं.

॥ चैत्री पुनमनो अखंड, शशीधर जिम दीपे, अंगारक आदि अनेक, ग्रह गणने झीपे ॥ १ ॥ तिम पर तीर्थी देवथी, जेह अधिक विराजे ॥ लोकोत्तर अतिशय अनंत, दीपंत दीवाजे ॥ २ ॥ चैत्री पुनमने दीने ए, भजो एह भगवंत ॥ श्री विजयराज सूरिंदनो, दान सकल सुख हुंत ॥ ३ ॥ इति ॥

पाँचमुं.

॥ आदीश्वर जिनरायनो, पेहेलो जे गणधार ॥ पुंडरिक नामे थयो, भविजनने सुखकार ॥ १ ॥ चैत्री पुनमने दिने, केवल सिरि पामी, इण गिरि तेहथी पुंडरिक; गिरि अभिधा पामी ॥२॥ पंच कोडि मुनिशुं लह्या ए; करी अनशन शिव ठाम ॥ ज्ञानविमळ सूरि तेहना; पय प्रणमे अभिराम ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ छठुं ॥

॥ जोयण शत परिमाण एक, जे पहिले आरे ॥ बीजे आरे जोयण जेह, एंशी विस्तारे ॥ १ ॥ तिम त्रीजे जोयण साठ, चोथे पंचास ॥ पांचमे आरे बार सार, विस्तार छे जास ॥ २ ॥ छठाने अंते हुशेए, एक हस्त जस मान ॥ एह अवस्थित छे सदा, ते प्रणमे मुनि दान ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ सातमुं ॥

॥ भरत नरेसर भरत क्षेत्र, चक्रि इण ठामे ॥ आव्यो संघ सजी सनूर, मन आणंद पामें ॥ १ ॥ कंचनमय प्रासाद कीध, उत्तंग उदार ॥ मंडप तोरण विविध जाल, मालित चउ बार ॥२॥ घणु पणसय मित मणि तणिए, थापी रुषभनी मूर्त्ति ॥ दान दया कर तोर्थथी, पसरी जग जस कीर्त्ति ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ आठमुं ॥

॥ रुषभनी प्रतिमा मणिमयी, भरतेश्वर कीधी ॥ ते प्रतिमा छे इणे गिरि, एह वात प्रसिद्धि ॥ १ ॥ देखे दरिसण कोय जास, मानव इणे लोके ॥ त्रीजे भवे जे मुक्ति योग्य, नर तेह विलोके ॥ २ ॥ स्वर्ण गुफा पश्चिम दिशे ए, ए छे जास अहि ठाण ॥ घन सुहंकर विमलगिरि, ते प्रणमुं हित आण ॥३॥ इति॥

॥ नवमुं ॥

॥ सगरादिक नरपति अनेक, इणे पर्वत आव्या ॥ विविध विचित्र विराजमान, प्रासाद कराव्या ॥ १ ॥ भक्ति धरी जिनवर तणी, बहु प्रतिमा थापी ॥ तिणे महियलमां तेहनी, कीरति अति व्यापी ॥ २ ॥ सुरपति नरपतिना थया ए, इहां बहु उद्धार॥ ते शत्रुंजय सेविये, दान सकल सुखकार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ सकल तिर्थ शिर सेहरो, शेत्रुंजा गिरी सोहे ॥ त्रिभुवन तारण तीर्थए, दीठां मन मोहे ॥ १ ॥ ए गिरी उपर आवीया, तिर्थंकर त्रेवीश ॥ सदा नाम ए शास्वतो, नमिये ते निश दीश ॥ ॥ २ ॥ आदि जिणंद समोसर्या, पूर्व नवाणुं वार ॥ रायण तळे श्री ऋषभना, पद प्रणमो धरी प्यार ॥३॥ सदा नाम ए शाश्वतो, भांखे श्री भगवंत ॥ जात्राजे जुगते करे, आवे सही भव अंत ॥ ॥ ४ ॥ पुंडरिक गणधर प्रमुख, मुगति गया मुनिराज ॥ सिद्ध गिरी सेव्यां थकी, कीधां वंछित काज ॥ ५ ॥ विमळ वसी गुण वर्णव्यो, अनुपम सोळ उद्धार ॥ युगाधीश जिनराजने, सेवे सहु नरनार ॥ ६ ॥ राम वाघण दोय पोळ ए, प्रथम तीर्थ प्रवेश ॥ मोतीवशी प्रेमावशी, हेमावशी मुनी शेष ॥७॥ खरतर वशी छीपा-वशी, निरखी जे नितमेव ॥ अदबुद स्वामी अती भलो, दीठो अदभुत देव ॥ ८ ॥ नदी शेत्रुंजो नाहीये, करीये निर्मळ काय ॥ प्रभुपद पुंजे प्रेम शुं, जनम पाप मिट जाय ॥ ९ ॥ ए तीरथनी उपरे, ठावा तीरथ ठाम ॥ पाछिम दिश पेसो सही, रयण बिंब अभीराम ॥ १० ॥ उलखा डोली अती भली, नवण बिंब जळ-नीर ॥ सोभाचंदन तळावडी, सुधरे काज शरीर ॥ ११ ॥ सिद्ध शिला पासे सही, शांति जिन चोमास ॥ साधु अनंता शिव लह्या लह्या शिवपद वास ॥१२॥ सिद्धवडे साधु वडा, जप तप करतां जाण ॥ करम कठण मेटी करी, निश्चे पद निरवांण ॥ १३ ॥ एक

शत आठे आगला, उतम ए गिरा नाम ॥ जघन्य एकवीश जाणज्यो, करवा सुकृत काम ॥ १४ ॥ सुरज कुंड सहायथी, नरपतो चंद नरिंद ॥ कुर्कट रुप मेटी करी, शोभा लही फुलचंद ॥ १५ ॥ छहरी पाले जे समकिती, राखी मन एकतार ॥ नरक कुख गती वारीने, शिवसुख लहे श्रीकार ॥ १६ ॥ अगसठ दोष अठम करी, ए गिरी फरसे आप ॥ सुर सुख पामे शास्वता, प्रगटे पुन्य पसाय ॥ १७ ॥ गौमुख जक्ष चक्रेश्वरी, सदा करे जिन सेव ॥ सानिध्यकारी संघने, दायक वंछीत देय ॥ १८ ॥ श्री सिद्धाचल सेवीये, आणी प्रेम अपार ॥ सदगुरु राज पसायथी, हंस नमे हितकार ॥ १९ ॥ इति ॥

॥ श्री गिरनारजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ नायक त्रिभुवन नाथजी, श्री नेमी जिनसार ॥ प्रभुपद प्रेमे पूजीये, गोरुओगढ गिरनार ॥ १ ॥ ए गिरी उपर एहना, तीन कल्याणक तास ॥ अरिहंत भगती अनुसरो, आणो मन उल्लास ॥ २ ॥ जादवकुल दिनकर जिस्यो, ब्रह्मचारी सरदार ॥ सतिया मांहे शीरोमणी, रुडी राजुल नार ॥३॥ सहसा वन संजम लीयो, गिरीपर केवलज्ञान ॥ कृपानाथ सरखी करी, भावनीने भगवान ॥ ४ ॥ साते टुंक सोहामणी, ए तीरथ अहीठाण ॥ पंचम टुंके श्री प्रभु, पाम्या पद निरवांण ॥ ५ ॥ गुणी अढारे गणधरा, गिरुवा बहु गुणवंत ॥ सहस अढारे श्रमणने, सेवो भविजन संत ॥ ६ ॥ आद भवानी अंबिका, ए तीरथ रखवाल ॥ सेवो भवी

सुधेमने, जावे भवदुःख जाल ॥७॥ भविजन भावे भेटीये, आणी-मन आणंद ॥ हंसविजय नमे हरखसुं, पामे परमानंद ॥८॥ इति ॥

॥ श्री पंच तिर्थनुं चैत्यवंदन ॥

॥ धुर समरुं श्री आदिदेव, विमलाचल मंडण ॥ नाभिराया कुल केसरी, मारुदेवी नंदन ॥१॥ गिरनारे गिरुवो वांदशुं, स्वामी नेमकुमार ॥ बालपणे चारित्र लीयो, तारी राजुल नार ॥ २ ॥ बंभण वाडे वीर जिणंद, मन वंछित पुरे ॥ सायण डायण भुत प्रेत, तेहना मद चूरे ॥ ३ ॥ श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ, महिमाये महंतो, गोडी दोडी जाइये, पुरे मननी खंतो ॥ ४ ॥ चक्रवर्ति पदवी तजी, लीधो संजम भार॥ शांति जिणेसर सोलमां,नित्य नित्य करुं जुहार ॥ ५ ॥ पंचे तीरथ जे नमे, प्रह उठी नरनार ॥ कमळविजय कवी एम कहे, तस घर जय जयकार ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ बीजुं. ॥

॥ आजदेव अरिहंत नमुं, समरुं तारुं नाम ॥ ज्यां ज्यां प्रतिमा जिनतणी, त्यां त्यां करुं प्रणाम ॥१॥ शत्रुंजय श्री आदिदेव, नेम नमुं गिरनार ॥ तारंगे श्रीअजितनाथ, आबु ऋषभ जुहार ॥ २ ॥ अष्टापद गिरि उपरें, जिन चोवीशे जोय ॥ मणिमय मूरतिमानशुं, भरते भरावी सोय ॥ ३ ॥ समेत शिखर तीरथ वडुं, जिहां वीशे जिन पाय ॥ वैभारक गिरि उपरें, श्रीवीर जिनेश्वर राय ॥ ४ ॥

मांडव गढनो राजियो, नामे देव सुपास॥ ऋषभ कहे जिन समरतां, पहोचे मननी आश ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्रीसिद्धचक्रजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ विमल केवल ज्ञान कमळा ॥ ए देशी ॥

॥ सकल मंगल परम कमला, केळी मंजुल मंदिरं ॥ भव कोटि संचित पाप नासन॥नमो नवपद जयकरं ॥१॥ अरिहंत सिद्ध सूरी वाचक, साधु दरिसण सुखकरं ॥ वर ज्ञानपद चारित्र तप ए ॥ नमो० ॥२॥ श्रीपाळ राजा शरीर साजा, सेवता नवपद वरं ॥ जगमाहे गाजा किरति भाजा ॥ नमो० ॥३॥ श्री सिद्धचक्र पसाय संकट, आपदा नासे अरं ॥ वळी विस्तरे सुख मनोवंछित ॥नमो०॥ ॥ ४ ॥ आंबिल नव दिन देववंदन, त्रणे टंक निरंतरं ॥ दोयवार पडिक्कमणा पलेवण ॥ नमो० ॥ ५ ॥ त्रिकाळ भावे पुजीये भव, तारक तीर्थंकरं ॥ तिम गणणुं दोय हजार गुणीये ॥ नमो० ॥६॥ एम विधि सहित मन वचन काया, वश करी आराधीये ॥ तप वर्ष साडाच्यार नवपद ॥ नमो० ॥ ७ ॥ गद कष्ट चुरे सर्व पुरे, यक्ष विमलेश्वर वरं ॥ श्रीसिद्धचक्र पसाय माणिक, विजय विलसे सुखकरं ॥ नमो० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ बीजुं. ॥

॥ सिद्धचक्र आराधतां, भवसागर तरिये ॥ ॥ भव अटवीथी

उतरी शिव वधुने वरीये ॥१॥ अरिहंत पद आराधतां, तिर्थंकर पद पावे ॥ जग उपकार करे घणो, सिधो शिवपुर जावे ॥२॥ सिद्ध पद ध्यातां थकां, अखय अचल पद पावे ॥ कर्म कटक भेदी करी, अकल अरुपी थावे ॥३॥ आचारज पद ध्यावतां, जुगमधान पद पावे ॥ जिनशासन अजवालीने, शिवपुर नयर सोभावे ॥४॥ पाठक पद ध्यावतां, वाचक पद पावे ॥ भणे भणावे भावसुं, सुरपुर शिवपूर जावे ॥ ५ ॥ साधुपद आराधतां, साधुपद पावे ॥ तप जप संयम आदरे, शिवसुंदरीने कामे ॥ ६ ॥ दरसण नाण पद ध्यायतां, दर्सण नाण अजुआले ॥ चारित्र पद ध्यायता, शिव मंदिरमां माले ॥ ७ ॥ केशर कस्तुरी केतकी, मचकुंद मालति माले ॥ सिद्धचक्र सेवुं त्रिकाल, जिम मयणाने श्रीपाले ॥८॥ नव आंबील नव वार शियल, समकितसुं पालो ॥ श्री रुपविजय कवि-राजनो, माणेक कहे थइ उजमालो ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ त्रीजुं ॥

॥ पेहले पद अरिहंतना, गुण गाउ नित्ये ॥ बीजे सिद्धतणा घणा, समरो एक चित्ते ॥ आचार्य त्रिजे पदे, प्रणमो बिहुं करजोडी, नमीये श्री उवझायने, चोथे मद मोडी ॥२॥ पंचमपद सर्व साधुनुं ए, नमतां नाणो लाज ॥ ए परमेष्टी पंचने, ध्याने अविचल राज ॥ ३ ॥ दंसण संकादिक रहित, पदे छठे धारो ॥ सर्व नाणपद सातमे, खिण एक नवि विसारो ॥ ४ ॥ चारित्र

चोखुं चित्तथी, पद अष्टमे जपीए ॥ सकल भेद विचे दान फल, तप नवमे तपीये ॥५॥ ए सिद्धचक्र आराधतां, पुरे वंछित कोड ॥ सुमतिविजय कविरायनो, राम कहे करजोड ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ चोथुं ॥

॥ प्रथम नमुं अरिहंतने, गुण बार सहिता ॥ पद बीजे नमो सिद्धने, भवीअड गुणवंता ॥ १ ॥ पद त्रीजे आचार्यजी, गुण छत्रीश विराजे ॥ उपाध्याय चोथे पदे, जस गुण पचवीश छाजे ॥ ॥ २ ॥ सतावीश गुण साधुजी, ते त्रिलोकमां नमिंद्र ॥ सडसठि बोले अलंकर्यो, दर्शन गुण रमिंद्र ॥ ३ ॥ ज्ञान नमो पद सातमे, भेद एकावन रुप ॥ चरण सित्तरी गुण नमो, निजगुण रमण स्वरुप ॥ ४ ॥ नवमे पद भवि तप नमो, इच्छारोधक जेह ॥ भेद पचास छे एहना, अशुभ करम दव मेह ॥५॥ अंगदेश चंपा धणी, मयणां साथे श्रीपाळ ॥ सिद्धचक्र आराधीने, जेम लहो ऋद्धि रसाळ ॥ ६ ॥ तेम आराधे जे भवी, सिद्धचक्र मन रंग ॥ श्री जिन दीपक एम कहे, ते लहे शिव सुख संग ॥७॥ इति ॥

॥ पांचमुं ॥

॥ सिद्धचक्र सेवो सुगुण, भावे भवि प्राणी ॥ वंछित पूरण सुरतरु, सुरमणी सम जाणी ॥ १ ॥ सिद्धचक्र सेव्यो जेणे, सुकि गुण मणी खांणी ॥ ऋद्धि वृद्धि नव निधि सिधि, निज मंदिर

आणी ॥ २ ॥ सिद्धचक्र आराधशेए, भाव धरो नर देह ॥ संसार सागरने तरी, शिवसुख लेशे तेह ॥ ३ ॥ आसो शुदी चैत्री शुदी, करी निर्मळ काय ॥ नव दिन आंबिल तप तपो, जेम नवनिधि पाय ॥ ४ ॥ जाप जपो अरिहंत सिद्ध, सूरि उवझाय ॥ साहु द-सण नाण चरित्र, तप शिव सुखदाय ॥ ५ ॥ सिद्धचक्र पूजो भाव-शुंए, सेवो साधु महंत ॥ पडिक्कमणादिक विधि करो, जेम लहो सुख अनंत ॥ ६ ॥ अंगदेश चंपा पुरीश, श्री श्रीपाळ कुमार ॥ सिद्धचक्र आराधीने, पाम्या सुख सार ॥ ७ ॥ रोग शोग तस नवणथी, नाठा निरधार ॥ पाम्यो वंछित राज रुद्धि, परण्या बहु नार ॥ ८ ॥ एम जाणी भवि सेवज्योए, जेम लहो सुख अदार ॥ ज्ञानविजय गुरु नामथी, नयविजय जयकार ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री दीवाळीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ मगधदेश पावापुरी, प्रभु वीर पधारया ॥ सोळ पोहोर देइ देशना, भवि जीवने तारया ॥ १ ॥ भूप अढारे भावे सुणे, अमृत जीसी वाणी ॥ देशना दोये रयणीयें, परण्या शिवराणी ॥ २ ॥ राय उठो दीवा करे, अजवाळाने हेते ॥ अमावाश्या ते कही, वली दीवाळी कीजे ॥ ३ ॥ मेरु थकी आव्या इंद्र, हाते लेइ दीवो ॥ मेराइया दिन सफळ करो, लोक कहे सवी जीवी ॥ ४ ॥ कल्याणक जाणी करी, दीवा ते कीजे ॥ जाप जपो जिनराजनो,

पातिक सवि छीजे ॥ ५ ॥ बीजे दीन गौतम मुणी, पाम्या केवल ज्ञान ॥ बार सहस गुणणु गुंणो, घर होसे कोड कल्याण ॥ ६ ॥ सुरनर किन्नर सहू मिली. गौतमने आपे ॥ भट्टारक पदवी देई, सहू साखे थापे ॥ ७ ॥ जवार भट्टारक थकी, लोक करे जुहार ॥ बेन भाइ जिमाडीया, नंदी वर्धन सार ॥ ८ ॥ भाइ बीज तिहां थकी, वीर तणो अधिकार ॥ जयविजय गुरु संपदा, मुजने दीयो मनोहार ॥ ९ ॥

॥ बीजुं. ॥

॥ वीर जिनवर वीर जिनवर, चरम चैामास, नयरी अपापाये आवीया ॥ हस्तिपाल राजन सभाये, कार्तिक अमावास्या रयणिये ॥ मुहूर्त शेष निर्वाण ताहिं ॥ सोल पहोर देइ देशना, पहोत्या मुक्ति मझार ॥ नित्य दीवाली नय कहे, मलिया नृपति अढार ॥ १ ॥

त्रीजुं.

॥ देव मलिया देव मलिया, करे उत्सव रंग, मेरइयां हाथे ग्रही ॥ द्रव्य तेज उद्योत कीधो, भाव उद्योत जिनेंद्रने ॥ ठाम ठाम एह ओच्छव प्रसिद्धो ॥ लखकोडी छठ फल करी, कल्याणक करो एह ॥ कवि नयविमल कहे इश्युं, धन धन दहाडो तेह ॥ २ ॥

चोथुं

श्रीसिद्धार्थ नृप कुल तिलो, त्रिशला जस मात॥ हरि लंछन तनु सात हाथ, महिमा विख्यात ॥ १ ॥ त्रीश बरस गृहवास छंडी,

लीये संयम भार ॥ बार वरस छद्मस्थ मान, लही केवल सार ॥२॥ त्रीश वरस एम सवि मली ए, बहोतेर आयु प्रमाण ॥ दीवाली दिन शिव गया, कहे नय तेह गुणखाण ॥ ३ ॥ इति महावीर स्वामी निर्वाण चैत्यवंदन. त्रयम् ॥

॥ पांचमुं ॥

॥ नमो गणधर, नमो गणधर, लब्धि भंडार॥ इंद्रभूति महिमा निलो, वड वजीर महावीर केरो ॥ गैातम गोत्रे उपन्यो, गणि अ-ग्यार माहे वडेरो ॥ केवलज्ञान लघुं जिणे, दीवाली परभात ॥ ज्ञान विमल कहे जेहना, नाम थकी सुखशात ॥ १ ॥

॥ छठुं ॥

॥ इंद्रभूति पहिलो भणुं, गैातम जस नाम ॥ गोबर गामे उपन्या, विद्याना धाम ॥ १ ॥ पंचसया परिवारशुं, लेई संयम भार ॥ वरस पचास गृहे वश्या, व्रते वर्षज त्रीश ॥२॥ बार वरस केवल वर्याए, बाणुं वरस सवि आय ॥ नय कहे गैातम नामथी, नित्य नित्य नवनिधि थाय ॥ २ ॥

॥ सातमुं ॥

॥ जीवकेरो जीवकेरो, अछे मनमांहिं ॥ संशय वेद पदे करी, कही अर्थ अभिमान वार्यो ॥ श्री महावीर सेवा करी, ग्रही संयम आप तार्यो ॥ त्रिपदि पामी गुंथीया, पूरव चउद उदार ॥

नय कहे तेहना नामथी, होये जय जयकार ॥ १ ॥ इति गौतम स्वामी केवलज्ञान चैत्यवंदन त्रयम् ॥

॥ श्री पर्युषण पर्वनुं चैत्यवंदन ॥

॥ पर्व पर्युषण गुणनीलो, नवकल्पविहार ॥ चार मासान्तर थीर रहे, एहीज अर्थ उदार ॥ १ ॥ आषाढ शुद चउदश थकी, संवत्सरी पंचास ॥ मुनिवर दिन सित्तेरमें, पडिकमतां चौमास ॥ ॥ २ ॥ श्रावक पण समता धरी, करे गुरुना बहुमान ॥ कल्पसूत्र सुविहित मुखे, सांभले थइ एक तान ॥ ३ ॥ जिनवर चैत्य जुहारीए, गुरु भक्ति विशाल ॥ प्राये अष्ट भवांतरे, वरीए शिव वरमाल ॥४॥ दर्पणथो निजरूपनो, जुवे सुद्रष्टि रुप ॥ दर्पण अनुभव अर्पण, ज्ञान रमण मुनि भूप ॥ ५ ॥ आत्म स्वरुप विलोकतांए, प्रगटयो मित्र स्वभाव॥ राय उदायी खामणां, पर्वपर्युषण दाव ॥ ६ ॥ नव वखाण पूजी सुणो, शुकल चतुर्थी सीमा ॥ पंचमी दिन वांचे सुणे, होय विरोधी नीमा ॥७॥ ए नहीं पर्वे पंचमी,सर्व समाणी चोथे॥ भव भीरु मुनि मानसे, भाख्युं अरिहा नाथे ॥ ८ ॥ श्रुत केवली वयणा सुणी, लही मानव अवतार॥ श्री शुभवीरने शासने, पाम्या जय जयकार ॥ ९ ॥

॥ बीजुं ॥

॥ श्री श्री पजोसणपर्व सेवो, भवीजन सहु हरखी ॥ केवी

रासी सर्व परखणी, निज आतम परखो ॥ १ ॥ गुण अनंत छे जे- हना, धर्मध्यान नित कीजे ॥ प्रभु गुण सर्व संभालीने, निज भाव ओलखीजे ॥ २ ॥ कल्पतरु सम कल्पसूत्र, निजमंदिर पधरावो ॥ गीत गान मन भावसुं, सुभ भावना भावो ॥ ३ ॥ करी वरघोडो अभीनवो, जीन शासन दीपावो ॥ शुभकरणी अनुमोदतां, गुरु स- मीपे लावो ॥ ४ ॥ गुरु मरुपे वायणा, भाव भक्तिने काजे॥ छठ्ठ तप करी निर्मलो, आतमशक्ति माटे ॥५॥ मतिपदाए प्रभु वीरनो, जन्म महोछव किजे॥ भगती वच्छल भगवंतनी, सुकृत भव कीजे ॥ ॥ ६ ॥ अठम तप करी निरमलो, सकल सुणो अधिकार ॥ नाग- केतुनीपरे निरमलो, जेम पामे भवपार ॥७॥ वली सुणवा बारसे सुत्रनां, भवी थइ उजमाल ॥ श्रीफल स्वामी प्रभावना, करी टालो जंजाल ॥८॥ अठाइ महोच्छव एणीपरे, पालो निरती चार ॥ का- रज कारण फल होशे; ते तरशो भवपार ॥९॥ धीप नंदीसर आ- ठमे, देवमली सुभदाय ॥ अठाइ ओच्छव करी, निजनिज थानक जाय ॥ १० ॥ सुलभ बोधी जीवना, हरखी साते घात ॥ ते माटे आराधवा, मन कीजे रळीयात ॥ ११ ॥ तपगच्छ नायक गुण नीळोए, विजयसेन सुरीराय ॥ पंडीत पद्मविजय तणो, दीपविजय गुण गाय ॥ १२ ॥ इति ॥

श्रीजुं.

॥ प्रणमुं श्री देवाधि देव, जिनवर श्री महावीर ॥ सूरनर सेवा शांतदांत, प्रभु साहस धीर ॥१॥ पर्व पर्युषण पुन्यथी, पामी

भवी प्राणी ॥ जैन धर्म आराधीये, समकित हित जाणी ॥२॥ श्री जिनप्रतिमा पूजिये ए,कीजे जन्म पवित्र ॥ जीव जतन करी सांभळे, प्रवचन वाणि वनित ॥ ३ ॥ इति ॥

चोथुं.

॥ वडा कल्प परव दिने, घरे कल्पने लावो ॥ राति जगा प्रमुखे करी, शासन ने सोभावो ॥ १ ॥ हयगय सिणगारी कुमर, लावो गुरु पासे ॥ वडा कल्प दिन सांभळो, वीर चरित्र उल्लासे ॥ २ ॥ छठ द्वादश तप कीजीये, धरीये शुभ परिणाम ॥ स्वामीवच्छल प्रभावना, पुजा अभिराम ॥ ३ ॥ जिन उत्तम गोतम प्रतें, कहेजो एकवीस वार ॥ गुरु मुख पद्मे भावसुं, सुणे तो पामे भवपार ॥ ४ ॥ इति ॥

पांचमुं.

॥ श्री शेत्रुंजो सिणगारहार, श्री आदि जिणंद ॥ नाभिराया कुल चंद्रमा, मरुदेवी माय ॥ १ ॥ काश्यप गोत्र इख्याग वंश, विनिताने‌ा राय ॥ धनुष पांचसे देहमान, सोवन सम काय ॥ २ ॥ वृषभ लंछन धूर वंदियेए, संघ सकल सुभरीत ॥ अठाइधर आराधीयें, आगम वांणी वनीत ॥ ३ ॥ (बीजुं) प्रणमुं श्री देवाधिदेव, जिनवर महावीर ॥ सुरनर सेव्यो सांतदांत, प्रभु साहस धीर ॥ १ ॥ परव पजूसण पुण्यथी, पामी भवी प्रांणी ॥ जैन धरम आराधियें, समकित हित जांणी ॥२॥ श्री जिनप्रतिमा पूजी-

येए, कीजे जनम पवित्र ॥ जीव जतन करी सांभलो, प्रवचन वांणी वनित ॥ ३ ॥ (त्रीजुं) कल्पतरु वर कल्पसूत्र, पूरे मनवंछित ॥ कल्पधर धूरथी सुणो, श्री वीर चरित्र ॥ १ ॥ खत्री कुंडे नरपति, सिद्धारथ राय ॥ राणी त्रिसला तणी कुखे, कंचन सम काय ॥२॥ पुष्पोतर विमानथी चवीए, उपना पून्य पवित्र ॥ चतुरा चौद सूपन लहे, उपजें विनय विनित ॥ ३ ॥ (चोथुं) सुपनविध कहे सूत होस्यें, त्रिभूवन सिणगार ॥ ते दिनथी रिद्धें वध्या, धन अखुट भंडार ॥ २ ॥ साढासात दिवस अधिक, जनम्या नवमासे ॥ सुरपति करे मेरु सिखरे, ओच्छव उल्लासें ॥ २ ॥ कुंकुम हाथा दोजोये ए, तोरण झाकझमाळ ॥ हरखे वीर हुलरावीये, वांणी वनित रसाल ॥ ३ ॥ (पांचमुं) जिननी बहेन सुदर्सना, भाइ नंदिवर्द्धन ॥ परणी यसोदा पदुमनी, वीर सकोमल रत्न ॥ १ ॥ देह दान संवत्सरी, लेइ दिक्षा स्वामी ॥ कर्म खपावी थया केवळी, पंचमी गति पांमी ॥ २ ॥ दीवाळी दीवस थकीए, संघ सकल सुभ रीत ॥ अठम करी तेलाधरे, सुणज्यो एकहि चित्त ॥ ३ ॥ (छठुं) पास जिणेसर नेमनाथ, समुद्रथी वैष्णुव सूणीये ॥ आदिसरना चरित्र, जिननां अंतर सुणीये ॥१॥ गोतमादीक थीरावली, सुद्ध समाचारी ॥ पर्व दीन चैाथे दिनें, भाषा गणधारी ॥ २ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्र तप ए, जिनधरमें जिन चित्त ॥ जिन प्रतिमा जिन सारीखी, वंदु सदा वनित ॥ ३ ॥ (सातमुं) पर्वराज संवच्छरी, दिनदिन प्रते सेवो ॥ श्लोक बारसे कल्पसूत्र, वीर मुनिनो सुणो ॥ १ ॥ परम पाटपर बार बोल, भाख्या गुरु हिरे ॥ संपति श्री विजय मानसूरी,

गच्छपति गंभीरे ॥ २ ॥ जिनशासन सोभा करुए, कीर्ति विजय कहे सीम ॥ वीनय विजय कहे वीरने, चरणे नामुं सोस ॥ ३ ॥ इति पजुसण चैत्यवंदन संपूर्ण ॥

॥ अथ वीस विहरमाननुं चैत्यवंदन ॥

पहेला श्रीमंधर नमो, बीजा जुगमंधर ॥ बाहुजिन त्रिजा नमो, सुबाहु सुखकर ॥ १ ॥ सुजात जीन पंचमा, स्वयंप्रभु जिन छठा ॥ रुषभानन जिन सातमा, अनंतवीरज जिन दीठा ॥२॥ सुरप्रभु नवमा नमो, दशमा देवविसाल ॥ वज्रधर जिन इग्यारमा, चंद्रानन दयाल ॥ ३ ॥ चंद्रबाहु जिन तेरमा, चउदमा भुजगनाथ ॥ इश्वरस्वामी पनरमा, नेमी प्रभुनो करो साथ ॥ ४ ॥ वीरसेन जिन सतरमा, महाभद्र जिनराज ॥ देवजसा ओगणीसमा, अजितवीरज महाराज ॥ ५ ॥ जंबूद्वीपे च्यार जिन, धातकीखंडे आठ ॥ पुष्कराई आठ जिन, नमतां होय नित ठाठ ॥ ६ ॥ ए वीसे जिन वंदीए, विहरमान जगदीस ॥ पूजो प्रणमो प्रेमशुं, धरो ध्यान निस दीस ॥ ७ ॥ धन ते देश नगर पुरी, जिहां विचरे जिनराज ॥ भवि जीवने प्रतिबोधता, सारे आतम काज ॥ ८ ॥ अनुभव रसमयि देशना, स्यादवाद समुदाय ॥ सत्ता धर्म प्रकासता, दुरगति दुःख पलाय ॥ ९ ॥ जिन उत्तम पाद रूपनी ए, निस दिन करो सेवा ॥ अमीकुमर एणीपरे भणे, मोक्ष तणां सुख लेवा ॥१०॥इति

अथ सर्व जिननुं चैत्यवंदन.

॥ श्रीसीमंधर प्रमुख नमु, विहरमान जिन वीश ॥ ऋषभादिक वली वंदीये, संपइ जिन चोवीश ॥ १ ॥ सिद्धाचल गिरनार आबु, अष्टापद वली सार ॥ समेत शिखर ए पंच तीरथ, पंचम गति दातार ॥ २ ॥ उर्ध्व लोकें जिनवर नमुं, ते चोरासी लाख ॥ सहस सत्ताणुं उपरें, त्रेवीश जिनवर भांख ॥ ३ ॥ एकशो बावन कोड वली, लाख चोराणुं सार ॥ सहस चुमालीश सातशे, शाठ जिन पडिमा उदार ॥ ४ ॥ अधोलोकें जिनभवन नमुं, सात कोड बहोंतर लाख ॥ तेरशें कोड नेव्यासी कोड, शाठ लाख चित राख ॥ ५ ॥ व्यंतर ज्योतिषीमां वली, ए जिनभुवन अपार ॥ ते भवि नित वंदन करो, जेम पामो भवपार ॥ ६ ॥ तीर्च्छें लोके शाश्वतां, श्री जिनभुवन विशाल ॥ बत्रीशें ने ओगणसाठ, वंदुं थइ उजमाल ॥ ७ ॥ लाख त्रण एकाणुं सहस, त्रणशें वीश मनोहार ॥ जिन पडिमा ए शाश्वती, नित्य नित्य करुं जुहार ॥ ८ ॥ त्रण भुवन मांहे वली ए, नामादिक जिन सार ॥ सिद्ध अनंता वंदिए, महोदय पद दातार ॥ ९ ॥ इति ॥

श्री चोविश जिन लंछन चैत्यवंदन ॥

॥ ऋषभलंछन ऋषभदेव, अजितलंछन हाथी ॥ संभव लंछन घोडलो, शिवपुरनो साथी ॥ १ ॥ अभिनंदन लंछन कपि, क्रौंच लंछन सुमति ॥ पद्मलंछन पद्मप्रभु, विश्वदेवा सुमति ॥ २ ॥ सुपार्श्व-

लंछन साथियो, चंद्रप्रभु लंछन चंद्र ॥ मगर लंछन सुविधि प्रभु, श्रीवच्छ लंछन शीतलजिणंद ॥ ३ ॥ लंछन खड्गी श्रेयांसने, वासुपूज्यने महिष ॥ सूवर लंछन पाये विमलदेव, भविया ते नामो शिष ॥ ४ ॥ सिंचाणो जिन अनंतने ए, वज्रलंछन श्रीधर्म ॥ शांतिलंछन मरगलो, राखे धर्मनो मर्म ॥५॥ कुंथुनाथ जिन बोकडो, अरजिन नंदावर्त ॥ मल्लि कुंभ वखाणीये, सुव्रत कच्छप विख्यात ॥ ॥ ६ ॥ नमिजिनने नीलोकमल, पामीए पंकजमांही ॥ शंखलंछन प्रभु नेमजी, दीसे उंचे आंहि ॥ ७ ॥ पार्श्वनाथजीने चरण सर्प, नीलवरण शोभित ॥ सिंहलंछन कंचन तनु, वर्द्धमान विख्यात ॥ ॥८॥ एणीपेरे लंछन चितवी ए, ओलखीए जिनराय ॥ ज्ञानविमल प्रभु सेवता, लक्ष्मीरतन सूरिराय ॥ ९ ॥

॥ बीजुं ॥

॥ वृषभ लंछन रुषभदेव, अजितनाथने हाथी ॥ संभवनाथने घोडलो, शिवपुरनो साथी ॥ १ ॥ अभिनंदनजीने कपी, क्रौञ्च लंछन सुमति ॥ पद्म प्रभुने पद्म, वंदी कापो कुमति ॥ २ ॥ सुपार्श्वजिनने साथीओ, चंद्रप्रभुने चंद्र ॥ सुविधिनाथने मघरमत्स्य, शिव शितळ इंद्र ॥ ३ ॥ खडगिय श्रेयांसनाथने, वासुपूज्यने महिष ॥ विमळनाथने सुअर छे, अनंतसिंचाणो वहिष ॥ ४ ॥ धर्मनाथने वज्र वळी, शांतिनाथने हरण ॥ कुंथुनाथने बोकडो, अंबे जिमणे चरण ॥ ५ ॥ अरजिन नंदाव्रत छे, मल्लीनाथने कळश ॥ मुनिसुव्रतने काचबो, नमि निलोत्पल जळश ॥ ६ ॥ नेम-

नाथने पांच जन्यए, पार्श्वनाथने सर्प ॥ महावीरने सिंह छे, प्रभु चोवीशे अर्प ॥ ७ ॥ सोळे जिन सोवन समाए, पद्म वासुपूज्य राता ॥ मल्ली पार्श्व लीलडा, आपे सुखशाता ॥ ८ ॥ चंद्रप्रभुने सुविधि श्वेत, मुनिसुव्रत नेमकाळा ॥ कर्म शत्रुने संहरी, वरिया शिवमाळा ॥ ९ ॥ तरण तारण त्रिहुं लोकनाए, जिहां लगे सुरज चंद्र ॥ करजोडी प्रभुने कहे, श्री नंदय सोम सुरिंद ॥ ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ तीर्थंकरनी राशिनुं ॥

॥ शांति नमी मल्लो मेष छे ॥ कुंथु अजित वृषभाति ॥ संभव अभिनंदन मिथुन ॥ धर्म करक सिंह सुमती ॥ १ ॥ कन्या पद्मप्रभु नेमविर ॥ पास सूपास तुलांए ॥ शशी वृंश्चक घन रुषभदेव ॥ सुविधि शीतल जिनराय ॥ २ ॥ मकर सुव्रत श्रेयांसने, बारमा घटमिन लील ॥ वीमल अनंत अरनामथी ॥ सुखोया श्री शुभवीर ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ एकसो सित्तेर जिन चैत्यवंदन ॥

सोले जिनवर शामळा, राता त्रीश वखाणुं, लीला मरकत मणिसमा, आडत्रिश गुणखाणुं ॥ १ ॥ पीला कंचन वर्ण समा, छत्रीशे जिनचंद; शंख वरण सोहामणुं, पचाशे सुखकंद ॥२॥ सोत्तेर सो जिन वंदोए ए, उत्कृष्टा समकाल; अजितनाथ वारे हुवा, वंदू

थइ उजमाल ॥३॥ नाम जपंतां जिनतणुं, दुरगति दूरे जाय; ध्यान ध्याता परमात्मनुं, परम महोदय थाय ॥ ४ ॥ जिनवर नामे जश भलो, सफल मनोरथ सार; शुद्ध प्रतिती जिनतणी, शिवसुख अनुभव धार ॥ ५ ॥

॥ सिद्धभगवाननुं चैत्यवंदन ॥

जगत भूषण विगत दूषण, प्रणव प्राण निरूपक ॥ ध्यान रूप अनुपम उपम, नमो सिद्ध निरंजनं ॥ १ ॥ गगन मंडल मुक्ति पदं, सर्व उर्द्ध निवासनं ॥ ज्ञान ज्योति अनंत राजे, ॥ नमो० ॥ ॥ २ ॥ अज्ञान निद्रा विगत वेदन, दलित मोह मेराउरव ॥ नाम-गोत्र निरंतराय, ॥ नमो० ॥३॥ विकट क्रोधा मान योधा, माया लोभ विसर्जनं ॥ रागद्वेष विमनोत अंकुर, ॥ नमो० ॥ ४ विमल केवल ज्ञान लोचन, ध्यान शुक्ल समोरितं ॥ योगिनामिति गम्यरूपं, ॥ नमो० ॥ ५ ॥ योगमुद्रा सम समुद्रा, करी पल्यंकासनं ॥ योगिनामिति गम्यरूपं, ॥ नमो० ॥ ६॥ जगत जनके दास दासी, तास आश निरासनं ॥ योगिनामिति गम्यरूपं ॥ नमो० ॥ ७ ॥ समय समकित दृष्टि जनकी, सोय योगी अयोगिकं ॥ देखिता मिलिन होवे, ॥ नमो० ॥ ८ ॥ सिद्ध तीर्थ अतीर्थ सिद्धा, भेद पंच दशादिकं ॥ सर्व कर्म विमुक्ति चेतन, ॥ नमो० ॥ ९ ॥ चंद्र सूर्य दीप मणीकी, ज्योति तेने ओलंगीकनं ॥ तज्यो तिथी कोई अपर ज्योति, ॥ नमो० ॥ १० ॥ एक मांहे अनेक राजे, नेक

मांहि एककं ॥ एक नेककी नहि संख्या, नमो० ॥ ११ ॥ अजर अमर अलख अनंत, निराकार निरंजनं ॥ ब्रह्म ज्ञान अनंत दर्शन, ॥ नमो० ॥ १२ ॥ अचल सुखकी लहेरमां, प्रभु लीन रहे निरंतरं ॥ धर्म ध्यानथी सिद्ध दर्शन, ॥ नमो० ॥ १३ ॥ ध्याने धूप मने पुष्पशे, पंच इंद्र हुताशनं ॥ क्षमा जाप संतोष पूजा, पूजो देव निरंजनं ॥ १४ ॥ नमो सिद्ध निरंजनं ॥ इति ॥

॥ आवती चोवोसीनुं चैत्यवंदन ॥

श्री पद्मनाम पहेला जिणंद, श्रेणोक नृपजीव ॥ सुरदेव बीजा नमुं, सुपास श्रावक जीव ॥ १ ॥ श्रो सुपार्श्व त्रीजावळी, जीव कोणिक उदायो ॥ स्वयंप्रभु चोथा जिणंद, पोटिल मुनिभाई ॥ २ ॥ सर्वानुभूति जिन पंचमाए, दृढायु श्रावक जाण ॥ देवश्रुत छठ्ठा जिणद, श्रोकार्तिक शेठवखाण ॥ ३ ॥ श्रीउदय जिन सातमाए, शंखश्रावक जीव ॥ श्रीपेढाल जिन आठमा, आणंद मुनि जीव ॥४॥ पोटिल नवमा वंदिएए, जीव जेह सुनंद ॥ शतकीरति दशमा जिणंद, सत्य श्रावक आणंद ॥ ५ ॥ सुव्रत जिन अगियारमाए, देवकी राणी जीव ॥ श्रीअममजिन बारमा, जीव [1]केशवगुण खाण ॥ ६ ॥ निष्कशाय जिन तेरमाए, सत्यकी विद्याधर ॥ निष्पुलाक जिन चौदमा, बळभद्र सुहंकर ॥ ७ ॥ निर्मम जिन पंदरमाए, जीवसुळसा भावी ॥ चित्रगुप्त जिन सोळमा, श्रीरोहिणी

१ कृष्ण.

जीवभावि ॥८॥ समाधि जिन सत्तरमा, रेवती श्राविका जाण॥ श्रीसंवर जिन अढारमा, जीव शतानिक वखाण ॥९॥ श्री यशोधर ओगणीसमा, जीव कृष्ण द्वीपायन; विजयनाम जिन वीसमा, जीवकरण माहेण ॥ १० ॥ एकवीसमा श्रीमल्लनाम, जीव नारदनो कहिये ॥ अंबड श्रावक जीव देव, बावीसमा लहीए ॥ ११ ॥ अनंतवीर्य तेवीसमा, जीव अमरनो जेह ॥ भद्रकर जिनचोवीशमा, स्वातिबुद्धि गुणगेह॥१२॥ए चोवीसे जिनवरा,होशे आवंते काळे॥ भाव सहित जे वांदशे, कर जोडाने भाळे॥१३॥ लंछन वर्ण प्रमाण आयुष, अतर सवि सरखा ॥ सांप्रत जिन चोविस परे, चढते सत्रि निरख्या ॥ १४ ॥ पचकल्याणक तेहना, होशे एहज दिवस ॥ धीरविमळ पंडिततणो, ज्ञानविमल सूरीश ॥ १५ ॥

॥ सामान्य जिन चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय तुं जिनराज आज, मळीओ मुज स्वामी; अविनाशी अकलंक रूप, जग अंतरजामी ॥१॥ रूपारुपी धर्म देव, आतम आरामी; चिदानंद चेतन अचिंत्य, शिवलीला पामी ॥ २ ॥ सिद्ध बुद्ध तु वंदतां, सकळ सिद्धि वर बुद्ध, रमो प्रभु ध्याने करी, प्रगटे आतम ऋद्ध ॥ ३ ॥ काळ बहु स्थावर गयो, भमीयो भवमांही; विकलेंद्रिय मांही वस्यो, स्थिरता नहीं क्यांही ॥ ४ ॥ तिर्यंच पचेंद्रिय मांही देव, करमे हुं आव्यो, करी कुकर्म नरके

गयो, तुम दरीशन नहि पायो ॥ ५ ॥ एम अनंत काळे करी ए, पाम्यो नर अवतार; हवे जग तारक तुंही मळ्यो, भवजल पार उतार ॥ ६ ॥

श्री जिन चैत्यवंदन

॥ अद्याभवत सफलता नयन द्वयस्य, देव त्वदीय चरणां बुज वीक्षणेन ॥ अद्य त्रिलोक तिलकं प्रतिभासतेमे, संसार वारि धिरयं चलुक प्रमाणम् ॥ १ ॥ कलेवं चंद्रस्य कलंक मुक्ता, मुक्तावली चारु गुण प्रसन्ना ॥ जगत्रया स्यामिमंत ददाना, जैनेश्वरी कल्प लतेव मूर्तिं ॥२॥ धन्योहं कृत पुण्योहं, निस्तीर्णोहं भवार्ण वात ॥ अनादि भव कांतारे, दृष्टोयेन श्रुतो मया ॥ ३ ॥ अद्य प्रक्षालितं गात्रं, नेत्रेच विमलिकृतं ॥ मुक्तोहं सर्व पापेभ्यो, जिनेंद्र तव दर्शनात् ॥ ४ ॥ दर्शनात दुरित ध्वंसः वंदनात् वंछित प्रदः ॥ पूजनात् पुरुप श्रीदुः, जिनःसाक्षात् सुरद्रुमः ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ जिन पूजानुं चैत्यवंदन ॥

॥ जिनरूपे जिननाथके, द्रव्ये पण तिमहिं ॥ नाम स्थापना भेदथी, प्रगट जगमांहि ॥१॥ अध्यातमथी जोडिये, निक्षेपा चार॥ तो प्रभु रूप समान भाव, पामे निरधार ॥ २ ॥ पावन आतमने करे ए, जन्म जरादिक दुर ॥ ते प्रभु पूजाध्यानथी, राम कहे सुखपूर ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ पांचज्ञानना चैत्यवंदनो ॥

॥ प्रथम मतीज्ञाननुं चैत्यवंदन ॥

॥ श्री सौभाग्यपंचमी तणो, सयल दिवस सिणगार ॥ पांचे ज्ञानने पूजीये, थाये सफल अवतार ॥ १ ॥ सामायिक पोसह विषे, निरवद्य पूजा विचार ॥ सुगंध चूर्णादिक थकी, ज्ञान ध्यान मनोहार ॥२॥ पूर्व दिशे उत्तर दिशे, पीठ रची त्रण सार ॥पंचवरण जिन बिंबने, स्थापीजे सुखकार ॥३॥ पंच पंच वस्तु मेलवी, पूजा सामग्री जोग ॥ पंच वरण कलशा भरी, हरीये दुःख उपभोग ॥ ४॥ यथाशक्ति पूजा करो, मतिज्ञानने काजे ॥ पंच ज्ञानमां धुरे कह्युं, श्री जिनशासन राजे ॥ ५ ॥ मति श्रुत विण होवे नही ए, अवधि प्रमुख महा ज्ञान ॥ ते माटे मति धुरे कह्युं, मति श्रुतमां मति मान ॥६॥ क्षय उपशम आवरणनो, लब्धि होये समकाळे ॥ स्वाम्यादिकथी अभेद छे, पण मुख्य उपयोग काळे ॥ ७ ॥ लक्षण भेदा भेद छे, कारण कारज योगे ॥ मति साधन श्रुत साध्य छे, कंचन कळश संयोगे ॥ ८ ॥ परमातम परमेसरू ए, सिद्ध सयल भगवान ॥ मति ज्ञान पामी करी, केवळ लक्ष्मी निधान ॥ ॥ ९ ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय श्रुतज्ञान चैत्यवंदन ॥

॥ श्री श्रुतज्ञानने नित्य नमुं, स्वपर प्रकाशक जेह ॥ जाणे देखे ज्ञानने, श्रुतथी टळे संदेह ॥ १ ॥ अनाभिलाप्य अनंत भाव,

वचन अगोचर दाख्या ॥ तेहनो भाग अनंतमो, वचन पर्याये आ-ख्या ॥ २ ॥ वळी कथनीय पदार्थनो ए, भाग अनंतमो जेह ॥ चउदे पूरवमां रच्यो, गणधर गुण ससनेह ॥ ३ ॥ मांहोमांहे पूर-वधरा, अक्षर लाभे सरिखा ॥ छठाण वडीया भावथी, ते श्रुत मतिय विशेखा ॥ ४ ॥ तेहिज माटे अनंतमे, भाग निबद्धा वाचा ॥ समकित श्रुतना जाणीये, सर्व पदारथ साचा ॥ ५ ॥ द्रव्य गुण पर्याये करी, जाणे एक प्रदेश ॥ जाणे ते सवि वस्तुने, नंदीसूत्र उपदेश ॥ ६ ॥ चोवीश जिनना जाणीए, चउद पूरवधर साध ॥ नवशत तेत्रीश सहस छे, अठाणुं निरुपाध ॥ ७ ॥ परमत एकांतवादीनां, शास्त्र सकल समुदाय ॥ ते समकितवंते ग्रह्यां, अर्थ यथारथ थाय ॥ ८ ॥ अरिहंत श्रुत केवली कहे ए, ज्ञाना-चार चरित्त ॥ श्रुतपंचमी आराधवा, विजयलक्ष्मी सूरि चित्त ॥९॥ ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय अवधिज्ञान चैत्यवंदन ॥

॥ अवधि ज्ञान त्रीजुं कह्युं, प्रगटे आत्म प्रत्यक्ष ॥ क्षय उपशम आवरणनो, नवि इंद्रिय आपेक्ष ॥ १ ॥ देव निरय भव पामतां, होय तेहने अवश्य ॥ श्रद्धावंत समय लहे, मिथ्यात विभग वश्य ॥ २ ॥ नर तिरिय गुणथी लहे, शुभ परिणाम संयोग ॥ काउ-स्सग्गमां मुनि हास्यथी, विघटयोते उपयोग ॥ ३ ॥ जघन्यथी जाणे जूए, रूपी द्रव्य अनंता ॥ उत्कृष्टा सवि पुद्गला, मूर्ति वस्तु

मुणंता ॥ ४ ॥ क्षेत्रथी लघु अंगुलतणो, भाग असंखित देखे ॥ तेहमां पुद्गल खंध जे, तेहने जाणे पेखे ॥ ५ ॥ लोक प्रमाणे अलोकमांए, खंड असंख्य उक्किट्ठ ॥ भाग असंख्य आवलितणो, अद्धा लघुपणे दिठ ॥६॥ उत्सर्पिणी अवसर्पिणी ए, अतीत अनागत अद्धा ॥ अतिशय संख्या तिगपणे, सांभलो भाव प्रबंधा ॥७॥ एक एक द्रव्यमां चार भाव, जघन्यथी ते निरखे ॥ असंख्याता द्रव्य दीठ, पर्यव गुरुथी परखे ॥ ८ ॥चार भेद संक्षेपथी ए, नंदीसूत्र प्रकाशे ॥ विजयलक्ष्मी सूरि ते लहे, ज्ञान भक्ति सुविलासे ॥ ९ ॥ इति चैत्यवंदनं समाप्तं ॥

॥ अथ चतुर्थ मनःपर्यव ज्ञान चैत्यवंदन ॥

॥ श्री मनःपर्यव ज्ञान छे; गुणप्रत्ययी ए जाणो ॥ अप्रमादि रुद्धिवंतने, होय संयम गुणठाणो ॥ १ ॥ कोइक चारित्रवंतने, चढते शुभ परिणामे ॥ मनना भाव जाणे सही, सागारि उपयोग ठामे ॥ २ ॥ चिंतविता मनोद्रव्यना ए, जाणे खंध अनंता ॥ आकाशे मनोवर्गणा, रह्या ते नवि मुणंता ॥ ३ ॥ संज्ञी पचेंद्रिय प्राणीये, तनु योगे करी ग्रहीया ॥ मन योगे करी मनपणे, परिणमे ते द्रव्य मुणीया ॥ ४ ॥ तिहुं माणसक्षेत्रमां, अढी द्वीप विलोके ॥ तिर्छालोकना मध्यथी, सहस जोयण अधोलोके ॥ ४ ॥ ऊरध जाणे ज्योतिषी लगे ए, पलियनो भाग असंख्य ॥ कालथी भाव बधा थशे, अतीत अनागत संख्य ॥ ६ ॥ भावथी चिंतव द्रव्यना,

असंख्य पर्याय जाणे ॥ रूजुमतिथी विपुलमति, अधिका भाव वखाणे ॥ ७ ॥ मनना पुद्गल देखीने, अनुमाने ग्रहे साचुं ॥ वितथपणुं पामे नही, ते ज्ञाने चित्त राचुं ॥ ८ ॥ अमूर्त्ती भाव प्रगटपणे ए, जाणे श्री भगवंत ॥ चरण कमल नमु तेहनां, विजयलक्ष्मी गुणवंत ॥ ९ ॥ इति चैत्यवंदनम् ॥

॥ अथ पंचमकेवलज्ञान चैत्यवंदन ॥

॥ श्री जिन चउनाणी थइ, शुकलध्यान अभ्यासे ॥ अतिशय अतिशय आत्मरूप, क्षण क्षण प्रकाशे ॥ १ ॥ निद्रा स्वप्न जागर दशा, ते सवि दूरे होवे ॥ चोथी ऊजागर दशा, तेहनो अनुभव जोवे ॥ २ ॥ क्षपकश्रेणी आरोहिया ए, अपूर्व शक्ति संयोगे ॥ लही गुणठाणुं बारमुं, तुरीय कषाय वियोगे ॥ ३ ॥ नाण दंसण आवरण मोह, अंतराय घनघातो ॥ कर्म दुष्ट उच्छेदीने, थया परमातम जाती ॥ ४ ॥ दोय धर्म सवि वस्तुना, समयांतर उपयोग ॥ प्रथम विशेष पणे ग्रहे, बीजे सामान्य संयोग ॥ ५ ॥ सादी अनंत भांगे करी ए, दर्शन ज्ञान अनंत ॥ गुणठाणुं लही तेरमुं, भाव जिणंद जयवंत ॥ ६ ॥ मूल पयडिमां एक बंध, सत्ता उदये चार॥ उत्तर पयडीनो एक बंध, तिम उदय रहे बायाल ॥ ७ ॥ सत्ता पंच्यासी तणी, कर्म जेहवां रज्जु छार ॥ मन वच काया योग जास, अविचल अविकार ॥ ८ ॥ संयोगी केवली तणी ए, पामी दशाये विचरे ॥ अक्षय केवलज्ञानना, विजयलक्ष्मी गुण उच्चरे ॥९॥ इति श्री केवलज्ञान चैत्यवंदनम् ॥

॥ बीजनुं चैत्यवंदन ॥

॥ बीज रीझ करी सिंचीए, प्रथम तिथिमां एह ॥ चंद्रकळा उदये वधे, तेम पुण्योदय रेह ॥१॥ अभिनंदन सुमति प्रभु, दशमां शितळनाथ ॥ वासुपूज्य अरनाथजी, सुगतिपुरीना नाथ ॥ २ ॥ इत्यादिक जिनवर तणा, जनम नाण निर्वाण ॥ बीज तणे दिन वंदतां, पामो क्रोड कल्याण ॥ ३ ॥ दुविह धर्मने सेवीए, निश्चय ने व्यवहार ॥ आगम नो आगम तणो, भावो तत्व विचार ॥ ४ ॥ बीजे ठाणे वर्णव्या, दोय दोय जे भेद ॥ बीज तणे दिन मुनिवरा, ध्याता ध्यान दुभेद ॥ ५ ॥ अंग उपांगे वर्णव्या, जीव अजीव पुन्य पाप ॥ बंध मोक्ष दुग श्रेणीओ, भव्य अभव्यनी छाप ॥ ६॥ बहु श्रुत चरण कमळ नमी, संशय करीए दुर ॥ गौतम प्रश्नोत्तर करे श्री शुभवीर हजुर ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ बीजनुं चैत्यवंदन ॥ बीजुं ॥

॥ विम विजय विजयापुरी, सुदृढ नृप तात ॥ युगमंधर जिनवर नमुं. जस तारा मात ॥ १ ॥ प्रिया मंगळानो नाहलो, गज लंछन सोहे ॥ सोवन वन धनु पांचसे, भविजन मन मोहे ॥ २॥ लक्ष चोराशी पुरवनुं ए, आयुमान लह्यो एह ॥ सुद्धा संयम संग्रही, केवळ पाम्या जेह ॥ ३ ॥ त्रिगडे बेठा भविकने, आपे उपदेश ॥ प्रातिहार्य आठे भला, अतिशय चोत्रीश ॥ ४ ॥ पांत्रिश वाणी गुण कह्या, सो कोडी मुनी संघात ॥ दश लक्ष केवळ धर मुनि,

वंदु निशदीन प्रभात ॥ ५ ॥ महाविदेह विचरताए, वंदु सुरनर कोडी ॥ पंडित धीरविमल तणो, नय वंदे कर जोडी ॥ ६ ॥इति॥

॥ बीजनुं चैत्यवंदन ॥ त्रीजुं ॥

॥ चोविशमां जिनराजजी, चंपापुरी आवे; चौद सहस अणगारना; स्वामी तेह कहावे ॥ १ ॥ अढाकोस उंचो सहि, समवसरण वीरचावे, त्रिभुवन पति गुरु तेहमां, उपदेश वरसावे. ॥२॥ जितशत्रु राजा तिहां, प्रभुने वंदन आवे; तेपण समवसरण मांहो, बेसी हरषित थावे. ॥ ३ ॥ भविक जीव तारण भणी, गौतम पूछे जिनने; बीज तिथि महिमा कहो, संशय हरण प्रभु अमने. ॥४॥ तव प्रभु परखदा आगळे, बीजनो महिमा भाखे; पंच कल्याणक जिनतणा. ते सहु संघनी साखे. ॥ ५ ॥ बीजे अजित जनमोया, बीजे सुमति च्यवन; बीजे वासुपूज्यजी, लहुं केवळ नाण. ॥ ६ ॥ दशमा शीतळनाथजी, बीजे शिव पाम्या; सातमा चक्री अरजिन, जन्म्या गुणधाम. ॥ ७ ॥ ए पांचे जिन समरतांए, भवि पामे दोय धर्म; सर्वविरति ने देशविरति, टाळे पातिक भर्म. ॥ ८ ॥ वीर कहे द्वितीया तिथि, ते कारण तमे पाळो; चंद्रकेतु राजा परे, आतम अजवाळो. ॥ ९ ॥ ते सांभळी बहु आदरे, प्राणी बीज तिथि सार; ते आराधतां केइना, थया आतम उद्धार. ॥ १० ॥ चौविहार उपवास करी, बीज आराधो विवेक; नयसागर कहे वीरजिन, द्यो मुजने शिव एक. ॥ ११ ॥

॥ पांचमनुं चैत्यवंदन ॥ पहेलुं ॥

॥ बारे परखदा आगळे, श्री नेमी जिनराय ॥ मधुरी ध्वनी दीये देशना, भवीजनने हित दाय ॥ १ ॥ पंचमी तप आराधीए, जेम लीजीए नाण ॥ कार्तिक शुदी पांचम ग्रही, हर्ष धरो मन आण ॥ २ ॥ पांच वरस वळी उपरे, पांच मास लगी जाणी ॥ अथवा यावत् जीव लगे, आराधो गुण खाणी ॥ ३ ॥ वरदत्तने गुणमंजरी, पंचमी आराधी ॥ अंते आराधन करी, शिवपुरने साधी ॥ ४ एणीपरे जे आराधशे, पंचमी विधि संयुक्त ॥ जिन उत्तम पद पद्मना, नमी थाये शिवभक्त ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्री पंचमीनुं चैत्यवंदन ॥ बीजुं ॥

॥ युगला धर्म निवारीओ, आदिम अरिहंत ॥ शांतिकर श्री शांतिनाथ जय करुणावंत ॥ १ ॥ नेमिसर बावीसमां, बालथकी ब्रह्मचारी ॥ प्रगट प्रभावी पार्श्वनाथ, रत्नत्रय आधारी ॥ २ ॥ वर्द्धमान शासन धणीए, वर्द्धमान जगदीश ॥ पांचे जिनवर प्रणमतां, जगमां वाधे जगीस ॥ ३ ॥ जन्म कल्याणक पंचरूप, सोहमपति आवे ॥ पंच वरण कलसे करी, सुरगिरि न्हवरावे ॥ ४ ॥ पंच शिष्य अंगुठडे, अमृत संचारे ॥ बालपणे जिनराज काज, इम भगति सुधारे ॥ ५ ॥ पंच धाय पालिजतां. योवन वय पावे ॥ पंच विषे विष वेल त्रोडि, संजम मन भावे ॥ ६ ॥ छंडी पंच प्रमादने, पंच इंद्री बळ मोडी ॥ पंच महाव्रत आदरे, देइ धन कोडी ॥ ७ ॥

पंचाचार आराममां, पामु पंचम नाण ॥ पंच देह वर्जित थयो, पंच ह्रस्वाक्षर मान ॥ ८ ॥ पंचम गति भरतार तार, पुरण परमानंद ॥ पंचमी तप आराधतां, श्री खिमाविजय जिनचंद ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ ज्ञानपंचमीनुं चैत्यवंदन ॥ त्रीजुं ॥

श्यामल वान सोहामणा, श्रीनेमि जिनेश्वर; समवसरण बेठा कहे, उपदेश सोहंकर. ॥ १ ॥ पंचमी तप आराधतां, लहे पंचम नाण; पांच वरस पंचमासनो, ए छे तप परिणाम. ॥ २ ॥ जिम वरदत्त गुणमंजरीए, आराध्यो तप एह; ज्ञानविमळ गुरु एम कहे, धन धन जगमां तेह. ॥ ३ ॥

॥ श्री अष्टमीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ अष्टमी दिन धन जिनवरु ए, चंद्रप्रभु मनोहार ॥ सेवा करतां जेहनी, टाळे भव दुःख द्वार ॥ १ ॥ भगवन् भाखित जे वचन, धारं गुण भंडार ॥ तेहिज अष्टमि तप भण्युं, आगम अर्थ उदार ॥ ॥ २ ॥ ज्ञायक ज्ञेय स्वरुपथी ए, चरणधरे सुखकार ॥ अष्टमि तप आराधवा, करे शुभ भाव विचार ॥ ३ ॥ अष्ट वरष अष्ट मासनी ए, तपविधि विधिमां सार ॥ श्रावक तनमन वचनथी, पाळे निरतिचार ॥ ४ ॥ पोसह पडिक्कमणुं करीए, पुजे जिन अंग अविकार ॥ करुणा सागर गुण भर्या, मुनिजन वंदे विचार

॥ ५ ॥ आगम वयण सुणि करीए, पुछे प्रश्न विचार ॥ गुरुगम लहिने सद्दहे, समकित वड विस्तार ॥ ६ ॥ परम सरुप परमेसरुए, परमातम जगदिश ॥ चंद्र प्रभु जिन अष्टमां, वंदो धरि सुजगीस ॥ ७ ॥ सारण वारण चोयणाए, प्रति चोयणनां जाण ॥ वस्त्र पात्र तेहने दिये, ती लहे सुख निरवाण ॥ ८ ॥ एहवी वाणी स्वमुखें, फरमावो जिनराज ॥ भव्य जीव श्रवणे सुणी, धारो आतम काज ॥ ९ ॥ मान क्रोध मद परिहरीए, धारो शुद्ध स्वभाव ॥ आतम ज्ञान नये गृहि, आनंद घनरस पाव ॥ १० ॥ शांति सुधारस गुणभर्याए, अनुभव भाव जिणंद ॥ अचरण तेज अमृतसमो, रत्नमुनि गुणवृंद ॥ ११ ॥ उज्जल अष्टमिदिन भण्युए, समकीतीने सुखदाइ ॥ चंद्रमुनि गुण योग्यता, लहि आगम गुण छांहि ॥१२॥ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ आठमनुं चैत्यवंदन. बीजुं ॥

चैत्र वदि आठम दिने, मरुदेवी जायो ॥ आठ जाति दिग कुमरीये, आठ दिश गायो ॥ १॥ आठ इंद्राणी नाथशुं, सुर संगते लइ आवे ॥ सुरगिरि उपर सुरवरा, सर्वे मलि आवे ॥२॥ आठजाति कलशा भरी, चोसठ हजार ॥ दोयसेने पचास मान, अभिषेक उदार ॥ ३ ॥ एक क्रोडने साठ लाख, उंचा तीस कोश ॥ पहुल पणे अडचाल कोश, कलशा जल कोस ॥ ४ ॥ चार वृषभ

अडशंग रंग, आठे जल धारे ॥ नवरावे जिनराजने, सुर पाप पखाले ॥ ५ ॥ क्षुद्रादिक अडदोष शोष, करि अडगुण पोखे ॥ टालि आठ प्रमाद आठ, मंगल आलेखे ॥ ६ ॥ क्रोड आठ चोगणो, कंचन वरसावे ॥ प्रभु सोंपी निज मातने, नंदीश्वर जावे ७॥ अट्ठाई महोच्छव करोए, ठवणा जिन उद्देश ॥ आठ प्रकारे पूजिए, आठम दिन सुविशेष ॥८॥ ऋषभ अजित सुमति नमी, मुनिसुव्रत जन्म ॥ अभिनंदनने नेम पास, पाम्या शिव शर्म ॥ ९ ॥ संभव देव सुपास दोय,सुरभवथो चविया ॥ सेना पुथ्वी मात दुग, उदरे अवतरीया ॥ १० ॥ वरस एक उद्घोषणाए, ऋषभ लीये चारित्र ॥ आठम दिन इग्यार इम, कल्याणक सुपवित्र ॥ ११ ॥ दंसण नाण चारित्रना, आठे आचार ॥ टाले गाले पापने, पाळे पंचाचार ॥ ॥ १२ ॥ अणिमादिक अड ऋद्धि सिद्धि, क्षणमांहे पामे ॥ आठे करम हणी थया ॥ अडगुण अभिराम ॥ १३ ॥ आठम दिन उज्वल मनेए, समरो दश अरिहंत ॥ क्षमाविजय जिन नामथी, प्रगटे ज्ञान अनंत ॥ १४ ॥ मंत्रादिक अड अष्ट बोध, पामी अडबुध ॥ खेदादिक अड दोष छेद, पडिकमणे शुद्ध ॥ १५ ॥ अद्वेषादिक आठ गुण धरे, अड मद तजिए ॥ यम नियमादिक आठ जोग, गुण संपद भजीए ॥ १६ ॥ आठम दिन आराधिये, धातकी पुष्कर अर्द्ध ॥ क्षमाविजय जिन विचरता,प्रातिहार्य समृद्ध ॥ १७ ॥ इति आठमनुं चैत्यवंदन ॥

॥ आठमनुं चैत्यवंदन त्रीजुं ॥

॥ आठम तप आराधीए, भाव धरी उल्लास ॥ आठ आत्मा ओळखो, पामो लील विलास ॥ १ ॥ आठ बुद्धि गुण आदरो, मळो अष्टांग योग ॥ अष्ट महा सिद्धि संपजे, न आवे रोगने शोक ॥ २ ॥ योगदृष्टि आठ आदरोए, मित्रादिक सुखकार ॥ अष्ट महामद टाळोए, जेम पामो भव पार ॥ ३॥ प्रवचन माता आठने, आदरा धरी मन रंग ॥ आठ ज्ञानने आळखो, शिव वधुनो करो संग ॥ ४॥गणो संपदा आठने, आठम दीने धारो ॥ नरक तिर्यंच गति दुःखनो, तेहनो नहीं आरो ॥५॥ आठ जात कळशे करोए, न्हवरावो जिनराय ॥ आठ योजन जाडी कही, सिद्ध शिला मुनिराय ॥ ६ पूजा अष्ट प्रकारनो, समजो करो तम मर्म ॥ अष्टमी व्रतोने पामोए, क्षय करी आठे कर्म ॥७ ॥ दुर करी आठे दोषने, तेम अडगुण पाळो ॥ ज्ञान दर्शन चारित्रना, आठ अतिचार टाळो ॥ ८ ॥ आठ आठ प्रकारनाए, भेद अनेक प्रकार ॥ आठम दीन प्रकाशीआ, त्रिगडे बेशी सार ॥ ९ ॥ चैतर वदी आठम दीने, मरुदेवी जायो ॥ दिक्षा पण तेहिज दीने, सुरनर मळी गायो ॥ १० ॥ सुमति अजितना जन्म सार, संभवजिन च्यवन ॥ आठम दिन बहु जाणजो, कल्याणक त्रिभुवन ॥११॥ अष्टमी तप भवि-यण करोए, कर्म तपावे जेह ॥ तप करतां जप संपजे, शुभ फळ पामे तेह ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ एकादशीनुं चैत्यवंदन ॥

नेमी जिनेसर गुण नाळो, ब्रह्मचारी सिरदार ॥ सहस पुरुषशुं आदरी, दीक्षा जिनवर सार ॥ १ ॥ पंचावनमें दिन लह्यु, निरुपम केवळनाण ॥ भविक जीव पडिबोधवा, विचरे महियल जाण ॥२॥ विहार करंता आविया ए, बाविसमा जिनराय ॥ द्वारिका नयरी समोसर्या, समवसरण तिहां थाय ॥३॥ बार परखदा तिहां मली, भाखे जिनवर धर्म ॥ सर्व पर्व तिथि साचवो, जिम पामो शिव शर्म ॥४॥ तव पूछे हरि नेमने, दाखो दिन मुज एक॥ थोडो धर्म कर्या थकी, शुभ फळ पामुं अनेक ॥ ५ ॥ नेम कहे केशव सुणो, वरस दिवसमां जोय ॥ मागशर सुदी एकादशी, ए समो अवर न कोय ॥ ६॥ इणदिन कल्याणक थया, नेउं जिनना सार ॥ ए तिथि विधि आराधतां सुव्रत थयो भवपार ॥७॥ ते माटे मोनी तिथि, आराधो मन शुद्ध ॥ अहो रत्तो पोसह करो, मन धरी आतम बुद्ध ॥ ८ ॥ दोढसो कल्याणक तणुं ए, गणणुं गणो मनरंग॥ मौन धरी आराधीये. जिम पामो सुखसंग ॥ ९ ॥ उजमणुं पण कीजीए, चित्त धरी उल्लास ॥ पूठांने वींटांगणें, इत्यादिक करो खास ॥१०॥ एम एकादशी भावशुं, आराधे नर राय ॥ क्षायिक समकितनो धणी, जिन वंदी घर जाय ॥ ११ ॥ एकादशी भवियण करो; उज्वल गुण जिम थाय ॥ क्षमाविजय जस ध्यानथी, शुभ सुरपति गुण गाय ॥ १२ ॥

— : —

॥ एकादशीनुं चैत्यवंदन ॥ बीजुं ॥

अंग अग्यार आराधीए, एकादशी दिवसे; एकादश प्रतिमा वहो समकित गुण विकसे. । १ । एकादशो दिवसे थया, दीक्षा ने नाण; जन्म लह्या केइ जिनवरा आगम परिमाण. । २ ॥ ज्ञानविमळ गुण वाधता ए, सकल कळा भंडार; अगीआरश आराधतां, लहीए भवजळपार. ॥ ३ ॥

॥ एकादशीनुं चैत्यवंदन ॥ त्रीजुं ॥

आज ओच्छव थयो मुज घरे, एकादशी मंडाण; श्री जिननां त्रणसें भलां, कल्याणक घर जाण. ॥ १ ॥ सुरतरु सुरमणि सुरघट कल्पवेली फळी म्हारे; एकादशी आराधतां, बोधिबीज चित्त ठारे । २ । नेमि जिनेश्वर पूजतां ए, पहोंचे मनना कोड; ज्ञान विमल गुणथी लहो, प्रणमो बे कर जोड. ॥ ३ ॥

अथ मौन एकादशीना दोढसो कल्याणकनां नामनुं चैत्यवंदन.

शासन नायक जग जयो, वर्द्धमान जगईश ॥ आतम हितने कारणे, प्रणमु परम मुनीश ॥ १ ॥ स्वट परवि जेणे वर्णवी, तेहमां अधिकी जेह ॥ एकादशी सम को नहीं, आराधो गुण गेह ॥२॥

मागशर शुदी एकादशी, आराधो शिववास ॥ कल्याणक नेउ जिन तणा, एकसोने पचास ॥ ३ ॥ महायश सर्वानुभुति श्रीधर, नमि मल्लि अरनाथ॥स्वयंप्रभ देवश्रुत उदय.मल्लिया शिवपुरसाथ॥४॥ अकलंक शुभंकर सप्त नाथ, ब्रह्मेंद्र गुण गांगिक ॥ सांप्रति मुनि विशिष्ट जिन, पाम्या पुन्यनीरेक । ५ ॥ मृदु व्यक्त कलासत, अरण योग अयोग ॥ परम सुधारति निकशतेश. पाम्या शिव संयोग ॥ ६ ॥ सर्वार्थ हरिभद्र मगधाधिप, प्रयच्छ अक्षोभमलयसिंह॥ दिनरुक घनद पौषध तथा, जपतां मफल्लि जिन ॥७॥ प्रलब चारित्र निधि प्रशम राजित, स्वामी विपरीत प्रसाद ॥ अघटित भ्रमणेंद्र ऋषभचंद्र, समया शिव अश्वाद ॥ ८ ॥ दयांत अभिनंदन रत्नेश ते, सामकोष्ट मरुदेव अतिपार्श्व नंदिषेण व्रतधर निर्वाण तथा, थाये शिव सुख आस ॥ ९ ॥ सौंदय त्रिविक्रम नरसिंह, क्षेमंत संतोषित कामनाथ ॥ मुनि नांथचद्र दाहदिलादित्य. मळीयो शिवपुर साथ ॥ १० ॥ अष्टादिक वणिक उदयज्ञान, तमोकंद सायकांक्ष खेमंत ॥ निर्वाणिक रवि राज प्रथम नमतां दुःखनो अंत ॥ ११ ॥ पुरुरवास अवबोध विक्रमेंद्र. सुशांति हरदेव नंदिकेश ॥ महामृगेंद्र अशोचित धर्मेद्र, संभारो नाम निवेश ॥ १२ ॥ अश्ववृंद कुटलिक वर्द्धमान, नंदिकेश धर्मचंद्र विवेक ॥ कलापक विसोम अरणनाथ, समर्या गुण अनेक ॥ १३ । त्रण पदे त्रण चोवीशीयो, पदे पदे कोडो नाम ॥ चोथा पदमां भावना, आराधो गुण खाण ॥१४॥ दोढसे कल्याणक तणो, गुणणो ए मनोहार ॥

चित्त आणीने आदरो, जिम पामो भवपार ॥ १५ ॥ जिनवर गुणमाला, पुन्यनी ए प्रनाला ॥ जे शिव सुख रसाला, पामोये सुविशाला ॥ जिम उत्तम थुणीजे, पाद तेहना नमीजे जिन-रूप समरीजे, शिव लक्ष्मी वरीजे ॥ १६॥ इति दोढसो कल्याकनुं चैत्यवंदन संपूर्ण ॥

॥ बोजुं ॥

॥ विश्वनायक मुक्तिदायक नमि नेमि निरंजनं, हर्षधरी हरी पूछे प्रभुने भाखो आतिम हितकरं ॥ कुण दिवस एवो वरसमांहे अल्प सुकृत बहुफले, कहे नेउ जिननां हुआं कल्याणक मौन अग्यारसो सुखकरं ॥ १ ॥ केवलि महाजस सर्वानुभुति श्रीधर-नाथए, नमि मल्ली श्री अरनाथ स्वामी साचो शिवपुर साथए ॥ श्री स्वयंप्रभ देवश्रुत अरहंत उदयनाथ जिनेश्वरं, कहे नेउ जिननां हुआ कल्याणक मौन अग्यारसो सुखकरं ॥ २ ॥ अकलंक कर्म कलंक टाले. शुभकरं समरु सदा; सप्तनाथ ब्रह्मेंद्र जिनवर श्री-गुणनाथ नमु मुदा ॥ गांगिकनाथ श्री सांप्रति मुनिनाथ विशिष्ट अतिवर ॥ कहे० ॥ ३ ॥ श्रीमृदु जिनजी जगतवेत्ता व्यक्त अरिहा वंदीए, श्री कलासत आरण ध्याता सहज कर्म निकंदीए ॥ जोग अजोगश्री परमप्रभुजी सुद्धार्त्तिनी केसरं ॥ कहे० ॥ ४ ॥ श्री सर्वार्थ सकल ज्ञायक हरिभद्र अरिहंतए, मगधाधिप जिनेंद्र वंदो श्रीप्रयच्छ गुणवंतए ॥ अक्षोभ मल्लसिंहनाथ दिनरूक् धनंद पोषद

जयकरं ॥ कहे० ॥ ५ ॥ श्रीपलंब चारित्रनिधि जिन प्रशमराजित ध्याइए, स्वामीश्री विपरीतदेव अहोनीश प्रसाद प्रेमे गाइए ॥ अघटितज्ञाना ब्रह्मेंद्र प्रभु ऋषभचंद्रजी अघहर ॥ कहे० ॥ ६ ॥ दयांत दाता जगत केरो अभिनंदन रत्नेशए, सामकोष्ठ मरुदेव नायक अतिपार्श्व विशेषए ॥ नमो नदिषेण व्रतधर श्रीनिर्वाणी दुःखहरं ॥ कहे० ॥ ७ ॥ सौंदर्यज्ञानी त्रिविक्रम जिन नारसिंह नमो तुमे, खेमंत संतोषित अरीहा कामनाथथी दुःख समे ॥ मुनि-नाथने श्रीचंद्रदाहए दिलादित उदयकरं ॥ कहे० ॥ ८ ॥ श्री-अष्टाहिक वाणिग वंदो उदयज्ञान आराधिये, तमोकंदने सायकाक्ष स्वामीखेमंत शिवसुख साधिये ॥ निर्वाणीने रविराज साहिब प्रथम नाथ परमेश्वरं ॥ कहे० ॥ ९ ॥ श्री पुरुरवास अवबोध जगगुरु विक्रमेंद्र वखाणीये, श्रीस्वसांति हरिनंदिकेशने महामृगेंद्र मन आ-णीए ॥ अशोकचित चित्तमां वसे अहनीश धर्मेंद्र जगजस करं ॥ कहे० ॥ १०॥ अश्ववृंद कुटिलक वर्द्धमान नंदिकेशना गुणघणा, श्रीधर्मचंद्र विवेक जगपति कलापक सोहामणा ॥ विसोम सौम्या-कृति जेनी आरणअंगि सुखकरं ॥ कहे० ॥ ११ ॥ त्रीस चोवीसी दशे खेत्रे कालत्रिक जिन लीजीए, पंचकल्याणक त्रीस जिननां इम दोढसो गुणीजीए ॥ जिनभक्ति करतां ध्यान धरतां कोटि तप फल होइनरं ॥ कहे० ॥१२॥ पोषधने उपवास करीने आराधे एकादशी नरभव तेहनो सफल थाये परमानंद पद देहसी ॥ गुरु रुपकीर्त्ति हृदय धरीने माणेक मुनि शिव सुखकरं ॥ कहे० ॥ १३ ॥ इति मौन एकादशी दोढसो कल्याणक नामनुं चैत्यवंदन संपूर्णम् ॥

॥ चौदश तिथिनुं चैत्यवंदन ॥ १ लुं ॥

चौद स्वप्न लहे मावडी, सवि जिनवर केरी; ते जिन नमतां चौद राज, छोके न होय फेरी. ॥ १ ॥ चौदरत्नपति जेहना, प्रणमे पद आवी; चौद विद्याना थया जाण, संयमश्री भावी. ॥२॥ चौदराज शिर उपरे, सिद्ध सकळ गुण ठाण; ज्ञानविमल प्रभु ध्यानथी, होय अचळ अहिठाण ॥ ३ ॥

॥ चौदश तिथिनुं चैत्यवंदन ॥ २ जुं ॥

चौद भुवन वश कारणे, विद्या वर्धमान; वर्धमान सुख आपवा, एहीज परम निधान. ॥ १ ॥ वर्धमान जिनराजनुं, करो भविका ध्यान; चौद भेद छे जीवना, ए यतना प्रधान. ॥ २ ॥ चाद पूर्वनो सार छे ए, चौदशी ए जिनराज; ज्ञानविमळथी जाणीए, एहना सकळ दीवाज. ॥ ३ ॥

॥ पंच तिथि महिमा वर्णन चैत्यवंदन ॥

राजग्रही उद्यानमां, वीर जिनेश्वर आव्या; देवइंद्र चोसठ मळ्या, प्रणमे प्रभु पाया. ॥ १ ॥ रजत हेम मणि रयणनां, तिहु-यण कोट बनाय; मध्य मणिमय आसने, बेठा श्री जिनराय. ॥२॥ चउविह धर्मनी देशना, निसुणे परषदा बार; तब गौतम महा-रायने, पूछे पर्व विचार. ॥३॥ पंचपर्वी तुमे वर्णवी, तेमां अधिको

कोण; वीर कहे गौतम सुणो, अष्टमो पर्व विषेण. ॥ ४ ॥ बीज भवी करतां थकां, बीहुविध धर्म सुणंत; पंचमो तप करतां थकां, पांचे ज्ञान भणंत. ॥ ५ ॥ अष्टमी तप करतां थकां, अष्ट कर्म हणंत; एकादशी करतां थकां, अंग अगीआर भणत. ॥ ६ ॥ चौद पूरव-धर भला ए, चौदश आराधे; अष्टमी तप करतां थकां, अष्टमो गति साधे ॥ ७ ॥ दंडविरज राजा थयो, पाम्यो केवळनाण; अष्टमी तप महिमा वडो, भाखे श्री जिनभाण. ॥ ८ ॥ अष्ट कर्म हणवा भणीए, करीए तप सुजाण; न्यायमुनि कहे भवी तुमे, पामो परम कल्याण. ॥ ९ ॥

॥ श्री महावीर स्वामीना पंचकल्याणकनुं चैत्यवंदन ॥

सिद्धारथ सुत वंदीए, त्रिशलादेवी माय; क्षत्रियकुंडमां अवतर्या, प्रभुजी परम दयाळ. ॥ १ ॥ उज्ज्वळी छठ आषाढनी, उत्तरा फाल्गुनी सार; पुष्पोत्तर विमानथी, चवीआ श्री जिनभाण ॥२॥ लक्षण अडहिय सहस्र ए, कंचनवर्णी काय; मृगपति लंछन पाउले, वीर जिनेश्वर राय. ॥ ३ ॥ चैत्र शुदि तेरश दिने, जन्म्या श्री जिनराय; सुरनर मळी सेवा करे, प्रभुनुं जन्म कल्याण. ॥ ४ ॥ मागशर वदि दशमी दिने, लीए प्रभु संजम भार; चउनाणी जिनजी थया, करवा जग उपकार. ॥ ५ ॥ साडाबार वरस लगे, सह्या परिषह घोर; घनघाती चउ कर्म जे, वळे कर्या चकचुर.

वैशाक शुदि दशमी दिने, ध्यान शुक्ल मन ध्याय. शमी वृक्ष तळे प्रभु. पाम्या पंचम नाण ॥ ७ ॥ संघ चतुर्विध स्थापवा, देशना दीए महावीर; गौतम आदि गणधरु, कर्या वजीर हजुर. ॥ ८ ॥ कार्तिक वदि अमावास दिने, श्री वीर लह्या निर्वाण; प्रभाते इंद्रभूतिने, आप्युं केवळ नाण. ॥ ९ ॥ ज्ञान गुणे दीवा कर्या ए, कार्तिक कमला सार; पुण्ये मुक्ति वधू वर्या, वरती मंगळ माळ. ॥ १० ॥

श्री अतीत चोवीशी चैत्यवंदन.

अतीत चोवोशी प्रथम देव, जिन केवळ[१] ज्ञानो ॥ निर्वाणी[२] सागर[३] महा जस[४], विमळ[५] अभिधानी ॥ १ ॥ सर्वानुभूति[६] श्रीधर[७] सुदत्त[८], दामोदर[९] सुतेजा[१०]; स्वामो[११] सुव्रत[१२] सुमति[१३] ने, शिवगति[१४] सुहेजा[१५] ॥ २ ॥ अस्ताघ[१६] नेमिश्वर[१७] अनिळ[१८], यशोधर[१९] कृतार्थ[२०] जिनेश; शुद्धमति[२१] ने शिवंकरो[२२], स्यंदन[२३] संप्रति[२४] कहेश ॥ ३ ॥

श्री सिद्ध भगवाननुं चैत्यवंदन.

सिद्ध सकळ समरुं सदा, अविचळ अविनाशी; थाशे ने वळी थाय छे, यथा अडकर्म विनाशी ॥ १ ॥ लोकालोक प्रकाश भास, कहेवा कोण शूरो; सिद्ध बुद्ध पारंगत, गुणथी नहीं अधूरो ॥ २ ॥ अनंत सिद्ध एणीपरे नमुं ए, वळी अनंत अरिहंत; ज्ञानविमळ गुण संपदा, पाम्या ते भगवंत ॥ ३ ॥

श्री परमात्मानुं चैत्यवंदन.

जगन्नाथने हुं नमुं हाथ जोडी. करुं विनति भक्तिशुं मान मोडी ॥ कृपानाथ संसार कूपार[1] तारो, लह्यो पुण्यथी आज देदार सारो ॥ १ ॥ सोहिला मळे राज्यदेवादि भोगो, परम दोहिलो एक तुज भक्ति जोगो ॥ घणा काळथी तुं लह्यो स्वामी मीठो, प्रभु पारगामी सहु दुःख नीठो ॥ २ ॥ चिदानंदरूपी परब्रह्म लीला, विलासी विभो त्यक्त कामाग्नि कीलाः गुणधार जोगीश नेता अमायी, जय त्वं विभो भूतळे सुखदायी ॥ ३ ॥ न दीठी जेणे ताहरी जोग मुद्रा, पड्या रात दिसे महा मोहनिद्राः केसी तास होशे गति ज्ञान सिंधो, भमतां भवे हे जगजीव बंधो ॥ ४ ॥ सुधास्यंदिते दर्शन नित्य देखे, गणुं तेहनो हे विभो जन्म लेखेः त्वदाज्ञा वशे जे रह्या विश्वमांहे, करे कर्मनी हाण क्षण एकमांहे ॥ ५ ॥ जिनेशाय नित्ये प्रभाते नमस्ते, भवी ध्यान होजो हृदये समस्ते; स्तवी देवना देवने हर्ष पूरे, मुखांभोज भाळो भजे हेज उरे ॥ ६ ॥ कहे देशना स्वामी वैराग्य केरी, सुणे पर्षदा बार बेठी भलेरी; सुधांभोज धारा समी ताप टाळे, बेहु बांधवा सांभळे एक हाळे ॥ ७ ॥

॥ अथ चउदसें बावन गणधरनु चैत्यवंदन ॥

॥ गणधर चोरासो कह्या ॥ वलि पंचाणु छेक ॥ दोय अधिक इगसयगणा ॥ साल अधिक सत एक ॥ १ ॥ सत

---

१ समुद्र.

सुमतिने गणधरा ॥ इगसय अधिका सात ॥ पंचांणुं त्रांणुं तथा, अडशोइ इगशोइ भ्रात॥२॥छोहोतर छासठ सगवन, पंचासत्रेतालीश॥ छतीस पणतीस कुंथुने ॥ अर गणधर तेत्रीस ॥ ३ ॥ अडत्रिस अष्टादश सुण्या ॥ नमी सतर गणधार ॥ एकादश दश शिव गया ॥ वीरतणा अगीआर ॥ ४ ॥ रुषभादीक चोवीसना ए ॥ एक सहस सय च्यार ॥ अधीकेरा बावन कह्या ॥ सर्व मळी गणधार ॥ ५ ॥ अक्षय पद वरीया सवे ए ॥ सादी अनंत नीवास ॥ करीए सुभचित वंदना ॥ जब लग घटमां सास ॥ ६ ॥ इति ॥

श्री बावन जिनालयनुं चैत्यवंदन.

शुदि आठम चंद्रानन. सर्वज्ञानो गणीजे; ऋषभानन शुदि चौदशे, शाश्वत नाम भणीजे ॥ १ ॥ अंधारी आठम दिने, वर्धमान जिन समीप ॥ वारिषेण वद चौदशे, नमतां पाप निगमीए ॥ २ ॥ बावन जिनालय तप ए, गुण गणणो सुखकार ॥ श्री शुभ वीरने शासने, करीए एक अवतार ॥ ३ ॥

प्रदक्षिणानुं चैत्यवंदन

काळ अनादि अनंतथी, भवभ्रमणनो नहीं पार ॥ ते भ्रमणा निवारवा, प्रदक्षिणा दउं त्रण वार. भमतीमां भमतां थका, भवभावठ दूर पळाय ॥ दर्शन ज्ञान चारित्ररुप, प्रदक्षिणा त्रण देवाय ॥ २ ॥ जन्म मरणादि भय टळे, सीजे जो दर्शन काज ॥

रत्नत्रय प्राप्ति भणी, दर्शन करो जिनराज ॥ ३ ॥ ज्ञान वडुं संसारमां, ज्ञान परम सुखहेत ॥ ज्ञान विना जग जीवडा, न लहे तत्त्व संकेत ॥ ४ ॥ चय ते संचय कर्मनो, रिक्त करे वळी जेह ॥ चारित्र निर्युक्तिए कह्युं, वंदो ते गुण गेह ॥ ५ ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र ए, रत्नत्रयी निरधार; त्रण प्रदक्षिणा ते कारणे, भवदुःख भंजनहार ॥ ६ ॥

विहरमान जिन चैत्यवंदन.

चउ जिन जंबुद्वीपमां, अड धातकीखंडे ॥ पुष्करार्धे आठ जाणीए, एम वीश अखंडे ॥ १ ॥ अड पणवीश चोवीशमी, नवमी विजये विचरंता ॥ बाळ तरुण नृपपदपणे, वळी अपर अरिहंता ॥२॥ शीत्तेर सो उत्कृष्टथी ए, भरहेरवय प्रमाण ॥ ज्ञानविमळ जिनराजनी, शीर धरीए शुभ आण ॥ ३ ॥

अढार दोष वर्जित जिन चैत्यवंदन. (१ लुं)

दान[१] लाभ[२] भोगो[३]पभोग[४], बळ[५] पण[1] अंतराय; हास्य[६] अरति[७] रति[८] भय[९] दुगंछा[१०], शोक[११] षट[2] कहेवाय. ॥ १ ॥ काम[१२] मिथ्यात्व[१३] अज्ञान[१४] निद्रा[१५], अविरति[१६] ए पांच; राग[१७] द्वेष[१८] दोय दोष ए. अढारस संच. ॥ २ ॥ ए जेणे दूरे कर्या ए, तेने कहीए देव; ज्ञानविमळ प्रभु चरणनो, कीजे अहोनिश सेव. ॥ ३ ॥

अढार दोष वर्जित जिन चैत्यवंदन. (२ जुं).

क्रोध[1] मान[2] मद[3] लोभ[4] माय[5], अज्ञान[6] अरति[7] रति[8]; हिंसादिक[9] [10] [11] [3] निद्रा[12] अने, मत्सर[13] ने अप्रीति[14].[4] ॥ १ ॥ शोक[15], भय[16], अने प्रीति[17], रतिक्रीडाप्रसंग[18]; दोष अढार प्रगट निकट, नहीं जेने अंग. ॥ २ ॥ देव सर्व शिर सेहरो ए, ते कह्योए निरधार; ज्ञान विमळ प्रभु भुवननो, पुण्यतणो भंडार. ॥ ३ ॥

॥ रोहिणी तप चैत्यवंदन ॥

वासवपूजित वासुपूज्य, वर अतिशय धारी; केवळकमळा नाथ साथ, अविरति जेणे वारी. ॥ १ ॥ परमातम परमेसरु ए, भविजन नयनानंद; शांत दांत उत्तम गुणी, वर ज्ञान दिणंद. ॥२॥ बेठी बारे पर्षदा, निसुणे जिन गिर्वाण; एक चित्त लय लाइए, देइ निज कान. ॥ ३ ॥ तव जगपति तिहां उपदिशे, रोहिणी तप सुविचार; आराधो भवि भावशुं, आतमने सुखकार. ॥ ४ ॥ सात वर्ष सात मासनी, अवधि कही सुप्रमाण; आराधे सुख संपदा, पामे पद निर्वाण. ॥ ५ ॥ वाचक शुभ नय शिष्यनो ए, भक्तिविजय गुण गाय; वासुपूज्य जिन ध्यानथी अनुभव सुख थाय ॥ ६ ॥

---

१ पांच. २ छ. ३ हिंसा–असत्य ने अदत्त. ४ आने बदले मागधी गाथाओमां हास्य कहेल छे.

॥ श्री आंबिल वर्धमान तपनुं चैत्यवंदन ॥

॥ वर्द्धमान जिनपति नमो, वर्द्धमान तप नाम ॥ ओळी आंबिलनी करुं, वर्द्धमान परिणाम ॥ १ ॥ एक एक दिन यावत् शत, ओळी संख्या थाय ॥ कर्म निकाचित तोडवा वज्र समान गणाय ॥ २ ॥ चौद वर्ष त्रण मासनी, ए संख्या दिननी वीस ॥ यथा विधि आराधतां, धर्मरत्न पद इश ३ ॥

॥ वीस स्थानक नाम चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ पहिले पद अरिहंत नमुं ॥ बिजे सरव सिद्ध ॥ त्रीजे प्रवचन मन धरो ॥ आचारज सिद्ध ॥ १ ॥ नमोथेराणं पांचमे ॥ पाठक गुण छठे ॥ नमोलोए सव्वसाहूणं, जे छे गुण गरीठे ॥ २ ॥ नमो नाणस्स आठमे ॥ दरसण मन भावो ॥ विनय करो गुणवंतनो ॥ चारित्र पद ध्यावो ॥ ३ ॥ नमो बंभवय धारिणं ॥ तेरमें कीरीयाणं ॥ नमो तवस्स चौदमे ॥ गोयम नमोजिणाणं ॥ ४ ॥ चारित्र ज्ञान सुअस्सनें ए, नमो तीथ्थस्स जाणो ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां होय सुख खाणो ॥ ५ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ वीसस्थानक तपना काउसगनुं ॥

चोवीस पणर पीस्तालीसनो, छत्रीशनो करीए ॥ दस पचवीस सतावीसनो, काउसग्ग मन धरीए ॥ १ ॥ पंच सडसठि दस

वली, सितेर नव पणविस ॥ बार अडवीस लोगसतणो, काउसग्ग धरो गुणीस ॥ २ ॥ वीस सतर इगवन्न, द्वादशन पंच ॥ इणीपरे काउसग्ग जे करे, तो जाए भव संच ॥ ३ ॥ अनुक्रमे काउसग्ग मन धरो, गुणो लेज्यो वीस ॥ वीस थानक इम जाणीए, संक्षेपथी लेश ॥ ४ ॥ भाव धरी मनमां घणोए, जो एक पद आराधे ॥ जिन उत्तम पद पद्मने ॥ नमी नीज कारज साधे ॥ ५ ॥ इति संपूर्णम्.॥

थोयानो संग्रह.

॥ श्री ऋषभदेवजीनी स्तुति ॥

॥ प्रह उठी वंदुं, ऋषभदेव गुणवंत ॥ प्रभु बेठा सोहीये, समवसरण भगवंत ॥ त्रण छत्र विराजे, चामर ढाले इंद्र ॥ जिनना गुण गावे, सुरनर नारीना वृंद ॥ १ ॥ बार परखदा बेसे, इंद्र इंद्राणी राय ॥ नव कमल रचे सुर, जिहां ठविया प्रभु पाय ॥ देव दुंदभी वाजे, कुसुम वृष्टि बहु हुंत ॥ एवा जिन चोवीसे, पूजो भवि एक चित्त ॥ २ ॥ जिनजोजन भूमी, वाणीनो विस्तार ॥ प्रभु अरथ प्रकाशे, रचना गणधर सार ॥ सो आगम सुणतां, छेदीजे गती चार ॥ जिन वचन वखाणी, लहीये भवनो पार ॥ ३ ॥ जक्ष गोमुख गीरवी, जिननी भगती करेव ॥ तिहां देवी चक्केसरी, विघन कोड हरेव ॥ श्री तपगच्छ नायक, विजयसेन सुरिराय ॥ तस केरो श्रावक, ऋषभदास गुण गाय ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ बीजो थोय जोडो ॥

। त्र्याशीलाख पुरव घरवासें, वसीया परिकर युक्ता जी ॥ जनम थकी पण देवतरु फल क्षोरोदधि जल भोक्ता जी ॥ मई सुअ ओहि नाणे संयुत्त, नयण वयण कज चंदा जी ॥ चार सहसशुं दीक्षा शिक्षा, स्वामी ऋषभ जिणंदा जी ॥ १ ॥ मनपर्यव तव नाण उपन्युं, संयत लिंग सहावा जी ॥ अढिय द्वीपमां सन्नी पंचेंद्रिय, जाणे मनोगत भावा जी ॥ द्रव्य अनंता सूक्ष्म तीर्च्छी, अढारशे खित्त ठाया जी ॥ पलिये असंखम भाग त्रिकालिक, द्रव्य असंख्य परजाया जी ॥ २ ॥ ऋषभ जिणेसर केवल पामी, रयण सिंहासण ठाया जी ॥ अनभिलप्प अभिलप्प अनंता, भाग अनंत उच्चराया जी ॥ तास अनंतमे भागे धारी, भाग अनंते सूत्र जी ॥ गणधर रचियां आगम पुंजी, करीये जनम पवित्र जी ॥ ३ ॥ गोमुख जक्ष चक्केसरी देवी, समकित शुद्ध सोहावे जी ॥ आदि देवनो सेव करंती, शासन शोभ चढावेजो ॥ श्रद्धा संयुत जे व्रतधारी, विघन तास निवारे जी ॥ श्री शुभ वीरविजय प्रभु भगते, समरे नित्य सवारे जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्री अजितनाथजीनी स्तुति ॥

॥ विश्वनायक लायक, जितशत्रु विजयानंद ॥ पयजुग नित प्रणमे, देव अने देविंद ॥ भाव कहिरी मंदिरी सव, मन धरीये अमंद॥ श्री सूरत संदिरे, वंदो अजित जिणंद ॥ १ ॥ आठ भांती-

हारज, अतिशय वलि चौतीस ॥ दिल रंजण देसन, तेहना गुण पेंतीश ॥ अगणित रिद्ध धारी, आचारोमां ईस ॥ एह गुणना धारक. वांदु जिन चोवीश ॥ २ ॥ शुद्ध अरथ अनोपम, जिन भाषित सिद्धांत ॥ स्याद्वाद नयादिक. हेतु युक्त नवि भ्रांत ॥ पाप करदम पाणो, सदगतिनी सहिनाणी ॥ सुणिये नित भविका, आगम केरी वाणी ॥ ३ ॥ सासणनी साची, देवी सानिध्य कारी ॥ दुःख कष्ट निवारण, सेवीजे सुखकारी ॥ साचे मन समरे, ते सुख लाभ अपारी ॥ जिनलाभ पयंपे, होज्यो जय जयकारी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्री शीतलनाथ जिन स्तुति ॥

॥ सुख समकित दायक, कामित सुरतरु कंद ॥ दढरथ नृप राणी, नंदा केरो नंद ॥ भद्दलपुर स्वामी, फेडे भवना फंद ॥ चित चोखे नमिये, श्री शीतळ जिनचंद ॥ १ ॥ अतित अनागत, हुआ होस्ये अनंत ॥ संप्रति काळे जे, क्षेत्रविदेहे विचरंत ॥ त्रिहुं भवने ठयणा, सायस असासय संत ॥ ते सघळा त्रिकरण, प्रणमुं श्री अरिहंत ॥ २ ॥ कालिक उत्कालिक, अंग अनंग पवित्र ॥ नय भंग निक्षेपा, स्यादवाद मित सिठ ॥ भविजन उपगारी, भारी जिन उपदेश ॥ श्रुत श्रवणे सुणंतां, नासे कोडि कलेश ॥ ३ ॥ ब्रह्म जक्ष अशोका, शासन सुरि सुविचार ॥ संघ सानिध कारी, निरमळ समकित धार ॥ चिंता दुख चूरे, पुरे मनह जंगीस ॥ ध्यान तेहनो धरीये, कहे जिन लाभ सूरीस ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्री शांतिनाथजीनी स्तुति ॥

॥ शांति जिनेसर समरिये ॥ ए देशी ॥

॥ शांति सुहंकर साहिबो, संयम अवधारे ॥ सुमतिने घरे पारणुं, भवपार उतारे ॥ विचरंता अवनी तळे, तप उग्रविहारे ॥ ज्ञान ध्यान एक तानथी, तिर्यंचने तारे ॥ १ ॥ पास वीर वासुपूज्यने, नेम मल्ली कुमारी ॥ राज्य विहूणा ए थया, आपे व्रतधारी ॥ शांति नाथ प्रमुखा सवि, लही राज्य निवारी ॥ मल्ली नेम परण्या नहीं, बीजा घरबारी ॥ २ ॥ कनक कमळ पगलां ठवे, जग शांति करीजे ॥ रयण सिंहासने बेसीने, भली देशना दीजे ॥ योगावंचक प्राणीयां, फळ लेतां रीझे ॥ पुष्करावर्तना मेघमां, मगसेल न भींजे ॥ ३ ॥ क्रोडवदन शुकरारुढो श्याम रूपे चार ॥ हाथ बीजोरु कमळ छे, दक्षिण कर सार ॥ जक्ष गरुड वाम पाणीये, नकुलाक्ष वखाणे ॥ निर्वाणीनी वात तो, कवि वीर ते जाणे ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ बीजो थोय जोडो ॥

॥ श्रीशांति जिणेसर समरिये, जेहनी अचिरा माय ॥ विश्वसेन कुळ उपना, मृग लंछन पाय ॥ गजपुर नयरीनो धणी, सोवन वर्णी काय ॥ धनुष चालीस जस देहडी, वरष लाखनुं आय ॥१॥ शांति जिनेसर सोळमा, चक्री पंचम जाणुं ॥ कुंथुनाथ चक्री छठ्ठा, अरनाथ वखाणुं ॥ ए त्रणे चक्री सही, देखी आणंदुं ॥ संयम लेइ

सुगतें गया, नित्य उठी वंदुं ॥२॥ शांति जिनेसर केवली, बेठा धर्म प्रकाशे ॥ दान शीयल तप भावना, नर सोहे अभ्यासें ॥ एह वचन जिनजी तणां, जिणे हियडे धरियां ॥ सुणतां समकित निर्मल, दीसे केवल वरिया ॥ ३ ॥ समेत शिखर गिरि उपरे, जइने अणसण कीधुं ॥ काउसग्ग मुद्रायें रह्या, तिणें सुगतिज कीधुं ॥ गरुड यक्ष समरु सदा, देवी निर्वाणी ॥ भविक जीव तुमे सांभलो, रिखभदासनी वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नेमनाथ जिन स्तुति ॥

॥ कनक तिलकभाले ॥ ए देशी ॥

॥ दुरित भय निवारं, मोह विध्वंसकारं ॥ गुणवत भविकारं, मोक्षसिद्धि सुदारं ॥ जिनवर जयकारं, कर्म संक्लेश हारं, भवजल निधितारं, नौमि नेमिकुमारम् ॥ १ ॥ अड जिनवर माता, सिद्धि सौधे प्रयाता ॥ अड जिनवर माता, स्वर्ग त्रीजे विख्याता ॥ अड जिनवर माता, मोक्ष माहेंद्र रयाता ॥ भव भय जिन त्राता, संतने सिद्धि दाता ॥ २ ॥ ऋषभ जनक जावे, नागसुर भाव पावे ॥ इशान सग कहावे, शेष कांता सभावे ॥ पद्मासन सुहावे, नेम आद्यंत पावे ॥ शेष काउस्सग्ग भावे, सिद्धि सूत्रे पठावे ॥ ३ ॥ दाहन पुरुष जाणी, कृष्ण वर्णे प्रमाणी ॥ गोमेधने षट पाणी, सिंह बेठी वराणी ॥ तनु कनक समाणी, अंबिका चार पाणी ॥ नेम भगति भराणी, वीरविजये वखाणी ॥ ४ ॥

॥ बीजो थोय जोडो ॥

॥ गिरनार विभूषण, निर्दूषण सुखकार ॥ श्री नेमि जिनेसर, अलवेसर आधार ॥ प्रभु वंछित पूरे, दुःख चूरे निरधार ॥ बहु भावे वंदो, राजिमती भरतार ॥ १ ॥ वैमानीक प्रभु दश, भुवनाधीश वरवीश ॥ ज्योतिषी पतिदोय, व्यंतर पति बत्रीश ॥ इय चउसठि इंद्रे, पूज्या जिन चोवीश ॥ ते जिननी आणा, शिरवहुं हुं निशदीश ॥ २ ॥ त्रिभुवन जिनवंदन, आनंदन जिन वाणी ॥ सिंहासन बेसी, उपदेशी हित आणी ॥ जेह मांहे वखाणी, जीवदया सुणो प्राणी ॥ ते वाणी आराधी, वरीये शिव पटराणी ॥३॥ संघ सान्निध्य कारी; जय कारी वरदाई ॥ शासन रखवाली, विघन हरे अंबाई ॥ बावीशमा जिननी, सेवा करो चित्त लाई, बुध प्रीतिविजय कहे, सुख संपद में पाई ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथजीनी थोय जोडो ॥

॥ प्रणमुं नित्य पास चिंतामणि, सोहे तस सप्त फणामणि ॥ तस महिमा मही मांहेज घणी, सुप्रसन्न सदा मुझ जगत धणी ॥१॥ वंदुं हुं अतीत अनागता, वीश विहरमान चारे शाश्वता ॥ संपई जिनवर सवि वंदीयें, मनमोहन देखी आणंदीये ॥ २ ॥ भरपूरें गाजे मेहलो, सांभळतां अधिक स्नेहलो ॥ एहवो आगम जिनवर भांखियो, सहु गणधर भक्ति परकाशियो ॥ ३ ॥ श्री पास चरण

सेवो सदा, जेहथी लहियें सुख संपदा ॥ दया कुशल कहे सो भगवइ, संघ विघन हरो पउमावइ ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ बीजो थोय जोडो ॥

॥ सुविधि सेवा ॥ ए देशी. ॥

॥ पास जिणंदा वामा नंदा, जब गरभें फली ॥ सुपना देखे अर्थ विशेषे, कहे मघवा मली ॥ जिनवर जाया सुर हुलराया, हुआ रमणि प्रिये ॥ नेमी राजी चित्त विराजी, विलोकित व्रत लीये ॥ १ ॥ वीर एकाकी चार हजारे, दीक्षा धुर जिनपति ॥ पासने मल्लि त्रय[1] शत साथे, बीजा सहस्र व्रती ॥ षट शत साथे संयम धरता, वासुपूज्य जग धणी ॥ अनुपम लीला ज्ञान रसीला, देजो मुझने घणी ॥ २ ॥ जिनमुख दीठी वाणी मीठी, सुरतरु वेलडी ॥ द्राख विहासे गई वनवासे, पीले रस सेलडी ॥ साकर सेंती, तरणा लेती, मुखे पशु चावती ॥ अमृत मीठुं स्वर्गे दीठुं, सुरवधू गावती ॥३॥ गजमुख दक्षो वामन यक्षो, मस्तके फणावली ॥ चार ते बांही, कच्छप[2] वाही, काया जस शामली ॥ चउकर प्रौढा नागारूढा, देवी पद्मावती ॥ सोवन कांति प्रभु गुण गाती, वीर घरे आवती ॥ ४ ॥ इति ॥

---

१ त्रणसो.

२ काचबाना वाहन वाळा,

॥ अथ श्री महावीर स्वामी जिन स्तुति ॥

॥ गौतम बोले ग्रंथ संभाली ॥ ए देशी ॥

॥ वीर जगत्पति जन्मज थावे, नंदन निश्चित शिखर रहावे, आठ कुमारी गावे ॥ अड गजदंता हेठे वसावे, रुचक गिरिथी छत्रीश जावे, द्वीप रुचक चउ भावे ॥ छप्पन दिगकुमरी हुलरावे, [1]सूती करम करी निज घर पावे, शक्र सुघोषा वजावे ॥ सिंहनाद करी ज्योतिषी आवे, भवन व्यंतर शंख पडहे मिळावे, सुरगिरि जन्म मल्हावे ॥१॥ ऋषभ तेर शशि सात कहीजे, शांतिनाथ भव बार सुणीजे, मुनिसुव्रत नव कीजे ॥ नव नेमीश्वर नमन करीजे, पास प्रभुना दश समरीजे, वीर सत्तावीश लीजे ॥ अजितादिक जिन शेष रही जे, त्रण्य त्रण्य भव सघळे ठवीजे, भव समकितथी गणीजे ॥ जिन नामबंध निकाचित कीजे, त्रीजे भव तप खंती धरीजे, जिनपद उदये सीझे ॥२॥ आचारांग आदे अंग अग्यार, उववाई आदे उपांग ते बार, दश पयन्ना सार ॥ छ छेद सूत्र विचित्र प्रकार, उपगारी मुलसूत्र ते चार, नंदी अनुयोग द्वार ॥ ए पीस्ताळीश आगम सार, सुणतां लहीये तत्त्व उदार, वस्तु स्वभाव विचार ॥ विषय भुजंगिनी विष अपहार, ए समो मंत्र न को संसार, वीर शासन जयकार ॥ ३ ॥ नकुल बीजोरु दोय कर झाली, मातंग सुर शाम कंती [2]तेजाळी, वाहन गज शूंढाळी ॥ सिंह उपर बेठी

---

१ सुवावड. २ तेजस्वी.

झडीयाली, सिद्धायिका देवी लटकाली, हरिताभा चार भुजाळी ॥ पुस्तक अभया जिमणे झाली, मातु लिंगने वीणा रसाळी, वाम भुजा नहिं खाली ॥ शुभगुरु गुण प्रभु ध्यान घटाली, अनुभव नेहशुं देती ताली, वीर वचन टंकशाळी ॥ ४ ॥ इति ॥

श्री महावीर स्वामीनी स्तुति.

गंधारे महावीर जिणंदा, जेने सेवे सुर नर इंदा, दीठे परमानंदा; चैत्र शुद तेरश दिन जाया, छपन दिक कुमरी गुण गाया, हरख धरी हुलराया; त्रीश वरस पाळी घरवास, मागशर वद दशमी व्रत जास, विचरे मन उल्लास; ए जिन सेवो हितकर जाणी, एहथी लहीए शिव पटराणी, पुण्य तणी ए खाणी ॥ १ ॥ ऋषभ जिनेश्वर तेर भव सार, चंद्र प्रभु भव आठ उदार, शांति कुमर भव बार; मुनिसुव्रत ने नेमकुमार, ते जिनना नव नव भव सार, दश भव पार्श्वकुमार; सत्तावीश भव वीरना कहीए, सत्तर जिननां त्रण त्रण लहीए, जिन वचने सद्दहीए; चोवीश जिननो एह विचार, एहथी लहीए भवनो पार, नमतां जय जयकार ॥ २ ॥ वैशाख शुद दशमी लही नाण, सिंहासन बेठा वर्धमान, उपदेश दे प्रधान; अग्नि खुणे हवे पर्षदा सुणीए, साध्वी वैमानिकस्त्री गणीए, मुनिवर त्यांहीज भणीए; व्यंतर ज्योतिषी भुवनपति सार, एहने नैऋत खुणे अधिकार, वायव्य खुणे एहनी नार; इशाने शोभे नर नार, वैमानिक सुर पर्षदा बार, सुणे जिन

वाणी उदार ॥३॥ चक्रेश्वरी अजिता दुरितारि, काळी महाकाली मनोहारी, अच्युता संता सारी; ज्वाला सुतारका अशोका, श्री-वत्सा वरचंडा माया, विजयांकुशी सुखदाया; पन्नत्ति निर्वाणी अच्युता धरणी, वैरोटया दत्ता गंधारी अघहरणी. अंबा पउमा सुखकरणी; सिद्धायिका शासन रखवाळी, कनकविजय बुध आनंद-कारी, जसविजय जयकारी ॥ ४ ॥

॥ श्री अजितनाथजीनी स्तुति ॥

॥ मह उठी वंदू ॥ ए देशी ॥

॥ जब गर्भे स्वामी, पामी विजया नार ॥ जीते नित्य पीयुने, अक्ष क्रीडन हुशीयार ॥ तिणे नाम अजित छे,देशना अमृत धार ॥ महा जक्ष अजिता, वीर विघन अपहार ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री संभवनाथजीनी स्तुति ॥

॥ शांति जिनेसर समरीये ॥ ए देशी ॥

॥ संभव स्वामी सेवीये, धन्य सज्जन दीहा ॥ जिनगुण माळा गावतां, धन्य तेहनी जीहा ॥ वयण सुगंग तरंगमां, न्हाता शिवगेही ॥ त्रिमुख सुर दुरितारिका, शुभवीर सनेही ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री अभिनंदन स्वामीजीनी स्तुति ॥

॥ आघ पदम लंघनं ॥ चाल ॥

॥ अभिनंदन गुणमालिका, गावती अमरालिका ॥ कुमतिकी परजालिका, शिव बहुवर मालिका ॥ लगे ध्यानकी तालिका, आगमनी परनालिका ॥ इश्वरो सुर बालिका, वार नमे नित्य कालिका ॥ १ ॥

॥ श्री सुमतिनाथ जिन स्तुति ॥

॥ त्वमशुभान्यभिनंदननंदिता ए देशी ॥

॥ सुमति स्वर्ग दिये असुमंतने, ममत्व मोह नहि भगवंतने ॥ प्रगट ज्ञान वरी शिव बालिका, तुंबरु वीर नमे महाकालिका ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री पद्मप्रभुजिन स्तुति ॥

॥ नंदीश्वरे वर द्वीप संभारुं ॥ ए चाल ॥

॥ पद्मप्रभु हत छद्म अवस्था, शिवसद्मे सिद्धा अरूपस्था ॥ नाणने दंसण दोय विलासी, वीर कुसुम श्यामा जिनुपासी ॥ १ ॥ इति

॥ श्री सुपार्श्वनाथ जिन स्तुति ॥

॥ श्रावण शुदि दिन पंचमी ॥ ए देशी ॥

॥ अष्ट महा प्रतिहारशुं ए, शोभे स्वामी सुपास तो ॥ महा-भाग्य अरिहा प्रभुए, सुरनर जेहना दासतो ॥ गुण अतिशय वरण-व्या ए, आगम ग्रंथ मोझार तो ॥ मातंग शांता सुरी ए,वीर विघन अपहार तो ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री चंद्रप्रभुजिन स्तुति ॥

॥ शांति जिनेसर समरीये ॥ ए देशी ॥

॥ चंद्रप्रभु मुख चंद्रमां, सखी जोवा जइए ॥ द्रव्य भाव प्रभु दरिसणे, निर्मळता थइए ॥ वांणी सुधारस वेलडी,सुणीए ततखेव ॥ भजे भदंत भृकुटिका, वीरविजय ते देव ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री सुविधिनाथजीनी स्तुति ॥

॥ सुविधि सेवा करतां देवा, तजो विषय वासना ॥ शिव सुख दाता ज्ञाता ज्ञाता, हरे दुःख दासना ॥ नय गम भंगे ंगे चंगे, वाणी भव हारिका ॥ अमर अतीते मोहातीते, विरंच सुता-रिका ॥ १ ॥

॥ श्री शीतलनाथ जिन स्तुति ॥

॥ मह उठी वंदू ॥ ए देशी ॥

॥ शीतल प्रभु दर्शन, शीतल अंग उवंगे ॥ कल्याणक पंच, प्राणि गण सुख संगें॥ तो बचन सुणंतां, शीतल किम नहि लोका॥ शुभ वीर ते ब्रह्मा, शासनदेवी अशोका ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री श्रेयांसनाथजिन स्तुति ॥

॥ श्री सीमंधर देव सुहंकर ॥ ए देशी ॥

॥ श्री श्रेयांस सुहंकर पामी, इच्छे अवर कुण देवा जी ॥ कनक तरु सेवे कुण प्रभुने, छंडी सुरतरु सेवा जी ॥ पूर्वापर अविरोधी स्यात्पद, वाणी सुधारस वेली जी ॥ मानवी मणुएसर सुपसायें, वीर हृदयमां फेली जी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री वासुपूज्यजिन स्तुति ॥

॥ कनक तिलक भाले ॥ ए देशी ॥

॥ विमल गुण अगारं, वासुपूज्यं सफारं ॥ निहत विष विकारं, प्राप्त कैवल्य सारं ॥ वचन रस उदारं, मुक्ति तत्त्वे विचारं॥ वीर विघन निवारं, स्तौमि चंडी कुमारं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री विमल जिन स्तुति ॥

॥ चोपाइनी चाल ॥

॥ विमलनाथ विमल गुण वरया, जिनपद भोगी भव निस्तरया ॥ वाणी पांत्रीश गुण लक्षणी, छम्मुह सुर मवरा जक्षणी॥१॥

॥ श्री अनंतनाथ जिन स्तुति ॥

॥ वसंततिलका वृत्तम् ॥

॥ ज्ञानादिकाः गुणवरा निवसंनंते, वज्री सुपर्वमर्हिते जिनपादपद्मे ॥ ग्रंथार्णवे मतिवराः मणतिस्म भक्त्या, पाताळचांकुशि सूरी शुभवीर दक्षाः ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री धर्मनाथजिन स्तुति ॥

॥ शंखेश्वर पासजी पूजीए ॥ ए देशी ॥

॥ सखि धर्म जिणेसर पूजीए, जिन पूजे मोहने धूजीए ॥ मभु वयण सुधारस पीजीए, किन्नर कंदर्प्पा रीजीए ॥ १ ॥ इति॥

॥ श्री कुंथुंनाथ जिन स्तुति ॥

॥ वशी कुंथु व्रती तिलकैा जगति, महिमा महती नत इंद्रतती ॥ मथितागम ज्ञानगुणा विमला, शुभवीर मतां गांधरव बाळा ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री अरनाथजिन स्तुति ॥

॥ त्वमशुभान्यभिनंदननंदिता ॥ ए देशी ॥

॥ अर विभू रवि भूतल द्योतकं, सुमनसा मनसार्चित पंकजे ॥ जिनगिरा न गिरा परतारिणी, प्रणत यक्षपति वीर धारिणी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री मल्लीनाथजिन स्तुति ॥

॥ नंदीश्वर वर द्वीप संभालुं ॥ ए देशी ॥

॥ मल्लिनाथ मुख चंद निहालुं, अरिहा प्रणमी पातक टालुं ॥ ज्ञानानंद विमळपुर सेर, धरण प्रिया शुभवीर कुबेर ॥ १ ॥ इति॥

॥ श्री मुनिसुव्रत जिन स्तुति ॥

॥ पास जिणंदावामानंदा ॥ ए देशी ॥

॥ सुव्रत स्वामी आतमरामी, पुजो भवि मन रली ॥ जिनगुण थुणीए पातक हणीए, भाव स्तवन सांकली ॥ वचनें रहीए जूठ न कहीए, टले फल वंचको ॥ वीर जिणुंपासी नरदत्ता, वरुण जिनार्चको ॥ १ इति ॥

॥ श्री नमिनाथजिन स्तुति ॥

॥ श्रावण सुदी दिन पंचमी ए ॥ ए देशी ॥

॥ श्री नमीनाथ सोहामणा ए, तीर्थपति सुलतान तो ॥ विश्वंभर अरिहा प्रभु ए, वीतराग भगवानतो ॥ रत्नत्रयी जस ऊजली ए, भांखे षट्द्रव्य ज्ञान तो ॥ भृकुटी सुर गंधारिका ए, वीर हृदय बहुमान तो ॥ १ ॥ इति

॥ अथ श्री पांचज्ञाननी स्तुति ॥

॥ श्री मतिज्ञाननी स्तुति ॥

॥ श्री शंखेश्वर पास जिनेसर ॥ ए देशी ॥

॥ श्री मतिज्ञाननी तत्व भेदथी, पर्यायें करी व्याख्या जो ॥ चउविह द्रव्यादिकने जाणे, आदेशें करी दाख्या जी ॥ माने वस्तु धर्म अनंता, नहीं अज्ञान विवक्षा जी ॥ ते मतिज्ञानने वंदो पूजो, विजयलक्ष्मी गुण कांक्षा जी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री श्रुतज्ञाननी स्तुति ॥

॥ गोयम बोले ग्रंथ संभाली ॥ ए देशी ॥

॥ त्रिगडे बेसी श्री जिन भाण, बोले भाषा अमीय समाण, मत अनेकांत प्रमाण ॥ अरिहंत शासन सफरी सुखाण, चउ अ-

नुयोग जिहां गुण खाण, आतम अनुभव ठाण ॥ सकळ पदारथ ॥ त्रिपदी जाण, जोजन भुमि पसरे वखाण, दोष बत्रीश परिहाण ॥ केवळो भाषित ते श्रुत नाण, विजयलक्ष्मी सूरि कहे बहुमान, चित्त धरजो ते सयाण ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री अवधिज्ञाननी स्तुति ॥

॥ शंखेश्वर साहिब जे समरे ॥ ए देशी ॥

॥ ओहीनाण सहित सवि जिनवरू, चवि जननी कूंखे अवतरू ॥ जस नामे लहीये सुख तरू, सवि इति उपद्रव संहरू ॥ हरि पाठक संशय संहरु, वीर महिमा ज्ञान गुणायरूं ॥ ते माटे प्रभुजी विश्वंभरू, विजयांकित लक्ष्मी सुहंकरूं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री मनः पर्यव ज्ञाननी स्तुति ॥

॥ श्री शंखेश्वर पास जिनेश्वर ॥ ए देशी ॥

॥ प्रभुजी सर्व समायिक उच्चरे, सिद्ध नमी मद वारी जी ॥ छद्मस्थ अवस्था रहे छे जिहां लगे, योगासन तप धारी जी ॥ चोथुं मनःपर्यव तव पामे, मनुज लोक विस्तारी जी ॥ ते प्रभुने प्रणमो भवि प्राणी, विजयलक्ष्मी सुखकारी जी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ श्री केवल ज्ञाननी स्तुति ॥

॥ मह उठो वंदू ॥ ए देशी ॥

॥ छत्रत्रय चामर, तरु अशोक सुखकार ॥ दिव्य ध्वनि दुंदुभी, भामंडल झलकार ॥ वरसे सुर कुसुमें, सिंहासन जिन सार ॥ वंदे लक्ष्मीसूरि, केवलज्ञान उदार ॥ १ ॥ इति ॥

॥ वर्धमान तपनी स्तुति ॥

॥ वर्धमान आंबिल तप आदरो, चोवीश जिननी पुजा करो ॥ अंतगड आगम सुणो वखाण, सिद्धाइ देवी करे कल्याण ॥ १ ॥ (आ स्तुति चार वखत पण कहेवाय छे.)

॥ अथ श्रीसीमंधर जिन स्तुति ॥

॥ सीमंधर स्वामी निर्मला, तुम ज्ञान उपनुं केवला ॥ सीमंधर स्वामी तार तार, मुज आवागमन निवार वार ॥ १ ॥ सीतेरशो जिनवर वंदीये, जस नामें पाप निकंदीयें ॥ सांप्रत जिन सोहे वीश सार, ते भवियण वंदो वारं वार ॥ २ ॥ जिनवाणी साकर सेलडी, पीतां जाणे अमृत वेलडी ॥ जिन आगम सागर सेवतां, लहो विद्या रयण सोहावता ॥ ३ ॥ सीमंधर जिनपद अनुसरी, श्रीसंघ प्रत्ये बहु सुख करी ॥ कनका भासा शासन सूरि, द्यो वंछित देवी पतंजरी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ सीमंधर जिन स्तुति बीजी ॥

अजवाळी बीज सोहावे रे, चंदा रुप अनुपम लावे रे; चंदा
विनतडी चित्त धरजो रे, सीमंधरने वंदणा कहेजो रे. ॥ १ ॥
वीश विहरमान जिनने वंदुं रे, जिन शासन पूजी आणंदु रे; चंदा
एटलुं काम ज करजो रे, सीमंधरने वंदणा कहेजो रे. ॥ २ ॥
सीमंधर जिननी वाणी रे, ते तो अमिय पान समाणी रे; चंदा
तमे सुणी अमने सुणावो रे, भवसंचित पाप गमावो रे. ॥ ३ ॥
सीमंधर जिननी सेवा रे, ते तो शासन भासन मेवा रे; चंदा
होजो संघना शाता रे, गज लंछन चंद्र विख्यात रे. ॥ ४ ॥

॥ श्री सिद्धाचलजीनी स्तुति ॥

॥ श्री शत्रुंजय मंडण आदिदेव, हुं अहोनिश सारुं तास सेव ॥ रायण तळे पगलां प्रभुतणां, पुजिश सकळ फूल शोहामणां ॥ १ ॥ त्रेवीश तीर्थंकर समोसरया, विमळाचल उपर गुण भरया ॥ गिरि कंडणें आव्या नेमनाथ, सो जिनवर मेलो मुक्ति साथ ॥२॥ श्री सोहम स्वामी उपदिश्या, जंबु गणधरने मन वश्या ॥ पुंडरिक गिरि महिमा एह मांहि ॥ हुं आगम समरुं मन उच्छाहीं ॥ ३ ॥ चक्केसरी गोमुख कवड यक्ष, मन वंछित पूर्ण कल्पवृक्ष ॥ सिद्धक्षेत्र सहाइ देवता, भणे नंदसूरि तुम पाय सेवता ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्री सिद्धाचळजीनी स्तुति ॥

॥ श्री शत्रुंजय गोरी तीरथ सार ॥ ए देशी ॥

॥ जिहां अगण्योतेर कोडाकोडी, तिम पंचाशी लाख वळी कोडी, चुमाळीश सहस्र कोडी ॥ समवसर्या जिहां एतिवार, पूर्व नवाणुं एम प्रकार, नाभि नरेंद्र मल्हार ॥ १ ॥ सहस्रकूट अष्टापद सार, जिन चोवीश तणा गणधार, पगलांनो विस्तार ॥ वळी जिनबिंब तणो नहीं पार, देहरी थंभे बहु आकार, वंदुं विमलगिरि सार ॥ २ ॥ ऐंशी सीत्तेर साठ पचास, बार जोजन माने जस विस्तार, इग बि ति चउ पण आर ॥ मान कह्युं तेनुं निरधार, महिमा एहनो अगम अपार, आगम मांहे उदार ॥ ३ ॥ चैत्री पूनम दिन शुभ भावे, समकित दृष्टि सुर नर आवे, पूजा विविध रचावे ॥ ज्ञानविमळसूरि भावना भावे, दुर्गति दोहग दूर गमावे, बोधबीज जस पावे ॥ ४ ॥

॥ चैत्री पुनमनी स्तुति ॥

॥ श्री विमलाचल सुंदर जाणुं, ऋषभ जिहां आव्या पूर्व नवाणुं, तीर्थ भुमीका पीछाणुं । तें तो शास्वत प्राय गिरींद, पूर्व संचित पाप निकंद, टालो भव भय फंद ॥ पूरव साहामा अति हे उदार, बेठा सोहे नाभी मल्हार, सनमुख पुंडरीक सार । चैत्री पूनम दिन जे अजुआळी, भवियां आराधो मिथ्यात्व टाली, जिम

कहो शिववधू नारी ॥ १ ॥ आबु अष्टापद ने गिरनार, समेत-शिखर ने वली वैभार, पुंडरीक चैत्य जुहार । श्री जिन अजित तारंगे लहीये, श्री वरकाणोजी बंभण वाडे, तोडे कर्मनी जाडे ॥ नारंगो संखेश्वरो पास, श्री गोडीजी पुरे आस, पोसीना जिन सुविलास । चैत्री पूनम दिन सुंदर जाणी, ए सवि पूजो भव्य प्राणी, जेम थावो केवल नाणी ।२॥ भरत आगल श्री ऋषभजी बोले, नहि कोइ चैत्री पूनम दिन तोले, इम जिन वचनज बोले । चैत्री पूनम दिन ए गीरी आत छठ करी जात्रा सात करंत, त्रीजे भव मुक्ति लहंत ॥ चैत्री पूनम दिन ए गिरी सिद्ध, पांच कोडी केवलीथी प्रसिद्ध, पुंडरीक शिवपद लीध । इम जाणीने भवियो आराधो, चैत्री पूनम दिन शुभ चित्त साधो, मुक्तिना खातां बांधो ॥ ३ ॥ पुंडरीक गीरीनी शासन देवी, मरुदेवा नंदन चरण पुंजेवी, चक्केश्वरी तुं देवी । चउविह संघने मंगल करजो, तुज सेवक पर लक्ष्मी वरजो, सयल विघन संहरजो ॥ अप्रतिचक्र तुं मोरी मात, तुं जाणे मोरा चित्तनी धात, पूरजे मननी वात । पंडित अमर केसर सुपसाय, चैत्री पूनम दिन महा लहाय, लब्धी विजय गुण गाय ॥ ४ ॥

॥ सिद्धचक्रनी स्तुति ॥

प्रह उठी वंदु, सिद्धचक्र सदाय, जपीए नवपदनो, जाप सदा सुखदाय; विधिपूर्वक ए तप, जे करे थइ उजमाळ, ते सवि सुख

पामे, जिम मयणा श्रीपाळ ॥ १ ॥ माळवपति पुत्री, मयणा अति गुणवंत, तस कर्म संयोगे, कोढी मिलियो कंत; गुरु वयणे तेणे, आराध्युं तप तेह, सुख संपदा वरीया, तरीया भवजळ तेह ॥ २ ॥ आंबिल ने उपवास, छठ्ठ वळी अट्ठम, दश अट्ठाइ पंदर, मास छ मास विशेष; इत्यादिक तप बहु, सहुमांहि शिरदार, जे भवियण करशे, ते तरशे संसार ॥ ३ ॥ तप सांनिध्य करशे, श्रीविमळेश्वर यक्ष, सहु संघना संकट, चूरे थइ प्रत्यक्ष; पुंडरीक गणधार, कनकविजय बुध शिष्य, बुध दर्शनविजय कहे, पहोंचे सकळ जगीश ॥४॥

॥ पर्युषणनी स्तुति ॥

पर्व पर्युषण पुण्ये पामी, परिघल परमानंदोजी । अति ओच्छव आडंबर सघळे, घर घर बहु आनंदोजी । शासन अधिपति जिनवर वीरे, पर्वतणां फळ दाख्यांजी । अमारि तणो ढंढेरो फेरी, पाप करंता राख्याजी ॥ १ ॥ मृगनयनी सुंदरी सुकुमाळी, वचन वदे टंकशाळीजी । पूरो पनोता मनोरथ महारा, निरुपम पर्व निहाळीजी ॥ विविध भाति पकवान्न करीने, संघ सयळ संतोषोजी । चोवीशे जिनवर पूजीने, पुण्य खजानो पोषोजी ॥ २ ॥ सकळ सूत्र शिर मुगट नगीनो, कल्पसूत्र जग जाणोजी । वीर पास नेमीश्वर अंतर, आदि चरित्र वखाणोजी ॥ स्थविरावळी ने सामाचारी, पट्टावळी गुण गेहजी । एम ए सूत्र सविस्तर सुणीने, सफळ करो

नर देहजी ॥ ३ ॥ एणीपरे पर्व पर्युषण पाळी, पाप सर्वे परिहरीएजी । संवत्सरी पडिक्कमणुं करतां, कल्याण कमळा वरीएजी ॥ गोमुख जक्ष चक्रेश्वरी देवी, श्री माणिभद्र अंबाइजी । शुभविजय कवि शिष्य अमरने, दिन दिन करजो वधाइजी ॥ ४ ॥

॥ श्री वीशस्थानकनी स्तुति ॥

वीश स्थानक तप विश्वमां मोटो, श्री जिनवर कहे आपजी । बांधे जिनपद त्रीजा भवमां, करीने स्थानक जापजी ॥ थया थशे सवि जिनवर अरिहा, ए तपने आराधीजी । केवलज्ञान दर्शन सुख पाम्या, सर्वे टाळी उपाधिजी ॥ १ ॥ अरिहंत[1] सिद्ध[2] पवयण[3] सूरि[4] स्थविर[5], वाचक[6] साधु[7] नाणजी[8] । दर्शन[9] विनय[10] चरण[11] बंभ[12] किरिया,[13] तप[14] करो गोयम[15] ठाणजो ॥ जिनवर[16] चारित्र[17] पंच विध नाण,[18] श्रुत[19] तीर्थ[20] एह नामजी । ए वीश स्थानक आराधे ते, पामे शिवपद धामजी ॥ २ ॥ दोय काळ पडिक्कमणुं पडिलेहण, देववंदन त्रण वारजी । नोकरवाळी वीश गुणीजे, काउसग्ग गुण अनुसारजी ॥ चारसो उपवास करी

१ आ वीश स्थानकमां केटलाक नामांतर आवे छे. १३ मुं क्रियापद ते समाधिपद, १५मुं गोयम पद ते दान पद, १६मुं जिनपद ते वैयावच्च पद, १८ मुं पंचविध ज्ञानपद ते अभिनव ज्ञानपद-आम नामांतर छे. तेमज चारित्रने लगता बे पद छे, ज्ञानने लगता ३ पद छे, एमां कांइक कांइक जुदो जुदो भाव दर्शावेल छे.

चित्त चोखे, उजमणुं करो सारजी । पडिमा भरावो संघ भक्ति करो, ए विधि शास्त्र मोझारजी ॥ ३ ॥ श्रेणिक सत्यकि सुलसा रेवति, देवपाळ अवदातजी । स्थानक तप सेवा महिमाए, थया जगमांहि विख्यातजी ॥ आगम विधि सेवे ज तपीया, धन्य धन्य तस अवतारजी । विघ्न हरे तस शासनदेवी, सौभाग्य लक्ष्मी दातारजी ॥ ४ ॥

बीजनी स्तुति.

जंबू द्वीपे अहोनिश दीपे, दोय सूर्य दोय चंदाजी; तास विमाने श्री ऋषभादिक, शाश्वत नाम जिणंदाजी ॥ तेह भणी उगते शशि नीरखी, प्रणमे भवीजन वृंदाजी; बीज आरोपो धर्मनुं बीज, पूजो शांति जिणंदाजी ॥ १ ॥ द्रव्य भाव दोय भेदे पूजो, चोवीशे जिन चंदाजी; बंधन दोय दूर करीने, पाम्या परमाणंदाजी ॥ दुष्ट ध्यान दोय मत्त मतंगज, भेदन मत्त मयंदाजी ॥ बीज तणे दिन ते आराधे, जेम जंगम । चिरनंदाजी ॥ २ ॥ द्विविध धर्म जिनराज प्रकाशे, समवसरण मंडाणजी; निश्चय ने व्यवहार बेहुशुं, आगम मधुरी वाणीजी ॥ नरक तिर्यंच गति दोय न होवे, बीज ते ज आराधेजी; द्विविध दया त्रस स्थावर केरी, करतां शिव सुख साधेजी ॥ ३ ॥ बीज चंद पेरे भूषण भूषित, दीपे मिलवट चंदाजी; गरुड यक्ष नामे सुखकारी, निर्वाणी सुख कंदाजी ॥ बीज तणो तप करतां भवीने, समकित सांनिध्य कारीजी; धीरविमल शिष्य कहे नय, संघना विघन निवारीजी ॥४॥

पंचमीनी स्तुति.

पांचमने दिन चोसठ इंद्रे, नेमि जिन महोत्सव कीधो जी ॥ रुपे रंभा राजीमतीने, छंडी चारित्र लीधो जी ॥ अंजन रत्न सम काया दीपे, शंख लंछन सुप्रसिद्धो जी ॥ केवळ पामी मुक्ति पहोच्या, सघळां कारज सीध्यां जी ॥१॥ आबु अष्टापद ने तारंगा, शत्रुंजय गिरि सोहे जी ॥ राणकपुर ने पार्श्व शंखेश्वर, गिरनारे मन मोहेजी ॥ संमेत शिखर ने वळी वैभार गिरि, गोडी थंभण वंदो जी ॥ पंचमीने दिन पूजा करतां, अशुभ कर्म निकंदो जी ॥ २ ॥ नेमि जिनेश्वर त्रिगडे बेठा, पंचमी महिमा बोले जी ॥ बीजा तप जप छे अति वहोळा, नहीं कोइ पंचमी तोले जी ॥ पाटी पोथी ठवणी कवळी, नोकारवाळी सारी जी ॥ पंचमीनुं उजमणुं करतां, लहीए शिववधु प्यारी जी ॥ ३ ॥ शासनदेवी सांनिध्य कारी, आराधे अति दीपेजी ॥ काने कुंडळ सुवर्ण चुडी, रुपे रमझम दीपे जी ॥ अंबिकादेवी विघ्न हरेवी, शासन सांनिध्य कारी जी ॥ पंडित हेतविजय जयकारी, जिन जपे जयकारी जी ॥ ४ ॥

अष्टमीनी स्तुति.

अष्टमी तप महिमा, मोटो कहे महावीर ॥ आठम तप भंजे, अष्ट कर्म जंजीर ॥ आठ सिद्धि ऋद्धि आपे, जिम ए भंजे आठ ॥ दुःख दुर्गति कापे, जेम दावानळ काष्ट ॥ १ ॥ चोवीशे जिननी, प्रतिमा भरते भरावी ॥ अष्टापद उपर, नासिका सरखी ठरावी ॥

पूरव थकी वंदो, दोय चार अठ दश देव ॥ ए चार निक्षेपे, संभाळी करुं सेव ॥ २ ॥ महावीर थकी त्रिपदी, पामीने तत्काळ ॥ द्वादशांगी गुंथी, गणधर देव रसाळ ॥ एमांथी उपदिशे, आठमनो अधिकार ॥ अष्टमी आराधो, जिम पामो भव पार ॥३॥ जिन शासन देवी, सिद्धायिका मातंग ॥ आठम तप तपीए, सांनिध्य करे धरी रंग ॥ सुर समकित धारी, भविक करे कल्याण ॥ भाव विजयना वाचक, सेवक ज्युं भाम भाण ॥ ४ ॥

॥ एकादशीनी स्तुति ॥

दीन सकल मनोहर–ए देशी.

गोपीपति पूछे, पभणे नेमि कुमार । इहां थोडे कोधे, लहीए पुण्य अपार ॥ मृगशर अजवाळी, अग्यारश सुविचार । पोसह विधि पाळी, बहु तरीए संसार. ॥ १ ॥ कल्याणक हुवा, जिनना सो पचास । तस गुणणुं गणतां, पहोंचे वांछित आश । इहां भाव धरीने, व्रत कीजे उपवास । मौन व्रत पाळी, छांडीजे भव पास ॥ ॥ २ ॥ भगवंते भाख्यो, श्री सिद्धांत मोझार । अग्यारश महिमा, मृगशिर पख शुदी सार ॥ सवि अतीत अनागत, वर्त्तमान सुविचार । जिनपति कल्याणक, छोडे पाप विकार ॥ ३ ॥ ऐरावण वाहन, सुरपति अति बलवंत । जिम जग जश गाजे, रमणीकांत हसंत ॥ तप सांनिध्य करजो, मौन अग्यारश संत । तप कीर्ति प्रसरे, शासन विनय करंत ॥ ४ ॥

॥ चौदशी तिथिनी स्तुति ॥

मंगल आठ करी जस आगळ—ए देशी.

॥ चोद सुपन सूचित हरि पूजित, सिद्धारथ कुल चंदाजी ॥ चोद[1] रयणापति नरपति वंदित, त्रिशला राणी नंदाजी ॥ केशरि लंछन कंचनवाने, सोहे वीर जिणंदाजी ॥ पाखी पर्व कहुं दिन चैादशे, आराधो सुख कंदाजी ॥ १ ॥ [2]चउदश दश जिन चंदा वदो, भावधरी भवि प्राणीजी ॥ चैादशमें गुणठाणे चढीनें, पाम्या शिवसुख खाणीजी ॥ चोदराज उपरे जे पोहोत्या, चोदशी दिन आराधोजी ॥ चोदशी तप करतां भविजनने, चोदश विद्या साधोजी ॥२॥ चउदश देव मळीने विरचे, गढ त्रणनुं परिमाणजी ॥ चैादश सहस मुनि परिकर संयुत, बेसे श्री जिन भाणजी ॥ चोदश पूरव अर्थ उपदेशे, निसुणे पर्षदा बारजी ॥ जीवदया चउदशीं दिने पाळो, प्राणी चउद प्रकारजी ॥ ३ ॥ चउद भुवन वश करवा वरवा, शिव रमणी मनहरणीजी ॥ सिद्धाइ देवी जन सुख करणी; मातंग यक्षनी घरणीजी ॥ चउदशी तपनी सानिध करणी, विशद[3] वरण तनु वरणीजी ॥ ज्ञानविमल कहे जिन अनुसरणी, सकळ संघ दुःख हरणीजी ॥ ४ ॥ इति ॥

---

१ चौद रत्नपति चक्रवर्ती. २ चोदने दश चोवीश.
३ विशद पटले ऊजळ वर्ण.

॥ स्तवनोनो संग्रह ॥

श्री रत्नविजयजीकृत चोवीशी.

॥ श्री ऋषभदेवनुं स्तवन.

॥ वेण म वाईश रे विठ्ठल वारु तुजने (अथवा) भवि तुमे वंदोरे, सुरीश्वर गच्छराया ॥ ए देशी ॥ ऋषभ जीणेसर वंछित पुरण, जाणुं विशवावीश ॥ उपगारी अवनि तले मोटा, जेहनी चढती जगीश ॥ १ ॥ जग गुरु प्यारो रे पुन्य थकी में दीठो ॥ मोहनगारो रे सरस सुधाथी मीठो ॥ ए आंकणी ॥ नाभी नंदन नजरे नीरख्यो, परख्यो पुरण भाग्ये ॥ निरविकारी मुद्रा जेनी, दीठे अनुभव जागे ॥जग०॥२॥ आतम सुख ग्रहेवानुं कारण, दरशन ज्ञान चारित्र ॥ तेने भय वली मिथ्या अज्ञान, अविरती जेह विचित्र ॥जग०॥३॥ सकल जीव छे सुखना कामी, ते सुख अक्षय मोक्ष ॥ कर्म जनित सुखने दुःख रुपा, सुख ते आतम ज्ञांख ॥ जग० ॥४॥ निरुपाधिक अक्षय पद केवल, अव्याबाध ते थावे ॥ पुरणानंद दशाने पामे, रुपातीत स्वभावे ॥ जग० ॥ ५ ॥ अंतरजामी स्वामी मारो, ध्यान रुचीमां लावे ॥ जीन उत्तम पदने अवलंबी, रतनविजय गुण गावे ॥ जग० ॥ ६ ॥

श्री अजितनाथनुं स्तवन.

॥ प्यारी ते पिउजीने विनवे हो राज ॥ ए देशी ॥ अजीत जीनेसर वाल्हा हो राज,आतमनो आधार ॥ वारी मोरा साहीबा, शांती सुधारस देशना हो राज ॥ गाजे जेम जलधार, वारी मोरा साहीबा ॥ अजीत० ॥ १ ॥ भविजन शंसय भांजवा हो राज, तास अभिप्रायनो जाण ॥ वारी मोरा साहिबा, मिथ्या तिमिर उछेदवा हो राज ॥ उग्यो अभिनव भाण, वारी मोरा साहीबा ॥ अजीत० ॥ २ ॥ सारथवाह शीव पंथनो हो राज, भवोदधि तारणहार ॥ वारी० ॥ केवलज्ञान दिवाकरु होराज ॥ भाव धरम दातार ॥ वारी० ॥ अजीत० ॥३॥ क्षायक भावे भोगवे हो राज, अनंत चतुष्टय सार ॥ वारी० ॥ ध्येयपणे हवे ध्यावतां हो राज, ध्यायक थाए निस्तार ॥ वारी० ॥ अजीत० ॥ ४ ॥ वस्तु स्वभावने जाणवे हो राज, आतम संपदा इश ॥ वारी० ॥ अष्ट करमना नाशथी हो राज, प्रगटे गुण एकत्रीश ॥ वारी० ॥ अजीत० ॥ ५ ॥ विजयानंदन एम थुणे हो राज, जीम शत्रु कुळ दीनकार ॥ वारी० ॥ कांचन कांति सुंदरु हो राज, गज लंछन सुखकार ॥ वारी० ॥ अजीत० ॥ ६ ॥ समेत शिखर सिद्धि वर्यां हो राज, सहस पुरुपने साथ ॥ वारी० ॥ उत्तम गुरु कृपा ल्हेरथी हो राज, रतन थाशे सनाथ ॥ वारी० ॥ अजीत० ॥ ७ ॥

॥ श्री संभवनाथनुं स्तवन ॥

॥ अष्टापद गिरि जात्रा करणकू रावण प्रतिहरी आया (अथवा) आघा आम पधारो पुज्य अमधर वहोरण वेला ॥ ए देशी ॥ संभव जीनवर साहेब साचो, जे छे परम दयाल ॥ करुणानिधि जगमांही मे टो, मोहन गुण मणीमाल ॥ १ ॥ भवियां भाव धरीने लाल, श्रीजीन सेवा कीजे ॥ दुरमति दुर करीने लाल, नरभव सफलो कीजे ॥ ए आंकणी ॥ एह जगत गुरु जुगते सेवो, खट-काय प्रतिपाल ॥ द्रव्य भाव परिणति करो निरमल, पुजो थई उजमाल ॥ भवि० ॥ २ ॥ केसर चंदन मृगमद भेळी, अरचे जीन-वर अंग ॥ द्रव्य पुजा ते भावनुं कारण, कीजे अनुभव रंग ॥ भवि० ॥ ३ ॥ नाटक करतां रावण पाम्यो, तीर्थंकर पद सार ॥ देवपाल प्रमुख जीनपद ध्यातां, प्रभु पद लहुं श्रीकार ॥ भवि० ॥ ४ ॥ वितराग पुजाथी आतम, परमातम पद पावे ॥ अज अक्षय सुख जीहां शाश्वतां, रुपातित स्वभावे ॥ भवि० ॥ ५ ॥ अजर अमर अविनाशी कहीये; पुरणानंद जे पाम्या ॥ लोका लोक स्वभाव विभासक, चउगतिनां दुःख वाम्यां ॥ भवि०॥ ६ ॥ एवा जीनकुं ध्यान करंतां, लहीए सुख निरवाण ॥ जीन उत्तम पदने अवलंबी, रतन लहे गुण खाण ॥ भवि० ॥ ७ ॥

॥ श्री अजिनंदन स्वामीनुं स्तवन ॥

॥ शीरोईनो सालु हो कसबी कोर खरी ॥ ए देशी ॥ चोथो जिनपति हो के सेवो चित्त खरे, गुणमणी दरियो हो के प्रगटो शुभ परे ॥ वंछितदाता हो के प्रगटयो सुरतरु, मोहन मुरति हो के रुप मनोहरु ॥ १ ॥ सुरती सारी हो के भविजन चित्त वसी, मुख पंकज सोहे हो के जाणो पुरण शशी ॥ लोचन सुभगां हो के निरुपम जगधणी, भावे वंदो हो के प्रत्यक्ष सुरमणी ॥ २ ॥ जग उपगारी हो के जग गुरु जग त्राता, जस गुण शुणतां हो के उपजे अति शाता ॥ नाम मंत्रथी हो के आपदा सवि खसे, क्रोधादिक अजगर हो के तेहने नवि डसे ॥ ३ ॥ पुरणानंद परमेश्वर हो के ज्ञान दीवाकरु, चउगति चुरण हो के पाप तिमिर हरु ॥ सहज विलासी हो के अठमद शोखतां, निःकारण वच्छलहो के वैराग पोखतां ॥ ४ ॥ निजद्रव्य परमेश्वर हो के स्वसंपद भोगी, परभावना त्यागी हो के अनुभवगुण जोगी ॥ अलेशी अणाहारी हो के खायक गुणभरो, अक्षय अनंता हो के अव्याबाध वरो ॥ ५ ॥ चार निखेपे हो के जे जीन चित धरे, अहळही अवलंबन हो के पंचम गति वरे ॥ जीन उत्तमनी हो के सेवा जे करे, रतन अमुलख हो के पामे शुभ परे ॥ ६ ॥

॥ श्री सुमतिनाथ स्तवन ॥

॥ मोहनगारा हो राजरुडा, मारा सांभळो सुगुणा सुडा ॥ ए देशी ॥ सुमति जिनेसर साहिबोजी, सुमति तणो दातार ॥ चउगति मारग चुरतोजी, गुणमणीनो भंडार के ॥ जीनपति जुक्ते लाल जाणी वंदे जे गुणखाणी ॥१॥ ए आंकणी ॥ सहजानंदी साहेबाजी, परम पुरुष गुणधाम ॥ अक्षय सुखनी संपदाजी, प्रगटे जेहने नाम के ॥ जीनपति० ॥ २ ॥ नाथ निरंजन जगधणीजी, नीरागी भगवान ॥ जग बंधव जग वत्सलुजी, कीजे सदंतर ध्यान के ॥ जीन० ॥ ३ ॥ ध्यान भुवनमां ध्यावतांजी, होवे आतम शुद्ध ॥ संवर साधे निर्जराजी, अविरतिनो करे रुध के ॥ जीन० ॥ ४ ॥ ज्ञानादि गुण संपदाजी, प्रगटे झाक झमाल ॥ चिदानंद सुख अनुभवीजी, लेवे गुण मणी माल के ॥ जीन० ॥ ५ ॥ पंचम जीन सेवता थकांजी, पाप पंक क्षय जाय ॥ द्रव्य भाव भेदे करीजी, कारज सघळां थाय के ॥ जीन० ॥ ६ ॥ मंगलासुत सुहंकरुजी, कुळ मांहे तिलक समान ॥ पंडित उत्तमविजय तणोजी, रतन धरे तुम ध्यान के ॥ जीन० ॥ ७ ॥

॥ श्री पद्मप्रभस्वामीनुं स्तवन ॥

॥ रामचंद्र के बाग चंपो मोही रह्योरी ॥ ए देशी ॥ पद्म प्रभु जीनराज, सुरनर सेव करेरी ॥ पुष्टालंबन देव, समरे दुरित

करेरी ॥१॥ टाळे मिथ्या दोष,समकित पोष करेरी ॥ भवि कमल पडिबोह, दुरगति दुर हरेरी ॥ २ ॥ त्रिगडे त्रिभुवन स्वामी, बेसी धरम कहेरी ॥ शांति सुधारस वाण, सुणतां तत्व ग्रहेरी ॥ ३ ॥ क्रोधादिकनो त्याग, समता संग सजोरी ॥ मन आणी स्यादवाद, अव्रती ताम तजोरी ॥ ४ ॥ अनुभव चारित्र ग्यान, जीन आणा शिर धरोरी ॥ अक्षय सुखनुं ध्यान, करी भवजलधि तरोरी ॥५॥ रक्त वरण तनु कान्ति,वरणरहित थयोरी ॥ अजर अमर निरुपाधी, लोकांतिक रह्योरी ॥ ६ ॥ निरागी प्रभु सेव, त्रिकरण जेह करेरी ॥ जिन उत्तमनी आण, रतन ते शिर धरेरी ॥ ७ ॥

॥ श्री सुपार्श्वनाथस्वामीनुं स्तवन ॥

॥ साहेलडीआंनी देशी ॥ पृथ्वी सुत परमेसरु ॥ साहेलडीआं ॥ सातमो देव सुपास ॥ गुण वेलडीआं ॥ भव भय भावठ भंजणो ॥ सा० ॥ पुरतो विश्वनी आश ॥ गु० ॥ १ ॥ सुरमणी सुरतरु सारीखो ॥ सा० ॥ काम कुंभ सम ह ॥ जगु० ॥ तेहथी अधिक-तर तुं प्रभु ॥ सा० ॥ तेहमां नहीं संदेह ॥ गु० ॥ २ ॥ नाम गोत्र जस सांभळे ॥ सा० ॥ महा नीर्जरा थाय ॥ गु० ॥ रसना पावन स्तवन थकी ॥ सा० ॥ भव भवनां दुःख जाय ॥ गु० ॥ ३ ॥ विषय कषाये जे रता ॥ सा० ॥ हरिहरादि देव ॥ गु० ॥ तेह चित्त मांहि नवि धरु ॥ सा० ॥ न करुं तेहनी सेव ॥ गु० ॥४॥ परम पुरुष परमातमा ॥ सा० ॥ परमानंद स्वरुप ॥ गु० ॥ ध्यान

भुवनमां धरतो थकां ॥ सा० ॥ प्रगटे सहज स्वरुप ॥ गु० ॥५॥ तृष्णा ताप समावतो ॥ सा० ॥ शीतलताये चंद ॥ गु० ॥ तेजे दीनमणी ओपतो ॥ सा० ॥ उपशम रसनो कंद ॥ गु० ॥ ६ ॥ कंचन कान्ति सुंदरु ॥ सा० ॥ कान्तिरहित कीरपाल ॥ गु० ॥ ज्ञान उतम पद सेवतां ॥ सा० ॥ रतन लहे गुण माल ॥गु०॥७॥

॥ श्री चंद्रप्रभुजीनुं स्तवन ॥

"तुमे बहु मांत्रीरे साहिबा (अथवा) कर्मन लुटेरे प्राणीआ ॥ ए देशी ॥ श्री चंद्रप्रभु जीन साहेबा, शरणागत प्रतिपाल ॥ दरशन दुरलभ तुम तणु, मोहन गुण मणीमाल ॥ श्रीचंद्र प्रभु जीन साहेबा ॥ १ ॥ साचो देव दयाळवो, सहजानंदीनुं धाम ॥ नामे नव निध संपजे, सीझे वांछित काम ॥ श्री० ॥ २ ॥ ध्येय पणेरे ध्यावतां, ध्याता ध्यान परमाण ॥ कारणे कारज नीपजे, एहवी आगम आण ॥श्री०॥३॥ परमातम परमेसरु, पुरसोतम परधान ॥ सेवक सुणीए विनति, कीजे आप समान ॥ श्री० ॥ ४ ॥ श्रद्धा भासन रमणता, आणी अनुभव अंग ॥ निरागीशुंरे नेहलो, होये अकल अभंग ॥ श्री० ॥ ५ ॥ चंद्रप्रभु जीन चित्तथी, मुकुं नहीं जीनराज ॥ मुज तनु घर मांहे खेंचीओ, भक्ते मं सात राज ॥श्री० ॥ ६ ॥ गुण निधि गरिब निवाज छो, करुणा निधि कीरपाळ ॥ उत्तमविजय कवि राजनो, रतन कहे गुणमाळ ॥ श्री० ॥ ७ ॥

॥ श्री सुविधिनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए राग ॥ सुविधि जीनेसर साहेब सांभलो, तुमे छो चतुर सुजाणोजी ॥ साहेब सनमुख नजरे जोयतां, वाधे सेवक वानोजी ॥ सुविधि० ॥ १ ॥ भव मंडपमां रे भमतां जगगुरु, काल अनादि अनंतोजी ॥ जनम मरणनां ते दुःख आकरां, हजीअ न आव्यो अंतोजी ॥ सुविधि० ॥ २ ॥ छेदन भेदन वेदन आकरी, गुणनिधि नरक मझारोजी ॥ क्षेत्र कुंभी वैतरणी वेदना, कथतां नावे पारोजी ॥ सुविधि० ॥३॥ विवेक रहित विकलपणे करी, न लह्यो तत्व विचारोजी ॥ गति तिर्यंचमां रे परवश पणे करी, सह्यां दुःख अपारोजी ॥ सुविधि० ॥ ४ ॥ विषया संगे रे रंगे राचीओ, बंधाणो मोह पासोजी ॥ अमरी संगे सुरभव हारीओ, कीधा दुरगति वासोजी ॥ सुविधि० ॥ ५ ॥ पुन्य महोदय जगगुरु पामीओ, उत्तम नर अवतारोजी ॥ आरज क्षेत्रे रे सामग्री धरमनी,सदगुरु संगति सारोजी ॥ सुविधि० ॥ ६ ॥ ज्याना नंदेरे पुरण पावतो, तीरथपति जीनराजाजी ॥ पुष्टालंबन करतां जगगुरु, सीध्यां सेवककाजोजी सुविधि० ॥ ७ ॥ नाम जपंतां रे सवि संपत्ति मले, स्तवतां कारज सीधोजी ॥ जीन उत्तम पद पंकज सेवतां, रतन लहे नव निधोजी ॥ सुविधि० ॥ ८ ॥

॥ श्री शीतलनाथनुं स्तवन ॥

॥ देशी ललनानी ॥ ए देशी ॥ शीतल जीनपति सेवीए, दसमो देव दयाल ललना ॥ शितल नाम छे जेहनुं,शरणागत प्रतिपाल ललना ॥ शीतल० ॥ १ ॥ बाह्य अभ्यंतर शीतलुं, पावन पुरणानंद ललना ॥ प्रगट पंच कल्याणके, सेवे सुरनर वृंद ललना ॥ शीतल० ॥ २ ॥ वाणी सुधारस जलनिधि, वरसे ज्युं जलधार ललना ॥ त्रिगडे चउमुख देशना, करवा भवि उपगार ललना ॥ शीतल०॥३॥ मिथ्या तिमिर उच्छेदवा, तीव्र तरणी समान ललना समकित पोष करे सदा,आपे वांछित दान ललना॥ शीतल०॥४॥ अघमोचन अलवेसरु, मुज मन सरोवर हंस ललना ॥ अविलंबन भव स्तवने, दव मानुं अवतसं ललना ॥ शीतल० ॥ ५ ॥ अष्टादश दोषे करी, रहित थयो जगदीश ललना ॥ जोगीश्वर पण जेहनां, ध्यान धरे निशदीश ललना ॥ शीतल० ॥ ६ ॥ ध्यान भुवनमां ध्याइए, तो होए कारज सिद्ध ललना ॥ अनुभवे आतम संपदा, प्रगटे आतम ऋद्ध ललना ॥ शी० ॥ ७ ॥ कोड गमे सेवा जेहनी, देव करे करजोड ललना ॥ ते निर्जरानुं फल लहे, कुण करे जेहनी होड ललना ॥ शीतल० ॥ ८ ॥ जीन उत्तम अवलंबने, पग पग ऋद्धि रसाळ ललना ॥ रतन अमुलख ते लहे, पामे मंगळ माळ ललना ॥ शीतल० ॥ ९ ॥

॥ श्री श्रेयांसनाथनुं स्तवन ॥

॥ महाविदेह क्षेत्र सोहामणुं ॥ ए देशी ॥ श्री श्रेयांस जीणं-

दनी. मुरती सुंदर देख लालरे ॥ रुप अनुत्तर सुरथकी, अधिक गुणो ते पेख लालरे ॥ श्री० ॥ १ ॥ अंगना अंके धरे नही, हाथे नही करवाळ लालरे ॥ विकारे वरजीत जेहने, मुद्रा अतिही रसाळ लालरे ॥ श्री० ॥२॥ वाणी सुधारस सारखी. देशना दोए जळ-धार लालरे ॥ भवदव ताप समावकुं, त्रिभुवन जन आधार ला-लरे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ मिथ्या तिमिर विनाश तो. करतो समकित पोष लालरे ॥ ज्ञान दीवाकर दीपतो, वरजीत सघला दोष लालरे श्री० ॥ ४ ॥ परमातम प्रभु समरतां, लहीए पद निरवाण लालरे ॥ पामे द्रव्य भाव संपदा, एवी आगम वाण लालरे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ जैनागमथी जाणीयुं, विगती जग गुरुदेव लालरे ॥ कीरपा करी मुज दीजोए, मागु तुम पद सेव लालरे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ तुम दरशनथी पामीउं, गुणनिधि आनंदपुर लालरे ॥ आज महोदय में लह्यो, दुःख गयां सवि दुर लालरे ॥ श्री० ॥ ७ ॥ विष्णुनंदन गुण नीलो, विष्णु मात मल्हार लालरे ॥ अंके खड्गी दीपतुं, गुणमणीनो भंडार लालरे ॥ श्री० ॥ ८ ॥ समेतशिखरे सिद्धि वर्या, पाम्या भवो-दधि पार लालरे ॥ जिन उत्तम पद पंकजे, रतन मधुप झंकार लालरे ॥ श्री० ॥ ९ ॥

॥ श्री वासुपूज्यस्वामीनुं स्तवन ॥

॥ मारो पेउ ब्रह्मचारी ने राजुलनारी (अथवा) एम कोइ सिद्धिवर्यां मुनीराया ॥ ए देशी ॥ वासुपूज्य जिन अंतरजामी, हुं

प्रभु शिरनामी रे ॥ मारा अंतरजामी ॥ त्रिकरण जोगे ध्यान तुमारुं, करतां भव भय वारु रे ॥ मारा० ॥ १ ॥ चोत्रीस अतिशय शोभा कारी, तुमची जाउं बलिहारी रे ॥ मारा० ॥ ध्यान विनाणे शक्ति प्रमाणे, सुरपति गुण वखाणे रे ॥ मा० ॥ २ ॥ देखवा देतां तखत विराजे, जलधरनी पेरे गाजेरे ॥ मा० वाणी सुधारस गुणमणी खाणी, भाव धरी सुणे प्राणीरे ॥ मा० ॥ ३ ॥ दुविध धरम दयानिधि भाखे, हेतु जुगते प्रकाशे रे ॥ मा० ॥ भेदरहित निरखीने मुजने, तो जग वधशे कीर्त्ति तुजने रे ॥मा०॥ ॥ ४ ॥ मुद्रा सुंदर दीपे तहारी, रुप मोह्या अमर नरनारी रे ॥ मा० ॥ साहेब समतारसनो दरिओ,मार्दव गुण जे भरीओ रे ॥ ॥ मारा० ॥ ५ ॥ सहजानंदी साहेब साचो, जीम होये हीरो साचो रे ॥ मारा० ॥ परमातम प्रभुजो ध्याने ध्यावो, तो अक्षय लीला पावो रे ॥ मारा० ॥ ६ ॥ रक्तवरण दीपे तनु कान्ति, जोतां होय भव शांतिरे ॥ मारा० ॥ उत्तमविजय विबुधनो शीश, कहे रत्नविजय सुजगीश रे ॥ मारा अंतरजामी ॥ ७ ॥

॥ श्री विमलनाथनुं स्तवन ॥

॥सुमखडुं सुमी रयुं रे॥ (अथवा) यात्रा नवाणुं करीए सलुणा॥ ॥ ए देशी ॥ विमल जिनेसर सुंदरु रे, निरुपम छे तुम नाम ॥ जीणेसर सांभरे ॥ पुरणानंद परमेसरु, आतम संपदा स्वामी ॥ ॥ जीणेसर० ॥ १ ॥ निरागीशुं नेहलो, शुध मन करवा भाव ॥

॥ जी० ॥ निःकारण जगवच्छलु, भवोदधि तारण नाव ॥ जी० ॥ ॥ २ ॥ सारथवाह शीवपंथनो, भाव धरम दातार ॥ जी० ॥ ध्यानानंदे पुरणे, त्रिभुवन जन आधार ॥ जी० ॥ ३ ॥ अष्ट करम हेलां हणी, पाम्या शीवपुर वास ॥ जी० ॥ क्षायक भावे गुणवरा, हुं समरुं नित्य तास ॥ जी० ॥ ४ ॥ गुण गाता गिरुआ तणा, जीह्वा पावन थाय ॥ जी० ॥ नाम गोत्र जस साभले, भव भवनां दुःख जाय ॥ जी० ॥ ५ ॥ मन मोहन मारा नाथशुं, अवर न आवे दाय ॥ जी० ॥ पामी सुरतरु परवडो, कोण करीरे जाय ॥ जी० ॥ ६ ॥ सहजानंदी साहेबो, वरजीत सकल उपाधि ॥ जी० ॥ जीन उत्तम अवलंबने, रतन लहे निजसाध ॥ जी० ॥ ७ ॥

॥ श्री अनंतनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ सुण मेरी सजनी रजनी न जावे रे ॥ ए देशी ॥ अनंत जीणेसर साहिब म्हारो रे, पुरण पाम्यो दरशन ताहरो रे ॥ प्रभु सेवा मुज लागे प्यारी रे, तुमचा गुणनी जाउं बलिहारी रे ॥१ ॥ केवल ज्ञाने जगतने जाणे रे, लोकालोकना भाव वखाणे रे ॥ सम्यक ज्ञान ते भव दुःख कापे रे, ज्ञानविण क्रिया फल नवी आपे रे ॥ २ ॥ सामान्ये वस्तु पदारथ जेह रे, एक समयमां देखे, तेह रे ॥ केवल दरीशण त्रिगने जाणो रे, जैनागमथी चित्तमां आणो रे ॥ ३ ॥ निरुपाधिक निज गुण छे जेहरे, निजस्वभावमां स्थिरता तेहरे ॥ क्षायक चारित्र ते जग सार रे, जे आवे भवो-

दधि पार रे ॥ ४ ॥ विलसे अनंत वीरज उदार रे, ए भाख्यां अनंता चार रे ॥ ए गुणना प्रभु तुम छो भोगी रे, गुणठाणातीत थया अजोगी रे ॥ ५ ॥ त्रिकरण जोगे ध्यान तुमारुं रे, करता सारुं काज अमारु रे ॥ पुष्टालंबन देव तुं मारो रे, हुं छुं सेवक भवोभव तारो रे ॥ ६ ॥ सिंहसेन नृपवंश सुहायो रे, सुजसा राणी तुजने जायो रे ॥ उत्तम विजय विबुधनो शिष्य रे, रतन-विजयनी पुरो जगीश रे ॥ ७ ॥

॥ श्री धर्मनाथनुं स्तवन ॥

॥ कपुर होये अति उजळो रे ॥ ए देशी ॥ धरम जिणेसर ध्याइएरे, आणी अधिक सनेह ॥ गुण गातां गिरुआ तणा रे, वाधे बमणो नेह ॥ १ ॥ जीणेसर पुरो अमारी आश ॥ जीम पामुं शीवपुर वास ॥ जी० ॥ ए आंकणी ॥ काळ अनादि निगो-दमां रे, भम्यो अनंतीवार ॥ करम नटवोये रोळव्यो रे, सेवतां पाप अढार ॥ जीणे० ॥ २ ॥ प्राणातिपात मृषा वधुं रे, त्रीजुं अदत्तादान ॥ विषया रसमां माचीओ रे, गुणनिधि कीधुं दुर ध्यान ॥ जी० ॥ ३ ॥ नवविध परिग्रह मेळियो रे, कीधो क्रोध अपार ॥ मान माया लोभे करीरे, न लह्यो तत्व विचार ॥ जी० ॥ ४ ॥ रागद्वेष कलहे करी रे, दीधां परने आळ॥ मैथुन रति अरति वली रे, जे सेवे दुःख असराल ॥ जी० ॥५॥ दोखवी दीआ गुणवंतनेरे रे, कीधा माया मोष ॥ मिथ्या शल्य दोषे करी रे, कीधा अविरती पोष जो० ॥ ६ ॥ पापस्थान सेवे

जीवडो रे, रुळीओ चौगति मोझार ॥ जनम मरणादि वेदनारे, सही ते अनंत अपार ॥ जी० ॥ ७ ॥ एवी विटंबन वेदनारे, टाळो श्री जिनराज ॥ बांहे ग्रहीने तारीए रे. सारो सेवक काज ॥ जी० ॥ ८ ॥ धरम जिनेश्वर स्तवतां थकां रे, पोहोती मननी आश ॥ जीन उत्तम पद सेवतां रे, रतन लहे शीववास ॥ ॥ जी० ९ ॥

॥ श्री शांतिनाथनुं स्तवन ॥

॥ ढंढण ऋषिने वंदणा हुं वारी ॥ ए देशी ॥ अचिरानंदन वंदीए हुं वारी ॥ गुणनिधि शांति जीणंद रे हुं वारी लाल ॥ अभयदान गुण आगरु हुं वारी, उपशम रसनो कंदरे हुं वारी लाल ॥ अचिरा० ॥ १ ॥ मारी मरकी अति वेदना हुं वारी, पसरी सघळे देशरे ॥ हुं वारी लाल ॥ दुखदायक अति आकरी हुं वारी, पामे ते लोक कलेश रे ॥ हुं० ॥ अ० ॥ २ पुण्यानुबंधी पुण्यथी हुं वारी, उपन्या गरभ मझार रे ॥ हुं० शांति मह्यचि जन पदे हुं वारी, हुआ जयजयकार रे ॥ हुं० ॥ अचिरा० ॥३॥ दोय पदवी एके भवे हुं वारी, षोडशमो जगदीशरे ॥ हुं०॥ पंचम चक्री गुणनिलो हुं वारी, मइ उठी नामुं शीशरे ॥ हुं० ॥ अ० ॥ ॥ ४ ॥ दीक्षा ग्रहे दीन ते थकी हुं वारी, चउनाणी ममध्यानरे॥ ॥ हुं० ॥ घनघाति करमना नाशथी हुं वारी, पाम्या पंचम ज्ञान रे ॥ हुं० ॥ अ० ॥ ५ ॥ तीरथपति विचरे जीहां हुं वारी, भिमहुं रचे सुर रायरे ॥ हुं० ॥ समवसरणे दीए देशना हुं वारी, सुणतां भव दुःख जाय रे ॥ हुं० ॥ अ० ॥ ६ ॥ पचवीससतें आमळां हुं

बारो, जोयण लगे ते जाणरे हुं वारी लाल ॥ स्वचक्र परचक्रनां हुं वारी* ॥ अ० ॥ ७ ॥ जीव घणा तीहां उधरी हुं वारी, शीवपुर सनमुख कीध रे ॥ हुं० ॥ अक्षय सुख जीहां शाश्वतां हुवारी, अविचल पदवी दीध रे ॥ हुं० ॥ अ० ॥ ८ ॥ सहस मुनि साथे वर्यां हुं वारी, समेतशिखर गिरि सिधरे ॥ हुं० ॥ उत्तम गुरुपद सेवतां हुं वारी, रतन लहे नव नीधरे ॥ हुं० ॥ अ० ॥ ९ ॥

॥ श्री कुंथुंनाथनुं स्तवन ॥

॥ कत तमाकु परिहरो ॥ ए देशी ॥ कुंथुं जिणेसर साहेबो, सदगतिनो दातार मेरे लाल ॥ आराधो कामित पुरणो, त्रिभुवन जन आधार मेरे लाल ॥ सुगुण सनेही साहेबो ॥ १ ॥ दुरगति पडतां जंतुने, उद्धरवा दीए हाथ ॥ मेरे० ॥ भवोदधि पार उतारवा, गुणनिधि तुं समरथ ॥ मेरे० ॥ सुगुण० ॥ २ ॥ भव त्रीजेथी बांधियुं, तीर्थंकर पद सार ॥ मेरे० ॥ भव सर्वनी करुणाये करी, वली थानक तपथी उदार ॥ मेरे० ॥ सु० ॥ ३ ॥ उपकारी अरिहंतजी, महिमावत महंत ॥ मेरे० ॥ निःकारण जग वच्छलु, गीरुओ ने गुणवंत ॥ मेरे० ॥ सु० ॥ ४ ॥ ग्यानानंदे पुरणो, भाखे धर्म उदार ॥ मेरे० ॥ स्यादवाद सुधारसे, वरसे ज्युं जलधार ॥ मेरे० ॥ सु० ॥ ५ ॥ अतिशय गुण उदये थकी, वाणीनो विस्तार ॥ मेरे० ॥ उत्तमविजय विबुधनो शीश,कहे रतनविजय सुजगीशरे ॥ मारा अंतरजामी ॥ बारे परखदा सांभले, जोयण लगे ते सार ॥ मेरे० ॥ सु० ॥ ६ ॥ सारथवाह शीवपंथनो, आतम संपदा इश ॥ मेरे० ॥ ध्यान भुवनमां

---

* सातमी गाथामां एक चरण त्रुटे छे. ते कोइ पासे होयतो अमने लखी मोकलशो अने पुस्तकमां सुधारी वांचजो.

ध्यायतां, लहीए अतिशे जगीश ॥ मेरे० ॥ ७ ॥ छठ्ठा चक्री दुःख हरे, सत्तरमा जीनदेव ॥ मेरे० ॥ मोटे पुन्ये पामीओ, तुम पद पंकज सेव ॥ मेरे० ॥ सु० ॥ ८ ॥ परम पुरुषनो चाकरी, करवी मनने कोड ॥ मेरे०॥ उत्तम विजय विबुध तणो, रतन नमे करजोड ॥ मेरे० ॥ सु० ॥ ९ ॥

॥ श्री अरनाथनुं स्तवन ॥

॥ चतुर सनेही मोहना ॥ ए देशी ॥ अर जीनवर दीए देशना, सांभलजो भवि प्राणी रे ॥ मीठा सुधारस सारखी, सुणीए अनुभव आणी रे ॥ अर० ॥ १ ॥ आळस मोह अज्ञानता, विषय प्रमादने छंडी रे ॥ तनमय त्रिकरण जोगशुं, धरम सुणो चित्त मंडीरे ॥ अ० ॥२॥ दश दृष्टांते दोहिलो, नरभवनो अवतार रे ॥ सुरमणी सुरतरु सारीखो, तेहथी अधिक ते जाणो रे अ० ॥ ३ ॥ ए संसार असारमां, जनम्यो चेतन एह रे ॥ धरमे वरजीत दीन गया, हजीय न आव्यो छेह रे ॥ अ० ॥ ४ ॥ ज्ञान दरशन मयो आतमा, कर्म पंके अवराणो रे ॥ शुद्ध दिशा निज हारीने, दोषे ते भराणो रे ॥ अ० ॥ ५ ॥ दोष अनादि उधरे, जैनागम जग सारो रे ॥ सकल नये जे आदरे, तो होय भवोदधि पारो रे॥अ०॥ ॥ ६ ॥ जीन आणाए आराधतां, विधे थई उजमाळ रे ॥ संवर साथे निर्जरा, नित्य पामे मंगलमाळ रे ॥ अ० ॥७॥ चक्री भू ते सातमो, अढारमो जीनराय रे ॥ उत्तम विजय कविराजनो, रतन विजय गुण गाय रे ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ श्री मल्लीनाथनुं स्तवन ॥

॥ देशी ॥ जगपतिनी ॥ जगपति साहेब मल्लि जिणंद, महिमा महिअळ गुणनीलो ॥ जगपति दिनकर ज्युं उद्योत, कारक वंशे कुल तिळो ॥१॥ जगपति प्रबल पुन्य पसाय, उद्योत नरके विस्तरे ॥ जगपति अंतर महुरत नाम, शातावेदनी ते करे ॥२॥ जगपति सुधारस वृष्टिसाय, तुजमुख चंद्र थकी झरे ॥ जगपति पडिबोहे भवियण स्वाम, मिथ्या तिमिर दुरे करे ॥३॥ जगपति जगमां झाझ समान, उपगारी शीर सेहरो ॥ जगपति तुम दरसनथी आज, काज सर्यां हवे माहरो ॥४॥ जगपति दीठे तुम मुखकज, दुरित नाठा त्रण माहरे ॥ जगपति दलिद्रपणुं ने दुर्भाग्य पुष्टालंबन प्रभु ताहरे ॥ ५ ॥ जगपति भवोभव संचित जेह, अघ नाठां टळी आपदा ॥ जगपति जाचुं नहीं कोशो दाम, मागुं तुम पद संपदा ॥ ६ ॥ जगपति थुणोओ धरी मन नेह, ओगणीशमो जीन सुख करु ॥ जगपति नील वरण तनु कान्ति, दीपती रुप मनोहरु ॥ ७ ॥ जगपति जीन उत्तम पद सेव, करतां सवि संपद मळे ॥ जगपति रतन नमे करजोड, भावे भवोदधि भय टळे ॥८॥

॥ श्री मुनिसुव्रतस्वामीनुं स्तवन ॥

॥ वीर जीणंद जगत उपगारी ॥ ए देशी ॥ मुनिसुव्रत जीन अधिक दिवाजे, महीमा महियळ छाजेजी ॥ त्रिजग वंदित त्रीभुवन स्वामी, गिरुओ गुणनिधि गाजेजी ॥ मुनि०॥१॥ वड वखत वर अतिशय धारी, कल्पातित आचारजी ॥ चरण करणभुत प-

हाव्रत धारी, तुमची जाउं बलिहारीजी ॥ मु० ॥ २ ॥ जग जन रंजन भवदुःख भंजन, निरुपाधिक गुण भोगीजी ॥ अलख निरंजन देव दयालु, आतम अनुभव जोगीजी ॥ मु० ॥ ३ ॥ ज्ञानावरणी क्षयथी प्रगटयुं, अनोपम केवळ नाणजी ॥ लोकालोक प्रकाशक स्वामी, उग्यो अभिनव भाणजी ॥ मु० ॥ ४ ॥ वरसी वसुधा पावन कीधी, देशना सुधारस सारजी ॥ भविक कमळ प्रतिबोध करीने, कीधा बहु उपकारजी ॥ मु० ॥ ५ ॥ संपुरण तें सिद्धता साधी, वीरमी सकल उपाधिजी ॥ निरुपाधिक ते निजगुण वरीया, अनोपम अव्याबाधजी ॥ मु० ॥ ६ ॥ हरिवंशे विभुषण दीपे, अरिष्ट रतन तनु कान्तिजी ॥ सुख सागर प्रभुदास वंदित, जोतां होये भव शांतिजी ॥ मुनि० ॥ ७ ॥ समेत शिखरे सिद्धि वरीया, सहस पुरुषने साथजी ॥ जीन उत्तम पदने अवलंबी, रतन थाय सनाथजी ॥ मुनि० ॥ ८ ॥

॥ श्री नमिनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ थापर बारी मोरा साहिबा, काबुल मत जाजो ॥ (अथवा) सोना रुपाके सोगटे सैया खेलत बाजी ॥ ए देशी ॥ निरुपम नमी जीणेसरु, अक्षय सुखदाता ॥ अतिशय गुण अधिकथी, स्वामी जग विख्याता ॥ निरुपम०॥१॥ बार गुणो अरिहंत थकी, उंचो वृक्ष अशोक ॥ भव दव पीडित जंतुने, जाय जोतां शोक ॥ निरु० ॥२॥ पीत वरण सिंहासने, प्रभु बेठा छाजे ॥ दिव्यध्वनी

दीये देशना, नादे अंबर गाजे ॥ निरु० ॥ ३ ॥ छत्र धरे त्रण सुरवरा, चामर वींजाय ॥ भामंडल अति दीपतुं, पुंठे जीनराय ॥ निरु० ॥ ४ ॥ जोजन माने सुर करे, वृष्टि कुसुम केरी ॥ गयणे गाजे दुंदुंभी, करे प्रदक्षण फेरी ॥ निरु० ॥ ५ ॥ अष्ट महा पाडिहारे करी, दीपे श्री जगदीश ॥ अष्ट करम हेलां हणी, पाम्या सिद्धि जगीश ॥ निरु० ॥ ६ ॥ नामे नवनिधि संपजे, सेवतां भव दुःख जाय ॥ उत्तम विजय विबुध तणो, रत्न विजय गुणगाय ॥ ॥ निरु० ॥ ७ ॥

॥ श्री नेमनाथनुं स्तवन ॥

॥ हांरे हुंतो भरवा गइती नदी जमनानुं नीरजो ॥ ए देशी ॥ हांरे मारे नेमि जीणेसर अलवेसर आधारजो ॥ साहिबरे सोभागी गुणमणी आगरु रे लो ॥ हां० परम पुरुष परमातम देव पवित्रजी, आज महोदय दरीसण पामे ताहरुं रे लो ॥ १ ॥ हां० तोरण आवी पशु छोडावी नाथजो, रथ फेरीने वळीआ नायक नेमजी रे लो ॥ हां० देव अटारे ए शुं कीधुं आजजो, रढीआळी वर राजुल छोडी नेमजी रे लो ॥ २ ॥ हां० संजोगी भाव विजोगी जाणी स्वामी जो, ए संसारे भमतां को केहनुं नही रे लो ॥ हां० लोकांतिक वाणी अवधि जाणी मानजो, वरसीदान दीए तीहां प्रभु सही रे लो ॥ ३ ॥ हां० सहसावनमां सहस पुरुषने साथजो, भव वली दुखे छेदण चारित्र आदरे रे लो ॥ हां०

वस्तु तत्वे रमण करता सारजो, चोपनमे दिन अनोपम प्रभु केवल वरे रे लो ॥ ४ ॥ हां० लोकालोक प्रकाशक त्रिभुवन भाणजो, त्रिगडे बेसी धरम कहे तीहां जीनवरु रे लो ॥ हां० शीवानंदन वरसे सुधारस वाणीजो, आस्वादे भविय चकोर अति सुंदरु रे लो ॥ ५ ॥ हां० देशना सांभळी बुजी राजुल नारीजो, निज स्वामीने हाथे संजम आदरे रे लो ॥ हां० अष्ट भवनी पाळी पुरण प्रीतजो, पिउ पेहेलां शीव रमणी राजुल ते वरी रे लो ॥ ६ ॥ हां० विचरी वसुधा पावन कीधी नाथजो, जग उपगारी साहेब ते देव गुणनिधि रे लो ॥ हां० जीन उत्तम पद पंकज अनोपम सेवजो, करतां रतनविजयनी कीरति अति वधी रे लो ॥७॥

॥ श्री पार्श्वनाथनुं स्तवन ॥

॥ कोइलो परवत धुंधलोरे लो ॥ ए देशी॥ त्रिभुवन नायक वंदोये रे लो, पुरुषादाणी पासरे जीणेसर ॥ सुरमणी सुरतरु सारीखो रे लो, पुरतो विश्वनी आशरे जीणेसर ॥ जयो जयो पास जीणेसरु रे लो ॥१॥ पुष्टालंबन भविकने रे लो, महिमा निधि आवासरे जीणेसर ॥ वासव पुजित वंदीए रे लो, आणी भाव उल्लासरे जीणेसर ॥ जयो० ॥२॥ श्री जीन दरीसण ते विना रे लो, भमोयो काल अपार रे जीणेसर ॥ आतम धरम न ओळख्यो रे लो, न कर्यो तत्व विचार रे जीणेसर ॥ जयो० ॥ ३ ॥

प्रवचन अंजन जे करे रे लो, पामी सदगुरु संगरे जीणेसर । श्रद्धा भासन उजले रे लो, तो लहीए धरम प्रसंग रे जीणेसर ॥ जयो० ॥ ४ ॥ साधन भावे भविकने रे लो, सिद्धने क्षायक होय रे जीणेसर ॥ प्रगट्यो धरम ते आपणो रे लो, अचल उ-भंग ते जोये रे जीणेसर ॥ जयो० ॥५॥ तुज चरणा मुज भेटतां रे लो, भावे करी जीनराज रे जीणेसर ॥ नेत्र जुगल जोन नि-रखतां रे लो, सीध्यां वंछित काज रे जीणेसर ॥ जयो० ॥ ६ ॥ नील वरण नव कर भलुं रे लो, दीपे तनु सुकुमाल रे जीणेसर ॥ जीन उत्तम पद सेवतां रे लो, रतन लहे गुण माल रे जीणेसर । जयो जयो पास जीणेसरु रे लो ॥ ७ ॥

॥ श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन.

॥ तने गोकुळ बोलावे कान गोविंद गोरो रे ॥ ए देशी ॥ चोवीसमो श्री महावीर,साहीब साचो रे ॥ रत्नत्रयीनुं पात्र, हीरो जाचो रे ॥१॥ आठ करमनो भार, कीधो पुरो रे ॥ शीव वधुते नारी थइ हजुरो रे ॥२॥ तुमे सार्यां आतम काज, दुःख निवार्यां रे॥ पोहोता अविचल ठाम, जिहां नहीं फेरा रे ॥३॥ जीहां नही जनमने मरण, थया अविनाशी रे ॥ आतम सत्ता जेह, तेह प्रकाशी रे ॥४॥ थया निरंजन नाथ, मोहने चुरी रे ॥ छोडी भव भय कुप, गति निवारी रे ॥ ५ ॥ अतुली बल अरिहंत, क्रोधने छेदो रे ॥ फरशी गुणना

डाण, थवा अवेदी रे ॥ ६ ॥ एवा प्रभुजीनुं ध्यान, भवियण धरीए रे ॥ करीए आतम काज, सिद्धि वरीए रे ॥ ७ ॥ सेवो थइ सावधान, आलस मोडी रे ॥ निद्रा विकथा दुर, माया छोडीरे ॥ ॥ ८ ॥ मृगपति लंछन पाय, सोवन काया रे ॥ सिद्धारथ कुल तिलक समान, त्रिसलाये जायारे ॥ ९ ॥ सत्तरी दो वरस आय, पुरण पालो रे ॥ उद्धरोया जीव अनेक, मिथ्या टालो रे ॥१०॥ जीन उत्तम पद सेव, करतां सारी रे ॥ रतन लहे गुणमाळ, अति मनोहारो रे ॥ ११ ॥

॥ कळश ॥ वीर जीणंद जगत उपगारी ॥ए देशी॥ चोवीस जीणेशर भुवन दीनेसर, निरुपम जग उपगारीजी ॥ महिमा निधि मोटा तुम महियळ, तुमची जाउ बलिहारीजी ॥ १ ॥ अनघ कल्याणक वासव आवी, मेरु शिखरे नवरावेजी ॥ मानुं अक्षय सुख लेवाने सुर, आदे जीन गुण गायाजी ॥ २ ॥ ग्रहवास छंडो समणा जाया, संजमशुं मन भायाजी ॥ गुणमणी आगर ज्ञान दीवाकर, समोवसरण सुहायाजी ॥ ३ ॥ दुविध धरम दया निधि भाखे, निःकारण ग्रहे हाथेजी ॥ वाणी सुधारस बरसो वसुधा, पावन कीधी नाथेजी ॥ ४ ॥ चोत्रीस अतिशय शोभाकारी, वाणी गुण पांत्रीसजी ॥ अष्ट करम मल दुर करीने, पाम्या सिद्ध जगीसजी ॥ ५ ॥ चोवीस जीननुं ध्यान धरंतां, लहीए गुण मणी खाणीजी ॥ अनुक्रमे ते महोदय पदवी, पामे पद निरवाणजी ॥ ॥ ६ ॥ तप गच्छ अंबर उदयो भानु, तेजे प्रतापी छाजेजी ॥

विजय देव सुरीश्वर राया, जश महिमा महियल गाजेजी ॥ ॥७॥ तास पाट प्रभावक सुंदर, विजयसिंह सुरीशजी ॥ वडभागी वैरागी त्यागी, सत्यविजय मुनीशजी ॥ ८ ॥ तसपद पंकज मधुकर सरीखा, कपुरविजय मुणिंदाजी ॥ खिमाविजय तस आसन शोभित, जिनविजय गुरुगुण चंदाजी ॥ ९ ॥ गीतारथ सारथ सुगुण शोभागी, लक्षण लक्षित देहाजी ॥ उत्तम विजय गुरु जग जयवंता, जेहने प्रवचन नेहाजी ॥ १० ॥ ते गुरुनी बहु मेहेर नजरथी, पामी तास पसायेजी ॥ रतनविजय शिष्य अति उछरंगे, जीन चोवीस गुण गायाजी ॥ ११ ॥ सूर्यमंडण पास पसाया, धरमनाथ सुखदायाजी ॥ विजय धरम सुरीश्वर राज्ये, श्रद्धा बोध वधायाजी ॥ १२ ॥ अढारसें चोवीसा वरसे, सुरत रही चोमासुं-जी ॥ माधव मासे कृष्ण पक्षे, त्रयोदशी दीन खासजी ॥ १३ ॥ इति चोवीसी संपूर्ण ॥

॥ श्री मंधर जिन स्तवन ॥

॥ प्राण पीयारा पास जिनेसर रायरे जिनवरजो (अथवा) तोरणथी रथ फेरी चाल्या कंथरे प्रीतमजी–ए देशी

॥ विजया विराजे पुखल वह जिनराय रे ॥ जिनवरजी ॥ पुंडरगणी पुर दीठां आवे दाय ॥ मोरा जिनवरजी ॥ मन विसरावी श्री श्रेयांस कुमार रे ॥जिनवरजी॥ सत्यकी नंदन रुकमगीनो

भरतार ॥ मोरा जिन० ॥ १ ॥ वदन विलोकी सफल करे अव-तार रे ॥ जिन० ॥ धन ते नगरी धन ते नरने नार ॥ मो० ॥ दुर निवारो दुखदाइ संसार रे ॥ जि० ॥ तो हुं तुमारो विसरु नही उपगार ॥ मो० ॥ २ ॥ नरपति धनपति सुरपति गोतक खात रे ॥ जि० ॥ तो किणनें कहुं अंतरगतनी वात ॥ मो० ॥ तरसु निरंतर देखण तुझ दीदार रे ॥ जि० ॥ सांसमे समरु साहिबने सोवार ॥ मो० ॥ ३ ॥ मुजरो माहरो मनमोहन अव-धार रे ॥ जि० ॥ जिम तिम करीनें भवजल पार उतार ॥मो०॥ साचो लागो चोल मजीठ ज्युं रंग रे ॥ जि० ॥ अंग न लागे ओछा रंग पतंग ॥ मो० ॥ ४ ॥ मन हरी म्हारो मोहाकुल दिन रात रे ॥ जि० ॥ कहुं किण विध विषयेनो अंत न आत ॥मो०॥ कांमी क्रोधो कपटी छुं जगनाथ रे ॥ जि० ॥ रहणो हमारी लाज तीहारे हाथ ॥ मो० ॥ ५ ॥ जोवन वाहाला विरुद विचारो जोय रे ॥ जि० ॥ अधम उधारो तो प्रभु साची होय ॥ मो० ॥ अरजी लीज्यो अनुचररी मन मांहे रे ॥ जि० ॥ भव भव जिनमत होज्यो अवर न चाहे ॥ मो० ॥ ६ ॥ श्री सिमंधर साहिब वसीया दुर रे ॥ जि० ॥ जबही समरुं तबही आनंदपुर ॥ मो० ॥ मुजरो म्हारो मानो उगते सूर रे ॥ जि० ॥ रत्नमुनी हियै वसज्यो नाथ हजुर ॥ मो० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आंतरानुंस्तवन ॥

॥ दुहा ॥ शारद शारदना सुपरे, पद पंकज प्रणमेय ॥ चोवीसे जिन वरणवुं, अंतर युत संखेय ॥ १ ॥ वीर पार्श्वने आंतरु, वरस अढीसें होय ॥ पंच कल्याणक पार्श्वना, सांभळजो सहु कोय ॥२॥
॥ ढाल १ ॥ झांझरीया मुनीवर धन धन तुम अवतार–ए देशी ॥

॥ निरुपम नयरी वणारसी जी, श्री अश्वसेन नरिंदतो ॥ वामा राणी गुण भर्याजी, मुख जिम पुनम चंद नो ॥ भवी भाव धरीने प्रणमो पास जिणंदतो ॥ १ ॥०ए आंकणी ॥ प्राणत कल्प थकी चव्याजी, चैत्र वदी चोथने दीन तो ॥ तेहनी कुखे अवतर्याजी, प्रभु जिम किंदर सिंह तो ॥ भवि० ॥ ॥ २ ॥ पोस बहुल दशमी दीनेजी, जन्म्या पास कुमार तो ॥ जोबन वय प्रभु आवीयाजी, वरीया प्रभावती नारी तो ॥ भवि० ॥ ३ ॥ कमठ तणो मद गालीयोजी, उधर्यो नाग सजोर तो ॥ वद अगीयारस पोसनी जी, सजम लीये ऋद्धि छोडतो ॥ भवि० ॥ ४ ॥ गाज विज ने वायरो जी, मुसलधार मेघ तो ॥ उपसर्ग कमठे कर्योजी, धरणेंद्र निवार्यो तेह तो ॥ भवि० ॥ ५ ॥ कर्म खपावी केवल लहीजी, चैत्रवदी चोथ सुजाणतो ॥ श्रावण शुद दीन आठमेजी, प्रभुजीनुं नीर्वाण तो ॥ भवि० ॥ ६ ॥ एकसो वरसनुं आउखुजी, पास चरित्रे कह्युं एम तो ॥ वरस चोरासी सहसनुं जी, आंतरु पासने नेम तो ॥ भवि० ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ सोरीपुर नयर सोहामणुं, जगजीवनारे नेम ॥ समुद्रविजय नरपाल तो, दीलरंजनारे नेम ॥ चविया अपराजित थकी, जग जीवनारे नेम ॥ कारतक वद बारस दीनहो, दील रंजनारे नेम ॥ १ ॥ शीवा देवी कुखे अवतर्या ॥ जग० ॥ मान सर जिम मराल हो ॥ दील० ॥ श्रावण शुदी दीन पंचमी ॥ जग० ॥ प्रसव्यो पुत्र रतनहो ॥ दील० ॥ २ ॥ जोबन वय प्रभु आवी-या ॥ जग० ॥ नील कमल दळवान हों ॥ दी० ॥ परणोसुंदर सुंदरी ॥ जग० ॥ इम कहे गोपी कान हो ॥ दी० ॥ ३ ॥ श्री उग्रसेननी कुंवरी ॥ जग० ॥ वरवा कीधी जान हो ॥ दील० ॥ पशु देखी पाछा वळ्या ॥ जग० ॥ हुवा जादव कुल हेरान हो ॥ दी० ॥ ४ ॥ तोडे हारने तीहां रडे ॥ जग० ॥ राजुल दुःख न माय हो ॥ दील० ॥ कहे पीयुजी पाये पडुं ॥ जग० ॥ छोडी मुने मत जाओ ॥ दी० ॥ ५ ॥ कीडीसु कटक कांकरो ॥ जग० ॥ ए तुम कुण आचार हो ॥ दी० ॥ माणसना दील दुहवो ॥ जग० ॥ पशु आंशु करो प्यारहो ॥ दी० ॥ ६ ॥ नरभव नेह निवारीओरे ॥ जग० ॥ देइ संवच्छरी दान हो ॥ दील० ॥ श्रावण सुद छठने दीनेरे ॥ जग० ॥ संजम लीए वड वान हो ॥ दील० ॥ ७ ॥ तारी राजुल सुंदरी ॥ जग० ॥ देइने दीक्षा दान हो दी० ॥ अ-मावास्या आसोज तणीरे ॥ जग० ॥ प्रभु लहे केवल ज्ञान हो ॥ दील० ॥ ८ ॥ सहस बरस प्रभु आउखुंरे ॥ जग० ॥ पाली श्री जिनराज हो ॥ दील० ॥ अषाढ सुदी दीन आठमेरे ॥ जग० ॥ प्रभु लहे शीवपुरराज हो ॥ दील० ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ थारा महेला उपर मेह झबुके वीजळी
हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ पांच लाख वरस नमि नेमने आंतरु हो लाल, नमी नेमने आंतरु ॥ मुनिसुव्रत नमि नाथने छ लाख चित्त धरुं हो लाल छलाख चित्त धरुं ॥ चोपन लाख वरस मुनिसुव्रत मल्लिने, हो लाल, मुनिसुव्रत मल्लिने, कोड सहस वळी जाणो मल्ली अर नाथने हो लाल, मल्ली अरनाथने ॥ १ ॥ कोड सहस वरस करी, उणो पल्यनुं हो लाल, उणो पल्यनुं ॥ चोथो भाग अरनाथ वळी कुंथुनाथने हो लाल, वळी कुंथुनाथने ॥ पल्योपमनुं अरध जाणो शांति कुंथुने हो लाल, जाणो शांति कुंथुने ॥ शांति धर्म पल्योपम उणे सागर त्रणनुं हो लाल, सागर त्रणनुं ॥ २ ॥ सागर चार अनंतने धर्म जिणंदने हो लाल, धर्म जिणंदने ॥ नव सागर वळी अनत विमल जिन चंद्रने हो लाल, विमल जिन चंद्रने ॥ सागर त्रीस विमल वासुपूज्यने हो लाल, विमल वासुपूज्यने ॥ सागर चोपन श्री वासुपूज्य श्रेयांसने हो लाल, वासुपूज्य श्रेयांसने ॥ ३ ॥ लाख पांसठ सहस छत्रीस वरससो सागरु हो लाल, वरससो सागरु ॥ उणो सागर कोड श्रेयांस शीतल करे हो लाल, श्रेयांस शीतल करे । सुविधि शीतळने नव कोड सागर भावज्यो हो लाल, सागर भावजो ॥ सुविधि चंद्रप्रभु नेउ कोडी सागर भावजो हो लाल, सागर मन भावजो ॥ ४ ॥ सागर नवसे कोड सुपास चंद्रप्रभु हो लाल, सुपास चंद्रप्रभु ॥ सागर नव सहस कोड सुपास पद्म प्रभु हो लाल, सुपास पद्म प्रभु ॥ सुमति पद्म प्रभु नेउ सहस्र कोड

सागरु हो लाल, कोड सागरु ॥ सुमति अभिनंदन नव लाख कोड सागरु हो लाल, कोड सागरु ॥ ५ ॥ दस लाखकोड सागर संभव अभिनंदने हो लाल, संभव अभिनंदने ॥ त्रीस लाखकोड सागर सभव अजितने हो लाल, संभव अजितने ॥ पचास लाख कोड सागर अजित जिन ऋषभने हो लाल, अजित जिन ऋषभने ॥ एक कोडा कोड सागरु ऋषभने वीरने हो लाल, ऋषभने वीरने ॥ ६ ॥ सहस बेंताळीस तीन वरस वली जाणीए हो लाल, वरस वली जाणीये ॥ साडा आठ महिना उणा ते वखाणीए हो लाल, उणा ते वखाणीये ॥ नवसे ऐंसी वरसे होइ पुस्तक वांचना हो लाल, पुस्तक वांचना ॥ अंतर काल जाणो जिन चोवीसनो हो लाल, के जिन चोवीसनो ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ दीन सकल मनोहर ॥ ए देशी ॥

॥ जयो आदि जिणेसर, त्रिभुवनना अवतंस ॥ नाभी राजा मरुदेवा, कुल मानुं सर हंस ॥ सर्वार्थि सिद्धथी चवि, इक्ष्वाकु भूमिवर ठाम ॥ असाड वदी चोथे, अवतर्या पुरुष प्रसन्न ॥ १ ॥ चैत्र वदी आठमे, जन्म्या श्री जिनराय ॥ आवे इद्र ःइंद्राणी, प्रभुजीना गुणगाय ॥ सुनंदा सुमंगला, वरिया जोबन पाय ॥ भरतादिक एकसो, पुत्र पुत्री दो थाय ॥ २ ॥ करी राजनी थापना, वासि वनिता इंद्र ॥ जगमां निति चलाय, मारु देवीनो नंद ॥ प्रभु शील्प देखाडी, चारे जुगल आचार ॥ नरकला बहोंतेर, चोसठ महिला सार ॥ ३ ॥ भरतादिकने दीए, अंगादिकनुं राज्य ॥

सुरनर इम जंपे, जय जय श्रीजिनराज ॥ देइ दान संवच्छरी, प्रभु लीए संयम भार, चार सहस राजोशुं, चैत्रवद आठम सार ॥४॥ प्रभु विचरे महीयल, वरस दिवस विण आहार ॥ गजरथने घोडा, जन दिए राजकुमारी ॥ प्रभुतो नवि लेवे, जुवे शुद्ध आहार ॥ पडिलाभ्या प्रभुजी, श्री श्रेयांसकुमार ॥ ५ ॥ फागण अंधारि, अगीआरस शुभ ध्यान ॥ प्रभु अट्ठम भक्ते, पाम्या केवलनाण ॥ गढ त्रणे रचें सुर, सेवा करे करजोड ॥ चक्र रत्न उपन्यो, भरतने मन कोड ॥ ६ ॥ मारुदेवा मोहे, दुःख आणे मनजोर ॥ मारो ऋषभ सहे छे, वनवासी दुःख घोर ॥ तव भरत पयंपे, त्रिभुवन केरो राज ॥ आवो आइजी तुमने, देखाडु हूं आज ॥ ७ ॥ गजरथ बेसाडी, समवसरणनी पास ॥ भरतेसर आवे, प्रभुवंदन उल्लास ॥ सुणी देवनी दुंदुभी, उलसित आणंदपुर ॥ आव्यां हरखनां आंसु, तिमिर पडल गयां दूर ॥ ८ ॥ प्रभुनी ऋद्धि देखी, एम चिंते मनमांहे ॥ धिक धिक कुडी माया, कोना सुत कोना तात ॥ एम भावना भावतां, पाम्यां केवलज्ञान ॥ तत्क्षण मरुदेवा, तिहां लह्यो निर्वाण ॥ ९ ॥ धन्य धन्य ए प्रभुजी, धन्य एहनो परिवार ॥ लाख पूर्व चोरासी, पाली आयु उदार ॥ महावदी तेरस दीने, पाम्या सिद्धनुं राज ॥ अष्टापद शिखरे, जय जय श्री जिनराज ॥ १० ॥

॥ कलश ॥ चोवीस जिनवर तणो अंतर, भण्यो अति उल्लास ए, सवत सतर तहोंतरे, एम रही चोमासुंए ॥ संघतणो आग्रह ग्रही में, श्री विमलविजय उवज्झायए ॥ तस शिष्य रामविजय नामे, वर्यो जय जय कार ए ॥ इति श्री आंतरानुं स्तवन संपूर्ण ॥

॥ महारम्माहाविरकरांगतार, सद्‌ासमाले हितदेत्रमाना, समा रमा मागमया सरामा, सिद्धाइ कामे लवता दयामा ॥ १ ॥ इति स्तुतिः

॥ श्री रोहिणी तप विधि स्तवन ॥

॥ दुहा ॥ सुखकर संखेश्वर नमी, शुभगुरुने आधार ॥ रोहिणी तप महिमा विधि, कहिशुं भवि उपगार ॥ १ ॥ भक्त पान कुच्छित दिए, मुनिने जाण अजाण ॥ नरक तीर्यंचमां जीव ते, पामे बहु दुःख खाण ॥ २ ॥ ते पण रोहिणी तप थकी, पामी सुख संसार ॥ मोक्षे गया तेहनो कहुं, सुंदर ए अधिकार ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ शीतलजिन सहेजानंदी ॥ ए देशी ॥

॥ मघवा नगरी करी झंपा, अरिवर्गे थकी नहि कंपा, आभरते पुरी छे चंपा, राम सीता सरोवर पंपा ॥ १ ॥ पनोता प्रेमथी तप कीजे, गुरुपांसे तप उचरीए॥पनो०॥ए आंकणी॥वासुपूज्यना पुत्र कहाय, मघवा नामे तिहां राय, तस लक्ष्मीवती छे राणी, आठ पुत्र उपर एक जाणी ॥ प० ॥ २ ॥ रोहिणी नामे थइ बेटी, नृप वल्लभसुं थइ मोटी, यौवन वयमां जब आवे, तब वरनी चिंता थावे ॥प०॥३॥ स्वयंवर मंडप मंडावे, दूरथी राजपुत्र मिलावे, रोहिणी शणगार धरावी, जाणुं चंद्र प्रिया इहां आवी ॥प०॥४॥ नागपुर वितशोक भूपाल, तस पुत्र अशोक कुमार, वरमाला कंठे ठावे, नृप रोहिणीने परणावे ॥प०॥५॥ परिकरसुं सासरे जावे, अशोकने राज्ये ठावे, प्रिया पुण्ये वधी बहु ऋद्धि, वितशोके दीक्षा लीधी ॥प०॥६॥ सुख विलसे पंचमकार, आठ पुत्र सुता थइ चार, रही दंपति सातमे माले,

लघु पुत्र रमाडे खोले ॥ प० ॥ ७ ॥ लोकपालाभिधानने बाल, रही गोखे जुए जन चाल, तस सन्मुख रोति नारी, गयो पुत्र मरण संभारी ॥ प० ॥ ८ ॥ शिर छाता कुटे मली केता, माये रोती जलजली देती, माथाना केश ते रोले, जोइ रोहिणी कंतने बोले ॥ प० ॥ ९ ॥ आज में नवुं नाटक दीठुं, जोतां बहु लागे मीठुं, नाच शीखी कीहांथी नारी, सुणी रोशे भर्यो नृप भारी ॥ प० ॥ १० ॥ कहे नाच शीखो इणि वेला, लेइ पुत्र बाहिर दीए झोला, करथी विछोड्यो ते बाल, नृप हाहा करे तत्काल ॥ प० ॥ ११ ॥ पुरदेव विचेथी लेता, भुंय सिंहासन करी देता, राणी हसती हसती जुए हेठुं, राजाए ए कौतक दीठुं ॥प०॥ ॥ १२ ॥ लोक सघळा विस्मय पामे, वासुपूज्य शिष्य वन ठामे, आव्या रुप सोवन कुंभ नाम, शुभ वीर करे परणाम ॥प०॥ १३ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ चउनाणी नृप प्रणमि पाय, निज राणीनुं प्रश्न कराय ॥ आ भवदुख नवि जाण्या एह, ए उपर मुज अधिको नेह ॥ १ ॥ मुनि कहे इस नगरे धनवतो, धनमित्र नाम शेठज हतो ॥ दुर्गंधा तस बेटी थइ, कुब्जा कुरूपा दुर्भगा भइ ॥ २ ॥ योवन वय धन देता सही, दुर्भगपणे कोइ परणे नहीं ॥ नृप हणतां कौत्रत शि-ष्येण, राखी परणावी सा तेण ॥ ३ ॥ नाठो ते दुर्गंधा लही, दान देयंतां सा घरे रही ॥ ज्ञानीने परभव पूछती, मुनि कहे रैवतगिरि तट हती ॥ ४ ॥ पृथ्वीपाल नृप सिद्धिमति, नारी नृप वनमां क्रिडती ॥ राय कहे देखी गुणवंता, तपसी मुनि गोचरीए जता

॥ ५ ॥ दान दीयां घर पाछां वली, तब क्रीडा रसे रीसे वली ॥ मूर्ख पणे करी बलते हैये, कडवो तुंबड मुनिने दीए ॥ ६ ॥ पारणुं करतां प्राण ज गया, सुरलोके मुनि देवज थया ॥ अशुभ कर्म बांधे सो नारी, जाणा नृप काढे पुर बारे ॥ ७ ॥ कुष्ट रोग दिन साते मरी, गइ छठे नरके दुःख भरी ॥ तिरीय भवे अंतरता लही, मरीने सातमि नरकमां गइ ॥ ८ ॥ नागण करभी ने कुतरी, उंदर घीरोली जलो शुकरी ॥ काकी चंडालण भव लही, नवकार मंत्र तिहां सद्दही ॥ ९ ॥ मरीने शेठनी पुत्री भइ, शेष कर्म दुर्गंधा थइ ॥ सांभलि जाति स्मरण लही, श्री शुभ वीर वचन सद्दही ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ गजरा मारुजी चाल्या चाकरीरे ॥ ए देशी ॥

दुर्गंधा कहे साधुने रे, दुःख भोगवियां अतिरेक ॥ करुणा करीने दाखीएरे, जिम जाए पाप अनेक रे॥जिम०॥१॥जिम मुनि कहे रोहिणी तप करोरै, सात वरस उपर मात मास ॥ रोहिणी नक्षत्रने दिनेरे, गुरुमुख करीए उपवासरे ॥ गुरु० ॥ २ ॥ तपथी अशोक नृपनी प्रियारे, थइ भोगवी भोगविलास ॥ वासुपूज्य जिन तीर्थेरे, तमे पामशो मोक्ष निवासरे ॥ तमे० ॥ ३ ॥ उजमणे पुरै तपेरे, वासुपूज्यनी पडिमा भराय ॥ चैत्य अशोक तरु तलेरे, अशोक रोहिणी चित्तरायरे ॥ अशो० ॥ ४ ॥ साहमि वच्छल पधरावीनेरे, गुरु वस्त्र सिद्धांत लखाय ॥ कुमार सुगंध तणी परेरे, दुष्कर्म सकल क्षय जाय रै ॥ दुष० ॥ ५ ॥ साधु कहे सिंहपुरमांरे, सिंहसेन नरेसर सार ॥ कनकप्रभा राणी तणोरे, दुर्गंधी अनिष्ट कुमाररे ॥

दुर्गं० ॥ ६ ॥ पद्मप्रभुने पुछतारे, जिन जल्पे पूर्व भव तास ॥ बार जोजन नागपुरथीरे, एक शिला निलगिरि पासरे ॥ एक० ॥ ७ ॥ ते उपर मुनि ध्यानथारे, न लहे आहेडी शिकार ॥ गोचरी गत शिला तळेरे, कोप्यो धरे अग्नि अपाररे ॥ कोप्यो० ॥ ८ ॥ शिला तपी रह्या उपरेरे, मुनि आहार करे काउसग्ग ॥ क्षपक श्रेणी थइ केवलीरे, तत्क्षण पाम्या अपवर्गरे ॥ तत० ॥ ९ ॥ आहेडी कुष्टी थइ रे, गयो सातमी नरक मझार ॥ मच्छ मधा अहीं पांचमीरे, सिंह चोथी चित्र अवताररे ॥ सिंह० ॥ १० ॥ त्रीजी बिलाडो बीजीएरे, धूक प्रथम नरक दुःख जाल ॥ दुःखना भव भमी ते थयोरे, एक शेठ घरे पशुपाल रे ॥ एक० ॥ ११ ॥ धर्म लही दवमां बल्योरे, निद्राए हृदय नवकार ॥ श्री शुभवीरना ध्यानथीरे, तुज पुत्र पणे अवताररे ॥ तुज० ॥ १२ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ मारी अंबाना वडला हेठ ॥ ए देशी ॥

॥ निसुणी दुर्गंध कुमार, जाति स्मरण पामतोरे ॥ पद्मप्रभु चरणे शीस, नामी उपाय ते पूछतोर ॥ प्रभु वयणे उजमणे युक्त, रोहिणीनो तप सेवियोरे ॥ दुर्गंध पणुं गयुं दुर, नामे सुगंधी कुमार थयो रे ॥ रोहिणी तप महिमा सार, सांभळतां नव विसरेरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ रही वात अधुरी एह, सांभळजो रोहिणी ने भवेरे ॥ इम सुणी दुर्गंधा नारी, रोहिणी तप करे ओछवेरे ॥ सुगंधि लही सुख भोग, स्वर्गे देवी सोहामणीरे ॥ तुज कांता मधवा धुआं, चवि चंपाए थइ रोहिणीरे ॥ रो० ॥ २ ॥ तप पुण्य तणे

प्रभाव, जन्मथी दुःख न देखीओरे ॥ अति स्नेह कीस्यो अम साथ, राय अशोके वली पुछीयुंरे ॥ गुरु बोले सुगंधि राय, देव थइ पुष्कलावतीरे ॥ विजये थइ चक्रि तेह, संजमधर हुआ अच्चुतपतिरे ॥ रो० ॥ ३ ॥ चविने थया तमे अशोक, एक तपे प्रेम बन्यो घणोरे ॥ सात पुत्रनी सुंणज्यो वात, मथुरामां एक मांहणोरे ॥ अग्नि शर्मा सुत सात, पाटलिपुर जइ भीक्षा भमेरे ॥ मुनि पासे लइ वैराग ॥ विचर्या साते रही संजमेरे ॥ रो० ॥ ४ ॥ सौधर्मे हुआ सुरसात, ते सुत साते रोहिणीतणा रे ॥ वैताढये भिल्ल चुल खेट, समकित शुद्ध सोहामणोरे ॥ गुरुदेवनी भक्ति पसाय, धुर स्वर्गे थइ देवतारे ॥ लघु सुत आठमो लोकपाल, रोहिणीनो ते सुर सेवतारे ॥ दो० ॥ ५ ॥ वली खेट सुता छे चार, रमवाने वनमा गइरे ॥ तीहां दीठा एक अणगार, भाखे धर्म वेला थइ रे, पूछयाथी कहे मुनि भास, आठ पहोर तुम आयुछेरे ॥ आज पंचमीनो उपवास, करशो तो फलदाय छेरे ॥ रो० ॥ ६ ॥ धुर्जंती करी पचखाण, गेह अगासे जइ सोवतिरे ॥ पडी विजळीये वली तेह, धुर सुर लोके देवी थती रे ॥ चवी थइ तुमःपुत्री चार, एक दिन पंचमी तप करीरे ॥ इम सांभली सहुं परिवार, त्रात पूर्व भवनी सांभळीरे ॥ रो० ॥ ७ ॥ गुरु वंदी गया निज गेह, रोहिणी तप करतां सहुरे ॥ मोटी शक्ति बहु मान, उजमणां वस्तु बहुरे ॥ इम धर्म करी परिवार, साथे मोक्षपुरी वरीरे ॥ शुभ वीरना शासन मांहे, सुख फल पामो तप आदरीरे ॥ रो० ॥ ८ ॥

॥ कलश ॥ इम त्रिजग नायक मुक्तिदायक, वीर जिनवर भाखीयो ॥ तप रोहिणीनो फल विधाने, विधि विशेषे दाखीयो ॥ श्री क्षमाविजय जसविजय पाटे, शुभविजय सुमति धरो ॥ तस चरण सेवक कहे पंडित, वीर विजयो जय करो ॥ इति श्री रोहिणी तप विधि स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री अक्षय निधि तपनुं स्तवन ॥

॥ दुहा ॥ श्री शंखेश्वर शिरनमी, कहुं तप फल सुविचार ॥ अक्षय निधि तप भाखीयो, प्रवचन सार उद्धार ॥ १ ॥ तप तपतां अरिहा प्रभु, केवल नाणने. हेत ॥ नाण लही तप तपी कीयो, शिव रमणी संकेत ॥ २ ॥ तिम सुंदरी परे तप करो, अक्षयनिधि गुणवान ॥ श्रुत केवलीये जे रच्यो, कल्पसूत्र बहु मान ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ रुडीने रढीयालीरे वाला तारी वांसलीरे
॥ ए देशी ॥

॥जंबु भरते रे नयरी राजग्रहीरे, संवर शेठ वसे एक सार ॥ गुणवंती नारीरे कठण आजीविकारे, घर दारिद्र तणो भंडार ॥ सुंदरी सेवोरे अक्षय निधि तप भलोरे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पुण्य संजोगेरे पिया गरभे फलीरे, तब तस वृत्ति चली घरबार ॥ केइ व्यवहारीरे वणज करावतारे, वाध्यो शेठ तणो व्यवहार ॥ सुंदरी० ॥ २ ॥ पूरण माशेरे जन्मी कुमारिकारे, प्रगटयो नाल निखेप निधान ॥ लक्षणवंतीरे पुत्री प्रभावथीरे, राय सुणी करतो

बहु मान ॥ सुंदरी० ॥ ३ ॥ पुत्रनी परेरे जन्म आच्छव कर्योरे सज्जनवर्ग नोतरीया गेह ॥ संवर शेठेरे थाप्युं सुंदरीरे, नाम महोत्सव करी धरी नेह ॥ सुंदरी० ॥ ४ ॥ बाल स्वभावेरे रमती सुंदरीरे, जिहां जिहां भूमि खणंती रमाय ॥ पूर्व पुन्येरे मणिमाणेक भर्योरे, तिहां तिहां द्रव्यनिधि प्रगटाय ॥ सुंदरी० ॥ ५ ॥ आणी आपेरे तातने सुंदरीरे, तिणे ते शेठ हुओ धनवंत ॥ यौवन योगेरे रंभा उर्वशीरे, देखी शेठ करे वर चिंत ॥ सुंदरी० ॥ ६ ॥ शेठ समुद्रप्रियाभिध नगरमांरे, कमल सिरि नारी तसपुत्त ॥ श्रीदत्त नामेरे रुप कला भर्योरे, तस परणावी ते धन जुत्त ॥ सुंदरी० ॥ ७ ॥ पुण्य पनोतीरे सासरे सुंदरीरे, आवी तत्क्षण निधि प्रगटाय ॥ पग अंगुठेरे कांकरो काढतां रे, पूर्ण कलश धन लेती जाय ॥ सुंदरी० ॥ ८ ॥ मोसाले भाणेजीने तेड्यां भोजनेरे ॥ तेहेने घर पण लक्ष्मी न माय ॥ इम जिहां बालारे शा पगलां ठवेरे, निधि प्रगटे सहुं सुखियां थाय ॥ सुंदरी० ॥ ९ ॥ वहुने मानेरे ससरो भली परेरे ॥ राजा पण चित विस्मय थाय ॥ एक दिन आव्या धर्मघोष सूरिवरारे, राजा प्रमुख ते वंदन जाय ॥ सुंदरी० ॥ १० ॥ सुंदरी पूछे कहो कुण कारणेरे, पग पग पामु ऋद्धि रसाल ॥ सूरि कहे साचो रे पूर्व भवतें कर्यो रे, अक्षयनिधि तप थई उजमाल ॥ सुंदरी० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ माता जसोदा तमारो कान, मही वेचतां मागे दाण ॥ ए देशी ॥

॥ अथवा चोपाइनी देशी ॥

॥ खेटकपुर संयम अभिधान, शेठ प्रिया ऋजुवति गुणवान ॥

रुजुमति तप राति रहे, ज्ञान भक्ति सुख संपद लहे ।। १ ।। रयणावली कनकावली करे, एकावली विधिये उचरे ।। पाडोशी वसु शेठे वरी, सोमसुंदरी बहु मच्छर भरी ।। २ ।। पुण्यवती तप रति बहु, ऋजुमति प्रशंशे सहु ।। सोमसुंदरी सुणी निंदा करे, डाकणी परे छल जोती फरे ।। ३ ।। भुख्यो ब्राह्मण वगायो ढोर, चांप्यो नाग नासंतो चोर ।। रांड भांडने मातो सांढ, ए सातेथी उगरीयो मांड ।। ४ ।। लाग्युं घर शेठ संजम तणुं, सोमसुंदरी चित्त हरख्युं घणुं ।। नारी प्रभावे न बळी एक छडी, वळी एक दिन घेर धाडज पडी ।। ५ ।। पाडोसण मन चिन्ते इसु, पापी शेठनुं न गयुं किसुं ।। देती श्रापने निर्धन थया, ते ते दंपति सुरलोके गया ।। ६ ।। सोम सुंदरी गुणी मच्छर भरी, अशुभ कर्म उपार्जन करी ।। पामी मरण सा कोइक गुणी, श्रावक मुख नवकारज सुणी ।। ७ ।। जितशत्रु मथुरानो राय, चउसुत उपर बेटी थाय ।। सर्व ऋद्धि नामज तस दुइ, पंच धावसुं मोटी थइ ।। ८ ।। शत्रु सैन्य समूहे नडयो, जितशत्रु रणयोगे पडयो ।। लुंट पडी जब राजद्वार, कुंवरी पण नाठी तेणीवार ।। ९ ।। उजाति एक अटवी पडी, रवि उदये मार्गे शिर चडी ।। वनफल वृतें वनचर थइ, यौवन वेला निष्फल गइ ।। १० ।। एक विद्याधर देखी करी, परणी सा जिन मंदिर धरी ।। तिणि वेला घर लागी गयुं, सर्व ऋद्धि पगलेथी गयुं ।। ११ ।। विद्याधरे फरी वनमां धरी, पल्लिपति एक भीले हरी ।। बीजे दीन घर तेहनुं बल्युं, नारी निंदन सहू जन भल्युं ।। १२ ।।

सार्थवाह कर वेची तीणे, चाल्यो निज देसावर भणी ।। पंथ वचे लुटाणा तेह, सर्व ऋद्धि नाठां लई देह ।। १३ ।। वनमां सरोवर तीरे खडी, राजकुमारी कर्मे नडी ।। पुन्ये मुनि मल्या गुण गेह, मीठे वयणे बोलावी तेह ।। १४ ।।

।। ढाल ३ ।। छोरी जाटडीनी ।। ए देशी ।।

।। छोरीरे बेटी तुंतो रायनी, हे कांइ उभी सरोवर पाळरे ।। शुं दुःख चिंतवे ।। सिरदार सहुने सुख करे, महाराज मुनि एम उचरे ।। पूर्वभव मच्छर करी, हे कांइ फली तरु शाखा डाळरे ।। समि सुंदरी भवे ।। सिर० ।। म० ।। १ ।। तात मरण पुर लुंटीयुं, हें कांइ पडी तुं अटवी मोजाररे ।। दुःख पामी घणी खेचरशुं, इणे भवे लह्यो, हे सुख संयोग एक वाररे, वळी वनचर पणुं ।।सि०।।म०।। २ ।। ज्ञानी गुरु वयणां सुणी, हे राजकुमारी पुछायरे ।। गुरु चरणे नमी, आ दुःखथी किम छुटीये, हे कहीये करो सुपसायरे, दुःख वेला खमी ।। सि० ।। म० ।। ३ ।। अक्षय निधि तप विधि करो, हे ज्ञान भक्ति विस्तार रे ।। शक्ति न गोपवी, श्रावण वदी चोथे थकी, हे संवत्सरी दिन साररे, पूरण तप तपी ।। सि० ।। म० ।। ४ ।। चोथभक्त एकासणो, हे शक्तितणे अनुसाररे ।। घट अक्षत भरो, विधि गुरुमुखथी आचरो, हे ।। गणणुं होय हजार रे, पडिकमणां करो ।। सि० ।। म० ।। ५ ।। एक वरस जघन्यथी हे, तीन वरस उक्किट्ठरे ।। इण विधि तप करो, शासन देवी कारणे, हे चोथे वरस वीसीट्ठरे, वळी ए आदरो ।। सि० ।। म० ।।

॥ ६ ॥ आभव मनोवंछित फले, हे परभव ऋद्धी न माय रे ॥ हरि चक्रिपरे, इम निसुणी कुमरी तिहां, हे ॥ वांदी गुरुना पायरे, गइ ग्रामांतरे ॥ सि० ॥ म० ॥ ७ ॥ परघर करतां चाकरी, हे आजीविका निर्वाहरे ॥ सुख दुःखमां करे, अक्षनिधि तप तिण कर्यो, हे प्रथम वरस फरि चाहेरे, बीजे भलिपरे ॥ सि० ॥ म० ॥ ८ ॥ चोथे वरस तप मांडतां, हे कार्ईक हुइ धनवंतरे ॥ एक दिन आवीया, विद्याधर क्रीडा वशे, हे ॥ पूर्व नेह उलसंतरे, देखी निज प्रिया ॥ सि० ॥ म० ॥ ९ ॥ थापी लइ अंते उरे, हे सा करे शीलव्रत मुख्यरे ॥ इणि काया धरो, शेषायु अणसणे मरी, हे ॥ संवर पुत्री तुजरे, कहुं सुण सुन्दरी ॥ सि० ॥ म० ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ कोश्या वेश्या कहे रागीजी, मनोहर मन गमता ॥ ए देशी ॥

॥ निज पूर्वभव सुणी तेहजी, सुंदरी सुकुमाली ॥ जाती स्मरण वरे तेहजी ॥ सुं० ॥ तप फले लहो ऋद्धि रसालजी ॥ सुं० ॥ कहे धर्मघोष अणगारजी ॥ सुं ॥ १ ॥ कहे सुंदरी सर्व साचुंजी ॥ सुं ॥ तुम ज्ञानमांहे नहि काचुंजी ॥ सुं ॥ अवंति मांहे वखाण्यांजी ॥ सुं० ॥ तेहवा में तुमने जाण्याजी ॥ सुं० ॥ सूरि वंदी निज घर आवेजी ॥ सुं० ॥ तप अक्षय निधि मंडावेजी ॥ सुं० ॥ राजा राणी तिणि वेलाजी ॥ सुं० ॥ शेठ सामंत सर्व भेलाजी ॥ सुं० ॥ २ ॥ पग पग प्रगटे जे निधानजी ॥ सुं० ॥

करे प्रभावना बहुमानजी ॥ सुं० ॥ नाम सुंदरी तो विस-राणीजी ॥ सुं० ॥ ते तो अक्षय निधि कहेवाणीजी ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ मनमोटे पूर्ण फळ लीधुंजी ॥ सुं० ॥ पंचमीये पारणुं कीधुंजी ॥ सुं० ॥ ज्ञान भक्ति महोच्छव देखीजी ॥ सुं० ॥ देवी देव हुआ अनिमेषीजी ॥ सुं० ॥ ६ ॥ सुख विलसंता संसारजी ॥ सुं० ॥ हुआ सुत चउ पुत्री चारजी ॥ सुं० ॥ लियो अंते संयम भारजी ॥ सुं० ॥ घनघाति खपाव्यां चारजी ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ लहि केवळ शिवपुर जावेजी ॥ सुं० ॥ गुण अगुरुलघु निप जावेजी ॥ सुं० ॥ अवगाहन लक्षण संताजी ॥ सुं० ॥ तिहां बी-जा सिद्ध अनंताजी ॥ सुं० ॥ ७ ॥ तस फरसित देश प्रदेशेजी ॥ सुं० ॥ असंख्य गुणा सुविशेषेजी ॥ सुं० ॥ जुओ प्रथम उपांगे ठामजी ॥ सुं० ॥ शुभवीर कहे प्रणामजी ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ कोइलो पर्वत धुंधलोरे लोल ॥ ए देशी ॥

वीर जीणेसर गुणनीलोरे लोल, ए भाख्यो अधिकाररे ॥ ॥ सुगुणनर ॥ वरते शासन जेहनुंरे लोल, एकवीस वरस हजा-ररे ॥ सुगुणनर ॥ वीर जीणेसर गुणनीलोरे लोल, ए भांख्यो अधिकाररे॥ सुगुणनर॥ वीरजिणेसर गुणनिलोरे लोल ॥ १ ॥ जिहां सफल जिनगुण थुणीरे लोल, दिहा सफल प्रभु ध्यानरे ॥सु०॥ जन्म सफळ प्रभु दरिसणेरे लोल ॥ वाणीये सफल कानरे ॥ सु० ॥ वी० ॥ २ ॥ तास परंपर पाटवीरे लोल, श्रीविजयसिंह सुरी-श्वरे ॥ सु० ॥ सत्यविजय बुध तेहनारे लोल, कपुरविजय कवि

शिष्यरे ॥ सु० ॥ वी० ॥ ३ ॥ क्षमाविजय गुरु तेहनारे ढोल, श्रीजसविजय पन्यासरे ॥ सु० ॥ श्रीशुभविजय सुगुरु नमीरे ढोल, सुरत रही चउमासरे ॥ सु० ॥ वी० ॥ ॥४॥ चंद्र मुनि वसु हिमकररे ढोल, वरसे श्रावणमासरे ॥सु०॥ श्रीशुभवीरने शासनेरे ढोल, होजो ज्ञानप्रकाशरे ॥सु०॥वी०॥५॥

॥ कलश ॥ ए पंच ढाल रसाल भक्ति, पंच ज्ञान आराधवा ॥ काम प्रमाद किरिया पंच छंडी, पंचमी गति साधवा ॥ नभ वृरण पंचमी स्तवन रचीओ, अक्षय निधिके कारणे ॥ शुभ वीर ज्ञाने देवसुंदरी, नाचवा घरवारणे ॥ १ ॥ इति अक्षय निधि तप स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री रूषभदेस्वामीनुं स्तवन. ॥

॥ दुहा ॥ पुरिसां दाणी पासजी, वहु गुणमणि वास ॥ ऋद्धि वृद्धि मंगल करण, प्रणमुं मन उल्लास ॥ १ ॥ सरसती सामिनी विनवुं, कवि जन केरी मांय ॥ सरस वाणी मुजने दीयो मोटो करी पसाय ॥ २ ॥ लब्धि विनयगुरु समरीए, अहर्निश हर्ष धरेव ॥ ज्ञान दृष्टि जेथी लही, पद पंकज प्रणमेव ॥ ३ ॥ प्रथम जिणेसर जे हुओ, मुनिवर प्रथम वखाण ॥ केवलधर पहेलो जे कहे, प्रथम भिक्षाचर जाण ॥ ४ ॥ पहेला दाता ए कह्यो, आ चोवीसी मझार ॥ तेह तणा गुण वरणवुं, आणी हर्ष अपार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ धन्य धन्य संप्रति साचो राजा ॥
॥ ए देशी ॥ राग आसावरी ॥

पहेले भव धन सार्थवाहे, समकित पाम्या साररे ॥ आराधो बीजे भव पाम्या, जुगलतणो अवताररे ॥ १ ॥ सेवो समकित साचुं जाणो, ए सवि धर्मनो खाणीरे ॥ नवि पामे जे अभव्य अनाणी, एहवो जिननी वाणीरे ॥ सेवो० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ जुगल चवि पेहेले देवलोके, भव तिजे सुर थायरे ॥ चोथे भवे विद्याधर कुले थया, महाबल नामे रायरे ॥ सेवो० ॥ ३ ॥ गुरु पासे दीक्षा पालीने, अणसण कीधुं अंतरे ॥ पांचमे भवे बीजे देवलोके, ललितांग सुर दीपंतरे ॥ सेवो० ॥ ४ ॥ देवचवी छठे भवे राजा, वज्रजंघ एणे नामेरे ॥ तीहांथी सातमे भवे अवतरीआ, जुगला धर्मशुं ठामेरे ॥ सेवो० ॥ ५ ॥ पूर्ण आयु करी आठमे भवे, सुधर्म देवलोके देवरे ॥ देव तणी ऋद्धि बहुली पाम्या, देवतणा वळी भोगरे ॥ सेवो० ॥ ६ ॥ मुनिभव जिवानंद नवमे भवे, वैद चवी थयो देवरे ॥ साधुनी वैयावच्च करी दिक्षा, लइ पाळे स्वयमेवरे ॥ सेवो० ॥ ७ ॥ वैद जीव दसमे भवे स्वर्गे, बारमें सुर होयरे ॥ तिहांकणे आयु भोगवो पुरुं, बावीस सागर जोयरे ॥ सेवो० ॥ ८ ॥ अगीआरमे भवे देव चवीने, चक्री हुओ वज्रनाभरे ॥ दीक्षा लइ वीस स्थानक साधी, ॥ लीधो जिनपद लाभरे ॥ सेवो० ॥९॥ चौद लाख पूर्वनो दीक्षा, पाली निर्मळ भावेरे ॥ सर्वार्थ सिद्ध अवतरीया, बारमे भव आ-

यरे ॥ सेवो० ॥ १० ॥ तेत्रीस सागर आयु प्रमाणे, सुख भोगवे तिहां देवरे ॥ तेरमा भव केरो हवे हुं, चरित्र कहुं संखेवरे ॥ सेवो० ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ वाडी फूली अति भली मनभमरारे ॥

ए देशी ॥

॥ जंबुद्वीप सोहामणुं ॥ मन मोहनारे ॥ लाख जोजन परिमाण ॥ लाल मन मोहनारे ॥ क्षिण भरत भलुं तिहां ॥ मन मोहनारे ॥ अनुपम धर्मनुं ठाम ॥ लाल मन मोहनारे ॥ १ ॥ नयरी विनिता जाणीए ॥ मन० ॥ स्वर्गपुरी अवतार ॥ लाल०॥ नाभीराय कुलगर तिहां ॥ मन० मरुदेवी तसनारि ॥ लाल० ॥ प्रीति भक्ति पाळे सदा ॥ मन० ॥ प्रीयुशुं प्रेम अपार ॥ लाल० ॥ सुख विलसे संसारनां ॥ मन० ॥ सुरपेरे स्त्री भरथार ॥ लाल० ॥ ३ ॥ एक दिन सुती मालीये ॥ मन० ॥ मरुदेवी सुपवित्र ॥ लाल० ॥ चोथ अंधारी अषाडनो ॥ मन० ॥ उत्तराषाढा नक्षत्र ॥ लाल० ॥ ४ ॥ तेत्रीस सागर आउखे ॥ मन० ॥ भोगवी अनुपम सुख ॥ लाल० ॥ सर्वार्थ सिद्धथी चवी ॥ मन० ॥ सुर अवतरीओ कुख ॥ लाल० ॥ ५ ॥ चउद सुपन दीठां तीसे ॥ मन० ॥ राणी मध्यम रात ॥ लाल० ॥ जइ कहे निज कंतने ॥ मन० ॥ सुपन तणी सवि वात ॥ लाल ॥ ६ ॥ कंथ कहे निज नारीने ॥ मन० ॥ सुपन अर्थ विचार ॥ लाल० ॥ कुलदीपक त्रिभुवन पति ॥ मन० ॥ पुत्र होशे सुखकार ॥ लाल० ॥ ७ ॥ सुपन अर्थ

पीउथी सुणी ॥ मन० ॥ मन हरख्यां महदेवो ॥ लाल० ॥ सुखे करी प्रतिपालना ॥ मन० ॥ गर्भ तणी नित मैव ॥ लाल० ॥ ८ ॥ नव मासवाडा उपरे ॥ मन० ॥ दिन हुवा साढासात ॥ लाल० ॥ चैत्र वद आठम दीने ॥ मन० ॥ उत्तराषाढा विख्यात ॥ लाल० ॥ ९ ॥ मझीम रयणीने समे ॥ मन० ॥ जन्म्यो पुत्र रतन ॥ लाल० ॥ जन्म महोच्छव तवकरे ॥ मन० ॥ दिशीकुमरी छप्पन ॥ लाल० ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ देशी हमचडीनी ॥

॥ आसन कंप्युं इंद्रतणुंरे, अवधिज्ञाने जाणि ॥ जिननो जन्म महोच्छव तव करवा, आवे इंद्र इंद्राणीरे ॥ हमचडी ॥ १ ॥ सुर परिवारे परवर्यारे, मेरु शिखर लइ जाय ॥ प्रभुने नमण करीने पूजी, प्रणमी बहु गुणगायरे ॥ हमचडी ॥ २ ॥ आडो माता पासे मेहेली, सुर सुरलोके पहुंता ॥ दीन दीन वाधे चंद्र तणी परे, देखी हरखे मातारे ॥ हमचडी ॥ ३ ॥ वृषभ तणुं लछन प्रभु चरणे, मात पिताए देखी ॥ सुपन मांहे वली वृषभ जे पेहेलो, दीठो उज्वल पेखीरे ॥ हमचडी० ॥ ४ ॥ तेहथी मात पिताए दीधुं, ऋषभ कुमार गुण गेह ॥ पांचसे धनुष प्रमाणे उंची, सोवन वरणी देहरे ॥ हमचडी० ॥ ५ ॥ वीस पुर्व लख कुमार पणेरे, रहीया प्रभु घरवासे ॥ सुमंगला सुनंदा कुंवारी, परण्या दोय उलासेरे ॥ हमचडी० ॥ ६ ॥ त्याशी लाख पूर्व घरवासे, वसीय ऋषभ जिणंद ॥ भरतादिक सुत शत हुआरे, पुत्री दोय

सुख कंदरे ॥ हमचडी० ॥ ७ ॥ तव लोकांतिक सुर आवीनेरे, कहे प्रभु तीर्थ थापो ॥ दान संवच्छरी देइ दिक्षा, समय जाणी प्रभु आणीरे ॥ हमचडी० ॥ ८ ॥ दीक्षा महोच्छव करवा आवे, सपरिवार सुरिंदो ॥ शिबिका नामे सुदर्शना, आगल ठवे नरींदरे ॥ हमचडी० ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ राग मारु ॥ सुत सिद्धारथ भुपनोरे
॥ ए देशी ॥

॥ चत्रवदी आठम दीनेरे, उत्तराषाढारे चंद ॥ शिबिकाये बेसी गयारे, सिद्धारथ वनचंदो ॥ १ ॥ ऋषभ संयम लीये ॥ ए आंकणी ॥ अशोक तरुतले आवीनेरे, चउ मुठी लोच कीध ॥ चार सहस वड राजवीरे, साथे चारित्र लीधरे ॥ ऋ० ॥ २ ॥ त्यांथी विचर्या जिनपतिरे, साधुतणे परिवार ॥ घरघर फरतां गोचरीरे, महीअल करे विहाररे ॥ ऋ० ॥ ३ ॥ फरतां तप करतां थकांरे, वरस दिवस हुआ जाम ॥ गजपुर नयर पधारीयारे, दीठा श्रेयांसे तामरे ॥ ऋ० ॥ ४ ॥ वरसी पारणुं जिन जइरे, शेलडी रस तिहां कीध ॥ श्रेयांसे दान देइनेरे, परभव संबल लीधरे ॥ ऋ० ॥ ५ ॥ सहस वरस लगे तप तपीरे ' कर्म कर्या चकचुर ॥ पुरिमतालपुर आवीनेरे, वीचरतां बहु गुण पुररे ॥ ऋ० ॥६॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ कपुर होवे अति उजलोरे ॥ ए देशी ॥

॥ समवसरण देवे मलीरे, रचियुं अतिहि उदार ॥ सिंहासन बेसी करीरे, दीए देशना जिन सार ॥ चतुरनर० ॥ १ ॥

कीजे धर्म सदाइ, जिम तुम शिवसुख थाय ॥ चतुरनर ॥ कीजे० ॥ बारे परखदा आगळेरे, कहे धर्म च्यारे प्रकार ॥ अमृत सम देशना सुणीरे, प्रति बोध्या नरनार ॥ चतुरनर० ॥ २ ॥ भरत तणा सुत पांचसेरे, पुत्रो सातसे जाण ॥ दिक्षा लीये जिनजी कनेरे, वैरागे मन आण ॥ चतुरनर० ॥ ३ ॥ पुंडरीक प्रमुख थयारे, चोरासी गणधार ॥ सहस चोरासी तिम मलीरे, साधु थयो परिवार ॥ चतुरनर० ॥ ४ ॥ ब्राह्मी प्रमुख वली साहुणीरे, त्रण लाख सुविचार ॥ पांच सहस त्रण लाख भलारे, श्रावक समकित धार ॥ चतुरनर० ॥ ५ ॥ चोपन सहस पंच लाख कहीरे, श्राविका शुद्ध आचार ॥ इम चउविह संघ थापीनेरे, ऋषभ करे विहार ॥ चतुर० ॥ ६ ॥ चारित्र एक लख पूर्वनुरे, पाल्युं ऋषभ जिणंद ॥ धर्म तणे उपदेशथीरे, तार्या भविजन वृंद ॥ चतुरनर० ॥ ७ ॥ मोक्ष समय जाणी करीरे, अष्टापद गिरि आव ॥ साधु सहस दशसुं तिहांरे, अणसण कीधुं भाव ॥ चतुरनर० ॥ ८ ॥ महावदी तेरस दीनेरे, अभि नक्षत्र चंद्र योग ॥ मुक्ति पहोत्या ऋषभजीरे, अनंत सुख संजोग ॥ चतुरनर० ॥ ९ ॥

॥ ढाळ ॥ ६ ॥ राग धनाश्री ॥ कडखानी ॥ ए देशी ॥

तुं जयो तुं जयो ऋषभ जिन तुं जयो, अलज्यो हुं तुम दरसन करवा ॥ मेहेर करी घणी, विनवुं तुम भणी, अवर न कोइ बीज उधरवा ॥ तुज० ॥ १ ॥जगमांहे मेहने मोर जिम मीतडी,

प्रीतडी जेहवी चंद्र चकोर ॥ प्रीतडी राम लक्ष्मण तणी जेहवी, रात दिन नाम ध्याउं दरस तोरा ॥ तुज० ॥ २ ॥ शितल सुर-तरु तणी तीहां छांयडी, सितलो चंद चंदन घसारो ॥ शीतलुं केल कपुर जिम शितलुं, शीतलो तिम मुझ सुख तमारो ॥ तुज० ॥३॥ मीठडो शेलडी रस जिम जाणीए, खटरस द्राख मीठी बखाणी ॥ मीठाड आंबला शाखतिम तुम तणी, मिठडि मुजमन तिम तुम वाणी ॥ तुज० ॥ ४ ॥ तुम तणा गुण तणो पारहुं नवि लहु, एक जीभे केम म कहीजे ॥ तार मुज तात संसार सागर थकी, रंगथुं शीवरमणी वरीजे ॥ तु० ॥ ५ ॥

॥ कलश ॥ इम ऋषभ स्वामी, मुक्तिगामी चरण नामो शी-रए ॥ मरुदेवी नंदन सुख नदन, प्रथम जिन जगदीशए ॥ मनरंग आणी सुखवाणी, गाइओ जग हितकरु ॥ कविराय लब्धि निज सुसेवक, प्रेम विजय आनंद वरो ॥ इति श्री रुषभ स्वामीना तेर भवनुं स्तवन ॥

॥ अथ श्री मल्लीनाथनुं स्तवन. ॥

॥ दुहा ॥ नवपद समरी धनशुद्धे, वली गौतम गणधार ॥ सरस्वती मात चित्त धरुं, वाधे वचन उदार ॥ १ ॥ मल्लिनाथ ओगणीसमा; जिनवर जगमां जेह ॥ गुण गाइशुं तेहना, सुगुण सुणो धरी नेह ॥ २ ॥ किण देडी किण नगरमें, कवण पिता कुण मात ॥ पांच कल्याणक परगडा, विगत करी कहुं वात ॥३॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ रामचंदके बागमे चंपो मोय रेखोरी
॥ ए देशो ॥

॥ इणहीज जंबुद्वीप, क्षेत्र भरत सुखकारी ॥ नयरी मिथिला नाम, अलकाने अणुहारि ॥ १ ॥ तिहां नृप कुंभ नरेसर राय, राणी प्रभावती नामे ॥ शीयल गुण समिहित, जस पसर्यो ठामो ठामे ॥ २ ॥ एक दिवस ते नार, सुती सेज मोझारि ॥ देखी चौदे सुपन, ते जागी तिणिवारे ॥ ३ ॥ पतिने पडोती पास, सुपन सहुं ते कहीया ॥ नृप हरख्यो मन मांहे, अनुपम हेते लहीया ॥ ४ ॥ सुपन तणो अनुसार, पुत्री होशे पुन्यवंती ॥ अरथ सुणीने तेह, घरपोहोती गहगहती ॥ ५ ॥ कहुं पुर्व भव वात, जिहांथी चवी आव्या ॥ वीतशोका नामे नगरी, महाबल नाम कहाया ॥ ६ ॥ ते मलीया छए मित्र, सहु मली दीक्षा लीधी ॥ महाबल वंच्या मित्र, तपमे माया कीधि ॥ ७ ॥ सेव्यां स्थानक वीस, गौत्र तीर्थंकर बांध्यो ॥ स्त्री वेद उदार, पुन्यमें पापए साध्यो ॥८॥ अणसण करीय ते वार, जिन धर्मशुं लय लाइ ॥ छए जीव जयन्ति विमान, सुर पद्वी तीहां पाइ ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ श्री चंद्रप्रभु पाहुणो रे ॥ ए देशी ॥

॥ इणहीज जंबुद्वीपमारे, भरत क्षेत्र कहेवायरे ॥ छए मित्र तिहां जे उपनारे, ते सुणज्यो चितलायरे ॥ इणहीज० ॥ १ ॥ पडिबुद्धा इख्खवागमांरे, चदछाय अंगरायरे ॥ शंख काशीनो राजीयोरे, रुपी कुणाल कहायरे ॥ इणहीज ॥ २ ॥ आदित्त शत्रु

कुरु देशमांरे, जितशत्रु पंचाल कहायरे ॥ जयंतथी चवी ते सहुरे, इहां अवतार लहायरे ॥ इणहीज० ॥ ३ ॥ महाबल जीव तिहां थकोरे, पुन्यवंत प्रधानरे ॥ फागणसुदी चोथनेरे, चविया श्री जयंतविमानरे ॥ इण० ॥ ४ ॥ प्रभावती उर अवतर्यांरे, मास हुआ जब तीनरे ॥ डोहलो एवो उपनोरे, विण पूज्या रहे दीनरे ॥ इणहीज० ॥ ५ ॥ जल थल उपना फूलनीरे, मुवुं सेज बिछायरे ॥ पांच वरण फुल चंदुआरे, सुगंध सरुप सहायरे ॥ इणहीज०॥६॥ नवसरो हार फूलां तणोरे, हुं पेहेरुं मनरंग ॥ वाणव्यंतर ते देवतारे, पुरे तेह सुगंधरे ॥ इणहीज० ॥ ७ ॥ मृगसीर शुदी अगीआरसेरे, जायी पुत्री रतनरे ॥ अर्ध नीशा वीत्या पछीरे, माताजी हरखो मनरे ॥ इणहीज० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ छपन कुमरि आइ तिहां हरखे, जिनवर वंदी पायजी ॥ जन्म महोच्छव करीय जुगतीसुं, गइ निजगृह मति लायजी ॥ छपन० ॥ १ ॥ चोसठ इंद्र तिहांकणे आवी, मेरुशिखर नवरायजी ॥ गीत मधुर ध्वनि नाटक करके, मुकी गया निज ठामजी ॥ छपन० ॥ २ ॥ हवे प्रभात थयो कुंभ राजा, जन्म महोच्छव कीधजी ॥ दश उठण बहू जन जमावी, मल्लि कुंवरी नाम दींधजी ॥ छपन० ॥ ३ ॥ एक शत वरस थया केइ उणा, अवधि प्रयुंजी ज्ञानजी ॥ पूर्वभव छए मित्रो केरा, लहो आवागमने नामजी ॥ छपन० ॥ ॥ ४ ॥ ते ब्रुन रुपे मोह्या सघला, आशा एणे ठामजी ॥ इम

जाणी कुंमरीगृह मांहे, कनक मूर्ति करी तामजी ॥ छपन० ॥५॥ मस्तके रोज कवल एक मुके, आप जिमे तिणे मांहीजी ॥ दिवस केते ते दुर्गंध प्रगटी, मित्रो देखाइ उछांहीजी ॥ छपन० ॥ ६ ॥ ते देखी छए मित्र प्रति बोध्या, सहू गया निज निज गेहजी ॥ हवे मल्ली दीक्षा अवसर जाणो, दे वर्षीदान तेहजो ॥छपन०॥७॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ जिन प्रतिमा हो जिन सारीखी कही

॥ ए देशी ॥

॥ मृगशोर शुदी अगीआरसे आवीया, तोनसे नर लइ साथ ॥ तीनसे नारो हो वली लीधी दिक्षा, छोडो सहू घर आथ ॥ मृगसोर० ॥ १ ॥ तीणहोज दिन संध्या समय थयां, लहीये केवल राज ॥ तत्क्षण समवसरण देवे कीधां, सीध्यां सघला काज ॥ मृग० ॥ २ ॥ परखदा बारह लही बेठां तिहां, सुणी धर्म धरि नेह ॥ तोण समे छए मित्र पण आवीया, लइ दिक्षा तजी नेह ॥ मृग० ॥ ३ ॥ अठावीस गणधर थाए जिनवरने, साधु सहस चालीश ॥ साध्वी सहस पंचावन जेहने, करे धर्म निशदीश ॥ मृग० ॥ ४ ॥ सहस चोरासी एक लख श्रावक, श्रावकणी लख तीन ॥ सहस पांसठ छे उपर जेहने, तप जप करे नीस दीन ॥ मृग० ॥ ५ ॥ सहस पंचावन आयु पालीने, उपशम धरीये उदार ॥ परउपगारो हो श्री जिनवरतणो, नाम लीयो निस्तार ॥ मृग० ॥ ६ ॥ पांचसे साधु अढोसें साध्वी, लइ साथे परीवार ॥ समेतशिखरे जिनवर चालीया, सुमति गुप्ति सुविचार ॥ मृग० ॥७॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ आजहो परमारथ पायो ॥ ए देशी ॥

॥ मल्लिहो समेतशिखर सिधाया, गिरिवर देखी बहु सुख पाया ॥ सघला साध्वारे मन भाया, छोडी सकल संसारनी माया ॥ मल्लि० ॥ १ ॥ सहू जीवनां पुढवी पद पमज्जण कीधा, साधांरा मन वंछीत सिद्धा ॥ मल्लि० ॥ डाभ संथारे सुमन दीधा, धर्म शुकल ध्यान साथे लीधा ॥ मल्लि० ॥ २ ॥ चोरासी लख जीव खमाया, पाप अढारे दूर गमाया ॥ सिद्धिवधू मिलवा उमाया, पडिलेही छोडो निज काया ॥ मल्लि० ॥ ३ ॥ साधवी अंतर परखद रहीये, बारह परखदा साधुनो कहीये ॥ काउसग्ग रीते काया दहीये, सिद्ध ध्यानसुं शिवपद लहीये ॥ मल्लि० ॥ रुतु वसंत फागण दुखदाइ, शुकलपक्ष बारस अतिसा साइ ॥ अरधी नीशा जीम भरणी आइ, तब मल्लि जिन मुगति सीरी पाइ ॥ मल्लि० ॥ ५ ॥ अविनाशी अविकार कहाइ, परम अतींद्रिय सुख लहाइ ॥ समाधान सरवंग सहाइ, परम रस सरवंग सहाइ ॥ मल्लि० ॥ ६ ॥ सिद्ध बुद्ध अविरुद्ध ए कहीये, आदि न कोइ एहनो लहीये ॥ मृगशिर सुद अगीआरस आया, जिन वचने करी सदहीए ॥ मल्लि० ॥ ७ ॥

॥ कलश ॥ संवत सत्तर वरस छपन, आसो मास उदार ए ॥ प्रतिपदा तिथि शुकल पक्षे, जेसलमेर मोजार ए ॥ प्रधान पाठक श्री कुशल धीरे, गुरुए सांनिध्य करी ॥ ए स्तवन कीधो कुशल लाभे, धर्म मार्ग मनमें धरी ॥ इति श्री मल्लिनाथजी वृद्ध स्तवन ॥

॥ अथ श्री नेमनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ प्रथम गोवालातणे भवेजी ए देशी ॥ सरसतो सामिणो पाय नमुंजो, गायशुं नेमी जिणंद ॥ समुद्रविजय कुले उपनोजी, प्रगटयो पुनमचंद ॥ सुणो नर नेम समो नहो कोय ॥ सैारीपुरनो राजीओजो शिवादेवी सुत सोय ॥ सुणोनर० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ चाद सुपन सूचित भलाजो, जनम्या नेमि कुमार ॥ जोबन वय प्रभु आवीयाजी, सकल लोक शणगार ॥ सुणो० ॥ २ ॥ एक दोन आवे मलपताजो, आयुधशाला ज्यांय ॥ शंख चक्रने गदा भलोजी, सारंग धनुष त्यांह ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ नेमि धनुष चढावीयोजी, चक्र भमाडयुं त्यांह ॥ गदा उपाडो फेरवोजो, शंख लोओ करमांह ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ नेमि वजावे शंखनेजी, नादे डोल्यारे इंद्र ॥ शेषनाग पातालमांजी, गगने तारा चंद्र ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ वनमां बोन्या मृगपतीजी, हंस सरोवर कंठ ॥ नारो बीनो कामिनीजो, आलंबो पोया कंठ ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ शब्द सुण्यो जब शंखनोजी, करतो कृष्ण विचार ॥ कहे कुण वयरी उपनोजी, राज लोये निरधार ॥ सुणो० ॥ ७ ॥ हरि हेलामांहे आवियाजो, ज्यांछे नेमि कुमार ॥ मुखथी मीठुं बोलतांजी, हीयडे रोष अपार ॥ सुणो० ॥ ८ ॥ कृष्ण कहे सुणो राजीयाजी, नेमि निरुपम नाम ॥ बल परीक्षा इहां कीजीएजी, आछे अनोपम ठाम ॥ सुणो० ॥ ९ ॥ कृष्णे कर लंबावीयोजी, झाको नेम कुमार ॥ कणयर कांब जिम वालोयोजी, क्षण नव लागी वा-

र ॥ सुणो० ॥ १० ॥ कृष्ण कर धर्यो नेमनोजी, वाल्यो किम-ही न जाय ॥ नेम कृष्ण धंधोलीओजी, हरी मन झांखो थाय ॥ सु० ॥ कृष्ण वल्या घर आपणेजो, चिंते हृदय मोजार ॥ ब-त्रीस सहस अंतेउराजो, बोलावा घर नार ॥ सुणो० ॥ १२ ॥ नेम कुंवर छे लाडकाजो, बंधव श्याम शरोर ॥ विवाह तास म-नाववाजी, पेहेरो कंचुक चोर ॥ सुणो० ॥ १३ ॥

॥ ढाळ ॥ २ ॥ टोले मीलि सवि हरीनी नारी, प्रमदा प-होतो गढ गीरनारो, खंडोखली मांहि भरीउ नीर, झोले पहेरी आछां चीर ॥ १ ॥ नेम तणो इम झालो हाथ, हास्य विनोद करती नेम साथ ॥ सोवन सिंगी नीरे भरी, छांटे नेम कुंवरने फीरी ॥ २ ॥ एक मुख नेम कुमारनुं धुए, वदन एक चीर जइ लुहे ॥ देवर मारा सुंदर सार, परणो नारी नेम कुमार ॥ ३ ॥ भोला देवर करो विचार, नारी विना कुण करसे सार ॥ भोयण सुयण फोफल पान, नारी विना कुण देशे मान ॥ ४ ॥ नारी विना नर हाली होय, बार पहणो नावे कोय ॥ साधु साधवी श्रावक सोय, भक्ति करे जो स्त्री घर होय ॥ ५ ॥ नेम कहे सुणो भाभी वात, ए मीछुं हुं सवि अवदात ॥ नारी मोहे जे नर प-डया, साते नरके ते रवडया ॥ ६ ॥ ए नारी नव केहनी होय, तु पण हृदय विचारी जोय ॥ सुरनर किंनर दानव जेह, नारी आप्या तेहने छेह ॥ ७ ॥ भोज मुज पर देशी जेह, शब्द विडं-ब्या नारी तेह ॥ दीक धनने जिम नारी नडयो, राय भर्तुहरि इम

रडवडयो ॥ ८ ॥ ब्रह्मराय घर चुलणी जेह, पोते पुत्र मरावे तेह ॥ गौतम ऋषिनी अहल्या नार, इंद्र भोगवे भुवन मझार ॥ ९ ॥ ए नारीनो जुओ विचार, जोतां कांइ नव दीसे सार ॥ समज्या ते नर मुकी गया, नवि समज्या ते खुंची रह्या ॥ १० ॥ अकल गइ नरनी वली एम, जिहांथी प्रगटयां तिहां बहु प्रेम ॥ उत्पत्ति जोइ न तुं आपणी, समजी मुक ते मती पापिणी ॥ ११ ॥ मात पिताने जोगे वली, शोणी शुक्र गयां बहु मिली, जग सघलो तिहां जइ उपनो, नानो मोटो एम नीपनो ॥ १२ ॥ तो ते साथे शो वली रंग, न करुं नारीकेरो संग ॥ भोग करंतां हिंसा बहु, नर-नारी तुमे सुणज्यो सहू ॥ १३ ॥ बे इंद्रि पंचेद्रि जेह, नव नव लाख कहीछे तेह ॥ मनुष्य असंख्य संमूर्छिम जाणी, भोग करतां तेहनी हाण ॥ १४ ॥ इस्यां वचन जब नेमे कह्यां, अंतेउर सवि झांखां थयां ॥ कृष्ण राय प्रत्ये जइ कहे, नेमनाथ गृह वासे नवि रहे ॥ १५ ॥ गौरी गंधारी लक्ष्मणा, रुक्मिणी बोल कहे तिहां घणा ॥ जंबुवतीने सुसीमा सती, सत्यभामाने पद्मावती ॥ १६ ॥ पटराणी ए हरिनी हशे, देवर मती कांताहारी खसे ॥ ऋषभ देव साधु नवि जोय, जन्म कुंवारो न रह्यो कोय ॥ १७ ॥ भरतराय तो परण्यो खरी, चउसठि सहस जो अंतेउरी ॥ हवडां तारो बंधव भलो, बत्रीस सहस निरवहे एकलो ॥ १८ ॥ एक थकी थाये आकलो, परणावाने पाछा वलो ॥ ना ना कहेतां नावे लाज, किम रहेशे क्षत्रीकुल राज ॥ १९ ॥ इस्यां वचन कहे हरीनी

बारो, पासे उभा देवमुरारि ॥ नेम न बोल्या मुखथी फरी, मान्युं मान्युं कहे सुंदरी ॥ २० ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ उग्रसेन घर बेटडी, मन भमरारे ॥ नामे राजुल नार, लाल मन भमरारे ॥ कृष्ण देव तिहां आविया ॥ मन० ॥ राय तणे दरबार ॥ लाल मन० ॥ १ ॥ उग्रसेन घणुं हरखोया ॥ मन० ॥ धन्यधन्य दिन मुज आज ॥ लाल० ॥ हरी आव्या मुज आंगणे ॥ मन० ॥ तो सरीआं सवि मुज काज ॥ लाल० ॥ २ ॥ कृष्ण कहे सुणो राजीया ॥ मन० ॥ मुज बंधव तुज धुअ ॥ लाल ॥ प्रेम धरी परणावोये ॥ मन० ॥ जिम वाधे बहु नेह ॥ लाल० ॥ ३ ॥ हरी विवाह मेलोओ ॥ मन० ॥ नेम तणो निरधार ॥ लाल० ॥ मंडप घाल्या वारणे ॥ मन भमरारे ॥ तोरण बांध्या सार ॥ लाल० ॥ ४ ॥ खाजां लाडु लापशी ॥ मन० ॥ अति मोढां पकवान ॥ लाल० ॥ जमो जलेबी पातळी ॥ मन० ॥ जीभ वाधे निजवान ॥ लाल० ॥ ५ ॥ पेंडा मरकी मने गमे ॥ मन० ॥ तनमनी कोहळा पाक ॥ लाल० ॥ उपर भोजन अति भलां मन० ॥ सुंदर शोभित शाक ॥ लाल० ॥ ६ ॥ सजन कुटुंब संतोषीया ॥ मन० ॥ नेम वधार्यो वान ॥ लाल० ॥ खुंप भर्यो शिर शोभतो ॥ मन० ॥ मुख चावे बहु पान ॥ लाल० ॥ ७ ॥ काने कुंडल रयणमइ ॥ मन० ॥ कमर बांधोरे कमाय ॥ लाल० ॥ चामर विंझे चिहुं दिसे ॥ मन० ॥ गज चढीया नेमराय ॥ लाल० ॥ ८ ॥ चीर पीतांबर पामरी ॥ मन० ॥ कंठे

कुहुमनो हार ॥ लाल० ॥ गजरथ घोडा पालखो ॥ मन० ॥ आगल बहु असवार ॥ लाल० ॥ ९ ॥ छप्पन कोडि यादव मल्या ॥ मन० ॥ चाली जिनवर जान ॥ लाल० ॥ कोकिल कंठ कामिनी मन० ॥ गोपी करे तिहां गान ॥ लाल० ॥ १० ॥ ढोल ददामा गडगडे ॥ मन० ॥ पंच शब्द तिहां सार ॥ लाल० ॥ तोरण आव्या नेमजी ॥ मन० ॥ सुणीओ पशुनो पोकार ॥ लाल० ॥ ११ ॥

॥ ढाल० ॥ ४ ॥ हरिणी कहे सुणो कथ हमारा, हमणां प्राण हणशे तुमारा ॥ ओ आवे जिन नेम कुमारा, कर कांइ तु आतम सारा ॥ १ ॥ हरणो कहे सहुको खेम, अति अपराधे पहणे नेम ॥ विण अवगुण प्रभु किम न मारे, हरणो वदन वदे तिणवारे ॥ २ ॥ हुं नं करुं परकेरी आश, जइ जंगलमां पुरु वास पर्वत पाणी चरि घास, नवी ठाकुर नहो कहो दास ॥ ३ ॥ विण अपराधे मृगने मारे, ते नर भमशे गति जो च्यारे ॥ वात करे नर पशुअ पोकारे, शब्द सुणोने आप विचारे ॥ ४ ॥ जो परणुं तो पशु हणाय, मुज अनुकंपा नाठो जाय ॥ भोग भोगवो कुण दुखोयो थाय, नेमनाथ रथ फेरी जाय ॥ ५ ॥ वरस दिवस जे दोधुं दान, सहस पुरुष शुं संयम ध्यान ॥चोपन दिन छद्मस्था मान, नेमे पाम्युं केवल ज्ञान ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ राजोमती तो पुंठे जाय, नेम विना दुख सबलो थाय ॥ कहे कंथ मुज अवगुणी, नोर विना किम रहे पोय-

णी ॥ १ ॥ अष्ट भवंतर आगे नेह, तो किम आपे हमणां छेह ॥ स्वामी कठिन हृदय मत करो, परणवाने पाछा वलो ॥ २ ॥ इस्यां वचन भाखे मुख तिहां, वाघ सिंह बोले वन मांहे ॥ हायडे चिंते राजुल नारी, कीशा करम कीधां कीरतार ॥ ३ ॥ के में जलमां नाख्या जाल, के में माय विछोह्यां बाल ॥ के में सती ने चड व्यां आल, के में भाखी बिरड गाळ ॥ ४ ॥ के मे वन दावानल दया, के मे परधन वंचो लीया ॥ के मे शील खंडना करी, तो मुजने नेमे परिहरि ॥ ५ ॥ इस्यां वचन भाखे सुंदरी, नेम तणे पासे संचरी ॥ स्वामी वचन सुण्यां जब सार, मनथी चिंते अथीर संसार ॥ ६ ॥ राजेमती वैरागीणी थइ, हारदोर तिहां छोडे सही ॥ कंकण चुडी अलगो ठवो, लइ संयमने हुइ साधवी ॥ ७ ॥ सुणी व्याख्यान वळी एक मने, तुट्यो मेघ चमको कामिनी ॥ वस्त्र लाग्युं काचुं नोर, भीनुं राजुल तणुं शरीर ॥ ८ ॥ रंहेनेमी उभा छे जिहां राजुल वस्त्र सुकवती तिहां ॥ रंहेनेमी दीठा सुंदरी, परवश पुनां तव इंद्री ॥ ९ ॥ प्रकट थइ नर बोल्यो यति, भाभी दुःख म धरस्यो रति ॥ नेम गयो तो मुजने वरो, काम भोग मुज साथे करो ॥ १० ॥ अंग विभूषण सवि आदरो, नगर अमारे पाछा फरो तुज कारण हुं मुकुं जोग, जो तुं मुजस्युं विलसे भोग ॥ ११ ॥ एक वचन मानो सुंदरी, आगल संजम लेजो फरी ॥ कुप छांयडी करपि जेम धन्न, विसमे ठामे उग्युं छे वन ॥ १२ ॥ तेना फल जेम तिहां विसमे, तिम तुं यो-

वन कां एळे गमे ॥ राजुल कहे सुण मूढ गत आण, पश्चिम दीशे उगे जो भाण ॥ १३ ॥ चंद्र थको वरसे अंगार, ताहे न वांछुं तुज भरथार ॥ पर्वत पाणी पाछां चढे, कायर सुरा ज्यम जो वढे ॥ १४ ॥ पाप करीने पामे लील, तोए न खंडु मारु शील ॥ वमो वस्तुने शुं आदरे, विषय काजे कां दुर्गति फरे ॥ १५ ॥ रेहेनेमो मन झांखो थगो, हे हे वचन किश्योमे कह्यो॥ उत्तम कुलनो न रही लाज, धिग धिग तुं रे विरुआ काज ॥ १६ ॥ आतम निंदा करतो आप, मुज भाइ पोढां लाग्यां पाप ॥ नेम तणा जे वंदे पाय, छेइ संयमने मुक्ति जाय ॥ १७ ॥ राजिमती तिहां बहुतप तपे, अरिहंत नाम हृदयमां जपे ॥ नेमे तारी घरनी नार, राजुल मुको सुगति मोजार ॥ १८ ॥

॥ ढाल ॥ नेमनाथ नित्य वंदो बावीसमारे, वंदोरे नेमनाथ राजेमतिरे ॥ संवत सोल सत सठि संघ सहु सांभलोरे ॥ पोसमास सुद बोजे गुरुरे ॥ स्थंभ नयर मांहे जिन थुण्योरे ॥

॥ कलश ॥ इयनेमि जिनवर, पुण्य दिनकर, मकल गुण मणि सागरो ॥ जस नाम जपतां कर्म खपीए, छुटीए भव आगरो ॥ तपगच्छ मुनिवर सकल सुखकर, श्री विजयसेन सूरीसरो ॥ तस तणो श्रावक ऋषभ बोले, थुण्यो नेमि जिणेसरो ॥ इति श्री नेमनाथ स्तवन संपूर्ण.

श्री महावीर स्वामीनुं सतावीस भवनुं स्तवन ॥

॥ मारुमन मोह्युंरे श्री सिद्धाचलेरे ॥ ए देशी ॥

॥ पेहेलाने समरुं पास संखेश्वरोरे, वली शारद सुखकंद ॥ निज गुरु केरारे चरण कमल नमुंरे, थुणसुं वीर जीणंद ॥ भवि तमे सुणोरे, सत्तावीस भव मोटकारे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ नयसार नामरे अपर विदेहमांरे, महिपतिने आदेश ॥ काष्ट लेवा नर वन गयो परिकरारे, गिरिगहनने परदेश ॥ भवि० ॥ २ ॥ आहार वेळारे रसवति निपनीरे, दानरुची चित्तलाय ॥ अतिथि जुओरे इण अवसरे रे, धरी अंतरथी भाव ॥ भवी० ॥ ३ ॥ पुण्य संयोगेरे मुनिवर आवियारे, मार्ग भूल्या छे तेह ॥ निरखी चिंतेरे धन्य मुज ए भाग्यनेरे, रोमांचित थया देह ॥ भवि० ॥ ४ ॥ निरवद्य आहार देइने इम कहेरे, निस्तारो मुज स्वाम ॥ जोग जाणीने मुनि दीये देशनारे, समकित लह्यो अभिराम ॥ भवि० ॥ ५ ॥ मार्ग देखाडी वांदीने वळ्यारे, संभरंतो नवकार ॥ देवगुरु धर्म तत्वने आदरीरे, शास्वतो सुख दातार ॥ भवि० ॥ ६ ॥ पहेले भवे इम धर्म आराधीनेरे, सौधर्मे थयो देव ॥ एक पल्योपम आउखुं भोगवीरे, बीजे भव स्वयमेव ॥ भवि० ॥ ७ ॥ त्रीजे भव चक्रिभरते सुरे, तस हुआ मरिचि कुमार ॥ प्रभु वचनामृत सांभली रंगथीरे दिक्षीत थयो अणगार ॥ भवि० ॥ ८ ॥

॥ ढाळ ॥ २ ॥ चतुर स्नेही मोहना ए देशी ॥

॥ एक दिन ग्रीष्म काळमां, विचरंतो एकाकीरे ॥ अकळो

स्वामी थकी रहे, ज्ञानमदे अति आकोरे ॥ त्रीजो भव भवि सांभलो ॥ १ ॥ टेक ॥ तपने तपे अति आकरो, मेले मलिन छे देहरे ॥ श्रमण पणुं दुष्कर घणुं, जलवाये नहीं एहरे ॥ त्रीजो० ॥ ॥२॥ घर जावुं जुगतु नहीं, एम धारीने विचरीरे ॥ वेश नवो ॥ त्रिदंडीनो, चंदन देह ते चरचरे ॥ त्री० ॥ ३ ॥ कर कमले ग्रहुं दंडने, भगवुं कपडुं करवुंरे ॥ पाये उपानह पहेरणे, माथे छत्रने धरावुंरे ॥ त्री० ॥ ४ ॥ परिमित जलसुं स्नानहो, मुंड जटा जुट धारुंरे ॥ राखुं जनोइ सुवर्णनो, प्राणी स्थुल न मारुंरे ॥ त्री० ॥ ॥ ५ ॥ वेष करीने लिंगीनो, धर्म करे वली साचोरे ॥ वाणो गुणे पडिबोहतो, जेवो हीरो काचोरे ॥ त्री० ॥ ६ ॥ जाणी दिक्षा योग्यने, आणी मुनिने आपेरे ॥ जण जण आगल रागथी, साधु तणा गुण थापेरे ॥ त्री० ॥ ७ ॥ आदि जिणंद समोसर्या, साकेतन उद्यानेरे ॥ भरतजी वंदन संचर्या, वंद्या हरख अमानेरे ॥ त्री० ॥ ८ ॥ भरतजी वंदन संचरे, कोइ अछे तुम सरखोरे ॥ स्वामी कहे सुण राजीआ, तुम सुत मरिची ए परखो रे ॥ त्री० ॥ ॥ ९ ॥ वासुदेव पेहलो होशे, चक्रवर्ती अमुकायेरे ॥ तीर्थंपति चोवीसमो, नामे वीर कहायेरे ॥ त्री० ॥ १० ॥ पुलकित थइ प्रभु वंदीने, मरिची निकटे पहोतोरे ॥ त्रण प्रदक्षिणा देइने, वंदे मन गहगहतोरे ॥ त्री० ॥ ११ ॥ गुण स्तवना करी इम कहे, वंदुं छुं एह मरमरे ॥ वासुदेव चक्री थइ, थाशो जिनपति चरम रे ॥ त्री० ॥ १२ ॥ जिन वचनामृत दाखवी, रंगे उलट आणीरे ॥

प्रणमि भरत घरे गयो, मरिचीने गुण निधि जाणीरे ॥त्रो०॥१३॥
॥ ढाल ॥३॥ नदी जमुनाके तीर उडे दोय पंखीआं ॥ ए देशी ॥

॥ मरिचि इम चिंतवे, भरत वचन सुणि ॥ मुज सम अवरन कोय, छे जगमानुं गुणो ॥ जेटला लाभ जगतमां छे ते में लह्या ॥ अहोश्री आदि जिणंदे ते निज मुखथी कह्या ॥ १ ॥ रत्नाकर मुज वंश अनोपम गुणयुता ॥ दादा जिनमां मुख्य चक्रीमां मुजपिता ॥ अहो उत्तम कुल मारुं हुं महुं शिरे ॥ धन धन मुज अवतार हरिमां हुं धुरे ॥ २ ॥ चक्रवर्ती थइ चरम जिणेसर थाइशुं ॥ कनक कमळ परे निजपद कमळने ठायशुं ॥ सुरनर कोडा कोड मळी मुज प्रणमशे ॥ प्रतिहारज वर आठसुं समवसरण थशे ॥ ३ ॥ मद करवाथी नीच गोत्र इम बांधीउं ॥ भव भव नीच कर्मनुं फळ इहां सांधीऊं ॥ एक दिन रोग उदयथी मने एम चिंतवे ॥ सेवाकारक शिष्य करुं कोइक हवे ॥ ४ ॥ सार न पुछे एमुनि परिचित छे घणा ॥ डुंगरा दुरथकी दिसे रळिआमणा ॥ एवे कपिल नामे एक नृप सुत आवीओ ॥ तेने मरिचोए प्रभुनो धर्म सुणाविधो ॥ ५ ॥ योग्य जाणी कहे जाओ मुनिपासे तुमे ॥ दिक्षा ल्यो शुभ भावथी कहीए लीए अमे ॥ कपिल कहेतव धर्म नथी शुं तुम गच्छे ॥ मनथी चिंते अजोग ए मुज लायक अछे ॥ ६ ॥ मरिची कहे जो कपोल इहां पण धर्म छे ॥ चित्त रुचे तिहां सेवोए ए हित मर्म छे ॥ इम उत्सूत्र कह्याथी संसार वधारीयो ॥ सागर कोडा कोड अपारा चोरीयो ॥ ७ ॥

चोरासी लख पूर्वनुं आयुष भोगवी ॥ अंते अनालोचित त्रीजे भवथी चवो ॥ दश सागर भव चोथे पंचम स्वर्गथी ॥ उपन्यो पंचम भव हवे ब्राह्मण वर्गमां ॥ ८ ॥ ऐंसो पूर्व लख आउखे कौशिक द्विज थयो ॥ थूण नयरीए छठे भव भमतां गयो ॥ बहोतेर लख पुर्वायुष्य द्विज नामथी ॥ अंते त्रिदंडी थइने मुओ ते अकामथी ॥ ९ ॥ सातमे सोहम चैत्यपुरे भव आठमे ॥ अग्निघोत द्विज लख पुर्वायु साठमे ॥ अंते त्रिदंडी थइने हवे नवमे भवे ॥ इशाने अमृत सुख रंगे अनुभवे ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ दशरथ पूर्वद्विपनुं भविका सिद्धगिरि ध्याओ ॥ ए देशी ॥

अग्निभूति द्वीज दसमे आयो, मंदर पुरमां तेह सुहायो ॥ लालन तेह सुहायो ॥ छप्पन लख पूर्वायु धरतो, अंते त्रिदंडीयो थइने ते फरतो ॥ लालन थइने ते फरतो ॥ १ ॥ इग्यारमे भवे सनत्कुमार, बारमे श्वेतांबिये अवतार ॥ ला० ॥ श्वे० ॥ विभार-द्वीज अंते त्रिदंडी, चुंआलीस लाख पूर्वायु मंडि ॥ ला० ॥ पु० ॥ २ ॥ तेरमे भव थयो माहेंद्रदेव, चौदमे थावर ब्राह्मण देव ॥ ॥ ला० ॥ ब्रा० ॥ चोत्रीस लाख पुर्वायु पाली, त्रिदंडीयो थइ कायाने गाळी ॥ ला० ॥ का० ॥ ३ ॥ पनरमे भवे पांचमे स्वर्गे, तीहांथी चवी भमियो भव वरगे ॥ ला० ॥ भ० ॥ सोलमे भवे विश्वभूति नामे, क्षत्रीय सूत उपन्यो ते सकामे ॥ ला० ॥ ॥ उ० ॥ ४ ॥ विशाखभूति धारणीनो जायो, संभूतिसाधुये तेह

वंदायो ॥ ला० ॥ ते० ॥ सहस वरस जिण चरण आराधि, तपसी थया अति वीरमि उपाधि ॥ ला० ॥ वी० ॥ ५ ॥ एक दिन मथुरामां गोचरी चाल्यो, वरजात्रा जतां भाइये भाल्यो ॥ ला० ॥ भा० ॥ एहवे एक गाये तस मार्यो, भूमि पड्या अति क्रोधे धार्यो ॥ ला० ॥ क्रो० ॥ ६ ॥ ते जोतां गौ गगने भमाडी, एम निज भुज बल तेहने देखाडि ॥ ला० ॥ ते० ॥ अणसण साथे नियाणुं कीधुं, तप साटे बल मागीने लीधु ॥ ला० ॥ मा० ॥ ७ ॥ कोड वरसनुं जीवित सारि, सत्तरमे शुक्र स्वर्ग अवतारि ॥ ला० ॥ स० ॥ अढारमे भव पुत्रोनो कामी, प्रजापति पोतनपुर स्वामी ॥ ला० ॥ पो० ॥ ८ ॥ मृगपति राणीये कुखे धरियो, सात सुपन सूचित अवतरीयो ॥ ला० ॥ सू० ॥ बालपणे जेणे सिंहने हणीयो, त्रिपृष्ट नारायण करी सुणीयो ॥ ला० ॥ ना० ॥ ॥ ९ ॥ त्रणसें साठ संग्राम ते कीधो, सज्या पालकने दुःख दीधो ॥ ला० ॥ पा० ॥ लाख चोरासी वरसनुं आय, भोगवी सातमी नरके ते जाय ॥ ला० ॥ न० ॥ १० ॥ ओगणीसमे भवे दुःख अतिवेदी, वीसमे भव हुओ भव सिंह सखेदी ॥ ला० ॥ सिं० ॥ चोथी नरकमें भव एकवीसमे, बहु भव भमतां हवे बावीसमे ॥ ला० ॥ ह० ॥ कोइ शुभयोगे नरभव पायो, त्रेवीसमे भव चक्री गवायो ॥ ला० ॥ च० ॥ धनंजय धारणीनो ते बेटो, मुका नगरीये भुजबल तेजो ॥ ला० ॥ भु० ॥ १२ ॥ खट खंड पृथ्वीमां आण मनावी, चौद रयण निधि संपद पाइ ॥ ला० ॥ सं० ॥ पो-

टिलाचार्य गुरु तिहां वांदी, दीक्षा आदरी मनथी आनंदी ॥ ला० ॥ म० ॥ १३ ॥ चोरासी लाख पूर्व प्रमाण, आयु पाळी हवे चोवोसमे जाण ॥ ला० ॥ चो० ॥ महाशुक्रे हुवो अमर उमंगे, अमृत सुख भोगवे रंगे ॥ ला० ॥ भो० ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ दशरथ पूरव वर दिपतुं ॥ ए देशी ॥

॥ आ भरते छत्रिका पुरो, पचवोसमे भवे आयाजो ॥ भद्रा जितशत्रु नृप कुले, नन्दन नाम सुहायाजी ॥ त्रोटक ॥ नाम नंदन त्रिजग वदन, पोटिलाचारज कन्हे ॥ ग्रहो चरण दमतो करण[1], विचरे मृगपति जिम वने ॥ १ ॥ तीहां मास खमणे, वोस स्थानक, तप तपो दुःकर पणे ॥ पद बांधिउं इहां तीर्थकरनुं, भावथी आदर घणे ॥ चाल ॥ अभिग्रही मासखमण कोधां, जावजीव विहरंताजो ॥ उलसित भावे तप तपी, कोधो करमनो अंताजो ॥ ॥ २ ॥ त्रोटक ॥ भव अंत कोधो काम सिध्यो तास संख्या हुं कहुं, अगीआर लाखने सहस अंसी, छसें पोस्तालोस लहुं ॥ दोन पांच उपर अधिक जाणो, लाख पचवोस सहसनुं ॥ आउखुं पाळो श्रमण टालो, काम कोधुं मरदनुं ॥ ३ ॥ चाल ॥ अणसण मास संलेखणा, करो वध ने परिणामेजो ॥ सवि जगजंतु खमावोने, चवियां तोहांथी सकामेजो ॥ ४ ॥ त्राटक ॥ चवियो सकामे स्वर्ग दशमे, वोस सागरे सुर हुआ ॥ तोहां विविध सुर सुख भोगवे, खट वोसमो भव ए जुओ ॥ मरिचो भवे ए कर्म बाध्युं, ते

---

१ इन्द्रियोने वश करतो.

इजी खुटयुं नहीं, चरिम सत्तावीसमे भव, उदय आव्युं ते सही ॥ ॥ ५ ॥ चाल ॥ ऋषभदत्त ब्राह्मण वसे, वर माहण कुंड गामजी, तस घरणो[१] गुण गोरडी, देवानंदा इति नामेजी ॥ ६ ॥ त्रोटक० ॥ देवानंदा कुखे आया चौद सुपना निसि[२] लहे ॥ तव इंद्र अवधिए जोइने, हरणीगमेषोने कहे ॥ नगर क्षत्रीय कुंडगामे सिद्धारथ छे नरपति ॥ तस पट्टराणी तेह खाणी नामे त्रिशला गुणवती ॥ ६ ॥ ॥ चाल ॥ तोहां जइ गर्भने पालटो ए, तुमने छे आदेशजी ॥ कोइ काले एम नवो बन्यु, द्विज कुळ होय जिनेशजी ॥ ७ ॥ ॥ त्रोटक ॥ द्विज कुले न होय जिनपति वली, एह अचरिजनी कथा ॥ लवणमां जिम अमृत लहरि, मरुमां सुरतरु यथा ॥ एम इंद्रवयणां सांभळो, पहोंचो तीहां प्रणमे प्रभु ॥ वहु गर्भ पलटो रंग-भरथी, जइ वहे नीज विभु ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ हांरे कांइ जोवनीयानो चटको दहाडा च्यार जो ॥ ए देशो ॥

॥ हारे मारे ग्यासो दोन इम वसोने द्वीज घरमांहिजी, त्रीशला कुंखे त्रिभुवन नायक आविया रे ॥ लोल ॥ हांरे मारे तेहज राते चौद सुपन लहे मातजो, सुपन पाठक तेडीने अर्थ सुणाविया रे लोल ॥ १ ॥ हांरे मारे गर्भ स्थिती पूर्ण थये अनम्या स्वामोजा, नारक स्थावर जनना सुखने भावतारे लाल ॥ २ ॥ हांरे मारे मूति कर्मने करतो धरतो हर्षजो, अमरोरे[३] गुण समरो

१ स्त्री. २ रात्रे. ३. देवी.

जिनपद पावतोरे लोल ॥ २ ॥ हांरे मारे सोहम इंद्रादिकनो ओच्छव हुंतजो, सिद्धारथ पण तिम वली मन मोटे करेरे लोल ॥ हांरे मारे नाम ठव्यु श्री वर्द्धमान कुमारजो, दिन दिन वाधे प्रभुजी कल्पतरुपरे रे लोल ॥३॥ हांरे मारे देवे अभिधा दिधुं श्री महावीरजो, जोवन वय वली संठवे नव नव भोगनेरे लोल ॥ हांरे मारे इम करतां मात पिता गयां स्वर्ग मोजारजो, लोकांतिक तव आवी करे उपयोगनेरे लोल ॥ ४ ॥ हांरे मारे वरसोदान दइने संजम लीधजो, परिसहने उपसर्ग सह्या प्रभुए घणारे लोल ॥ हांरे मारे लाख वरस तपसी पूर्व भव नाथजो, तो पण आ भव तपनी राखी नहीं मणारे लोल ॥ ५ ॥ हांरे मारे बे खटमासी तेमां पण दिन उणजो, नव चउमासी बे त्रणमासीने लहुरे लोल ॥ हांरे मारे बे अढीमासी खट बे मासी जाणजो, दोय मासी दोय मास खमण बारे कहुरे लोल ॥६॥ हांरे मारे बोहोतेर पास खमण वली अट्ठम बारजो, दोसत ओगणत्रीस ए छठ तपने भणुरे लोल ॥ हांरे मारे आदि प्रभु तप तपीया ते विणु नीरजो, त्रणसें ओगण पंचास ए पारणे दिन गणुंरे लोल ॥ ७ ॥ हांरे मारे तिम अप्रति बंधी बेठा नहीं भगवंतजो, बार बरसमां निद्रा बे घडीनी करीरे लोल ॥ हांरे मारे तेम निरमल ध्याने घातिकर्म खपायजो, दर्शन ज्ञान विलसी केवलने वरीरे लोल ॥ ८ ॥ हांरे मारे प्रभु केवल पाम्या रजुवालिका तीरजो, आवेरे विचरंतां चित्त उमंगथीरे लोल ॥ हांरे मारे अति उलसे थइने सुरनर कोडा कोडजो, जिन वचनामृत सुणवा आवे रंगथीरे लोल ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ७ ॥ देशी हमिरियानी गीतनो छे ॥

॥ महसेन वनमां समोसर्या, जगनायक जिनचंद सुज्ञानी ॥ समवसरण रचना करी. प्रणमें चोसठ इंद्र सुज्ञानी ॥ वीर जीणंदने वंदीए ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ प्रतिहारज वर आठसु शोभे प्रभुनो देदार ॥ सुज्ञानी ॥ दीठा दर्शनि देवे देशना, सांभले परखदा बार ॥ सुज्ञानी ॥ वी० ॥ २ ॥ इंद्रभूति द्विज प्रमुखने, गणधर थापे इग्यार ॥ सुज्ञानी ॥ दंसण नाण चरण धरा, चौद सहस अणगार ॥ सुज्ञानी ॥ वीर० ॥ ३ ॥ छत्रीस सहस सुसा[1]हुणी, चारसें वादि प्रमाण ॥ सुज्ञानी ॥ वैक्रिय लिब्धने केवली, सातसें सातसें जाण ॥ सुज्ञानी ॥ वीर० ॥ ४ ॥ ओहो नाणोधर तेरसे, मनः पर्यवशत पंच ॥ सुज्ञानी ॥ वीर० ॥ ५ ॥ दोढ लाख नव सहस छे, श्रमणो[2]पासक सार ॥ सुज्ञानी ॥ श्राविका वळी त्रण लाखने, उपर सहस अढार ॥ सुज्ञानी ॥ वीर० ॥ ६ ॥ चउविध संघनी स्थापना, करता फिरता नाथ ॥ सुज्ञानी ॥ भविक कमल पडिबोहता, मेळता शिवपुर साथ ॥ सुज्ञानी ॥ वीर० ॥ ७ ॥ पुत सपुत न एहवा, जगमां दीसे कोय ॥ सुज्ञानी ॥ ब्यासी दीन कुखे वस्या, ए उपकारने जोय ॥ सुज्ञानी ॥ वीर० ॥ ८ ॥ शिवपुर तेहने पठावीया, ब्राह्मण ब्राह्मणी दोय ॥ सुज्ञानी ॥ जगवत्सळ जिन वंदतां, हियडुं हरखीत होय ॥ सुज्ञानी ॥ वीर० ॥ ९ ॥ त्रीस बरस गृहवासना, भोगवी भोग उदार ॥

---

१ उत्तम साधवीओ २ श्रावक.

सुज्ञानी ॥ छद्मस्थअवस्था महि, बारसाधिक वर्ष धार ॥ सुज्ञानी ॥ वीर० ॥ १० ॥ त्रीस वरस जीणे अनुभव्यो, केवल लीळविलास ॥ सुज्ञानी ॥ पूर्ण आउखुं पालीने, बोहोंतेर वरसनुं खास ॥ सुज्ञानी ॥ वीर० ॥११॥ दिवाळी दीन शिव वर्या, छोडी सयल जंजाल ॥ सुज्ञानी ॥ सहजानंदी सुख लह्युं, आतम शक्ति अजुआल ॥ सुज्ञानी ॥ वीर० ॥ १२ ॥ भूत भावि वर्त्तमानना, सुर सुख लेइ अशेष ॥ सुज्ञानी ॥ नभप्रदे शनवे करो, कीजे वर्ग विशेष ॥ सुज्ञानी ॥ वीर० ॥ १३ ॥ इणीपरे वर्ग अनंतना, करीये सहु समुदाय ॥ सुज्ञानी ॥ अव्याबाधित सुखतणो, अश न एक लखाय ॥ सुज्ञानी ॥ वीर० ॥ १४ ॥ निजगुण भोगी भोगवे, सादि अनंतो काळ ॥ सुज्ञानी ॥ निज सत्ताने विलसता, निश्चय नय संभाल ॥ सुज्ञानी ॥ वीर० ॥ १५ ॥ इम अमृत पदने वरी, देठा थइ निशंक ॥ सुज्ञानी ॥ वर्द्धमान भावे करी, वंदे नित नित रंग ॥ सुज्ञानी ॥ वीर० ॥ १६ ॥

॥ कलश ॥ इम वीर जिनवर सयल सुखकर, दुरित दुःखह जिम भणी, युग बाण वसु शशी मान वरसे, संथुण्यो त्रिभुवन धणी ॥ सगवीस भवनुं स्तवन भवियण, सांभळी जे सदहे ॥ ते ऋद्धि वृद्धि सु सिद्धि सघले, सदा रंग विजय लहे ॥ इति श्री सत्तावीस भवनुं वीर जिन स्तवन संपूर्ण ॥

॥ श्री महावीरस्वामीनुं पंचकल्याणकनुं-त्रण ढाळनुं स्तवन ॥

॥ दुहा शासन नायक शिवकरण, वंदुवीर जिणंद ॥ पंच कल्याणक जेहना, गाशुं धरी आणंद ॥ १ ॥ सुणतां थुणतां प्रभु तणा, गुण गीरुआ एकतार ॥ ऋद्धि वृद्धि सुख संपदा, सफल हुए अवतार ॥ २ ॥

॥ ढाळ ॥ १ ॥ बापडी सुण जीभलडी ॥ ए देशी ॥

॥ सांभळज्यो सस्नेही सयणां, प्रभुना चरित्र उल्लासे ॥ जे सांभळशे प्रभु गुण जेहना, समकित निर्मळ थाशेरे ॥ सां० ॥ १ ॥ जंबुद्वीपे दक्षिण भरते, माहण कुंड गामे ॥ ऋषभदत्त ब्राह्मण तस नारी, देवानंदा नामेरे ॥ सां० ॥ २ ॥ आषाढसुदी छठे प्रभुजी, पुष्पोत्तरथी चविया ॥ उत्तरा फाल्गुनी योगे आवी, तस कुखे अवतरीयारे ॥ सां० ॥ ३ ॥ तिण रयणी सा देवानंदा, सुपन गजादिक निरखे ॥ प्रभाते सुणी कंथ ऋषभदत्त, हियडामांही हरखेरे ॥ सां० ॥ ४ ॥ भांखे भोग अर्थ सुख होस्ये, होस्ये पुत्र सुजाण ॥ ते निसुणी तिण देवानंदा, कीधुं वचन प्रमाणरे ॥ सां० ॥ ५ ॥ भोग भला भोगवता विचरे, ए हवे अचरिज होवे ॥ सतक्रतु [1]जीव [2]सुरेसर हरख्यो, अवधि प्रभुने जोवेरे ॥ सां० ॥ ६ ॥ करी वंदनने इंद्र सन्मुख, सात आठ पग आवे ॥ शक्र-

---

१ कार्तिक शेठनो जीव, जेणे सो वखत पांचमी पडीमा वही छे. २. इन्द्र (सौधर्मेन्द्र)

स्तत्र विधि सहित भणीने, सिंहासन सोहावेरे ॥ सां० ॥ ७ ॥ संशय पडिओ एम विमासे, जिन चक्री हरीराम ॥ तुच्छ दरिद्र माहणकुल नावे, उग्रभोग विण धामेरे ॥ सां० ॥ ८ ॥ अंतिम जिन माहण कुल आव्या, एह अछेरु कहीए ॥ उत्सर्पिणी अवसर्पिणी अनंती, जातां एहवुं लहीएरे ॥ सां० ॥ ९ ॥ इण अवसर्पिणी दस अछेरां, थयां ते कहीए तेह ॥ गर्भ हरण गोसाला उपसर्ग, निष्फल देशना जेहरे ॥ सां० ॥ १० ॥ मूल विमाने रवि शशी आव्या, चमरानो उत्पात ॥ ए श्रीवीरजिणेसर वारे, उपना पंच विख्यातरे ॥ सां० ॥ ११ ॥ स्त्री तीर्थ मल्लिजिनवारे, शीतलने हरिवंश ॥ ऋषभने अष्टोत्तरसो सीधा ॥ सुविधि असंजती संसरे ॥ सां० ॥ १२ ॥ शंख शब्द मीलीआ हरि हरस्युं, नेमीसरने वारे ॥ तीम प्रभु नीच कुले अवतरीया, सुरपति एम विचारे रे ॥ सां० ॥ १३ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ नदी यमुनाके तीर ॥ ए देशी ॥

॥ भव सत्तावीस स्थुलमांहि त्रीजे भवे, मरीची कीयो कुलनो मद भरत यदा स्तवे ॥ नीच गोत्र करम तिहां बांध्युं ते वती ॥ अवतरीया माहण कुल अंतीम जिनपती ॥ १ ॥ अति अघटतुं एह थयुं थाशे नही, जे प्रसवे जिन चक्री नीचकुले नहीं ॥ इहां मारो आचार धरुं उत्तम कुले, हरणीगमेषी देव तेडावे एटले ॥ २ ॥ कहे माहणकुंड नयरे जाइ उचित करो, देवानंदा कुखेथी प्रभुने संहरो ॥ नयर क्षत्रीयकुंड राय सिद्धारथ

१ (१०८.)

गेहिनी, त्रिशला नामे धरो प्रभु कुखे तेहनो ॥ ३ ॥ त्रीशला गर्भ लइने धरो माहणो उरे, ब्यासी रात वसीने कहुं तीम सु. रकरे ॥ माहणी देखे सुपन जाणे तीशला हर्यां, तीशला सुपन लहे तव चौद अलंकर्यां ॥ ४ ॥ हाथी वृषभ सिंह लक्ष्मी मांला सुंदरुं, शशी रवि ध्वज कुंभ पद्म सरोवर सागरुं ॥ देव विमान रयण पुंज अग्नि विमले, एहवे देखे त्रिशला एह के पीउने विनवे ॥ ५ ॥ हरख्यो राय सुपन पाठक तेडावियां, राजभोग सुतफल सुणी तेह वधावियां ॥ त्रिशलाराणी विधिस्युं गर्भसुखे हवे, माय तणे हित हेत के प्रभु निश्चल रहे ॥ ६ ॥ माय धरे दुःख जोर विलाप घणुं करे, कहे में कीधां पाप अघोर भवांतरे ॥ गर्भ हर्यो मुज केण हवे केम पामीए, दुखनो कारण जाणी विचार्युं स्वामीये ॥ ७ ॥ अहो अहो मोह विटंबण जालम[1] जगतमे, अणदीठे दुःख एवडो उपायो पलकमें ॥ ताम अभिग्रह धारे प्रभु ते कहुं, मात पिता जीवतां संयम नवि ग्रहुं ॥ ८ ॥ करुणा आणी अंग हलाव्युं जिनपति, बोली त्रिशला मात हिये घणुं हिसती ॥ अहो मुज जाग्यां भाग्य गर्भ मुज सलसल्यो, सेव्या श्री जिनधर्म के सुरतरु जिम फल्यो ॥ ९ ॥ सखीय कहे शीखामण स्वामीनी सांभलो, हळवे हळवे बोलो हसो रंगे चलो ॥ इम आनंदे विचरंता डोहला पुरते, नव महिनाने साडासात दिवस थते ॥ १० ॥ चैत्र तणी सुद तेरस नक्षत्र उत्तरा, जोगे जन्म्या वीर के तव वीकसी धरा[2] ॥ त्रिभुवन थयो उद्योत के रंग वधामणां, सोना रुपानी वृष्टि

---

१. आकरी. २. पृथ्वि अंकुरित थइ.

करे घेर सुर घणा ॥ ११ ॥ आवी छप्पन कुमारी के ओछव प्रभु तणे, चल्युंरे सिंहासन इंद्रके घंटा रणझणे ॥ मळी सुरनां कोड के सुरवर आवीयो, पंच रूप करी प्रभुने सुरगिरि लावीओ ॥ १२ ॥ एक कोड साठ लाख कलश जलथुं भर्या, किम सेहेस्ये लघु वीर के इंद्र संशय धर्या ॥ प्रभु अंगुठे मेरु चांप्यो अति घड धडे, गडगडे पृथ्वी लोक जगतंना लडथडे ॥ १३ ॥ अनत बळी प्रभु जाणी इंद्रे खमावीओ, चार वृषभनां रूप करी जल नामीओ ॥ पूजी अरचो प्रभुने माय पास धरे, धरी अंगुठे अमृत गया नंदीश्वर ॥ १४ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ देशी हमचडीनी ॥

॥ करी महोच्छव सिद्धारथ भूप, नाम धरे वर्धमान ॥ दोज दीन वाधे प्रभु सुरतरु जिम, रूप कला असमान रे ॥ हमचडी ॥ ॥ १ ॥ एक दिन प्रभुजो रमवा कारण, पुर बाहिर जव जावे ॥ इंद्र मुखे प्रशंसा सुणी तिहां, मिथ्यात्वो सुर आवेरे ॥ हमचडो ॥ २ ॥ अहि रूपे विटाणो तरुस्युं, प्रभु नांख्यो उछाळी ॥ साल ताडनुं रूप कर्युं तब, मुठे नांख्यो वाळी रे ॥ हमचडी ॥ ३ ॥ पाये लागीने ते सुर खामे, नाम धरे महावीर ॥ जेवो इंद्रे वखाण्यो स्वामी, तेवो साहस धीररे ॥ हमचडी ॥ ४ ॥ मात पीता निशाळे मुके, आठ वरसना जाणी ॥ इंद्रतणा तिहां संशय टाळ्या नव व्याकरण वखाणीरे ॥ हमचडी ॥ ५ ॥ अनुक्रमे यौवन पाम्या प्रभुजी, वर्या यशोदा राणी ॥ अट्ठावीशे वरसे प्रभुनां, मात पिता निर्वाणीरे ॥ हमचडी ॥ ६ ॥ दोय वरस भाइने आग्रह, प्रभु घर-

वासे वसीया ॥ धर्म पंथ देखाडो इम कहे, लोकांतिक उल्लसीयारे ॥ हमचडी ॥ ७ ॥ एक कोड आठ लाख सोनइया, दोन दोन प्रभुजी आपे ॥ इम संवच्छरी दान दइने, जगनां दारिद्रय कापेरे ॥ हमचडो ॥ ८ ॥ छांडयां राज अंतेउर प्रभुजी, भाइए अनुमति दीधी ॥ मृगशीर वद दशमी उत्तराये, वीरे दीक्षा लीधीरे ॥ हमचडी ॥ ९ ॥ चउनाणी तिण दीनथी प्रभुजी, वरस दिवस झाझेरे॥ चिवर अर्ध ब्राह्मणने दीधुं, खंड खंड बे फेरा रे ॥ हमचडी॥१०॥ घोर परिसह साढा बारे, वरस जे जे सहीया ॥ घोर अभिग्रह जे जे धरिया, ते नवि जाये कहीयारे ॥ हमचडी ॥ ११ ॥ सूलपाणीने संगमदेवे, चंडकोसी गोसाले ॥ दीधुं दुखने [1]पायस रांधी, पग उपर गोवालेरे ॥ हमचडी ॥ १२ ॥ काने गोपे खीला मार्या काढतां मुकी राडो ॥ जे सांभलतां त्रिभुवन कंप्या, पर्वत शिला फाटीरे ॥ हमचडी ॥ १३ ॥ ते तें दुष्ट सहुं उधरीया, प्रभुजी पर उपगारी ॥ अडद तणा बाकुल लइने, चंदन बाला तारीरे ॥ हमचडी ॥ १४ ॥ दोय छ मासी नव चउ मासी, अढी मासी त्रणमासी ॥ दोढ मासी बे बे कीधां, छ कीधां बे मासीरे ॥ हमचडो ॥ १५ ॥ बार मासने पख बोहोतेर, छठ बसें ओगणत्रीस वखाणुं ॥ बार अठम भद्रादि प्रतिमा, दीन दोइ चार दश जाणुंरे ॥हमचडी॥ १६ ॥ इम तप कीधां बारे वरसे, वीण पाणी उल्लासे ॥ तेमां पारणां प्रभुजीए कीधां, त्रणसें ओगणपच्चासरे ॥ हमचडो ॥ १७॥ कर्म खपावी वैसाखमासे, सुद दशमी शुभ जाण ॥ उत्तरा योग

---

1 खीर

शालीदृस सदै, पाम्या केवल नाणरे ॥ हमचडी ॥ १८ ॥ इंद्रभूति आदि प्रतिबोध्या, गणधर पदवी दीधी ॥ साधु साधवो श्रावक श्राविका, संघ स्थापना कीधीरे ॥ हमचडी ॥ १९ ॥ चउद सहस अणगार साधवी, सहस छत्रीस कहोजे ॥ एक लाखने सहस गुण[१] सहि, श्रावक शुद्ध कहीजेरे ॥ हमचडो ॥ २० ॥ तीन लाख अढार सहस वली, श्राविका संख्या जाणी ॥ त्रणसें चौद पूर्वधारी, तेरसे ओही नाणीरे ॥ हमचडी ॥ २१ ॥ सात सयां ते केवलनाणी, लब्धिधारी पण तेता ॥ विपुल मतिया पांचसे कहीया, चारसे वादी जेतारे[२] ॥ हमचडो ॥ २२ ॥ सातसे अंतेवासी सीध्या साधवी चौदसें सार ॥ दीन दीन तेज सवाये दीपे ए, प्रभुजीनो परिवाररे ॥ हमचडी ॥ २३ ॥ त्रीस वरस घरवासे वसीया, बार वरस छद्मस्थे ॥ तोस वरस केवल बेंतालीस, वरस समणा[३] मध्येरे ॥ हमचडी ॥ २४ ॥ वरस बहोतेर केरु आयु, वीर जिणंदनुं जाणो ॥ दीवाली दीन स्वाती नक्षेत्रे, प्रभुजीनो निरवाणरे ॥ हमचडी ॥ २५ ॥ पंचकल्याणक एम बखाण्या, प्रभुजीना उल्लासे ॥ संघ तणे आग्रह हरख भरीने, सुरत रही चोमासुंरे ॥ हमचडो ॥ २६ ॥

॥ कलश ॥ इम चरम जिनवर, सयल सुखकर, थुण्यो अति उलट धरी ॥ अषाड उज्जवल पंचमी दिन, संवत सतर ओहोतरे ॥ भाद्रवा शुद पडवा तणे दीन, रविवारे उलट भरी ॥ विमल विजय उवझाय पयपंकज, भ्रमर सम शुभ शीष्य ए ॥ रामविजय जिनवरु

१ ओगणसाठ २ वादमां जीत मेळवनार ३ चारीत्र

आमे, लहे अधिक जगीसए ॥ २७ ॥ इति श्री वीर जिन स्तवन ॥

॥ अथ श्री दान शीयल तप भावनुं चोढालीयुं ॥

॥ दुहा ॥ प्रथम जिणेसर पाय नमी, पामी सुगुरु प्रसाद ॥ दानशीयल तप भावना, बोलीश हुं संवाद ॥ १ ॥ वीर जिणंद समोसर्या, राजग्रही उद्यान ॥ समवसरण देवे रच्युं, बेठा श्री वर्द्धमान ॥ २ ॥ बेठी बारे परखदा, सुणवा जिनवर वाण ॥ दान कहे प्रभु हुं वडो, मुजने प्रथम वखाण ॥ ३ ॥ सांभलजो सहु को तुमे, कुण छे मुज समान ॥ अरिहंत दीक्षा अवसरे, आपे पेहेलुं दान ॥ ४ ॥ प्रथम पोहोर दातारनो, लीये सहुं कोइ नाम ॥ दोधाना देवल चडे, सीझे वंछीत काम ॥ ५ ॥ तीर्थंकरने पारणे, कुण करे मुज होड ॥ वृष्टि करुं सोवन तणी, साढी बारह करोड ॥ ६ ॥ हुं जग सघलो वश करुं, मुज मोटी छे वात ॥ कुण कुण दान थकी तर्या, ते सुणज्यो अवदात ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ धन्य सार्थवाह साधुने, दीधुं घृतनुं दान ॥ ललना ॥ तीर्थंकर पदमे दीयो, तिणे मुजने अभिमान ॥ ललना ॥ १ ॥ दान कहे जग हुं वडो, मुज सरीखो नहि कोइ ॥ ललना ॥ ऋद्धि समृद्धि सुख संपजे, दाने दोलत होय ॥ ललना ॥ दा० ॥ २ ॥ सुमुख नामे गाथापति, पडिलाभ्या अणगार ॥ ललना ॥ कुमार सुबाहु सुख लहे, ते तो मुज उपगार ॥ ललना ॥ दा० ॥ ३ ॥ पांचसे मुनिने पारणुं, देतो वोहोरी आण ॥ ललना ॥ भरत थयो चक्रवर्ति भलो, ते पण मुज फल जाण

॥ ललना ॥ दा० ॥ ४ ॥ मासखमणने पारणे, पडिलाभ्यो ऋषिराय ॥ ललना ॥ शालिभद्र सुख भोगवे, दान तणो सुपसाय ललना ॥ दा० ॥ ५ ॥ आप्या अडदना बाकला, उत्तम पात्र विशेष ॥ ललना ॥ मूलदेव राजा थयो, दान तणो फल देख ॥ ॥ ललना ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रथम जिणेसर पारणे, श्री श्रेयांस कुमार ॥ ललना ॥ शेलडी रस वोहोरावीयो, पाम्यो भवनो पार ॥ ललना ॥ दा० ॥ ७ ॥ चंदनबाला बाकुला, पडिलाभ्या महावीर ॥ ललना ॥ पंच दिव्य प्रगट थया, सुंदर रुप शरीर ॥ ललना ॥ दा० ॥ ८ ॥ पूर्व भव पारेवडुं, शरणे राख्युं सुर ॥ ललना ॥ तीर्थंकर चक्रवर्ती पणे, प्रगट्यो पुण्य पडुर ॥ ललना ॥ ॥ दा० ॥ ९ ॥ गज भवे ससलो राखीयो, करुणा कीधी सार ॥ ॥ ललना ॥ श्रेणीकने घरे अवतर्यो, अंगज मेघकुमार ॥ ललना ॥ दा० ॥ १० ॥ इम अनेकमें उद्धर्या, कहेतां नावे पार ॥ ललना ॥ समय सुंदर प्रभु वीरजी, पेहेलो मुज अधिकार ॥ ललना ॥ दा० ॥ ११ ॥

॥ दुहा ॥ शियल कहे सुण दानतुं, कीशुं करे अहंकार ॥ आडंबर आठे पहोर, याचकशुं व्यवहार ॥ १ ॥ अतराय वली वाहरे, भोग कर्म संसार ॥ जिनवर कर नीचो करे, तुजने पडयो धिकार ॥२॥ गर्व म कररे दान तुं, मुज पुठे सहुं कोय ॥ चाकर चाले आगले, तो शुं राजा होय ॥ ३ ॥ जिन मंदिर सोना तणुं, नवुं निपावे कोय ॥ सोवन कोडि दान दे, शियल समो नहि कोय

॥ ४ ॥ शियले संकट सवि टले, शियले सुजस सोभाग्य ॥ शियले सुर सांनिध्य करे, शियले वडो वैराग्य ॥ ५ ॥ शियले सर्प न आभडे, शियले शीतल आग ॥ शियले अरि करी केसरी, भय जाये सहुं भाग ॥ ६ ॥ जन्म मरणना दुःख थकी, में छोडाव्या अनेक ॥ नाम कहुं हवे तेहना, सांभलजो सुविवेक ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ पास जिणंद जुहारीए ॥ ए देशी ॥

॥ शियल कहे जग हुं वडो, मुज वात सुणो अति मीठोरे ॥

लालच लागे लोकने, में दान तणी वात दीठीरे ॥ शि० ॥ १ ॥ कलह कारण जग जाणीए, वली विरती नही पण कोइरे ॥ ते नारद में सिझव्यो, मुज जुओ ए अधिकाइरे ॥ शि० ॥ २ ॥ बांहे पहेर्यां बेरखा, शंख राजाए दुषण दीधोरे ॥ काप्या हाथ कलावती, पण में नव पल्लव कीधारे ॥ शि० ॥ ३ ॥ रावण घर सीता रही, रामचंद्र घर आणीरे ॥ सीता कलंक उतारीयो, में पावक[१] कीधो पाणीरे ॥ शि० ॥ ४ ॥ चंपा बार उघाडीया, वली चालणीए काढया नीरोरे ॥ सती सुभद्रा जस थयो, ते में तस कीधो भोरोरे ॥ शि० ॥५॥ राजा मारण मांडीयो, राणी अभयाए दुषण दाख्योरे ॥ सुली सिंहासन मे कीधुं, मे शेठ सुदर्शन राख्योरे ॥ शि० ॥ ६ ॥ शील सन्नाह मंत्रीसरे, आवतां अरिदल थंभ्यारे तिहां पण सांनिध्य मे करी, वली धर्म काज आरंभ्यांरे ॥ शि०॥ ॥ ७ ॥ पेरण चोर प्रगट कीया, मे अष्टोत्तर सो वाररे ॥ पांडव-

१. अग्नि.

नारी द्रौपदी, मे राखी बाकी मर्यादोरे ॥ शि० ॥ ८ ॥ वली चंदनबालीका, वली शीयलवंती दमयंतीरे ॥ चेडानी साते सुता, राजीमति सुंदर कुंतीरे ॥ शि० ॥ ९ ॥ इत्यादिकमे उधर्यो, नर- नारी केरा वृंदोरे ॥ समय सुंदर प्रभु वीरजी, पेहेलो मुज आणं- दोरे ॥ शि० ॥ १० ॥

॥ दुहा ॥ तप बोल्युं त्रटकी करी, दाने तुं अवहील ॥ पण मुज आगळ तुं कीशो, सांभळरे तुं शील ॥ १ ॥ सरशां भोजन मे तज्यां, न गमे मीठा नाद ॥ देह तणी शोभा तजी, तुझमे को- श्यो सवाद ॥ २ ॥ नारी थकी डरतो रहे, कायर कीसो वखाण ॥ कुड कपट बहु केळवीं, जीम तिम राखे प्राण ॥ ३॥ को विरलो तुज आदरे, छोडे सहुं संसार ॥ आप एक तुं भांजतां, बीजा भांजे चार ॥ ४ ॥ कर्म निकाचित तोडवुं, भांजुं भव भडभोग ॥ अरि- हंत मुजने आदरे, वरस छमासी सीम ॥ ५ ॥ रुचक नंदीसर पर्वते, मुज लब्धे मुनि जाय ॥ चैत्य जुहारे शाश्वता, आणंद अंग न माय ॥ ६ ॥ मोटो जोयण लाखनो, लघु कुंथु आकार ॥ हय गय रथ पायक तणा, रुप करे अणगार ॥ ७ ॥ मुज कर फरसे उपसमे, कुष्टादिकना रोग ॥ लब्धि अठावीस उपजे, उत्तम तप संयोग ॥ ८ ॥ जे मे तार्या ते कहुं, सुणज्यो मन उल्लास ॥ चम- त्कार चित्त पामशो, देजो मुज शाबास ॥ ९ ॥

॥ ढाळ ॥ ३ ॥ वणझलनी ॥ ए देशी ॥

॥ दृढ प्रहारी अति पापीयो, हत्या कोधी चारहो सुंदर ॥

१ लाज-मर्यादा.

ते मे तीण भव उद्धर्यो, मुकयो मोक्ष मोझार हो ॥ सुंदर ॥ १ ॥ तप सरिखुं जग को नहि, तप करे कर्मनुं [1]सुडहो सुंदर ॥ तप करवुं अति दोहिलुं, तप मांहे नहि को कुड हो सुन्दर ॥ त० ॥ २ ॥ लाख माणस नित मारतो, करतो पाप अघोर हो सुंदर ॥ अर्जुन मालि मे उद्धर्यो, छेद्या कर्म कठोर हो सुंदर ॥ त० ॥ ३ ॥ नंदिषेणने मे कीयो, स्त्री वल्लभ वसुदेव हो सुंदर ॥ बोहोतेर सहस अंतेउरी, सुख भोगवे नितमेव हो सुंदर ॥ त० ॥ ४ ॥ रुप कुरुप कालो घणो, हरिकेशी चंडाल हो सुंदर ॥ सुरनर क्रोड सेवा करे, ते मे कीधी चाल हो सुंदर ॥ त० ॥ ५ ॥ विष्णुकुमार लब्धिए कीयो, लाख जोजननो रुप हो सुंदर ॥ श्री संघ केरे कारणे, ए मुज शक्ति अनुप हो सुंदर ॥ त० ॥ ६ ॥ अष्टापद गौतम चढया वांद्या जिन चोवीस हो सुंदर ॥ तापस पण प्रतिबुझव्या, तिणे मुज अधिक जगीस हो सुंदर ॥ त० ॥ ७ ॥ चौद सहस अणगारमे, श्री धन्नो अणगार हो सुंदर ॥ वीर जिणंद वखाणीयो, ए पण मुज अधिकार हो सुंदर ॥ त० ॥ ८ ॥ कृष्ण नरेसर आगळे, दुःकरकारक देव हो सुंदर ॥ ढंढण नेमि प्रशंसीयो, मुज महिमा सवि तेह हो सुंदर त० ॥ ९ ॥ नंदिषेण वहोरण गयो, गणिका कीधी हास्य हो सुंदर ॥ वृष्टि करी सोवन्न तणी, मे तस पुरी आश हो सुंदर ॥ त० ॥ १० ॥ इम बलभद्र प्रमुख बहु, तार्या तपस्वी जीव हो सुंदर ॥ समय सुंदर प्रभु वीरजी, पहेलो मुज प्रभाव हो सुंदर ॥ त० ॥ ११ ॥

---

१ कर्मक्षय.

॥ दुहा ॥ भाव कहे तप तुं कोस्युं, छेडयो करे कषाय ॥ पूर्व कोडि तप जो तपे, क्षणमें खेरु थाय ॥ १ ॥ खंधक आचारज मत्ये, मे बाळयो सवि देश ॥ अशुभ नियाणुं तुं करे, क्षमा नहीं लवलेश ॥ २ ॥ द्वैपायन ऋषि दुहव्यो, सांब प्रद्युम्नने साहि ॥ ते तप क्रोधे करी तीहां, दीधो द्वारिका दाह ॥ ३ ॥ दान शियल तप सांभळो, म करो जुठ गुमान ॥ लोक सउको साख दे, श्रमें भाव प्रधान ॥ ४ ॥ आप नपुंसक छो त्रणे, घे व्याकरण ते साख ॥ काम सरे नहीं कोइनुं, भाव भणे मुज पाख[1] ॥ ५ ॥ रसविण कनक न नीपजे, जलविण नहीं तरु वृद्धि ॥ रसवतो रस नहीं लवण विना, तिम मुज विग नहीं सिद्धि ॥ ६ ॥ मंत्र यंत्र मणि औषधी, देव धर्म गुरु सेव ॥ भाव विना ते सवि वृथा, भाव फले नित्यमेव ॥ ७ ॥ दान शियल तप जे तुमे, निज निज कह्यां वृत्तान्त ॥ तीहां जो भाव नवि होत तो, कोइ सिद्धि नवि हुंत ॥ ८ ॥ भाव कहे में एकले, तार्यां बहु नर नार ॥ सावधान थइ सांभलो, कहुं निरधार ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ कपुर होवे अति उजलुंरे ॥ ए देशी ॥

॥ [2]काननमे काउसग रह्यारे, प्रसन्नचंद्र ऋषिराय ॥ ते में कीधो केवलीरे, तत्क्षण कर्म खपाय ॥ १ ॥ सोभागी सुंदर भाव वडो संसार, एतो बीजो मुज परिवार ॥ सो० ॥ दानादिक विण एकलोरे, पहोचाडुं भव पार ॥ सो० ॥ २ ॥ वंश उपर चढी खेलतोरे, इलाची पुत्र अपार ॥ केवलज्ञानी में कीयोरे, प्रतिबोध्यो

---

१ मा०।वगर २ वनमां.

परिवार ॥ सो० ॥ ३ ॥ भुख तृषा खमी अती घणीरे, करतो क्रूर[1] आहार ॥ केवल महिमा सुर करेरे, कूरगडु अणगार ॥ सो० ॥ ४ ॥ लाभथी लोभ वधे घणोरे, आण्यो मन वैराग्य ॥ कपिल थयो ते मुनि केवलीरे, ते मुजने सौभाग्य ॥ सो० ॥ ५ ॥ अ-र्निका सुत गच्छनो धणीरे, क्षीण जंघा वली जाण ॥ कीधो अंत-गड केवलीरे, गंगाजल गुणखाण ॥ सो० ॥ ६ ॥ पन्नरसें तापस भणीरे, दीधी गौतमे दीक्ष ॥ ततक्षण कीधा केवलीरे, जो मुज मानो शीख ॥ सो० ॥ ७ ॥ पालक पापीए पीलीआरे, खंधक सूरिना शिष्य ॥ जन्म मरणथी छोडव्यारे, आपे मुज आशीष ॥ सो० ॥ ८ ॥ चंद्ररुद्र निशि चालतांरे, दीधा दंड प्रहार ॥ नव दिक्षित थयो केवलीरे, ते गुरु पण तेणीवार ॥ सो० ॥ ९ ॥ धन रथ कारक साधुनेरे, पडिलाभ्यो उल्लास ॥ मृगलो भावना भावतांरे, पोहोतो स्वर्ग आवास ॥ सो० ॥ १० ॥ निज अपराध खमावतीरे, मुकयो मनथी मान । मृगावतीने में दीयोरे, निर्मल केवल ज्ञान ॥ सो० ॥ ११ ॥ मरुदेवी गज उपरे रे, पेखी पुत्रनी ऋद्धि ॥ मुजने मनमांहे धयेंरे, ततक्षण पामी सिद्धि ॥ सो० ॥ ॥ १२ ॥ वीर वंदण चल्यो मारगेरे, चांप्यो चपल तुरंग ॥ दर्दुर नामे देवतारे, तेह थयो मुज संग ॥ सो० ॥ १३ ॥ प्रभु पाय पूजण निसरीरे, दुर्गला नामे नार ॥ कालधर्म वीचमां करीरे, पोहोती स्वर्ग मोजार ॥ सो० ॥ १४ ॥ कायानी शोभा कारमीरे, रूप कीस्यो अभिमान ॥भरत अरिसा भुवनमांरे, पाम्या केवलज्ञान

१ भात.

॥ सो० ॥ १५ ॥ अषाढभूति कलाविलोरे, मगटयो भरत स्वरूप ॥ नाटक करतां पामीयोरे, केवल ज्ञान अनुप ॥ सो० ॥ १६ ॥ खिसा दिन काउसगे रह्योरे, गजसुकुमाल मसाण ॥ सोमिल शिर्ष[1] प्रजालियोरे, सिद्धि गयो शुभ जाण ॥ सो० ॥ १७ ॥ गुणसागर थयो केवलोरे, सांभळी पृथ्वीचंद ॥ पोते केवल पामीयोरे, सेवा करे सुर इंद्र ॥ सो० ॥ १८ ॥ एम अनेक में उद्धर्योरे, मूकया शिवपुर वास ॥ समय सुंदर प्रभु वीरजीरे, मुजने प्रथम प्रकाश ॥ ॥ सो० ॥ १९ ॥

॥ दुहा ॥ वीर कहे तुमे सांभळो, दान शियल तप भाव ॥ निंदा छे अति पापीणी, धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥ परनिंदा करतां थकां, पापे पींड भराय ॥ वेढ राढ वाधे घणो, दुर्गति प्राणो जाय ॥ २ ॥ निंदक सरीखो पापीयो, मुंडो कोइ न दीठ, वली चंडाल समो कह्यो, निंदक मूर्ख अदीठ ॥ ३ ॥ आप प्रशंसा आपणी, करता इंद्र नरिंद्र ॥ लघुता पामे लोकमां, नासे निज गुण वृंद ॥ ४ ॥ को कहे नोम करो तुमे, निंदाने अहंकार ॥ आप आपणे ठामे रहो, सहूको भलो संसार ॥ ५ ॥ तोपण अधिको भाव छे, एकाकी सुसमर्थ ॥ दान शियल तप त्रण भला, भाव विना अकयत्थ[2] ॥ ६ ॥ अंजन आंखे आंजतां, अधिको आणो रेख ॥ रत्नमांहे तत्र काढतां, अधिको भाव विशेष ॥ ७ ॥ भगवंत हुड मंडन भणी, चारे सरीखा गणंत ॥ च्यार करी मुख आपणां, चतुर्विध धर्म करंत ॥ ८ ॥

---

१ मस्तक (सोमिल नामना ससराए) प्रजाल्यु. २ अफळ.

॥ ढाल ॥ ५ ॥ मनोहर पूछे मिकारे ॥ ए देशी ॥

॥ वीर जिणेसर इम भणेरे, बेठी परखदा बार ॥ धर्म करो तुमे प्राणीयारे, जिम पामो भव पाररे ॥ धर्म हैये धरो ॥ १ ॥ धर्मना चार प्रकाररे ॥ भवियण सांभलो ॥ धर्म मुक्ति सुखकारोरे ॥ ध० ॥ ए आंकणी ॥ धर्म थकी धन संपजेरे, धर्मथी शिवसुख होय ॥ धर्म थकी आ[1]रति टलेरे, धर्म समो नहीं कोयरे ॥ ध० ॥ २ ॥ दुर्गति पडतां प्राणीयारे, राखे श्री जिन धर्म ॥ कुटुंब सहुको कारमोरे, मत भुलो भव भर्मरे ॥ ध० ॥ ३ ॥ जीव जोके सुखीयो थयोरे, वली होसे छेह जेह ॥ ते जिनवरना धर्मथीरे, मत कोइ करो संदेहरे ॥ ध० ॥ ४ ॥ सोलसे छासठमे समेरे, सांगानेर मझार ॥ पद्मप्रभु सुपसाउलेरे, एह भण्यो अधिकारोरे ॥ ध० ॥ ५ ॥ सोहम स्वामी परंपरारे, खरतर गच्छ कुलचंद ॥ युगप्रधान जग परगडोरे, श्री जिनचंद्र सुरिंदोरे ॥ ध० ॥ ६ ॥ तास शिष्य अति दीपतोरे, विनयवंत जसवंत ॥ आचारज चढति कलारे, श्री जिनसिंह सूरि महंतोरे ॥ ध० ॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य श्रीपूज्यनारे, सकलचंद तस शिष्य ॥ समय सुंदर वाचक भणेरे, संघ सदा सुजगीसोरे ॥ ध० ॥८॥ दान शियल तप भावनारे, सरस रच्यो संवाद ॥ भणतां गणतां भावशुंरे, ऋद्धि समृद्धि सुप्रसादोरे ॥ धर्म हीए धरो ॥ ९ ॥ इति दान शीयल तपनुं चोढालीयुं संपूर्ण. ॥

[1] पीडा.

॥ वर्धमान तपनुं स्तवन ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ नवपद धरज्यो ध्यान, भविक तमे नवपद धरज्यो ध्यान ॥ ए देशी ॥

॥ तप पद धरज्यो ध्यान, भविक तमे, नामे श्री वर्धमान ॥ दिन दिन चढत वान, भविक तमे, सेवो थइ सावधान ॥ भ० ॥ ॥ १ ॥ प्रथम ओली एम पालीनेरे, बोजी ए आंबिल दोय० ॥ भ० ॥ त्रीजी त्रण चोथी चार छेरे, उपवास अंतरे हयो ॥ भ० ॥ ॥ २ ॥ एम आंबिल सो वृत्तनीरे, सोमी ओली थाय ॥ भ० ॥ शक्ति अभावे आंतरेरे, विश्रामे पहोंचाय ॥ भ० ॥ ३ ॥ चौद वरस त्रण मासनीरे, उपर संख्या वोश ॥ भ० ॥ काल मान ए जाणवुंरे, कहे वीर जगदोश ॥ भ० ॥ ४ ॥ अंतगड अंगे वरणव्युं-रे, आचारदिनकर लेख ॥ भ० ॥ ग्रंथातरथी जाणवुंरे, ए तपनुं उल्लेख ॥ भ० ॥ ५ ॥ पांच हजार पचाश छेरे, आंबिल सख्या सर्व ॥ भ० ॥ संख्या सो उपवासनीरे, तप ध्याने गाले गर्व ॥ भ० ॥ ६ ॥ महासेन कृष्णासाधवोरे, वर्द्धमान तप कोध ॥ भ० ॥ अंतगड केवल पामीनेरे, अजरामर पद लोध ॥ भ० ॥ ७ ॥ श्री-चंदकेवलीए तप सेविओरे, पाम्या पद निर्वाण ॥ भ० ॥ धर्म रत्न पद पामवारे, ए उत्तम अनुमान ॥ भ० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ जेम जेम ए गिरि भेटोएरे, तेम तेम पाप पलाय सलुणा ॥ ए देशी ॥

॥ जिम जिम ए तप कीजीएरे, तिम तिम भवपरिपाक सलु-

णा ॥ निकट भवि जीव जाणवो रे ॥ एम गीतार्थ साख सलुणां ॥ ॥ जिम० ॥ १ ॥ आंबिल तप विधि सांभलोरे, वर्द्धमान गुणखाण सलुणा ॥ पाप मलक्षय कारणेरे, कतक फल उपमान सलुणा ॥ ॥ जिम० ॥ २ ॥ शुभ महुर्त्त शुभ योगमांरे, सद्गुरु आदि योग सलुणा ॥ आंबिल तप पद उचरी रे, आराधो अनुयोग सलुणा ॥ जिम० ॥ ३ ॥ गुरु मुख आंबिल उचरीरे, पुजी प्रतिमा सार सलुणा ॥ नवपदनी पूजा भणीरे, मागो पद अणहार सलुणा ॥ जिम० ॥ ४ ॥ खटरस भोजन त्यागवारे, भूमि संथारो थाय सलुणा ॥ ब्रह्मचर्यादि पालवारे, आरंभ जयणा थाय सलुणा ॥ जिम० ॥ ५ ॥ तप पदनी आराधनारे. काउसग्ग लोगस्स बार सलुणा ॥ खमासमणां बार आपवारे, गणणु दोय हजार सलुणा ॥ जिम० ॥ ६ ॥ अथवा सिद्धपद आश्रयिरे, काउसग्ग लोगस्स आठ सलुणा ॥ खमासमणां आठ जाणवारे, नमो सिद्धाणं पाठ सलुणा ॥ जिम० ॥ ७ ॥ बीजे दीन उपवासमारे, पौषधादि व्रत-युक्त सलुणा ॥ पडिकमणादि क्रिया करीरे, भावना परिमल युक्त सलुणा ॥ जिम० ॥ ८ ॥ एम आरधतां भावथीरे, विधि पूर्वक धरी प्रेम सलुणा ॥ लावो ध्यावो भविजनारे, धर्म रत्न पद एम सलुणा ॥ जिम० ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ नरभव नयर सोहामणुं वणजारारे ॥ ए देशी ॥

* ॥ जिन धर्म नंदन वन भलो, राज हंसारे. शीतल छाया

---

* पहेली गाथामां एक चरण (बीजु) त्रुटे छे.

सेवोने, राज हंसारे ॥ थजो तु था सावधान अहो राज हंसारे ॥ १ ॥ अमृत फल आस्वादीने राज हंसारे, काढ अनादिनी भुख ॥ अहो० ॥ भव परिभ्रमण भमतु ॥ राज० ॥ अवसर पामी न चुक ॥ अहो० ॥ २ ॥ शत शाखाथी शोभतो ॥ राज० ॥ पांच हजार पचास ॥ अहोराजहंसारे, आंबिल फुले अलंकयों ॥ राज०॥ अक्षय पद फल तास ॥ अहो ॥ ३ ॥ विमलेसर सुर सांनिध्ये ॥ ॥ राज० ॥ तुं निर्भय थयो आज ॥ अहो० ॥ कृत्य कृत्य थइ आगतुं ॥ राज० ॥ अकल स्वरुपो राज ॥ अहो० ॥ ४ ॥ विग्रह गति वोसरावीने ॥ राज० ॥ लोकाग्रे करवास ॥ अहो० ॥ धन्य तुं कृत्य पुण्य तुं ॥ राज० ॥ सिद्ध स्वरुप प्रकाश ॥ अहो० ॥ ५ ॥ तप चिंतामणी काउसग्गे ॥ राज० ॥ वीर तपो धन ध्याने ॥ अहो० ॥ महासेन कृष्णा साध्वी ॥ राज० ॥ श्रीचंद भवजल नाव ॥ अहो० ॥ ६ ॥ सूरिश्री जगचंद्रजी ॥ राज० ॥ हीरविजय गुरु हीर ॥ अहो० ॥ मल्लवादी प्रभु कुरगडु ॥ राज० ॥ आचार्य सुहस्ती वीर ॥ अहो० ॥ ७ ॥ पारंगत तपमकथिना ॥ राज० ॥ जे जे थया अणगार ॥ अहो० ॥ जोस्या जीव्हा स्वादने ॥राज०॥ धन्य धन्य तस अवतार ॥ अहो० ॥ ८ ॥ एक आंबिले तुटशे ॥ ॥ राज० ॥ एक हजार दस क्रोड ॥ अहो० ॥ दस हजार क्रोड वरसनुं ॥ राज० ॥ उपवासे नरक आयुष ॥ अहो राज० ॥ ९ ॥ तप सुदर्शन चक्रथी ॥ राज० ॥ करो कर्मनो नाश ॥ अहो० ॥ धर्म रत्न पद पामवा ॥ राज० ॥ आदरो तप अभ्यास ॥ १० ॥

॥ कलश ॥ तप आराधन धर्मसाधन, वर्द्धमान तप परगडो ॥ मनकामना सहुं पूरवामां, सर्वथा ए सुरघडो ॥ अन्नदानथी शुभध्यानथी, सुमति जीव ए तपस्या करो ॥ श्री विजयधर्म सूरीन्द्र सेवक, रत्नविजय कहे शीव वरो ॥ १ ॥ इति वर्द्धमान तप स्तवन सम्पूर्ण. ॥

॥ अथ नवतत्त्वनुं स्तवन प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ सरसतिने प्रणमुं सदा, वरदाता नित्य मेव ॥ मुझ मुख आवी तुं वसे, करुं निरंतर सेव ॥ १ ॥ आदीसर अरिहंत नमुं युगला धर्म निवार ॥ गुरु श्रुत देवी वंदलो, एहिज मुझ आधार ॥ २ ॥ जास तणां पदयुग नमी, वर्णवुं तत्त्वविचार ॥ भवियण एक चित्तें करी, नाम कहुं हितकार ॥ ३ ॥ जीव अजीव पुण्य पाप ने, संवर आश्रय जेह ॥ निर्ज्जरा बंध ने मोक्ष जे, जिनजीयें भांख्या एह ॥ ४ ॥ एहना भेद छे नव नवा, आगममां अनुरूप ॥ गुरुमुखथी ते सांभली, भांखुं एह स्वरूप ॥ ५ ॥

ढाल पहेली ॥ शोलमा श्री जिनराज, ओलंग ॥

॥ सुणो अम तणी ललना ॥ ए देशी ॥

॥ जीव तत्त्वना भेद ते, चउदें जाणीयें ॥ ल० ॥ चउद अजीवना भेद, ते मनमां आणीयें ॥ ल० ॥ भेद बेंताळीश पुण्यना भवियण चित्त धरो ॥ ल० ॥ ब्यासी भेद ते पापना, मनथी संवरो

॥ ल० ॥ १ ॥ आश्रवना बहेंतालीस, भेद ते भाविये ॥ ल० ॥ संवरना सत्तावन, चित्तमां लावीयें ॥ ल० ॥ बार भेद छे निर्ज्जरा, कर्म ते निर्ज्जरे ॥ ल० ॥ जेहथी प्राणी मोक्ष,रमणी सुखने वरे ॥ ल० ॥ २ ॥ बंध तत्त्वना चार, ते बंधने तोडीये ॥ ल० ॥ मोक्ष तत्त्वना नव, ते सुखथी जोडीयें ॥ ल० ॥ सर्व मली नव तत्त्वना भेद ते जाणजो ॥ ल० ॥ बशे ने छहोंतेर ते, मनमां आणजो ॥ ॥ ल० ॥ ३ ॥ तेमां अठयाशी अरूपी, भेद ते सुख करू ॥ ल० ॥ एकसो अठयासी रूपी, कहे ते जिनवरू ॥ ल० ॥ डुंगर गुरु ध्यानथी, सुखने अनुसरे ॥ ल० ॥ विवेक कहे भविलोक, ते भव सायर तरे ॥ ते० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥ हवे प्रथम जीव तत्त्वना, भेद कहुं हितकार ॥ विवरीने ते वर्णवुं, एक एक सुखकार ॥ १ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ नदी यमुनाके तीर, उडे ॥

॥ दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥

॥ एक भेदें कह्यो जीव, दुविध भेदें वली ॥ त्रण्य प्रकारें जाण, चउविह कहे केवली ॥ पंच षटविध जीव छे, छए भांखीया ॥ अरिहा जिनवर एह के, मुखथी दाखीया ॥ १ ॥ चेतना लक्षण जीव ते, एक अभेद छे ॥ त्रस अने बीजो स्थावर, इहां नवि खेद छे ॥ स्त्री पुरुष नपुंसक वेद त्रण्ये सही ॥ देव गइ मनुष्य तिर्यंच वली नारक कही ॥ २ ॥ पांच प्रकारें जीव पंचेंद्रीय परखीयें ॥ छ प्रकारें जीव छकायने निरखीयें ॥ इणविध छ भेदें जीव, धारो तुमें

एक मना ॥ हवे आगल दश प्राण कहे त्रिभुवन जिना ॥ ३ ॥ पांच इंद्री त्रण बल, श्वासोच्छ्वास आउखुं ॥ ए दश प्राणोने होय, विवरो कहुं पारिखुं ॥एकेंद्रीने चार प्राण,बेइंद्रोने छ कह्या ॥ तेंइंद्री सात जाणो, चौरिंद्रीयें आठ लह्या ॥ ४ ॥ असन्नो पंचेंद्रो ने नव, संज्ञी दश धारजो ॥ ए विना अवर न होय, संदेह मन वारजो ॥ हवे एकेंद्रिय सूक्षम, बादर दोय छे ॥ पंचेंद्रिय संज्ञी असंज्ञी, दोय भेद जोय छे ॥५ ॥ बेइंद्री तेंइंद्रो एक, चौरिंद्रो जाणजो ॥ ए साते भेद होय के, शुभ मन आणजो ॥ पज्ज अपज्ज ए दोय, चउद भेद जीवना ॥ धारो चित्तमें जेह के, भवि जन एकमना ॥ ६ ॥ आहार शरीरने इंद्रिय, श्वास वचन सही ॥ मननो छठो जाण, एकेंद्रिय चउ कही ॥ बि ति चौरिंद्रिय असन्नो, ने होये पंच ए ॥ षट् सन्नी ने जाणवी, विशेष कहे संच ए ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥ जीव तत्व पूरण थयुं, हवे अजीव विचार ॥ भिन्न भिन्न करोने कहुं, सांभलजो नर नार ॥ १ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ वीरजीने वचनें रे अमृत रस झरे रे ॥ ए देशी ॥

॥ धर्मास्तिकाय खंध देश प्रदेश छे रे, तेम अधर्मास्तिकाय ॥ एहना पण ए त्रण भेदज कह्या रे, एम आकाशना त्रण थाय ॥ भवि तुमें जाणो रे अजीव तत्वना रे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ ए त्रणना मली नव भेद सुंदरू रे, दशमो भेद छे काळ ॥ खंध देश प्रदेश प्रमाणुओ रे, अजीवना चौद कह्या सुविशाळ ॥ भवि० ॥ २ ॥

धर्मास्ति अधर्मास्ति पुद्गला रे, आकाश काल सुविहाण ॥ ए पांचे अजीव ते जिन कह्या रे, कह्या कह्या त्रिभुवन भाण ॥ भवि० ॥३॥ चलण स्वभाव धर्मास्तिकायमां रे अधर्मास्ति थिर ठाण ॥ अवकाश आपे पुद्गल जीवने रे, हवे पुद्गलना चार विन्नाण ॥ भवि० ॥ ॥ ४ ॥ खंध देश प्रदेश प्रमाणुओ रे, पुद्गलना ए चार भेद ॥ हवे आवलिका भेद तुमें लहो रे, असंख्य समय एक आवलि मेव ॥ ॥ भवि० ॥ ५ ॥ एक कोडीने सडसठ लाख छे रे, उपर सीतोत्तर सहस्सज जाय ॥ बसें ने शोल आवलिका कही रे, एटली आवलिये एक मुहूर्त्त होय ॥ भवि० ॥ ६ ॥ त्रीस मुहूर्त्ते दिवस रात्रि कही रे, पंदर अहोरात्रे एकज पक्ष ॥ बे पक्षे एकमासज भाविये रे, बार मासें एक वर्षज दक्ष ॥ भवि० ॥ ७ ॥ एहवे वरसें हवे पूर्व कहुं रे, सितेर लाख कोडी वरसज भाय ॥ छपन्न सहस्स कोडी वरस मान कहुं रे, पूर्व एटले वरसें थाय ॥ भवि० ॥ ८ ॥ असंख्यात पूर्वं एक पल्य जाणीयें रे, दश कोडा कोडी पल्यें सागर एक ॥ सागर दश कोडाकोडी उत्सर्प्पिणी रे, अवसर्प्पिणी कोडाकोडी दश छेक ॥ भवि० ॥ ९ ॥ वीश कोडाकोडी सागरें काल चक्र छे रे, काल अनंतें पुद्गल परावर्त्त जाण ॥ डुंगर गुरुना पद शुभ ध्यानथी रे, नित्य नित्य विवेक लहे कल्याण ॥ भवि० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥ पुण्य तत्त्व तणा कहुं, भेद बेंतालीश जेह ॥ एकमना थइ सांभलो; आणी अधिको नेह ॥ १ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ साहेबजी श्री विमलाचल ॥

॥ भेटोगें हो लाल ए देशी ॥

॥ बहेंतालीश भेद पुण्य तत्त्वना हो लाल; शाता वेदनी ऊंच गोत्र ॥ साहेबजी ॥ मनुष्यगति मनुष्यानु पूर्वी हो लाल; चार भेद ए युक्त ॥ सा० ॥ पुण्य तत्त्व हवे सांभलो हो लाल ॥ ए आंकणो ॥ १ ॥ साहेबजी सुरदुग पंचेंद्रियपणुं हो लाल; पांच देह मनोहार ॥ सा० ॥ औदारिक वैक्रिय आहारकें हो लाल; अंगोपांगें युक्त धार सा० ॥ पु० ॥ २ ॥ सा० ॥ प्रथम संघयण संस्थानशुं हो लाल; शुभ वरण शुभ गंध ॥ सा० ॥ शुभ रस शुभ स्पर्शने हो लाल; अगुरु लघु अदंभ ॥ सा० ॥ पु० ॥ ३ ॥ सा० ॥ पराघात श्वासोच्छ्वासने हो लाल; लेवाने जेहनी सक्त ॥ सा० ॥ आताप भेद पचवीशमो हो लाल; उद्योत कर्मनी व्यक्त ॥ सा० ॥ ॥ पु० ॥ ४ ॥ सा० ॥ शुभखगई शुभगति करे हो लाल, निर्माण नाम अगर्व ॥ सा० ॥ त्रस दशको दश भेदनो हो लाल, आगलें कहे ते सर्व ॥ सा० ॥ पु० ॥ ५ ॥ सा० ॥ सुर नर तिरि आऊखुं हो लाल, तीर्थंकर नाम कर्म ॥ सा० ॥ हवे त्रस दशको वर्णवुं हो लाल, जेहथी लहे शिव शर्म ॥ सा० ॥ पु० ॥ ६ ॥ ॥ सा० ॥ त्रस बायर पर्याप्ता हो लाल,प्रत्येक स्थिर शुभ नाम ॥ ॥ सा० ॥ सौभाग्य नामकर्मथी हो लाल, जीव लहे शुभ ठाम ॥ ॥ सा० ॥ पु० ॥ ७ ॥ सा० ॥ सुस्वर आदेय जस नामथी हो लाल, जीव लहे सुख नित्य ॥ सा० ॥ डूंगर गुरु पद सेवतां हो

लाल, विवेक लहे जग जीत ॥ सा० ॥ पु० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥ पाप तत्त्वथी दुःख होये, पामे नरक दूवार ॥ ते माटे चेतन तुमें, मनथी एह निवार ॥ १ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ सुरति महीनानी देशी ॥

॥ आवरण पंचने तिम वली, अंतराय छे पंच ॥ पंच निद्रा कहि दर्शन, चारे ते खल खंच ॥ नीच गोत्र अशाता, तेम वली मिथ्यात्व ॥ थावर दशको आगम कहे, सांभलो एह विख्यात॥१॥ नरक त्रिक अने वली, पणवीस कषाय ॥ तिरिय दुग मली कह्या, भेद बासठ ए थाय ॥ ईग बि ति चउ जाई, कुखगई उपघात ॥ होये प्राणीने ते सही, नीच कर्मनी ख्यात ॥ २ ॥ अशुभ वरण अशुभ रस, गंध अशुभ तेम जाण ॥ फरस अशुभ नेमज कह्यो, आगममां जिन भाण ॥ पढम संघयण विनाहीज, मूको पढम संस्थान ॥ बहोंतेर भेद ए थया, जाणो एहनुं मान ॥ ३ ॥ थावर सुहुम अपज्ज, साधारण अस्थिर ॥ असुभ दुभग दुःस्वर, अनादेय अपजश धोर ॥ आगममां पाप तत्त्वना, भेद ए ब्यासी जाण॥ डूंगर गुरुनो सेवक, तेहने नित्य कल्याण. ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥ पाप तत्त्वने ए कह्युं, हवे आश्रवनुं ठाम ॥ पाप आवे जे जीवने, आश्रव एहनुं नाम ॥ १ ॥

॥ ढाल छठी ॥ देखी कामिनी दोय के, कामें व्यापीयो रे के ॥ कामें व्यापियो ॥ ए देशी ॥

॥ पांच इंद्री कषाय चार के, अव्रत पण कह्या रे के ॥ अ-

व्रत० ॥ त्रण योग त्रण भेद के, गुरु मुखथी लह्या रे के ॥ गुरु० ॥ हवे किरिया ते जोय के, पणवीश अनुक्रमें रे के ॥ पण० ॥ तजीयें जेहथी होयके, पुण्य सुसंक्रमे रे के ॥ पुण्य० ॥ १ ॥ पहेली कायिकी जाण के, बीजी अधिकरणकी रे के ॥ बीजी० ॥ त्रीजी परद्वेषकी होय के, चोथी पारितापनकी रे के ॥ चो० ॥ प्राणातिपातनी पांचमी, छठी आरंभकी रे के ॥ छठी० ॥ परिग्रहकी कही सातमी, आठमी कायिकी रे के ॥ आ० ॥ २ ॥ मिथ्यादंसण अपच्चरकाणकी, नव दश एक कही रे के ॥ नव० ॥ दिठि पुठि पाडूचकी, त्रयोदश ए लही रे के ॥ त्रयो० ॥ सामंतोनपात निःशस्त्र, स्वहस्तकी शोलमी रे ॥ स्व० ॥ सत्तरमी आणवणी, विदारण अढारमी रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ अणाभोग अणवकंख के, बे मली वीश थइ रे के ॥ बे० ॥ अणउपयोग समुदायकी, बावीश ए लइ रे के ॥ बा० ॥ त्रेवीशमी ते रागकी, चोवीशमी द्वेषकी रे के ॥ चो० ॥ पण वीशमी ईर्यापथिकी, कही विशेषकी रे के ॥ कही० ॥ ४ ॥ भेद बेहेंतालीश आश्रव, तत्त्वना ए कह्या रे के ॥ तत्त्व० ॥ सम्यक्दृष्टि जीव के, मनथी सद्दह्या रे के ॥ मन० ॥ डुंगर गुरु शुभध्यानथी, आश्रवने तजो रे के ॥ आश्रव० ॥ विवेक कहे भविलोक के, शिव रमणी भजो रे के ॥ शिव० ॥५॥इति॥

॥ ढाल सातमी ॥ प्राणी वाणी जिन तणी ॥

॥ ए देशी ॥

॥ संवर तत्त्व ते सांभलो, संवरीयें आतमा नित्य रे ॥ अरिहा

जिनवरें भांखियो, आगममांहे शुभ रीत रे ॥ आगममांहे शुभरीत सूचित, सुनित जगत गुरु भासियो सुख कंद रे ॥ सुख कंद अमंद आनंद ॥ जगत गुरु भासीयो सुख कंद रे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ पांच समिति त्रण गुप्ति जे, परिसह बावीश निवारो रे ॥ दश-विध मुनिवर धर्म जे, ते मुनिजन नित्य तुमें धारो रे ॥ ते मुनि० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ २ ॥ पांच समिति विवरी कहुं, ईर्या स-मिति प्रथम वखाण रे ॥ छकाय रक्षा जे करे, ईर्या कही तेह सु-जाण रे ॥ ईर्या ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ ३ ॥ भाषा समिति बीजी हवे, सहुने सुख उपजे सोय रे ॥ एषणा बहेंतालीश दोष छे, मुनिने आहार एम होय रे ॥ मुनि० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ ॥ ४ ॥ अदान निक्षेपणा, समिति ले मुके योग रे ॥ पारिष्ठाप-निका कही, मल मूत्र नाखे उपयोग रे ॥ मल० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ॥ ज० ॥ ५ ॥ त्रण गुप्ति हवे चित्त धरो, मन वचन काया करे शुद्ध रे ॥ आठ प्रवचन मात जे, मुनि धारे तेहिज बुद्ध रे ॥ मुनि० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ ६ ॥क्षुधा पिपासा शीत जे, उष्ण डंसा परिसह चेल रे ॥ रती स्त्रियादिक ते वली, चरिया निसि-हियादिक मेल रे ॥ च० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ ७ ॥ सघा आक्रोश वह जायणा, अलाभ रोग तण फास रे ॥ मल सक्कार परिसह जे, पन्ना अन्नाण संमत्त रे ॥ पन्ना० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ ८ ॥ खंति मद्दव अज्जव, मुत्ति तव संजम मेहरे ॥ सच्चं सोहं अकिंचण, ब्रह्मचर्य ए दशविध जेह रे ॥ ब्रह्म० ॥ सु० ॥ ॥ सु० ॥ ज० ॥ ९ ॥ प्रथम अनित्यह भावना, अशरण संसार

एकत्व रे ॥ अन्यत्त्व भावना पंचमो, अशुचि भावना तत्व रे ॥ ॥ अशु० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ १० ॥ आश्रव संवर निर्ज्जरा, लोक बोधी दुर्लभ भाव रे ॥ धर्म ध्यान ते बारनी, ए छे भवजल जंतु नाव रे ॥ ए छे० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ ११ ॥ पांच भेद चारित्रना, सामायिक छेदोपस्थान रे ॥ परिहार सूक्ष्म चारित्र जे, यथा ख्यातथी मोक्ष निदान रे ॥ यथा० सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ ॥ १२ ॥ यथाख्यात चरण जे आचरे, ते पामे मुक्तिनुं ठाण रे ॥ डूंगर गुरुना ध्यानथी, विवेक लहे बहु नाण रे ॥ विवे० ॥ सु० ॥ सु० ॥ ज० ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥ बार प्रकारें तप तपे, निर्ज्जरा जेहनुं नाम ॥ आत्म प्रदेशह तेथकी, धर्म पुद्गल खिरे ठाम ॥ १ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ हुओ चारित्र युत्तो समितिने गुत्तो, विश्वनो तारूजो ॥ ए देशी ॥

॥ पहेलुं अनसन ते अन्न पाणी लेवे नहि ॥ सोभागी ॥ वली छठने अट्ठम तप तेह जाणो सही ॥ सो० ॥ नपुंसकने चो-बीश कवल जिनवर कहे ॥ सो० ॥ १ ॥ द्रव्य क्षेत्र कालने भाव अभिग्रह जे वरे ॥ सो० ॥ जेम चंदनबाला वीरनो अभिग्रह पूरण करे ॥ सो० ॥ वृत्ती संक्षेप पण तप ए त्रीजो कह्यो ॥ सो० ॥ खट रसनो करे त्याग एह चोथो कह्यो ॥ सो० ॥ २ ॥ लोच करावे ने अलुवाणे पगे संचरे ॥ सो० ॥ इत्यादिक भली भावशुं काय कष्ट तप आदरे ॥ सो० ॥ पांच इंद्रि चार कषाय योगने

ओधवा ॥ सो० ॥ स्त्रीयादिक संसर्ग ते सर्वथी रोधवा ॥ सो० ॥ ॥ ३ ॥ षटविध बाह्य ए तप तुमें जाणवो ॥ सो० ॥ गुरुमुखथी लही भाव संदेह मन नाणवो ॥ सो० ॥ हवे षटविध अभ्यंतर भवि तुमे सांभलो ॥ सो० ॥ धरीये चित्तमां ए मूकीने मन आ-मलो ॥ सो० ॥ ४ ॥ पोतानी कीधी वातने लोक ते नवि लहे ॥ सो० ॥ हेलामांहे ते बहु कर्मने खेपवे ॥ सो० ॥ पाप लागां होय ते गुरु मुखथी आलवे ॥ सो० ॥ इणिविध प्रायश्चित तपने जालवे ॥ सो० ॥ ५ ॥ नाण दंसण चारित्रनो विनय घणो करे ॥ सो० ॥ अरिहंत सिद्ध चैत्य विनय मनमां धरे ॥ सो० ॥ वैया-वच्च तप त्रीजो प्रश्न व्याकरणे कह्यो ॥ सो० ॥ चौद भेदे वैया-वच्च गुरु मुखथी लह्यो ॥ सो० ॥ ६ ॥ हवे चोथुं तप सज्झाय ध्यानने मन खरे ॥ सो० ॥ सिद्धांत वांचे पूछे सिद्धांतने नित्य गणे ॥ सो० ॥ चिंतवे धर्मोपदेश दीये भवि चित्तने ॥ सो० ॥ जेहथी पामे सज्झाय तप वित्तने ॥ सो० ॥ ७ ॥ समता भावे म-नने आणे ध्यानमें ॥ सो० ॥ निरामय निराकार अवस्था ज्ञानमें ॥ सो० ॥ शुक्ल ध्यानने ध्यावे रौद्रने परिहरे ॥ सो० ॥ ए पां-चमुं तप भवियण चिते धरे ॥ सो० ॥ ८ ॥ छठुं हवे काउसग्ग, तपने आदरे ॥ सो० ॥ क्रोध अने मान माया, लोभने परिहरे ॥ सो० ॥ ए अभ्यंतर षट भेद ने प्राणी मन धरो ॥ सो० ॥ विवेक कहे भवियण, भवसायर तरो ॥ सो० ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥ बंध तत्त्व दूरे तजो, बंधन ते नित्यमेव ॥ गतिनां दुःख पामे घणां, कहे इम जिनवर देव ॥ १ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ कपूर होवे अति ऊजलोरे ॥ ए देशी ॥

॥ बंध तत्त्व हवे सांभलो रे, भवियण तुमें उमेद ॥ चार प्रकारे बंध छे रे, भाषे जिन अवेद रे ॥ प्राणी सांभलो तेह सुजाग ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ प्रकृतिबंध पहेलो कह्यो रे, महावा कहेतां स्वभाव ॥ स्थिति ते कालने जाणजो रे, एहिज एहनो भाव रे ॥ प्राणी० ॥ सां० ॥ २ ॥ अनुभागबंध ते शुं कहिये रे, कटुक मिष्ट जेम रस ॥ प्रदेश बंध चोथो हवे रे, दल संचय जाणो तस रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ ३ ॥ ज्ञानावरणी कर्मनुं रे, चक्षुबंधन जेह ॥ दर्शन ते कहीये बीजुं रे, पोलीया सरिखुं एह रे ॥ प्रा० ॥ ॥ सां० ॥४॥ वेदनी लिप्त असि सारिखुं रे,मोहनी मदिरासमान ॥ हड सरिखुं आयु जाणोये रे, चितारा सरिखुं नाम रे ॥ प्रा० ॥ ॥ सां० ॥ ५ ॥ गोत्र कुंभार जेहवुं रे, भंडारी सम अंतराय ॥ आठ करम भाव जाणजो रे, जेहथी दुर्गति जाय रे ॥ प्रा० ॥ ॥ सां० ॥ ६ ॥ नाण दंसण वेयणी अंतरायनुं रे, त्रीश कोडाकोडी मान ॥ मोहनी सितेर कोडा कोडीनुं रे, सागर एह निदान रे ॥ ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ ७ ॥ वीश कोडाकोडी नाम गोत्रनुं रे, आयु अयर तेत्रीश ॥ काल उत्कृष्ट पूरो थयो रे, भाखे श्रीजगदीश रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ ८ ॥ जघन्य काळ हवे कहुं रे, आठ कर्मनो जेह ॥ वेदनी कर्मनो जाणीये रे, बार मुहूर्त्त कह्यो एह रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ ९ ॥ नामकर्म गोत्र कर्मनो रे, आठ मुहूर्त्त तिम होय ॥ ॥ पांच कर्मनो आगल कहे रे, जघन्य काल स्थिति जोय रे ॥

॥ प्रा० ॥ सां० ॥ १० ॥ ज्ञानावरणी कर्मनी रे, दर्शनावरणी अंतराय ॥ मोहनी आयु कर्मनी रे, अंतर मुहूर्त्त कहेवाय रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ ११ ॥ आठ कर्मथी अलगा रहो रे, जिम लहो सुख निरवाण ॥ डुंगर गुरुना पदथकी रे, विवेकने कोडि कल्याण रे ॥ प्रा० ॥ सां० ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥ बंध तत्त्व पूरण थयुं, मोक्षतत्त्व सुविचार ॥ तेमाटे भवियण तुमें, आराधो हितकार ॥ १ ॥

॥ ढाल दशमी ॥ भविका सिद्धचक्र पद वंदो ॥ ॥ ए देशी ॥

॥ छता पदनुं प्रथम प्ररूपण, द्रव्य प्रमाण ए बीजुं ॥ खेत्र ठाण ते त्रीजुं जाणो, फरसना द्वारे रीजो रे ॥ प्राणी ॥ मुक्ति पद आराधो ॥ आराधी शिव साधो रे ॥ प्राणी ॥ मुक्ति० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ काल द्वार ते पांचमुं थुणीयें, अंतर छठुं धीर ॥ सातमुं भागने आठमुं भाव, अल्प द्वार कहे वीर रे ॥ प्रा० ॥ ॥ मुक्ति० ॥ २ ॥ चारगतिमांहे मनुष्य गतियें, मोक्ष होवे निरधार ॥ पांच इंद्रीमांहे पंचेंद्रीथी, शिवपद लहे सुखकार रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ ३ ॥ पृथिवी आदि पांचे थावर, एहने मोक्ष न लहीये ॥ त्रसकायथी मोक्षे जावे, एह आणा सद्दहीये रे ॥ प्रा० ॥ ॥ मुक्ति० ॥ ४ ॥ भव्य अने अभव्य ए दोविध, भव्यने होय शिव ठाण ॥ सन्नी असन्नी बे पद मांहे, सन्नीयो लहे निर्वाण

रे ॥ प्राणी० ॥ मुक्ति० ॥ ५ ॥ चारित्र पांच प्रकारे भाख्यां, श्री जिन आगममांहि ॥ यथाख्यात चारित्रें ते मोक्ष, बीजे चरणे मोक्ष नांहि रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ ६ ॥ पांच प्रकारे समकित जाणो, पंचांगीना जाण॥बीजे समकीते नवि लहीये,क्षायिके मोक्ष होय नाण रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ ७ ॥ आहार ते भवमांहे भमाडे, अणाहार दिये मोक्ष ॥ दर्शन चार कह्यां जिनराजे, केवल मोक्षने यांडे रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ ८ ॥ मति अने श्रुत अवधि ज्ञानह, मनः पर्यव ते जोवे ॥ केवल ज्ञानथी केवल ज्योति, प्रथम द्वार एम होवे रे ॥ प्रा० ॥ मु० ॥ ९ ॥ सिद्धना जीव द्रव्य अनंता, अनंता जीव सिद्धि पाम्या ॥ लोकने असंख्यातमे भागे, सिद्ध ते सवि दुःख वाम्यां रे ॥ प्रा० ॥ मु० ॥ १० ॥ खेत्रथी फरसना अधिकी जाणो,एकआकाश प्रदेशे ॥ एक सिद्ध आश्रित आदि छे, अनंते अनादि रे ॥ प्रा० ॥ मु० ॥ ११ ॥ पडवाना अभावथी जाणो, अंतर सिद्धने नही ॥ सर्व जीवने अनंतमे भागे, सिद्ध रह्या शुचि सही रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ १२ ॥ क्षायिक ने परिणामिक भावें, बे भावें होवे सिद्ध ॥ सर्व थकी थोडा नपुंसक, संख्यातगुणी स्त्री सिद्ध रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ १३ ॥ तेहथी संख्याता पुरुषज जाणो, समयें नपुंसक दश ॥ स्त्री सीझे एक समयें वीश, पुरुष अष्टोत्तर इश रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ १४ ॥ अल्प बहुत्व ए नवमुं द्वार, कहुं गुरुमुखथी में आज ॥ डुंगर गुरु पद कजनो सेवक, विवेकना सीधां काज रे ॥ प्रा० ॥ मुक्ति० ॥ १५ ॥

॥ ढाल अगीआरमी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ गिरुआ रे गुण तुम तणा ॥ ए देशी ॥

॥ हवे पंदर भेद सिद्धना, वर्णवुं ते सुखकारी रे ॥ जिण सिद्ध ते अरिहंतजी, पुंडरिक अजिण बलिहारी रे ॥ वारी जाउं हुं सिद्धनी ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ विहरमान ते तीर्थ सिद्ध, अतीर्थ सिद्ध मरुदेवी माय रे ॥ गृहस्थवासें कूर्मापुत्र सिद्धा, अन्यलिंगे वळकल शिवनाय रे ॥ वारी० ॥ २ ॥ स्वलिंगे साधु ते सिद्ध कह्या, स्त्रीलिंगे चंदन बाळा रे ॥ पुरुषलिंगे गौतम जाणवा, नपुंसकलिंगे गांगेया रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ प्रत्येकबुद्ध ते नमि थया, पोतानी मेलें स्वयंबुद्ध रे ॥ बुद्ध बोधित सिद्ध ते उपदेशें, भरतादिक बुद्धबोधी रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ एक जीव ते एक सिद्ध छे, घणा सिद्धे अनेक रे ॥ इम पंदर भेद सिद्धना, वरणव्या सुविवेक रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ जीवादिक नव तत्त्वने, प्राणी सद्दहे जे भावें रे॥ ते नर समकित सुरतरु, पामीने शिव जावे रे ॥ वा० ॥ ६ ॥ जीव संवर निर्जरा मोक्ष, ए चारे होवे अरुपी रे ॥ बंध आश्रव पुण्य पाप जे, एहने कहियें रुपी रे ॥ वा० ॥ ७ ॥ मिश्र भावें अजीव छे, बंध आश्रव पुण्य पाप रे ॥ ए चारेने छांडवा, जेहथी लहे प्राणी संताप रे ॥ वा० ॥ ८ ॥ जीव अजीव बे जाणवा, संवर निर्झरा मोक्ष रे ॥ आदरवां ए त्रण तत्वने, प्राणी लहे शिव शर्म रे ॥वा० ॥ ९ ॥ काल अनंत गये जिन मार्गे, सिद्धनी पृछा उल्लासें रे ॥ गोलाने अनंतमें भागें, सिद्ध थया सुविलासे रे ॥ वा० ॥ १० ॥

ए नव तत्व तणा गुण गाया, दिन दिन चडत सवाया रे ॥ श्रीवि-
जय डुंगर गुरु सुपसाया, विवेके नित सुख पाया रे ॥वा०॥११॥

॥ कलश ॥ जगजंतु तारण दुःख निवारण, आदि जिनवर में थुण्यो ॥ संवत अढार बहोंतेरा वर्षे, भविक हित हेतें भण्यो ॥ दमण पूरव विजय दशमो, आश्विन मास सु पक्ष ए ॥ सुरगुरुवारें सुखवधारे, कहे कवि जन दक्ष ए ॥ १ ॥ तपगछ राजे वड दीवाजे श्रीविजय दया सुरीसरु ॥ तस चरण सेवी मुक्ति विजयें, भविक जन मन सुखकरु ॥ तस शिष्य सुंदर गुणपुरंदर, पंडित डुंगर मुणिंद ए ॥ तस शिष्य सेवक भणे भावें, विवेक लहे आणंद ए ॥ २ ॥

॥ इति नवतत्त्व स्तवनं समाप्तम् ॥

श्रीमंधर स्वामीनुं स्तवन.

॥ ढाल १ लो ॥

सुण सुण सरस्वती भगवती, तारी जग वीख्यात; कविजननि कीरति वधे, तेम तुं करजे मात ॥ १ ॥ मंधरस्वामी माहाविदेहमां, बेठा करे वखाण ॥ वंदणा मारी तीहां जइ, केहेज्यो चंद्राभाण ॥२॥ मुज हियडुं संसय भर्युं, कुण आगळ कहुं वात ॥ जेहसु मांडो गोठडी, ते मुज न मळे धात ॥ ३ ॥ जाणो आवु तुम कने, विषम वाट पंथ दुर ॥ डुंगर ने दरीया घणा, विचे नदी वहे पुर; ते माटे इहां कने रही, जेजे करु विलाप ॥ ते तुंमे प्रभुजी सांभळो, अवगुण करज्यो माफ ॥ ५ ॥

॥ ढाळ ॥

भरतक्षेत्रनामांनविरे, ज्ञानी वीण मुंजाय ॥ तिण कारण तुमने सहुरे, प्रभुजी मनमां चाहेरे, स्वामि आवो आणे क्षेत्र ॥ जो तुम दरीसण देखीयेरे, तो निरमल कीजे मोरा नेत्ररे स्वामी ॥ १ ॥ गाडरीयो परिवार मल्योरे, घणुं करे ते खास ॥ परिक्षावंत थोडा हुवे रे, सिरधारु विसवास रे स्वामी. ॥२॥ धरमिनी हांसी करे रे, पक्ष विहुंणो सीदाय ॥ लोभ घणो जग व्यापोयोरे, तेणे साचो नवी थायरे ॥३॥ समाचारी जुइ जुइरे, सहु कहे माहरो धर्म ॥ खोटो खरो किम जाणीयेरे, ते कुण भांजे भरमरे. स्वामी. ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥

जिरप्रभु ज्यारे विचरता, त्यार वरतशी शांति रे ॥ जे जन आवीने पुछता, ताहरे भांजती भ्रांतीरे ॥ है. हे ज्ञानीनो वीरहो पडयो, तेतो दहे मुज दुषरे. स्वामी श्रीमंधर तुज बिनां, तेतो कुंण करे सुखरे है. ॥२॥ भूलो भमेरे वाडोलीया, जीहां केवली नाहीरे॥विरही ने रयणी जीसीरे, तीसी मुज घडीजायरे है. ॥३॥ वात मुखे नवनवी सांभळी, पण नीरती नवी थायरे॥जेजे दुर्भागीया जीवडा, तेतो अवतर्या आंहीरे. है. ॥४॥ धन्य महावीदेहना मानवि, जीहां जोनजी आरोग्यरे ॥ नाण दर्शन चरण आदरे, संयम लीये गुरुयोगरे. है. ॥५॥

॥ ढाळ ॥ ३ ॥

मंधरस्वामी महारारे, तुं गुरु ने तुं देव तु विन अवर न ओलगुंरे, न करु अवरनी सेवरे ॥ अहिंया कने आवजो वली चतुर्विध

संघरे साथे लावजो. ॥१॥ ते संघ केम कीरीया करेरे, किणी परे ध्यावे ध्यान ॥ व्रत पच्चखाण केम आदरे, केनी परे देसे दानरे. ॥ २ ॥ इंहा उचितक्रिरता घणोरे, अनुकंपा लवलेश ॥ अभय सुपात्र अल्प हुयारे, एहवा भरतमां देशोरे. अहीं ॥ ३ ॥ निश्चय सरसव जेटलोरे, बहु चाल्यो व्यवहार ॥ अभ्यंतर विरला हुवारे, जाजो बाह्य आचारोरे. इहां ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥

श्रीमंधर तुं माहरो साहिब, हुं सेवक तुज दासरे ॥ भमि भमि भव करी थाकीयो, हवे आव्यो शीवराजरे. श्री ॥ १ ॥ इण वाटे वटेमारगुं नावे, नावे कासीद कोइरे ॥ कागळ कुण साथे पहोंचाडुं, हुं मुज्यो तुम मोहेरे. श्री ॥ २ ॥ चार कषाय घटमां रह्या व्यापी, रातो इंद्री रसेरे ॥ मद कहो पण क्यारे वापे, मन नावे मुज वेशरे ॥ ३ ॥ तृष्णातु दुख होत नही मूजने, होत संतोषनो ध्यानरे ॥ तो हुं ध्यान धरत प्रभु तारे, थिर करो राखत मन्नरे ॥४॥ नोवड परिणामे गोठडो बांधो, ते छुटुं कीम स्वामीरे ॥ ते हुं नर तुजमां छे प्रभुजी, आवो अमारी कनेरे ॥ ५ ॥

॥ ढाळ ॥ ५ ॥

श्रीमंधर जीन एम कहे, पुछे तीहांना लोकरे ॥ भरतक्षेत्रनी वारता, सांभले सुरनर थोकरे ॥१॥ त्रीजो आरो बेठा पछी, जासे केटलो कालरे ॥ पद्मनाभजीन हुसे । ज्ञानी ज्ञाकझमाळरे ॥ २ ॥ छठे आरे जे हुसे । ते प्राणीना बहु पापरे । शाता नहि रे एक घडी,

रविनो झाझेरो तापरे ॥ ३ ॥ ओछुं आयुं माणस तणुं। मोटा देवना आयरे । सुख भोगवता स्वर्गना । सागर पल्योपम जामरे ॥ ४ ॥ सरागीने एम कहे ॥ तुमे तारो भगवंतरे ॥ आपथी आपे तरे । इम सुणजो सहु संतरे ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥

एह सुत्रमां जोवते बातो सांभळीरे । मकर हवे जीव वोखवाद॥ जेरे तें पून्य पुरव कीधा नहीरे ॥ तो कीहांथो पहोंचे आस ॥ जीनजी कीम मळेरे॥१॥कहे भोला सुव्यलेले. तुंसरागी मभु वैरागी मां वडोरे ॥ कीम आवे मभु आही ॥ जी ॥ २ ॥ चोल मनोठ सरखो जीनजी साहीबोरे, तुंतो गलीनो रंग ॥ कट काच तणो मूल तुंजमां नहींरे॥मभु नगीनो रंग।.जी०॥३॥श्रीभधर सरीखो भोमो श्री भगवंतजीरे ॥ तुंतो माखी तोल ॥ सरोखा सरीखे बीण कीम बाजे गोठडोरे ॥ हुं हृदय विचारो बोल ॥जो०॥४॥करम साथे लपटाणो तुं जीहा लगेरे॥तिहां लगे तुजनेकास॥ समतानो गुण ज्यारे तुजमां आवशेरे ॥ तिहारे जइश मभुनी पास ॥ जो ॥ ५ ॥

॥ ढाळ ॥ ७ ॥

श्री मंधर स्वामी तणी गुणमाळा जे नर भावे भनशेरे ॥ तस सीर वैरी कोइ नही व्यापे ॥ करम शत्रुने हणशेरे ॥ हमचडी हमचडी मारी हेलरे ॥ सीमंधर मोहनवेलरे ॥ सत्यकी राणीनो नंदन नीरखी ॥ सुख संपतीनी गेलरे ॥ हमचडी ॥ श्रीमंधर स्वामी तणी गुणमाळा ॥ जेनारी नीत्य गणेसरे ॥ सती सोहागण पीहर

पसरी ॥ पुत्र सुलक्षण जणशेरे ॥ हम० ॥ सीमंधरस्वामी शीवपुर गामी ॥ कविता कहे सीरनामी ॥ वंदणा माहरी हृदयमां धारो धरमलाभ द्यो स्वामीरे ॥ हमचडी० ॥ श्री तपगच्छनो नायक सुंदर ॥ श्री विजयदेव पटोधररे ॥ कीरती जेहनी जगमां झाझी ॥ बोले नरने नारीरे ॥ हमचडी० ॥ श्री गुरुवयण सूणी बूधी सारु॥ सीमंधर जीन गायोरे ॥ संतोषी कहे देवगुरु धर्म, पुरव पून्ये पायो रे ॥ हमचडी० ॥

॥ श्रीमंधरस्वामीनुं स्तवन संपूर्ण सर्व गाथा ३८ ॥

श्रीमान् विजयनेमीसुरीजी खंभात चतुर्मास पधार्या त्यारे हर्षथी गवायेली गहुंली.

बेनी चालोने सदगुरु वंदन करवा जइए आजे ॥ गुरु वंदीने आ संसार समुद्र उतरीये पारे ॥ १ ॥ गुरु एक विध अ संयम टाळे ॥ दोय भेदे धर्म प्रकासंता ॥ वळी त्रण रत्न दीलमां धरता ॥ बेनी ॥ १ ॥ क्रोधादिक चार नीवारंता ॥ पंचमहाव्रत भलो पेरे पालंता ॥ छकाय जीवनी रक्षा करता ॥ बेनी० ॥ २ ॥ गुरू सात भयने भय आपंता ॥ आठ प्रवचन माताने पालंता ॥ नवविध ब्रह्मचर्यने अंगी करता ॥ बेनी० ॥ ३ ॥ दशविध यतीधर्मने साधंता ॥ अगीयार अंग मुखे उचरंता ॥ वळी द्वादश तपे करी तपता ॥ बेनी० ॥ ४ ॥ गुरु काठिया तेर नीवारंता ॥ गुरू चौद पूर्व मुखे धरता ॥ भेद पंदर सिद्धना भासंता ॥ बेनी० ॥ ५ ॥ गुरु सोळ कषाय दुरे करता ॥ सत्तर भेदे संयम साधंता ॥ पापस्थान

अढारने परीहरता ।। बेनी० ।। ६ ।। दोष काउसगना ओगणीस टाळे ।। वीश वसाथे जीवदया पाळे ।। एकवीश गुण श्रावकना जाणे ।। बेनी ।। ७ ।। बावीस परीसहने अति सहतां ।। तेवीश इन्द्रि विषयने अति दमता ।। चोवीश जीन आज्ञा शीर धरता ।। बेनो० ।। ८ ।। पचवीश क्रीया शुद्धी जाणे ।। छवीस अध्ययने दील धारे ।। सत्तावीश गुणे मुनी सोहे ।। बेनी ।। ९ ।। गुरु कुमती कुलंक तमिर तरणी ।। ढुंढकमत शीयाळे सींह समी ।। तपगच्छ गगने ग्रहराज समी ।। बे० ।। १० ।। संवत ओगणीश अट्ठोतेरे ।। स्थंभपुर चोमासु अति १५ ।। विजय नेमीसुरीजी सुख वर्ते ।। बेनी० ।। ११ ।। गुरू दर्शनथी अति सुख पावे ।। नाम नेमसुरिजी अति भावे ।। तस चरणोपासक ऊदय विजय ।। बेनी ।। १२ ।। एवा गुरुनो गुंहली करता ।। सुख संपत्ति सर्व सेजे मळता ।। महिला मंढळ अति सुख धरता ।। बेनी ।।१३

।। अथ सज्झायो ।।

ढुंढक पच्चवीसीनी सज्झाय ।।

सिद्ध चक्र पद वंदोरे भविका–ए देशी.

।। श्री श्रुतदेवी प्रणमी कहेस्युं, जिन प्रतिमा अधिकार ।। नवि माने तस वदन चपेटा, माने तस सिणगार ।। श्री जिन प्रतिमाशुं नहीं रंग, तेनो कदिय न कीजे संग ।। १ ।। केवल नाणी चउ नाणी पण समे, नहीं भरत मझार ।। जिन प्रतिमा जिन प्रवचन जिनो,

ए मोटो आधार ॥ श्री० ॥ २ ॥ ते जिनवर प्रतिमा उत्थापी, कुमति हैया फूटे ॥ ते विना कीरिया हानि लागे, तेतो थोथा कुटे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा दर्शथी दर्शन, लहीए व्रतनुं मूळ ॥ तेहज मूल कारण उत्थापी, शुं थाये जग शुल॥श्री०॥४॥अभयकुमार मूकि प्रतिमा, देखी आर्द्रकुमार ॥ प्रतिबोधे संयम लइ सूधो, ए चावो अधिकार ॥ श्री० ॥ ५ ॥ प्रतिमा आकारे मच्छ निहाले, अन्य मच्छ सवि बुझे ॥ समकित पामे जाति स्मरण, तस पूर्वभव सूझे ॥ श्रीं० ॥ ६ ॥ चैत्य विना अन्यतीरथ मुजने, वंदना पूजा निषेधे ॥ सातमे अंगे श्री आणंदे, समकित धारुं सूधे ॥ श्री० ॥ ॥ ७ ॥ छठे अंगे ज्ञाता सूत्रे, द्रौपदीए जिन पूज्या ॥ एहवा अक्षर देखे तो पण, मूढ मति नवि बुझया ॥ श्री० ॥ ८ ॥ चारण मुनिए चेइय वंद्या, भगवइ अंगे रंगे ॥ मरडो अर्थ करे तिणे स्थानक, कुमति तणे प्रसंगे ॥ श्री० ॥ ९ ॥ भगवइ आदि श्रीगणधरजी, बंभी लीपीने वांदे, एहवा अक्षर स्थापना देखी, कुमति कहो किम नंदे ॥ श्री० ॥ १० ॥ सूर्याभे जिन आगळे नाटक, कीधुं मनने रंगे ॥ समकितदृष्टि तेह वखाण्या, रायपसेणी उवंगे ॥श्री०॥११॥ समकितदृष्टि श्रावक करणी, जिनघर जेह करावे ॥ ते बारमे देवलोके पहोंचे, महा निशिथ आलावे ॥ श्री० ॥ १२ ॥ अष्टापद गिरि उपर भरते, मणिमय बिंब भराव्या ॥ एहवा अक्षर आवश्यकसूत्रे, गौतम वंदन आया ॥ श्री०॥१३॥परंपरागत पुस्तक प्रतिमा, माने तेहज नाणी॥नवि माने तेहज अज्ञानी, एवी जिनवर वाणी ॥ श्री० ॥ १४ ॥ ढुंढक वाणी कुमत समानी, सूणो मत भूलो प्राणी॥

बोधिबीजनो करसे हाणी, किम वरशे शिवराणी ॥ श्री० ॥ १५ ॥ क्षेत्रपाल भवानो देह रे, तिहां जावुं नवि वारे ॥ वीतरागने देहरे वारे, ते कुणसूत्र अनुसारे ॥ श्री० ॥ १६ ॥ मेलां कपडां मोडुं बांधी, घर घर भीक्षा फरता ॥ मांदा माणसनी परे थोडुं, बोले जाणे मरता ॥ श्री० ॥ १७ ॥ बारथी काला मांहे काला, जेहवा काला पारा ॥ पंचम काले ए दुष्ट प्रगटया, महामूढ विकराला ॥ श्री० ॥ १८ ॥ ढुंढत ढुंढत ढुंढत प्राणी, तोही धर्म न पायो ॥ ते माटे मूढ ढुंढक कहेवायो, एले जनम गमायो ॥ श्री० ॥ १९ ॥ भाव भेद तत्व नवी जाणे, दया दया मुख भाखे ॥ मुग्ध लोकने भरमे पाडे, ए पण दुर्गति माटे ॥ श्री० ॥ २० ॥ भाष्यचुर्णी टीका नवी माने, केवल सूत्र पोकारे ॥ ते मांहे निज कल्पित स्थापी, बहु संसार वधारे ॥ श्री ० ॥ २१ ॥ आगमनो एक वर्ण उत्थापे, ते कह्यो अनंतसंसारी ॥ आखो स्कंध उत्थापे तेनी, शी गति होशे सारी ॥ श्री० ॥ २२ ॥ चित्र लिखित नारी जोवंता, वाधे काम विकार ॥ तिम जिन प्रतीमा मुद्रा देखो, शुद्ध भाव विस्तार ॥ श्री० ॥ २३ ॥ ते माटे हठ छंडो भवियां, प्रतिमाशुं दिल राखो ॥ जिनप्रवचन जेने, अनुभव भरी रस चाखो ॥ श्री० ॥ २४ ॥ ढुंढक पचवीसी एह मे गाइ, नगर नाडुल मझार ॥ जसवंत श्रीजिनेंद्र पयंपे, हितकार अधिकार ॥ श्री० ॥ २५ ॥

॥ द्वारिका नगरीनो सज्झाय ॥

॥ दोहा ॥ दोनुं बंधव आस्डे, दुख धरतां मन मांहे ॥ बलती देखी द्वारिका, कीजे कवण उपाय ॥ १ ॥ रतन भींत सोवन तणी, तेह बले ततकाल ॥ सोवन थंभा कांगरा, जाणे बले पराल ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ बलती द्वारिका देखीरे, भाइ घणो थया दिलगीररे ॥ छाती ते लागी फाटवा रे, भाइ नयणे वछुट्या नीररे माधव इम बोले ॥ १ ॥ बे बंधव मलीने तीहांरे, भाइ वात करे करुणांय ॥ दुख साले द्वारिका तणुंरे, भाइ अब कीजे कवण उपायरे ॥ मा० ॥ २ ॥ किहांरे द्वारिकानी साहिबीरे, भाइ कीहां गजदालनो ठाठ ॥ सज्जननो मेलो किहांरे, भाइ क्षणमां हुआ घणा घाटरे ॥ मा० ॥ ३ ॥ हाथी घोडा रथ बलेरे, भाइ बेताली बेतालीस लाख ॥ अडतालीस क्रोड पाला हुंतारे, भाइ क्षणमां हुइ गया राखरे ॥ मा० ॥ ४ ॥ हलधरने हरजी कहेरे, भाइ धिग् कायरपणुं मोय ॥ नगरी बले मुज देखतांरे, भाइ जोर मुज न चाले कोयरे ॥ मा० ॥ ५ ॥ नगरी बले मुज देखतांरे, भाइ राखी न शकुंरे जेम ॥ इंद्र धनुष में चढावीयुंरे, भाइ ए बल भाग्युं केमरे ॥ मा० ॥ ६ ॥ जोणी दीशी जाश तिण दिशेरे, भाइ सेवक सहस अनेक ॥ हाथ जोडी उभा खडारे, भाइ आज न दीसे एकरे ॥ मा० ॥ ७ ॥ मोटा मोटा राजवीरे, भाइ शरणे रहेत आय ॥ उलटो शरणो ताकोओरे, भाइ वेरण वेला आयरे ॥ मा० ॥ ८ ॥

वादल वीजतणी परेरे, भाइ ऋद्धि बदलाये सोय ॥ इण दोहीलीमां आपणोरे, भाइ सगो न दीसे कोयरे ॥ मा० ॥ ९ ॥ मेहेल उपगरण आयुध बले रे, भाइ बले सहु परिवार ॥ आ आपदा पुरी पडोरे, भाइ कीजे कवण विचाररे ॥ मा० ॥ १० ॥ वळतां हलधर इम कहेरे, भाइ मगळ्यां पूर्वनां पाप ॥ बीजुं तो सघळुं रह्युंरे, भाइ मांहे बळे माय बापरे ॥ मा० ॥ ११ ॥ दोनुं बांधव मांहे धश्यारे, भाइ नगरीमां चाल्या जाय ॥ रथ जोडो तेणे समेरे, भाइ मांहे घाल्या मात तातरे ॥ मा० ॥ १२ ॥ दोनुं बांधव जुतियारे, आव्या पोळनी मांय ॥ दोनुं बंधव बहार नीकळयारे, भाइ दरवाजो पडियो आयरे ॥ मा० ॥ १३ ॥ पाछुं वळी जुए तीहांरे, भाइ घणा थया दिलगीर ॥ छाती ते लागी फाटवारे, भाइ नयणे वछुटयां नीररे ॥ मा० ॥ १४ ॥ हळदरने हरजी कहेरे, भाइ सांभळ बंधव वात ॥ किण दोशी आपणे जाइशुंरे, भाइ ते दिश मोय बतायरे ॥ मा० ॥ १५ ॥ वचन सुणी माधव तणांरे भाइ हळधर बोले एह ॥ पांडव भाइ कुंतातणारे, भाइ अब जाइये तेहने गेहरे ॥ मा० ॥ ॥ १६ ॥ वयणां सुणो हळधर तणांरे, भाइ माधव बोले एम ॥ देशवटो देइ काढीयारे, भाइ ते घर जाओ केमरे ॥ मा० ॥ १७ ॥ बलता हळधर इम कहेरे, भाइ देखी होशे दिलगीर ॥ ते किम अवगुण आणशेरे, भाइ गिरुआ गुणगंभीररे ॥ मा० ॥ १८ ॥ तें तेहनां कारज कियांरे, भाइ धातकी खंडमां जाय ॥ द्रौपदी सोंपी आणीनेरे, भाइ ते केम भुलशे भायरे ॥ मा० ॥ १९ ॥

अहंकारी सीर सेहरारे, भाई एहथी संपदा पाय ॥ ते नर पाळा चालियारे, आपदा पडी बहु आयरे ॥ मा० ॥ २० ॥ पांडव मयुरां प्रगटी जिहांरे, भाइ अग्निखुण समुद्रनो तीर ॥ तीण नगरी भणी चालीयारे, भाइ बंधव बेहु सधीररे ॥ मा० ॥ २१ ॥ जे नर सज्याए पोढतारे, भाइ ते नर पाळा होय ॥ करजोडी विनय विजय इम भणेरे, भाइ आ भव पार उतारर‍े ॥ माधव इम बोले ॥ २२ ॥

॥ अथ स्थूलिभद्रजीनो सज्झाय ॥

॥ बोली गयो मुख बोल, च्यार घडीनो कोल ॥ आछे लाल ॥ हजीए न आव्यो वालहोजो ॥ देइ गयो दुख दाह, पाछो नाव्यो नाह ॥ आ० ॥ के सही केणे भोलव्योजी ॥ १ ॥ रहेतो नहीं क्षण एक, रे दासी सुविवेक ॥ आ० ॥ जाइ जुओ दिसा दसेजो॥एम बोलंती बाल, एनी उत्तम चाल ॥ आछे लाल ॥ छेल गयो मुज छेतरीजी ॥ २ ॥ उलस वालस थाय, अंग उभाभ धाय ॥ आ० ॥ नयणे नावे निंद्रडीजी ॥ चोखा चंपक शरीर, नणदलना हो वीर ॥ आ० ॥ नयणे दीठा नथीजी ॥ ३ ॥ जेम बपैया मेह, मच्छने जलशुं नेह ॥ आ० ॥ भमराने मन केतकीजो ॥ चकवो चाहे चंद्र, इन्द्राणी मन इन्द्र ॥ आ० ॥ अहनिशी तमने ओलगुंजी ॥ ४ ॥ तुमविण घडीए छ मास, तें मुज नाखी पास ॥ आ० ॥ निष्ठुरपणुं नर तें कयुंजी ॥ भाखो

कोईक दोष, मुकी मननो रोष ॥ आछे० ॥ कांइक तो करुणा करोजी ॥ ५ ॥ हुं निराधार नार, मेली गयो भरथार ॥ आ० ॥ उभी करुं आलोचनाजी ॥ एम विलवलती कोस, देती करमनो दोष ॥ आ० ॥ दासी आवीरे दोडतीजी ॥ ६ ॥ सांभळ स्वामीनी वात, लाछिल्ड देनो जात ॥ आछे० ॥ स्थुलिभद्र आव्योरे आंगणेजी ॥ वनिता सांभळी वात, हियडे हरख न मान ॥ आ०॥ प्रीति पावन प्रभु तें करोजी ।. ७ ॥ पधारो घर मुज, मुनि भाख्यो रुत्रि गुज ॥ आ० ॥ उठ हाथ अलगी रहेजी ॥ माता आगे मुसाल, तिम मुज आगल ख्याल ॥ आ० ॥ एह प्रपंच किहां भण्याजो ॥ ८ ॥ चित्रशाली चोमास, निहाली मुखतास ॥ ॥ आ० ॥ वनिता विधिशुं आलोचवेजी ॥ मादल ताल कंसाल, भुंगल भेरि रसाल ॥ आ० ॥ गावे नव नव रागशुंजी ॥ ९ ॥ वाळे विधिशुं अंग, फरती फुदडी चंग ॥ आ० ॥ हावभाव बहु हेतसुंजी ॥ सांभल स्वामीनी वात, सिंहने घाले घात ॥ आ० ॥ राइनो पाड राते गयोजी ॥ १० ॥ सो बालक साथे रोइ, पावइयाने पानो न होय ॥ आ० ॥ पथ्थर फाटयो ते किम मलेजी ॥ समुद्र मीठो न थाय, पृथ्वी रसातल जाय ॥ आ० ॥ सूर्य उगे पश्चिम दिशेजी ॥ ११ ॥ प्रति बोधी इम कोश, छोडी रागने रोष ॥ आ० ॥ द्वादश व्रत उचरेजी ॥ पूरण कीधो चोमास, आव्या श्री गुरुपास ॥ आ० ॥ दुक्कर दुक्कर तुं सहोजी ॥ १२ ॥ त्रीस वरस घरवास, पुरी सहुनी आश ॥ आछे० ॥ पंचमहाव्रत पालताजी ॥ धन्य मात धन्य तात, नागर न्याति कहात, ॥आछे०॥

वारु वंश दीपावोयोजी ॥ १३ ॥ जे नरनारी गाय, तस घर लच्छी सवाय ॥ आछे० ॥ पभणे शांति मया थकीजी ॥ १४ ॥ इति स्थुलिभद्रनी सज्झाय ॥

नेमराजेमतीनी सज्झाय.

॥ राणी राजुल करजोडी कहे, एतो जादवकुल शणगाररे ॥ वाला मारा ॥ भवरे आठेनो नेहलो, प्रभु मत मेलो विसारीरे ॥ वाला मारा ॥ १ ॥ वारिहुं जिनवर नेमजी, एक विनतडी अवधाररे ॥ वा० ॥ सुरतरु सरखो साहिबो, हुंतो नित्य नित्य धरु देदाररे ॥ वा० ॥ मा० ॥ २ ॥ प्रथम भवे धनवतिनो, तुं धननामे भरताररे ॥ वा० ॥ निसाले जातां मुजने, छानो मेल्यो मोती केरो हाररे ॥ वा० ॥ मा० ॥ ३ ॥ दिक्षा लेइ हरखे करी, तिहां देवतणो अवताररे ॥ वा० ॥ क्षणबिरह खमता नहीं, तिहां पण धरता प्याररे ॥ वा० ॥ मा० ॥ ४ ॥ त्रीजे भवे विद्याधरु, तिहां चित्रगति राजकुमाररे ॥ वा० ॥ भूपति पदवो भोगवो, हुं रत्नवती तुजनाररे ॥ वा० ॥ मा० ॥ ॥ ५ ॥ महाव्रत पाली साधुना, तिहां चोथे भवे सुरदाररे ॥वा०॥ आरण्य देवलोके बेउ जणा, तिहां सुख विलस्यां सविकाररे ॥वा० ॥ मा० ॥ ६ ॥ पांचमो भव अति शोभतो, तिहां नृप अपराजित साररे ॥ वा० ॥ प्रीतमवंतो हुं ताहरी, थइ प्रभु हैयानो

हाररे ॥ वा० ॥ मा० ॥ ७ ॥ ग्रही दीक्षा हरखे करी, तिहां छठे भवे सुरदाररे ॥ वा० ॥ माहेंद्र देवलोकमां तिहां, सुख वि· लस्यां वारोवाररे ॥ वा० ॥ मा० ॥ ८ ॥ शंख राजा भव सा- तमो, तिहां जसमति प्राण आधाररे ॥ वा० ॥ वीस स्थानक तीहां फरसतां, जिनवर पद बांध्यु साररे ॥ वा० ॥ मा० ॥ ९ ॥ आठमे भव अपराजिते, तिहां वरस गयां बत्रीस हजाररे ॥ वा० ॥ आहारनी ईच्छा उपनी, एता पूर्व पुन्य प्रकाशरे ॥ वा० ॥ वा० ॥ १० ॥ हरिवंशमांथी उपनी, मारी शिवादेवी मासु मल्हाररे ॥ वा० ॥ नवमे भवे क्यां परिहरो, प्रभु राखो लोक व्यवहाररे ॥ वा० ॥ मा० ॥ ११ ॥ एरे संबंध सुणी पाछलो, तिहां मजी भणे ब्रह्मचारीरे ॥ वा० ॥ हुं तमने तेडवा कारणे, आव्यो ससरानीने वासरे ॥ वा० ॥ मा० ॥ १२ ॥ अविचळ कीधो एणे साहिबो, रुडो नेहलो मुक्तिमां जायरे ॥ वा० ॥ मानो वचन राजेमति, तिहां चाळी पिउडानो लाररे ॥ वा० ॥ मा० ॥ १३ ॥ धन्य धन्य जिन बावीसमो, जिणे तारी पोतानी नाररे ॥ वा० ॥ धन्य धन्य उग्रसेननी नंदीनी, जे सतीयोमें सिरदाररे ॥ वा० ॥ मा० ॥ १४ ॥ संवत सतर इकोतरे, तिहां शुभ वेला शुभ वाररे ॥ वा० ॥ कांतिविजय राजुलनां, तिहां गुण गाया श्रीकाररे ॥ वाला मारा ॥ वारिहुं जिनवर नेमजी ॥ ॥ १५ ॥ इति नेमराजेमति सज्झाय ॥

॥ अथ श्रीअगीआरसनी सझ्झाय ॥

॥ ઉલગાણુની ॥ દેશી ॥

॥ गोयम पूछे वीरने, सुणो स्वामीजी, मौन एकादशी किणे कही, किणे पाली किणे आदरी ॥ सुणो० ॥ एह अपूर्व दिन सही ॥ १ ॥ वीर कहे सुणो गोयमा, गुण गेहाजी, नेमे प्रकाशी एकादशी, मौन एकादशी निर्मली, सुणो गोयमजी ॥ गोविंद करे मलारसी ॥ २ ॥ द्वारामती नगरी भली, ॥ सुणो० ॥ नव जोयण आराम वसी, छप्पन कोड जादव वसे ॥ सुणो० ॥ कृष्ण विराजे तिणे नगरी ॥ ३ ॥ विचरंता विचरंता नेमजी ॥ सुणो० ॥ आवी रह्या उज्जवल शिखरे, मधुरी ध्वनि दिये देशना ॥ सुणो० ॥ भवियणने उपगार करे ॥ ४ ॥ भव अटवी भीषण घणी ॥ सुणो० ॥ ते तरवा पंच पर्वी कही, बीजे बे विध सांचवो ॥ सुणो० ॥ देश विरति सर्व विरति सही ॥ ५ ॥ पंचमी ज्ञान आराधीये ॥ सुणो० ॥ पंच वरस पंच मास वली, अष्टमी दिन अष्ट कर्मनो ॥ सुणो० ॥ परभव आयुनो बंध करे ॥ ६ ॥ त्रीजे भागे नवमे भागे ॥ सुणो० ॥ सत्तावीसमे भागे सही, अथवा अंतर्मुहुर्त समे ॥ सुणो० ॥ श्वासोश्वासमां बंधकरे ॥ ७ ॥ माया कपट जे केलवे ॥ सुणो० ॥ नरक तिर्यचनुं आयु धरे, राग तणे वश मोहीयो ॥ सुणो० ॥ विकल थयो परवश पणे ॥८॥ करणी अकरणी नवो गणे ॥ सुथो० ॥ मोह तिमिर अंधकार पणे मोहे मद धर्यो फिरे ॥ सुणो० ॥ दे घुमरी घणुं जोर पणे ॥ ९ ॥

घायल जिम रहे घुमनो ॥ सुणो० ॥ कहुं न माने नेह पणे, जोव रुले संसारमां ॥ सुणो० ॥ मोह कर्मनी सही जाणी ॥ १० ॥ अल्प सुख सरसव जेवुं ॥ सुणो० ॥ तो तेने मेरु समान गणे, लोभे लंपट कहीयो ॥ सुणो० ॥ नविगणे ते अंधपणे ॥ ११ ॥ ज्ञानो विण कह्यो कुण लहे ॥ सुणो० ॥ शुं जाणे छद्मस्थपणे, अष्टमी एकादशी चउदशी ॥ सुणो० ॥ सामायिक पोसह करे ॥१२॥ धर्मने दिवसे कर्मनो ॥ सुणो० ॥ आरंभ जे करे नरनारी, निश्चय सदगति नवि लहे ॥ सुणो० ॥ अशुभ कर्मनां फल छे भारी ॥ १३ ॥ पांच भरत पांच ऐरवते ॥ सुणो० ॥ महाविदेह ते पांच भणो, कर्मभूमि सघळी थइ ॥ सुणो० ॥ सुकल्याणक पंच सोय भणो ॥ १४ ॥ श्रीविशालसोम सूरिश्वर प्रभु ॥ सुणो० ॥ तप गच्छनो सिरदार मुणि, तस गुरु चरण कमल नमी ॥ सुणो०॥ सुव्रत रुप सज्झाय भणी ॥ १५ ॥ इति अगीआरसनी सज्झाय संपूर्णम् ॥

अथ त्रेसठशलाका पुरूषनी सज्झाय.

॥ चोपाइनो देशी ॥ प्रहसमे प्रणमुं सरसती माय, वळी सद्गुरुने लागुं पाय ॥ त्रेसठ शलाकानां कहुं नाम, नाम जपतां सीजे काम ॥ १ ॥ प्रथम चोवीस तीर्थंकर जाण, तेहतणां हुं करीश वखाण ॥ ऋषभ अजितने संभव स्वाम, चोथा अभिनंदन अभिराम ॥ २ ॥ सुमति पद्म प्रभु पुरे आश, सुपार्श्व चंद्रप्रभ दे

सुखवास ॥ सुविधि शीतलने श्रेयांसनाथ, ए छे साचा शिवपुर साथ ॥ ३ ॥ वासुपूज्य जिन विमल अनंत, धर्म शांति कुंथु अरिहंत, अरमल्ली मुनिसुव्रत स्वाम, एहथी लहीए मुक्तिनुं ठाम ॥ ४ ॥ नमिनाथ नेमिसर देव, जस सुरनर नित्य सारे सेव ॥ पार्श्वनाथ महावीर प्रसिद्ध, त्रुठया आपे अविचल ऋद्धि ॥ ५ ॥ हवे नाम चक्रवर्ती तणां, बार चक्रीजे शास्त्रे भण्या ॥ पहेलो चक्री भरतनरेश सुखे साध्या जिणे षटखंड देश ॥ ६ ॥ बीजो सगर नामे भूपाल, त्रीजो मघवराय सुविशाल ॥ चोथा कहीये सनतकुमार, देवपदवी पाम्या छे सार ॥ ७ ॥ शांति कुंथुं अर त्रिणे राय, तीर्थंकर पण पद कहेवाय ॥ सुभूम आठमो चक्री थयो, अति लोभे ते नरके गयो ॥ ८ ॥ महा पद्मराय बुद्धि निधान, हरिषेण दशमो राजन इग्यारमो जय नाम नरेश, बारमो ब्रह्मदत्त चक्रनरेश ॥ ९ ॥ ए बारे चक्रिसर कह्या, सूत्र सिद्धांत थकी में लह्या ॥ हवे वासुदेव कहुं नवनाम, त्रिण खंडे जेणे जीत्या ठाम ॥ १० ॥ वीर जीव प्रथम त्रिपृष्ट ॥ स्वयंभू पुरुषोत्तम महाराय, पुरुषसिंह पुंडरिक राय ॥ ११ ॥ दत्त नारायण कृष्ण नरेश, एह नव हवे बलदेव विशेष अचल विजयभद्र सुप्रभ भूप, सुदर्शन आनंदनंदनरुप ॥ १२ ॥ पद्मराम ए नव बलदेव, प्रति शत्रु नव प्रति वासुदेव॥अश्वग्रीव तारक राजेंद्र, मेरक मधु निशुंभ बलेंद्र ॥ १३ ॥ प्रल्हादने रावण जरासंघ, जीत्या चक्रबले सत्यसंघ ॥ त्रेसठ संख्या पदवी कही, माता इकसठ ग्रंथे लहि ॥ १४ ॥ पिता बावनने साठ शरीर, ओगणसाठ जीव महावीर ॥ पंचवरण तीर्थंकर जाण, चक्री सोवन वान व-

खाण ॥ १५ ॥ वासुदेव नव शामलवान, उज्वल तनु बलदेव प्रधान ॥ तीर्थंकर मुक्तिपद वर्या, आठ चक्री साथे संचर्या ॥१६॥ बलदेव आठ तेहने साथ, शिवपद लीधो हाथोहाथ ॥ मघव सनत कुमार सुरलोक, त्रीज सुर सेवे गत सोग ॥ १७ ॥ नवमो बलदेव ब्रह्मनिवास, वासुदेव सहु अधगति वास ॥ अष्टम बारम चक्रिसाथ प्रति वासुदेव समा नरनाथ ॥ १८ ॥ सुरवर सुखशाता भोगवी, नरक दुःख व्यथा अनुभवी ॥ अनुक्रमे कर्म सैन्य जय करी, नरवर चतुरंगी सुखवरी ॥ १९ ॥ सद्गुरु जोगे क्षायिकभाव, दर्शन ज्ञान भवोदधि नाव ॥ आरोहि शिव मंदिर वसे, अनंत चतुष्टय तव उल्लसे ॥ २० ॥ लेशे अक्षय पद निर्वाण, सिद्ध सर्वे द्यो मुज कल्याण ॥ उत्तम नाम जपो नरनार, सरुपचंद लहे जय-कार ॥ २१ ॥ इति त्रेसठ सलाका पुरूषनी सज्झाय ॥

॥ अथ माननी सज्झाय ॥

सहेजानंदीरे आतमा—ए देशी.

॥ मान न करशोरे मानवी, काची कायानो शो गर्वरे ॥ सुरनर किन्नर राजीआ, अंते मरो गया सर्वरे ॥ मा० ॥ माने ज्ञान विनाशरे, माने अपयश वासरे ॥ माने केवल नाशरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सोना वर्णीरे चहे बळे, रुपा वर्णी धुवासरे ॥ कुमकुम वर्णीरे देहडी, अगनो परजालि करी छाररे ॥ मा० ॥ ॥ २ ॥ जे नर शीर कसो बांधता, साळु कसबोना पाघरे ॥ ते

नर पोढयारे पाधरा, चांच मारे शिर कागरे ॥ मा० ॥ ३ ॥ केइ चाल्या केइ चालशे, केता चालण हाररे ॥ मारग वहेरे उतावलो पडखे नहीं लगाररे ॥ मा० ॥ ४ ॥ अतरे प्राणनो आवशे, न जुए वार कुवाररे ॥ भद्रा भरणीने योगणो, शनी सोम वली काळरे ॥ मा० ॥ ५ ॥ जे वहालां विण एक घडी, सोहतो नहीं लगाररे ॥ ते विना जनमारा वही गया, नही शुद्धि नहीं समाचाररे ॥ मा० ॥ ६ ॥ जे नर जागीरे बोलता, वावरता मुख पानरे ॥ ते नर अग्निमां पोढीया, काया काजल वानरे ॥मा०॥ ७ ॥ चीर पोतांबर पेहेरता, कंठे कनकनो हाररे ॥ ते नर काले माटी थया, जो जो अस्थिर संसाररे ॥ मा० ॥ ८ ॥ जे शिर छत्र ढळावता, चढता हाथोने खंधरे ॥ ते नर अंतेरे लइ गया, देइ दोरडाना बंधरे मा० ॥ ९ ॥ कोडी मणनो सीळा कर ग्रहो, गिरिधर कहावे नामरे ॥ तरसे तरफडे त्रीकमो, नहीं कोइ पाणी पानाररे ॥ मा० ॥१०॥ चोसठ सहस अंतेउरी पायक छन्नु करोडरे॥ ते नर अंते रे एकळो, सूतो चिवर ओढरे ॥ मा० ॥ ११ ॥ जे जिहां ते तिहां रह्या, पापने पुण्य बे साथरे ॥ अहो स्वरुपने देखीने, पुण्य करो निज हाथरे ॥ मात० ॥ १२ ॥ जे नर हसी हसो बोलता, करता भोजन साररे ॥ ते नर अंतेरे माटी थया, घडता पात्र कुंभाररे ॥ मा० ॥ १३ ॥ चंपा वरणी देहडी, कदली कोमल जंघरे ॥ ते नर सुतारे काष्ठमां, पडे धडोधड डांगरे ॥मा० ॥ १४ ॥ देह विटंबना नर सुणो, न करो तरणानो लोभरे ॥ जे संघ सरखोरे राजवो, अंते न रह्या ते थोभरे ॥ मा० ॥ १५ ॥

अस्थिर संसार जाणी करो, ममता न करो कोइरे ॥ कवी ऋषभनोरे शीखडो, सांभळजो सहुं कोइरे ॥ मा० ॥ १६ ॥

॥ श्री आत्महितशिक्षा सज्झाय ॥

॥ आवो जमाइ प्राहुणा जयवंताजी ॥ ए देशी ॥ चेतना कहे कर जोडोनेरे ॥ सुणो रंग रसीया ॥ माणीगर आतमराम ॥ प्रीतम पातळीआ ॥ कुमति कदाग्रह गेहनीरे ॥ सु० ॥ कुडकपटनुं धाम ॥ प्री० ॥ १ ॥ कुलहीणी कुलक्षणीरे ॥ सु० ॥ लज्जाविहुणी रीसाळ ॥ प्रो० ॥ क्रोधमुखी चंडालणी ॥ सु० ॥ छोडी द्यो पहनो ख्याल ॥ प्री० ॥ २ ॥ श्री जिनधर्म समाचरोरे ॥ सुणो० ॥ तन मन करो एक चित्त ॥ प्री० ॥ संध्याराग वादळ जीसोरे ॥ सु० ॥ छे संसार अनित्य ॥ प्री० ॥ ३ ॥ स्वारथीओ संसार छेरे ॥ सु० ॥ सहु स्वार्थे धरे नेह ॥ प्री० ॥ जब स्वारथ पूगे नहींरे ॥सु०॥ छटको देखावे छेह ॥प्री०॥४॥ काया माया कारमीरे ॥ सु० ॥ पलक पलक पलटाय ॥ प्री० ॥ समय समय आउ घटे रे ॥ सु० ॥ क्षण राख्युं न रहाय ॥ प्री० ॥ ५ ॥ लौकिक मातपिता सवे रे ॥ सु० ॥ बाह्य कुटुंब कहेवाय ॥ प्री० ॥ माल मूलक ए माळीयो रे ॥ सु० ॥ सवको छोडी जाय ॥प्री० ॥६॥ लोकोत्तर कुटुंबथीरे ॥ सु० ॥ प्रेम धरो अंतरंग ॥ प्री० ॥ धैर्यपिता व्रत बांधवीरे ॥ सु० ॥ आत संजम शुभीचंग ॥ प्री० ७ ॥ सुकुळणी भगिनी दयारें ॥ सु० ॥ जगहित वच्छल चित्त

॥ मी० ॥ तुछ भासण खींमा धरणीरे ॥ सु० ॥ पुत्र विवेक पवित्त ॥ मी० ॥ ८ ॥ शियल भूषण अंबर धरोरे ॥ सु० ॥ तिलक आणा वितराग ॥ मी० ॥ सुमति रसोयण तप रुपीरे ॥ सु० ॥ भोजन खटरसपाक ॥ मी० ॥ उपशम सुंदर मंदिरेरे ॥ सु० ॥ ज्ञानदीपक मनोहार ॥ मी० ॥ ध्यान पल्यंक बिछावीनेरे ॥ सु० ॥ धर्मक्रीडा करो श्यार ॥ मी० ॥ १० ॥ समकित समचित पालीएरे ॥सु०॥ टाली मन विखवाद ॥ मी० ॥ विनय करो सखाइयोरे ॥ सु० ॥ गाळे कुमतिनो नाद ॥ मी० ॥ ११ ॥ एक कुटुंब छे तुमतणोरे ॥ सु० ॥ अचळ संबंधहठराय ॥ मी० ॥ काल अनादिनो शाश्वतोरे ॥ सु० ॥ भाखेश्री जिनराय ॥ मी० ॥ १२ ॥ प्रेमे कांत ए सेवतांरे ॥ सु० ॥ प्रगटे रुप अभंग ॥ मी० ॥ श्री विजयरंग कृपा थकोरे ॥ सु० ॥ दीपे अनुपम अंग ॥ मीतम पातळीआ ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अभक्ष्यनी सज्झाय ॥

॥ जिन शासनरे, शुद्धि सद्दहणा धरो, मिथ्यामतिरे, कुमति कदाग्रह परीहरो ॥ महीपालोरे, ते नर समकित मन खरो ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ मनखरो समकित शुद्ध पालो, टाळो दोष दया परो ॥ धुर पंच अणुव्रत त्रिण गुणव्रत, चार शिक्षाव्रत धरो ॥ इम देशविरति क्रिया निरति, सुणो भवियण मन रुळी ॥ दाखविये गुण परह केरा, दोष मम काढो वळी ॥ २ ॥ मम काढोरे, लोभी

नर कुडो करो ॥ जाणी सावधरे, अभक्ष बावीस परिहरो ॥ वड पीपलरे, पीपरने कठुंवरो ॥ उंबर फलरे, रखे तुमे भक्षण करो ॥ ३ ॥ त्रुटक ॥ रखे तुमे भक्षण करो माखण, मद्य मधु आमिष तणो ॥ विष हेम करहा छांडो परहा, दोष मल माटी घणो ॥ परिहरो मंजन रयणी भोजन, प्रथम दुर्गति बारणुं, मत करो वालु अति असुरो, रवि उदे वीण पारणो ॥ ४ ॥ अथाणुंरे, अनंतकाय सवी नामीये, काचा गोरसरे, मांहि कठोल न जीमीये ॥ वेंगण-रे, तुच्छ फल सवि छांडीए, आपण पूर्वेरे, व्रत लीधुं नवी खंडीए ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ नवि खंडीए सवि नेम लेइ, लेए फल व्रत भंग-नो, अजाण फल बहु बीज भोजन, चलित रस हुए जेहनो ॥ संवरे आणी अभक्ष्य जाणी, तजो ए बावीसए ॥ गुरु वयण विगते वली पीछो, अनंतकाय बत्रीसए ॥ ६ ॥ अनंतीरे, कंद जाति जाणो सहुं, जस भक्षणरे, पातक बोल्या छे बहु ॥ कचुरोरे, हल-दर निलु आदु वली, वज्र चुरणरे, कंद बहु कुंलि फली ॥ ७ ॥ त्रुटक ॥ वली फलीय कुयली बीज पाखे, चाखे चतुर नर आंब-ली ॥ रतालु पेडालु थेग थोहर, सतावरी लसण कली ॥ गाजर मुला भलो गरणो, वरीयाली ठुंक वथ्थुलो ॥ पल्यंक सूरण वाल वीली, मोथ मीली सांभळो ॥ ८ ॥ वंस कारेलारे, कुंपल कुंला तरुतणा ॥ अंकुरारे, लोटा ते जल पोयणा ॥ कुमारिरे, भमर हसनो छालडी ॥ जे कहीयेरे, लोके अमृत वेलडी ॥ ९ ॥ त्रुटक ॥ वेलडी केरा तंतु ताजा, खीलोडाने खरसुआ ॥ भोमी

फोडा छमाकार जाणो, निल फूल सवे जुआ ॥ बत्रीस बोल प्रसिद्ध बोल्या, लक्ष्मी रत्नसूरि इम कहे ॥ परिहरे जे नर दोष जाणी, ते शिव सुख लहे ॥ १० ॥

॥ उपदेशनी सज्झाय ॥

तुने संसार सुख किम सांभरेरे लोल, दुःख विसर्यां शु गरभावासनाजो ॥ नव मास तुं रह्यो माने उदरेरे लोल, मलमूत्र अशुची विसरामजो ॥ तु० ॥ १ ॥ तीहां हवा पवन नहीं संचरेरे लोल, नहीं सेज तळाइ पलंगजो ॥ तीहां लटको रह्यो उंधे शीरेरे लोल, दुःख सहन अनंत अपारजो ॥ तु० ॥ २ ॥ उठ कोडी सूय ताती करोरे लोल, समकाले चांपे कोई रायजो ॥ तेथी अनंतगुणो तीहां कणेरे लोल, दुःख सहन विचार तव थायजो ॥ तु० ॥ ३ ॥ हवे प्रसवे जो मुजने मावडीरे लोल, तो हुं करुं तप जप ध्यानजो ॥ हवे सेवुं सदा जिन धर्मनेरे लोल, मुकु कुगुरुनो संग अज्ञानजो ॥ तु० ॥ ४ ॥ ज्यारे जनमीयो त्यारे भूली गयोरे लोल, उहां उहां रह्यो इम कहेजो ॥ तीहां लागी लालच रमवा बणीरे लोल, आयु अंजलीजल सम वाहजो ॥ तु० ॥ ५ ॥ इम बालक वय रमते गइरे लोल, थयो जोबने मकरध्वज समानजो॥ चित्त लाग्यो तदा रमणी सुखेरे लोल, पुत्र पौत्रा देखी हरखायजो ॥ तु० ॥ ६ ॥ थइ चिंता विवाबाजमनीरे लोल, धन कारणे

धावे निस दीसजो ॥ पुण्य हीणो थइ पामे नहींरे लोल, चिंते चोरी करुं के लुटुं देशजो ॥ तु० ॥ ७ ॥ गयो योवन आवी जरा डाकणीरे लोल, धूज्यो कर पग शीरने शरीरजो, घरे कह्युं कोइ माने नहींरे लोल ॥ पड्यो करे पोकार नहीं धीरजो ॥ तु० ॥ ॥ ८ ॥ इम काल अनंतो वही गयोरे लोल, अब चेत मूर्खना सिरदारजो ॥ आवो जोग मळवो मुश्कील छेरे लोल, सेवो श्री जिन शिव संकेतजो ॥ तु० ॥ ९ ॥ कवि दास कहे मुज साहेबोरे लोल, कुडो कपटी कुशील फीर मोडजो ॥ मेंतो दीठो नहीं कोइ देशमांरे लोल, मोटो धर्मनो ठग ठाकोरजो ॥ १० ॥ मुनि तत्त्व सागरना पसायथीरे लोल, धर्म ध्यान थयो मूज मांहेजो ॥ संघ-सेवा करे शांतिनाथनीरे लोल, तेथी मंगळिक माळ वरतायजो ॥ तु० ॥ ११ ॥ ओगणोसे त्रीस अशाडनीरे लोल, सुद एकमने बुधवारजो ॥ प्रभु करो कृपा कवीदास पेरे लोल, धन धातीयां चार निवारजो ॥ तु० ॥ १२ ॥

॥ अथ श्रीमार्गानुसारी गुणनी सज्झाय ॥

॥ तप सरीखु जगको नही---ए देशी ॥

वीर कहे भवीजन प्रत्ये, मार्गतणो उपदेश हो ॥ सुंदर ॥ मार्गना अनुसरवा विना, किम लहे मार्ग प्रवेश हो ॥ सुंदर ॥ १ ॥ मार्गानुसारी गुण भजो, ते संख्या पांत्रीस हो ॥ सुंदर ॥

तेहथी गृहीधर्म योग्यता, होय तेह कहोश हो ॥ सुं० ॥ मार्गानु० ॥ २ ॥ न्यायोपार्जित संपदा (१) ॥ शिष्टाचारनो चाह हो (२) ॥ सुं० ॥ अन्य गोत्रीयना कुलशीले, सरखा साथे विवाह हो (३) सुंदर० ॥ मार्गा० ॥ ३ ॥ पाप कार्यथी बीहवुं (४) देशाचार सापेक्षहो (५) ॥ सुंदर ॥ अपयश कोइनो न बोलवो, राजादिकनो विशेषे हो (६) ॥ सुंदर० ॥ मार्गा० ॥ ४ ॥ नहि अति वावर सांकडे, ठाणाये करवो वासहो ॥ सुं ॥ पाडोशी होये भला, नहीं बहुद्वार प्रकाशहो (७) ॥ सुं० ॥ मार्गा० ॥ ५ ॥ संग सदाचारी तणो (८), मातपितानी सेव हो (९) ॥ सुंदर० ॥ बहु उपद्रवने उपने, स्थानक तजवा हेव हो (१०) ॥ सुं० मा० ॥ ६ ॥ नीच-कर्म अप्रवर्त्तना (११), करवो व्यय जोइ आय हो (१२) ॥ सुं०॥ वित्त प्रमाणे वेसडो (१३), अडगुण बुद्धि प्रथाय हो [१४] ॥ सुं०॥ मा० ॥ ७ ॥ सांभलवुं नित्य धर्मनुं (१५), अजीरणे भोजन त्याग हो [१६] ॥ सुंदर० ॥ भोजन करवुं सातमि, भूख तणे बहु लाग हो (१७) ॥ सुं० मा० ॥ ८ ॥ धर्मार्थ कामनुं साधवुं, मांहो मांहे अविरोध हो [१८] ॥ सुंदर० ॥ साधु अतिथिनी दीननी, पडिअरणा जहां संधि हो (१९) ॥ सुंदर० मार्गा० ॥ ९ ॥ पर-पराभव बुद्धिये करी, कार्य तणो अनारंभ हो (२०) ॥ सुं० ॥ विनय नयादिक गुण तणो, पक्षपाते नहिं दंभ हो [२२] ॥ सुं० मा० ॥ १० ॥ देशनिकाल विरुद्धनी, आचरणा परिहार हो (२२) सुंदर० ॥ कार्य आरंभ अवसरे, शक्ति अशक्ति विचार हो

(२३) सु० मा० ॥ ११ ॥ ज्ञानी गुणवंत सेवना (२४), आश्रित पोसवो ध्यान हो [२५] सुंदर० ॥ दीर्घ दृष्टि विचारवुं (२६), न्यून विशेषनुं ज्ञान हो (२७) सु० मा० ॥ १२ ॥ कीधा गुणनुं जाणवुं (२८), जन अनुकुल प्रवृत्ति हो [२९] ॥ सुंदर ॥ लज्जा (३०) दयाने (३१) सौम्यता (३२), परउकारोनी वृत्ति हो (३३) सुं० मा० ॥ १३ ॥ अंतर रिपु षडवर्गजे, काम क्रोध लोभ मान हो ॥ सुन्दर ॥ मदने हर्ष जीतवा (३४), वश पंचिंद्रिय तान हो [३५] सुं० मा० ॥ १४ ॥ एह गुणे जे गृहीपणुं, पाले ते धन्य जीव हो ॥ सुं० ॥ ते भव जुगल आराधतां, हुए आनंदी सदीव हो ॥ सुं० मा० ॥ १५ ॥ प्राये हुए तेहने विषे, धर्म बीजनो प्रसार हो ॥ सुं० ॥ शुद्ध भूमीये बीज वावीया, धान्य जाति वि-स्तार हो ॥ सुं० मा० ॥ १६ ॥ इम जाणो गुण आदरो, आदि धार्मिक एह जाणी हो ॥ सुं० ॥ पंडित शांतिविजय तणो, मान कहे शुभवाणी हो ॥ सुं० मा० ॥ १७ ॥ इतिश्री मार्गानुसारोना पांत्रीस गुणनी सज्झाय संपूर्ण.

॥ कठियारानी सज्झाय ॥

॥ वीर जिनवररे, गैातम गणधरने कहे॥ गुरु वाणीरे, पुन्य-वंत प्राणी सद्दहे ॥ कठियारोरे, परदसी दुरलोभए ॥ नवि निश्चयरे, नवि पामे प्रतिबोधए ॥ त्रुटक ॥ प्रतिबोध निश्चय ते नवि पामे,

जीवते दुर बोधए ॥ धन करम मरम जोग जडने, धर्म साथे विरोधए ॥ तब कहे गौतमस्वामी, कर संपुट करी मनोहार ए, ॥ दृष्टांत कठियारातणो, मुज कहोने जगदाधार ए ॥ १ ॥ ढाल ॥ तब जल्पेरे, चरम जीनेसर तेह भणी ॥ सुण उत्तमरे, गौतम गोत्र तणा धणी ॥ कठियारोरे, कोइक एक पुरे रहे ॥ तेतो अनुदानरे, मूलो लेवा वन वहे ॥ त्रुटक ॥ वन वहे ते इंधण काज, गिरिगद्धर गयो, अतिसरल सुंदर तरु निहालो, हैया मांहे हरखीत थयो ॥ तेहतरु छेद्यो मूलखणतां, नीकळी एक माटली, वर पंचरत्ने जडित अद्भुत, जाति रुपतणी भली ॥ २ ॥ सीर भूलोरे, बासे ते धरी माटली ॥ घरे आवतांरे, दृष्टि हुइ अति आकुली ॥ मूर्खो वेचीरे, न शक्यो ते घरमां ठवि ॥ खल खावारे, आव्यो दीनपणुं चवी ॥ त्रुटक ॥ दीनपणुं चवि सुख विपुण हुतो, उछीनो खल आणीओ ॥ कनक माटली मांहे घाली, रांधे मूरख प्राणीओ ॥ मूलीका केरा खंड कापी, अगनी मांहे ते धरे ॥ तेह तणो परिमल अति अनर्गल ॥ सबल सघले विस्तरे ॥ ३ ॥ एहवे एकरे, धन धने अवतारीओ ॥ तीण पंथेरे, वडवखती व्यवहारीओ ॥ जातां थकांरे, गंध घणो तस आवीयो ॥ मन भीतररे, विस्मय भारी पामियो ॥ त्रु० ॥ पामीयो ते गंध किहांथी, बावना चंदन तणो ॥ एवो उदारने कवण भोगी, द्रव्य एम केहने घणो ॥ ते गंधने अनुसार आवे, गेह कठियारा तणे ॥ अति असमंजस निहाळी, शेठ शीखामण भणे ॥ ४ ॥ अरे मुरखरे, ममकर तुं अका-

जरे ॥ कांइ बालेरे, बावना चंदन आजरे ॥ तुज आयुंरे, भूलि कनक बरोबरे ॥ सुख भोगवरे भामिनि सुंदर मंदिरे ॥ त्रु० ॥ मंदिर सुंदर जिम पुरंदर, कर विनोद विलासए ॥ एह रयण रुडां कांइले, पुरवुं तुज आशए ॥ मूरख समजे नहीं कंचन, रयण विणसाडे जडे ॥ मनखेद धरता घरे सिधाव्या, शेठ उपनय जगवडे ॥ ५ ॥ भवपाटणरे, विस्तर भूरी वखाणीये ॥ मन जालीरे जोव कबाडी जाणीये ॥ रुडी कायारे, कनक तणी ए माटली ॥ पंचइंद्रिरे, जोती रतन उपर छली ॥ त्रु० ॥ उपर छली रुचि रत्न केरी, विषय खोल असार ए ॥ तेहतणे काजे आयुचंदन, दहे मुढ गमारए ॥ निजकाया इंद्रि विपुण हुतो, कांति सकल करे वृथा ॥ ए वात सघले विस्तार पामी, जेम तेल जल मांहे यथा ॥ ६ ॥ शेठ सद्गुरुरे, प्रीति धरेप्रति बोधवा ॥ उपगारीरे, दीए उपदेश नवा नवा ॥ नवि बुझेरें, भारें करमी जोवडो ॥ जन्म अंधोरे, करे शुं तस दीवडो ॥ त्रु० ॥ दोवडो ते शुं करें सद्गुरु, विषय अंधा जे जना ॥ कलह कारी घरह केरी, वृथा निर्मलता विना ॥ ए सुणी उपनय विषम विषय, खल समो वीख वामीए ॥ गुण विजय अधिपति वीरजपति, परम पदवी पामीए ॥ ७ ॥ इति कठियारानी सज्झाय ॥

॥ श्री कर्म छत्रीसो ॥

॥ राग आसाउरी ॥ कर्म थकी छुटे नहीं प्राणी, कर्म सबल दुःख खाणजी ॥ कर्म तणे वश जीव पडया सहु, कर्म करे ते प्रमाणजी ॥ १ ॥ करम० ॥ टेक ॥ तीर्थंकर चक्रवर्त्ती अतुल बळ, वासुदेव बलदेवजी ॥ ते पण कर्म विटंव्या कहीये, कर्म सबल नीत मेवजी ॥ २ ॥ क० ॥ मुक्ति भणी उठ्या जे मुनिवर, ते पण चुक्या केइजी, सतीयो मांहे पड्यां दुःख सबला, मत को पाप करेइजी ॥ क० ॥ ३ ॥ कुण कुण जीव विटंव्या करमे, तेहतणां कहु नामजी ॥ कर्म विपाक घणा अति कडुवा, धरम करो अभिरामजी ॥क०॥४॥ आदिसर आहार न पाम्या, वरस सीम कहेवाय जी ॥ खातां पीतां दान दोयंतां, मतको करो अंतरायजी ॥ क० ॥ ॥ ५ ॥ मल्लिनाथ तीर्थंकर लीधो, स्त्रीनो अवतारजी ॥ तप करंता माया तणी कीधी, कर्मे नगरनुं कारजी ॥ क० ॥ ६ ॥ गोशाले संगम गोवाले, कीधो उपसर्ग घोरजी ॥ महावीरने चीस पडावो, करमसुं केहो जोरजी ॥ क० ॥ ७ ॥ साठ सहस सुतनो समकाले, लाग्यो सबलो दुःखजी ॥ सगरराय थयो मूर्छागत, करम न सांसे सुखजी ॥ क० ॥ ८ ॥ वळी सुभूम अतिसुख भोगवतो, षटखंड लीलविलासजी ॥ सातमी नरक मांहे लइ नांख्यो, कर्मनो किश्यो विसवासजी ॥ क० ॥९॥ ब्रह्मदत्तने आंधो कीधो, दीठां दुःख अपारजी ॥ कुरुमति ॥ कुरुमति पडयो पोकारे, सातमी नरक मोजारजी ॥ क० ॥ १० ॥ इंद्र वखाण्यो रुप अनोपम,

ते विणठो ततकालजी ॥ सातसें वरस सही बहु वेदना, सनत-कुमार करालजी ॥ क० ॥ ११ ॥ कृष्ण कुण अवस्था पामो, दीठो द्वारिका दाहजी ॥ मातपिता पण काढी न शक्या, आप रह्यो वनमांहिजी ॥ क० ॥ १२ ॥ राणो रावण सबल कहातो, नवग्रह कीधां दासजी ॥ लक्ष्मण लंकागढ लूटायो, दशशिर छेद्यां तासजी ॥ क० ॥ १३ ॥ दसरथ राय दीयो देशवटो, राम रहीयो वनवासजी ॥ वळी वियोग पडयो सीताने, आठ पहोर उदासजी ॥ क० ॥ १४ ॥ चिर प्रतिपाल्यो चारित्र छोडी, लीधो बांधव-राजजी ॥ कुंडरीकने कर्मे विटंब्यो, कोइ न सर्यो काजजी ॥ ॥ क० ॥ १५ ॥ कोणिक काठ पंजर मांहि दीधो, श्रेणिक आप-णो बापजी ॥ नरक गयो नारो मारो तो, प्रगट्यो हिंसा पापजी ॥क०॥१६॥ जसु अढार मुगटबंध राजा, सेवक रहे करजोडीजी ॥ कोणिकथी बोहनो राय चेडो, कूप पड्यो बलछोडीजी ॥ क० ॥ ॥ १७ ॥ लुब्धो मुंज मृणालवतीसुं, उज्जेणीनो रायजी ॥ भीख मंगावी सुळी दीधो, कर्णाट राय कहायजी ॥ क० ॥ ॥ १८ ॥ वाचना पांचसें साधुने देतो, जोगी वो थयो प्रद्धुजी ॥ अनार्य देशे सुमंगल उपन्यो, जोगो बटे संबंधजी ॥क० ॥ १९ ॥ कृष्ण पिताने गुरु नेमीश्वर, द्वारिका ऋद्धि समृद्धजी ॥ ढंढण ऋषि तिहां आहार न पाम्या, पूर्व कर्म प्रसिद्धजी ॥ क० ॥ २० ॥ आर्द्र कुमार महंत मुनिश्वर, व्रत लीधो वैरागजी ॥ श्रीमति नारी संघाते लुब्ध्यो, है है कर्म विपाकजी ॥ क० ॥ २१ ॥ सेलक

नामे आचारज मोटो, राज पिंड थयो गृधजी ॥ मद्यपान करी रहे सुतो, नहि पडिक्कमणा सुद्धजी ॥ क० ॥ २२ ॥ कमलप्रभ उत्सुत्र थकी थयो, साविद्या चारिज्जजी ॥ तीर्थंकर दलेमें लींगमांड्यो, ए देखो अचरिजजी ॥ क० ॥ २३ ॥ नंदिषेण श्रेणिकनो बेटो, महावीरनो शिष्यजी ॥ बार वरस वेश्याशुं लुब्ध्यो, कर्मनी वात अलखजी ॥ क० ॥ २४ ॥ भगवंतनो भाणेज जमाइ, गीरसुं कीधी वेठोजी ॥ तीर्थंकरनां वचन उथ्थाप्यां, हुवो जमाली सुरढंढजी ॥ क० ॥ २५ ॥ रज्जासाधवीने रोग उपन्यो, विणठ्यो कोढ सरीरजी ॥ भमी अनंत भव दुःख सहेती, दोष देखाड्यो नारिजी ॥ क० ॥ २६ ॥ शील सन्नाह घणो समजावी, तोहि न मुक्यां सालजी ॥ रुपिराय रुली भवमांहे, भुंडो घणो हवालजी ॥ क० ॥ २७ ॥ लख भवे सीम रुली वली लखमणा, कुवचन बोल्यां एमजी ॥ तीर्थंकर परपीड न जाणी, मैथुन निवार्यो केमजी ॥ क० ॥ २८ ॥ मुइ जाणी मुक्की वनमांहे, सुकुमालिका सरुपजी ॥ सार्थवाहे घर घरणी कीधी, कर्मनो अकळ सरुपजी ॥क०॥२९॥ रोहिणी साधु भणी वहोराव्यो, कडवो तुंबो तेडजी ॥ भव अनंत भमो चिहु गतिमां, कर्म न मुके केडजी ॥ क० ॥ ३० ॥ एम मृगांक लेखा मृगावती, सतानीकनी नारीजी ॥ कष्टपडी कमला रति सुंदरी, कहेतां नावे पारजी ॥ क० ॥३१॥ कर्म विपाक सुणी एम कडवा, जीव करे जिन धर्मजी ॥ जीव अछे कर्म तुं जीत्यो, पण हवे जीपितु कर्मजी ॥ क० ॥ ३२ ॥ श्रीमूलतान नगर मूल-

नायक, पार्श्वनाथ जिण जोयजी ॥ वासुपूज्य श्री सुमति प्रसादे, लोक सुखी सहु कोयजी ॥ क० ॥ ३३ ॥ श्री जिनचंदसूरि, जिनसिंघसूरि, गच्छपति गुण भरपूरजी ॥ सिंधु जेसलमेरी श्रावक, खडतर गच्छ पडुरजी ॥ क० ॥ ३४ ॥ सकलचंद सद्गुरु सुपसाये, सोलसे अट्ठसट्ठीजी, कर्म छत्रीसी एम ए कीधी, माह तणी सुद छट्ठीजी ॥ क० ॥ ३५ ॥ कर्म छत्रीसी काने सुणीने, करजो व्रत पच्चखाणजी ॥ समग सुंदर कहे शिवसुख लेशो, धर्म तणो परमाणजी ॥ क० ॥ ३६ ॥

॥ श्री परदेसी राजानी सज्झाय. ॥

॥ प्रभुजी वीर जिणंदने वंदीए ॥ ए देशी ॥

सूरिश्वर श्वेतांबी नयरी समोसर्या, श्रीकेशि गणधारहो ॥ परदेशि राजा ॥ आवो सांभलिये दीये गुरु देशना ॥ प्राणी भवसागर भमतां थकां, लाध्यो नर अवतारहो ॥ प० ॥ १ ॥ पापी आतमशुं निद्रा करे, एतो जागरण ठाम हो ॥ प० ॥ निश्चय नरक तणां दुःख लाववा, दुती ए हिंसा नाम हो ॥ प० ॥ २ प्राणी आतम सरखो प्राहुणो, आव्यो छेज घर देह हो ॥ प० ॥ तो तुं तेहने केम नथी देखतो, असंख्य प्रदेशी एह हो ॥ प० ॥ ३ ॥ एहनुं मूल घर मोक्षमां मोटकुं, एहने ऋद्धि अपार हो ॥ प० ॥ एतो अनंत चतुमयी आतमा, एकत्रीस गुणनो भंडार हो ॥प०॥४॥ नावे नजर ते चर्म नेत्रथी, ज्ञानथी देखो सरुप हो ॥ प० ॥ एवां

वचन सुणो गणधर तणां, बोल्यो नास्तिक भूप हो ॥ प० ॥ ५ ॥ स्वामी जीव किहां दिसे नहीं, जोयु में चोरशरीर हो ॥ घाली भुंइरा मांडढ कीयो, जिहां न संचरे समीर हो ॥ प० ॥ ६ ॥ तो ते मरण लह्यो जीव क्यां गयो, क्यांथो आव्या क्रमीया जोव हो ॥ प० ॥ ७ ॥ जोयो चूर्ण करी जीव नांव जड्यो, जोयो तोळोने भार हो ॥ प० ॥ माटे जगमांहे जोव नथी, किहां पंचभूत पिंड विशेप हो ॥ प० ॥ ८ ॥ गुरु कहे शंख शब्द भुंइरे करो, सांभले बाहिर केम हो ॥ प० ॥ कोने शब्द किहांथी आवीयो, जीवगति पण तेम हो ॥ प० ॥ ९ ॥ अरणी काष्ट चूरण करीजोइए, ते पण अग्नि ते मांहि हो ॥ प० ॥ दइडो पत्र तणो करी जोइए, तेनो तो लीए भार हो ॥ प० ॥ १० ॥ फरीने ते पाछो वळी तोलिए, करीने पवन संचार हो ॥ प० ॥ माटे सूक्ष्म स्वरुप ए जीवनो, पामो कोइ न पार हो ॥ प० ॥ ११ ॥ पहोंचे आयु अनंत प्रभु तणां, केवलज्ञाने संयुक्त हो ॥ पण ते भाग अनंतमो न कही शके, आतम सूक्ष्म अनंत हो ॥ प० ॥ १२ ॥ पुण्य पापनुं फल प्रत्यक्ष छे, निर्भागी धनवंत हो ॥ प० ॥ माटे पुण्य संयोगे पामीओ, राज्यनी ऋद्धि महंत हो ॥ प० ॥ १३ ॥ एवो गुरु उपदेश ते सांभळी, प्रतिबोध पाम्यो भूपाळ हो ॥ प० ॥ मूल समकित बारे व्रत ग्रह्यां, वैराग्य चित्त विशाळ हो ॥ प० ॥ १४ ॥ राणी सूरिकान्ता व्यभिचारिये, दिधुं राजाने विष हो ॥ प० ॥ शुभ ध्याने मरी सुर उपनो, ए सूरियाभ विमान हो ॥ प० ॥ १५ ॥ पामी

नरभव मोक्षमां जशे, माहाविदेह क्षेत्र मोझार हो ॥ प० ॥ एम वीरजी गौतमने कहे, रायपसेणी विचार हो ॥ प० ॥१६॥ केशी पास प्रभु संतानीया, कीधो त्यांथी विहार हो ॥ प० ॥ स्वामी गौतम पासे पडिवज्युं, शासन वीरनुं सार हो ॥ प० ॥ १७ ॥ ए तो उतराध्यनथी जाणजो, गणधर प्रश्न विचार हो ॥प०॥ थाजो विजय खुशाल पसायथी, उत्तम नित्य जयकार हो ॥ प० ॥१८॥

॥ सुबाहु कुमारनी सज्झाय ॥

॥ आज हजारो ढोलो प्राहुणो ॥ ए देशी ॥

॥ हवे सुबाहु कुमर एम विनवे, अमे लइशुं संजम भार ॥ माडी मोरीरे ॥ मा में वीर प्रभुनी वाणी सांभळी, तेणे में जाण्यो अस्थिर संसार ॥ माडी मोरीरे ॥ हवे हुं नहीं रहुंरे संसारमां ॥१॥ हांरे जाया तुज विना सुना मंदिर माळीआं, जाया तुज विण सुनो संसार ॥ जाया मोरारे ॥ माणेक मोतीने मुद्रिका ॥ कांइ ऋद्धि तणो नहीं पार ॥ जाया मोरारे ॥ तुज विना घडीय न नीसरे ॥ २ ॥ हांरे माजी तन धन जोबन कारमुं, कारमो कुटुंब परिवार ॥ माडी मोरीरे ॥ कारमा सगपणमां कुण रहे, में तो जाण्यो अस्थिर संसार ॥ माडी० ॥ हवे हुं० ॥ ३ ॥ हांरे जाया संजमपंथ घणो आकरो, जाया व्रत छे खांडानी धार ॥ जाया० ॥ बावीस परिसह जीतवा, जाया रहेवुंजी वनवास ॥ जाया० ॥ तुज० ॥ ४ ॥ हांरे माजी वनमां ते रहे छे मरगला, तेनी कुण करे छे संभाळ ॥

माडी० ॥ वन मृगनी पर चालशुं, एम एकलडी निरधार ॥माडो० ॥ हवे० ॥ ५ ॥ हांरे जाया शीयाळे शीत बहु पडे, जाया उनाळे लुवाय ॥ जाया मोरारे ॥ जाया वरसळो अति दोहीलो, कांइ घडीए वरस शोजाय ॥ जाया मोरारे ॥ तुज० ॥ ६ ॥ हांरे माजी नरक निगोदमां हुं भम्यो, भम्यो अनंत अनंती वार ॥ माडी० ॥ छेदन भेदन में सह्यां, ते कहेतां न आवे पार ॥ माडी० ॥हवे०॥ ७ ॥ हांरे जाया पांचसें पांचसें नारीयो, रुपे अपच्छरा समान ॥ जाया० ॥ उंचा ते कुलनी उपनी, रहेवा पांचसें पांचसें महेल ॥ जाया मोरारे ॥ तुज० ॥ ८ ॥ हांरे माजी घरमां जो नीकळे एक नागणी, सुखे निद्रा न आवे लगार ॥ माडी मोरोरे ॥ तो पांचसें नागणीयोमां केम रहुं, मारुं मनडुं आकुळ व्याकुल थाय ॥ माडी मोरीरे हवे० ॥ ९ ॥ हांरे जाया एटला दिवस हुं तो जाणती, रमाडोश वहुरोना बाळ ॥ जाया मोरारे ॥ दिवस अटारो आवीयो तुं लेछे संजम भार ॥ जाया० ॥ तुज० ॥ १० ॥ हांरे माजी मुसाफर आव्यो कोइ परुणलो, फरी भेगो थाय न थाय ॥ माडी मोरीरे ॥ एम माणस भव पामवो दोहीलो ॥ धर्म विना दुर्गतिमां जाय ॥ माडी० हवे० ॥ ११ ॥ हवे पांचसो वहुरो एम विनवे, तेमां वडेरी करे जवाब ॥ वालम मोरारे ॥ स्वामी तमे तो संजम लेवा संचर्या, स्वामी अमने कवण आधार ॥ वा० ॥ वालम विना केम रही शकुं ॥ १२ ॥ हांरे माजी मातपिताने भाइ बेनडो, नारी कुटुंबने परिवार ॥ माडी० ॥ अंत समय अलगा रहे, एक जैन धर्म

तरण शरण ॥ माडी० ॥ हवे० ॥ १३ ॥ हांरे माजी काची ते काया कारमी. सडी पडी विणसी जाय ॥ माडी० ॥ जीवडो जाये ने काया पडो रहे, मुआ पछी बाळी करे राख ॥ माडी० ॥ हवे० ॥ १४ ॥ हवे धारणी माता रही विनवे, आ पुत्र नहीं रहे संसार ॥ भविक जनरे ॥ एक दिवसनुं राज भोगवो, संजम लीधुं महावीर स्वामी पास ॥ भविक जनरे ॥ सोभागी कुंवरे संजम आदर्युं ॥ १५ ॥ तप जप करो काया शोषवी, आराधी गया देवलोक ॥ भविक जनरे ॥ पंनर भव पुरा करी, महाविदेह क्षेत्रमां जाशे मोक्ष ॥ भविक जनरे ॥ सोभागी कुंवर संयम आदरे ॥ १६ ॥ हांरे माजी विपाक सूत्रमां भांखीउ, बीजा सूत्र अखंड मोझार, भविक जनरे ॥ प्रथम अध्ययने ए कह्युं, सूत्र विपाकमां अधीकार, भविक जनरे ॥ सोभागी कुंवरे संयम आदर्यो ॥ १७ ॥

॥ मोह मिथ्यात्वनी सज्झाय.

॥ मोह मिथ्यातनी निंदमां, सुतो काल अनंत ॥ माजी मोरी ॥ परमाधामीने वश पड्यो, पाम्यो दुःख अनंत ॥ माजी मोरी ॥ १ ॥ करणी तो करसुं चित निरमळी ॥ ए टेक ॥ रागतणा रसीआ हुंता, सुण सुण करता तान, ॥ माजी० ॥ धर्मकथा नवि सांभली, कापे तेहना कान ॥ माजी० क० ॥ २ ॥ परनारीना रुपनो, विषय वखाण्यो जोय ॥ माजी० ॥ देव गुरु नीर-

ख्या नहीं, तेने आंखो काढे दोय ॥ मा० क० ॥ ३ ॥ अगनी धखंती पुतळी, चांपे हृदय मोझार ॥ मा० ॥ परनारीना संगथी, पाम्यो दुःख अपार ॥ मा० ॥ ४ ॥ सुरभी गंध सुंघ्या घणा, गुंथ्या फुल फराक ॥ मा० ॥ अंतर फूलेल पडावीया, कापे तेहना नाक ॥ मा० क० ॥ ५ ॥ जूठ वचन बोल्या घणुं, कुड कपटनी खाण ॥ मा० ॥ परमाधामी तेहनी, जीभ काढे जडताण ॥ मा० क० ॥ ६ ॥ गाडे वेहेले बेसीने, बळद दोडावे बाट ॥ मा० ॥ लोहमां धुंसरो धखावीयो, लेइ दोडावे घाट ॥ मा० क० ॥ ७ ॥ रस्ते लुंटया रांकने, करी करी क्रोध अन्याय ॥ माजी० ॥ मांकण मारे तेहने, पीले घाणी मांहे ॥ मा० क० ॥ ८ काचां कुलां फल भख्यां, गाजर मूलाकंद ॥ मा० ॥ उंधे मस्तक उपनो, पिडाया करे आक्रंद ॥ मा० क० ॥ ९ ॥ वनस्पति छेदन करी, काप्या तरु वनराय ॥ मा० ॥ सुडण निंदण कीधा घणा, कापे तेहनी काय ॥ मा० क० ॥ १० ॥ टांका जवारा वावीने, फुलां सेज बिछाय ॥ मा० ॥ सुख भोगवियां तेहने, कांटा चांपे काय ॥ मा० क० ॥ ११ ॥ कुली कलीयां फुलनी, तोडी गुंथ्या हार ॥ मा० ॥ सामली वृक्षे बांधीने, दीए कोरडानो मार ॥ मा० क० ॥ १२ ॥ वचन चकया नर जे हता, कुडा कपटी जेह ॥ मा० ॥ पकडी पछाडे पर्वतथी, खंडोखंड करता देह ॥ मा० क० ॥ १३ ॥ घरमां कलेश करावती, काथा कवली नार ॥ मा० ॥ परमाधामी तेहने, मुखमां भरेरे अंगार ॥ मा० क० ॥ १४ ॥ कुहाडे करीने छेदीयां, लीलां मोटां झाड ॥ मा०॥

परमाधामी तेहने, छेदे मस्तक फाड मा० क० ॥ १५ ॥ कोश कोदाला पावडा, पृथ्वी विदारण जेह ॥ मा० ॥ माग्यां जे कोइ आपशे, पामशे दुःख अछेह ॥ मा० क० ॥ १६ ॥ पूज्य कहीने पूजावता, करता अनरथ मूल ॥ मा० ॥ कामिनी गर्भ गलावता, तेने परोवी दीधा त्रिशूल ॥ मा० क० ॥ १७ ॥ करी अंगीठी अग्निनी, चलम भरे चकडोल ॥ मा० ॥ गांजा तमाकु जे पीए, ते तो गया नरकनो पोळ ॥ मा० क० ॥ १८ ॥ जे धर रमता होलीये, हसत्ता पाणो ढोल ॥ मा० ॥ परमाधामि तेहनी, घणी उडाडे रोल ॥ मा० क० ॥ १९ ॥ तातुं तरवुं उकाळीने, करी करी क्रोध अपार ॥ मा० ॥ पीचकारी भरीने छांटता, उपर नांखे खार ॥ मा० क० ॥ २० ॥ घणा होका पीवता, अगनि जलादिक जीव ॥ मा० ॥ ताता लोह तपावीने, मुख चांपे करे रीव ॥ मा० क० ॥ २१ ॥ पाप करमथी उपनो, कुडा विपाक मांहे ॥ मा० ॥ उपर चुंटे कागडा, मांहे कीडा खाय ॥ मा० क० ॥ ॥ २२ ॥ मानवनो भव पामीने, हवे जावुं नही हार ॥ मा० ॥ निरंतर दर्शन जिन धर्मनो, लेशे तो पामे भवपार ॥ मा० क० ॥ ॥ २३ ॥ इति माह मिथ्यात्वनी सज्झाय ॥

॥ श्री सिद्ध सज्झाय ॥

आठ कर्म चुरण करीरे लाल, आठ गुण परसिद्ध ॥ मेरे प्यारे ॥ क्षायिक समकितना धणीरे लाल ॥ वंदु वंदु एहवा सिद्ध

॥ मेरे प्यारे ॥ आ० ॥ १ ॥ अनंत नाण दरसण धरारे लाल, चीथुं वीर्य अनंत ॥ मे० ॥ अगुरु लघु सूक्ष्म कह्यारे लाल, अव्याबाध महंत ॥ मे० ॥ आ० ॥ २ ॥ जेहनी काया जेहवीरे लाल, उणी त्रीजे भागे ॥ मे० ॥ सिद्ध सिलाथी जोयणेरे लाल, अवगाहना वीतरागे ॥ मे० ॥ आ० ॥ ३ ॥ सादि अनंता तिहां घणारे लाल, समय समय तेह जाय ॥ मे० ॥ मंदिर मांहे दिपालीकारे लाल, सघलो तेज समाय ॥ मेरे० ॥ ४ ॥ मानव भवथी पामीयेरे लाल, सिद्ध तणा सुख संग ॥ एहनुं ध्यान सदा धरीरे लाल, एम बोले भगवइ अंग ॥ मेरे० अ० ॥ ५ ॥ श्री विजयदेव पटोधररे लाल, श्री विजयसेन सुरीस ॥ मे० ॥ सिद्ध तणा गुण ए कह्यारे लाल, देव दीए आसीस ॥ मे० ॥ आ० ॥ ॥ ६ ॥ इति श्री सिद्ध सज्झाय संपूर्ण.

॥ मेघकुमारनी सज्झाय ॥

॥ धारणी मनावेरे मेघ कुमारनेरे, तुं मुज एकज पुत ॥ तुजविण पुत्ररे दीनडा कीम गमेरे, राखो राखो घरतणा सुत ॥ धा० ॥ १ ॥ तुजने परणावुंरे आठ कुमारिकारे, ते बहु अति सुकुमाल ॥ मलपती चालेरे जोम वन हाथणीरे, नयण वयण सुविशाल ॥ धा० ॥ २ ॥ जाया ए ऋद्धि सघली भोगवोरे, ए करुणा नहीं तुजवोर ॥ हुं तुज मातारे एटलुं विनवुंरे, पछी लेज्यो दीक्षा हो वीर ॥ धा० ॥ ३ ॥ मुज मन जायारे हुंस हती घणीरे, जे रमाडीस बहु तणा बाल ॥ दैव अटारोरे देखी नवी शकयोरे,

उपायो एहज झाल ॥ धा० ॥ ४ ॥ सुण सुण माडीरे मेघ इम विनवेरे, नथी नथी केहनो कोय ॥ इण संसाररे थीर को नवो रह्यारे, हरीहर चक्रवर्त्ती जोय ॥ धा० ॥ ५ ॥ मेघ कुमाररे माता प्रतेने बुझवीरे, दीक्षा लीये वीरजीनो पास ॥ अमर कहे ए मुनिने वांदतां रे, छुटसे भव तणो पास ॥धा०॥६॥

॥ नवपद महिमानो सज्झाय ॥

॥ सरसती माता मया करो, आपो वचन विलासोरे ॥ मयणासुंदरी सती गायशुं, आणी होयडे भावोरे ॥ १ ॥ नवपद महीमा सांभळो, मनमां धरो उल्लासोरे ॥ मयणासुंदरी श्रीपालने, फलीयो धर्म उदारोरे ॥ न० ॥ २ ॥ मालव देशे मांही वली, उज्जेणी नयरी जाणोरे ॥ राज्य करे तीहां राजीओ, पुहवी पाल नरिंदोरे ॥ न० ॥ ३ ॥ राय तणी मन मोहनो, धरणी अनोपम होयरे ॥ तासु कुंखे सुता अवतरी, सुरसुंदरी मयणा जोइरे ॥ न० ॥ ४ ॥ सुरसुंदरी पंडित कने, शास्त्र भणी मिथ्यातोरे ॥ मयणासुंदरी शिद्धांतनो, अर्थ लीयो सुविचारोरे ॥ न० ॥ ५ ॥ राय कहे पुत्रो प्रत्ये, हुं तुठो तुम जेहोरे ॥ वंछीत वर मागो तदा आपु अनोपम जेहोरे ॥ न० ॥ ६ ॥ सुरसुंदरीए वर मागीओ, परणावी शुभ ठामोरे ॥ मयणासुंदरी वयणां कहे, कर्म करे ते होयेरे ॥ न० ॥ ७ ॥ करमे तुमारो आवीयो, वरवरो बेटो जेहोरे ॥ तात आदेशे करग्रहो, वरीयो कुष्टी तेहोरे ॥ न० ॥

॥ ८ ॥ आंबिलनो तप आदरी, कोढ अढारनो कालोरे ॥ सद्-गुरु आज्ञा शिरधरी, हुओ राय श्रीपालोरे ॥ न० ॥ ९ ॥ तप प्रसादे सुख संपदा, प्रत्यक्ष स्वर्गे पहुंतोरे ॥ उपसर्ग सवी दूरे टळ्या, पाम्यो सुख अनंतोरे ॥ नव राणी पाम्या भली, राज्य पाम्यो मनरंगोरे ॥ न० ॥ ११ ॥ तपगच्छ दिनकर उगीयो, श्री विजयसेन सुरिंदोरे, तास शिष्य विमल एम विनवे, सतीय नामे आणंदोरे ॥ १२ ॥

॥ साधुजीनी सज्झाय ॥

॥ पंचमहाव्रत दशविध यतिधर्म, सत्तर संजम भेद पाळेजी ॥ वैयावच दस नवविधब्रह्मचर्य, वाड भली अजुआलोजी ॥ १ ॥ ज्ञानादि त्रय बारे भेदे, तप करे जे अनोदानजी ॥ क्रोधादीक चारेनो निग्रह, ए चरणसीत्तरी मानजो ॥ २ ॥ चउविध पिंड वसती वस्त्र पात्र, निरदूषण ए लेवेजी ॥ सुमति पांचवळी पडीमां बारह, भावना बारह सेवेजी ॥ ३ ॥ पचविश पडीलेहण पंचइंद्रियो, विषय विकारथी वारेजी॥ त्रिण गुप्तीने च्यार अभिग्रह, द्रव्यादिक संभारेजो ॥४॥ करणसीतेरि एहवी सेवे, गुण अनेकवळी वाधेजी॥ संजमी साधु तेहने कहीये, बीजा सवो नाम धरावेजी॥५॥ ए गुण विण प्रवज्या बोळी, आजीविकाने तोळेजी, ते खटकाय असंजमी जाणो, धर्मदास गणी बोलेजी ॥ ६ ॥ ज्ञानविमल गुरु आणा धरीने, संजम शुद्ध आराधोजी ॥ जीम अनुपम शिवसुख साधो, जगमां कीर्ति वाधेजी ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीसीताजीनी सज्झाय ॥

॥ समेतशिखर जिन वंदीये--ए देसी ॥

॥ जनकसुता सीता सती, रामचंद्रनी घरनारी रे० ॥ कैकेयी वर अनुभावथी ॥ पोत्यां वन मजारीरे ॥ शीअलवंती सीता वंदीए ॥१॥ अती रुपे रावणे हरी, तीहां राख्युं शील अखंडरे ॥ रावण हणी लंका ग्रही, लक्ष्मण राम परचंदरे ॥ शीयलवंती सीता वंदीए ॥ २ ॥ अनुक्रमे अयोध्याए आवीआ, करमवशे थयुं दुखरे ॥ गरभवंती वने एकली, मुकी पण थयुं सुखरे ॥ सी० ॥ ३ ॥ लव अने कुश सुत परगडा ॥ विद्यावंत विलासरे ॥ अनुक्रमे धीजे उतरया, जल थयु अग्नी जासरे शीय० ॥ ४ ॥ दीक्षा ग्रही सुरपती थया, अच्युतकल्पेतेहरे ॥ तीहांथी चवी भव अंतरे ॥ शिव लेशे गुणगेहरे ॥ शीय० ॥ ५ ॥ लवकुश हनुमानजी, राम लह्या शिव वासरे० ॥ रावण लक्ष्मण पामसे, जिन गणधर पद खासरे ॥ शीय० ॥ ६ ॥ पद्मचरित्रे एहनो, विस्तारे अधिकाररे ॥ ज्ञानविमल गुरुथी लही, सुख संपत्ति जय काररे ॥ शीय० ॥७॥संपूर्ण॥

॥ इति सज्झाओ सम्पूर्ण ॥

॥ अथ पन्नर तिथिनी थोयो ॥

प्रतिपदा स्तुति,

॥ मंगल आठ करी जस आगल ॥ ए देशी ॥

॥ एक मिथ्यात्व असंजम अविरति, दूर करी शीव वसी-संजमसंवर विरति तणा गुण, क्षायिक समकित रसीया ॥जी ॥-

जो ॥ कुंथुं जिणंद सत्तरमा जिनवर, जे छठ्ठा नरदेवाजो ॥ पडवा दिन ते शिवगति पहोता, सेवुं ते नित्य मेवाजी ॥ १ ॥ एक कल्याणक संमति जिननुं, इम दशनुं परिमाणजी ॥ दस क्षेत्रे मळी त्रण चोवासी, तेहनां त्रीश कल्याणकजो ॥ पडवानो दिन अनोपम जाणों, समकित गुण आराधोजी ॥ सकल जिणेसर ध्यान धरीने, मनवंछीत फल साधोजी ॥ २ ॥ एक कृपारस अनुभव संयुत, आगम रयणनी खाणजी ॥ भविक लोक उपकार करता, भाखेश्री जिनभाणजी ॥ जिम मोंडां लेखे नवि आवे, एकादिक विणुं अंकजी ॥ तिम समकित विण पक्ष न लेखे, प्रतिपद सम सुविवेकजो ॥ ३ ॥ कुंथु जिनेसर सांनिध्यकारी, सेवे गधर्व यक्षजो ॥ वंछित पूरे संकट चुरे, देवी बाला मत्यक्षजो ॥ संवेगो गुणवंत महायश, संयम रंग रंगोलाजो ॥ श्री ज्ञान विमल कहे श्री जिननामे, नित नित होवे लीलाजी ॥ ४ ॥

॥ अथ बीजनी स्तुति ॥

॥ बीज दीने धर्मनुं बीज आराधीए, शीतल जिनतणी सिद्धिगति साधीए ॥ श्रीवत्स लंछन कंचन सम तनु, दृढरथ नृप सुत देह नेउ धणु ॥ १ ॥ अर अभिनंदन सुमति वासुपूज्यना, च्यवन जनम ज्ञान थया एहना ॥ पंच कल्याणक बीज दिने जाणीए, काल त्रीहुं त्रण चोवीसी जीन आणीए ॥ २ ॥ धर्म विहुं भेदेजे जिनवर भाखीयो, साधु श्रावक तणो भविक चित वासीयो ॥ ए समकित तणो सार छे मूलगु, अहर्निश आगम ज्ञाने जे ओलगु

॥ ३ ॥ मनुज सुर शासन सानिध्य कारकु, श्री अशोकभिधा विघ्न भय निवारकु ॥ शीतल स्वामीना ध्यानथी सुख लहे, धीर गुरु सीस नय विमल कवि इम कहे ॥ ४ ॥

॥ अथ त्रीजनी स्तुति ॥

॥ संखेसर पासजी पुजीए ॥ ए देशी ॥

॥ श्रेयांस जिणेसर शिव गया, ते त्रीज दीने निरमल थया॥ अेंशी धनु सोवन मय काया, भव भव ते साहिब जिनराया ॥ १॥ विमल कुंथु धर्म सुविधि जिना, जस जन्म ज्ञान जनुज्ञान घना ॥ वर्तमान कल्याणक पंच थया, जिणजी दीन निज करजो मया ॥ ॥ २ ॥ त्रिण तत्व जिहां त्रिण उपदिश्यां, ते प्रवचन वयणां चित वस्यां ॥ त्रिण गुप्तिगुप्ता मुनिश्वरा, ते प्रवचन वांचे श्रुत धरा ॥ ॥ ३ ॥ इशर सुर मानवी सुहंकरा, जे समकित दृष्टि सुरवरा ॥ त्रिकरण शुध समकित तणी, नय लीला होजो अति घणी ॥४॥

॥ अथ चोथनी स्तुति ॥

श्रावण सुदी दिन पंचमीए ॥ ए देशी ॥

सर्वार्द्ध सिद्धथी चविए, मरुदेवी उयरे उपन्नतो ॥ युगला धर्म श्रीऋषभजीए, चोथ तणो दिन धन्नतो ॥ १ ॥ मल्लि पास अभिनंदन ए, चविया वलि पास नाण तो ॥ विमल दीक्षा इम खट थया ए, संमति जिन कल्याण तो ॥ २ ॥ चार निक्षेपे स्थापना ए, चउ विह देव निकाय तो ॥ चउमुख चउविध देशना ए, भा-

खे सूत्र समुदाय तो ॥ ३ ॥ गोमुख यक्ष चक्केसरी ए, शासननो रखवाल तो ॥ सुमति संयोग सुवासना ए, नय धरि नेह निहालतो ॥ ४ ॥

॥ अथ पांचमनी स्तुति ॥

॥ श्रीशत्रुंजय गिरि तीरथ सार ॥ ए देशी ॥

॥ धर्म जिणंद परम पद पाया, सुव्रता नामे राणी जाया, सुरनर मनडे माया ॥ पण चालोस धनुषनी काया, पंचमी दान ते ध्याने ध्याया, तवमें नवनिधि पाया ॥ १ ॥ नेमि सुविधिना जनम कहोजे, अजित अनंत संभव सिव लीजे, दीक्षा कुंथु ग्रहीजे ॥ चंद च्यवन संभवनाण सुणीजे, त्रिहु चोवीसी इम जाणीजे, सहुं जिनवर प्रणमीजे ॥ २ ॥ पंच प्रकारे आगम भाखे, जिनवर चंद सुधारस चाखे, भविजन हैयडे राखे ॥ पंचज्ञान तणो विधि दाखे, पंचमी गतिनो मारग भाखे, जेहथी सवी दुःख नासे ॥ ३ ॥ जिन भक्ति प्रज्ञप्ति देवी, धर्मनाथ जिनपद प्रणमेवि, किन्नर सुर संसेवि ॥ बोधिबीज शुभ दृष्टि लहेवी, श्री नयविमल सदामति देवी, दुश्मन विघ्न हरेवि ॥ ४ ॥

॥ अथ छट्ठनी स्तुती ॥

॥ शंखेसर पासजी पुजीये ॥ ए देशी ॥

॥ श्री नेमि जिणेसर लहे दीक्षा, छठ दिवसे सुविधि च-

रण शिक्षा ॥ एककाजल एक शशिकर गोरा, नित समरु जिम जलधर मोरा ॥ १ ॥ पद्मप्रभु शीतल वीरजीना, श्रेयांस जिणंद कहे तिहां चवना ॥ विमल सुपासज्ञान अड होइ, कल्याणक संप्रति जिन जोइ ॥ २ ॥ जिहां जयणा खट विधकाय तणी, खट व्रत संपद मुनिराय तणी ॥ जे आगम मांहे जाणीये, ते अनोपम चितमां आणीए ॥ ३ ॥ जे समकित दृष्टि भावियां, संवेग सुधारस सेवीया ॥ नय विमल कहे ते अनुसरो, अनुभव रस साथे प्रीतिधरो ॥ ४ ॥

॥ अथ सातमनी स्तुति ॥

॥ चंद्रप्रभु जिन ज्ञान पाम्या, वळी लह्या भवपार ॥ महसेननृप कुल कमल दिनकर, लखमणा मात मल्हार ॥ ससिअंक ससिसमगौर देहे, जगत जन सिणगार ॥ सप्तमी दीने तेह नमतां, हुवे नित्य जयकार ॥ १ ॥ धर्म शांति अनंत जिनवर, विमलनाथ सुपास ॥ च्यवन जन्मदो च्यवंन शिवपद, पामीया दोइ खास ॥ एम वर्त्तमान जिणंद केरा, थया सात कल्याण ॥ तें सातम दीन सात सुखनुं, हेतु लहीए जाण ॥ २ ॥ जिहां सात नयनुं रुप लहीए, सप्तभंगी भाव ॥ जे सात प्रकृतिना क्षय कर्याथी, लहे क्षायिक भाव ॥ ते जिनवर आगम सकळ अनुभव, लहो लीलविलास ॥ जिम सात नरकनुं आयु छेदो, सातभव होवे नास ॥ श्री चंद्रप्रभ जिनराय शासन, विजयदेव विशेष ॥ तसदेवी ज्वाला करे

सांनिध, भविक जन सुविशेष ॥ दुःख दुरित इति संमत सघळे, विघन कोडी हरंत ॥ जिनराय ध्याने लहे लीला, ज्ञान विमल गुणवंत ॥ ४ ॥

॥ अथ आठमनी स्तुति ॥

॥ मह उठी वंदु ॥ ए देशी ॥

॥ अभिनंदन जिनवर, परमानंद पद पाम्या ॥ वली नमि नेमिसर, जन्म लही शिव काम्या ॥ तिम मोक्ष च्यवन बेहु, पास देव सुपास, आठमने दिवसे, सुमति जन्म सुपकाश ॥ १ ॥ वली जन्मने दिक्षा, ऋषभ तणा जिहां होय ॥ सुव्रत जिन जन्म्या, संभव च्यवनुं जोय ॥ वळी जन्म अजितनो, इम इग्यार कल्याण ॥ संप्रति जिनवरना, आठमने दिन जाण ॥ २ ॥ जिहां प्रवचन माता, आठ तणो विस्तार ॥ अडभंगीए जाणो, सवि जग जीव विचार ॥ ते आगम आदर, आणीने आराधो ॥ आठमने दिवसे, आठ अक्षय सुख साधो ॥ ३ ॥ शासन रखवाली, विद्यादेवी सोल, समकितनी सानिध्य, करती छाकमछोळ ॥ अनुभव रसलीला, आपे सुजश जगीस ॥ कवि धीरविमलनो, ज्ञानविमल कहे शीस ॥ ४ ॥

॥ अथ नोमनी स्तुति ॥

॥ सुव्रत सुविधि सुमति शिव पाम्या, अजित सुमति नमि संयम काम्या ॥ कुंथु वासुपूज्य, सुविधि जीन चवियां, नवमी दिन

ते सुरवर नमिया ॥ १ ॥ शांति जिणंद थया जिहांज्ञानी, वर्त्तमान जिनवर शुभध्यानी ॥ दश कल्याणक नवमी द्विवसे, सवि जिनवर प्रणमुं मन हरखे ॥ २ ॥ जिहां नव तत्व विचार कहीजे, नवविध ब्रह्म आचार लहीजे ॥ ते आगम सुणतां सुख लहीए, नवविध परिग्रह विरती कहीए ॥ ३ ॥ समकित दृष्टि सुरसंदोहा, आपे सुमति विलास स मोहा ॥ श्री ज्ञानविमल कहे जिननामे, दिन दिन दोलत अधिकी पामे ॥ ४ ॥

॥ अथ दशमनी स्तुति ॥

॥ कनक तिलक भाले ॥ ए देशी ॥

अरनमि जिणंदा, टालिया दुखदंदा ॥ प्रभुपास जिणंदा, जन्मे पूज्या महिंदा ॥ दशमी दीन अमंदा, नंदमां कंद कंदा ॥ भविजन अरविंदा, शासने जे दिणंदा ॥ १ ॥ अर जन्म सुहावे, वीरचारित्र पावे ॥ अनुभव रस लावे, केवलज्ञान थावे ॥ खट जिनवर कल्याण, संमति जे प्रमाण ॥ सवि जिनवर भाण, श्रीनिवासादि ठाण ॥ २ ॥ दशविध आचार, ज्ञान मांहे विचार ॥ दश सत्यप्रकार, पच्चखाणादि चार ॥ मुनिदशगणधार, भाखीया जिहां उदार ॥ ते प्रवचनसार, ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दसदिशि दिशीपाला, जे महा लोकपाला ॥ सुरनर महिपाला, शुद्ध दृष्टि कृपाला ॥ ज्ञानविमल विशाला, लील लच्छीमयाला ॥ जय मंगलमाला, पामसे तेह सुखाला ॥ ४ ॥

॥ अथ अगीआरसनी स्तुति ॥

॥ स्नातस्या प्रतिमस्य ॥ ए देशी ॥

॥ मल्लिदेवनो जन्मसंयम, महा ज्ञानं लह्या जे दीने ॥ ते एकादशी वासर शुभकर, कल्याणमालालयः ॥ वैदेहेश्वरकुंभजलधिवंश, प्रौल्लासने चंद्रमाः माता यस्य प्रभावती भगवती, कुंभध्वजो व्याजतः ॥ १ ॥ ज्ञानं श्री ऋषभाजितस्य, सुमति, पद्मर्भव सान्नमे ॥ पार्श्वारौ चरणंच मोक्षमगमत्, पद्मप्रभाख्य प्रभु ॥ इत्येतदशकं चयत्र दिवसे, कल्याणकानां शुभं ॥ जातं संप्रति वर्त्तमानजिन, पदद्युर्महामंगलम् ॥ २ ॥ सांगोपांग मनंतपर्यवगुणा, पेतं सदोपासके ॥ एकादश्य प्रतिमाश्च यत्रगदिता, श्रद्धावतां तीर्थपे ॥ सिद्धांताभिध भूपतिर्विजयते, विभ्रत्सदै एकादशां ॥ चारांगादिमयं वपुर्विलसितं, भक्तया नुतं भावतः ॥ ३ ॥ वैरोटया विदधाति मंगलनति, सद्दर्शनोनामिह ॥ श्रा मनमल्लि जिनेश शासनसूर, कुबेरनामा पुनः ॥ दिग्पालग्रहयक्षदक्षनिवहा, सर्वेपि ये देवता ॥ ते सर्वे विदधातु सौख्यमतुलं, ज्ञानात्मनां सूरिणां ॥ ४ ॥

॥ अथ बारसनी स्तुति ॥

॥ श्रेयः श्रीयां मंगल केलिसद्म ॥ ए देशी ॥

॥ जे द्वादशीने दिने ज्ञान पाम्या, अरसुव्रत चरण सुरेंद्र नाम्या ॥ मल्ली लहे सिद्धि संसार छोडी, विमल च्यवन वंदु बिहु हाथ जोडी ॥ १ ॥ पद्म प्रभु शीतलचंद्र जाया सुपास श्रेयांस

ववे नमिरायाः ॥ अभिनंदन शीतल चरण जान, इम तेर कल्याणक वर्त्तमान ॥ २ ॥ भिक्षु तणोजे प्रतिमा छे बार, ते द्वादशांगी रचना विचार ॥ उपांग बारह अनुयोगद्वार, छ छेद पय न्नादस मूलचार ॥ ३ ॥ श्री संघरक्षा करे देव भक्तत्या, सुरासुर देवपद प्रशकत्या ॥ सदा दिओ सुंदर बोध बीजं, सधर्म पाखे न किमे पतिजं ॥ ४ ॥

॥ अथ तेरसनी स्तुति ॥

॥ श्री शत्रुंजय गिरि तीरथ सार ॥ ए देशी ॥

॥ पढम जिणेसर शिवपद पामे, तेरसे अनुभव ओपम आवे, सकल समिहित लावे ॥ शांतिनाथ वळीमोक्ष सिधावे, दर्शन ज्ञान अनंत सुखपावे, सिद्ध स्वरुपी थावे ॥ नाभिराय मरुदेवी मात, ऋषभदेवना जे विख्यात, कंचन कोमल गात ॥ विश्वसेन नृप अचिरा मात, सेवो शांति जगतना तात, जेहना शुभ अवदात ॥ १॥ पद्मचंद्र श्रेयांस जिनेशा, धर्म सुपास जे जग जन इशा, संयम छे शुभ लेशा ॥ वीर अनंतने शांति महीशा, जन्म थया एहना सुजगीसा, चवीया अजीत जीनेशा ॥ एकादश कल्याणक हिसा, तेरस दीने सवि अमर महिसा, प्रणमे जेनो सदिशा ॥ सकल जीनेसर भवन दिनेसा, मदन मान निर्मथन महिशा, ते सेवो वीसवावीसा ॥ २ ॥ तेर काठियाने जे गाळे, तेर क्रियाना स्थानक टाळे, ते आगम अजुवाळे ॥ तेर सयोगीना गुण ठाणे, ते पामोने ज्ञाए-ज्ञाण, तेहने केवळ नाण ॥ भक्तिमान बहुमान भणीजे, आशातना

तेहनी टालीजे, जोनमुख तेर पद लीजे ॥ चार गुणा ने तेर करोजे, बावन भेद विनय भणीजे, जीम संसार तरीजे ॥ ३ ॥ चक्केसरी गोमुख सुर धरणी, समकित धारी सानिध्य करणी, ऋषभ चरण अनुसरणी ॥ गोमुख सुरनो मनडो हरणी, निर्वाणी देवी जय करणी, गरुड यक्ष सुर धरणी ॥ शांतीनाथ गुण बोले वर्णी, दुश्मन दुर करण रवि भरणी ॥ संपति सुखविस्तरणी, कोर्ति कमला उज्वल करणी, रोग सोग संकट उद्धरणी, ज्ञानविमल दुःख हरणी ॥ ४ ॥

॥ अथ चौदशनो स्तुति ॥

॥ वासुपूज्य जिनेसर शिव लह्या, ते रक्त कमलने वाने कह्या ॥ वासुपूज्य नृपति सुतमात जया, चंपा नगरीये जन्म थया ॥ चौदशी दिवसे जेसिद्ध गया, जस लंछन रुपे महीष थया ॥ ते अजर अमर निकलंक भया, तस पाय नमी कृत्य कृत्य थया ॥ १ ॥ श्रीशीतल संभव शांति वासुपूज्यजिना, अभिनंदन कुंथु अनंत जिना ॥ संजम कीए शुभ भावना, कोइ पंचम नाण लहे धना ॥ कल्याणक आठ शोहामणा, नित नित तस लीजे भामणा ॥ सविगुण मणी रयणा रोहिणी, पुरेवो सवि मननी कामना ॥ २ ॥ तिहां चउदस भेद जिव तणा, जगभेद कह्या छे अति घणां ॥ गुणठाणां चउद तीहां भण्या, चउदश पूर्वनो वर्णना ॥ नवि कीजे शंका दुषणा, अतिचार तणी तिहां धारणा ॥ प्रवचन रस कीजे वारणा, एह छे भवजल

तारणा ॥ ३ ॥ शासन देवी नामे चंडा, दिए दुर्गति दुर्जनने दंडा ॥ अकलंक कळा धरी सम तुंडा, जस जिव्हा अमृतरश कुंडा ॥ जसकर जपमाला कोहंडा, सुरनाम कुमार छेउदंडा ॥ जिन आगळे अवर छे एरंडा ॥ ज्ञानविमल सदा सुख अखंडा ॥ ४ ॥

॥ अथ पुनमनी स्तुति ॥

॥ श्री जिनपति संभव हुये संजम जिहां, श्रीमुनिसुव्रत–नमि च्यवनुं तिहां ॥ सकळ निर्मळचंद्र तणी विभा, विपदपक्ष तणो शिर पूर्णीमा ॥ १ ॥ धर्मनाथ जिन केवळ पामीआ, पद्म प्रभ जिन नाण समाधिआ, पंच कल्याणक संप्रति जिन तणा, थया पुनिम दिवसे सोहामणा ॥ २ ॥ पन्नर योग तणे विरहे लह्या, पन्नर भेदे सिद्ध जिहां कह्या ॥ पन्नर बंधन प्रमुख विचारणा, जिनवर आगम तेसुणी ए जना ॥ ३ ॥ सकल सिद्धि समहित दायका, सुरवर जिन शासन नायका ॥ विधुकरो उज्वळ कीर्तिकला घणी, ज्ञान विमळ जिननाम तणो गुणी ॥ ४ ॥ इति पुनमनी स्तुति ॥

॥ अथ अमावास्यानी स्तुति ॥

॥ चोपाइनी ॥ ए देशी ॥

॥ अमावास्यां तो थइ उजळी, वीरतणे निर्वाणे मिळी ॥ दिवाळी दिन तीहांथी होत, राय अढार करे उद्योत ॥ १ ॥ श्री श्रेयांस नेमि लहे ज्ञान, वासुपूज्य ग्रहे संयम ध्यान ॥ संप्रति जिननां

थयां कल्याण, अमावास्या दिवसे गुणखाण ॥ २ ॥ काल अनादि मिथ्यात्व निवास, पूरण संज्ञा कहीए तास ॥ आगम ज्ञान लह्यो जेणीवार, कृष्णपक्षी जीत्यो तेणीवार ॥ ३ ॥ मातंगयक्ष सिद्धाइ देवी, सांनिध्यकारी कीजे स्वयमेवि ॥ कवि ज्ञानविमल कहे शुभ-चित्त, मंगल लीला करो नित नित ॥ ४ ॥

॥ अथ पन्नर तीथीनी थोयों ॥

दीन सकल मनोहर ॥ ए देशी ॥

॥ सासयने असासय, चैत्यतणा बिहु भेद ॥ थापन स्वरुपे, रूपातित बेहु भेद ॥ बिहु पक्षे ध्यावो, जीम होये भव छेद ॥ अवि-चल सुखपामे, नासे सघला खेद ॥ १ ॥ उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी, काल बे भेद प्रमाण ॥ त्रिजेने चोथे, आरे जीनवर भाण ॥ उत्कुष्टा काले, सत्तरिसय जिनराज ॥ तिम वीस जघन्यथी, वदे सारो काल ॥२॥ बिहु भेदे भाख्या, जीव सकल जगमांहे ॥ एक कृष्ण-पक्षी एक, सुकलपक्षी पणमांहे ॥ वली द्रव्य कह्या छे, जीव अजीव वचार ॥ ते आगम जाणो, निश्चयने व्यवहार ॥ ३ ॥ संजमधर मुनिवर, श्रावक जे गुणवंत ॥ बिहु पक्षना सानिध्य, कारक सम-कितवंत ॥ जे शासन सुरनर, विघ्न कोडी हरंत ॥ श्री ज्ञानविम-लसूरि, लीला लब्धि लहंत ॥४॥ इति पन्नरतिथीनी थोयो संपूर्ण ॥

॥ अथ मौनअगिआरसनी थोय ॥

॥ गौतम बोले ग्रंथ संभाली, वर्धमान आगल रहीआली, वाणी अतिहि रसाली ॥ मौन अगीआरस महिमा भाली, किणे कीधो ने कहो किणे पाली, प्रश्न करे टंकशालि ॥ कहोने स्वामी परव पंचाली, महिमा अधिक अधिक सुविसाली, कुण कहे कह भ्रम टाली ॥ वीर कहे मागसर अजुआली, दोढसो कल्याणक निहाळी, अगीआरस कृष्णे पाली ॥ १ ॥ नेमनाथने वारे जाणो, कान्हुडो त्रण खंडनो राणो, वासुदेव सूपराणो ॥ परिग्रहने आरंभ भराणो, एक दिन आतिम किधो शाणो, जिन वंदन उजाणो ॥ नेमनाथने कहे हित आणी, वरसे बारु दिवस वखाणो, पाली थाउं हुं शिवराणो ॥ अतित अनागतने वर्त्तमान, नेउ जिननां हुआं कल्याण, अवर न एह समान ॥ २ ॥ आगम आराधो भवि प्राणी, जेहमां तीर्थंकरनी वाणी, गणधर देव कहाणी ॥ दोढसो कल्याणकनी खाणी, एक अगिआरसनो दिन जाणो, इम कहे केवळ नाणी ॥ पुन्य पापतणो जेह कहाणी, सांभळतां सुख लेख लखाणी, तेहनी स्वर्ग निसाणी ॥ विद्या पूर्वगत विरचाणी, अंग उपांग जे सूत्रे गुंथाणी, सुणवां दिये शीवराणी ॥ ३ ॥ जिन शासनमां जे अधिकारी, देव देवी जे समकित धारी, सांनिध्य करो संभारी ॥ धर्म करे तस उपर प्यारी, निश्चल धर्म करे सुविचारी, ते छे परउपगारी ॥ वीर मंडण महावीर जुहारी, पाप पखालुं जिननें जुहारी. लाभविजय हितकारी ॥ मातंग जक्ष सिद्धाइ सारी,

ओलग सारे सुर अधिकारी, श्री संघना विघन निवारी ॥ ४ ॥
इति मौन अगिआरसनी थोय ॥

॥ अथ सिद्धाचलनो थोयो ॥

॥ सकल मंगल लीला मुनि ध्याने, परभव घृतनुं दिधु दान, भविजन एह प्रधान ॥ मरुदेवाए जनमज दीधो, इंद्र सेलडी आगम कीधो, वंस इख्खाग ते सीधो ॥ सुनंदा सुमंगला राणी, पूरव प्रीत भली पटराणी, परणावे इंद्र इंद्राणी ॥ सुख विलसे रस अमीरस गुजे, पूरवनवाणुं वार शेत्रुंजे, प्रभु जइ एगले पूजे ॥ १ ॥ आदि नहीं अंतर कोइ एहनो, केम वर्णवीजे सखी गुण एनो, मोटो महिमा तेनो ॥ अनंता तीर्थंकर इण गिरि आवे, विहरमान व्याख्यान सुणावे, दिलभरी दिल समजावे ॥ सकल तीर्थनुं एहीज ठाम, सर्वे धर्मनुं एहोज ध्यान, ए मुज आतमराम ॥ रे रे मूरख मनसुं मुजे, पूजीये देव घणा शेत्रुंजे, ज्ञाननी सुखडी गुजे ॥ ॥ २ ॥ सोवन डुंगर टुंक रुपानो, अनोपम माणेक टुंक सोनानी, दीसे देरां दधानो ॥ एक टुंके मुनि अणसण करता, एक टुंके मुविव्रत तप करता, एक टुंके उतरता ॥ सूरजकुंड जलधिप लगावो, महीपालना कोट गमावो, तेने ते समु निपावो ॥ सवा लाख शेत्रुंजय महातम, पापतणो तिहां न रहे रातम, सुणतां पवित्र थाय आतम ॥ ३ ॥ रमणिक भुइरु गढ रढीयालो, नवखंड कुमर तीर्थ निहालो, भविजन पाप पखालो ॥ चोखा खाणने वाघण पोळ,

चंदन तलावडी ओलखाजोर, कंचन भरोरे अंधोल ॥ मोक्ष बारीनो जग जस मोटो, सिद्धसिला उपर जइ लोटो, समकीत सुखडी बोटो ॥ सोना गभारे सोवन जाली, झारो जिननी मूर्ति रसाली, चकेसरी रखवाली ॥ ४ ॥ इति श्री सोद्धाचलजीनी थोय संपूर्ण ॥

॥ अथ आठमनी थोय ॥

॥ अष्टम जिनचंद्रप्रभ नमीए, अष्टम महामद दुरे दमीए; दुर्गतिमांहे नव भमीए ॥ महसेन नंद जिनगुण रमीए, अष्ट महाभय भाव विसमीये, दुख दोहग निगमीए ॥ अष्ट मंगल जस आगलराजे, चंद्र लंछन जस चरणे छाजे, जग जस पडहो वाजे ॥ अष्ट कर्म भड संकट भाजे, प्रातिहार्य आठ विराजे, अष्टमी दिन तप ताजे ॥ १ ॥ अष्टापद जिनवरनां वृंद, जेहने प्रणमे असुर सुरिंद, जस गुण गाये नरिंद ॥ वंछित पूर्ण सुरतरु कंद, भाव भक्ति वंद् जिन चंद, जिम पामु आणंद ॥ अतित अनागतने वर्त्तमान, त्रण चोवीसी बहुतेर मान, तेहनुं धरोये ध्यान ॥ प्रह उठो नित्य कीजे गान, दिन दिन वाधे अति घणुं वान, अष्टमो दीन सुप्रधान ॥ २ ॥ सुखदाइ जिनवरनी वाणी, भाव सहित अति उलट आणी, ते नीसुणी शुभ प्राणी ॥ मद मच्छर हरवे सपराणी, सरस सुकोमल सुधा समाणी. अभिनव गुण मणि खाणी ॥ चौद पूर्वने अंग अगिआर, दस पयन्ना उपांग बार, छ छेदे मुळ सूत्र चार ॥ नंदीने अनुयोग द्वार, ए सवि समयतणुं अधिकार,

अठमी दीन सुविचार ॥ ३ ॥ चंद्रपभ जिन सेवक जक्ष, विजय-नामे ते प्रत्यक्ष, समकित धारी दक्ष ॥ चउविह संघ तणा जे लक्ष, तस कामित देवे सुव्रक्ष, वारे विघ्न विपक्ष ॥ अष्टमहासिद्धि भोग अपार, अष्टदिशे कीरति विस्तार, सकल सुजन परिवार ॥ अश-रण अबला दीन आधार, राज रत्नत्राचक सुखकार, अष्टमी पो-सह सार ॥ ४ ॥ इति आठमनो थोय ॥

॥ पजुसणनी थोय ॥

॥ पर्व पजुसण पुन्ये कीजे, सत्तरभेदी जिन पूजा रचीजे, वाजित्र नाद सुणीजे ॥ परभावना श्रीफलनी कीजे, याचक जनने दानज दीजे, जीव अमारी करीजे ॥ मनुज जनम फल लाहो लीजे, चोथ छठ अट्ठम तप कीजे, स्वामीवच्छल कीजे, इम अ-ट्ठाइमहोच्छव कीजे, कल्पसूत्र घर पधरावीजे, आदिनाथ पुजीजे ॥ १ ॥ वडाकल्प दीने धुरो मंडाण, दश कल्प आचार परमाण, नागकेतु वखाण ॥ पछे कीजे सूत्र मंडाण, नमुथ्थुणं होय प्रथम वखाण, मेघकुमार अहो ठाण ॥ दश अछेरानो अधिकार, इंद्र आ-देशे गर्भापहार, देखे सुपन उदार ॥ चोथे सुपने बीजो सार, सुपनपाठक आव्या दरबार, इम त्रीजुं जयकार ॥ २ ॥ चोथे वीर जनम वखाण, दिशि कुमरी सवि इंद्रने जाण, दिव्य पंच वखाण ॥ पारणे परिसह तपने नाण, गणधर वाद चोमासी परमाण, तिम पाम्या निरवाण ॥ ए छट्ठे वखाणे कहीए, तेलाधर दिवसे ए

लहीए, वीरचरित्र एम सुणीए ॥ पास नेमी जिन अंतर सात, आठमे ऋषभ थेरा अवदात, सुणतां होये सुखशात ॥ ३ ॥ संवच्छरी दिनसहु नरनारी, बारसें सूत्रने समाचारी, निसुणे अठमधारी ॥ सुणीए गुरु पट्टावली सारी, चैत्र परवाडी अति मनोहारी, भावं देव जुहारी ॥ साहमी साहमणो खामणा कीजे, समता रसमांही झीलीजे, दान संवच्छरो दीजे ॥ इम चक्केसरी सानिध कीजे. ज्ञान विमलसूरी जग जाणीजे, सुजस महोदय कीजे ॥ ४ ॥ इति श्री पर्युषणापर्व स्तुति समाप्त ॥

॥ अथ श्री नवपद् ओळीनी थोय ॥

॥ अंग देश चंपापुर वासो, मयणांसु श्रीपाल खासी, समकित सु मन वासी ॥ आदि जिणेसरनी उल्लासी, भाव पूजा कीधी मन आसो, भावधरो वोसवासो ॥ गलित कोड गयो तिणे नासी, सुंविधिसु सिद्धचक्र उपासी, थयो स्वर्ग निवासी ॥ आसो चैत्रनी पुनम मासी, प्रेम पुजा भक्ति विकासी, आदि पुरुष अविनाशी ॥ १ ॥ केसर चंदन मृगमद घोळी, हरखेसु भरी हेम कचोळी, शुद्ध जळे अघोळी ॥ नव आंबेलनी कीजे ओळी, आसो शुद सातमथी खोली, पूजो श्री जिन टोळी ॥ चिहुं गतिनी महा आपद चोळी, दुरगतिनां दुःख दूरे ढोली, कर्म निकाचित रोळी ॥ क्रोध कषाय तणा मद छोळी, जिम शिव रयणी भरम भोळी, पामो सुखनी ओळी ॥ २ ॥ आसो सुदी सातम सुविचारी, चैत्री

वण चित्तशुं निरधारी, नव आंबेलनी सारी ॥ ओळी कीजे आळस वारी, पुनिम लगे सचित्त परिहारी, देहरे देव जुहारी ॥ पडिक्कमणा बे कीजे धारी, सिद्धचक्र पुजो सुखकारी, श्री सिद्धांत मकारी ॥ श्री जिन भाषित पर उपकारी, नवपद जाप जपो नरनारी, जिम लहो मुक्तिनी बारी ॥ ३ ॥ श्याम भ्रमर सम वेणी काळी, अति सुंदर सोहे सुकमाली, जाणो राज मराली ॥ जलहल चक्र धरे रुपाली, श्रीजिन शासननो रखवाली, चक्रेश्वरी में भाळी ॥ जे ओळी करे उजमाळी, तेहनां विघन हरे सावाली, सेवक जिन संभाली ॥ उदय रत्न कहे आसन वाळी, जे जिन नाम जपे जपमाली, ते घेर नित्य दिवाली ॥ ४ ॥

॥ थंत्तण पार्श्वनाथनी स्तुति ॥

॥ स्थंभण पुरवर पास जिणंदो, अश्वसेन कुल कमल दिणंदो, आमोली अभव कंदो ॥ मोहराय शिर पाडे दंडो, तिहुअण जास प्रताप अखंडो, भविअण मन आणंदो ॥ भव भय भीड भलि परे चूरे, मन वंछित शवि संपद पुरे, मधुकर मोरी सारो ॥ वरुणज कहीए पश्चीम स्वामी, जिणे आराध्यो तुं शीरनामी. वछर लक्ष इग्यारो ॥ १ ॥ एसो सहस संवच्छर भूतल, सेव्यो स्वामी हीयडे निरमल, वासग विसइ स्वामो ॥ पछे पुज्यो ते परमेश्वर, सातमास नव दिवस निरंतर, दश रथ नंदन रामो ॥ केतो ए काळ प्रथम हरी ध्यायो, द्वारिका नगरी पाछल आयो, पूज्यो देव मोरायो ॥

द्वारिका दाह जल रहोओ, सागरदत्त शेठे संग्रहीओ, कांति नगर मोझारो ॥ २ ॥ नागार्जुन जोगी ते लीयो, सेढी तट तेहनो रस सीधो, तुं वीण अवर न वीरो ॥ उवट नदीय वहे वरसाले, तुम उपर घणा वेलु वाले, गाय झरे सीर खीरो ॥ अभयदेव सूरी तिहां जाण्यो, भुंय भींतरथी उपर आण्यो, ते तस दीधी देहो ॥ थंभण पुरवर प्रसादे बेठो, नयणानंदण जग सहु दीठो, नीला वन जिम मेहो ॥ ३ ॥ गुजरधर जव जवणि धस कीय, खंभनगर तें तैयअलंकीय, पुहविरो प्रगट प्रमाणो ॥ आद तुमारी जग कुण जाण, मतवीण माणस कोसुंअ नखाणे, हुंपीण सहज अयाणो ॥ कामधेनुं तिहां पत्तधरंगण, करयल चढीयो कर चिंतामण, फलीयो अमर वीमालो ॥ देव दयालु भावठ भंजण, जे तुठे संपत पुर मंडाण, श्री पार्श्वनाथ चोसालो ॥ ४ ॥

॥ अथ नंदिश्वर स्तुति ॥

॥ सजयति सताभीशः शांतिर्यदज्जिनतामरः ॥ प्रकट मुकुटोट्टंकी रत्नांकुरप्रकरोरुवत् ध्वज पृषदनुच्छायः शंकेय दास्य लघुकृत स्तरुणाकिरणोपेतः कोपान् मृगांकगणोडरुणः ॥ १ ॥ शिवपथ कथां तथ्यातीर्थाधिपाः प्रथपयंतु नः पृथुलदवथुं द्राककुर्वंतु श्लथांच भवव्यथां प्रणि घृणि मिषाच्चेषा माञ्जुः पतंति पदारदो बिमलमनसांचेतांसि श्रीजिनाः प्रजयंतुते ॥ २ ॥ जिनपतिमतक्षोणिगाथ प्रकाशयनाथता मयि प्रयि शुचिः स्वगोंपांगी सुवर्णमणी

निधिः विदिन चरितोऽस्तोके श्लोकः सदर्थकदर्थितः प्रतिभटघटः स्तुत्यस्तुरथानु शासन दर्शनः ॥ ३ ॥ गरुडसुकृतित्राणो द्दतोर्ध्वद्द-शात्वयारुण, तरदृशादृष्टः कालः प्रकंपदरा तुरः पद बलगता शक्तो युक्तं सदंड धरोधुना विनचित्त मिमधन्यं मन्यं जन सुखीनं कुरु ॥ ४ ॥ इति श्रीशांतिनाथ स्तुतिः ॥

॥ कृतजलधरधाराघोरणीरुद्धदेहो, जयति जयति कायोत्सर्ग काले सपार्श्वः ॥ किमु शमरसमग्नो नूनमाकंटमेतां, जनयति जन-शंकां कांतिकांतांगलक्ष्मोः ॥१ ॥ त्रिदशरचितहेमांभोजबद्धपचारा, विहरण भुवि येषां मूवयंत्यांहियाः ॥ त्रिजकपद्मनाळे निनंर तेन चास्मा, न्महति शिरसि सोऽयंजैन वर्गः पुनातु ॥२॥ समवसरग-भूमौ याबि शम्यामरेंद्रा, दधति पुलकनाळं चित्रचित्तस्वचिताः उपशमरससारासारधारच्छटाभिः प्रकटितपुलका किं जैनगोः सापु-नातु ॥ ३ ॥ नमदमरपुरंध्रीभूरिभालाग्रजाग्र, न्मृगमदपद दंभात्पा-दपीठे दधे या ॥ नतजनपठनाच्छेदि कर्माध बंधा त्रिनयिनि, मयि सा गोर्जाठयजालं च्छिनतु ॥ ४ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ मुद्रोभिद्रयोगीन्द्र हृद्ध्यायमानं, परिध्वस्तमानं सुरैर्गीय-मानं ॥ लसन्मानवामानवामा न मानं, भजे वर्द्धमानं भजे वर्द्ध-मानं ॥ १ ॥ जिनाधीश लेखानताशेषलेखा, नतद्वेषदोषप्रदोषांशु-लेखा ॥ स्मृतायेन तं निः प्रतीपं प्रतीत्य, कलं कामलं कोमलं कोप्यलं स्यात् ॥ २ ॥ महावीरवाणीगुणोवर्ण्यो वर्णः, सकर्णेन नाकर्णितो येन तूर्णं ॥ सधूर्णन्महामायमां मन्यतेसार, संसारसं-

सारसंसारसारं ॥ ३ ॥ सुधर्मा सुराणामधीशः शचीनां, शुचिमे-
षनर्मादि सांख्यं विहाय ॥ जिनाधीशा विधा यः प्रसकता, सुदेवः
सदेवः सदेवः सदेव ॥ ४ ॥ इतिश्री महावीर स्तुतिः ॥

॥ दीवे नंदीसरम्मी चउदिशि चउरी अंजणा भागनिंदा, तेहिंवो
बाविमज्झो दहिमुहगिरिणो सयवण्णातवेव ॥ दुण्हं दुण्हुं पितेसिं
रुइर रइकला अंतराले यदोदो, बावण्णातत्थातित्थे सुरवर भवणा ते
सुवंदे जिणिंदे ॥ १ ॥ मेरुणं पंचगंणंमो कुरु कुरु सुतहा नागदं
तेसुयारे, वेयढे सुचनंदिसरवरिचनगं सासया सुप्पसिद्धा ॥ वक्खा-
रेसु नगेसु कुलगिरि उवरि कुंडले माणुसाणं, सेले सोमाकरेजे जिण
भवणाट्ठिया ते जिणेसा जयंतु ॥ २ ॥ जेतीयाणा गयंमीं भवजलहि
तरी सम्भिहंवट्टमाणे, काले तित्थंकरे हि अभिय रससम भासियं
अच्छमीतं ॥ भव्वाणं मुक्खहेउं गणहररइयं सुत्त उवार संगं, सुत्त
अनाणधतं हरउ मह सया सासयं सव्वलोए ॥३॥ सोहंम्मि दाइणो
जे तियस गणजुआ पंचहा जोइसीया, बत्तीसं वितरिंदा सुर भवण-
ठिया देवदेविहं जुत्ता ॥ पायालिंदाइ वीसं चमरपभिणो धम्म क-
ज्जु ज्जयस्स, सव्वेसंघस्सं विग्घ मणसि सुमिरिया सुपसन्ना हरंतु
॥ ४ ॥ नंदीश्वरद्वीपमहीपरत्नालंकारसारा जिन चैत्यवाराः प्रमोद
मेद श्रिहृदेतिनताः कुर्युः प्रसादं जिन दर्शनेन ॥ १ ॥ इति श्री
नंदीश्वर स्तुति ॥

॥अथ श्रीशोभनमुनिकृता चतुर्विंशतिजिनस्तुतिः॥

॥ अथ ऋषभजिनस्तुतिः ॥

॥ भव्याम्भोजविबोधनैकतरणे विस्तारिकर्मावली, रम्भासामज नाभिनन्दन महानष्टापदाभासुरैः ॥ भक्त्या वन्दितपादपद्मविदुषां संपादय प्रोज्झिता, रम्भासाम जनाभिनन्दन महानष्टापदाभासुरैः ॥ १ ॥ ते वः पान्तु जिनोत्तमाःक्षतरुजो नाचिक्षिपुर्यन्मनो, दारा विभ्रमरोचिताः सुमनसो मन्दारवा राजिताः ॥ यत्पादौ च सुरोज्झिताःसुरभयांचक्रुःपतन्त्योऽम्बरा, दाराविभ्रमरोचिताः सुमनसो मन्दारवाराजिताः ॥ २ ॥ शान्ति वस्तनुतान्मिथोऽनुगमनाद्यन्नैगमाद्यैर्नयैरक्षोभं, जनहेऽतुलां छितमदोदीर्णांगजालं कृतम ॥ तत्पूज्यैर्जगतां जिनैः प्रवचनं दृप्यत्कुवाद्यावली, रक्षोभंजनहेतुलांछितमदी दीर्णगजालंकृतम् ॥ ३ ॥ शीतांशुत्विषि यत्र नित्यमदधद्गन्धाढयधूलीकणा, नालीकेसरलालसा समुदिताशु भ्रामरीभासिता ॥ पायाद्वः श्रुतदेवता निदधती तत्राब्जकान्ती क्रमौ, नालीकेसरलालसा समुदिता शुभ्रामरीभासिता ॥ ४ ॥

॥ इति ऋषभजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्री अजितनाथस्तुतिः ॥

॥ तमजितमभिनौमि यो विराजद्वनघनमेरुपरागमस्तकान्तम् निजजननमहोत्सवेऽधितष्ठावनघनमेरु परागमस्तकान्तम् ॥ १ ॥

स्तुत जिननिवहं तमिर्तितप्राध्वनदसुरामरवेण वस्तुवन्ति ॥ यमम-रपतयः मगाय पार्श्वध्वनदसुरामरवेणव स्तुवन्ति ॥ २ ॥ प्रवितर वसतिं त्रिलोकबन्धो गम नययोगततान्तिमे पदे हे ॥ जीनमत विततापवर्गवोथीगमनययो गततान्ति मेऽपदेहे ॥ ३ ॥ सितशकु-निगताशु मानसीद्धात्ततिमिरंमदभा सुराजिताशम् ॥ वितरतु दधति पविं क्षतोद्यत्ततिमिरं मदभासुराजिताशम् ॥ ४ ॥

॥ इत्यजितनाथस्तुतिः ॥

॥ अथ संभवजिनस्तुतिः ॥

॥ निर्भिन्नशत्रुभवभय शं भवकान्तारतार तार ममारम् ॥ वितर त्रातजगत्त्रय शंभव कान्तारतारममारम् ॥ १ ॥ आश्रयतु तव प्रणतं विभयापरमारमारमानमदमरैः ॥ स्तुतरहित जिनकद-म्बक विभयापरमार मारमानमदमरैः ॥ २ ॥ जिनराज्या रचितं-स्तादसमाननयानया नयायतमानम् ॥ शिवशर्मणे मतं दधदसमा-ननयानयानया यतमानम् ॥ ३ ॥ श्रृंखलभृत्कनकनिभा याता-मसमानमानमानवमहिताम् ॥ श्रीवज्रश्रृंखलां कजयातामसमानमान मानवमहिताम् ॥ ४ ॥

॥ इति संभवजिन स्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीअभिनन्दनजिनस्तुतिः ॥

त्वमशुभान्यभिनन्दन नन्दिता सुरवधूनयनः परमोदरः ॥ स्मरकरीन्द्रवीदारणकेसरि न्सुरवधुनयनः परमोडदरः ॥ १ ॥ जिनवराः प्रयतध्वमितामया मम तमोहरणाय महारिणः ॥ प्रदधतो भुवी वोश्वजनीनता ममवमोहरणा यमहारिणः ॥ २ ॥ असुमतां मृतिजात्यहिताय यो जिनवरागमनो भवमायतम् ॥ मलघुनां नय निर्मथितोद्धुता जिनवरागमनोभवमायतम् ॥ ३ ॥ विशिखशंख जुषा धनुषास्तस त्सुरभिया ततनुन्नमहारिणा ॥ परिगतां विशदामिह रोहिणां सुरभियाततनुं नमहारिणा ॥ ४ ॥

॥ इत्यभिनन्दनजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ सुमतिजिन स्तुतिः ॥

मदमदनरहित नरहित, सुमते सुमतेन कनकतोरतोर ॥ दम दमपालय पालय, दरादरातिक्षतिक्षपातः पातः ॥ १ ॥ विधुतारा विधुताराः सदा सदाना जिनाजितापातापाः ॥ तनुतापातनुतापा हितमा हितमानवनवविभवा विभवाः ॥ २ ॥ मतिमति जिनराजि नराहितेहिते रुचितरुचि तमोहे मोहे ॥ मतमत नूनं नूनं स्मरास्मरा धीरधीरसुमतः सुमतः॥३॥ नगदामानगदा मामहो महो राजि राजितरसातरसा ॥ घनघनकाली काली बतावतादूनदूनसत्रासत्रा ॥ ४ ॥

॥ इति सुमतिजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ पद्मप्रभजिनस्तुतिः ॥

पादद्वयी दलितपद्ममृदुः प्रमोद मुन्मुद्रतामरसदामकृतान्तधात्री ॥ पाद्मप्रभी प्रविदधातु सतां वितीर्ण मुन्मुद्रतामरसदा मकृतान्तपात्री ॥ १ ॥ सा मे मतिं वितनुताज्जिनपङ्क्तिरस्त मुद्रा गतामरसभासुरमध्यगात्राम् ॥ रत्नांशुभिर्विदधतो गगनान्तराल मुद्रागतामरसभासुरमध्यगात्राम् ॥ २ ॥ भ्रान्तिच्छिदं जिनवरागमपाश्रयार्थं मारामभानम लसन्तमसंगमानाम् ॥ धामाग्रिमं भवसरित्पतिसेतुमस्त मारामभानमलसंतमसं गमानाम् ॥ ३ ॥ गान्धारि वज्रमुसले जयतः समीर पातालसत्कुवलयावलिनीलभे ते कीर्तीः करप्रणयिनो तव ये निरुद्ध पातालसत्कुवलया बलिनो लभेते ॥ ४ ॥

॥ इति पद्मप्रभजिनस्तुतिः

॥ अथ सुपार्श्वजिनस्तुतिः ॥

कृतनति कृतवान्यो जन्तुजातं निरस्त, स्मरपरमदयायामानबाधायशस्तम् ॥ सुचिरमविचलत्वं चित्तवृत्तेः सुपार्श्व स्मर परमदयाया मानबाधाय शस्तम् ॥ १ ॥ व्रजतु जिनततिः सा गोचरं चित्तवृत्तेः सदमरसहिताया बोऽधिका मानवानाम् ॥ पदमुपरि दधाना वारिजानां व्यहार्षी त्सदमरसहिता या बोधिकामा नवा-

नाम ॥ २ ॥ दिशदुपशमसौख्यं संयतानां सदैवो ऽजिनमतमुदारं काममायामहारि ॥ जननमरणरोगान्नाशयन्सिद्धताखे ऽजिन नवमुदारं काममायामहारि॥ ३ ॥ दधति रविसपत्नं रत्नमाभास्तभास्व-नवघनतरवारिं वारणारावरीणाम् ॥ गतवति विकरत्याली महामानसीष्टा भव धनतरवारिं वारणारावरीणाम् ॥ ४ ॥

॥ इति सुपार्श्वजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ चन्द्रप्रभजिनस्तुतिः ॥

तुभ्यं चन्द्रप्रभ जिन नमस्तामसोज्जृम्भितानां, हाने कान्तानलसम दयावन्दितायासमान ॥ विद्युत्पङ्क्त्या प्रकटितपृथुस्पष्टदृष्टान्तहत्, हानेकान्तानलसमदया वन्दितायासमान ॥ १ ॥ जीयाद्राजिर्जनितजननज्यानिहानिर्जिनानां, सत्यागारं जयदमितरुक्सारविन्दावतारम् ॥ भव्योद्भूतया भुवि कृतवती या बहुधर्मचक्रं, सत्यागा रंजयदमितरुक्सा रविं दावतारम ॥ २ ॥ सिद्धान्तः स्ताद्हितहतयेऽख्यापयन्यं जिनेन्द्रः सद्राजीवः स कविधिषणापादनेऽकोपमानः दक्षः साक्षाच्छ्रवणचुलकैर्यं च मोदाद्विहायः– सद्राजीवः सकविधिषणापादनेकोपमानः॥३॥वज्राङ्कुशयशकुलिशभृत्त्वं विधत्स्व प्रयत्नं, स्वायत्यागो तनुमदवने हेमतारातिमत्ते ॥ अध्यारूढे शशधरकरश्वेतभा सिद्धिपेन्द्रे, स्वायत्यागेऽस्तनुमदवने हे ऽमतारातिमत्ते॥४॥

॥ इति चन्द्रप्रभुजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ सुविधिजिनस्तुतिः ॥

॥ तवाभिवृद्धिं सुविधिर्विधेयात्स, भासुरालोनतपा दयावन् ॥ यो योगिपङ्क्तया प्रणतो नभः सत्स, भासुरालीनतपादयावन् ॥१॥ या जन्तुजाताय हितानि राजी, साराजिनानामलपद्ममालम् ॥ दिश्या न्मुदं पादयुग दधाना, साराजिनानामलपद्ममालम् ॥ २ ॥ जिनेन्द्र भंगैः प्रसभंः गभारा, शु भारती शस्यतमस्तवेन ॥ निर्नाशयन्तो मम शर्म दिश्यात् शुभारतीशस्य तमस्तवेन ॥ ३ ॥ दिश्याच्च वाशु ज्वलनायुधाल्प,मध्या सिताकं प्रवरालकस्य ॥ अस्तेन्दुरास्यस्य कचोरुपृष्ठ, मध्यासिताकम्प्रवरालकस्य ॥ ४ ॥

॥ इति सुविधिजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ शीतलजिनस्तुतिः ॥

जयति शीतलतीर्थकृतः सदा चलनतामरसं सदलं घनम् ॥ नवकमम्बुरुहां पथि संस्पृशच्चलनतामरसंसदलंघनम् ॥ १ ॥ स्मर जिनान्परिनुन्नजरारजो,जननतानवतोद यमानतः ॥ परमनिर्वृतिशर्मकृतो यतो जन नतानवतोऽदयमानतः ॥ २ ॥ जयति कल्पितकल्पतरूपमं मतमसारतरागमदारिणा ॥ प्रथितमत्र जिनेन मनीषिणा, मतमसा रतरागमदारिणा ॥३॥ घनरुचिर्जयताद्भुवि मानवी गुरुतरा विहतामरसंगता ॥ कृतकराब्जवरे फलपत्रभा, गुरुतरा विहतामरसं गता ॥ ४ ॥

॥ इति शीतलजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रेयांसजिनस्तुतिः ॥

कुसुमधनुषा यस्मादन्यं न मोहवशं व्यधुः कमलसदृशां गीता-
रावा बलादपि तापितम् ॥ प्रणमत तमां द्राक्श्रेयांसं न चाहत
जन्मनः कमलसदृशाङ्गी तारा वा बलादयितापि तम् ॥ १ ॥ जिन
वरततिर्जीवालीनामकारणवत्सला, समदमहितामारादिष्टा समानव-
राजया॥नमदमृतभुक्पंक्त्या नुता तनोतु मतिं ममासमदमहितामा-
रादिष्टा समानवराजया ॥ २ ॥ भवजलनिधिभ्राम्यज्जन्तुव्रजाय
पोत हे तनु मतिमतां सन्नाशानां सदा नरसंपदम् ॥ समभिलषताम-
र्हन्नाथागमानतभुपतिं तनुमति मतां सन्नाशानां सदानरसं पदम्
॥३॥ धृतपविफलाक्षालीघण्टैः ॥ करैः कृतबोधित, प्रजयति महा-
काली मर्त्याधिपं कजराजिभिः ॥ निजतनुलतामध्यासीनां दधत्यप-
रिक्षतां प्रजयति महाकाली मर्त्याधिपं कजराजिभिः ॥ ४ ॥

॥ इति श्रेयांसजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ वासुपूज्यजिनस्तुतिः ॥

॥ पूज्यश्रीवासुपूज्यावृजिन जिनपते नूतनादित्यकान्तेऽमा-
यासंसारवासावन वर तरसाली नवालानबाहो ॥ आनभ्रा ब्रायतां
श्री प्रभवभवभयाद्बिभ्रतीभक्तिभाजा, मायासंसारवासावनवरतरसा-
लीनवालानबाहो ॥ १ ॥ पूतो यत्पादपांशुः शिरसि सुरततेराचर-
च्चूर्णशोभां या तापत्रासमाना प्रतिमदप्रवतीहार ताराजयन्ती॥कीर्तेः
कान्त्याततिः साम्रविकिरतुतरां जैनराजीरजस्ते यातापत्रासमानाम-

तिमद्भवती हारताराजयन्ती ॥ २ ॥ नित्यं हेतूपपत्तिप्रतिहतकुमतमोद्धतध्वान्तबन्धा, पापायासह्यमानामदन तव सुधासारहृद्या हितानी ॥ वाणी निर्वाणमार्गेप्रणयिपरिगता तीर्थनाथक्रियान्मे पापायासाश्रमानामदनत वसुधासार हृद्याहितानि ॥ ३ ॥ रक्षः क्षुद्रग्रहादिप्रतिहतिशमनी वाहितश्वेतभास्वत्सन्नालीकासदा त्पापरिकर मुदितासाक्षमाला भवन्तम् ॥ शुभ्रा श्रीशान्तिदेवी जगति जनयतात् कुण्डिका भाति यस्याः सन्नालीका सदाप्ता परिकरमुदिता सा क्षमालाभवन्तम् ॥

॥ इति वासुपूज्यस्तुतिः ॥

॥ अथ विमलजिनस्तुतिः ॥

॥ अपापदमलं घनं शमितमानमामो हितं नतामरसभासुरं विमलमालयामोदितम् ॥ अपापदमलंघनं शमितमानमामोहितं ॥ न तामरसभासुरं विमलमालयामोदितम् ॥ १ ॥ सदानवसुराजिता असमरा जिना भीरदाः क्रियासु रुचितासु ते सकलभा रतीरा यताः ॥ सदानवसुराजिना असमराजिनाभीरदा क्रियासु रुचितासु ते सकलभारतीरा यताः ॥ २ ॥ सदा यतिगुरोरहो नमत मानवैरञ्चितं मतं वरदमेनसा रहितमायतामावतः ॥ सदायति गुरोरहो न मतमानवैरं चितं मतं वरदमेनसारहितमायता भावतः ॥ ३ ॥ प्रभाजि तनुतामलं परमचापला रोहिणी सुधावसुरभीमना मयि

समाक्षमालेहितम् ।। मभाजितनुतामलं परमचापलारोहिणी सुधा-वसुरभोमनामयिसभा क्षमाले हितम् ।। ४ ।।

।। इति विमलजिनस्तुतिः ।।

।। अथ अनन्तजिनस्तुतिः ।।

।। सकलधौतसहासनमेरवस्तव दिशन्त्वभिषेकजलप्लवाः ।। मतमनन्तजितः स्न पितोल्लसत्सकलधौतसहासनमेरवः ।। १ ।। ममरतामरसेवित ते क्षणपद निहन्तु जिनेन्द्रकदम्बक ।। वरद पादयुगं गतमज्ञतामपरतामरसे विततेक्षण ।। २ ।। परमतापदमानसजन्मनः प्रियपद भवतोभवतोऽवतात् ।। जिनपतेमतमस्तजगत्रयी, परमता· पदमानसजन्मनः ।। ३ ।। रसितमुच्चतुरंगमनायकं, दिशतु कांञ्चन-कान्तिरिताच्युता ।। धृतधनुः फलकासिशरा करै, रसितमुच्चतुरंगमनाय कम् ।। ४ ।।

।। इत्यनन्तजिनस्तुतिः ।।

।। अथ श्रीधर्मजिन स्तुतिः ।।

नमः श्रीधर्म निष्कम्पोदयाय महितायते ।। मर्त्यामरेन्द्रनागेन्द्रैर्दयायमहिताय ते ।। १ ।। जीयाज्जिनौघो ध्वान्तान्तं ततानलसमानया ।। भामण्डलत्विषायः सततानलसमानया ।।२।। भारति द्राग्जिनेन्द्राणां नवनैारक्षतारिके ।। संसाराम्भोनिधावस्मान्नवनै रक्ष

तारिके ॥ ३ ॥ केकिस्था वः क्रियाच्छत्तिकरा लाभानयाचिता ॥
प्रज्ञप्तिर्नूत नाम्भोज कराल्लाभा नयाचिता ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीधर्मजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्री शान्तिनाथजिनस्तुतिः ॥

राजन्त्या नवपद्मरागरुचिरैः पादैर्जिताऽष्टापदा,द्रेऽकोपद्रुत जातरुपविभया तन्वार्य धीर क्षमाम् ॥ बिभ्रत्यामरसेव्यया जिनपते श्रीशान्तिनाथास्मरो, द्रेकोपद्रुत जातरुप बिभयातन्वार्यधी रक्ष माम ॥ १ ॥ ते जीयासुरविद्विषो जिनवृषा मालां दधाना रजो,राज्या मेदुरपारिजातसुमनः संतानकान्तां चिताः ॥ कीर्त्या कुन्दसमत्विषे षदपि ये न माप्तलोकत्रयी, राज्या मेदुरपारिजातसुमनः संतानकान्तांचिताः ॥ २ ॥ जैनेन्द्र मतमामानोतु सततं सम्यग्दशां सद्गुणा,लीलाभं गमहारि भिन्नमदनं तापापहृद्यामरम् ॥ दुर्निभेद निरन्तरान्तरतमोनिर्नाशो पर्युल्लसल्लोलाभंगमहारिभिन्नमदनन्तापापहृद्यामरम् ॥ ३ ॥ दण्डच्छत्रकमण्डलूनि कलयन्स ब्रह्मशान्तिः क्रियात्संत्यज्या निशमीक्षणेनशमिनोमुक्ताक्षमालिहितम् ॥ तत्पाष्टापदपिण्डपिंगलरुचिर्योऽधारयन्मूढतां संत्यज्यानिशमीक्षणेन शमिनो मुक्ताक्षमाली हितम् ॥ ४ ॥

॥ इति शान्तिनाथजिस्तुतिः ॥

॥ अथ कुन्थुनाथजिनस्तुतिः ॥

भवतु मम मनः श्रीकुन्थुनाथाय तस्मायमितशमितमोहाया-मितापायहृद्यः सकलभरतभर्ताभूज्जिनोऽप्यक्षपाशायमितशमितमो-हायामितापायहृद्य ॥ १ ॥ सकलजिनपतिभ्यः पावनेभ्यो नमः सन्नयनरवरदेभ्यः सारवादस्तुतेभ्यः ॥ समधिगतनुतिभ्यो देववृन्दा द्गरीयो ॥ नयन रवरदेभ्यः सारवादस्तु तेभ्यः ॥ २ ॥ स्मरत विगत मुदं जैनचन्द्रं चकासत्कविपदगमभंग हेतुदन्तं कृतान्तम् ॥ द्विरदमिव समुध्यद्दानमार्गं धुताधैकविपदगमभंग हेतुदन्तं कृतान्तम् ॥ ३ ॥ प्रचलदचिररोचिश्चारुगात्रे समुद्यत्सदसिफलकरामेऽभीमहासेऽरि-भीते सपदि पुरुषदत्ते ते भवन्तु प्रसादाः सदसि फलकरा मेऽभीम-हासेरिभीते ॥ ४ ॥

॥ इति कुन्थुनाथजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीअरनाथजिनस्तुतिः ॥

व्यमुचचक्रवर्तिलक्ष्मीमिह तृणमिव यः क्षणेन तं सन्मदम-रमानसंसारमनेकपराजितामरम् ॥ द्रुतकलधौतकान्तिमानमतानन्दित-भूरिभक्तिभाक्संनदमरमानसंसारमनेकपराजितामरम ॥ १ ॥ स्तौति समन्ततः स्म समवसरण भूमौ यं सुरावलिः सकलकलाकलापकलि-तापमदारुणकरमपापदम् ॥ तं जिनराजविसरमुज्जासितजन्मजरं नमाम्यहं सकलकला कलापकलितापमदारुणकरमपापदम् ॥ २ ॥ भीममहाभवाब्धिभवभीतिविभेदि परास्तविस्फुरत्परमतमोहमानम-

तनूनमलं घनमघवतेऽहितम् ॥ जिनपतिमतमपारमर्त्या मरनिर्वृति-शर्मकारणं परमतमोहमानमतनूनमलंघनमघवते हितम् ॥ ३ ॥ याश्च विचित्रवर्णविनतात्मजपृष्ठमधिष्ठिता हुतात्समतनुभागविकृत-धीरसमदवैरिव धामहारिभिः ॥ तडिदिव भाति सांध्यघनमूर्धनि चक्रधरास्तुसामुदेऽसमतनुभा गवि कृतधीरसमदवैरिवधामहारिभिः॥४॥

इत्यरनाथजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ मल्लिनाथजिनस्तुतिः ॥

तुदंस्तनुं प्रवितर मल्लिनाथ मे, प्रियंगुरोचिररुचिरोचितां वरम् ॥ विडम्बयन्वररुचिमण्डलोज्वलः प्रिये गुरोऽचिररुचिरोचि-ताम्बरम् ॥ १ ॥ जवाद्गतं जगदवतो वपुर्यथाकदम्बकैरवशतपत्र-संपदम् ॥ जिनोत्तमान्स्तुत दधतः स्रजं, स्फुरत्कदम्बकैरवशतपत्र-संपदम् ॥ २ ॥ प्रसंपदं दिशतु जिनोत्तमागमः शमाश्रहन्नतनु-तमोहरोऽदिते ॥ स चित्तभूः क्षत इह येन यस्तपः शमा वहन्न-तनुतमोहरोदिते ॥ ३ ॥ द्विपं गतो हृदि रमतां दमश्रिया, प्रभाति मे चकितहरिद्विपं नगे ॥ वटाह्वये कृतवसतिश्च यक्षराट, प्रभाति मेचकितहरिद्विपन्नगे ॥ ४ ॥

॥ इति मल्लिनाथजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ मुनिसुव्रतजिनस्तुतिः ॥

जिनमुनिसुव्रतः समवताज्जनतावनतः समुदितमानवा घन-

मक्षोभवतो भवतः ॥ अवनिविकीर्णमादिषत यस्य निरस्तमनः समुदितमानबाधनमलो भवतोः भवतः ॥ १ ॥ प्रणमततं जिनव्रजमपारविसारिरजो, दलकमलाननामहिमधाम भयासमरुक् ॥ यमतितरां सुरेन्द्रवरयोषिदिला–मिलनोदलकमला ननाम हिमधाम भया समरुक् ॥ २ ॥ त्वमवनताञ्जिनोत्तमकृतान्त भवाद्द्रुषांऽत्र सदनानुमासंगमन याततमोदयितः ॥ शिवसुखसाधकं स्वभिदधत्सुधियां चरणं, वसदनु मानसं गमनयातत मोदयितः ॥ ३ ॥ अधिगतगोधिका कनकरुक्तनु गौर्युचिताङ्कमलकराजितामरसभास्यतुलोपकृतम ॥ मृगमदपत्रभंग तिलकैर्वदनं दधती, कमलकरा जितामरसभास्यतु लोपकृतम् ॥ ४ ॥

॥ इति मुनिसुव्रतजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ नमिनाथजिनस्तुतिः ॥

॥ स्फुरद्विद्युत्कान्ते प्रविकिर वितन्वन्ति सततं, ममायासं चारो दितमद नमेऽघानि लपितः ॥ नमद्भव्यश्रेणीभवभयभिदां ह्यवचना–ममायासंचारोदितमदनमेघानिल पितः ॥ १ ॥ नखांशुश्रेणीभिः कपिशितनमन्नाकिमुकुटः सदा नोदी नानामयमलमदारेरित तमः । प्रचक्रे विश्वं यः स जयति जिनाधीशनिवहः सदा नो दीनानामयमलमदारेरिततमः ॥ २ ॥ जलव्यालव्याघ्रज्वलनगजरुग्बन्धनयुगे, गुरुर्वाहोऽपातापदघनगरीयानसुमतः । कृतान्तश्चासिष्ट स्फुटविकटहेतुप्रमितिभा–गुरुर्वाहो पाता पदघनगरीयानसुमतः

॥ ३ ॥ विपक्षव्यूहं वो दलयतु गदाक्षावलिधरासमा नालोकालो विशदचलना नालोकवरम् ॥समध्यासीनाम्भोभृतघननिभाम्भोधित नया, समानालो कालो विशदचलनानालिकवरम् ॥ ४ ॥

॥ इति नेमिनाथजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ नेमिनाथजिनस्तुतिः ॥

॥ चिक्षेपोर्जितराजकं रणमुखे यो लक्षसंख्यं क्षणा, दक्षामंजन भासमानमहसं राजीमतीतापरम् ॥ तं नेमिनम नम्रनिर्वृतिकरं चक्रे यदूना च यो, दक्षामंजनभासमानमहसं राजीमतीतापरम् ॥ १ ॥ प्राव्राजीज्जितराजका रज इव ज्यायोऽपि राज्यं जवा-द्या संसारमहोदधावपिहिता शास्त्रीविहायोदितम् ॥ यस्याः सर्वत एव सा हरतु नो राजी जिनानां भवा-द्यासं सारमहोदधावपि-हिता शास्त्रीविहायोदीतम् ॥ २ ॥ कुर्वाणाणुपदार्थदर्शनवशादूभा-स्वत्प्रभायास्त्वया, मानत्या जनकृत्तमोहरत मे शस्तादरिद्रोहिका ॥ अक्षोभ्या तव भारती जिनपते प्रोन्मादिनां वादिनां, मानत्याजनकृ-त्तमोहरतमेशस्तादरिद्रोहिका ॥ ३ ॥ हस्तालम्बितचूतलुम्बिलतिका यस्याजनोऽभ्यागमत्, द्विश्वासे विततान्नपादपरतांवाचा रिपुत्रासकृत् ॥ सा मूर्तिं वितनोतु नोऽर्जुनरुचिः सिंहेऽभिरूढोल्लस,द्विश्वासे वित-ताम्रपादपरताम्बा चारिपुत्रासकृत् ॥ ४ ॥

॥ इति नेमिनाथजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ पार्श्वनाथजिनस्तुतिः ॥

॥ मालामालानबाहुर्दधदधदरं यामुदारा मुदारा, लीनालीनामिहालीमधुरमधुरसां, सूचिशोमाचितो मा ॥ पातात्पातात्स पार्श्वोरुचिररुचिरदो देवराजीवराजो ॥ पत्रापत्रा यदीया तनुरतनुरवो नन्दकोनोदकोनो ॥१॥ राजी राजीववक्त्रा तरलतरलसत्केतुरंगतुरंग, व्यालव्यालम्बयोधाचितरचितरणेभीतिहृद्याति हृद्या॥सारासाराज्जिनानामकममलमेतद्वोधिका माधिकामा, दव्यादव्याधि कालानलजननजरात्रासमानासमाना ॥ २ ॥ सद्यो सद्योगभिद्वागमरुगमलयाजैनराजीनराजी, नूतानूतार्थधात्रीह तनहततमः पातकापातकामा॥ शास्त्री शास्त्री नराणां हृदयहृदयशोराधिकावाधिका वा, देया देयान्मुदं ते मनुजमनुजरां त्याजयन्ती जयन्ती ॥ ३ ॥ याता यातारतेजाः सदसिसदसिभृत्कालकान्तालकान्ता, पारिं पारिन्द्रराजं सुरवसुरवधुपूजितारं जितारम्॥ सात्रासात्रायतांत्वामविषमविषभृद्भूषणाभीषणाभी, हीनाहीनान्यपत्नी कुवलयवलयश्यामदेहामदेहा ४

॥ इति पार्श्वनाथजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ महावीरजिनस्तुतिः ॥

नमदमरशिरोरुहस्रस्तसामोदनिर्निद्रमन्दारमालारजोरंजितांहे धरित्रीकृतावन वरतम संगमोदारतारोदितानङ्ग ॥नार्यवलोलापदेहेक्षितामोहिताक्षोभवान् ॥ मम वितरतु वीर निर्वाणशर्माणि जाताव-

तारो धराधीशसिद्धार्थधाम्नि, क्षमालंकृतावनवरतमसंघमोदारतारो-हितानंगनार्यव लीलापदे हे क्षितामो हिताक्षोभवान् ॥ १ ॥ समवसरणमत्र यस्याः स्फुरत्केतुचक्रानकानेकपद्मेन्दुरुकचामरोत्सर्पिसालत्रयीसद्वनमदशोकपृथ्वीक्षणमायशोभा-तपत्रप्रभागुर्वराराट् परेताहितारोचितम् ॥ प्रवितरतु समीहितं सार्हतां संहतिर्भक्तिभाजां भवाम्भोधिसम्भ्रान्तभव्यावलीसेविता सद्वनमदशोकपृथ्वीक्षणमा यशोभातपत्र प्रभागुर्वराराट् परेताहितारोचितम् ॥ २ ॥ परमततिमिरोग्रभानुप्रभाभूरिभंगैर्गभीराभृश विश्ववर्ये निकाय्ये वितीर्यात्तरामहति मतिमते हिते शस्यमानस्यत्रासं सदा तन्वतीतापदानन्दधानस्य सामानिनः ॥ जननमृतितरंगनिष्पारसंसारनीराकरान्तर्निमज्जज्जनोत्तारनौर्भारती तीर्थकृत् महति मतिमनेहितेशस्य मानस्य त्रा संसदातन्वती तापदानं दधानस्य सा मानिनः ॥ ३ ॥ सरभसननमाक्रिनारीजनोरोजपीठीलुठत्तारहारस्फुरद्रश्मिसारक्रमाम्भोत्रहे, परमवसुतरांगजारावसन्नाशताराति भाराजीने भासिनी हारतारात्र क्षेमदा ॥ क्षणरुचिरुचिरोरुचंचत्सटासंकटोत्कृष्टकण्ठाद्भटे संस्थिते भव्यलोकं त्वमम्बाम्बिके परमव सुतरां गजारावसन्नाशितारातिभाराजीते भासिनी हारतारावलक्षेऽमदा ॥ ४ ॥

॥ इति महावीरस्तुतिः ॥

॥ अर्हम् ॥ ॐ नमः ॥

॥ श्री ऋषभदेवजिनस्तुतयः ॥ १ ॥

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा, मुद्दीपकं जिनपदाम्बुजयामलं ते ॥ स्तोष्ये मुदाऽहर्निशं किल मारुदेव, दुष्टाष्टकर्मरिपुमण्डलभित्सुधीर ॥ १ ॥ श्रीमज्जिनेश्वरकलापमहं स्तुवेरमु, द्योतकं दलितपापतमोवितानम् ॥ भव्याम्बुजातदिननाथनिभं स्तवीमि, भक्त्या नमस्कृतममर्त्यनराधिराजैः ॥ २ ॥ वर्या जिनक्षितिपतेस्त्रिपदीम वाप्य, गच्छेश्वरैः प्रकटिता किल वाग्मुदा या ॥ सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा, वेवं शुभार्थनिकरैर्भुवि सास्तु लक्ष्म्यै ॥ ३ ॥ यक्षेश्वरस्तव जिनेश्वर गोमुखाह्वः, सेवां व्यधत्त कुशलक्षितिभृत्पयोदः ॥ तत्पादपंकजमधुव्रततां दधाना, वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ॥ ४ ॥

॥ श्री श्रीवीरजिनस्तुतयः ॥ २ ॥

कल्याणमंदिरमुदारमवघभेदि, दुष्कर्मवारणविदारणपंचवक्रम् । यत्पादपद्मयुगलं प्रणमन्ति शक्राः स्तोष्ये मुदा जिनवरं जितनैश छेयम ॥ १ ॥ क्षीणाष्टकर्मनिकरस्य नमोस्तु नित्यं, भीताभयप्रदमनिन्दितमंघ्रिपद्मम् ॥ इष्टार्थमण्डलसुसर्जनदेववृक्षं, नित्योदयं दलिततीव्रकषायमुक्तम् ॥ २ ॥ जैनागमं दिशतु सर्वसुखैकदारं, श्रीनन्दनक्षितिजहव्यहतिप्रकारम् ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजन्तु

श्रोहित्थसन्निभममीष्टदमाशु मुग्धम् ॥ ३ ॥ मातंयक्षरमलं प्रकरोति सेवां, पूर्वान्तमारसमभीप्सितदं विशालम् ॥ उत्पत्तिविस्तरनदीशपतज्जनानां, पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ ४ ॥

श्री शान्तिजिनस्तुतयः ॥ ३ ॥

सकलकुशलवल्लीपुष्करावर्त्तमेघो, मदनसदृशरूपः पूर्णराकेन्दुवक्रः ॥ प्रथयतु मृगलक्ष्मा शान्तिनाथो जनानां, प्रसृतभुवनकीर्त्तिः कामितं कम्रकान्तिः ॥ १ ॥ जिनपतिसमुदायोदायकोऽभीप्सितानां, दुरिततिमिरभानुः कल्पवृक्षोपमानः ॥ रचयतु शिवशान्तिं प्रातिहार्यश्रियं यो, विकटविषमभूमीजातदर्त्ति बिभर्त्ति ॥ २ ॥ प्रथयतु भविकानां ज्ञानसंपत्समूहं, समय इह जयत्यामाप्तवक्त्रः प्रसूतः ॥ भवजलनिधिपोतः सर्वसम्पत्तिहेतुः, प्रथितधनघटायां सर्पकान्तप्रकारः ॥ ३ ॥ जयविजयमनोषामन्दिरं ब्रह्मशान्तिः, सुरगिरिसमधीरः पूजितोन्यक्षयक्षैः ॥ हरतु सकलविघ्नं योजने चिन्त्यमानः, स भवतु सततं वः श्रेयशे शान्तिनाथः ॥ ४ ॥

श्री पार्श्वजिनस्तुतयः ॥ ४ ॥

श्रेयःश्रियां मंगलकेलिसद्म, श्रीयुक्तचिन्तामणिपार्श्वनाथ ॥ दुर्वारसंसारभयाच्च रक्ष, मोक्षस्य मार्गे वरसार्थवाहः ॥ १ ॥ जिनेश्वराणां निकरे क्षमायां, नरेन्द्रदेवेन्द्रनतांघ्रिपद्मं ॥ कुरुष्व निर्वाणसुखं क्षणामृत्, सत्केवलज्ञानरमां दधान ॥ २ ॥ कैवल्यधामाह-

दर्पैकहार, क्षमासरस्वद्रुमनीशतुल्यः ॥ सर्वज्ञ सर्वातिशयप्रधान, तनोतु ते वाग्जिनराज सैाख्यम् ॥ ३ ॥ श्रीपार्श्वनाथक्रमणाम्बुजात, सारंगतुल्यः कलधैातकान्तिः ॥ श्रीयक्षराजोगरुडाभिधानः, चिरंजय ज्ञानकलानिधान ॥ ४ ॥

श्री नेमिजिनस्तुतयः ॥ ५ ॥

कमलवद्वपनं तव राजते, जिनपते भुवनेश शिवात्मज ॥ मुकुरवद्विमलं क्षगदात्रशात्, हृदयनायकवत् सुमनोहरम् ॥ १ ॥ सकलपाग्गताः प्रभवन्तु मे, शिवसुखाय कुकर्मविदारकाः । रुचिरमङ्गलवल्लिवने घनाः, दशतुरङ्गमगौरयशोधराः ॥ २ ॥ मदनमानजरानिनोग्र्यजित, जिनपते तव वागमृतोपमा ॥ भवभृतां भवता च्छिवशर्मणे, भवपयोधिपतज्जनतारका ॥ ३ ॥ जिनपपादपयोरु हहंसिका, दिशतु शासननिर्जर कामिनी ॥ सकलदेहभृताममलं सुखं, मुखविभाभरनिर्जितभाधिपा ॥ ४ ॥

श्री सिद्धचक्रस्तुतयः ॥

ज्ञात्वा प्रश्न तदर्थं गणधरमनसं प्राग्वदेद्वीरदेवः, अर्हत्सिद्धार्यसाधुप्रभृतिनवपदान्॥सिद्धचक्रस्वरुपाये भव्याश्रित्यधिष्णुंप्रतिदिनमधिकं संजपन्ते स्वभक्त्या,तेस्युःश्रीपालवच्चक्षितिवरपतयःसिद्धचक्रप्रसादात् ॥ १ ॥ दुस्तीर्णं निस्तरीतुं भवः जलनिधिकं पाणियुग्मे गृहीत्वा, यानेकान् कोटिकुम्भान् कनकमणिमयान् षष्ठिलक्षाभियुक्तान् ॥ गंगासिन्धुहृदानां जलनिधितटतस्तीर्थतोयन भृत्वा, सत्स-

र्थाधीश्वराणां सुरपतिनिकरा जन्मकृत्यं प्रचक्रुः ॥ २ ॥ कुर्वद्देवा-
स्त्रिवप्रं रजतमणिमयं स्वर्णकान्त्याऽभिरामे, स्थित्वा स्थाने सुवा-
च्यं जिनवरपतयः प्रावदन् यां च नित्यम् ॥ तां वाचां कर्णकूपे
सुनिपुणमतयः श्राद्धयो ये पिबन्ति ते भव्याः शैवमार्गागमविधि-
कुशला मोक्षमाशु प्रयान्ति ॥ ३ ॥ देवी चक्रेश्वरी स्त्रग्दधति च-
क्षदये पतने देवकाख्ये, कामे मोदाभिकीर्णे विमलपदयुजैः सिद्ध-
चक्रस्य बीजे ॥ श्रीमद्धर्षादियुक्तैर्विनयप्रवरैर्वर्यरूपैर्मुनीन्द्रैः स्तुत्या
नित्यैः सुलक्ष्मीविजयपदघृतैः प्रेमपूर्णे प्रसन्ना ॥ ४ ॥

श्री वीरजिनस्तुतयः ॥

स्फूर्जद्भक्तिनतेन्द्रशीर्षविलसत्कोटीररत्नावली, रंगत्कान्तिकर
म्बिताद्भुतनखश्रेणीसमुज्जृम्भितम् ॥सिद्धार्थाङ्गरुहस्य कीर्त्तितगुण-
स्यांह्रिद्वयं पातु वः, स्नातस्यापतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विभोःशै-
शवे ॥ १ ॥ श्रेयः शर्मकृते भवन्तु भवतां सर्वेऽपि तीर्थाधि-
पाः, येषां जन्ममहः कृतः सुरगिरौ वृन्दारकैः सादरैः ॥ पौलोमी-
स्तनगर्वखण्डनपरैः कुम्भैः सुवर्णोद्भवैः, हंसांसाहतपद्मरेणुकपिशक्षी
रार्णवाम्भोभृतैः ॥ २ ॥ सेवे सिद्धान्तमुच्चैस्सकलमुनिजनप्रार्थिता-
मर्घ्यरत्नं, गर्ज्जद्वाचाटवादिद्विरदघनघटादर्पकण्ठीरवाभम् ॥ मिथ्या-
धर्मान्धकारे स्फुटविकटकरादित्यमल्पप्रभंनो, अर्हद्वक्त्रप्रसूतं गणध-
रसंचितंद्वादशांगं विशालम् ॥ ३ ॥ दक्षो यक्षाधिराजोमहिमगुणनि-

खिखण्ड.दोर्दण्डधारी, सर्वः सर्वानुभूतिर्विदलयतु मुदा संघविघ्नं शैोना: ॥ अध्यारुढोद्विपेन्द्रं वरभवनगतस्तम्भहस्तोत्कटास्यं, नित्यं कृष्णांमनीलध्युतिमलसदृश बालचन्द्राभदंष्ट्रम् ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री जिनस्तुतयः ॥

नम्रेन्द्रमौलिमपतत्परागयुज, स्फुरत्कर्बुरितक्रमाब्जम् ॥ वीरं भजे निर्जितमोहवीरं, संसारदावानलदाहनीरम् ॥ १ ॥ पुष्पौघपद्दलसौरभगुण्डितानि, स्वर्णाम्बुजैः सुरकृतैः परिमण्डितानि ॥ वन्देऽर्हतां वरपदानि नतान्यजेन, भावावनामसुरदानवमानवेन ।२॥ नाना रत्नैः सुभगमतुलमौढसाहश्यपाठै, र्विन्नातैर्नहुनयभरैः सतरंगै रुपेतम् ॥ युक्तया जैन समयमुदधिं कीत्तयाम्यस्मि काम ॥ बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामम् ॥ ३ ॥ श्रीमद्वीरक्रमाम्भोरुहरसिकमना राजहंसीव रम्या, सिद्धा सिद्धाविरुद्धा विशदगुणलसद्भक्तहृत्पद्मरुद्धा ॥ या धत्ते स्वीयकंठे घनसुरभिरसां पुष्पमालां विशालाम् , आमूलालोलधूलीबहुलपरिमलालीढलोलालीमालाम् ॥४॥

अथ श्री ज्ञानपंचमीस्तुतयः ॥

श्रीवेयः शंखकेतुः कलितजनमनःसंश्रयः सर्वकालं, विश्वेशोऽसौ च देहद्युतिविजितघनः कर्मधर्मामृतांशुः ॥ क्षान्त्याढयः कष्टदुष्टक्षयकरणपरो रैवतोच्चंसतुल्यः; कल्याणं पंचमी सत्तपसि वितनुतां

पंचमज्ञानवान्वः ॥ १॥ नाभेय त्रैशलेय प्रथमचरमकश्चन्द्रवक्त्रात्वचंच न्-मूर्त्तिः स्फुर्त्तिं दधानः प्रथयति कुमुदं यो बुधाल्हादहेतुः। मोक्ष-मश्छमपद्मा पिकचकरवरवः सत्कलावान्मनोज्ञो, ज्ञानं पुण्याज्जिनौघ सतपसि भविनां पंचमी वासरस्य ॥ २ ॥ गीर्वाणाधीशपुंसांपात कुसुममिदं पुण्यभाजोमनुष्या, निर्वाणामेयसौख्यं प्रबलफलमथो यत्प्रसादाल्लभन्ते ॥ श्रीसार्वप्रौढशुद्धागमधरणिरुहः सिद्धिदानैकरक्त स्तत्पंचम्यास्तपस्युद्यतविशदधियां भाविनामस्तु नित्यम् ॥ ३ ॥ संपूर्णा पूर्जिमेन्दुप्रभसुभगगुणैर्दत्तदेवेन्द्रनाना, मोद्यद्दन्धद्विपेन्द्रप्रचु रमदहरणाधिपे राजमाना ॥ श्रीअर्हद्भक्तिभावा विमलकजकरा भास्वदम्बाभिधाना. पंचम्यन्हस्तपोथी वितरतु कुशलं धीमतां साव धाना ॥ ४ ॥

॥ अथ त्रैलोक्यप्रकाशाख्यं जिनचैत्यवन्दम ॥

॥ अथवा चैत्यवन्दनचतुर्विंशतिका ॥

(शार्दूलविक्रीडितं छन्दः ॥)

॥ अथ श्रीऋषभदेवचैत्यवन्दन प्रारंभ ॥

सद्भक्त्या नतमौलिनिर्जरवर भ्राजिष्णुमौलिप्रभा, संमिश्रारुण दीप्तिशोभिचरणाम्भोजद्वयः सर्वदा ॥ सर्वज्ञः पुरुषोत्तमः सुचरितो धर्मार्थिनां प्राणिनाम, भूयादभूरिविभूतये मुनिपतिः श्रीनाभिसूनु

र्भिनः ॥ १ ॥ सद्बोधोपचिताः सदैव दधता प्रौढप्रतापश्रियो, येनाज्ञानतमोवितानमखिलं विक्षिप्तमन्तः क्षणम । श्रीशत्रुंजयपूर्वशैल- शिखरं भास्वानिवोद्भासयन्, भव्याम्भोजहितः स एष जयतु श्रीमारुदेवः प्रभुः ॥ २ ॥ यो विज्ञानमयो जगत्रयगुरुयं सर्वलोका श्रिताः सिद्धिर्येन वृता समस्तजनता यस्मै नतिं तन्वते ॥ यस्मा- न्मोहमतिर्गता मतिभृतां यस्यैव सेव्यं वचो, यस्मिन् विश्वगुणा- स्तमेव सुतरां वन्दे युगादीश्वरम ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीअजितप्रभु चैत्यवन्दन प्रारम्भः ॥

(मालिनी छन्दः)

सकलसुखसमृद्धिर्यस्य पादारविन्दे, विलसति गुणरक्ता भ- कराजीव नित्यम् ॥ त्रिभुवनजनमान्यः शान्तमुद्राभिरामः सजयति जिनराजस्तुंगतारंगतीर्थे ॥ १ ॥ प्रभवति किल भव्यो यस्य निर्व- र्णनेन, व्यपगतदुरितौघः प्राप्तमोदप्रपंच ॥ निजबलजितरागद्वेषवि- द्वेषिवर्गे, तमजितवरगोत्रं तीर्थनाथं नमामि ॥ २ ॥ नरपतिजि- तशत्रोर्वंशरत्नाकरेन्दुः, सुरपतियातिमुख्यैर्भक्तिदक्षैः समर्च्यः ॥ दिनपतिरिव लोकेऽपास्तमोहान्धकारो, जिनपतिरजितेशः पातु मां पुण्यमूर्तिः ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीसंभवजिनचैत्यवन्दन प्रारम्भः ॥

(स्रग्धरा छन्दः ॥)

प्रभूतकल्पासकचित्ताः प्रभुस्तवभवभ्रान्तिमुक्ता मनुष्याः सं-

जाताः साधुभावोल्लसितनिजगुणान्वेषिणः सद्य एव ॥ स श्रीमान् संभवेशः भवभरसमयो निश्वविश्वापकर्ता,सद्भर्ता दिव्यदीप्तिः पर-मपदकृते सेव्यतां भव्यलोकाः ॥१॥ शुक्लध्यानोदकेनोज्ज्वलमति-चयतस्तच्छभावाद्भुतेन, स्वस्मादाहृत्य वृत्तं शिवपदनिगमं कर्मपंकमपंचम् ॥ नीरन्ध्रं दूरयित्वा प्रकृतिमुपगता निर्विकल्पस्वरूपः, सेव्यस्ताक्ष्यर्ध्वजोऽसौ जगति जिनपतिर्वीतरागः सदैव ॥ २ ॥ वार्धौ विद्योतिरत्नप्रकर इव परिभ्राजते सर्वकाले, यस्मिन्निःशेषदोषव्यपगमविशदे श्री जितारेस्तनूजे ॥ दुष्पापो दुष्टसत्त्वैः स्फुटगुणनिकरःशुद्धबुद्धिक्षमादिः कल्याणश्रीनिवासः स भवति वदताम्यर्चनीयो न केषाम् ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीअभिनन्दनजिनचैत्यवन्दन ॥

(द्रुतविलम्बितं छन्दः)

॥ विशदशारदसोमसमाननः कमलकोमलचारुविलोचनः ॥ शुचिगुणः सुतरामभिनन्दनो, जयतु निर्मलतांचितभूघनः ॥ १ ॥ जगति कान्तहरीश्वरलांछित, क्रमसरोरुह भूरिकृपानिधे ॥ मम समीहितसिद्धिविधायकं, त्वदपरं कमपीह न तर्कये ॥ २ ॥ भवरसंवर संवरभूपते,स्तनय नीतिविचक्षण ते पदम् ॥ शरणमस्तु जिनेश निरन्तरं, रुचिरभक्तिसुयुक्तिभृतो मम ॥ ३ ॥

॥ अथ सुमतिजिनचैत्यवन्दन ॥

(उपेन्द्रवज्रा छन्दः ॥)

॥ सुवर्णवर्णो हरिगा सवर्णो, मनोवनं मे सुमतिर्बलीयान् गतस्ततो दुष्कुदृष्टिराग, द्विपेन्द्र नैव स्थितिरत्र कार्या ॥ १ ॥ जिनेश्वरो मेघनरेन्द्रसूनु, घनोपमो गर्जति मानसे मे ॥ अहो गुरुद्वेष-हुताशनत्वा, मसौ शमं नेष्यति सद्य एव ॥ २ ॥ इतः सुदूरं व्रज दुष्टबुद्धे, समं दुरात्मोयपरिच्छदेन ॥ सुबुद्धिभर्ता सुमतिर्जिनेशो, मनोरमः स्वान्तमितामदोयम् ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीपद्मप्रभजिनचैत्यवन्दन ॥

॥ (भुजंगप्रयातं छन्दः ॥)

॥ उदारप्रभामण्डलैर्भासमानः ,कृतात्यन्तदुर्दान्तदोषापमानः॥ सुसीमांगजः श्रीपतिर्देवदेवः, सदा मे मुदाभ्यर्चनीयस्त्वमेव ॥ १॥ यदीयं मनः पंकजं नित्यमेव, त्वयालंकृत ध्येयरूपेण देव । मया-नस्वरूपं तमेवातिपुण्यं, जगन्नाथ जानामि लोके सुधन्यम् ॥ २ ॥ अतोऽधीश पद्मप्रभानन्दधाम, स्मरामि प्रकामं तवैवांग नाम ॥ मनोवाञ्छितार्थप्रदं योगिगम्यं, यथा चक्रवाका रवेर्धाम रम्यम्॥३॥

॥ अथ श्रीसुपार्श्वजिनचैत्यवन्दन ॥

(तोटकछन्दः)

॥ जयवन्तमनन्तगुणैर्निभृतं, पृथिवीसुतमद्भुतरूपभृतम् ॥ निज-

वीर्यविनिर्जितकर्मबलं, सुरकोटिसमाश्रितपत्कमलम् ॥ १ ॥ निरुपाधिकनिर्मलसौख्यनिधिं, परिवर्जितविश्वदुरन्तविधिम् ॥ भववारिनिधेः परपारमितं, परमोज्वलचेतनयोन्मिलितम् ॥ २ ॥ कलधौतसुवर्णशरीरधरं, शुभपार्श्वसुपार्श्वजिनप्रवरम् ॥ विनयावनतः प्रणमामि सदा, हृदयोद्भवभूरितरप्रमुदा ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीचन्द्रप्रभजिन चैत्यवन्दन ॥

(वंशस्थंछन्द ॥)

अनन्तकान्तिप्रकरेण चारुणा, कलाधिपेनाश्रितमात्मसाम्यतः जिनेन्द्र चन्द्रप्रभदेवमुत्तमं, भवन्तमेवात्महितं विभावये ॥ १ ॥ उदारचारित्रनिधे जगत्प्रभो, तवाननम्भोजविलोकनेन मे ॥ व्यथा समस्तास्तमितोदितं सुखं, यथा तमिस्रा दिनमर्कतेजसा ॥ २ ॥ सदैव संसेवनतत्परे जने, भवन्ति सर्वेऽपि सुराः सुदृष्टयः ॥ स्वप्रलोके समचित्तवृत्तिना, त्वयैव संजातमतो नमोंऽस्तु ते ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीसुविधिजिनचैत्यवन्दन ॥

(वसन्ततिलका छन्दः ॥)

विश्वाभिवन्द्य मकराङ्कितपादपद्म, सुग्रीवजात जिनपुंगव शान्तिसद्म ॥ भव्यात्मतारणपरोत्तमयानपात्र, मां तारयस्व भववारिनिधेरपारात् ॥ १ ॥ निःशेषदोषविषमोद्भवकर्मजालं भव्याः

श्रयन्ति भवदाश्रयतो मुनीन्द्र ॥ संसेवितः सुरमणिर्बहुधा जनानां, किं नाम नो भवति कामितसिद्धिकारी ॥ २ ॥ त्रिज्ञ कृपारसनिधि सुविधे स्वयंभू,र्मत्वा भवन्तमिति विज्ञपयामि तावत् ॥ देवाधिदेव तव दर्शनवल्लभोऽहं, शश्वद्भवामि भुवनेश तथा विधेहो ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीशीतलजिनचैत्यवन्दन ॥

(शार्दुलविक्रीडितं छन्दः ॥)

कल्याणांकुरवर्धने जलधरं सर्वांगिसंपत्करं, विश्वव्यापिय शःकलापकलितं कैवल्यलीलाश्रितम् ॥ नन्दाकुक्षिसमुद्भवं दृढरथ-क्षोणीपतेर्नन्दनं, श्रीमत्सूरतबन्दिरे जिनवरं वन्दे प्रभुं शीतलम् ॥ ॥ १ ॥ विश्वज्ञानविशुद्धसिद्धिपदवीहेतुप्रबोधं दधद्,भव्यानां वरभ-क्तिरंक्तमनसां चेतः समुल्लासयन् ॥ नित्यानन्दमयः प्रसिद्धसमयः सद्भूतसौख्याश्रयो, दुष्टानिष्टतमःप्रणाशतरणिर्जियाज्जिनःशीतलः ॥२॥ सद्भक्त्या त्रिदशेश्वरैः कृतनुतिर्भास्वद्गुणालंकृतिः, सत्क-ल्याणसमद्युतिः शुभमतिः कल्याणकृत्संगतिः श्री वत्सांकसमन्वित-स्त्रिभुवनत्राणे गृहीतव्रतो, भूयाद्भक्तिमतां सदैव वरदः श्रीशीतल-स्तीर्थकृत् ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीश्रेयांसजिनचैत्यवन्दन ॥

(हरिणी छन्दः ॥)

चिरपरिचिता गाढव्यासा सुबुद्धिपराङ्मुखी, निजबलपरि-

स्फूर्त्येदिप्रा समग्रतया मम ॥ व्यपगतवती दूरं दुष्टा स्वनिष्ठकुदृष्टिता, अपचितसहाः सद्योभूत्वा यदीयसुदृष्टितः ॥ १ ॥ निरुपमसुखश्रेणीहेतुर्निराकृतदुर्दशा, शुचितरगुणग्रामावासा निसर्गमहोज्ज्वला ॥ हृदयकमले प्रादुर्भूता सुतत्त्वरुचिर्मम, विदलितभवभ्रान्तिर्यस्याप्यजस्रमनुस्मृतेः ॥ २ ॥ उपकृतिमतिर्दाने दक्षो निरस्तजगद्व्यथः, समुचितकृतिर्विज्ञानांशुप्रकाशितसत्पथः ॥ नृपगणगुरोर्विष्णोर्वंशे प्रभाकरसंनिभः, स भवतु मम श्रेयांसो नःप्रबोधसमृद्धये ।३।

॥ अथ श्रीवासुपूज्यजिनचैत्यवन्दन ॥

(रथोद्धता छन्दः ॥)

पूर्णचन्द्रकमनीयदो धति भ्राजमानमुखपद्मसुतश्रियम् ॥ शान्तदृष्टिमभिरामचेष्टितं, शिष्टजन्तुपरिवेष्टितं परम् ॥ १ ॥ नष्टदुष्टमतिभियमीश्वरं, संस्मरद्भिरिह भूरिभिर्नृभिः ॥ क्षीणमोहसमयादनन्तरा, प्रापि सत्यपरमात्मरूपता ॥ २ ॥ पार्थिवेशवसुपूज्यवेश्मानं, प्राप्तपुण्यजनुपं जगत्प्रभुम् ॥ वासुपूज्यपरमेष्ठिनं सदा, के स्मरन्ति न हितं विपश्चितः ॥ ३ ॥

[त्रिभिः संटंकः ॥]

॥ अथ श्रीविमलजिनचैत्यवन्दन ॥

(मन्दाक्रान्ता छन्दः ॥)

संसारेऽस्मिन्महति महिमामेयमानन्दरूपं, त्वां सर्वज्ञं सकल-

प्रकृतिश्रेणिसंसेव्यमानम् ॥ दृष्ट्वा सम्यग्विमलसदसज्ज्ञानधाम प्रधानं, संप्राप्तोऽहं प्रशमसुखदां संभृतानन्दवीचिम् ॥ १ ॥ ये तु स्वामिन् कुमतिविहितस्फारमद्बोधमूढाः सौम्याकारां प्रतिकृतिमपि प्रेक्ष्य ते विश्वपूज्याम् ॥ द्वेषोद्भुतेः कलुषितमनोवृत्तयः स्युः प्रकामं, मन्ये तेषां गतशुभदृशां का गतिर्भाविनीति ॥ २ ॥ श्यामासूनो प्रतिदिनमनुस्मृत्य विज्ञानीवाक्यं, हित्वानार्यं कुमतिवचने ये भुवि प्राणभाजः ॥ पूर्णानन्दोल्लसितहृदयास्त्वां समाराधयन्ति, श्लाघ्याचाराःप्रकृतिसुभगाःसन्तिधन्यास्त एव ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीअनन्तजिनचैत्यवन्दन ॥

(स्त्रिग्विणी छन्दः)

प्र यस्य भव्यात्मनो दिव्यचेतोगृहे, सर्वदानन्तजितमणिर्वीप्यते ॥ यान्ति दूरे स्वतस्तस्य दुष्टाशयो, विश्वविज्ञानवित्तं भवेद्धक्षयम् ॥ १ ॥ यस्तु सर्वज्ञरूपं स्वरूपस्थितं, वीक्ष्य मद्भावतः स्निग्धसेनात्मनम् ॥ अद्भुतामोदसंदोहसंपूरितो, मन्यते धन्यमात्मीयनेत्रद्वयम् ॥ २ ॥ साऽपवर्गानुगामिस्वभावोज्ज्वलां, रूढमिथ्यात्वविद्रावण तत्परम् बन्धुरात्मानुभूतिप्रकाशोन्नतां, शुद्धसम्यक्त्वसंपत्तिमालभ्यते ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीधर्मनाथजिनचैत्यवन्दन ॥

(कामक्रीडा छन्दः ॥)

॥ भास्वज्ज्ञानं शुद्धात्मानं धर्मेशानं सद्ध्यानं, शक्त्या युक्तं

दोषोन्मुक्तं तत्त्वासक्तं सद्भक्तम् ॥ शश्वच्छान्तं कीर्त्या कान्तं ध्वस्तध्वान्तं विश्रामं, क्षिप्तावेशं सत्यादेशं श्रीधर्मेशं वन्दध्वम् ॥१॥ निःशेषार्थप्रादुष्कर्ता सिद्धेर्भर्ता संवर्ता, दुर्भावानां दूरे हर्ता दीनोद्धर्ता संस्मर्ता ॥ सद्भक्तेभ्यो मुक्तेर्दाता विश्वत्राता निर्माता, स्तुत्यो भक्त्या वाचोयुक्त्या चेतोवृत्त्या ध्येयात्मा ॥ २ ॥ सम्यग्दृग्भिःसाक्षाद्दृष्टो मोहास्पृष्टो नाकृष्टः, स्रोतोग्रामैः संपज्ज्येष्टः साधुश्रेष्टः सत्प्रेष्ठः ॥ श्रद्धायुक्तस्वान्तैर्जुष्टो नित्यं तुष्टो निर्दुष्टस्त्याज्या नैव श्रीवज्रांको नष्टातं को निःशंकः ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीशान्तिनाथजिनचैत्यवन्दन ॥

[द्रुतविलम्बितं छन्द ॥]

॥ विपुलनिर्मलकीर्तिभरन्वितो, जयति निर्जरनाथनमस्कृतः ॥ लघुविनिर्जितमोहधराधिपो जगति यः प्रभुशान्तिजिनाधिपः ॥१॥ विहितशान्तसुधारसमज्जनं, निखिलदुर्जयदोषविवर्जितम् ॥ परमपुण्यवतां भजनीयतां, गतमनन्तगुणैः सहितं सताम् ॥ २ ॥ तमचिरात्मजमीशमधीश्वरं, भविकपद्मविबोधदिनेश्वरम ॥ महिमधाम भजामि जगत्रये, वरमनुत्तरसिद्धिसमृद्धये ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीकुन्थुनाथजिनचैत्यवन्दन ॥

॥ गीतपद्धति छन्दः ॥

॥ जय जय कुन्थुजिनोत्तम सत्तमतत्त्वनिधान, धर्मिजनो-

ज्वलमानसमानसहंसमान ॥ज्ञानाच्छादकमुख्यमहोद्धतकर्मविमुक्त, विषमविषयपरिभोगविरक्त शुभाशययुक्त ॥ १ ॥ जय जय विश्वः जनोन मुनिव्रजमान्य विशुद्ध, चेनन चारुचरित्रपवित्रित लोकविशुद्ध ॥ निरुपममेरुमहीधरधीर निरन्तरमेव, गर्वविवर्जितसर्वसुपर्व विनिर्मितसेव ॥ २ ॥ जय जय सुरनरेश्वरचन्दनकल्प जिनेश विश्वविभावविनाशक वीतविकल्प ॥ निर्मलकेवलबोधविलोकितलोकालोक, प्रादुरभूतमहोदयनिर्वृति नित्यविशोक ॥२ ॥

॥ अथ श्रीअरनाथजिनचैत्यवन्दन ॥

[रामगिरिरागेण गीयते ॥

दिव्यगुणधारक भव्यजनतारकं, दुरितमतिवारक सुकृतिकान्तम ॥ जितविषमसायक सर्वसुखदायकं, जगति जिननायक परमशान्तम् ॥ १ ॥ स्वगुणपर्यायसमीलितं नौमि तं, विगतपरभावपरिणतिमखण्डम् ॥ सर्वसंयोगविस्तारपारंगतं, प्राप्तपरमात्मरूपं प्रचण्डम् ॥ दि० ॥ २ ॥ साधुदर्शनवृतं भाविकैः प्रस्तुतं प्रातिहार्याष्टकोद्भासमानम् ॥ सततमुक्तिश्रिं सर्वदा पूजितं,शिवमहोसार्वभौमप्रधानम् ॥ दि० ॥ ३ ॥ त्रिभिर्विशेषकम् ॥

॥ अथ मल्लिजिनचैत्यवन्दन ॥

[गेयपद्धतिराग]

कुम्भसमुद्भव संमदाकर ॥ गुणवर हे मल्लिजिनोत्तम देव

जय जय विश्वपते ॥ १ ॥ कृत्याकृत्यविवेकिता जिन समुचिता ॥ हे त्वयि जागर्ति जिनेश जय जय विश्वपते ॥ २ ॥ निरवानन्दम-प्रकाशिका भ्रमनाशिका ॥ हे तव शुभदृष्टि रतोश जय जय विश्व-पते ॥ ३ ॥ शुद्धिनिबन्धनसन्निधे सद्गुणनिधे हे वर्जितसर्वविकार जय जय विश्वपते ॥ ४ ॥ निजनिरुपाधिकसंपदा शोभित सदा हे निर्मलधुरीण जय जय विश्वपते ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीमुनिसुव्रतजिनचैत्यवन्दन ॥

(अन्यगेयपद्धतिरागः)

॥ उत्तमचेतन धर्मसमृद्ध जगत्पते, नित्याऽनित्यपदार्थनि-श्चयविक्रमसम्पते ॥ निरवधिकर्मजितमोहमहोद्भटभूपते, आख्यातनुजात सुजातहरिद्युते ॥ १ ॥ श्रीमुनिसुव्रत सुव्रतदर्शक सज्जना कृत-सद्गुणशुभवाक्यसुधारसमज्जनाः ये प्रणमन्ति भवन्तमनन्तसुखा-श्रितं, केवलमुज्ज्वलमात्मस्वरूपमनिन्दितम् ॥ २ ॥ ते निःसंशयमेव जगत्त्रयवन्दिताः सद्भावेन भवन्ति सदगुणानन्दिताः ॥ क्रूरं स्तो-त्रितमेव यतः किल कारणं जनयति नात्मविरुद्धमिहासाधारणम् ॥ ३ ॥ त्रिभिर्विशेषकम् ॥

॥ अथ श्रीनमिनाथजिनचैत्यवन्दन ॥

(पंचचामरं छन्दः)

नमीश निर्मलात्मरूप सत्यरूप शाश्वतं परोर्ध्वसिद्धिसौधमूर्ध्नि

सत्स्वभावतः स्थितम् ॥ विद्यायमान साब्जकोश देशमध्यवर्तिनं, स्मरामि सर्वदा भवन्तमेव सर्वदर्शिनम् ॥ १ ॥ प्रफुल्लकौंचलाञ्छनप्रभूततेजसोऽत्र ते, दिवाकरस्य वा महेश्वराभिदर्शनेन मे ॥प्रमादवर्धिनी सुदुर्मतिर्निशेव दुर्भगा गता प्रणाश्य ाशु हृत्कजे विनिद्रताऽभवत् ॥ २ ॥ निरस्तदोषदुष्टकष्टकार्यमर्त्यसंस्तवो भवे भवे भवत्पदाम्बुजैकसेवकः प्रभो ॥ भवेयमीदृशं भृशं मदीयचित्तचिन्तितं तव प्रसादतो भवत्त्ववन्ध्यमेव सत्वरम् ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीनेमिनाथजिनचैत्यवन्दन ॥

(उपजाति छन्दः)

विशुद्धविज्ञानभृतां वरेण शिवात्मजेन प्रशमाकरेण ॥ येन प्रयासेन विनैव कामं विजित्य विक्रान्तरं प्रकामम् ॥ १ ॥ विहाय राज्यं चपलस्वभाव, राजीमतिं राजकुमारिकां च ॥ गत्वा मलोलं गिरिनारशैलं, भेजे व्रतं केवलमुक्तियुक्तम् ॥२ ॥ निःशेषयोगीश्वरमौलिरत्नं, जितेन्द्रियत्वे विहितप्रयत्नम् ॥तमुत्तमानन्दनिधानमेकं नमामि नमिं विलसद्विवेकम् ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथजिनचैत्यवन्दन ॥

श्रयामि तं जिनं सदा मुदा प्रमादवर्जितं, स्वकीयवाग्विलासतो जितोरुमेघगर्जितम् ॥ जगत्प्रकामिकामिनप्रदानदक्षमक्षतं, पदं दधान मुच्चकैरकैनवोपलक्षितम् ॥ १ ॥ सनामवन्यभेदक प्रभूतसंपदां पदं, वलक्षपक्षसंगतं जनेक्षणक्षणप्रदम् ॥ सदैव यस्य दर्शनं विशांविमर्दितैनसां निहन्त्यशातजातमात्मभक्तिरक्तचेतसाम् ॥ २ ॥ अ-

वाप्य यत्प्रसादमादितः पुरुश्रियो नरा, भवन्ति मुक्तिगामिनस्ततः प्रभाप्रभास्वराः॥भजेयमाश्वसेनिदेवदेवमेव्रसत्पदं,तमुच्चमानसेनशुद्ध बोधवृद्धिलाभदम् ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रीवीरजिनचैत्यवन्दन ॥

(पृथ्वीछन्दः)

वरेण्यगुणवारिधिः परमनिर्वृतः सर्वदा, समस्तकमलानिधिः सुरनरेन्द्रकोटिश्रितः ॥ जनातिसुखदायको विगतकर्मवारो जिनः सुमुक्त जनसंगमस्त्वमसि वर्धमानप्रभो ॥ १ ॥ जिनेंद्र भवतोऽद्भुतं मुखमुदार बिम्बस्थितं, विकारपरिवर्जीतं परमशान्तमुद्रांकितम् ॥ निरीक्ष्य मुदितेक्षणः क्षणामितोऽस्मि यद्भावनां, जिनेस जगदीश्वरोद्भवतु सैव मे सर्वदा ॥ २ ॥ विवेकिजनवल्लभं भुवि दुरात्मनां दुर्लभं, दुरन्तदुरितव्यथाभरनिवारणेतत्परम् ॥ तवांग पद पद्मयोर्युगर्भनिन्द्य वीरप्रभो, प्रभूतसुखसिद्धये मम चिराय संपद्यताम् ॥ ३ ॥

हतपुण्या न पश्यन्ति, रागान्धास्तत्त्वसंस्थितिम्ः ॥
लाभेऽलाभफलं चैव, लभन्ते ते नराधमाः ॥

इति चैत्यवन्दनचतुर्विंशतिका समाप्ता ॥

સમાપ્ત.

॥ अथश्री अक्षयनिधि तपनो विधि. ॥

॥ श्रावण वद चोथने दिवसे प्रारंभ करवो, प्रथम एक कुंभ सुवर्णनो अथवा रत्ननो जडित शक्ति प्रमाणे करवो, जग दिठ भिन्न भिन्न करवा, ते कुंभ पवित्र पणे एकान्त स्थानके डांगरनी ढगली उपर स्थापवो, ते कुंभ उपर एक श्री-फल मुकवुं, अने आगळ चोखानो स्वातिक करवो, ते घडामां शक्ति होय तो हंमेश रुपा नाणुं नांखवुं, नहितो पहेले दिवसे तथा छेल्ले दीवसे रुपानाणुं नाखवुं, वचला दीवसोमां यथा शक्ति नां-खवुं पण हंमेश कुंभमां नाणु तो नांखवुं ज जोइये, तिहां ज्ञान बां-धवुं, एक पीठिका उपर कल्पसूत्रनुं पुस्तक पधरावतुं पुस्तक उपर चन्द्रवो बांधवो, धूप दीप करवो; अने ते दीपक अखंड राखवो जोइए. ॥

॥ प्रथम इरिया वही प्रतिक्रमवा, तस्स उत्तरी कहेवी पछी एक लोगस्सनो काउसग्ग करवो, पछी प्रगट लोगस्स कहेवो, पछी " अक्षयनिधि तप आराधवा चैत्यवंदन करुं " एम कही अक्षय निधिनुं चैत्यवंदन करवुं. ते नीचे प्रमाणे.

॥ शासन नायक सुखकरण, वर्द्धमान जिन भाण ॥ अहनींश एहनी शिखबहु, आणा गुण मणि खाण ॥ १ ॥ ते जिनवरथी पामीया, त्रिपदी श्री गणधार ॥ आगम रचवा बहु विधि, करी

अर्थ विचार ॥ २ ॥ ते श्री श्रुतमां भाखिया, ए तप बहु विधि सुखकार ॥ श्री जिन आगम पामीने, साधे मुनि शिवपार ॥३॥ सिद्धांत वाणी सुणवा रसिक, श्रावक समकित धार ॥ अष्ट सिद्धि अर्थे करे, अक्षयनिधि तप सार ॥ ४ ॥ तप तो सूत्रमां अति घणां, साधे मुनिवर जेह॥अक्षयनिधि निज कारणे,श्रावक ते गुण गेह॥ ॥ ५ ॥ ते माटे भवि तप करो, सर्व ऋद्धिवरे सार, विधिशुं एह आराधतां, पामी जे भवपार ॥ ६ ॥ श्री जिनवर पूजा करो, त्रिक शुद्धे त्रिकाल ॥ तेम वळी श्री श्रुत ज्ञाननो, भक्ति थइ उजमाल ॥ ७ ॥ पडिकमणा दोय टंकना, ब्रह्मचर्यने धरीये ॥ ज्ञाननी सेवा करी, सेजे भवजल तरीये ॥ ८ ॥ चैत्यवंदन शुभ भावथी-ए ॥ स्तवन थुइ नमस्कार, श्रुतदेवी उपासना, धीरविजय हितकार ॥ ९ ॥

पछी नमुत्थुणं–जवंति चेइयाणं जावंत केविसाहु–पछी नमोऽर्हत्–पछी स्तवन अक्षयनिधिनुं कहेवुं. ते नीचे प्रमाणे.

लावो लावोरे राज मोघां मूलां मोती ॥ ए देशी ॥

॥ तप वर कीजेरे, अक्षय निधि अभिधाने, सुखभर लीजेरे दिन दिन चढते वाने ॥ १ ॥ आंकणी ॥ पर्व पजुसण पव शिरोमणी, जे श्री पर्व कहाय ॥ मास पास छठ दशम दूवालस, तप पण ए दिन थाय ॥ तप० ॥ २ ॥ पण अक्षयनिधि पर्व पजुसण केरो कहे जिन भाण ॥ श्रावण वदी चोथे प्रारंभी, संवच्छरी प-

माण तप० ॥ ३ ॥ ए तप करतां सर्व ऋद्धिवरे, पगे पगे प्रगटे निधान ॥ अनुक्रमे पामे तेह परम पद, सोभीया नाम प्रधान ॥ ॥ तप० ॥ ४ ॥ पर मच्छरथी कर्म बंधाणुं, तिणे पामी दुख जाल ॥ ॥ ए तप करतां ते पूर्वलुं कर्म थयुं विसराल ॥ तप० ॥ ५ ॥ ज्ञान पुजा श्रुत देवी काउस्सग्ग, स्वस्तिक अतिशय सोहावे ॥ सोवन जडित कुंभ निज शक्ति, संपूर्ण क्रमे थावे ॥ तप० ॥ ६ ॥ जघन्य मध्यम उत्कृष्टताथी करीये, इगदोय तीन वरिस ॥ वरस चोथे श्रुतदेवो निमित्ते, ए तप वोसवा वीस ॥ तप० ॥ ७ ॥ इणे अनुसारे ज्ञान तणुं वर, गणणुं गणीए उदार ॥ आवश्यकादिक करणी संयुक्त, करतां लहे भवपार ॥ तप० ॥ ८ ॥ इहभव परभव आ संसार, हितकरो भवि प्राणी ॥ जे पर पुद्गल ग्रहणनकरवुं, ते तप कहे वरनाणी ॥ तप० ॥ ९ ॥ राति जगा पूजा प्रभावना, इयगयरथ शणगारो जे ॥ पारणादिन पंच शब्द वाजे, वाजंते पधरावी जे ॥ तप० ॥ १० ॥ चैत्य विशाल होय तिहां आवी, प्रदाक्षणा वलो दीजे ॥ कुंभ विविध नैवेद्य संगाते, प्रभु आगल ढोइजे ॥ तप० ॥ ११ ॥ राधणपुरे ए तप सुणी बहु जन थया उजमाल तपकाज ॥ तेहमां मुख्य मंडाण ओच्छवमां, मसालिया देवराज ॥ तप० ॥ १२ ॥ संवत अढार त्रेतालीस वर्षे ए तप बहु भवि कीधो ॥ श्री जिन उत्तम पास पसाये, पद्मविजये फल लीधो ॥ तप० ॥ १३ ॥

ते वार पछी जयवियराय कही, सुयदेवयाए करेमि काउस्सग्गं कही, एक नवकारनो काउस्सग्ग करी, पछी गुरु " सुयदेवयानी थोयं " कहे, पछी पच्चखाण करवां पछी पूजानी ढाल कहेवी ॥

॥ पूजानी ढाल ॥

॥ दुहा ॥ सप्तमपद श्रीज्ञाननुं, सिद्ध चउपद मांही ॥ आराधीजे शुभमने, दिन दिन अधिक उच्छाह ॥ १ ॥

॥ छंद गाथा ॥ अन्नाणसम्मोहतमो हरस्स ॥ नमो नमो नाणदिवायरस्स ॥ पंचप्पयारस्स उवगारयस्स, सत्ताण तव्वत्थ पयासगस्स ॥ १ ॥ हुवे जेहथी सर्व अज्ञानरोधो, जिनादिश्वर मोक्ष अर्थावबोधो ॥ मति आदि पंचप्रकारे प्रसिद्धो, जगद्भासते सर्व देवाविरुद्धो ॥ २ ॥ यदीयप्रभावे सुभक्ष्यमभक्ष्यं सुपेयं अपेयं सुकृत्यं अकृत्यं ॥ जेने जाणीये लोक मध्ये सुनाणं, सदा मे विशुद्धं तदेव प्रमाणं ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ भव्य नमो गुण ज्ञानने, स्वपर प्रकाशक भावेजी ॥ पर्याय धर्म अनंतता, भेदाभेद स्वभावेजी ॥ चाल ॥ जे मुख्य परिणति सकल ज्ञायक, बोधभाव विलच्छना ॥ मति आदि पंच प्रकार निर्मल, सिद्ध साधन लच्छना ॥ स्याद्वादसंगी तत्त्वरंगी प्रथम भेदाभेदता, सविकल्पने अविकल्प वस्तु, सकल संशय छेदता ॥

॥ ढाल ॥ बीजी ॥ श्री सीमंधर साहीब आगे—ए देशी ॥ भक्षाभक्ष न जे विण लहीए, पेय अपेय विचार ॥ कृत्य अकृत्य न जेविण लहीए, ज्ञान ते सकल आधाररे ॥ भविका सिद्ध चक्र पद वंदो ॥ जेम चिरकाले नंदोरे भविका सिद्ध० ॥ १ ॥ प्रथम ज्ञानने पछी अहिंसा, श्रीसिद्धांते भाख्युं ॥ ज्ञानने वंदो ज्ञान म निंदो, ज्ञानीए शिव सुख चाख्युंरे ॥ भ० ॥ २ ॥ सकल क्रियानुं मुल जे श्रद्धा, तेहनुं मुल जे कहिए ॥ तेह ज्ञान नित्य नित्य वंदीजे, ते विण कहो किम रहीएरे ॥ भ० ॥ ३ ॥ पंच ज्ञानमांहे जेह सदागम, स्वपर प्रकाशक जेह ॥ दिपक परे त्रिभुवन उपगारी, वली जेम रवि शशी मेहरे ॥ भ० ॥ ४ ॥ लोक उर्ध्व अधो तिर्यग ज्योतिष, वैमानिकने सिद्ध ॥ लोकालोक प्रगट सवि जेहथी, ते ज्ञाने मुज शुद्धिरे ॥ भ० ॥ ५ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ ज्ञानावरणीय जे कर्म छे, क्षय उपशम तस थायरे ॥ तो होय एहिज आत्मा, ज्ञान अबोधता जायरे ॥ श्री वीरजिगेसर उपदिशे ॥ ॐ ह्री परमात्माने नमः ज्ञानपदेभ्यः कलशं यजामहे स्वाहाः ए मंत्र बोलीने ज्ञाननी वासक्षेप वडे पूजा करवी अने पछी द्रव्य पूजा करे सोना मोहोर तथा रुपा मोहोरथी ज्ञान पूजा यथा शक्ति करवी.

॥ खमासमणना दुहा ॥

॥ दुहा ॥ सुखकर शंखेश्वर नमी, थुणशुं श्री श्रुतनाण ॥ चउ मुंगा श्रुत एक छे, स्वपर प्रकाशक भाण ॥ १ ॥ अभिलाप्य अनंतमे, भागे रचियो जेह ॥ गणधर देवे प्रणमीयो, आगम रयण अछेह ॥ २ ॥ इम बहुली वक्तव्यता, छठाण वडीया भाव ॥ क्षमाश्रमण[1] भाष्ये[2] कह्युं, गोपय सर्पि जमाव ॥ ३ ॥ लेश थकी श्रुत वरणवुं, भेद भला तस वीश ॥ अक्षयनिधि तपने दिने, क्षमाश्रमण ते वीश ॥ ४ ॥ सूत्र अनंत अर्थ मयी, अक्षय अंश लहाय ॥ श्रुतकेवळी केवळीपरे, भाखे श्रुत पर्याय ॥ ५ ॥ श्री श्रुतज्ञानने नित्य नमो, भाव मंगलने काज ॥ पूजन अर्चन द्रव्यथी, पामो अविचल राज ॥ ६ ॥ (आ छट्ठो दुहो दरेक खमासण दीठ कहेवो) ॥ इग सय अडवीस स्वरतणा, तिहां अकार अढार ॥ श्रुत पर्याय समासमे, अंश असंख्य विचार ॥ श्रीश्रुत० ॥ १ ॥ बत्रीश वर्ण समाय छे, एक श्लोक मझार ॥ तेमांहे एक अक्षर ग्रहे, ते अक्षर श्रुतसार ॥ श्रीश्रुत० ॥ २ ॥ क्षयोपशम भावे करी, बहु अक्षरनो जेह ॥ जाणे ठाणांग आगले, ते श्रुतनिधि गुणगेह ॥ श्रीश्रुत० ॥ ३ ॥ कोडि एकावन अडलखा, अडशय अठ्यासी हजार ॥ चालीस अक्षर पद तणा, कहे अनुयोगद्वार ॥ श्रीश्रुत० ॥ ४ ॥ अर्थांते इहां पद कह्युं, जिहां अधिकार ठराय ॥ ते पद श्रुतने प्रणमता, ज्ञानावर्णीय हठाय ॥

---

१ जिनभद्र गणि क्षमा श्रमणे. २ विशेषावश्यक भाष्यमां.

श्रीश्रुत० ॥ ५ ॥ अढार हजार पदे करी, अंग प्रथम सुविलास ॥ दुगुणा श्रुत बहु पद अहे, ते पद श्रुत समास ॥ श्रीश्रुत० ॥ ६ ॥ पिंडप्रकृतिमां एके पदे, जाणे बहु अवदात ॥ क्षयोपशमनी विचित्रता, तेहज श्रुत संघात ॥ श्रीश्रुत० ॥ ७ ॥ पंचोतेर भेदे करी, स्थिति बंधादि विलास ॥ कम्मपयडी पयडी अहे, श्रुत संघात समास ॥ श्रीश्रुत० ॥ ८ ॥ गत्यादिक जे मार्गणा, जाणे तेहमां एक ॥ विवरण गुणठाणादिके, तस प्रतिपत्ति विवेक ॥ श्रीश्रुत० ॥ ९ ॥ जे बासठ्ठि मार्गण पदे, लेश्या आदि निवास ॥ संग्रह तरतम योगथी, ते प्रतिपत्ति समास ॥ श्रीश्रुत० ॥ १० ॥ संतपदादिक द्वारमां, जे जाणे शिवलोक ॥ एक दोय द्वारे करी, श्रद्धाश्रुत अनुयोग ॥ श्रीश्रुत० ॥ ११ ॥ वळी संत्तादिक नवपदे, तिहां मार्गण भास ॥ सिद्धतणी स्तवना करे, श्रुत अनुयोग समास ॥ श्रीश्रुत० ॥ १२ ॥ प्राभृत प्राभृत श्रुत नमुं, पूर्वना अधिकार ॥ बुद्धि बल प्रभावथी, जाणे एक अधिकार ॥ श्रीश्रुत० ॥ १३ ॥ प्राभृत प्राभृत श्रुतसमा, साभिध लब्धि विशेष ॥ बहु अधिकार इस्या अहे, क्षीराश्रव उपदेश ॥ श्रीश्रुत० ॥ १४ ॥ पूर्व गत वस्तु जिके, प्राभृत श्रुत ते नाम ॥ एक प्राभृत जाणे मुनि, तास करुं प्रणाम ॥ श्रीश्रुत० ॥ १५ ॥ पूर्वलब्धि प्रभावथी, प्राभृत श्रुत समास ॥ अधिकार बहुला अहे, पद अनुसार विलास ॥ श्रीश्रुत० ॥ १६ ॥ आचारादिक नामथी, वस्तुनाम श्रुत सार ॥ अर्थ अनेकविधे अहे, ते पण एक अधिकार ॥ श्रीश्रुत० ॥ १७ ॥ दुगसय पण-

वीस वस्तु छे, चौद पूर्वनो सार ॥ जाणे तेहने वंदना, एक श्वासे सोवार ॥ श्रीश्रुत० ॥ १८ । उत्पादादिक पूर्व जे, सूत्र अर्थ एक सार ॥ विद्यामंत्र तणो कह्यो, पूर्वश्रुत भंडार ॥ श्रीश्रुत० ॥ १९ ॥ बिंदुसार लगे भणे, तेहिज पूर्व समास ॥ श्रीशुभ वीरने शासने, होज्यो ज्ञान प्रकाश ॥ श्रीश्रुत० ॥ २० ॥ इति अक्षयनिधि तप खमासमण दुहा तथा विधि समाप्त ॥

बीजनुं स्तवन.

॥ दुहा ॥ सरस वचन रस वरसति, सरसति कला भंडार ॥ बीज तणो महिमा कहुं, जिम कह्यो शास्त्र मोझार ॥ जंबुद्धिपना भरतमां, राजग्रही नगरी उद्यान ॥ वीर जिणंद समोसर्या, वांदवा आव्या राजन ॥ २ ॥ श्रेणीक नामे भूपति, बेठा बेसण ठाय ॥ पुछे श्री जिनरायने, द्यो उपदेश महाराय ॥ ३ ॥ त्रिगडे बेठा त्रिभुवनपति, देशना दिये जिनराय ॥ कमल सकोमल पांखडी, इम जिनवर हृदय सोहाय ॥ ४ ॥ शशि प्रगट जिम ते दिने, धन ते दिन सुविहाण ॥ एक मने आराधतां, पामे पद निर्वाण ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ कल्याणक जीननां कहुं सुण प्राणीजीरे, अभिनंदन अरिहंत ॥ ए भगवंत भविप्राणीजीरे ॥ महाशुद बीजने दीने ॥ सु० ॥ पाम्या शीव सुखसार ॥ हरख अपार ॥ भवि० ॥ १ ॥ वासुपूज्य जिन बारमा ॥ सु० ॥ एहज तिथे नाण ॥

सफल विहाण ॥ भवी० ॥ अष्ट करम चुरण करी ॥ सुणो० ॥ अवगाहन एकवार ॥ मुगति मोझार ॥ भ० ॥ अरनाथ जीनजी नमुं ॥ सुणो० ॥ अष्टादशमो अरिहंत ॥ ए भगवंत ॥ भवि० ॥ उज्वल तिथि फागुणनी भली ॥ सुणो० ॥ वरीया शीव वधु सार ॥ सुंदर नार ॥ भवि० ॥ ३ ॥ दशमा शीतल जिनेसरु ॥ सुणो० ॥ परम पदनी वेल ॥ गुणनी गेल ॥ भवि० ॥ वैशाख वदी बीजने दिने ॥ सु० ॥ मुक्यो सरव ए साथ ॥ सुरनरनाथ ॥ भवि० ॥ ४ ॥ श्रावण सुदनी बीज भली ॥ सुणो० ॥ सुमतिनाथ जिन देव ॥ सारेसेव ॥ भवि० ॥ इण विथिए जिनभला ॥ सु० ॥ कल्याणक पंचसार ॥ भवनोपार ॥ भवि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ जगपति जिन चोवीसमोरे लाल, ए भाख्यो अधिकाररे ॥ भविकजन ॥ श्रेणिक आदे सहुं मल्यांरे लाल ॥ शक्ति तणे अनुसाररे भविकजन, भाव धरीने सांभळोरे लाल ॥ आराधो धरी खंतरे ॥भविकजन, भाव०॥१॥ दोयवरस दोयमासनीरे लाल, आराधो धरी हेतरे ॥ भ० ॥ उजमणुं विधिशुं करोरे लाल बीज ते मुगति महंतरे ॥ भ० ॥ भा० ॥ २ ॥ मारग मिथ्या दुरे तजोरे लाल, आराधो गुणना थोकरे ॥ भ० ॥ वीरनी वाणी सांभलीरे लाल, उछरंग थयो बहु लोकरे ॥ भ० ॥ भा० ॥ ३ ॥ इणिबीजे केइ तर्यारे लाल, वळी तरशे केइ शेषरे ॥ भ० ॥ शशिनिधि अनुमानथीरे लाल, सइला नागधर अंकरे ॥ भ० ॥ ४ ॥ असाड शुदी दशमी दीनेरे लाल, ए गायो स्तवन रसालरे ॥

भवि० ॥ नवल विजय सुपसायथीरे लाल, चतुरने मंगल मालरे ॥ भ० ॥ भा० ॥ ९ ॥

॥ कलश ॥ इय वीर जिनवर, सयल सुखकर, गायो अति उलट भरे ॥ असाड उज्वल दशमी दिवसे, संवत अढार अठोत्तरे ॥ बीज महिमा एम वरणव्यो, रही सिद्धपुर चोमासुए ॥ जेह भविक भावे भणे गुणे, तस घर लील विलासए ॥१॥

अथ पंचमी स्तवन.

॥ ढाळ ॥ १ ॥ इडर आंबा आंबलीरे ॥ ए देशी ॥

॥ श्री गुरु चरण नमी करीरे, प्रणमी सरस्वती माय ॥ पंचमी तप विधिशुं करोरे, निर्मल ज्ञान उपाय ॥ भविकजन कीजे ए तपसार ॥ १ ॥ जनम सफल निरधार ॥ भविक० ॥ लहीए सुखश्रीकार ॥ भविक० कीजे० ॥ ए आंकणी ॥ समवसरण देवे रच्युंरे, बेठा नेमी जिणंद ॥ बारे परखदा आगलेरे, भाखे श्री जिनचंद ॥ भ० ॥ २ ॥ ज्ञानवडो संसारमांरे, शिवपुरनो दातार ॥ ज्ञानरुपी दीवो कह्योरे, प्रगट्यो तेज अपार ॥ भविक० ॥ ३ ॥ ज्ञान लोचन जब निरखीयेरे, तब देखे लोक अलोक ॥ पसुआपरे ते मानवीरे, ज्ञान विना सवि फोक ॥ भविक० ॥ ४ ॥ ज्ञानी श्वासोश्वासमांरे, करम करे जे नास ॥ नारकीना ते जिवनेरे, कोडि वरससु विलास ॥ भविक० ॥ ५ ॥ आराधक अधिको कह्योरे, भगवती सूत्र मझार ॥

कीरीआ वैत ने आगलेरे, ज्ञान सकल सिरदार ॥ भविक० ॥ ६ ॥ कष्ट क्रिया तो सहु करेरे, तेहथी नहि कोइ सिद्ध ॥ ज्ञान क्रिया जब दो मिलेरे, तब पामो बहुली रिद्ध ॥ भविकजन० ॥ ७ ॥ कुणे आराधी एहवीरे, कोइने फली ततकाल ॥ तेह उपर तुमे सांभलोरे, एहनी कथा रसाल ॥ भविक० ॥ ८ ॥ जंबुद्विप सोहामणोरे, भरतक्षेत्र अभिराभ ॥ पद्मपुर नगरे शोभतोरे, अजितसेन राय नाम ॥ भविक० ॥ ९ ॥ शील सौभागी आगलेरे, यशोमति राणीनार ॥ वरदत्त बेटो तेहनोरे, मूरखमां शिरदार ॥ भविक० ॥ १० ॥ मात पिता मन रंगशुंरे, मुके अध्यापक पास ॥ पण तेहने नवि आवडेरे, विद्या विनय विलास ॥ भविक० ॥ ११ ॥ जिम जिम योवन जागतोरे, तिम तिम तनु बहु रोग ॥ कोढ थया वळी तेहनेरे, विसमा करमना भोग ॥ भविक० ॥ १२ ॥ आदरीए आदर करीरे, सौभाग्य पंचमी सार ॥ सुख सघलां सेहेजे मिलेरे, पामे ज्ञान अपार ॥ भविक० ॥ १३ ॥

॥ दुहा ॥ तिलकपुर शेठ वसे तिहां, सिंहदास गुणवंत ॥ जैन धरम करता लहे, कंचन कोडि अनंत ॥ १ ॥ कपुरतिलका सुंदरी, चाले कुल आचार ॥ तेहनी कुंखे अवतरी, गुणमंजरी वरनार ॥२॥ मुगी थइ ते बालिका, वचन वदे नहीं एक ॥ जिम जिम अति औषध करे, तिम तिम तनुं बहु रोग ॥ ३ ॥ सोलवरस तेहने थयां, परणे नहिं कुमार ॥ एहने कोइ वंछे नहीं, स्वजनादिक परिवार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ बन्योरे कुंवरजिनो सेहेरो ॥ ए देशी ॥

एहवे आवी समोसर्या, श्री विजयसेन सुरिंदरे ॥ सुंदर ॥ ज्ञानी गुरुने वांदवा, पुत्र सहित भूप वृंदरे ॥ सुं० ॥ १ ॥ सद्गुरु दीए देशनारे, सांभलो चतुरसुजाणरे ॥ सुंदर ॥ ज्ञान भणो भवि भावसु, जिम लहो कोडी कल्याणरे ॥ सुं ॥ स० ॥ २ ॥ सिंहदास सुत आपणो, आवी नम्यो करजोडीरे ॥ सुं० ॥ विधिशुं वांदी देशना, सांभलवाना कोडरे ॥ सुं० ॥ स० ॥ ३ ॥ ज्ञान आशातना जे करै, ते लहे दुख अनेकरे ॥ सुं० ॥ वाचा पण नवि उपजे, वालपरे विवेकरे ॥ सुं० ॥ स० ॥ ४ ॥ इह भव परभव दुख लहे, दुष्ट कुष्टादिक रोगरै ॥ सुं० ॥ परभव पुत्र न संपजे, कलत्रादिक वियोगरै ॥ सुं० स० ॥ ५ ॥ सिंहदास पुछे हवे, निज बेटीनी वातरै ॥ सुं० ॥ शे करमे रोग उपनो, ते कहो सकल अवदातरे ॥ सुं० ॥ स० ॥ ६ ॥ गुरु कहे शेठजी सांभलो, पुरवभव विरतंतरे ॥ सुं० ॥ धातकी खंड मध्य भरतमां, खेटक नगर निरखंतरे ॥ सुं० ॥ स० ॥ ७ ॥ जिनदेव वणिक वसे तिहां, सुंदरी नामे नाररै ॥ सुं० ॥ पांच बेटा गुण आगला, चार सुता मनोहाररे ॥ सुं० ॥ स० ॥ ८ ॥ एक दिन भणवा मुकीया, हुंशधरी मन मांहीरे ॥ सुं० चपलाइ करे चोगुणी, न भणे हरखे उंच्छांहिरे ॥ ॥ सुं० ॥ स० ॥ ९ ॥ शीखामण पंडयो दीए, आवी रुए माता पासरे ॥ सुं० कोप करी वलतु कहे, बेठा रहो घरवासरे ॥ सुं० ॥ स० ॥ १० ॥ चुलामांहि नाखियां, पुस्तकपाटी सोयरे ॥ सुं० ॥

रीसे धमधमती कहे, आखर मरशे सहुं कोयरे ॥ सुं० ॥ स० ॥ ११ ॥ कंथ कहे नारि प्रत्ये, कोण दीए कन्यादानरे ॥ सुं० ॥ मुरख गुण ग्रहे नहि, न लहे आदर मानरे ॥ सुं० ॥ स० ॥ १२ ॥ विहु जण मांहि बोलतां, क्रोध वस्यो विकरालरे ॥ सुं० ॥ जिन-देवे मार्युं मूशलुं, मरण पामी ततकालरे ॥ सुं० ॥ स० ॥ १३ ॥ तेह मरी गुणमंजरी, अवतरी तारे गेहरे ॥ सुं० ॥ जाति समरण उपन्युं, प्रगटी पुन्यनी गेहरे ॥ सुं० ॥ स० ॥ १४ ॥ साचुं साचुं सहुं कहे, ज्ञान भणो गुण खाणरे ॥ सुं० ॥ तपनो जो उद्यम करो, तो लहो केवल नाणरे ॥ सुं० ॥ स० ॥ १५ ॥

॥ दुहा ॥ पांसठ महिना कीजीए, मास मास उपवास ॥ पोथी थापो आगले, स्वस्तिक पुरो खास ॥ १ ॥ पांच पांच फल मुकीए, पांच जातिनां धान ॥ पांच वाटी दीवो करो, पांच ढोउ पकवान ॥ २ ॥ कुसुम भलां आणी करी, धूप पुजा करी सार ॥ नमो नाणस्स गूणणुं गणो, उत्तर दिशि दोय हजार ॥ ३ ॥ भक्ति करे साहम्मी तणी, शक्ति तणे अनुसार ॥ जीनवर जुगते पुजतां, पामे मोक्षदुवार ॥ ४ ॥ बार उपवास न करीशके, वरस मांहि दीन एक ॥ जाव जीव आराहिंये, आणी परम विवेक ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ चुडले योवन झल रह्यो ॥ ए देशी ॥

॥ राजन ॥ मुनीवर दीए धर्मदेशना, सुणीने देई कान ॥ रा० ॥ आलस मुकी आदरो, अजुआलो जिनज्ञान ॥ रा० ॥ मु०

॥ १ ॥ रा० रायपूछे हरखेकरी, सांभलो गुरु गुणवंत राजन ॥ वरदत्ते कर्म कीश्यां कर्यां, कोढे अंग गलंत ॥ रा० ॥ मु० ॥ २ ॥ भविक जीव हित कारणे, गुरु कहे मधुरी वाणी ॥ रा० ॥ पूरव-भवनी वारता, सांभलो चतुर सुजाण ॥ राजन ॥ मु० ॥ ३ ॥ जंबुद्वीप भरतक्षेत्रमां, श्रीपुर नगर विसाल ॥ रा० ॥ वसु शेठना सुत बे भला, वसुसार वसुदेव निहाल ॥ रा० ॥ मु० ॥ ४ ॥ वन-रमतां गुरु वांदिया, श्री मुनि सुंदरसुरि ॥ रा० ॥ सांभलतां संजम लीये, तप करे आनंदपुर ॥ रा० मु० ॥ ५ ॥ सकल कलागुण आगलो, लघुभाइ अतिसार ॥ रा० ॥ वसुदेवने कीधो पाटवी, पंचसयां सिरदार ॥ रा० ॥ मु० ॥ ६ ॥ पग पग पुछे तेहने, सूत्र अरथ निरधार ॥ रा० ॥ पलक एक उंघे नहीं, तव चिंते अणगार ॥ रा० मु० ॥ ७ ॥ पाप लाग्युं मुज कीहांथकी, एवडो शो कंठ शोष ॥ रा० ॥ मूढ मूरख संसारमां, काया करे निज पोष ॥ रा० ॥ मु० ॥ ८ ॥ बार दिवस मौने रह्यो, प्रगट थयो तव पाप ॥ रा० ॥ जेवां करम जे को करे, ते लहे सघलां आप ॥ रा० मु० ॥ ९ ॥ तुज कुले आवी अवतर्यो, दीपाव्यो तुज वंश ॥ रा० ॥ वृद्ध-भाइ मरी उपन्यो, मान सरोवर हंस ॥ रा० मु० ॥ १० ॥ सकल कथा सुणतां लह्यो, जाति समरण बाल ॥ रा० ॥ धन धन ज्ञानी गुरु मिल्या, रोग थया आलमाल ॥ रा० मु० ॥ ११ ॥ विधिसाथे पंचमी करे, राजादिक परिवार ॥ रा० ॥ रोगगया सवि तेहना, जिम जाये तडके ठार ॥ रा० मु० ॥ १२ ॥ स्वयंवर मंडप मांडीयो,

परणी एक हजार ॥ रा० ॥ हरख्यो वरदत्त ईम कहे, जैनधरम जग सार ॥ रा० मु० ॥ १३ ॥ राज थापी निज पुत्रने, साधे शिवपुर साथ ॥ रा० ॥ अजितसेन चारित्र लीयो, साचा श्री गुरु हाथ ॥ रा० मु० ॥ १४ ॥ सुख विलसे संसारना, वरतावे निज आण ॥ पुत्र जनमए हवे थयो, उग्यो अभिनव भाण ॥ रा० मु० ॥ १५ ॥

॥ दुहा ॥ गुणमंजरी सुंदर भइ, परणी सा जिनचंद ॥ चारित्र साधी नीरमलुं, पामे वैजयंतसुरिंद ॥ वरदत्त मनमां चिंतवे, आपु सुतने राज ॥ हवे हुं संजम आदरु, साधु आतम काज ॥२॥ अशुभ ध्यान दुरे करे, धरतां जीनवर ध्यान ॥ काल धरम पामी उपन्यो, पुष्कलावती विजयप्रधान ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ सहीयां हे पीउ चालीयो (अथवा)
अजीतजीणंदस्युं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥

सौभाग्य पंचीमी आदरो, जिम पामो हो सुख सघलां वडवीरतो ॥ चोथ भत्ते शुदी पंचमी, व्रत धरवुं हो भोंये सुवुं धीरतो ॥ सौ० ॥ १ ॥ त्रण काल देव वांदीए, कीजे दीजे हो गुरुने बहु मानतो ॥ पडिक्कमणां दोय वारना, जिम वाधे हो उतम गुण ग्यानतो ॥ सौ० ॥ २ ॥ नयरी पुंडरीगीणी सोहती, विराजे हो अमरसेन भुपालतो ॥ तस धरणी शीले सती, गुणवती कुखे हो अवतरीयो बालतो ॥ सौ० ॥ ३ ॥ सज्जन संतोषी सामटां, नाम थापेहो सुरसेन अभिरामतो ॥ चंदकला जेम वाधतो, तेम वाधेहो

साधे निज नामतो ॥ सौ० ॥ ४ ॥ योवनवय जाणी पिता, सो कन्या हो परणावी सारतो ॥ राज देइ निज पुत्रने, अमरसेन पहोती हो परलोक मोजारतो ॥ सौ० ॥ ५ ॥ श्री सिमंधर आव्या सांभली, वांदवा नेहे आवे तीहां भूपतो ॥ ज्ञान आराधन देशना, देखाडे हो वरदत्त स्वरुप तो ॥ सौ० ॥ ६ ॥ सूरसेन हवे विनवे, प्रभु प्रकाशो हो ते कुण वरदत्त तो ॥ सकल वात मांडी कही, तप मांडयो हो कीजे रंग रत्ततो ॥ सौ० ॥ ७ ॥ जिनवर वांदी आवीया, संवेगे हो मुके घर भारतो ॥ सिंहतणी परे आदरी, जिणे लहीए हो भवजलनो पारतो ॥ सौ० ॥ ८ ॥ पंचमहाव्रत आदरो, सहस वरस हो पामे केवलज्ञानतो ॥ अविचल सुख एगे लह्यां, इम निसुणिहो आराधे ज्ञानतो ॥ सौ० ॥ ९ ॥ जंबुद्वीप मांहे वली, विजय रमणी हो नगरी चोसाल तो ॥ अमरसेन अमरावती, पुण्य प्रगटयो हो आव्यो ए बाल तो ॥ सौ० ॥ १० ॥ गुणमंजरी जीव उपन्यो, राजाने हो हुओ उछरंग तो ॥ राजकरे निज तातनुं, प्रेमे परणे हो कन्या सुख संग तो ॥ सौ० ॥ ११ ॥ एक दीन मनमां चिंतवें, हुं तो साधु हो निज आतम काज तो ॥ चार सहस्स बेटा थया, पाट आपेहो निजसुत शिरताज तो ॥ सौ० ॥ १२ ॥ सिंहतणी परे नीकली, लाख पूरव हो संयम शीरताजतो ॥ तप तपे अति आकरा, केवल पामी हो लहे शिवराजतो ॥ सौ० ॥ १३ ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ राग धनाश्री ॥ खजानानी ॥

तप उजवणुं एणी परे सुणीए, वित सारु धन खरचोजी ॥

पांचम दिन पामी कीजीए, ज्ञानादिकने आचरोजा ॥ पांच प्रती सिद्धांतनी सारी, पाठां पांच रुमालजी ॥ खडीयो लेखण पाटी पोथी, ठवणी कवली द्यो लालजी ॥ १ ॥ स्नात्र महोत्सव विधिशुं कीजे, रातीजगे गीत गायोजी ॥ चैत्यादिकनी पूजा करतां, जीनवरना गुणगाओजी ॥ गुणमंजरी वरदत्त तणीपरे, कीजे त्रिकरण शुद्धजी ॥ ए विध करतां थोडे काले, लहीए सघळी सिद्धजा ॥ २ ॥ वासकुंपी धूपधाणु वलि कीजीये, झरमर पांच मंगावोजी ॥ गुरुने वांदी पुस्तकने पूजी, सामी सामीणो नोतरावोजी ॥ गुरुने तेडी बे करजोडी, आदरसुं वोहोरावोजी ॥ पारणुं कीजे लाहो लीजे, पांचम तप उजवावोजी ॥ ३ ॥ नेमि जिणेसर अति अलवेसर, केशर वर सम कायाजी ॥ ए उपदेश सुणीने समज्या, ज्ञान लोचन देखायाजी ॥ वरदत्त गणधर आगे कहीए, लहीओ भविजन प्राणीजी ॥ सौभाग्य पंचमी तप आराहो, निसुणो जीनवर वाणीजी ॥ ४ ॥ देह निरोग सोभागी थाओ, पाओ रंगरसालजी ॥ मुरखपणुं दूरे छांडो, मांडो ज्ञान विशालजी ॥ सौभाग्य पंचमी जे नर करशे, ते वरशे मंगल मालजी ॥ गजरथ छोडो सुन्दर मंदिर, मणिमय झाक झमालजी ॥ ५ ॥ संवत सत्तर अठ्ठावन मांहि, सिद्धपुर रही चोमासुजी ॥ कार्तिक सुदी पांचम दीने गायो, सफल फली मुज आशजी ॥ तपगच्छ नायक दिनकर सरीखा, श्रीविजयप्रभ सुरिंदाजी ॥ श्रीविज्यरत्न सुरीश्वर राजे, प्रणमे परमानंदाजी ॥ ६ ॥ कलश ॥ इम नेमी जिनवर सयल सुखकर, उपदिशे भवि

हित करो ॥ तपगच्छ नायक सुखदायक, लायक मांही पुरंदरो ॥ श्री लालकुशल विबुध सुखकर, वीर कुशल पंडित वरो ॥ सौभाग्य कुशल सुगुरु सेवक, केशव कुशल जयकरो ॥ इतिश्री सौभाग्य पंचमी स्तवन संपूर्णम् ॥

आठमनुं स्तवन.

दोहा ॥ पंच तीरथ प्रणमुं सदा, समरी शारद माय ॥
अष्टमी स्तवन हरखे रचुं, सुगुरु चरण पसाय ॥१॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ हांरे लाला जंबुद्वीपना भरतमां, मगध देश महंतरे ॥ ला० ॥ राजगृही नगरी मनोहरु, श्रेणीक बहु बलवंतरे ॥ ला० ॥ १ ॥ अष्टमी तीथी मनोहरु ॥ हांरे लाला ॥ चेलणा राणी सुन्दरी, शियलवती सीरदाररे ॥ ला० ॥ श्रेणीक सुत बुध छाजता, नामे अभय कुमाररे ॥ ला० अष्ट० ॥२॥ हां० वर्गणा आठ मीटे एहथी, एह साधे सुख निधानरे ॥ लाला ॥ अष्ट मद भंजन वज्र छे, प्रगटे समकित निधानरे ॥ ला० ॥ अ० ॥ ३ ॥ हां० अष्ट भय नासे एहथी, अष्ट बुद्धि तणो भंडाररे ॥लाला॥ अष्ट प्रवचन माता संपजे, चारित्र तणो अणगाररे ॥ ला० ॥ अ० ॥ ४ ॥ हां० अष्टमी आराधन थकी, अष्ट करम करे चकचूररे ॥ लाला० ॥ नवनिधि प्रगटे तस घरे, संपुरण सुख भरपुररे ॥ ला० ॥ अ० ॥ ५ ॥ हां० अडद्रष्टि उपजे एहथी, शीव साधे गुण अनुपरे ॥ लाला ॥ सिद्धना आठगुण संपजे,

शीव कमला रुप सरुपरे ॥ ला० ॥ अ० ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥२॥ जीहो राजगृही रळीयामणी, जीहो विचरे वीर जीणंद ॥ जीहो समवसरण इंद्रे रच्युं, जीहो सुरासुरनी वृंद ॥ १ ॥ जगत सहु वंदो वीर जीणंद ॥ ए आंकणी ॥ जीहो देवरचीत सिंहासणे ॥ जीहो बेठा वीर जीणंद ॥ जीहो अष्ट प्रतिहारज शोभता ॥ जीहो भामंडल झलकंत ॥ जगत० ॥ २ ॥ जाहो अनंत गुणी जीनराजजी, जीहो परउपगारी प्रधान ॥ जीहो करुणा सिंधु मनोहरु, जीहो त्रिलोके जगभाण ॥ जगत० ॥ ३ ॥ जीहो चोत्रीस अतिशय विराजता, जीहो वाणी गुण पांत्रीस ॥ जीहो बारे परखदा भावशुं, जीहो भगते नमावे शीस ॥ जगत० ॥ ४ ॥ जीहो मधुरी ध्वनी दीये देशना, जीहो जीमरे असाढोरे मेघ ॥ जीहो अष्टमी महिमा वरणवे, जीहो जगत बंधु कहे तेह ॥ जगत० ॥५॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ रुडीने रढियालीरे प्रभु तारी देशनारे, ते तो एक जोजन लगे संभळाय ॥ त्रिगडे विराजेरे जिनदीये देशनारे, श्रेणीक वंदे प्रभुना पाय ॥ अष्टमी महिमा कहो कृपा करीरे, पुछे गोयम अणगार ॥ अष्टमी आराधन फल सिद्धिनुंरे ॥ १ ॥ वीर कहे तीथी महिमा एहनोरे, ऋषभनुं जनमकल्याण ॥ ऋषभ चारित्र होय नीरमळुरे, अजितनुं जनम कल्याण ॥ अ० ॥ २ ॥ संभव च्यवन त्रीजा जिनेसरुरे, अभिनंदन निरवाण ॥ सुमति जनम सुपार्श्व च्यवन छेरे, सुविधि नेमि जनम कल्याण ॥ अ० ॥ ३ ॥ मुनिसुव्रत जनम अतिगुण निधिरे, नमि शिवपद लीधुं सार ॥

पार्श्वनाथ निर्वाण मनोहररे, ए तिथि परम आधार ॥ अ० ॥ ४ ॥ गौतम गणधर महिमा सांभलीरे, अष्टमी तिथि परिमाण ॥ मंगल आठ तणी गुण मालिकारे, तसघेर शीवकमला परधान ॥अ०॥५॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ आवश्यक निर्युक्तिए भासे, महानिशिथी सूत्रेरे ॥ ऋषभ वंश धूर वीरजी आराधे, शीवसुख पामे पवीत्रेरे ॥ श्री जिनराज जगत उपगारी ॥ ए आंकणी ॥ ए तिथी महिमा वीरजी प्रकाशे, भविक जीवने भासेरे, शासन तारुं अविचल राजे, दिनदिन दोलत वाधेरे ॥ श्री० ॥ २ ॥ त्रिसलारे नंदन दोष निकंदन, कर्म शत्रुने जित्यारे ॥ तीर्थंकर माहंत मनोहर, दोष अढारने वरज्यारे ॥ श्री० ॥३॥ मन मधुकर जिनपद पंकज लीनो, हरखी नीरखी प्रभुध्याउरे ॥ शिवकमला सुख दीयो प्रभुजी, करुणानंद पद पावुंरे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ वृक्ष अशोक सुर कुसुमनी वृष्टि, चमर छत्र विराजेरे ॥ आसन भामंडल जिनदीपे, दुंदुभी अंबर गाजेरे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ खंभात बंदर अतिय मनोहर, जीनप्रासाद घणा सोहिएर ॥ बिंब संख्यानो पारन लेवुं, दर्शन करी मन मोहिएरे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ संवत अढार ओगणचालिस वर्षे, आश्विन मास उदाररे, शुकलपक्ष पंचमी गुरुवारे, स्तवन रच्युं छे त्याररे ॥ श्री० ॥ ७ ॥ पडित देव सोभागी बुद्धि लावण्य, रतन सोभागी तेणे नामरे ॥ बुद्धि लावण्य लीयो सुख संपुरण, श्री संघने कोड कल्याणरे ॥ श्री० ॥ ८ ॥

॥ अथ अष्टमी स्तवन बीजु ॥

॥ दुहा ॥ जय हंसासणी शारदा, वरदाता गुणवंत ॥ माता मुज करुणा करी, महिलय करो महंत ॥ १ ॥ सोल कला पूरण शशि, निर्जित एणे मुखेण ॥ गजगति चाले चालती, धारती गुण-वर श्रेण ॥ २ ॥ कवि घटना नवनविकरे, केवल आणी खंत ॥ माता तुज सुपसाउले, प्रगटे गुण बहुभ्रांत ॥ ३ ॥ माता करुं तुज सान्निध, अष्टमी स्तवन उदार ॥ शत मुखे जीभे को स्तवे, तुज गुण नावे पार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ नवमा नेमि जिणंदने ॥ ए देशी ॥

अष्टमी तिथि भवि आचरो, स्थिरकरी मन वच कायारे ॥ ध्यान धरमनुं ध्याइए, टाळीए दुष्ट अपायरे ॥ अष्टमी० ॥ १ ॥ पोसह पण धरीये सही, समता गुण आदरीयेरे ॥ राज्यकथादिक वरजीए, गुणीजन गुण आचरीएरे ॥ अ० ॥ २ ॥ षट लेश्यामांहे कही, आद्य त्रिहुं अप्रशस्तरे ॥ वरजो सज्जन दूर ए, धरो त्रिहुं अंत प्रशस्तरे ॥ अ० ॥ ३ ॥ शल्य त्रिहुं दुरे तजो, वरजो कुमति कुनारीरे ॥ सद्‌गति केरी नित्वारीका, दुर्गति केरी ए वारी रे ॥ अष्ट० ॥ ४ ॥ रमीए सुमति नारीसुं, करीए दान सहायरे ॥ मैत्री प्रमोद करुणादिक, धरीए दिल सुखदायरे ॥ अ० ॥ ५ ॥ वाचना पृच्छना तिम वली, अनुप्रेक्षा धर्म संगरे ॥ परावर्त्तना पंच भेद ए, करीए धरी मनरंगरे ॥ अ० ॥ ६ ॥ ज्ञानावरणीय दर्शना, वरणी

वेदनीय तेमरे ॥ मोह आयु नाम गोत्रए, आठमुं अंतरायरे ॥ अ० ॥ ७ ॥ ए अष्ट कर्म विनाशिनी, अष्टमी तिथि जिन भाखीरे ॥ आराधनादिक ए क्रिया, मानव गति एक साखीरे ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ मुनिवर आर्यसुहस्तीरे (अथवा) पृथ्वी पाणी तेउ वाउ वनस्पती ॥ ए देशी ॥

बासठ मार्गणा द्वाररे प्रभुजीए कह्यां, सुंदर सुललित वयण-थीए ॥ तेहमां:दश द्वाररे मोक्ष जिनेश्वरे कहिया, अवरमां नवि लह्यां ए ॥ १ ॥ तिण कारण दिव्य मोक्षरे कारण सुख तणा, पामे मानव भवथकी ए ॥ दुलहो दश दृष्टांतरे लहिय मनुज भव, हारो मत विषय थकी ए ॥ २ ॥ पंच भरत मजाररे पंच ऐरव्रत, पंच महाविदेहमां ए ॥ पंनर कर्मभूमिरे नाणी जिनवरे, धर्म कह्यां नहि अन्यमां ए ॥ ३ ॥ क्रोध मानने मायारे लोभ तिम वली, ए चारे दुखदायीया ए ॥ अप्रत्याख्यानादिकरे करतां भेद ए, सोल होए तजो भाइआ ए ॥ ४ ॥ थोडापण ए कषायरे कीधां दुख दीए, मित्रानंद तणो परे ए ॥ ते माटे तजो दुररे हृदयथकी वली, जेम अनुक्रमे शिव सुख वरो ए ॥ ५ ॥ अष्टमी तिथि आराधेरे अष्ट प्रवचन, माता आराधक कहु ए ॥ अनुक्रमे लहे निर्वाणरे ए तिथि आराधे, मुक्ति रमणी सन्मुख जुवे ए ॥ ६ ॥ अभय दान सुपात्ररे अष्टमी पर्वणी, दिजे अढलक चित्तशुं ए ॥ पामे बहूली ऋद्धिरे परम प्रमोदशुं, लीजे लाहो वित्तशुं ए ॥ ७ ॥

॥ कलश ॥ श्री पार्श्वजिन पसाय इणिपरे, संवत सतर

अढार ए ॥ वैशाख सुदी वर अष्टमी दिन, कुमति दिनपति वार ए ॥ श्री शुभविजय उवझाय जयकर, शिष्य गंगविजय तणो ॥ नय शिष्य पभणे भक्ति रागे, लह्यो आनंद अति घणो ॥ १ ॥ इति श्री अष्टमी स्तवनम् ॥

॥ मौन एकादशी स्तवनम् ॥ ढाल. १ ॥

॥ वैरागी थयो (अथवा) सुत सिद्धारथ भुपनोरे ॥ ए देशी ॥

प्रणमी पुछे वीरनेरे, श्री गोयम गणराय । मृगशिर सुदि एकादशीरे, तपथी शुं फल थायरे ॥ जिनवर उपदिशे, तिहां सांभले सहु समुदायरे ॥ जिन० १ ॥ वीर कहे गोयम सुणोरे, हरि आगळ कह्यो नेम, तेम तुम आगल हुं कहुंरे, सांभलो मनधरी प्रेमरे ॥ जि० ॥ २ ॥ द्वारिका नयरी समोसर्यारे, एकदिन नेमि जिणंद ॥ कृष्ण आव्या तिहां वांदवारे, पुछे प्रश्न नरिंदरे ॥ जि० ॥ ३ ॥ वर्ष दिवसनां दिन मिलीरे, तिनसो साठ कहंत ॥ तेहमां दिन कुण एहवोरे, तपथी बहु फल हुंतरे ॥ जि० ॥ ४ ॥ मृगशिर शुदि एकादशीरे, वर्णवी श्री जगनाथ ॥ दोढसो कल्याणक थयांरे जिननां एकण साथरे ॥ जि० ॥ ५ ॥ श्री अरजिन दीक्षा ग्रहीरे, " नमि " ने केवल नाण, जन्मदीक्षा केवल लह्यारे, श्रीमल्लि जगभाणरे ॥ जि० ॥ ६ ॥ वर्तमान चोविशीनारे, भरते पंच कल्याण ॥ ए पांच भरते थइरे, पंचाधिक वीश जाणरे ॥ जि० ॥ ७ ॥ पांचे

एरव्रते मिलीरे, कल्याणक पंच पंच ॥ दश क्षेत्र सहु ए मिलीरे, पचास कल्याणक संचरे ॥ जि० ॥ ८ ॥ अतीत अनागत काळनांरे, वर्त्तमानना वली जेह ॥ दोढसो कल्याणक कह्यारे, उत्तम इणदिन एहरे ॥ जि० ९ ॥ जे एकादशी तप करेरे, विधि पूर्वक गुण गेह ॥ दोढसो उपवासो तणोरे, फल लहे भवियण तेहरे ॥ जि० १० ॥

॥ ढाल २ ॥ घोडी तो आवी तारा देशमां मारुजी ॥ ए देशी ॥

हवे एकादशी तप तणो माधवजी, विधि कहुं निर्मल बुद्धि हो गुणरागी, नरेश्वर सांभलो जादवजी ॥ देव जुहारो देहरे ॥ मा० ॥ गुरुवंदो भाव विशुद्धि हो ॥ गु० ॥ १ ॥ अहरत्तो पोसह करी ॥ मा० ॥ गुरु मुखे करो पच्चख्खाणहो ॥ गु० ॥ देव वंदो त्रण टंकना ॥ मा० ॥ सांभलो सदगुरुनी वाणीहो ॥ गु० ॥ २ ॥ दोढसो कल्याणक तणो ॥ मा० ॥ गुणनो गुणो एक मने हो ॥ गु० ॥ भणण गुणण किरीया विना ॥ मा० ॥ नवि बोले अन्य वचनहो ॥ गु० ॥ ३ ॥ मौन ग्रहो निशी दिवसनो ॥ मा० ॥ राखो शुभ परिणाम हो ॥ गु० ॥ मौन एकादशी ते भणी ॥ मा० ॥ निरुपम पूर्वुं नामहो ॥ गु० ॥ ४ ॥ प्रथम दिने एकासणुं ॥ मा० ॥ पारणे एहिज रीत हो ॥ गु० ॥ बारवर्ष तप इम करे ॥ मा० ॥ शुद्ध धर्मशुं मीत हो ॥ गु० ॥ ५ ॥ अंग अग्यारे ते भणे ॥ मा० ॥ पडिमा तप अग्यार हो ॥ गु० ॥ मतिमासे उपवासनो ॥ मा० ॥ तप करे

निरुपम वार हो ॥ गु० ॥ ६ ॥ सुव्रतशेठ तणो परे ॥ मा० ॥ मन राखे स्थिरता जोग हो ॥ गु० ॥ तो एकादशी दशमे भवे ॥ मा०॥ लहे शिववधु संजोगहो ॥ गु० ॥ ७ ॥

॥ ढाल. ॥ ३ ॥ देशी ललनानी ॥

हवे उजमणुं तप तणुं, एकादशी दिनसार ललना, दिन इग्यारे देहरे, स्नात्र पूजा अधिकार ॥ ललना ॥ भगवंत भाखे हरिभणी ॥१॥ ढोणुं ढोविये देहरे, धान्य इग्यार प्रकार ॥ ल० ॥ श्रीफल फोफल सुखडी, नव.नवी भात इग्यार ॥ ल०॥ भ०॥ २ ॥ केसर सुखड धोतीयां, कंचन कलश शृंगार ॥ल०॥ धूप धाणाने वाटकी, अंगलूहणा घन सार ॥ ल०॥भ० ॥३॥ अंग इग्यारे लीखावीये, पुठाने रुमाल ॥ ल० ॥ ज्ञावी दोरा दावडी, लेखण कांबी निहाल ॥ ल० ॥ भ० ॥ ४ ॥ झीलमल चंन्द्रुआ भला, ठवणी स्थापना काज ॥ ल० ॥ पाटी जपमाला भली, वासना वडुआ साज ॥ ल० ॥ भ० ॥ ५ ॥ मींजणाने वळी पूजणा, कवली कोथळी नाम ॥ल०॥ रेशमनी पाटी रुयडी, मुहपती जयणा काम ॥ ल० ॥ भ० ॥ ६ ॥ ज्ञानना उपगरण भला, इग्यार इग्यार मान ॥ ल० ॥ साधर्मिक इग्यारने, पोषीजे पकवान ॥ ल० ॥ भ० ॥ ७ ॥ ते सांभली हरि हरखीया, आदरे व्रत पच्चख्खाण ॥ ल० ॥ तिथि एकादशी तप करे, बार वर्ष गुण खाण ॥ ल० ॥ भ० ॥ ८ ॥ तीर्थंकर पद तिण थकी, गोत्र निकाचित कीध ॥ ल० ॥ अमम नामे जिन बारमा,

होसी तप फल सीध ॥ ल० ॥ भ० ॥ ९ ॥ इण विधि श्रीवीरे कह्यो, ए अधिकार अशेष ॥ ल० ॥ तेह भणी तप तुमे आदरो, लेशो सुख सुविशेष ॥ ल० ॥ भ० ॥ १० ॥

॥ कलश ॥ श्रीवीरजिनवर सयल सुखकर वरणवी एकादशी, ते सुणीय वाणी भविक प्राणी तप कारण मन उल्लसी ॥ जशवंत सागर सुगुण आगर शिष्य जिनेन्द्रसागरे, एकादशी यह स्तवन कीधो, सुणीय भवियण आदरे ॥ १ ॥

अथ श्री वीर स्तुतिरुप हुंडिनुं स्तवन.

ढाल १ ली. (ए छिंडी किहां राखी. ए देशी)

॥ प्रणमी श्री गुरुना पयपंकज, थुणस्युं वीर जिणंद ॥ ठवण निक्षेप प्रमाण पंचांगी, परखी लहुं आणंद रे ॥ १ ॥ जिनजी ॥ तुज आणा शिर वहीए ॥ तुज शासन नय शुद्ध प्ररुपण, गुणथी शिवसुख लहीए रे ॥ जिनजी ॥ तु० ॥ ए आंकणी ॥ श्री अनुयोगदुवारे भांख्या, च्यार निक्षेपा सार ॥ च्यार सत्य दश सत्या भांख्या, ठाणांगें निरधार रे ॥ २ ॥ जि० ॥ जास ध्यान कीरिया मांहि आवे, तेह सत्य करी जाणुं ॥ श्री आवश्यक सूत्र प्रमाणें, विगते तेह वखाणुं रे ॥ ३ ॥ जि० ॥ चऊविसथ्थय मांहि निक्षेपा, नाम द्रव्य दोय भावुं ॥ काउसग्ग आलावें ठवणा, भाव ते सघलें लावुं रे ॥४॥ जि० ॥ पुस्तक लिखित सकल जिम आगम, तिम आवश्यक एह ॥

भगवई नंदी साखे सम्मत, तेहमां नहिं संदेह रे ॥ ५ ॥ जि० ॥ सूत्र आवश्यक जे घर घरनुं, कहेशे ते अज्ञानी ॥ पुस्तक अरथ परंपर आव्युं, माने तेहज ज्ञानी रे ॥ ६ ॥ जि० ॥ बंभी लिपी श्री गणधर देवें, प्रणमी भगवई आदें ॥ ज्ञान तणी ते ठवणा अथवा, द्रव्यश्रुत अविवादे रे ॥ ७ ॥ जि०॥ भेद अढार जे बंभी लिपीना, समवायांगें दीठा ॥ शुद्ध अरथ मरडी भव बहुला, भमशे कुमती धीठा रे ॥ ८ ॥ जि० ॥ बंभी लिपी जो तेहनो करता, तो लेखक पण आवें ॥ गुरु आणा विण अरथ करे जे, तेहनो बोल न भावें रे ॥ ९ ॥ जि० ॥ जिनवाणी पण द्रव्यश्रुत छे, नंदीसूत्रने लेखें ॥ जिम ते तिम बंभी लिपी नमीए, भाव ते द्रव्य विशेषे रे ॥ १० ॥ जि० ॥ जिम अजीव संयमनुं साधन, ज्ञानादिकनुं तेम ॥ शुद्ध भाव आरोपें विधिस्युं, तेहनें सघलें खेम रे ॥ ११ ॥ जि० ॥ शुद्ध भाव जेहनो छे तेहना, च्यार निक्षेपा साचा ॥ जेहमां भाव अशुद्ध छे तेहना, एक कार्चे सवि काचा रे ॥ १२ ॥ जि० ॥ दशवैकालिके दूषण दाख्युं. नारी चित्रने ठामे ॥ तो किम जिनप्रतिमा देखीने, गुण नवि होय परिणामे रे ॥ १३ ॥ जि० ॥ रुचकद्वीपें एक डगलें जातां, पडिमा नमीय आणंदे ॥ आवतां एक डगलें नंदीसरे, बीजें इहां जिन वंदे रे ॥ १४ ॥ जि० ॥ त्रीछीगतिए भगवई भांखी, जंघाचारण केरी ॥ पंडग वन नंदन इहां पडिमा, ऊर्ध्वं नमें घणेरी रे ॥ १५ ॥ जि० ॥ विध्याचारण ते एक डगलें, मानुषोत्तरे जाये ॥ बीजे नंदीश्वर जिनप्रतिमा, प्रणमी प्रमुदित थाये रे ॥ १६ ॥ जि० ॥ तिहांथि पडिमा वंदण कारण, एक डगलें इहां आवे ॥ ऊर्ध्वपणें जातां बिहुं

डगलां, आववां एक स्वभावें रे ॥ १७ ॥ जि० ॥ शतक वीसमें नवमें ऊद्देशे, प्रतिमा मुनिवर वंदी ॥ एम देखी जे अवला भांजे, तस मति कुमत्ति फंदी रे ॥ १८ ॥ जि० ॥ आलोअणनुं ठाण कह्युं जे, ते प्रमाद गति केरो ॥ तीर गवि जे यात्र विचाले, रहेतो खेद घणेरो रे ॥ १९ ॥ जि० ॥ करी गोचरी जिम आलोवे, दश वैकालिक साखे ॥ तिम ए ठाम प्रमाद आलोये, नहीं दोष ते पाखे रे ॥ २० ॥ जि० ॥ कहें कोइ ए कहेंवा मात्रज, कोइ न गयो नवि जास्ये ॥ नही तो लवणशिखा मांहि जातां, किम आराधक थास्ये रे ॥ २१ ॥ जि० ॥ सत्तर सहस जोयण जइ उंचा, चारण त्रीर्छा चाले ॥ समवायांगें प्रगट पाठ ए, स्युं कुमती भ्रम घालें रे ॥२२॥ जि० चैत्य शब्दनो ज्ञान अर्थ ते, कहो करवो कुण हेते ॥ ज्ञान एकनें चैत्य घणां छे, भुलें जड संकेते रे ॥ २३ ॥ जि० ॥ रुचकादिकनां चैत्य नम्यां ते, सासय पडिमा कहीए ॥ जेह इहांनां तेह अशाश्वत, बिहुंमां भेद न लहीए रे ॥ २४ ॥ जि० ॥ जेह उपर साहिब तुझ करुणा, शुद्ध अरथ ते भाखे ॥ तुज आगमनो शुद्ध प्ररूपक, सूजश अमीयरस चाखे रे ॥ २५ ॥ जि० ॥

॥ ढाल २ जी. ॥ महाविदेह क्षेत्र सुहामणुं ॥ ए देशी.

॥ तुज आणा मुझ मन वशी, जिहां जिनप्रतिमा सुविचार लाल रे ॥ रायपसेणी सूत्रमां, सूरिआभ तणो अधिकार ॥ला०॥१॥ तु० ॥ ते सुर अभिनव उपनो, पुछे सामानिक देव ॥ ला० ॥ स्युं

सुख पूरवने पछे; हितकारी कहो ततखेव ॥ला०॥ २ ॥ तुं० ॥ ते कहे एह विमानमां, जिणपडिमा डाढा जेह ॥ ला० ॥ तेहनी तुम्हे पूजा करो, पूरव पच्छाहित एह ॥ ला० ॥ ३ ॥ तु० ॥ पूरव पच्छा शब्दथी; नित्य करणी जाणिए सोइ ॥ ला० समकितदृष्टि सद्दहे, ते द्रव्य थकी किम होय ॥ ला० ॥ ४ ॥ तु० ॥ द्रव्य थकी जे पूजीया, प्रहरण कोशादि अनेक ॥ ला० ॥ तेहथी विहुं जूदा कह्या, ए तो साचो भाव विवेक ॥ ला० ॥ ५ ॥ तु० ॥ चक्ररयण जिण नाणनी, पूजा जे भरते कीध ॥ ला० ॥ जिम तिहां तिम अंतर इहां, समकित दृष्टि सुप्रसीद्ध ॥ ला० ॥ ६ ॥ तु० ॥ पहेलो भव पूरव कहे, ज्ञाता दद्दुर संबंध ॥ ला० ॥ पच्छाकडुअ विषय कह्या, वली मृगापुत्र प्रबंध ॥ ला० ॥ ७ ॥ तु० ॥ आगमे सिभद्दा कह्या, गइ ठिइ कल्लाणी देव ॥ ला० ॥ तस पूरव पच्छा कहे, त्रिहुं काले हित जिन सेव ॥ ला० ॥ ८ ॥ तु० ॥ जस पूरव पच्छा नहि, मध्ये पण तस संदेह ॥ ला० ॥ एम पहेले अंगे कह्युं, छे सूधो अरथ ते एह ॥ ला० ॥ ९ ॥ तु० ॥ पच्छा पेच्चा शब्दनो, जे फेर कहे ते दुठ ॥ ला० ॥ शब्द तणी रचना घणी, पण अरथ एक छे पुठ ॥ ला० ॥ १० ॥ तु० ॥ वांची पुस्तक रत्ननां, हवे लेइ धरम व्यवसाय ॥ ला० ॥ सिद्धायतने ते गयो, जिहां देवच्छंदानो ठाय ॥ ला० ॥ ११ ॥ तुं० ॥ जिनप्रतिमा देखी करी, करे शिर प्रणाम शुभ बीज ॥ ला० ॥ पुप्फ माल्य चूर्णे करी, वस्त्राभरणे वली पूज ॥ ला० ॥ १२ ॥ तु० ॥ फूल पगर आगे करी, आलेखे मंगल आठ ॥ ला० ॥ धुप देइ काव्य स्तवी, करे

शक्रस्तवनो पाठ ॥ ला० ॥ १३ ॥ तु० जेहना स्वमुखे जिन कहे, भव सिद्धि प्रमुख छ बोल ॥ला०॥ तास भगति निजपूजना, नवि माने तेह निटोल ॥ला०॥ १४ ॥ तु० ॥ प्रभु आगल नाटक करयो; भगते सूर्याभेसार ॥ ला० ॥ भगति तणां फल शुभ कह्यां, श्री उत्तराध्ययन मझार ॥ ला० ॥ १५ ॥तु०॥ अंग उपांगे घणें कही, एम देव देवीनी भक्ति ॥ ला० ॥ आराधकता तिणे थइ, इहां तामली इंद्रनी युक्ती ॥ ला० ॥ १६ ॥ तु० ॥ भक्ति जीतधर्मे करी, लीए दाढा अवर जिन अंग ॥ ला० ॥ थूभ रचे सूर त्रिण ते, कहे जंबू-पन्नत्ती चंग ॥ ला० ॥ १७ ॥तु०॥ शतक दशमे अंग पंचमे, उद्देशे छठ्ठे इंद ॥ ला० ॥ दाढा तणी आशातना, टाले ते विनय अमंद ॥ ला० ॥ १८ ॥ तु० ॥ समकितदृष्टी सुर तणी, आशातना करस्ये जेह ॥ ला० ॥ दुर्लभबोधि ते थस्ये, ठाणांगें भांख्यु एह ॥ला०॥ १९ ॥ तु० ॥ तेहने यश बोले कह्यु, वली सुलभबोधिता थाय ॥ ला० ॥ तिणे पूजादिक तेहनां, करणी शिवहेतु कहाय॥ ला० ॥२० ॥ तु० ॥ तप संयम सुरतरु सम कह्यां, फळ सम ते सुर शिवशर्म ॥ला०॥ सूर करणी माने नही, तेणे नवि जाण्यो मर्म॥ला०॥ ११॥ तु०॥ दशवैकालिके नर थकी, सुर अधिक विवेक जणाय ॥ ला० ॥ द्रव्यस्तव तो तेणे करयां, माने तस सुजस गवाय ॥ला०॥२२॥तु०॥

॥ ढाल ३ जी. ॥ ऋषभनो वंश रयणायरु ॥ ए देशी ॥

॥ शासन ताहरुं अति भलुं, जग नहि कोय तस सरिखुं रे॥

तिम तिम राग वधे घणो, जिम जिम जुगति सु परखुं रे ॥१॥ शा०॥ अरिहंतने वली तेहनां, चैत्य नमुं अनेरां रे ॥ अंबड ने तस शिष्यनां, वचन उववाई घणेरां रे ॥ शा० ॥ २ ॥ चैत्य शब्द तणो अरथ ते, प्रतिमा नहि कोइ बीजो रे ॥ जेह देखी गुण चिंतीए, तेहज चैत्य पतीजो रे ॥ शा० ॥ ३ ॥ एमज आलावे आनंदने, जिनपडिमा नति दीसे रे ॥ सप्तम अंगना अर्थथी, ते नमतां मन हीसे रे॥शा० ॥४॥ परतीरथी सुर तेहनी, प्रतिमानी नति वारी रे ॥ तिणे मुनी जिनप्रतिमा तणी, वंदन नति निरधारी रे ॥ शा० ॥ ५ ॥ परती र्थी ए जे परिग्रह्यां, मुनि ते पण परतीर्च्छी रे ॥ त्रिण शरण मांहि चैत्य ते, लही प्रतिमा शिव अच्छी रे ॥ शा० ॥ ६ ॥ दान किस्युं प्रतिमा प्रते, एम कहे जे छल हेरी रे ॥ उत्तर तास संभव तणी, शली छे सूत्र.केरी रे ॥ शा० ॥७॥ दश विध बहुविध जिम कह्यां, वैयावच्च जहा जोगे रे ॥ दशमे ते अंगे तथा इहां, जोडे नय उपयोगे रे ॥ शा० ॥ ८ ॥ साधुने जिनपडिमा तणुं, वैयावच्च तिहां बोल्युं रे ॥ तेह अरथ थकी कुमतिनुं, हैडुं कांइ न खोल्युं रे॥ शा० ॥९॥ संघ तणी जिम थापना, वैयावच्च जस वादो रे ॥ जाणिए जिनप- डिमा तणुं, तिम इहां कवण विवादो रे ॥ शा० ॥१०॥ एम सवि श्रावक साधुने, वंदननो अधिकारो रे ॥ सुत्रे कह्यो पडिमा तणो, हवे कहुं पूजा विचारो रे ॥ शा० ॥ ११ ॥ याग अनेक करथा कह्या, श्री सिद्धारथ राजे रे ॥ ते जिनपूजन कल्पमां, पशुना याग न छाजे रे ॥ शा० ॥१२॥ श्री जिन पासने तीरथे, श्रमणोपासक

तेहो रे ॥ प्रथम अंगे कह्युं तेहने, श्री जिनपूजानो नेहो रे शा० ॥ १३ ॥ श्रेणिक महाबल प्रमुखना, एम अधिकार अनेको रे ॥ छठे अंगे वली द्रौपदी, पूजा प्रगट विवेको रे ॥ शा० ॥ १४ ॥ नारद देखीने नवि थई, ऊभी तेह सुजाण रे ॥ जाणिए तेणे ते श्राविका, अक्षर एह प्रमाण रे ॥ शा० ॥ १५ ॥ आंबिल अंतर छठनो, उपसर्गे तप कीधोरे ॥ किम नवि कहिए ते श्राविका, धरमे कारज सीधो रे॥ शा० ॥१६॥ रायकन्या कही श्राविका, न कही एम जे भूले रे॥ राजीमति कही तेहवा, एम संदेहे ते झूले रे ॥ शा० ॥ १७ ॥ हरि परे कर्म नियाणनो, इह भवे भोग न नासे रे ॥ समकित लहे परण्या पछी, कहे ते स्युं न विमासे रे ॥ शा० ॥ १८ ॥ जिणघर केणें कराविउं, तिहां प्रतिमानी पईठा रे ॥ तेहनी पुजा ते कुण करे, एम परखे तेह गरीठा रे ॥ शा० ॥ १९ ॥ वर नवि माग्यो छे पूजतां, शक्रस्तवे शिव मागे रे ॥ भक्ति भणी सूरियाभने, विरति विशेषथी जागे रे॥ शा० ॥ २० ॥ धर्म विनय अरिहंतनो, एम ए लोगुवयारो रे ॥ सर्वने संभव जाणिए, समकित शुद्ध आचारो रे ॥ शा० ॥ २१ ॥ आणंदनो विधि नवि कह्यो, राय प्रदेशीने पाठे रे ॥ संभव सर्व न मानस्ये, विंटास्ये तेह आठे रे ॥शा० ॥२२॥ पडिक्कमणादिक क्रम नही, पाठे सप्तम अंगे रे ॥ पडिक्कमणुं ओघथी प्रकरणे, सर्व कह्यो विधि रंगे रे ॥ शा० ॥ २३ ॥किहांएक एक देशज ग्रहे, किहां एक ग्रहे ते अशेषो रे ॥ किहांएक क्रम उत्क्रम कहे, ए श्रुत शैली विशेषो रे ॥शा०॥२४॥ शासननी जे प्रभावना, ते

समकितनो आचारो रे ॥ श्री जिनपूजा जे करे, ते लहे सुजश भंडारो रे ॥ श्रा० ॥ २५ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ झांझरीयानी देशी.

॥कोइ कहे जिन पुजतांजी, जे षटकाय आरंभ ॥ ते किम श्रावक आचरे जी, समकितमां थिर थंभ ॥ १ ॥ सुखदायक तोरी, आणामुज सु प्रमाण ॥ ए आंकणी ॥ तेहने कहीए यतना भगति, किरीयामां नहिं दोष ॥ पडिकमणे मुनि दान विहारे, नही तो होय तस पोष ॥ २ ॥ सु० ॥ साहमी वच्छल परिकय पोसह, भगवइ अंग प्रसिद्ध ॥ घर निर्वाह चरण लीए तेहना, ज्ञाता मांहि हरि कीध ॥ ३ ॥ सु० ॥ कोणिक राये उदायन कीधां, वंदन मह सुविवेक ॥ एहाया कयबलिकम्मा कहिया, तुंगिया श्राद्ध अनेक ॥ ४ ॥ सु० ॥ समकित संवरनी ते किरीया, तिम जिनपूजा उदार ॥ हिंसा होय तो अरथ दंडमां, कहे नही तेह विचार ॥५॥ सु० ॥ नाग भूत यक्षादिक हेते, पूजा हिंसा रे उत्त ॥ सुयगडांगमां ते नवि जिन हेते, बोलिए जे होय जुत्त ॥ ६ ॥ सु० ॥ जिहां हिंसा तिहां नही जिन आणा, तो किम साधु विहार ॥ कर्मबंध नही जयणा भावे, ए छे जीत व्यवहार ॥ ७ ॥ सु० ॥ प्रथम बंध ने पछे निर्जरा, कूप तणो रे दिठंत ॥ कही कोई जोडे बुध भांखे, भावे ते शुचि जल तंत ॥ ८ ॥ सु० ॥ उपादान वशे बंध कहिओ तस; हिंसा शिर उपचार॥

पुष्फादिक आरंभ तणो एम, होय भावे परिहार ॥ ९ ॥ सु० ॥ जल तरतां जल उपर मुनीने, जिम करुणानो रे रंग ॥ पुष्फादिक ऊपर श्रावकने, तिम पूजा मांहि वंग ॥ १० ॥ सु० ॥ पात्रदानथी शुभ विपाक जिम, लहे सुबाहु कुमार ॥ पहेले गुणठाणे भद्रक पणे, तिम जिन पूजा उदार ॥ ११ ॥ सु० ॥ उपलक्षणथी जिम शीलादिक; तिम जिनपूजा लिध ॥ मनुज आयु बंधे जे सुबाहु, तेणे समकित प्रसिद्ध ॥१२॥सु०॥ मेध जीव गज शश अनुकंपा, दान सुबाहु विचार ॥ पहेले गुणठाणे पण सुंदर, तिम जिनपूजा प्रकार॥ १३ ॥ सु० ॥ दान देवपूजादिक सघलां, द्रव्यस्तव कह्यां जेह ॥ असदारंभी तस अधिकारी, मांडी रहे जेह गेह ॥ १४ ॥ सु० ॥ सदारंभमां गुण जाणीजे, असदारंभ निवृत्ति ॥ अरमणीयता त्यागे भांखी, ईमहिज परदेशी प्रवृत्ति ॥ १५ ॥ सु० ॥ लिखित शिल्प शत गणित प्रकाश्यां, तेणे पूजा हित हेत ॥ प्रथम राय श्री ऋषभ जिणंदे, तिहां पण एह संकेत ॥ १६ ॥ सु० ॥ यतनाए सूत्रे कह्युं मुनीने, आर्यकरम उपदेश ॥ परिणामिक बुधे विस्तारे, समझे श्राद्ध अशेष ॥ १७ ॥ सु० ॥ आर्य कार्य श्रावकनां जे छे, तेहमां हिंसा दिठ ॥ हेतु स्वरुप अनुबंध विचारे, नासे देइ निज पिठ ॥ १८ ॥ सु० ॥ हिंसा हेतु अजतना भावे, जीव वधे ते स्वरुप ॥ आणा भंग मिथ्यामति भावे, ते अनुबंध विरूप ॥ १९ ॥ सु० ॥ हेतु स्वरुप न हिंसा सेवी, सवी ते अनुबंध ॥ तो जमालि प्रमुखे फळ पाम्यां, क-डुआ करी बहु धंध ॥ २० ॥ सु० ॥ स्वरूपथी हिंसा नवि टले छे, समुद्रजले ते सिद्ध ॥ वलि अपवाद पदे जे वरते, तेणे पण शिवगति

लीढ ॥ २१ ॥ सु० ॥ साधु विहार परे अनुबंधे, नहि हिंसा जिनभक्ति ॥ एम जे माने तेहने वाधे, सुख जस आगम शक्ति ॥२२॥

॥ ढाल ९ मी. ॥ माहरी सही रे समाणी- ॥ ए देशी.॥

॥ सासय पडिमा अडसय माने, सीद्धायतन नवि माने रे॥ धन धन जिनवाणि, प्रभु ते भांखी अंग उवंगे ॥ वर्णवस्यूं तिम रंगेरे ॥ ध०॥१॥कंचन मय करतल पद सोहे, भवी जननां मन मोहे रे ॥ ध० ॥अंक रतनमय नख ससनेहा, लोहीताक्ष मध्य रेहा रे ॥ ध० ॥ २ ॥गात्र दृष्टी कंचनमय सारी, नाभी ते कंचन क्यारी रे॥ध०॥ रीष्ट रतन रोमेराजी विराजे, चंचुक कंचन छाजे रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ श्रावत्स ते तपनीय विशाला, होठ ते लाल प्रवाला रे ॥ ध० ॥दंत फटिकमय जीभ दयालु, वलि तपनीय मयनुं तालुं रे ॥ ध० ॥४॥ कनक नासिका तिहां सुविशेषा, लोहीताक्षनी रेखा रे ॥ध०॥लोहीताक्ष रेखित सुविसाला, नयन अंक रतनाला रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ अच्छि पत्ति पमुहावलि कीकि, रीष्ट रतनमय नीकी रे ॥ ध० ॥ श्रवण निलाडवटी गुणसाला, कंचन झाक झमाला रे ॥ध०॥ ६ ॥ वज्र रतनमय अतिहि सुहामणी, सीस घडी सुखखाणी रे ॥ ध० ॥ केस भूमि तपनीय नीवेसा, रीष्ट रतनमय केसा रे ॥ ध० ॥ ७ ॥ पुंठे छत्र धरे प्रत्येके, प्रतिमा एक विवेके रे ॥ ध० ॥ दोय पासे दोय चामर ढाले, लीला ए जिनने उवारे रे ॥ ध० ॥ ८ ॥

नाग भूत यक्षने कुंडधारा, आगे दोय उदारे रे ॥ ध० ॥ ते पडिमा जिन पडिमा आगे, मानु सेवा मागे रे ॥ ध० ॥ ९ ॥ घंट कलस भिंगार आयंसा, थाल पाई सुपइठा रे ॥ ध० ॥ मणसुली या वाय करग प्रचंडा, चिंतारयण करंडा रे ॥ ध० ॥ १० ॥ हय गय नर किन्नर किंपुरिसा, कंठ उरग वृष सरिखा रे ॥ ध० ॥ रयण पूंज वलि फूल चंगेरी, माल्यने चूर्ण अनेरी रे ॥ ध० ॥११॥ गंध वस्त्र आभरण चंगेरी, सरिसव पूंजणी केरी रे ॥ ध० ॥ एम पुष्फादिक पडल वखाण्यां, आगे सिंहासन जाण्यां रे ॥ ध० ॥ १२ ॥ छत्र चामर आगे सुमुग्गा, तैल कुष्ट भृत जुग्गा रे ॥ध०॥ भरीयां पात्र चोयग सुविलासे, तगर एला सुचि वासे रे ॥ ध० ॥ १३ ॥ वलि हरीआलने मणसील अंजन, सवि सुगंध मनरंजन रे ॥ध०॥ ध्वजा एकशत आठ ए पूरां, साधन सर्व सनूरां रे ॥ ध० ॥१४॥ सूर ए पुजा साधन साथे, जिनपुजे निज हाथे रे ॥ ध०॥ सिद्धायतने आप विमाने, थूभादिक बहु माने रे ॥ ध० ॥ १५ ॥ एह अपूरव दरिसण दिठुं, सुरतरु फलथी मिठुं रे ॥ ध० ॥ ए संसार समुद्रने नावा, तारण तरण सहावा रे ॥ ध० ॥ १६ ॥ एम विस्मय भवभय गुण रागे, झीले तेह अतागे रे ॥ ध०॥ राचे माचे ने वली नाचे, धर्मध्यान मन साचे रे ॥ ध० ॥ १७ ॥ थै थै करता दिए ते भमरी; हरखे प्रभु गुण समरी रे ॥ ध० ॥ योग निरालंबन लय आणी, वश करता शिवराणी रे ॥ ध० ॥१८॥ एम नंदीश्वर प्रमुख अनेरां; शास्वत चैत्य भलेरां रे ॥ ध० ॥ तिहां जिन पूजी ते अनुमाने,

जनम सफल निज माने रे ॥ ध० ॥ १९ ॥ कल्याणक अठाइ वरषी; तिथी चउमासी सरखी रे ॥ ध० ॥ तेह निमित्ते सुर जिन अरचे. नित्य भक्ति पिण विरचे रे ॥ ध० ॥ २० ॥ भाव अखयभावे जे मिलियो, ते नवि जाए टलियो रे ॥ ध० ॥ फरी त्रांबु नवि होय निषेधे; हुओ हेम रस वेधे रे ॥ ध० ॥ २१ ॥ एके जल लवे जलधी भलाये, तो ते अक्षय थाये रे ॥ ध० ॥ आप भाव जिन गुण मांहि आणे, तिम ते अक्षय प्रमाणे रे ॥ ध० ॥ २२ ॥ अपुणरुत्त अडसय वडवृत्ते; एम सूर भावे चिंते रे ॥ ध० ॥ एम जिनपुजी जे गुण गावे, सुजस लील ते पावे रे ॥ ध० ॥ २३ ॥

॥ ढाल ६ ठी. ॥ भोलीडा हंसा रे विषय न राची ए. ॥ ए देशी.

॥ समकित सुधुं रे तेहने जाणिए, जे माने तुझ आण ॥ सूत्र ते वांचे रे जोग वही करी; करे पंचांगी प्रमाण ॥ स० ॥ १ ॥ उद्देशादिक नहि चउ नाणना, छे सुअनाणना तेह ॥ श्री अनुयोगदुवार थकी लही, धरीए योगसु नेह ॥ २ ॥ स० ॥ उद्देसादिक क्रम विण जे भणे, आशातन तेह नाण ॥ नाणा वरणी रे बांधे तेहथी, भगवई अंग प्रमाण ॥ ३ ॥ स० ॥ श्री नंदी अनुयोगदुवारमां, उत्तराध्ययने रे योग ॥ काल ग्रहणनो रे विधि सघलो कह्यो, धरीए ते उपयोग ॥ ४ ॥ स० ॥ ठाणे त्रीजे रे वली दशमे कह्युं, योग वहे जेह साध ॥ आगमे सिभद्दा ते संपजे, तरे संसार अगाध ॥ ५ ॥ स० ॥ योग वहीने रे साधु श्रुत भणे, श्रावकते उपधान ॥ तप उ-

पधाने रे श्रुत परिग्रह कह्या, नंदीए तेह निदान ॥ ६ ॥ स० ॥ इ-
रियादिकनां रे खट उपधान छे, तेणे आवश्यक शुद्ध ॥ गृहि सामा-
यक आदे श्रुत भणे, दीक्षा लेइ अलुद्ध ॥ ७ ॥ स० ॥ सुत्र भण्या
कोइ श्रावक नवि कह्या, लद्धठा कह्या तेह ॥ प्रथम ज्ञानने रे पछे
दया कही, तिहां संयत गुण रेह ॥ ८ ॥ स० ॥ नवमे अध्ययने रे
बीजा अंगमां, घरमांहि दीव न दीठ ॥ वलीय चउदमे रे कह्युं
शिक्षा लहे, ग्रंथ त्यजे ते गरीठ ॥ ९ ॥ स० ॥ सप्तम अंगे रे अप-
ढिया संवरी, दाख्या श्राद्ध अनेक ॥ नवि आचार धरादिक ते कह्या,
मोटो एह विवेक ॥ १० ॥ स० ॥ उत्तराध्ययने रे कोविद जे कह्यो,
श्रावक पालीत चंप ॥ ते प्रवचन निग्रंथ वचन थकी, अरथ विवेके
अकंप ॥ ११ ॥ स० ॥ सूत्रे दीधुं रे सत्य ते साधुने, सुर नरने
वली अच्छ ॥ संवरद्वारे रे बीजे एम कह्युं, अंग दशमें समरच्छ ॥
॥ १२ ॥ स० ॥ वली विगय पडिबद्धने वाचना, श्री ठाणांगें नि-
षेध ॥ नविय मनोरथ श्रुत भणवा तणो, श्रावकने सुप्रसिद्ध ॥
॥ १३ ॥ स० ॥ वाचना देतां रे गृहिने साधुने, पायश्चित चउ-
मास ॥ कह्युं निशीथे रे तो स्युं एवडी, करवी हुंश निरास ॥ १४ ॥
॥ स० ॥ तजिय असज्झाइ गुरु वाचना, लेई जोग गुणवंत ॥ जे
अनुयोग त्रिविध साचो लहे, करे ते करमनो अंत ॥ १५ ॥ स० ॥
सूत्र अरथ पहेलो बीजे कह्यो, निजुत्तीए रे मास ॥ निरविशेष त्रीजो
ते अंग पांचमे, एम कहे हुं जगदीस ॥ १६ ॥ स० ॥ सूत्र निजुत्ती
रे बिहुं भेद कह्यो, त्रीजो अनुयोगद्वार ॥ कुडा कपटी रे जे माने
नही, तेहनो कवण आधार ॥ १७ ॥ स० ॥ बद्ध ते सूत्र रे अर्थ

निकाचिया, निज्जुत्तीए अपार ॥ उपधि मान गुणणादिक किहां लहे, ते विण मार्ग विचार ॥ १८ ॥ स० ॥ जो निर्युक्ति रे गइक्कुमती कहे, सूत्र गयां नहीं केम ॥ जेह वांचंतां रे आव्युं ते सवे, माने तो होय खेम ॥ १९ ॥ स० ॥ आंधा आगे रे दर्प्पण दाखवो, बहेरा आगे रे गीत ॥ मूरख आगे रे कहेवुं युक्तिनुं, ए सवि एकज रीत ॥ २० ॥ स० ॥ मारग अरथी रे पण जे लोक छे, भद्रक अतीहि विनीत ॥ तेहने ए हित सीख सोहामणी, वली जे सुनय अधीत ॥ २१ ॥ स० ॥ प्रवचन साखेरे एम में भांखीयां, विगते अरथ विचार ॥ तुझ आगमनीरे ग्रही परंपरा, लहीए जग जयकार ॥ २२ ॥ स० ॥ गुण तुझ सघला रे प्रभु कुण गणि शके, आणा गुण लव एक ॥ एम में थुणतां रे समकित दृढ कर्युं, राखी आगम टेक ॥ २३ ॥ स० ॥ आणा तारी रे जो में शिर धरी, तो स्युं कुमतीनुं जोर ॥ तिहां नवि पसरे रे बल विषधर तणुं, किंगारे जिहां मोर ॥ २४ ॥ स० ॥ पवित्र कीजे रे जीहा तुझ गुणे, शिर धरीए तुझ आण ॥ दिलथी कहिए रे प्रभु न विसारीए, लहीए सुजस कल्याण ॥ २५ ॥ स० ॥

ढाल ७ मी. (राग धन्याश्री.)

॥ वर्त्तमान शासननो स्वामी, चामीकर सम देहो जी ॥ वीर जिणेसर में इम थुणीओ, मन धरी धर्म स्नेहो जो ॥ एह स्तवन जे भणस्ये गुणस्ये, तस्स घर मंगल माला जी ॥ समकित भाण हुस्ये

चित तेहने, प्रकट ज्ञाक ज्ञमाला जी ॥ १ ॥ अरथ एहना छे अति सूक्ष्म, ते धारो गुरु पासे जी ॥ गुरुनी सेवा करतां लहीए, अनुभव नीत्य अभ्यासे जी ॥ जेह बहूश्रुत गुरु गीतारथ, आगमना अनुसारी जी ॥ तेहने पूछी संशय टालो, ए हीतसीख छे सारी जी ॥ ॥ २ ॥ इंदलपुर मांहि रही चोमासु, धर्मध्यान सुख पाया जी ॥ संवत (१७३३) सत्तर तेत्रीसा वरषे, विजय दशमी मन भाया जी ॥ श्री विजयप्रभसूरी सवाया, विजयरत्न युवराया जी ॥ तस राजे भवि जन हित काजे, एम में जिनगुण गाया जी ॥ ३ ॥ श्री कल्याणविजय वर वाचक, तपगच्छ गयण दिणंदा जी ॥ तास सीस श्री लाभविजय बुध, भवि जन कैरव चंदा जी ॥ तास सीस श्री जीतविजय बुध, श्री नयविजय मुणिंदा जी ॥ वाचक जशविजय तस सीसे, थुणिया वीर जिणंदा जी ॥ ४ ॥ दोसी मूला सुत विवेकी, दोसी मेघा हेते जी ॥ एह स्तवन में कीधुं सुंदर, श्रुत अक्षर संकेते जी ॥ ए जिन गुण सुरतरुनो परिमल, अनुभवतो ते लहेशे जी ॥ भमर पर जे अरथी होइने, गुरु आणा शिर वहेशे जी ॥ ॥ ५ ॥ इति. ॥

श्रीमद् यशोविजयजी कृत श्री मंधर स्वामीनुं निश्चय व्यवहारनुं च्यार ढालनुं स्तवन ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ श्री सीमंधर साहिब आगे विनति रे, मन धरी निर्मल

भाव ॥ कीजे रे कीजे रे, लीजे लाहो भव तणो रे ॥ १ ॥ बहु सुख खाणी तुज वाणी परिणमे रे, जेह एक नय पक्ष ॥ भूला रे भूला रे, ते प्राणी भव रडवडे रे ॥ २ ॥ मेंमति मोहे एकज निश्चय आदर्यो रे, के एकज व्यवहार ॥ भेलारे भेलारे, तुज करुणाए ओ-लख्या रे ॥ ३ ॥ शिबिका वाहक पुरुष तणी परे ते कह्यो रे, नि-श्चय नय व्यवहार ॥ मिलीया रे मिलीयारे, उपगारी नवी जुजुआ रे ॥ ४ ॥ बहुला पण रत्न कह्या जे एकलांरे, ते माला न कहाय ॥ मालारे मालारे, एक सूत्रे ते सांकल्यारे ॥ ५ ॥ तेम एकाकी नय सघला मिथ्यामति रे, मिलीया समकित रूप ॥ कहीये रे कहीये रे, लहीये सम्मति सम्मति रे ॥ ६ ॥ दोय पंख विण पंखी जेम नवि चली शके रे, जेम रथ विण दोय चक्र ॥ न चले रे न चले रे, तिम शासन नय बिहुं विना रे ॥ ७ ॥ शुद्ध अशुद्धपणुं सरखुं छे बेउने रे, निज निज विषे शुद्ध ॥ जाणो रे जाणो रे, पर विषे अ-विशुद्धता रे ॥ ८ ॥ निश्चय नय परिणाम पणाए छे वडो रे, तेहवो नहि व्यवहार ॥ भाखे रे भाखे रे, कोइक एम नवि घटे रे ॥ ९ ॥ जे कारण निश्चय नय कारण अछे रे, कारण छे व्यवहार ॥ साचो रे साचो रे, कारज साचो ते सहिरे ॥ १० ॥ निश्चय नय मति गुरु शिष्यादिकको नहि रे, करे न भुंजे कोय ॥ तेहथी रे तेहथी रे, उन्मारग ते देशना रे ॥ ११ ॥ व्यवहारे गुरु शिष्यादिक संभवे रे, साचो ते उपदेश ॥ भाख्यो रे भाख्यो रे, भाष्ये सूत्र व्यवहा-रमें रे ॥ १२ ॥

॥ ढाल बीजी ॥ गुण वेलडीया ॥ ए देशी ॥

॥ कोइक विधि जोतां थकां रे, छांडे सवि व्यवहार रे ॥ मन वसीया ॥ न लहे तुज वचने कह्युं रे, द्रव्यादिक अनुसार रे ॥ गुण रसीया ॥ १ ॥ पाठ गीत नृत्यनी कला रे, जिम होय प्रथम अशुद्ध रे ॥ मन० ॥ पण अभ्यासे ते खरी रे, तेम क्रिया अविरुद्ध रे ॥ ॥ गुण० ॥ २ ॥ मणि शोधक शत खारना रे, जिम पुट सकल प्रमाण रे ॥ मन० ॥ सर्व क्रिया तेम योगने रे, पंच वस्तु अहिनाण रे ॥ गुण० ॥ ३ ॥ प्रीति भक्ति योगे करी रे, इच्छादिक व्यवहार रे ॥ मन० ॥ हीणो पण शिव हेतु छे रे; जेहने गुरु आधार रे ॥ ॥ गुण० ॥ ४ ॥ विष गरल अन्योअन्य छे रे, हेतु अमृत जेम पंच रे ॥ मन० ॥ क्रिया तिहां विष गरल कही रे, इह परलोक प्रपंच रे ॥ गुण० ॥ ५ ॥ अन्योअन्य हृदय विना रे, समूर्च्छिम पर होय रे ॥ मन० ॥ हेतु क्रिया विधि रागथी रे, गुण विनयीने जोय रे ॥ ॥ गुण० ॥ ६ ॥ अमृत क्रिया मांही जाणीए रे, दोष नहि लव लेश रे ॥ मन० ॥ त्रिक तजवा दोय सेववा रे, योग बिंदु उपदेश रे ॥ गुण० ॥ ७ ॥ क्रिया भक्ति छेदीए रे, अविधि दोष अनुबंध रे ॥ मन० ॥ जिणे ते शिव कारण कहे रे, धर्म संग्रहणी प्रबंध रे ॥ गुण० ॥ ८ ॥ निश्चय फल केवल लगे रे, न तजीए व्यवहार रे ॥ ॥ मन० ॥ चक्री भोग पाम्या विना रे, जिम निज भोजन सार रे ॥ गुण० ॥ ९ ॥ पुण्य अग्नि पातिक दहे रे, ज्ञान सेहेजे ओल-खाय रे ॥ मन० ॥ पुण्य हेतु व्यवहार छे रे, तिणे निर्वाण उपाय

रे ॥ गुण० ॥ १० ॥ भव्य एक आवर्त्तमां रे, क्रिया वादि सिद्ध रे ॥ मन० ॥ जोवे तेम बीजो नहि रे, "दशा चूर्णी" प्रसिद्ध रे ॥ गुण० ॥ ११ ॥ इम जाणीने मन धरे रे, तुज शासननो राग रे ॥ मन० ॥ निश्चय परिणति मुनि रहे रे, व्यवहारे वड लाग रे॥ ॥ गुण० ॥ १२ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ भोलीडा हंसा रे विषय न राचीये ॥ ए देशी ॥

॥ समकित पक्ष कोइकज आदरे, क्रिया मंद अणजाण ॥ श्रेणीक प्रमुख चरित्र आगल करे, नवि माने गुरु आण ॥ अंतरजामी रे तुं जाणे सवे ॥ १ ॥ कहे ते श्रेणीक नवि नाणी हुओ, नवि चारित्र प्रधान ॥ समकित गुणथी रे जिन पद पामशे, तेहज सिद्धि निदान ॥ अंतर० ॥ २ ॥ ते नवि जाणे रे क्रिया खप विना, समकित गुण पण तास ॥ नरक तणी गति नवि छेदी शके, ए आवश्यके भाष ॥ अंतर० ॥ ३ ॥ उज्वल ताणे रे वाणे मेलडे, सोहे पट न विशाल ॥ तिम नवि सोहे रे समकित अविरति, बोले उपदेश माल ॥ अंत० ॥ ४ ॥ विरति विघन पण समकित गुण वर्यो, छेदे पलीय पुहुत्त ॥ आणंदादिक व्रत धरता कह्यो, समकित साथे रे सूत्त ॥ अंतर० ॥ ५ ॥ श्रेणीक सरिखा रे अविरति थोडला, जेह निकाचित कर्म ॥ ताणी आणे रे समकित विरतिने, ए जिन शासन मर्म ॥ अंतर० ॥ ६ ॥ अम्ह प्रतिज्ञा रे विण लव सप्तमा, अम्ह व्रति नहि आप ॥ अण किधा पण लागे अविरते, स्हेजे सघला रे पाप

॥ अंतर० ॥ ७ ॥ एहवुं जाणी रे व्रत आदर करो, जतने समकित वंत ॥ पंडित मीछे रे थोडे जिम भणे, नावे बोल अनंत ॥ अंतर० ॥ ८ ॥ आंधा आगल दरपण दाखवो, बहेरा आगल गीत ॥ मूरख आगल परमारथ कथा, त्रणे एकज रीत ॥ अंतर० ॥ ९ ॥ एवुं जाणी रे हुं तुज विनवुं, किरिया समकित जोडी ॥ दीजे कीजे रे करुणा अति घणी, मोह शुभट मद मोडी ॥ अंतर० । १० ॥

॥ ढाळ चोथी ॥ क्रीडा करी घरे आवीयो ॥ ए देशी ॥

॥ एणीपरे में प्रभु विनव्यो, सीमंधर भगवंतो रे ॥ जाणुं हुं ध्याने प्रगट हुं तो, केवल कमला केतो रे ॥ जयो जयो जगगुरु जगधणी ॥ १ ॥ तुं प्रभु हुं तुज सेवको, ए व्यवहार विवेको रे ॥ निश्चय नय नहि आंतरो, शुद्धात्तम गुण एको रे ॥ जयो० ॥ २ ॥ जिम जल सकल नदी तणो, जलनिधि जल होय भेलो रे ॥ ब्रम्ह अखंड सखंडनो, तिम ध्याने एक भेलो रे ॥ जयो० ॥ ३ ॥ जिणे आराधन तुज कर्युं, तस साधन कुण लेखे रे ॥ दूर देशांतर कुण भमे, जे सुरमणि घरे देखे रे ॥ जयो० ॥ ४ ॥ अगम अगोचर नय कथा, पार कुणे नवि लहीए रे ॥ तिणे तुज शासन इम कह्युं, बहु श्रुत वयणडे रहीए रे ॥ जयो० ॥ ५ ॥ तुं मुज एक हृदय वस्यो, तुंहीज पर उपगारी रे ॥ भरत भविक हित अवसरे, मुज मत मेलो विसारी रे ॥ जयो० ॥ ६ ॥

॥ कलश ॥ इम विमल केवल ज्ञान दिनकर, सकल गुण रयणायरो ॥ अकलंक अकल निरीह निर्मम, विनव्यो सीमंधरो ॥ श्री विजयप्रभ सूरिराज राजे, विकट संकट भय हरो ॥ श्री नयविजय बुध शिष्य वाचक, जसविजय जय जय करो ॥ १ ॥ ३ ॥

॥ अथ श्री आराधनानुं (पुन्यप्रकाशनुं) स्तवन ॥

॥ दोहा ॥ सकल सिद्धि दायक सदा, चोवीसे जिनराय; सह गुरु स्वामीनी सरसती, प्रेमे प्रणमुं पाय ॥ १ ॥ त्रिभुवन पति त्रिशला तणो, नंदन गुण गंभीर; शासन नायक जग जयो, वर्द्धमान वडवीर ॥ २ ॥ एक दिन वीर जीणंदने, चरणे करी प्रणाम ॥ भविक जीवना हित भणी, पूछे गोतम स्वाम ॥ ३ ॥ मुक्ति मारग आराधीये, कहो केणी पेरे अरिहंत ॥ सुधा सरस तव वचनरस, भांखे श्री भगवंत ॥ ४ ॥ अतिचार आलोइए, व्रत धरिये गुरु शाख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोरासी लाख ॥ ५ ॥ विधिशुं वली वोसरावियें, पापस्थान अढार ॥ चार शरण नित्य अनुसरो, निंदो दुरित आचार ॥ ६ ॥ शुभ करणी अनुमोदिये, भाव भलो मन आणी ॥ अणसण अवसर आदरी, नव पद जपो सुजाण ॥ ७ ॥ शुभगति आराधन तणा, ए छे दश अधिकार ॥ चित्त आणीने आदरो, जीम पामो भवपार ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाळ १ ली ॥

ज्ञान दरिसण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार ॥ एहतणा इह भव परभवना, आलोइए अतिचार रे ॥ १ ॥ प्राणी ज्ञान भणो गुण खाणी ॥ वीर वदे एम वाणीरे ॥ प्रा० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ गुरु ओलविये नहीं गुरु विनये, काले धरी बहु मान ॥ सूत्र अर्थ तदुभय करी सूधां, भणीये वही उपधान रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ ॥ ज्ञानोपगरण पाटी पोथी, ठवणी नोकारवाली ॥ तेह तणी कीधी आशातना, ज्ञान भक्ति न संभाली रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आ भव परभव वली रे भवोभव ॥ मिच्छामी दुक्कड तेह रे ॥ ४ ॥ प्राणी समकीत ल्यो शुद्ध जाणी ॥ जिन वचने शंका नवी कीजे, नवि परमत अभिलाष ॥ साधु तणी निंदा परिहरजो, फल संदेह म राख रे ॥ प्रा० ॥ स० ॥ ५ ॥ मुढपणुं छंडो परशंसा, गुणवंतने आदरिये ॥ साहम्मिने धर्मे करी स्थिरता, भक्ति प्रभावना करीए रे ॥ प्रा० ॥ स० ॥ ६ ॥ संघ चैत्य प्रासाद तणो जे, अवर्णवाद मन लेख्यो ॥ द्रव्य देवको जे विणसाड्यो, विणसंतां उवेख्यो रे ॥ प्रा० ॥ स० ॥ ७ ॥ इत्यादिक विपरीत पणाथी, समकीत खंड्युं जेह ॥ आ भवपरभव वळी रे भवो भव, मिच्छामी दुक्कड तेहरे ॥ प्रा० ॥८॥ चारित्र ल्यो चित्त आणी ॥ पांच समिति त्रण गुप्ति विराधी, आठे प्रवचन माय ॥ साधु तणे धर्मे परमादे, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ ९ ॥ श्रावकने धर्मे सामायिक, पोसहमां मन वाळी ॥ जे जयणा पूर्वक

जे आठे, प्रवचन माय न पाली रे ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ १० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र डहोल्युं जेह ॥ आ भव० ॥ मिच्छा० ॥ ॥ ११ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ बारे भेदे तप नवी कीधो, छते योगे निज शक्ते ॥ धर्मे मन वच काया वीरज, नवि फोरवीयुं भक्ते रे ॥ प्रा० ॥ ॥ चा० ॥ १२ ॥ तप वीरज आचार एणी पेरे, विविध विराध्यां जेह ॥ आ भ० ॥ मिच्छा० ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ चा० ॥ वलीय विशेषे चारित्र केरा, अतिचार आलोइये ॥ वीरजीणेसर वयण सुणीने, पाप मयल सवी धोइए रे ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ १४ ॥

॥ ढाळ २ जी ॥

॥पृथिवी पाणी तेउ, वाउ वनस्पति ॥ ए पांचे थावर कह्या ए॥ करि कर्षण आरंभ, क्षेत्र जे खेडीयां ॥ कूवा तळाव खणावीया ए ॥ ॥ १ ॥ घर आरंभ अनेक, टांकां भोंयरां ॥ मेडी माल चणावीया ए ॥ लिपण घुंपण काज, एणी परें परंपरे ॥ पृथ्वी काय विराधीया ए ॥ २ ॥ धोयण नाहण पाणी, झीलण अपकाय ॥ छोती धोती करी दुहव्या ए ॥ भाठीगर कुंभार, लोह सोवनगरा ॥ भाडभुंजा लिहालागरा ए ॥ ३ ॥ तापस शेकण काज, वस्त्र निखारण ॥ रंगण रांधण रसवती ए ॥ एणी परे कर्मादान, परे परै केलवी ॥ तेउ वाउ विराधीया ए ॥ ४ ॥ वाडी वन आराम, वावी वनस्पति ॥ पान फुल फल चुंटीयां ए ॥ पहोंक पापडी शाक, शेक्यां सूकव्यां ॥ छेद्यां छुंद्यां आथीयां ए ॥ ५ ॥ अलसीने एरंड, घाणी घालीने ॥ घणा-

तिलादिक पीलीया ए ॥ घाली कोल्हुमांहि, पीली शेलडी ॥ कंद-मूल फल वेचीयां ए ॥ ६ ॥ एम एकेंद्रि जीव, हण्या हणावीया ॥ हणतां जे अनुमोदियाए ॥ आ भव परभव जेह वलीय भवोभवे ॥ ते मुज मिच्छामी दुक्कडं ए ॥७॥ क्रमी सरमीया कीडा, गाडर गंडोला ॥इयल पोरा अलशीयां ए ॥वाळा जलो चुडेल, विचलित रसतणा॥ वली अथाणा प्रमुखनां ए ॥ ८ ॥ एम बे इंद्रिय जीव, जे मैं दुहव्या ॥ ते मुज० ॥ उदेही जु लीख, मांकण मंकोडा, चांचड कीडी कुंथुआ ए ॥ ९ ॥ गद्दहीयां धीमेल, कानखजुरडा ॥ गींगोडा धनेरीयां ए ॥ एम ते इंद्रिय जीव, जे में दुहव्या ॥ ते मुज० ॥ १० ॥ माखी मच्छर डांस, मसा पतंगीयां ॥ कंसारी कोलियावडा ए ॥ ढींकुण विछु तीड, भमरा भमरीयो ॥ कोतांबग खड माकडी ए ॥ ११ ॥ एम चौरिंद्रि जीव, में दुहव्या ॥ ते मुज० ॥ जळमां नाखी जाल, जलचर दुहव्या ॥ वनमां मृग संतापीया ए ॥ १२ ॥ पीड्या पंखी जीव, पाडी पाशमां ॥ पोपट घाल्या पांजरे ए ॥ एम पंचेंद्रिय जीव, जे में दुहव्या ॥ ते मुज० ॥ १३ ॥ इति ॥

——:०:——

॥ ढाळ ३ जी ॥

॥ प्रथम गोवाळा तणे भवेजी—ए देशी ॥

क्रोध लोभ भय हास्यथीजी, बोल्यां वचन असत्य ॥ कुड करी धन पारकांजी, लीधां जेह अदत्तरे ॥ जीनजी ॥ १ ॥ मिच्छामीदुक्कडं आज ॥ तुम साखे महाराजरे ॥ जीनजी० ॥ देइ सारुं काजरे ॥ जीनजी० ॥ मि० ए आंकणी ॥ देव मनुज तिर्यंचनांजी,

मैथुन सेव्यां जेह ॥ विषयारस लंपट पणेजी, घणु विडंब्यो देह रे ॥ ॥ जीनजी० ॥ मि० ॥ २ ॥ परिग्रहनी ममता करीजी, भव भव मेली आथ ॥ जे जीहांनी ते तीहां रहीजी, कोइ न आवी साथ रे ॥ जीनजी० ॥ मि० ॥ ३ ॥ रयणी भोजन जे कर्यांजी, कीधां भक्ष्य अभक्ष्य ॥ रसना रसनी लालचेजी, पाप कर्यां प्रत्यक्ष रे ॥ ॥ जी० ॥ ४ ॥ मि० ॥ व्रत लेइ विसारीयांजी, वली भाग्यां पच्च-क्खाण ॥ कपट हेतु किरिया करीजी, कीधां आप वखाण रे ॥ ॥ जी० ॥ ५ ॥ मि० ॥ त्रण ढाल आठे दुहेजी, आलोया अति-चार ॥ शिवगति आराधन तणोजी, ए पेहेलो अधिकार रे ॥ जी-नजी० ॥ ६ ॥ मि० ॥ इति ॥

॥ ढाळ ४ थी ॥

॥ पंच महाव्रत आदरो ॥ साहेलडी रे ॥ अथवा ल्यो व्रत बार तो ॥ यथा शक्ति व्रत आदरी ॥ साहेलडी रे ॥ पालो निर-तिचार तो ॥ १ ॥ व्रत लीधां संभारीए ॥ सा० ॥ हियडे धरी विचार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ॥ सा० ॥ ए बीजो अधि-कार तो ॥ २ ॥ जीव सवे खमावीए ॥ सा० ॥ योनी चोरासी लाख तो ॥ मन शुद्धे करी खामणां ॥ सा० ॥ कोइशुं रोश न रा-खतो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चिंतवो ॥ सा० ॥ कोइ न जाणो शत्रु तो ॥ रागद्वेष एम परिहरो ॥ सा० ॥ कीजे जन्म पवित्र तो ॥ ॥ ४ ॥ साहम्मि संघ खमावीये ॥ सा० ॥ जे उपनी अप्रीति तो ॥

सज्जन कुटुंब करी खामणां ॥ सा० ॥ ए जीन शासन रीति तो ॥ ५ ॥ खमीए अने खमावीए ॥ सा० ॥ एहज धर्मनो सार तो ॥ शीवगति आराधन तणो ॥ सा० ॥ ए त्रीजो अधिकार तो ॥ ६ ॥ मृषावाद हिंसा चोरी ॥ सा० ॥ धन मूर्छा मेहुन्न तो ॥ क्रोध मान माया तृष्णा ॥ सा० ॥ प्रेम द्वेष पैशुन्य तो ॥ ७ ॥ निंदा कलह न कीजीए ॥ सा० ॥ कुडां न दीजे आल तो ॥ रति अरति मिथ्या तजो ॥ सा० ॥ माया मोस जंजाळतो ॥ ८ ॥ त्रिविध त्रिविध वोसराविये ॥ सा० ॥ पापस्थान अढार तो ॥ शिव गति आराधन तणो ॥ सा० ॥ ए चोथो अधिकार तो ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ ढाळ ५ मी ॥

॥ श्रावण सुदी द्वीन पंचमीए–ए देशी ॥

जन्म जरा मरणे करी ए, ए संसार असार तो ॥ कर्यां कर्म सहु अनुभवे ए, कोइ न राखण हार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुं ए, शरण सिद्ध भगवंत तो ॥ शरण धर्म श्री जैननो ए, साधु शरण गुणवंत तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परहरि ए, चार शरण चित्त धार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥ आ भव परभव जे कर्यां ए, पाप कर्म केइ लाख तो ॥ आत्म साखे निंदीए ए, पडिक्कमिजे गुरु शाख तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामति वर्त्तावीयां ए, जे भाख्यां उत्सुत्र तो ॥ कुमति कदाग्रहने वशे ए, वळी उत्थाप्यां सूत्र तो ॥ ५ ॥ घड्यां घडाव्यां जे घणां ए, घंटी हळ हथियार तो ॥ भवभव मेली मूकीयां ए, करतां

जीव संहारतो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोषीया ए, जन्म जन्म परिवार तो ॥ जन्मांतर पहोता पछी ए, कोइ न कीधी सार तो ॥ ७ ॥ आभव परभव जे कर्यां ए, एम अधिकरण अनेक तो ॥ त्रिविध त्रिविध वोसिराविये ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ दुःकृत निंदा एम करी ए, पाप कर्यां परिहार तो ॥ शिव गति आराधन तणो ए ॥ ए छठ्ठो अधिकार तो ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ ढाळ ६ ठ्ठी ॥

॥ रे जीव जीन धर्म कोजीये—ए देशी ॥

धन्य धन्य ते दिन माहरो, जीहां कीधो धर्म ॥ दान शीयल तप आदरी, टाल्यां दुष्कर्म ॥ १ ॥ धन्य० ॥ शत्रुंजादिक तीर्थनी, जे कीधी यात्र ॥ युगते जीनवर पूजीया, वळी पोख्यां पात्र ॥ ध० ॥ २ ॥ पुस्तक ज्ञान लखावीयां, जीनहर जीन चैत्य ॥ संघ चतुर्विध साचव्या, ए साते क्षेत्र ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ पडिक्कमणां सुपरे कर्यां, अनुकंपा दान ॥ साधु सूरि उवजझायने, दीधां बहुमान ॥ ध० ॥ ४ ॥ धर्मकारज अनुमोदिये, इम वारंवार ॥ शिवगति आराधन तणो, सातमो अधिकार ॥ ध० ॥ ५ ॥ भाव भलो मन आणीये, चित्त आणी ठाम ॥ समता भावे भाविये, ए आतमराम ॥ ध० ॥ ॥ ६ ॥ सुख दुःख कारण जीवने, कोइ अवर न होय ॥ कर्म आप जे आचर्या, भोगवीये सोय ॥ ध० ॥ ७ ॥ समताविण जे अनुसरे, प्राणी पुण्य काम ॥ छार उपर ते लीपणुं, जांखर चित्राम ॥

॥ ध० ॥ ८ ॥ भाव भलीपरे भाविये, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधन तणो, ए आठमो अधिकार ॥ ध० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ ढाळ ७ मी ॥

॥ दीन सकल मनोहर, बीज दिवस सुविशेष—ए देशी ॥

हवे अवसर जाणी, करिये संलेषण सार ॥ अणसण आदरियें, पचख्खी चारे आहार ॥ ललुता सवि मुकी, छांडी ममता अंग ॥ ए आतम खेले, समता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति चारे कीधा, आहार अनंत निःशंक ॥ पण तृप्ति न पाम्यो, जीव लालचियो रंक ॥ दुलहो ए वळी वली, अणसणनो परिणाम ॥ एथ। पामी जे, शिवपद सुरपद ठाम ॥ २ ॥ धन धन्ना शालिभद्र, खंधो मेघ कुमार ॥ अणसण आराधी, पाम्या भवनो पार ॥ शिव मंदिर जाशे, करी एक अवतार ॥ आराधन केरो, ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशमे अधिकारे. महामंत्र नवकार ॥ मनथी नवि मूको, शिव सुख फल सहकार ॥ ए जपतां जाये, दुर्गति दोष विकार ॥ सुपरे ए समरो, चौद पुरवनो सार ॥ ४ ॥ जन्मांतर जातां, जो पामे नवकार ॥ तो पातक गाली, पामे सुर अवतार ॥ ए नवपद सरखो, मंत्र न कोइ सार ॥ इह भवने परभवे, सुख संपत्ति दातार ॥ ५ ॥ जुओ भील भीलडी, राजा राणी थाय ॥ नवपद महिमाथी, राजसिंह महाराय ॥ राणी रतनवती बेहु, पाम्यां छे सुरभोग ॥ एक भवथी लेशे ॥ सिद्धि वधु संयोग ॥ ६ ॥ श्रीमतिने ए वली, मंत्र फल्यो ततकाळ ॥ फणिधर फीटीने, प्रगट थइ फुल माल ॥ शीव कुमरे

योगी, सोवन पुरिसो कीध ॥ एम एणे मंत्रे, काज घणानां सीध ॥ ७ ॥ ए दश अधिकारे, वीर जीणेसर भाख्यो ॥ आराधन केरो, विधि जेणे चित्तमां राख्यो ॥ तेने पाप पखाली, भव भय दूरे नांख्यो ॥ जीन विनय करंतां, सुमति अमृत रस चाख्यो ॥ ८ ॥ इति

ढाल ८ मी ॥ भरतनृप भावशुंए - ए देशी ॥

॥ सिद्धारथ राय कुल तिलोए, त्रिशलामात मल्हार तो ॥ अवनितले तुमे अवतरया ए, करवा अम उपगार ॥ १ ॥ जयो जीन वीरजीए ॥ म अपराध कर्या घणा ए, केहेतां न लहुं पार तो ॥ तुम चरणे आव्या भणीए, जो तारे तो तार ॥ २ ॥ ज० ॥ आश करीने आवियो ए, तुम चरणे महाराज तो ॥ आव्याने उवेखशो ए, तो केम रहेशे लाज ॥ ३ ॥ ज० ॥ कर्म अलुजण आकरांए, जन्म मरण जंजाल तो ॥ हुं छुं एहथी उभग्यो ए, छोडावो देव दयाल ॥ ज० ॥ ४ ॥ आज मनोरथ मुज फल्या ए, नाठां दुःख दंदोलतो ॥ तुठयो जीन चोवीशमो ए, प्रगटयां पुन्य कल्लोल ॥ ५ ॥ ज० ॥ भव भव विनय तुमारडो ए, भाव भक्ति तुम पाय तो ॥ देव दया करी दीजीए ए, बोध बीज सुपसाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ इति ॥

कळश.

॥ इय तरण तारण, सुगति कारण, दुःख निवारण जग जयो ॥ श्री वीर जीनवर, चरण थुणतां, अधिक मन उल्लट थयो ॥ १ ॥

श्री विजय देव, सुरिंद पटधर, तीर्थ जंगम इण जगे ॥ तप गच्छपति, श्री विजय प्रभ सूरि, सूरि तेजे झगमगे ॥ २ ॥ श्री हीरविजय सूरि शिष्य वाचक, कीर्ति विजय सुरगुरु समो ॥ तस शिष्य वाचक विनय विजये, थुण्यो जीन चोवीसमो ॥ ३ ॥ सइ सत्तर संवत, ओगणत्रीसे, रही रांदेर चोमास ए ॥ विजय दश-मी विजय कारण, कीयो गुण अभ्यास ए ॥ ४ ॥ नरभव आराधन सिद्धि साधन, सुकृत लील विलास ए ॥ निर्जरा हेते, स्तवन रचीयुं, नामे पुण्य प्रकाश ए ॥ ५ ॥ इति श्री वीर जीन आरा-धनारूप पुण्य प्रकाश स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ अथ सिद्धदंडिकास्तवन ॥

॥ दूहा. ॥ श्री रिसहेसर पाय नमी, पामी सुगुरु पसाय ॥ सिद्ध तणा गुण गायवा, मुज मन हर्ष न माय ॥ १ ॥तीर्थमांहि जिम सिद्धिगिरि, देवमांहि अरिहंत ॥ पदमां शिवपद मोटकुं, ऋषभनो वंश कहंत ॥ २ ॥ जेहना वंशमां पाटवी, बहुला मोक्षे जाय ॥ अथवा अनुत्तर पद लहे, एकभवी ते कहाय ॥ ३ ॥

ढाल १ ली. भाई हवे माळ पहेरावो—ए देशी.

श्री ऋषभजी केवल पाम्या, सुरनर आवी शिर नाम्या ॥ भिन्नमुहूर्ते शिवपद लहीओ, मरुदेवाए मारग वहीओ ॥ ४ ॥ आदित्यजसा प्रमुख जे राय, ते ऋषभवंशी कहेवाय ॥ चौद लाख

त्रीखंडना स्वामी, पाम्या शिव तस नमुं शिरनामी ॥ ५ ॥ पछे पाट जे एक उपन्न, सरवारथसिद्धे निष्पन्न ॥ चौद लाख पाट शिव जाय, पछे सरवारथ सुर थाय ॥ ६ ॥ चौद लाख ने अंतर एम, तिहां लगे सुर करजो प्रेम ॥ ते एकेका असंख्याता थाय, पछे चौद लाख शिव जाय ॥ ७ ॥ पछे पाट बे सरवारथे, पछे चौद लाख शिव गछे ॥ इम ते बे बे असंख्याता, इम त्रण त्रण व्याख्याता ॥ ८ ॥ च्यार च्यार असंख्याता कहीए, इम जाव पचासे लहीए; निज रत्नत्रयीना भोगी, थया रुपातीत अयोगी ॥ ९ ॥

ढाल २ जी. ॥ विवाहलानी ॥ इंम पंच विदेहे, ए देशी ॥

सरवारथ सिद्धे, चौद लाख हवे पाट ॥ पछे शिव एक जाय, नहीं त्रीजी जिहां वाट ॥ १० ॥ इम शिव एकेका, असंख्याता थाय ॥ पछे चौद लाख सुर, बे शिवमांही जाय ॥ ११ ॥ इम बे बे करतां, थाय असंख्याता तेह ॥ इत्यादिक जावत, होय पचास शिव जेह ॥ १२ ॥ इम पचास पचास, थाय असंख्यनी राशी ॥ लोकालोक भासक, केवलज्ञान विलासी॥ १३ ॥ हवे पाट लाख होय, मोक्ष तथा सुर थाय ॥ इम त्रिण चार लाख, उभय सरीखा जाय ॥ १४ ॥ इम लाख असंख्यता, सुर निर्वाणे आख्या ॥ सुर शब्दे जाणो, अनुत्तर सुरमें भाख्या ॥ १५ ॥

ढाल ३ जी. ॥ भरत नृप भावशुंए, ए देशी ॥

एक शिवे दोय देवता ए, त्रण शिवे चार सुर थाय ॥ उत्तम वंश एहनो ए, पण शिवे खट सुर जाय ॥ नमो सिद्ध भावशुंए

॥ १६ ॥ एक वधते इम कीजीए ए, मोक्ष सर्वारथ देव ॥ थाये छे असंख्याता ए, तिहां लगे करो नितमेव. न० ॥ १७ ॥ हवे एक शिवे त्रण देवता ए, पण शिवे सग सुर ताम ॥ करो बे बे वाधता ए, जाव असंख्य दोय ठाम. न० ॥ १८ ॥ पछे एक शिव चार देवता ए, सात शिवे दश देव ॥ करो त्रण वाधता ए, असंख्य होय दोय हेव. न० ॥ १९ ॥ हवे विषमोत्तर श्रेणि छे ए, सुणो सरूप तुमे तास ॥ मांडी एक पाटलो ए, थापना करीए खास. न० ॥ २० ॥ हेठल उपर जाणिए ए, त्रगडा ओगणत्रीस वार ॥ अनुक्रमे मांडीए ए, नथी खेप आदी ठार.[1] न० ॥ २१ ॥ २दुग ५ पण ९ नव १३ तेर १७ सतरमां ए, २२ बावीश ६ षट् ८ अड १२ बार ॥ १४ चउद २८ अठावीश वली ए, २६ छवीश २५ पचवीस सार. न० ॥ २२ ॥ ११ एकादश २३ त्रेवीश वली ए, ४७ सडतालीश ७० सोतेर ॥ ७७ सीत्तोतेर १ इग २ दुग ए, ८७ सत्तासी ७१ इकोतेर न० ॥२३॥ ६६ छासठ ६९ओगणोतेर भला ए, २४ चोवीश ४६ छेंतालीश ॥ वळी १०० शत मूकीए ए, तिम वली भेलो २६ छवीश न० ॥ २४ ॥ इम भेल्याथी एकांतरे ए, मोक्ष सर्वारथ जाय ॥ अनुक्रमे लीजीए ए, निज गुण भोक्ता थाय. न० ॥ २५ ॥

---

१ ओगणत्रीश त्रगडामां पहेला त्रगडा नीचे कांइ मेळववुं नहीं, बाकी अठावीश त्रगडा नीचे नीचे बतावेला २८ आंक मेळववा.

ढाल ४ थी. ॥ राग इगवीशानो. ॥

ढाल—इम करतांरे[1] त्रण शिवे पांच देवता, अड सिद्धेरे, बार विमानने सेवता ॥ इम यावत्रे, शत उत्तर त्रण सुर थया, ओगणत्रीशरे, पाट उत्तम शीवमां गया ॥ २६ ॥

(त्रुटक) गया शिवमां एम मांडो, ओगणत्रीश उरध अधे ॥ अंक भेळो पूर्वनी परे, देव शिव मारग सधे॥ २७ ॥

ढाल—इम जाणोरे, अंक अंत आवे हवे, तेह दंडिकारे, आगळमां आदि ठवे ॥ पहेले अंकेरे, पहेली दंडिकाए सिद्ध करो, बीजी दंडिकारे, प्रथम अंक सुरमां धरो ॥ २८ ॥

(त्रुटक) धरो सुरमां एह अनुक्रम, धारो गुरु पासे सही ॥ अजित स्वामी तात जावत, उपजे तिहां लगे कही ॥ २९ ॥

ढाळ—असंख्यातीरे, कोडि लाख इम दंडिका, सिद्ध ने वलीरे, सर्वारथ अखंडिका ॥ इम प्रकरणरे, सिद्धदंडिकामां कह्युं; नंदिसूत्रनीरे, वृत्तिमांहि पण इम लह्युं ॥ ३० ॥

(त्रुटक) इम लह्युं वृत्तिमां गुरु पासे, पामी अर्थ ने भाखीयो॥ स्वपरने परकाश हेते, स्तवन करी चित्त राखीयो ॥ ३१ ॥

ढाल—शाश्वत सुखरे, ज्ञान दर्शनमांहि रमे, फरी भवमांरे, सिद्ध थया ते नवि भमे ॥ जेहनुं सुखरे, सुखथी कही ए केटलुं, उपमा विणरे, शुं कहीए दाख्युं एटलुं ॥ ३२ ॥

---

१ उपर प्रमाणे त्रगडा नीचे आंक भेलववाथी जे आंक आवे तेमां एक आंक शिव गयानो ने बीजो आंक देव थयानो समजवो. अनुक्रमे ते प्रमाणे गणवुं.

(त्रुटक) एटलुं अजर अमर निरमम, जास ज्योति परगट थइ ॥ सिद्ध परम स्मृद्धि पाम्या, भव उपाधि दूरे गइ ॥ ३३ ॥

ढाल ९ मी- ॥राग धनाश्री॥ गाया गायारे, में सिद्ध स्वरूपी गाया.

सिद्ध तणां गुण स्तवना करतां, आणंद अंग न माया ॥ नवि देहे नवि गेहे जेहे, त्रण भुवन पथरायारे. मे० ॥ ३४ ॥ सिद्धतणी स्तवना करतां मानुं, आप ही सिद्ध सुख पाया ॥ समकितवंतनी सरधामां ए, मुनिवर पण जस ध्यायारे में० ॥३५॥ केवलज्ञानी क्षण क्षण निरखे, ते सुख मुज मन भाया ॥ श्रो सुख मुजने ते परमातम, पुद्गलातीत ठरायारे. में० ॥ ३६ ॥ क्षमाविजय जिन पास प्रभावे, गुरु उत्तम सुखदाया ॥ संवत सत अष्टादश चौदे, हर्ष कल्लोल भरायारे. में० ॥ ३७ ॥ विजयधर्म सूरीश्वर राज्ये, सुरत चोमासुं ठाया ॥ शिष्य उतम गुरु केरो गावे, पद्मविजय जिनरायारे में० ॥ ३८ ॥

॥ इति श्री सिद्धदंडिका स्तवन संपूर्ण. ॥

दस पच्चख्खाणनुं स्तवन.

॥ दुहा ॥ सिद्धारथ नंदन नमुं, महावीर भगवंत ॥ त्रिगडे बेठा जिनवरु, परखदा बार मिलंत ॥ १ ॥ गणधर गौतम तिणे समे, पुछे श्री जिनराय ॥ दस पचखाण कीसां कह्यां, कीहां कवण फल थाय ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ कर्म न छुटेरे प्राणीया–ए देशी.

॥ श्री जिनवर इम उपदीशे, सांभल गौतम स्वाम ॥ दश पचखाण कीधां थकां, लहीये अविचल ठाम ॥ १ ॥ श्री जिन०॥ [1]नवकारसी [2]बीजी पोरिसी, [3]साढपोरिशी [4]पुरिमड्ढ ॥ [5]एकासण [6]निविकही, [7]एकलठाणुं, [8]दिवड्ढ ॥ श्री ० ॥ २ ॥ दत्ति [9]आंबेल [10]उपवास सहि, एहज दश पचखाण ॥ एहना फल सूणो गौतमा, जुजुंआं करुं वखाण॥ श्री जि० ॥३॥ रत्न प्रभा शर्कराप्रभा, वालुप्रभा त्रीजोय जाण ॥ पंकप्रभा धुमप्रभा, तमप्रभा तमतमा ठाम॥श्री जि०॥ ४ ॥ नरक साते रहिसही, करम कठन करै जोर ॥ जीव करम वश करे जूदा, उपजे तिणहीज ठोर ॥श्री जि०॥५॥ छेदन भेदन ताडना, भुख तृषा वळी त्रास ॥ रोम रोम पीडा करे, परमाधामीनो त्रास ॥श्री जि०॥६॥ रात दिवस क्षेत्र वेदना, तिल भर नहीं तिहां सुख ॥ कियां करम तिहां भोगवे, पामे जीव बहु दुःख ॥श्री जि०॥७॥ एक दीननी नवकारसी, जे करे भाव विशुद्ध ॥ सो वरस नरकनो आउखो, दूरी करे ज्ञानी बुद्ध ॥श्री जि०॥८॥नित्य करै नवकारशी, ते नर नरके नही जाय॥ न रहे पाप वळी पाछला, निर्मळ होवेजी काय॥ श्री जि०॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ विमलासर तिलो ॥ ए देशी ॥

सुण गौतम पोरिसी कियां, महामोटो फळ होय ॥ भावशुं जे पोरिसी करे, दुर्गति छेदे सोय ॥ सु० ॥ १ ॥ नरक मांहे जीव नारकी, वरस एक हजार ॥ करम खपावे नरकमां, करतां बहुत

पुकार ॥ २ ॥ दुर्गति मांहे नारकी, दशहजार परिमाण ॥ नरकनो आउ खिग एकमें, साढ पोरसी करे हाण ॥ ३ ॥ पुरिमढ करतां जीवडां, नरके ते नहीं जाय ॥ लाख वरस करमना कटे, पुरिमढ करत खपाय ॥ ४ ॥ लाख वरस दश नारकी, पामे दुःख अनंत ॥ एटला करम एकासणे, दुरि करे मन खंत ॥ ५ ॥ एक कोडि वरसां लगे, करम खपावे जीव ॥ निवि करतां भावशुं, दुर्गति हणे सदीव ॥ ६ ॥ दस कोडी जीव नरकमें, जीतरो करे कर्म दूर ॥ तितरो एकल ठाणाहि, करे सही चकचुर ॥ ७ ॥ दत्ति करंतां प्राणीया, सो कोडे परिमाण ॥ इतरां वरस दुर्गति तणां, छेदे चतुर सुजाण ॥ ८ ॥ आंबिलनो फल बहु कह्यो, कोडी दस हजार ॥ करम खपावे इणे परे, भावे आंबिल अधिकार ॥ ९ ॥ कोडी हजार दस वरस सही, दुःख सहे नरक मझार ॥ उपवास करे एक भावशुं, पामे मुक्ति दुवार ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ केइक वर मागे सिता भणी ॥ ए देशी ॥

लाख कोडी वरसां लगे, नरके करता बहु रीवरे ॥ छट्ठनुं तप करतां थकां, नरक निवारे जावरे ॥ १ ॥ सुंण गौतम गणधर सही ॥ १ ॥ नरक विषे दश कोडी लाखही, जीव लहे तीहां अति दुखरे ॥ ते दुःख अठ्ठम तप हुंती, दूरकरे पामेः सुखरे ॥ सु० ॥ २ ॥ छेदन भेदन नारकी, कोडा कोडी वरस सोइरे ॥ सु० ॥ दुर्गति कर्मने परिहरे, दशमें एटलो फल होइरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नित्य फासु जल पीवतां, कोडा कोडी वरसनां पापरे ॥ सु० ॥

दूर करे खीण एकमां, जीव निश्चये निरधाररे ॥ सु० ॥ ४ ॥ एतो वली अविशेषे फल कह्यो, पंचमी करतां उपवासरे ॥ सु० ॥ तेतो पामे ज्ञान पांच भलां, करता त्रिभुवन उज्जासरे ॥ सु० ॥ ५ ॥ चौदश तप विधिशुं करे, चौद पुरवनो होय धाररे ॥ सु० ॥ बाह्य तप एकादशी, करतां लइये शिववासरे ॥ सु० ॥ ६ ॥ अष्टमी तप आराधतां, जीव न फरे इण संसाररे ॥ सु० ॥ इम अनेक फल तप तणा, कहेतां वली नावे पाररे ॥ सु० ॥ ७ ॥ मन वचन कायाये करी, तप करे जे नर नारीरे ॥ सु० ॥ अनंत भवना पापथी, छुटे जीवडो निरधाररे ॥सु०॥ ८ ॥ तप हुंति पापी तर्यां, निस्तर्यो अरजुन मालीरे ॥ सु० ॥ तप हुंति दिन एकमां, शीव पाम्या गजसुकमालरे ॥ सु० ॥ ॥ ९ ॥ तपना फल सूत्रे कह्यां, पचखाण तणा दश भेदरे ॥ सु० ॥ अवर भेद पण छे घणा, करतां छेदे तीन वेदरे ॥ सु० ॥ १० ॥

॥ कलश ॥ पचखाण दश विध फल प्ररूप्यां, महावीर जिन देवए ॥ जे करे भवियण तप अखंडित, तास सुरपती सेव ए ॥ संवत विधु गुण अश्वशशि वळी, पोश सुद दशमी दीने ॥ पद्मरंग वाचक शिष्य तस गणि, रामचंद तप विधि भणे ॥ इति श्री पचख्खाण स्तवन.

श्री अठावीश लब्धिनुं स्तवन.

॥ दुहा ॥ प्रणमुं प्रथम जिणेसरु, शुद्ध मने सुखकार ॥ लब्धि अट्ठावीस जिन कही, आगमने अधिकार ॥ १ ॥ प्रभ व्या-

करणे प्रगट, भगवती सूत्र मझार ॥ पन्नवणा आवश्यके, वारु लब्धि विचार ॥ २ ॥ आंबिल तपे करी उपजे, .लवधि अट्ठावीश ॥ ए हवे प्रगट अर्थशुं, सांभळज्यो सुजगीस ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ सफर संसारनी ए देशी ॥

अनुक्रमे हवे अधिकार गाथा तणो, लवधि नामा परिणाम सरिखा भणो ॥ रोग सहुं जाय जसु अंग फरस्यां सही, प्रथम ते लवधि छे नाम अमो सही ॥ १ ॥ जासु मल मूत्र औषध समा जाणीये, बीय वप्पो सही लवधि वखाणीये ॥ श्लेष्म औषध सारिखो जेहनो, त्रीजी खेलो सही नाम छे तेहनो ॥ २ ॥ देहना मेलथी कोढ दूरे हुवे, चोथो जल्लो सही नाम तेहनो ठवे ॥ केश नख रोम सहु अंग फरस्ये सही, रहे नहि रोग सव्वो सही ते कही ॥ ३ ॥ एक इंद्रिये करी इंद्रिय तणु, भेद जाणे तिका नाम संभिन्न भणुं ॥ वस्तु रूपी सहु जाणिए जिणे करी, सातमी लवधि ते अवधि ज्ञाने घणी ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ शारद बुध दाइ (अथवा) दीन सकल मनोहर ॥ ए देशी ॥

हवे अंगुल अढीगे, उणो मानुष खित्त ॥ संज्ञी पंचेंद्रि, तिहां जेवसे विचित्त ॥ तसु मनना चित्त ते, जाणे थुल प्रकार ॥ ए ऋजुमति नामे, अठम लवधि विचार ॥१॥ संपूर्ण मानुष, खेत्रे संज्ञावंत ॥ पंचेंद्रिय जे, वैमनवातां तसुतंत॥ सूक्ष्म पर्याये, जाणे सहु परिणाम॥ ए नवमी कहीए, विपुल मति शुभ नाम ॥ २ ॥ जिण लवधि प्र-

माणे, उडी जाये आकाश ।। ते जंघा विद्या, चारण लबधि प्रकाश।। जसु वचन आपे, खिणमां खेरु थाय ।। ए लबधि अगीयारमी, आसीत्री कहेवाय ।। ३ ।। सहु सूक्ष्म बादर, देखे लोक अलोक ।। ते केवली लबधि, बारमीये सहु थोक ।। गणधर पद लहीए, तेरमी लबधि प्रमाण ।। चौदमी लबधि करी, चौद पुरवजाण ।। ४ ।। तीर्थंकर पदवी, पामे पंदरमी लबधि ।। सोलमी सुखदाइ, चक्रवर्त्ति पद ऋद्धि ।। वलदेव तणा पद, लहीये सतरमी सार ।। अढारमी आखी, वासुदेव विस्तार ।। ५ ।। मिश्री घृत खीरे, मेल्यां जेह सवाद ।। एहवी लहे वाणी, ओगणीसमे प्रासाद ।। भणियो नवि भुले, सूत्र अर्थ सुविचार ।। ते कुट्ठगबुद्धि, विसम लबद्धि विचार ।। ६ ।। एके पदे भणीए, आवे पदलखेकोडि ।। एकवीसमी लबधि, पायाणुंसारिणि जोडी ।। एके अर्थे करी, उपजे अर्थ अनेक ।। बावीसमी कहीए, बीज बुद्धि सुविवेक ।। ७ ।।

।। ढाल ।। ३ ।। कपुर होये अति उजलुंरे ।। ए देशी ।।

सोलह देश तणी सहीरे, दाहक शक्ति वखाण ।। तेह लबधि तेवीसमीरे, तेजो लेश्या जाण ।। १ ।। चतुर नर सुणज्यो ए विचार ।। वारु लबधि विचार।। चतुरनर सुण० ।। चौद पूरवधर मुनिवरुरे, उपजता संदेह ।। रुप नवो रची मोकलेरे, लबधि आहारक एह ।। चतुरनर० ।। २ ।। तेजो लेश्या अग्निनेरे, उपसमवा जलधार ।। मोटी लबधि पचवीसमीरे, शीतो लेस्या सार ।। चतुर० ।। ३ ।। जिण शक्तिशु विकुरवेरे, विवध प्रकारे रुप ।। सद-

गुरु कहे छव्वीसमीरे, वैक्रिय लबधि अनुप ॥ चतुर० ॥ ४ ॥ एकज पात्रे आदमीरे, जिमावे केइ लाख ॥ जेह अखीण महानसीरे, सत्तावीसमी भाख ॥ चतुर० ॥ ५ ॥ चूरे सेन चक्रीशनीरे, संघादिकने काम ॥ तेह पुलाक लब्धि कहीरे, अट्ठावीसमी नाम ॥ चतुर० ॥ ६ ॥ तेज शीत लेश्यात्रि एहरे, तिम पूलाक विचार ॥ भगवती सूत्रमें भाखीयारे, ए तिहुनो अधिकार ॥ ७ ॥ चक्रवर्त्ती बलदेवनीरे, वासुदेव त्रण एह ॥ आवश्यक सूत्र अछेरे, नहीं इहां संदेह ॥ चतुर० ॥ ८ ॥ पन्नवणा आहारगीरे, कल्पसूत्र गणधार ॥ तिन तिन एक एक मलीरे, वारु आठ विचार ॥ चतुर० ॥ ९ ॥ प्रश्नव्याकरण ए कहीरे, बाकी लबधि वीश ॥ सांभलतां सुख उपजेरे, दीलहुय निस दिस ॥ चतुर० ॥ १० ॥

॥ कलश ॥ संवत सतरसें छत्रीसे, मेर तेरस दिन भले ॥ श्रीनगर सुखकर लुणकरणसर, आदि जिन सुपसाउले ॥ १ ॥ वाचनाचारिज सुगुरु सानिधि, विजय हरख विलासए ॥ कहे धर्मवरधन स्तवन भणतां, प्रगटे ज्ञान प्रकाशए ॥ २ ॥ इतिश्री लबधि अट्ठावीस स्तवन सम्पूर्ण ॥

श्री अढीद्वीप वीस जिनस्तवन.

॥ ढाल ॥ १ ॥ धातकी खंडना भरतमां ॥ ए देशी ॥

वंदु मनशुद्ध विहरमान जीणेसर वीस, द्वीप अढीमे विचरे जयवंता जगदीश ॥ केवल ज्ञानने धारे तारे करी उपकार, किण

किण कामे कुण कुण जिण कहीशुं सुविचार ॥ १ ॥ पेतालीस लख जोयण मानुष क्षेत्र प्रमाण, वलीयाकारे अर्धपुष्कळ सीमा जाण ॥ दोय समुद्रे सोहे दीप अढाइसार, तीणमें पन्नरे कर्मभूमिना कहुं अधिकार ॥ २ ॥ पहिलो जंबुद्विप समे विच थाल आकार, लांबो पहोलो एक लख जोयणने विस्तार ॥ मोटो तेहने मध्य सुदर्शन नामे मेर, तिणथी दिशि विदिशानी गीणती चारे फेर ॥ ३ ॥ मेरुथकी दक्षिण दिशि एह भरत शुभक्षेत्र, पांचसे छवीस जोयण छकला तेहनो वेत्र ॥ उत्तर खंडमां एहवो एरवत क्षेत्र कहाय, इण बिहु कर्म भूमि आरा छये फिरता जाय ॥ ४ ॥ तेत्रीस सहस छसय चोरासी जोयण जाण, च्यार कलाए महाविदेह विष्कंभ वखाण ॥ भरतथी बमणो एक एक विजय तणो परिमाण, एहवी विजय बत्रीस, विराजे जेहनो ठाण ॥ ५ ॥ मेरु बिचे करे पूरव पश्चिम दोय विभाग, सोले सोले विजय तिहां विचरे वितराग ॥ शास्वते चोथे आरे तारे श्री अरिहंत, ए हवे महाविदेह कर्म भूमि त्रीजी तंत ॥ ६ ॥ पूर्वविदेह विजय पुष्कलावती आठमी ठाम, पुंडरीकगी नगरी तहां सीमंधर स्वामी ॥ वप्र विजय पचीसमी विजयपुरनो नाम, पश्चिम विदेह वाजा युगमंधर कीजे प्रणाम ॥ ७ ॥ तिमहीज नवमी वच्छविजय वली पूर्वविदेह ॥ नयर सुसीमा तीजो बाहु नमुं धरी नेह ॥ वली नावर्च चोवीसमा पश्चिमविदेह वखाण, वीतशोका नगरी तीहां, चोथो सुबाहु सुजाण ॥ ८ ॥ ए च्यारेही जिनवर

जंबुद्वीप मझार, महा विदेह सुदर्शन मेरु तणे प्रकार ॥ एवो जंबुद्वीप महागढ जेम गिरींद, खाइरुपे दोइ लख जोयण लवणसमुद्र ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ दीपे बीजो द्वीप ए धन्य धन्य 'धातकी खंड, पहोलो चिहुं लखजोयणे मंडलरुपे मंड ॥ १० ॥ पूर्व पश्चिम धातकी, खंड गणीजे दोय ॥ विजयमेरु पूर्व दिशे, पश्चिम अचलमेरु जोय ॥ दी० ॥ ११ ॥ दोय भरत दोय एरवत दोयवली महाविदेह ॥ कर्मभूमि जे षट जिहां, उणहीज नामे एह ॥ दी० ॥ १२ ॥ एक मेरुने आशरे, कर्म भूमि तिन तिन ॥ निज निज मेरुथी मांडीने, लखो चिहुं दिश लीन ॥ दी० ॥ १३ ॥ श्रीसुजात जिन पांचमा, छट्ठा स्वयंप्रभ इश ॥ ऋषभानन जिन सातमा, समरीजे नीश दिन ॥ दी० ॥ १४ ॥ अनंतवीर्य जिन आठमा, ए च्यारे जिन राय ॥ पूर्व धातकी खंडमें, महाविदेह रहाय ॥ दी० ॥ १५ ॥ पहेला चिहु जिननापरे, वीयनगर दिस ठाण ॥ तीणहीज नामे अनुक्रमे, विजय मेरु अहीं नाण ॥ दी० ॥ १६ ॥ नवमा सुरप्रभु नमु, दशमा देव विशाल ॥ इम वज्रधर अगीयारमा, त्रिकरण प्रणमुं त्रिकाल ॥ दी० ॥ १७ ॥ बारमा चंद्रानन जिन, पश्चिम धातकीमांहि ॥ विचरे च्यारे जिनवरा, अचल मेरु उच्छाह ॥दी०॥ १८ ॥ एहवो धातकी खंड ए, प्रदक्षिणा प्रकार ॥ अठलख जोयणवींटलो, एह समुद्र कालोदधि सार ॥ दी० ॥ १९ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ कालोदधिने पेले पारे, वींट्यो चुडी जेम विचारे ॥ सोले लख जोयज विस्तारे, द्वीप पुष्करवर अ.त सुत्र-

कारे ॥ सुखकारे पुष्कर द्वीप तीजो, तेहने आगेवगे ॥ द्वीप पडयो पर्वत मानुष्यत्तर, मनुष्यक्षेत्र तिहांलगे ॥ तिण आध करी अठलाख जोयण, अर्ध पुष्कर एमए ॥ तीहां कर्मभूमि छए कहीजे, धातकी-खंड जेम ए ॥ २० ॥ आधे पुष्करने पूर्व दिशे, मंदिर नामे मेरु तिहां वसे ॥ पंचम विज्जुमाली मेरुए इहां, कीणठामे इतरो फेर ए ॥ फेरए इतरो इहां नामे अवरठामे कोनहीं, एक एक मेरै तीन तीने कर्म भूमि तिहां कही ॥ निम भरत ऐरव्रत विदेह, नाम सि-रखेहे ॥ तप तीणहीज नामे विजय सगली, शाश्वता धर्मक्षेत्रए ॥२१ ॥ धातकी खंडे निम पुष्कर सही, इण क्षेत्रनो नाम कह्यो नहीं ॥ दुगण दुगणी अति विस्तार ए, शास्त्र थकी लेजो सुविचार ए ॥ सुविचार दाखी तेह सघलो, नगर तिमहीज मन गमे, पूर्व पश्चिम जेह जिणदिश, तेह तिमहीज अनुक्रमे ॥ श्रीचंद्रबाहु भुजंग इसर नेम चार तीर्थंकरा, पूर्व पुष्कर अर्धमांहे सर्व जीव सुखंकरा ॥ २२ ॥ वैरसेन वंदु जिन सत्तरमा, श्री महाभद्र अढारमा नित नमो ॥ देवजसा ओगणीसमा देवए, जमोऋद्धि वीसम जिन सेव ए ॥ जिन सेव च्यारे अर्थ पुष्कर, मांहे पश्चिम भागए ॥ तिहां मेरु विज्जुमा-लो चिहुदिस, विचरता वीतराग ए ॥ चोराशी पूर्व लाख वरसां आउ एक एक जिनतणो, पांचसे धनुष शरीरे सोहे, सोवन वरण सुहामणो ॥ २३ ॥ काल जघन्ये इम जिन वीसए, हवे उत्कृष्ट भेद कहीस ए ॥ एकसो सित्तेर जिहां जिनवर रहे, पांचे भरते जिण पांच लहे ॥ जिण लहे पांचे तेम पांच, एरव्रत मली दस हुआ ॥ एक एक विदेह बत्तीस विजया, जीहांपण जिण जु-

जुआ ॥ एकसो सित्तेर एम जिनवर, कोडी नव वली केवली ॥ नव सहस कोडी अवर मुनिवर, वंदीए नित ते वली ॥ २४ ॥ इहां भरते एरव्रते आज ए, पंचम आरे नहीं जिनराज ए, धन्य धन्य पांचे महाविदेह ए, वीचरे वीसे जिन गुणगेह ए, गुण-गेह दोष अढार जीत्या अतिशया चोतीश ए ॥ चोसठ इन्द्र नरिंद सेवत, नमु ते नीस दीसए ॥ तीहां आज विचरे तरणतारण केवली दोये कोडए, दुअ सहस कोडीसु साधु बीजा. नमुं बेकर जोडए ॥ २५ ॥

॥ कलस ॥ एम अढी द्वीप पनरमां कर्म भूमिक्षेत्र प्रमाणए, सिद्धांन्त प्रकरण साख भाख्या, वीस विहरमाण ए ॥ श्री नगर जेसलमेर संवत सतर गुणतीसे समे, सुखविजय हरख जिणंद सानिधे, नेह धरि धर्मसिंह नमे ॥ २६ ॥ इति श्री अढीद्वीप जिन स्तवन संपूर्ण.

श्री कल्याणकनुं स्तवन.

॥ दुहा ॥ प्रणमी जिन चोवीसने, कहुं कल्याणक तास ॥ मास अमावस्या तणी, रीति धरी सुविलास ॥ १ ॥ जेहना नाम स्मरण थकी, नासे भव भव पाप ॥ तिणे कल्याणकने दिने, कीजे प्रभुनो जाप ॥ २ ॥ च्यवन परमेष्ठिने नमः, जनम अर्हते नाम ॥ नाथाय नमः दिक्षा पदे, गणीए निजगुण काम ॥ सर्वज्ञाय नमः केवली, मोक्ष पारं गताय ॥ आंबिल पौषधने वळी, एकासणे पण थाय ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ प्रभु चित्त धरीने अवधारो मुजवात
॥ ए देशी ॥

आसो सुद पूनम दिनेजी, च्चविया नमि जिनराय ॥ वदी पांचम दिन केवलीजी, संभव जिनवर थाय ॥ १ ॥ भवि भाव धरीने गावो जिन कल्याण ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ बे कल्याणक बारशे जी, नेमजी च्यवन प्रमाण ॥ पद्मप्रभु जिन जनमीयाजी तेरसे दिक्षा मंडाण ॥ भवि० ॥ २ ॥ वीर अमावासे शिव गयाजी, हवे कार्तिक सुद जाण ॥ त्रीजे सुविधि केवलीजी, बारसे अर जिननाण भवि० ॥ ३ ॥ कार्तिक वदी पांचम दिनेजी, सुविधि जन्म एम होय ॥ छठे व्रत सुविधि लीएजी, दसमे वीर व्रत जोय ॥ भवि० ॥ ४ ॥ अगीआरस दीने शिव लह्याजी, जिन उत्तम महाराज ॥ पद्मप्रभुने प्रणमतांजी, लहीये अविचल राज ॥ भवि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥प्रथम गोवाला तणे भवेजी ॥ ए देशी ॥

मागसर शुद दशमी दिनेजी, कल्याणक छेरे दोय ॥ अरजिन जन्मने शिव लह्याजी, ते प्रणमो सहु कोयरे ॥ भविका ॥ प्रणमो श्री जिनचंद ॥ जस प्रणमे वासव वृंदरे ॥ भविका० ॥ १ ॥ ए आंकणो ॥ अगीआरस दिन मोटकोजी, जे दिन पांच कल्याग ॥ मल्लि जन्मव्रत केवलीजी, अर व्रत नमी जिन नाणरे ॥ भविका० ॥ २ ॥ जन्म्या संभव चौदशेजी, पुनमे वली व्रत लीध ॥ वदी दशमीथी चौदश लगेजी, लागट छे प्रसिद्धरे ॥ भ॰

विका० ॥ ३ ॥ पार्श्व जन्म वली व्रत लीयोजी, चन्द्रजन्म व्रत सार ॥ शीतल केवल पामीयाजी, हवे पोस सुदी अवधाररे ॥ भविका० ॥ ४ ॥ विमल केवली छठे दिनेजी, नवमी ए शांतिने नांण ॥ अजित नाण अगिआरसेजी, लोकालोक सुजाणरे ॥ भविका० ॥ ५ ॥ चौदसे केवल उपनोजी, अभिनंदन जिन भाण ॥ धर्म केवली पुनिमेजी, हवे वदीनुं मंडाणरे ॥ भवि० ॥६॥ छठे पद्म च्यवन भलुंजी, बारसने दिन दोय होय ॥ शितल जन्म मुनि थयाजी, तेरसे ऋषभ शिव होयरे ॥ भविका० ॥ ७ ॥ अमावास्या दिन पामीयाजी, श्रेयांस केवलनाण ॥ जिन उत्तम पद पद्मनेजी, प्रणमो भविक सुजाणरे ॥ भविका० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ सुंदर महासुदीमां हवे जाणीये, वे कल्याणक बीजे हो ॥ सुंदर अभिनंदन प्रभु जनमीया, केवली वासुपूज्य हो ॥ सुंदर कल्याणक दिने गाइए ॥ १ ॥ सुंदर त्रीज दीने पण दोइ कह्या, जन्म विमलने धर्महो ॥ सुंदर चोथे विमल जिन व्रत लीये, आठमे अजितनो जन्महो ॥ सु० ॥ २ ॥ सुंदर नोमे अजित दिक्षा लीये, बारसे व्रत अभिनंदन हो ॥ सुंदर तेरसे धर्म चारित्रिया, वदी मां सुणो सुखकंद हो ॥ सु० ॥ ३ ॥ सुंदर छठे सुपासजी केवली, सातमें दोय कल्याण हो ॥ सुंदर शिव पहोत्या सुपासजी, चंद्रप्रभु लहे नाण हो ॥ सु० ॥ ४ ॥ सुंदर नोम दिने सुविधि च्यवीया, एकादशी आदि नाण हो ॥ सुंदर बारसे दोय श्रेयांस तणा, मुनि सुव्रत नाण जाणीहो ॥ सु० ॥५॥ सुंदर तेरसे श्रेयांस व्रत लीये, जाया चौदसे वासुपूज्य हो ॥ सुंदर अमावास्या

वासुपूज्य व्रत, फागण सुदी हवे बीज हो ॥ सुंदर० ॥ ६ ॥ सुंदर अर च्यवीया चोथे मल्लि च्यव्या, संभव आठमे च्यवनहो ॥ सुंदर बारसे दोय सुव्रत व्रती, मल्ली मोक्ष करो मननहो ॥ सुंदर० ॥७॥ सुंदर वदी चोथे दोय जाणीए, पार्श्व च्यवन नाण हो॥ सुंदर पांचम चन्द्र च्यव्या वली, आठमे दोय कल्याणक हो ॥ सुंदर० ॥ ८ ॥ सुंदर ऋषभजी जनमने व्रत लीये, च्यार मुष्टी करी लोच हो ॥ सुंदर तस पद पद्म नम्या थकी, नवि आवे भवि शोच हो ॥ सुंदर० ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ माली केरा बागमां ॥ ए देशी ॥

चैत्र सुदी त्रीजे सूणो कुंथु जिननाण रे लोल०॥ अहो कुंथु जिन नाणरेलोल॥ त्रण पांचमे अनंत अजीतजी, संभव निर्वाणरे लो०॥अहो संभव॥१॥ नोमे सुमति जिन शिव वर्या, अगीआरसे लह्या नांणरे लोल ॥अहो अ० तेरसे वीरजी जनमीया, छठ्ठा पदम विनाणरे लो॥ अहो० ॥२॥ वदी पडवे कुंथुं शिव लह्यां, बीजे शितळ सिध्यारे लोल॥अहो० ॥ कुंथु दिक्षा लीए पांचमे, निज कार्य सिध्यां रे लोल ॥ अहो० ॥ ३ ॥ चवीया शितल छठ दीने, नमि शिव पद दशमेरे लोल ॥ अहो० ॥ अनंत जन्म वली तेरसे, त्रण छे चौदमेरे लोल ॥ अ० ॥ ४॥ दिक्षा केवल इण दीने, पाम्या श्रीअनंतरे लोल ॥ ॥ अहो० ॥ तिम कुंथु जिन जन्मीया, प्रणमो भवि संतरे लोल ॥ अहो० ॥ ५ ॥ वैशाख सुदी चोथने दीने, अभिनंदन चवियारे लो० ॥ अहो० ॥ च्यविया धर्मते सातमे, आठमे दोय च्यवियारे लोल॥ अहो०॥६॥ अभिनंदन शिव पामीया, सुमति जिन जायारे

लो० ॥ अहो० ॥ नोमे सुमति व्रत वीरजी, दशमें नाण पायारे लो० ॥ अहो० ॥७॥ बारसे विमल च्यवन थया, हवे तेरसे इछरे लो ॥ अहो० ॥ अजित च्यव्या वदी सांभलो, च्यव्या श्रेयांस छठेरे लो ॥ अहो० ॥ ८ ॥ आठमे सुव्रत जनमीया, नेमि मोक्ष पधार्या रे लो ॥ अहो० ॥ तेरसे शांति जन्मीया, तेम सिद्धि सिधायारे लो ॥ अहो० ॥ ९ ॥ शांति व्रत लीये चौदशे, तजी सर्व उपाधिरे लो ॥ अहो० ॥ तसपद पद्मने प्रणमतां, लहो अव्याबाध रे लोल ॥ अहो० अ ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ वाडी फुली अति भलि ॥ मनभमरारे ॥ ए देशी ॥

जेठ सुदी पांचम दीने, जिन नमीयेरे ॥ मोक्ष गया धर्मनाथ भविक जिन नमीयेरे ॥ चविया वासुपूज्य नवमीये जिन नमीयेरे ॥ जे तारे ग्रही हाथ, भविक जिन नमियेरे ॥ १ ॥ बारसे सुपासजी जन्म्या ॥ जि० ॥ तेरसे दीक्षा लीध ॥ भ० ॥ वदी चोथे च्यव्या ऋषभजी ॥ जि० ॥ सातमे विमलने मोक्ष ॥ भ० ॥ २ ॥ नमि जिन दीक्षा नवमीये ॥ जि० ॥ अषाड सुदी छठ दीने ॥ भ० ॥ वीर च्यवन छे आठमे ॥ जिन० ॥ मोक्ष अरिष्ट नेमी जिन ॥ भ० ॥ ३ ॥ वासुपूज्य शिव चौदशे ॥ भ० ॥ वदी त्रीजे अवधार ॥ भ० ॥ सिद्धिश्री श्रेयांसने ॥ जि० ॥ पाम्या भवोदधि पार ॥भ० ॥ ४ ॥ अनंतनाथ च्यव्या सातमे ॥ जि० ॥ आठमे नेमि जिन जन्म ॥ भ० ॥ कुंथु च्यव्या नोमे तेहना ॥ जि० ॥ प्रणमो पाद पद्म ॥ भ० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥६॥ सुण मोरी सजनीरजनी जायरे ॥ए देशी॥

सुमति च्यव्या श्रावण सुद बीजेरे ॥ नेमि जन्म पांचम दिन लिजेरे ॥ छठ दिन दीक्षा नेमजीए लीधीरे ॥ पार्श्व आठम दिन वरीया सिद्धिरे ॥ १ ॥ पुनमे मुनिसुव्रत प्रभु च्यवियारे ॥ वदी सातमे दोय कल्याणक जाणोरे ॥ शान्ति च्यवन चन्द्र निर्वाणरे ॥ आठमे च्यवीआ सुपास जीन भाणरे ॥ २ ॥ भादरवा सुदी नवमी सुविधि निर्वाणरे ॥ वदी अमावास्या अरीष्ट नेमी नाणरे ॥ एणी पेरे श्रीजीन उतम गायारे ॥ पद्मविजय कहे भव फल पायारे ॥३॥

॥ ढाल ॥ ७ ॥ गिरुआरे गुण तुम तणा ॥ ए देशी ॥

कल्याणक दिन गाइए, भाइ हर्ष धरी बहु मानोरे ॥ प्रभु गुण स्मरण नित्य करी, तप करीये थइ सावधानोरे ॥क०॥१॥ ते कल्याणकनुं गणो, वली गणणुं दोय हजाररे ॥ वर्त्तमान चोवीशीए, कल्याणक दिन अति सारोरे ॥ क० ॥ २ ॥ इम अनंत चोवीशी धारीए, तो अनंत कल्याणक थायरे ॥ उजमणुं पण कीजीये, धरी भक्ति शक्ति निरमायरे ॥ क० ॥ ३ ॥ संवत अढार छत्रीशना, महावदी बीजने शनिवाररे ॥ शोभन जोगे शोभन थयुं, प्रभु गायो हर्ष अपाररे ॥ क० ॥ ४ ॥ पाटण चोमासुं रही, लही जिन उत्तम सुपसायरे ॥ पद्मविजय पुण्ये करी, इम थुणीया श्री जिनरायरे ॥ क० ॥ ५ ॥

अथ श्री छ आवश्यकनुं स्तवन.

॥ दुहा ॥ चोवीसे जिनवर नमुं, चतुर चेतना काज ॥ आव-श्यक जिण उपदिश्या, ते थुणश्युं जिनराज ॥ १ ॥ आवश्यक आराधीये, दीवस प्रत्ये दोयवार ॥ दुरित दोष दूरे टले, ए आत्म उपकार ॥ २ ॥ सामायिक चउविसथ्थो, वंदन पडिकमणेण ॥ काउसग्ग पच्चखाणकर, आतम निर्मळ एण ॥ ३ ॥ झेर जाय जिम जांगुली, मंत्र तणो महिमाय ॥ तेम आवश्यक आदरे, पातक दुर पलाय ॥ ४ ॥ भार तजि जिम भारवहीं, हेले हळवो थाय ॥ अतिचार आलोयतां, जन्म दोष तिम जाय ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ कपुर होये अति उजलुंरे ॥ ए देशी ॥

॥ पेहेलुं सामायिक करोरे, आणी समता भाव ॥ राग द्वेष दूरे करोरे, आतम एह स्वभावरे ॥ प्राणी समता छे गुण गेह ॥ एतो अभिनव अमृत मेहरे ॥ प्राणी० ॥ १ ॥ आपे आप विचा-रीएरे, रमीए आप स्वरुप ॥ ममता जे परभावनीरै, विषमा ते विष कुपरे ॥ प्राणी० ॥ २ ॥ भव भव मेळवी मुकीयांरे, धन कुटुंब संजोग ॥ वार अनंती अनुभव्यारे, सवि संजोग विजोगरे ॥ प्रा-णी० ॥ ३ ॥ शत्रु मित्र जगको नहींरे, सुख दुःख माया जाल ॥ जो जागे चित्त चेतनारे, तो सवि दुःख विसराल रे ॥ प्राणी० ॥ ४ ॥ सावद्य जोग सवी परिहरो रे, ए सामायिक रुप ॥ हुआ ए परिणामथी रे, सिद्ध अनंत अरुप रे ॥ प्राणी० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥२॥ साहेलडीनी ॥ ए देशी ॥

॥ आदीश्वर आराहीये साहेलडी रे, अजित भजे भगवंत तो ॥ संभवनाथ सोहामणा ॥ सा० ॥ अभिनंदन अरिहंत तो ॥ १ ॥ सुमति पद्मप्रभु पुजीए ॥ सा० ॥ समरुं स्वामी सुपार्श्वतो ॥ चंद्रप्रभु चित्त धारीए ॥ सा० ॥ सुविधि सुविधि ऋद्धि वासतो ॥२॥ शीतल भूतल दिनमणी ॥ सा० ॥ श्री पुरण श्रेयांसतो ॥ वासुपूज्य सुर पूजीआ ॥ सा० ॥ विमल विमल जस होततो ॥ ३ ॥ करुं अनंत उपासना ॥ सा० ॥ धर्म धर्म धुर धार तो ॥ शांति कुंथु अर मल्लि नमुं ॥ सा० ॥ मुनिसुव्रत वडवीर तो ॥ ४ ॥ चरण नमुं नमीनाथना ॥ सा० ॥ नेमिश्वर करुं ध्यान तो ॥ पार्श्वनाथ प्रभु पूजीए साहेलडी रे, वंदु श्रीवर्द्धमान तो ॥ ५ ॥ ए चोवीसे जिनवरा ॥ सा० ॥ त्रिभुवन करण उद्योतततो ॥ मुक्ति पंथ जेणे दाखव्यो ॥ सा० ॥ निर्मल केवल ज्योति तो ॥ ६ ॥ समकित शुद्ध एहथी होय ॥ सा० ॥ लीजे भवनो पार तो ॥ बीजुं आवश्यक इश्युं ॥ सा० ॥ चउवीसथ्थो सार तो ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ गोरिमां गोरी गीरुओए ॥ देशी ॥

॥ बे कर जोडी गुरु चरणे देउ वांदणांरे ॥ आवश्यक पचवीश धारोरे, धारोरे धारोरेदोष बत्रीश निवारीएरे ॥ १ ॥ चार वार गुरु चरणे, मस्तक नामीए रे ॥ बार करी आवर्त्त खामो रे, खामोरे खामोरे वली तेत्रीस आशातनारे ॥ २ ॥ गीतार्थ गुणी गिरुआ गुरुने वंदतांरे, नीच गोत्र क्षय जाय, थायेरे थायेरे उंच गोत्र-

नी अरजनारे ॥३॥ आण ओलंगे कोइ न जगमां तेहनीरे, परभव लहे सौभाग्य, भाग्यरे भाग्यरे दीपे जगमां तेहनुंरे ॥४॥ कृष्णराय मुनिवरने दीधां वांदणांरे, क्षायिक समकित सार, पाम्यारे पाम्यारे तीर्थंकर पद पामशेरे ॥ ५ ॥ शीतल आचार्य जिम भाणेजने रे, द्रव्य वांदणां दीध, भावेरे भावेरे देतां वली केवल लह्युंरे ॥६॥ ए आवश्यक त्रीजुं एणीपेरे जाणजोरे, गुरुवंदण अधिकार ॥ करजोरे करजोरे विनय भक्ति गुणवंतनोरे ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ चेतन चेतोरे चेतना ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञानादिक जिनवर कह्यांरे, जे पांचे आचार तो ॥ दोयवार ते दिन प्रतिरे, पडिक्कमीए अतिचार ॥ जयो जिन वीरजीरे ॥ १ ॥ आलोइने पडिक्कमीरे, मिच्छामि दुक्कडं देय ॥ मन वच काया शुद्ध करीरे, चारित्र चोखुं करेय ॥ जयो० ॥ २ ॥ अतिचार शल्य गोपवेरे, न करे दोष प्रकाश ॥ माछी मल्ल तणी परेरे, ते पामे परिहास ॥ जयो० ॥ शल्य प्रकाशे गुरु मुखेरे, होय तस भाव विशुद्ध ॥ ते हसो हारे नहींरे, करे कर्मशुं युद्ध ॥ जयो० ॥ ३ ॥ अतिचार इम पडिक्कमीरे, धर्म करो निःशल्य ॥ जित पताका तिम वरोरे, जिम जग फल्लही मल्ल ॥ जयो० ॥ ५ ॥ वंदितु विधिशुं कहोरे, तिम पडिकमणा सूत्र ॥ चोथुं आवश्यक ईस्युंरे, पडिक्कमणा सूत्र पवित्र ॥ जयो० ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ हवे निसुणो इहां आवीया ॥ ए देशी ॥

॥ वैद्य विचक्षण जेम हरे ए, पहेलां सोल विकारतो ॥ दोष

शेष पछी रुझवाए, करे औषध उपचार तो ॥ १ ॥ अतिचार त्रण रुझवाए, काउस्सग्ग तिम होय तो ॥ नवपल्लव संयम हुवे ए, दूषण नवी रहे कोय तो ॥ २ ॥ कायानी स्थिरता करी ए, चपल चित्त करो ठामतो ॥ वचन जोग सवि परिहरिए, रमीए आतमराम तो ॥ ३ ॥ श्वास उश्वासादिक कह्याए, जे सोले आगार तो ॥ तेह विना सवि परिहरो ए, देहतणा व्यापार तो ॥ ४ ॥ आवश्यक ए पांचमुं ए, पंचम गति दातार तो ॥ मन शुद्धे अराधीये ए, लहीए भवनो पार तो ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ वालम वहेलारे आवजो ॥ ए देशी ॥

॥ सुगुण पचखाण आराधजो, एह छे मुक्तिनुं हेतरे ॥ आहारनी लालच परिहरो, चतुर चित्त तुं चेतरे ॥ सु० ॥ १ ॥ शल्य काढयुं त्रण रुजव्युं, गइ वेदना दूररे ॥ पछी भला पथ्य भोजन थकी, वधे देह जेम नूररे ॥ सु० ॥ २ ॥ तिम पडिक्कमण काउस्सग्गथी, गयो दोष सवी दुष्टरे ॥ पछी पचखाण गुण धारणे, होय धर्म तनु पुष्टरे ॥ सु० ॥ ३ ॥ एहथी कर्म कादव टले, एह छे संवर रुपरे ॥ अविरति कुपथी उद्धरे, तप अकलंक स्वरुपरे ॥ ४ ॥ पूर्व जन्म तप आचर्यो, विशल्या थइ नार रे ॥ जेहना नवणना नीरथी, समे सकल विकाररे ॥ सु० ॥ ५ ॥ रावणे शक्ति शस्त्रे हण्यो, पडयो लक्ष्मण सेजरे ॥ हाथ अडतां सचेतन थयो, विशल्या तप तेजरे ॥ सु० ॥ ६ ॥ छठुं आवश्यक कह्युं, एहवुं ते पचखाण रे ॥ छए आवश्यक जेणे कह्यां, नमुं ते जग भाणरे ॥ सु० ॥ ७ ॥

॥ कलश ॥ तपगच्छनायक मुक्तिदायक, श्री विजयदेव सूरिश्वरो ॥ तस पद दीपक मोह झीपक, श्री विजय प्रभु सुरी गणधरो ॥ श्री कीर्त्तिविजय उवझाय सेवक, विनयविजय वाचक कहे ॥ छ आवश्यक जे आराधे, तेह शिव संपद लहे ॥ १ ॥ इति षडावश्यक स्तवनं ॥

अथ षट्पर्वी महात्म्य स्तवन.

॥ ढाळ ॥ १ ॥ सुत सिद्धारथ भुपनोरे—ए देशी ॥

श्री गुरुपद पंकज नमीरे, भांखुं पर्व विचार ॥ आगम चरित्र ने प्रकरणे रे, भाख्यो जेम प्रकारो रे ॥ भवियण सांभलो ॥ १ ॥ निद्रा विकथा टालीरे, मुकी आमळो ॥ ए आंकणी ॥ चरम जिणंद चोवीशमारे, राजग्रही उद्यान ॥ गौतम उदेशी कहेरे, जिनपति श्री वर्द्धमानरे ॥ भवि० ॥ २ ॥ पक्षमां षट तिथि पाळीएरे, आरंभादिक त्याग ॥ मासमां षट पर्वी तिथिरे, पोसह केरा लाग रे ॥ भवि० ॥ ३ ॥ दुविध धर्म आराधवारे, बीज ते अति मनोहार ॥ पंचमी नाण आराधवा रे, अष्टमी कर्म क्षयकाररे ॥ भवि० ॥ ४ ॥ इग्यारस चौदशी तिथिरे, अंग पूर्वने काज ॥ आराधी शुभ धर्मनेरे, पामो अविचल राजरे ॥ भवि० ॥ ५ ॥धनेश्वर प्रमुखे थया रे, पर्व आराध्यां रे एह ॥ पाम्या अव्याबाधने रे, निजगुण रिद्धि वरेह रे ॥भवि० ॥ ६ ॥ गौतम पूछे वीरने रे, कहो तेनो अधिकार ॥ सांभळी पर्व आराधवा रे, आदर होय अपाररे ॥ भवि० ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ एकवीसानी ॥ ए देशी ॥

॥ धनपुरमां रे, शेठ धनेश्वर शुभमति ॥ शुद्ध श्रावक रे, पर्व तिथे पोसह व्रती ॥ धनश्री तसरे, पत्नी नाम सोहामणो ॥ धनसार सूत रे, तेहनो जन्मनो कामणो ॥ १ ॥ त्रोटक ॥ कामणो निजहित कारण माटे, शेठजी आठम दिने, लइ पोसह शून्य घरमां, रह्या काउस्सग स्थिरमने ॥ इण अवसरे सोहम इंदो, बेठो निजसुर पर्षदा ॥ करे प्रशंसा शेठनी इम, सांभले सहु सुर तदा ॥ २ ॥ जो चळावेरे, सुरपति जइने आप हि, पण शेठजीरे पोसहमांहि चळे नहिं ॥ इम निसुणी रे, मिथ्यात्वी एक चिंतवे ॥ हुं चळावुं रे, जइने इरकोइ कौतुके ॥ ३ ॥ त्रोटक ॥ शेठना मित्रनुं रुप करीने, कोटी सुवर्णनो ढग करी, कहे ल्यो ए शेठ तो पण, नवि चळ्या जेम सुरगिरि ॥ पछी पत्निनुं रुप करीने, आलिंगनादिक बहु करे ॥ अनुकूल उपसर्गे तो ही शेठजी, ध्यान अधिकेरु धरे ॥ ४ ॥ करे बिहामणुरे, ताप प्रमुख देखाडतो ॥ नारिने सुत रे, आवी इणिपरे भाखतो ॥ पारो पोसह रे, अवसर तुमचो बहु थयो ॥ तव शेठजी रे चिंतवे काल केतो थयो ॥ ५ ॥ त्रोटक ॥ सज्झायने अनुसार करीने, जाण्युं छे हजी रात ए ॥ पोसह हमणां पारीये किम, नवी थयो प्रभात ए ॥ तव पिशाचनुं रुप करीने, चामडि उतारतो ॥ घात उछालन शिला स्फालन, सायरमांहि नांखतो ॥ ६ ॥ इम प्रतिकूल रे, उपसर्गे पण नवि चल्या ॥ प्राणांतरे, अष्टमी व्रतथी नवी चल्या ॥ तव ते सुर रे, माग माग मुख इम कहे ॥ पण ध्यानमांरे, ते वात पण नवी लहे ॥ ७ ॥

त्रोटक ॥ तव तेणे रत्न अनेक कोटी, वृष्टि कीधी जाणीए ॥ बहु जणा पर्व आराधवाने, सादरा गुणखाणए ॥ राजा पण ते देखी महिमा, शेठने माने घणुं ॥ कहे धन्य धन्य शेठजी तुम, सफळ जीवित हु गणुं ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ पंचमहाव्रत आदरो साहेलडीरे ॥ ए देशी ॥

॥ तेह नगरमांहे वसे ॥ साहेलडीरे ॥ त्रण पुरूष गुणवंत तो ॥ घांची हालि एक धोबी साहेलडीरे, षटपर्वी पालंत तो ॥ १ ॥ साधर्मिक जाणी करी ॥ सा० ॥ शेठ करे बहू मानतो ॥ पारणे अशन वसन तथा ॥ सा० ॥ द्रव्यतणुं बहु दान तो ॥ २ ॥ साधर्मिक सगपण वडु ॥ सा० ॥ ए सम अवर न कोइ तो ॥ शेठ संगे ते त्रण जणा ॥ सा० ॥ समकित द्रष्टि होय तो ॥ ३ ॥ एक दिन चौदसने दिने साहेलडीरे, राय धोबीने गेहतो ॥ चिवर राय राणी तणां ॥ सा० ॥ मोकलियां वरनेह तो ॥ ४ ॥ आज ज धोइ आपज्यो ॥ सा० ॥ महोच्छव कौमुदी काल तो ॥ रजक कहे सुणो माहरे ॥ सा० ॥ कुटुंब सहित व्रत पाल तो ॥ ५ ॥ धोवुं नहि चौदस दिने ॥ सा० ॥ तव नृप बोले जाण तो ॥ नृप आणाये नियम शो ॥ सा० ॥ जेहथी जाये प्राण तो ॥ ६ ॥ सज्जन शेठ पण इम कहे ॥ सा० ॥ एहमां हठ नवि ताणतो ॥ राजकोप अपभ्राजना ॥ सा० ॥ धर्म तणी पण हाणतो ॥ ७ ॥ वळी रायाभियोगेणं ॥ सा० ॥ छे आगार पचखाण तो ॥ तव धोबी चित्त चिंतवे ॥ सा० ॥ दढता विण धर्म हाणतो ॥ ८ ॥ धोवुं नवि मान्युं तिणे ॥ सा० ॥ राये सुणी ते वात तो ॥ कुटुंब सहित निग्रह करुं ॥ सा० ॥

काले जो हुं नृप साच तो ॥९॥ दैव योगे ते रातमां ॥ सा० ॥ शूल व्यथा नृप थाय तो ॥ हाहाकार नयर थयो ॥सा०॥ इम दिन त्रण वही जाय तो ॥१०॥ पडवे दिन धोइ करी ॥ सा० ॥ आप्या वस्त्र ते राय तो ॥ व्रत निर्वाह सुखे थयो ॥ सा० ॥ धर्मतणे सुपसाय तो ॥ ११ ॥

॥ ढाल ॥ ४ भरत नृप भावशुं ॥ ए देशी ॥

॥ नरपति चौदसने दिनेए, घाणी वाहन आदेश ॥ करे तेली प्रतेए, रजकपरे ते अशेष ॥ व्रत नियम पालिये ए ॥ १ ॥ आंकणी ॥ भूपति कोपे कलकल्योए, इण अवसर परचक्र ॥ आव्युं देश भांजवाए, महादुर्दान्त ते चक्र ॥ २ ॥ व्रत नि० ॥ नृप पण सन्मुख नीकल्योए, युद्ध करणने काज ॥ विकल चित्तथी थयो ए, इम रही तेलिनी लाज ॥ व्रत० ॥ ३ ॥ हालिने आठम दिने ए, दीधुं मुहुर्त तत्काल ॥ तीणे पण इम कह्यु ए, खेडीश हल हुं काल ॥ व्रत० ॥ ॥ ४ ॥ कोपे भराणो भूपति ए, इण अवसर तिहां मेह ॥ वरसण लाग्यो घणुं ए, खेडी न थाशे हेव ॥ व्रत० ॥ ५ ॥ त्रणे अखंड व्रत पालतां ए, पुण्य आतोलथी तेह ॥ मरण पामी स्वर्गे गया ए, छट्ठे देव लोके जेह ॥ व्रत० ॥ ६ ॥ चउद सागरने आउखे ए, उपना ते ततखेव ॥ हवे शेठ उपना ए, बारमे देवलोके देव ॥ व्रत० ॥ ७ ॥ मैत्री थइ ते च्यारनेए, श्रेष्ठी सुरने नांम ॥ कहे त्रण देवता ए, प्रति बोधजो अम स्वाम ॥ व्र० ॥ ८ ॥ ते पण अंगिकरे तदा ए, अनुक्रमे च्यविआ तेह ॥ उपन्या भिन्न देशमां ए, नरपति कुलमां तेह

॥ व्रत० ॥ ९ ॥ जे धीर वीर हीर नामथीए, देश धणी वडराय ॥ थया व्रत द्रढ थकी ए, बहु नृप प्रणमे पाय व्रत० ॥ १० ॥

॥ ढाळ ॥ ५ सुरति मासनी ॥ ए देशी ॥

॥ धीरपुरे एक शेठने पर्वदिने व्यवहार ॥ करतां लाभ गणो होवे, लोकने अचरिजकार ॥ अन्य दिने हानि पण, होये पुन्य प्रमाण ॥ एक दीन पुछे ज्ञानीने, पूर्वभव मंडाण ॥ १ ॥ ज्ञानी कहे सुण परभव, निर्धन पण व्रत राग ॥ आराधीने पर्वतिथे, आरंभनो त्याग ॥ अन्यदिने तुमे कीधो, सहेजे पण व्रतभंग ॥ तीणे ए कर्म बंधाणां, सांभलो ए कंत ॥ २ ॥ सांभली ते सह कुटुंबशुं, पाले व्रत नीरमाय ॥ बीज प्रमुख आराधे, सविशेषे सुखदाय ॥ ग्राहक पण बहु आवे अर्थे, थावे लाभ अपार ॥ विश्वासी बहुं लोकथी, थयो कोटी सीरदार ॥ ३ ॥ निजकुल शोषक वाणीआ, जाणो आ जगत प्रसिद्ध ॥ तिणे जइ रायने वाणीए ॥ इणा परे चुगली कीध ॥ इणे कोटी निधान लाधो, ते स्वामीने होय लोय ॥ नरपति पुछे शेठने, वात कहो सहु कोय ॥ ४ ॥ शेठ कहे सुणो नरपति, म्हारे छे पच्चखाण ॥ स्थूळ मृषावादने वली, स्थूल अदत्तादान ॥ गुरु पासे व्रत आदर्युं, ते पाळुं नीरमाय ॥ पिशुन वणीक कहे स्वामीए, धर्म धुतारो थाय ॥ ५ ॥ तस वचने करी तेहना, द्रव्य तणो अपहार ॥ करीने भूपति राचे, पुत्र सहित निजद्वार ॥ राज-द्वारे रह्यो चिंतवे, आज लह्यो में कष्ट ॥ पण आज पंचमी तिथि तिणे, लाभ होय कोइ लष्ट ॥ ६ ॥ प्रातःसमे नृप देखे, खाली निज

भंडार ॥ शेठ घरे मणि रत्न सुवर्ण, भर्या श्री श्रीकार ॥ आवी वधामणी रायने, ते बिहुनी समकाळ ॥ शेठ तेडी कहे नरपति, वात सुणो इण ताल ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ हरणी जव चरे ललना ॥ ए देशी ॥

भूपति चमक्यो चित्तमां ललना, लालहो, देखी ए अवदात व्रत इम पालीये ललना ॥ खेद लही खामे घणुं ललना, लालहो प्रश्न पुछे सुख शात ॥ व्रत इम पालीये ललना ॥ १ ॥ कहो शेठ ए केम नीपन्युं ललना, लालहो तुज घर धन किम होय ॥ व्र० ॥ शेठ कहे जाणुं नही ललना, लालहो किणी परे ए मुज थाय ॥ व्र० ॥ २ ॥ पण मुज पर्वने दिहाडले ललना, लालहो लाभ अणचिंत्यो थाय ॥ व्र० ॥ पर्वदिने व्रत पालीयुं ललना, लालहो ते पुन्यनो महिमाय ॥ व्र० ॥ ३ ॥ पर्व महिमा इम सांभली ललना, लालहो भूपतिने तत्काल ॥ व्र० ॥ जाति स्मरण उपन्युं ललना, लालहो निजभव दिठो रसाल ॥ व्र० ॥ ४ ॥ धोबीनो भव सांभर्यो ललना, लालहो पाल्युं जे व्रत सार ॥ व्र० ॥ जाव जीव नृप आदरे ललना, लालहो षट पर्वी व्रत धार ॥ व्रत० ॥ ५ ॥ आवी वधामणी तेणे समे ललना, लालहो स्वामी भराणा भंडार ॥ व्र० ॥ विस्मित राय थयो तदा ललना, लालहो हियडे हर्ष अपार ॥ व्रत० ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥ ७ ॥ साहेबजी श्री विमलाचल भेटिये हो लाल ॥ ए देशी ॥

॥ साहेबजी शेठ अमर प्रगट थयो हो लाल, भाखे रायने एम ॥ सा० ॥ तुं नवि मुजने ओळखे हो लाल, हुं आव्यो ज

प्रेम ॥ १ ॥ साहेबजी पर्व तिथि इम पाळीए हो लाल, साहेबजी श्रेष्ठी सुरहुं जाणजो होलाल ॥ तुज प्रतिबोधन आज ॥ सा० ॥ शेठ सांनिध्य करवा वली हो लाल, कीधुं में सवि काज ॥ सा० ॥ पर्व० ॥ २ ॥ साहेबजी धर्म उद्यम करे जे सदा हो लाल, जावुं छुं सुणी वात ॥ सा० ॥ तेलिक हालिक रायने हो लाल, प्रति बोधन अवदात ॥ सा० ॥ पर्व० ॥ ३ ॥ तिहां जइ पूर्वभव तणा हो लाल, रूप देखावे तास ॥ सा० ॥ देखीने ते पापीया हो लाल, जाति स्मरण खास ॥ सा० ॥ पर्व० ॥ ४ ॥ ते बेउ श्रावक थया हो लाल, पाले नित षट पर्व ॥ सा० त्रण ते नर रायने हो लाल, सहाय करे ते सुपर्व ॥ सा० ॥ पर्व० ॥ ५ ॥ निज निज देशे नीवारता हो लाल, मारी व्यसन सवि जेह ॥ सा० ॥ चैत्य करावे तेहवां हो लाल, प्रतिमा भरावे तेह ॥ सा० ॥ पर्व० ॥ ६ ॥ संघ चलावे सामटा हो लाल, स्वामीवच्छल भली भात ॥ सा० ॥ पर्वदिने नित्य नगरमां हो लाल, पडह अमारी विख्यात ॥ सा० ॥ पर्व० ॥ ७ ॥ पर्व तिथि सहु पालता हो लाल, राजा प्रजा बहु धर्म ॥ सा० ॥ इति उपद्रव सहु टळे होलाल, नहि निज परचक्र भर्म ॥ सा० ॥ पर्व० ॥ ८ ॥ धर्मथी सुर सानिध्य करे हो लाल, धर्म पाली पाले राज ॥ सा० ॥ कोइ सद्गुरु संजोगथी हो लाल, थया त्रणे ऋषि राज साहेबजी ॥ पर्व० ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ८ टुंक अने टोडा विचरे ॥ ए देशी ॥

॥ त्रणे नरपति आदर्योरे, चोख्खो चारित्र भार ॥ संजम रंग लाग्योरे ॥ तप तपता अति आकरारे, पाले निरतिचार

॥ संयम० ॥ १ ॥ ध्यानबले खेरु कर्यारे, घनघाति जे च्यार ॥ संयम० ॥ केवल ज्ञान लहि करीरे, विचरे महियल सार ॥ सं- ॥ २ ॥ श्रेष्ठी सुर महिमा करेरे, ठाम ठाम मनोहार ॥ सं० ॥ देशना देता केवलीरे, भाखे निज अधिकार ॥ सं० ॥ ३ ॥ पर्व तिथि आराधीयेरे, भवियण भाव उल्लास ॥ सं० ॥ इम महिमा विस्तारीनेरे, पाम्या शिवपुर वास ॥ सं० ॥ ४ ॥ बारमा देवलोकथी चवीरे, श्रेष्ठी सुर थया राय ॥ सं० ॥ महिमा पर्वनो सांभलीरे, जाति स्मरण थाय ॥ सं० ॥ ५ ॥ संजम ग्रही केवल लहीरे, पाम्या अविचल ठाण ॥ स० ॥ अव्याबाध सुखी थयारे, केवल चिदू आराम ॥ सं० ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥ ९ ॥ गीरुआ रे गुण तुम तणा ॥ ए देशी ॥

॥ उजमणां ए तप तणां करो, तिथि परिमाण उपगरणांरे ॥ रत्न त्रय साधन तणा भवि, भवसायर निस्तरणांरे ॥ १ ॥ उजमणा० ॥ जो पण सहुं दिन साधवा, तो पण तेनी अगशक्ते रे ॥ पर्व तिथि आराधीने, तुमे उजवजो बहु भक्ति रे ॥ उ० ॥ २ ॥ श्राद्धविधि वर ग्रंथमां, भलो भाख्यो ए अवदानो रे ॥ भगवतीने महानिशीथमां कह्यो, तिथि अधिकार विख्यातो रे ॥ उ० ॥ ३ ॥ तपगच्छ गगनांगण रवि, श्री विजयसिंह गणधारोरे ॥ अंतेवासी तेहना, श्री सत्यविजय सुखकारोरे ॥ उ० ॥ ४ ॥ कपूरविजय वर तेहना, वर क्षमाविजय पन्यास रे ॥ जिन विजय जगमां जया, शिष्य उत्तमविजय ते खास रे ॥ उ० ॥ ५ ॥ तस पद चरण भ्रमर

सभा, रहि साणंद चोमासु रे ॥ अढार त्रीस संवत्सरे, सुद तेरस फागुण मासो रे ॥ उ० ॥ ६ ॥ पद्मविजय भक्ते करी, श्री विजय धर्म सूरि राजेरे ॥ वर्द्धमान जिन गाइआ, श्री अमीझरा प्रभु पासे रे ॥ उ० ॥ ७ ॥

॥ कलश ॥ पर्व तिथि आराधो, सुव्रत साधो, लाध्यो भव सफलो करो ॥ संवेग संगी तत्वरंगी, उत्तम विजय गुणाकरो ॥ तस शिष्य नामें सुगुण कामे, पद्मविजये आदर्यो ॥ शुभ एह आदर भवि सहाघर, नाम षटपर्वी धर्यो ॥ इति षटपर्वी महिमा गुणवर्णन स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री समकितनुं स्तवन ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ ते मुज मिच्छामिदुकडं ॥ ए देशी ॥

॥ सांभलरे तुं प्राणीया, सद्गुरु उपदेशो ॥ मानव भव दोहोलो लह्यो, उत्तम कुल एसो ॥ सां० ॥ १ ॥ देव तत्व नवी ओलख्यो, गुरुतत्व न जाण्यो ॥ धर्म तत्व नवि सद्दह्यो, हियडे ज्ञान न आण्यो ॥ सा० ॥ २ ॥ मिथ्यात्वी सुर जिन प्रत्ये, सरखा करी जाण्या ॥ गुण अवगुण नवि ओलख्यो, वयणे वखाण्या ॥ सा० ॥ ३ ॥ देव थया मोहे ब्रह्मा, पासे रहे नारी ॥ काम तणे वश जे पडया, अवगुण अधिकारी ॥ सा० ॥ ४ ॥ केइ क्रोधी देवता, वली क्रोधना वाह्या ॥ के कोइथी बीहता, हथीयार सवाह्या

॥ सा० ॥ ५ ॥ क्रूर नजर जेहनी घणी, देखंतां डरीये ॥ मुद्रा जेहनी एहवी, तेहथी शुं तरीये ॥ सा० ॥ ६ ॥ आठ करम सांकल जडयां, भमे भवही माजारो ॥ जन्म मरण भव देखीये, पाम्या नहीं पारो ॥ सा० ॥ ७ ॥ देवथइ नाटक करे, नाचे जण जण आगे ॥ वेषकरी राधाकृष्णनो, वली भीक्षा मागे ॥ सा० ॥ ८ ॥ मुखे करी वाये वांसली, पेहेरे तन वाघा ॥ भावन्तां भोजन करे, एहवा भ्रम लागा ॥ सा० ॥ ९ ॥ देखो दैत्य संहारवा, थयो उद्यमवंतो ॥ हरि हीरणांकुश मारीयो, नरसिंह बलवंतो ॥ सा० ॥ १० ॥ मत्स्य कच्छ अवतार लई, सहु असुर विदार्यां ॥ दश अवतारे जुजुआ, दश दैत्य संहार्यां ॥ सा० ॥ ११ ॥ माने मूढ मिथ्या मति, एहवा पण देवो ॥ फरी फरी अवतार ले, देखो कर्मनी टेवो ॥ सा० ॥ १२ ॥ स्वामी सोहे जेहवो, तेहवो परिवारो ॥ इम जाणीने परिहरो, जिन हर्ष विचारो ॥ सा० ॥ १३ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ ओधव माधवने कहेजो ॥ ए देशी ॥

॥ जगनायक जिनराजने, दाखवियें सही देव ॥ मूकाणा जे कर्मथी, सारे सुरपति सेव ॥ ज० ॥ १ ॥ क्रोध मान माया नहीं, नहीं लोभ अज्ञान ॥ रति अरति वेदे नहीं, छांड्यां मद स्थान ॥ ज० ॥ २ ॥ निद्रा शोक चोरी नहि, नही वयण अलिक ॥ मत्सर भय वध प्राणिनो, नकरे तह कीक ॥ ज० ॥ ३ ॥ प्रेम क्रीडा न करे कदी, नहीं नारी प्रसंग ॥ हास्यादिक अढार ए, नहीं जेहने अंग ॥ ज० ॥४॥ पद्मासन पुरी करी, बेठा श्री अरिहंत ॥ निश्चल

लोयण तेहना, नासाग्रेज रहंत ॥ ज० ॥५॥ जिनमुद्रा जिनराजनी, दीठां परम उल्लास ॥ समकित थाये निर्मलुं, तपे ज्ञान उजास ॥ ज० ॥ ६ ॥ गति आगति सहु जिवनी, देखे लोकालोक ॥ मनः पर्याय सवि तणा, केवलज्ञान आलोक ॥ ज० ॥ ७ ॥ मूर्त्ति श्री जिनराजनी, समतानो भंडार ॥ शीतल नयन सुहामणो, नहीं वांक लगार ॥ ज० ॥ ८ ॥ हसत वदन हरखे हैयुं, देखी श्री जिनराय ॥ सुंदर छबी प्रभु देहनी, शोभा वरणवी न जाय ॥ ज० ॥ ९ ॥ अवर तणो एहवी छबी, किहां एम न दीसंत ॥ देव तत्त्व ए जाणीये, जिनहर्ष कहंत ॥ ज० ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ जत्तणीनी ॥ ए देशी ॥

॥ श्री जिनवर प्रवचन भाख्या, जे कुगुरु तणा गुण दाख्या ॥ पासथ्थादिक पांचेई, पाप श्रमण कह्या साचेई ॥ १ ॥ गृहीना मंदिरथी आणी ॥ आहार करे भात पाणी ॥ सुवे उंघे नीशदिश, प्रमादी त्रिसवावीस ॥ २ ॥ किरिया न करे किणीवार, पडिक्कमणुं सांज सवार ॥ न करे पच्चखाण सज्झाय, विकथा करतां दिन जाय ॥ ३ ॥ घृत दुध दहीं अप्रमांण, खाय न करे पच्चखाण ॥ ज्ञान दर्शन ने चारित्र, मूकी दीधां सुपवित्र ॥ ४ ॥ सुविहित मुनि समाचारी, पाले नही ते अणगारी ॥ आहारना दोष बयाल, टाले नहीं कीणहि काल ॥ ५ ॥ धब धब धसमसतो चाले, काचे जले देह पखाले ॥ अर्चा रचना वंदावे, वस्त्रादिक शोभा बनावे ॥ ६ ॥ परिग्रह वली आशा राखे, वली वली अधिकाने धाखे ॥

माठी करणी जे कहीये, ते सघली जिणमें लहीये ॥ ७ ॥ एहवा जे कुगुरु आरंभी, मुनिसाधु कहेवाये दंभी ॥ कोइ कम्म प्रशंसा करीये, भव भव गृहमां अवतरीये ॥ ८ ॥ लोहानी नावा तोले, भवसायरमां जे बोळे ॥ जिनहर्ष भलो अहि कालो, पण कुगुरुनी संगत टालो ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ करजोडी आगळ रही ॥ ए देशी ॥

॥ गुण गीरुआ गुरु ओलखो, हीयडे सुमति विचारीरे ॥ गुरु परिक्षा दोहिली, भुल पडे नर नारीरे ॥ गु० ॥ १ ॥ पांच इंद्रिय जे वशकरे, पांच महाव्रत पालेरै ॥ चार कषाय तजी जेणे, पांचे किरिया टालेरे ॥ गु० ॥ २ ॥ पांच समिती समिता रहे, तीन गुप्ति जे धारेरै ॥ दोष बेतालीस टालीने, पाणी भात आहारेरै ॥ गु० ॥ ३ ॥ ममता छांडी देहनी, निर्लोभी निर्मायीरे ॥ नवविध परिग्रह परिहरे, चित्तमें चिंते न कांइरे ॥ गु० ॥ ४ ॥ धर्मतणां उपकरण धरे, संयम पालवा काजेरै ॥ गु० ॥ भूमि जोई पगलां भरे, लोक विरोधथी लाजेरे ॥ गु० ॥ ५ ॥ पडिलेहण नित्य त्रिविधे, करे प्रमाद निवारी रे ॥ काले शुद्ध क्रियाकरे, इच्छा जोग निवारी रे ॥ गु० ॥ ६ ॥ वस्त्रादिक शुद्ध एषणी, ले देखी सुविशेषे रे ॥ काल प्रमाणे खपकरे, दूषण टलतां देखे रे ॥ गु० ॥ ७ ॥ कुलखी संबल जे कह्यां, सान्निध्य केम हीं न राखे रे ॥ दे उपदेश यथास्थिते, सत्य वचन मुख भाखे रे ॥ गु० ॥ ८ ॥ तन मेलां मन उजळां, तप करी खीणी देहीरे ॥ बंधन बे छेदी करी,

विचरे जन निःस्नेहीरे ॥ गु० ॥ ९ ॥ एहवा गुरु जोइ करी, आदरीये शुभ भावे रे ॥ बीजुं तत्त्व सुगुरु तणुं, ए जिनहर्ष कहावेरे ॥ गु० ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥ ९ ॥ कर्मन छुटे रे प्राणिया ॥ ए देशी ॥

॥ भवसायर तरवा भणी, धर्म करे हो सारंभ ॥ पथ्थर नावे रे बेसीने, तरवो समुद्र दुरलंभ ॥ भ० ॥ १ ॥ आपे गोकुल गायनां, आपे कन्या रे दान ॥ आपे क्षेत्र पुण्यार्थं, ब्राह्मणने देइ मान ॥ भ० ॥ २ ॥ लूंटावे घाणी वली, पृथ्वीदान सुप्रेम ॥ गोला कलश रे मोरिया, आपे हल तिल हेम ॥ भ० ॥ ३ ॥ वली खणावे रे खंतशुं, कुआ सुंदर वाव ॥ पुष्करिणी करणी भली, सरोवर सखर तलाव ॥ भ० ॥ ४ ॥ कंद मूल मूके नहीं, अगीआरसने हो दीन ॥ आरंभ ते दिन अति घणो, धर्म कीहां जगदीश ॥ भ० ॥ ॥ ५ ॥ याग करे होमे तिहां, घोडा नरने रे छाग ॥ होमे जलचर मोडकां, धर्म कीहां वीतराग ॥ भ० ॥ ६ ॥ करे सदाये रे नोरतां, जीव तणां आरंभ ॥ हणे महिषने बोकडा, जेहथी नरक सुलंभ ॥ भ० ॥ ७ ॥ सारे सरावे ब्राह्मण कने, पूर्वजनां रे श्राद्ध ॥ तेडी पोखेरे कागडा, देखो एह उपाधि ॥ भ० ॥ ८ ॥ तीर्थे जाय गोदावरी, गंगा गया प्रयाग ॥ न्हावे अणगल नीरमां, धर्म तणो नहीं लाग ॥ भ० ॥ ९ ॥ इत्यादिक करणी करे, परभव सुखनेरे काज ॥ कहे जिन हर्ष मले नहीं, एहथी शिवपुर राज ॥ भ० ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ जाया तुज विण घडीरे छमास ॥ ए देशी ॥

॥ धर्म खरो जिनवर तणोजी, शिव सुखनो दातार ॥ श्री जिनराजे प्रकाशीयोजी, जेहना चार प्रकार ॥ भविक जन ज्ञान विचारीरे जोय ॥ दुर्गति पडता जीवने जी, धारे ते धर्म होय ॥ भविकजन० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पंच महाव्रत साधुनां जी, दश-विध धर्म विचार ॥ हित करीने जिनवर कह्याजी, श्रावकनां व्रत बार ॥ भविक० ॥ २ ॥ पंचुंबर चारे विगयजी, विष सहु माटीरे हिम ॥ रात्री भोजनने कह्याजी, बहु बीजोनो नेम ॥ भविक० ॥ ॥ ३ ॥ घोलवडां वली रींगणांजी, अनंतकाय बत्रीस ॥ अणजाण्यां फल फूलडांजी, संधाणां निशदीश ॥ भविक० ॥ ४ ॥ चलित अन्न वाशी थयुंजी, तुच्छ सहु फल दक्ष ॥ धर्मी नर खाये नहींजी, ए बावीस अभक्ष ॥ भविक० ॥ ५ ॥ न करे निद्धंस पणेजी, घरना आरंभ धीर ॥ जीवतणी जयणा घणीजी, न पीये अणगल नीर ॥ भविक० ॥ ६ ॥ घृतपरे पाणी वावरेजी, बीये करतां पाप ॥ सामायिक व्रत पौषधेजी, टाले भवना ताप ॥ भविक० ॥ ॥ ७ ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनीजी, सेवा भक्ति सदीव ॥ धर्म शास्त्र सुणतां थकांजी, समजे कोमल जीव ॥ भविक० ॥ ८ ॥ मास मासने आंतरेजी, कुश अग्रे भुंजे बाल ॥ कला न पहोचे शोलमी-जी, श्री जिनधर्म विशाल । भविक० ॥ ९ ॥ जिन धर्म मुक्ति पुरी दीयेजी, चउगति भ्रमण मिथ्यात्व ॥ एम जिनहर्ष प्रकाशये-जी, त्रीजुं तत्त्व विख्यात ॥ भविक० ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥ ७ ॥ मधुकर आज रहोरे मत चलो ॥ ए देशी ॥

॥ श्री जिनधर्म आराधियेजी, करी निज समकित शुद्ध ॥ भवियण ॥ तप जप किरिया कीथलीजी, लेखे पडे विशुद्ध ॥ भ० ॥ श्री० ॥ १ ॥ कंचन कशी कशी लिजियेजी, नाणुं लीजे परिख ॥ भ० ॥ देव धर्म गुरु जोइनेजी, आदरिये सुणी शीख ॥ भ० ॥ श्री० ॥ २ ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनेजी, परिहरिये विष जेम ॥ भ० ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनेजी, ग्रहीये अमृत तेम ॥ भ० ॥ ॥ श्री० ॥ ३ ॥ मूल धर्म ते जिने कह्योजि, समकित सुरतरु एह ॥ भ० ॥ भव भव सुख संपत्ति थकीजी, समकितशुं धरी नेह ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ सत्तरसें छत्रीस समेजी, नभ शुदी दशमी दीस ॥ भ० ॥ समकितसित्तरी ए रचीजी, पुरपाटण सुजगीश ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ भणजो गुणजो भावशुंजी, लेशो अविचल श्रेय ॥ भ० ॥ शांति हर्ष वाचक तणोजी, कहे जिन हर्ष विनेय ॥ भ० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ इति श्री समकित सित्तरीनुं स्तवन संपूर्ण ॥

॥ ज्ञानदर्शन चारित्रनुं स्तवन. ॥

॥ दुहा ॥ श्री इंद्रादिक भावथी, प्रणमे जगगुरु पाय ॥ ते प्रभु वीर जीणंदने, नमतां अतिसुख थाय ॥ १ ॥ ज्ञान दर्शन चारित्रनो, कहुं परस्पर संवाद ॥ त्रिक जोगे सिद्धि होवे, एवो प्रव-

चन वाद ॥ ३ ॥ समकित गुण जस चित्त रम्यो, तेहनो वादवि-
वाद ॥ समुदायथी एक अंश ग्रही, मुख्य करे तिहां वाद ॥३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ ललनानी ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञानवादी पेहेलो कहे, त्रिभुवनमां हुं सार ललना ॥ नय निक्षेप प्रमाणनो, चउ अनुयोग विचार ललना ॥ १ ॥ ज्ञान भजो भवी प्राणीया ॥ ए आंकणी ॥ सप्तभंगी षट द्रव्यनुं, मुज विण कुण लहे तत्व ललना ॥ बंभी लीपीने प्रणमीया, गणधरादिक महासत्व ललना ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ मेरु सूर्यने इंद्रनी, उपमा ज्ञानीने होय ललना ॥ मुज वीण मूर्ख पशुतणी, एवी उपमा तसहोय ललना ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥ ज्ञान पछी जिनराजने, अरिहंत पद होय भोग्य ललना ॥ भोगववुं ते ज्ञाननो, उपदेश कहेवो जे योग्य ललना ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ ज्ञान पछी किरिया कही, दशवैकालिक वाणी ललना ॥ ज्ञान गुणे मुनि कह्या, उत्तराध्ययन प्रमाण ललना ॥ ज्ञा० ॥ ५ ॥ दीपक घट देखावशे, घटथी दीपक न देखाय ललना ॥ अप्रतिपाती ज्ञान गुण सही, महानिशीथे कहेवाय ललना ॥ ६ ॥ अधिकुं सर्व पातिक थकी, अज्ञानी जाणे न चोज ललना ॥ आतम स्वरुप जाण्या विना, जीम फिरे जंगल रोज ललना ॥ ज्ञा० ॥ ७ ॥ किरीया विण बहु सिद्धि लहे, तापसादिक दृष्टांत ललना ॥ गज बेठे मरुदेवीने, आपी में मुक्ति एकांत ललना ॥ ज्ञा० ॥ ८ ॥ अज्ञानवादी इम कहे, आपे मोक्ष न ज्ञान ललना ॥ उत्तर धर्मसंग्रहणीथी, करजो मुज बहु मान ललना ज्ञा० ॥ ९ ॥

जीव ने ज्ञान अभेद छे, मुजवीण जीव अजीव ललना ॥ अक्षरनो अनंतमो, भाग उघाडो सदैव ललना ॥ ज्ञा० १० ॥ क्रिया नये जे बाल छे, ज्ञान नये उजमाल ललना ॥ मुनिने सेववा योग्य ते, बोले उपदेशमाल ललना ॥ ज्ञा० ॥ ११ ॥ देवाचार्य मल्लवादीजी, जग जस वाद लहंत ललना ॥ बोध जीत्या मुज आश्रये, इम बहु शास्त्रे उदंत ललना ॥ ज्ञा० ॥ १२ ॥ देहिना मेल सारीखो, मुज विण किरिया धंध ललना ॥ तिक्षणता जे ज्ञाननी, तेहिज चरण अबंध ललना ॥ ज्ञा० ॥ १३ ॥

॥ ढाल ॥२॥ अरणीक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥

॥ क्रोड वरस तप जप किरिया करे, नवि मीटे कर्मना पाश रे ॥ ज्ञानी ते एक सासोसासमां, अनेक कर्म करे नाश रे॥ गुणीजन वांदोरे ज्ञानने लळी लळी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ ज्ञानना गुणने रे उत्तम संग्रहे, बालक माने ते वेषरे ॥ मध्यम नर किरिया गुण आदरे, षोडशके उपदेशरे ॥ गुण० ॥ २ ॥ चारित्र हीणो रे ज्ञान गुणे घणो, वांदवो पूजवो तेहरे ॥ थोडा ज्ञानीनी किरिया कलेश छे, उपदेशमालामां एह रे ॥ गुण० ॥ ३ ॥ महीयल महाले रे मेले वेषथी, बग व्यवहारे चाले रे ॥जगने घाले रे ज्ञानविना धंधे, ते कीम धर्मने पालेरे ॥ गुण० ॥ ४ ॥ पीपलीया पान जीसा क्रिया गुरु, जहाज समा गुरु ज्ञानी रे ॥ किरिया रहित जे सिद्ध जिणंद छे, भगवती अंगनी वाणीरे ॥ गुण० ॥ ५ ॥ मंडुक चुरण जिम जलदागमे, किरियाये तेम भव व्याधिरे ॥ तस छार करवारे

ज्ञाननी ज्योति छे, उपदेशपदे एम साधीरे ॥ गुण० ॥ ६ ॥ एकनो जाणग सर्व जाणग कह्यो, एहवी छे मारी वडाइरे ॥ अविसंवादपणे जे जाणवुं, तेहीज समकित भाइरे ॥ गुण० ॥७॥ ज्ञान विना कहो समकित कीम रहे, किरिया ते ज्ञाननी दासीरे ॥ छठ तपे मुका सेवाल भोजी कह्यो, देखे न मुख अविनासीरे ॥ गुण० ॥ ८ ॥ थोडली किरियारे ज्ञानीनी भली, जीम सुरनारीना भावरे ॥ बहुली किरिया रे ज्ञान विना कीसी, जीम अंधनारीना हावरे ॥गुण० ॥ ९ ॥ सहस त्रेतालीस बसे नर बुझीया, नंदिषेण शुभ भाखेरे ॥ ज्ञानीए दीठुंरे तेहीज वस्तु छे, खरसिंह सम अन्य दाखेरे ॥ गुण० ॥ १० ॥ किरिया नयनेरे ज्ञान कहे तुमे, मुज थकी भिन्न अभिन्नरे ॥ भिन्न थशो तो रे जडता पामशो, भिन्नत्व मुजमांही लीनरे ॥ गुण० ॥ ११ ॥ न्याये त्रीजोरे जेहने आलंबीये, जुओ जुगति विमासीरे ॥ एक पद पामी चिलाति सुत तर्यो, ज्ञानथी सहु सुख वासीरे ॥ गुण० ॥ १२ ॥

॥ ढाल ॥३ ॥ सुण मोरी सजनी रजनी न जावेरे ॥ ए देशी ॥

॥ समकितवादी हवे बोल्यो विमासीरे, मुजविण ज्ञान किरियानी बहु हांसीरे ॥ मुज विण ज्ञान अज्ञान ते जाणोरे ॥ शुकपाठक तथा वेदीया मानोरे ॥ १ ॥ मणिमय बिंब अनंत भरावेरे, सोवन देहेरां.असंख्य करावेरे ॥ दंसण लवविण शुभ फल नापेरे, दंसण रयणायर इम थापेरे ॥ २ ॥ वार अनंती जीम जीवने फरस्यारे, जीम मृगतृष्णाए रेहेवे तरस्योरे ॥ ते एकवारमां दुःख

सवी टालुंरे, आत्ममंदिरमां करु अजुआलुंरे ॥ ३ ॥ मुज पछी ज्ञान किरिया दोय साचीरे, जलधर जोगे वन राय माचीरे ॥ पात्र कुपात्र तुमे नवि जोतारे, अमे भविक अकषाये मोहतारे ॥ ४ ॥ क्षण एक मुजने हृदये राखीरे, जिणे साहिबनी सुखडी चाखीरे ॥ मिथ्या वचन जो कांइ प्ररुपे रे, हुंतो रीसु पडे भवकूपेरे ॥ ५ ॥ बांहे झाल्यो ते कारण माटे रे, करुं सुखीयो पुद्गलअध साटेरे ॥ कृषीवल संबंध धरो मनमांहीरे, समकितवंतने प्रणमो उछांहीरे ॥६॥ असुच्चा केवली किरियाहीनरे, सिद्धा मुजथकी अनुभव पीनरे ॥ दंसण रहित न सीझे कोइरे, निश्चय करो भवि आगम जोइरे ॥ ७ ॥ माला झाले निमाला लोचेरे ॥ किरियाडंबर भणी बहु शोचेरे ॥ नव ग्रैवेयक सुधि लेइ जावे रे, तोये समकित लव सुख नावे रे ॥ ८ ॥ जूठ किरियाए धरावे नाम रे, हुं मुनि हुं श्रावक गुण धाम रे ॥ मुज छतां मरीचीये भव न वधार्यो रे, जमाली कुशीष्य जो समकित हार्यो रे ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ गुण वेलडीयां ॥ ए देशी ॥

॥ सिद्ध नरे जेम संग्रह्यो रे ॥ बुद्धवंताजी ॥ विष पण अमृत थाय ॥ रूचिवंताजी ॥ तिम समकितवंते ग्रह्यो ॥ बुद्ध० ॥ शास्त्र सकल समुदाय ॥ रूचि० ॥ १ ॥ द्विपायन श्रेणीक भणी ॥बुद्ध०॥ वासुदेव पेढाल ॥ रुचि० ॥ अविरतिने पण सुखी करुं ॥ बुद्ध० ॥ मुज विण कवण आधार ॥ रुचि० ॥ २ ॥ दश मिथ्यात्वगिरी भंजवा ॥ बुद्ध० ॥ पवि सम हुं समर्थ ॥ रुचि० ॥ शुभ दो आतम

भावसुं ॥ बुद्ध० ॥ जीन पदवी मुज हाथ ॥ रुचि० ॥ ३ ॥ समकित अंक विणा सहु ॥ बुद्ध० ॥ किरियादिक बिन्दु रुप ॥ रुचि० ॥ अंगारमर्दक संबंधथी ॥ बुद्ध० ॥ समजो मुज स्वरुप ॥ रुचि० ॥ ४ ॥ कृष्णपखीओ अनादिनो ॥ बुद्ध० ॥ मुजथी मीटे ततखेव ॥ रुचि० ॥ शुकलपखीयो तत्र थयो ॥ बुद्ध० ॥ मिटे अनादि भव सेव ॥ रुचि० ॥ ५ ॥ वरस हजार किरिया गई ॥ बुद्ध० ॥ कुंडरीकनी अकाज ॥ रुचि० ॥ मुजविण पुर्वधर गया ॥ बुद्ध० ॥ आवे निगोदमां बाज ॥ रुचि० ॥ ६ ॥ पूर्व बद्धायु गतदंसणी ॥ बुद्ध० ॥ बे त्रिण समकितवंत ॥ रुचि० ॥ वैमानिक पदवी लहे ॥ बुद्ध० ॥ इम महा- भाष्य कहंत ॥ रुचि० ॥ ७ ॥ जीव प्रदेशे पुदगल रह्या ॥ बुद्ध० ॥ मिथ्यातना जे समस्त ॥ रुचि० ॥ तेह मीटे जे शुद्धता ॥ बुद्ध० ॥ तेहीज समकित वस्त ॥ रुचि० ॥ ८ ॥ समकितने भावे हुवे ॥ बुद्ध० ॥ दर्शन सही गुरु देव ॥ रुचि० ॥ अगणित महिमा माहरो ॥ बुद्ध० ॥ समकित दश रुचि सेव ॥ रुचि० ॥ ९ ॥ दशमांहि नव अस्तिता ॥ बुद्ध० ॥ स्याद्वाद रहे मुजमांह ॥ रुचि० ॥ यथार्थ वस्तु हुं ग्रहुं ॥ बुद्ध० ॥ आठ पक्षथी उछांह ॥ रुचि० ॥ १० ॥ समकित मीटे चारित्र नही ॥ बुद्ध० ॥ आवश्यक मांहे वखाणी ॥ रुचि० ॥ समकित तेहज चरण छे ॥ बुद्ध० ॥ पेहेला अंगनी वाणी ॥ रुचि० ॥ ११ ॥ समकितनी सेवा सारी ॥ बुद्ध० ॥ नही मिथ्यामतिराज ॥ रुचि० ॥ खट उपमान छे माहरे ॥ बुद्ध० ॥ सद्दह्यो मुनिराज ॥ रुचि० ॥ १२ ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ आज हजारी ढोलो प्राहुणो ॥ ए देशी ॥

॥ हवे किरियावादी कहे मन रुली, न गणे ज्ञाननो गुण सुख दाइ ॥ साजन सुणीयेहे ॥ वांझणी सुत रंक राजवी, कीसी सुपने ज्ञान वडाइ ॥ सा० ॥ नरहर ना नमवारे, संयम धारीने ॥ १ ॥ आंकणी ॥ ज्ञानथी फल भोग नवि लहे, किरियाविण कोइक जीव ॥ सा० ॥ रसवती जल गुण जाणतां, तृप्ति नवि होये अतीव ॥सा० न० ॥ २ ॥ किरिया विण पंथते नवी घटे, विचरे जलनिधि तरे ॥ सा० ॥ नटणी निज किरिया विना, जनरंजन कहो कीम करे ॥ सा० ॥ न० ॥ ३ ॥ शत्रुंजय महात्म्यमां कह्युं, मुनि वेष ते नमवो उछांहि ॥ सा० ॥ लिंग देखीने भावे प्रणमीया, सचिव उदय गुणग्राही ॥ सा० ॥ न० ॥ ४ ॥ भरतने केवल उपनो, लिंग विण नमीया नहीं देव ॥ सा० ॥ कहे उपदेश एक संबंधनो, असुच्चा केवली ततखेव ॥ सा० ॥ न० ॥ ५ ॥ ज्ञाननुं फल विरति कह्युं, बहुविध शास्त्रमझार ॥ सा० ॥ चारित्र महाराजा तणा, ज्ञान समकित दो प्रतिहार ॥ सा० ॥ न० ॥ ६ ॥ गति चारमां समकित पामीये, नरगतिमांहि संयम सिद्ध ॥ सा० ॥ किरियानय शास्त्रनो अंग छे ॥ निर्युक्तिना वचन प्रसिद्ध ॥ सा० ॥ न० ॥ ७ ॥ सर्व संवरी किरिया विना, ज्ञानने सुगति न होय ॥ सा० ॥ अनंतर कारण हु सही, तेह धुर सिद्धा सहु कोय ॥ सा० ॥ न० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ जीनवर मंदिर सयल महियलमां, सोवन रयण मंडावेजी ॥

एक दिवसना चरण समावड, कह्यो ते किम करी थावेजी ॥ आदर जीव किरिया गुण मनोहर, म करीश वाद विवादजी ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ केवलीने पण एक संयमनुं, स्थानक स्थिर रहे शुद्धजो ॥ सकल प्रदेश स्थिरतारुप चारित्र, सिद्ध प्रभुने कहे बुद्ध जी ॥ आदर० ॥ २ ॥ एक वरसना संयमसुखमां, अनुत्तर सुरसुख थावेजी ॥ ए पण व्यावहारिक नय वचन छे, क्षणमांहे श्रेणी मंडावजी ॥ आदर० ॥ ३ ॥ एक दिवसनी किरियापालक, संप्रति नरपति कीधोजी ॥ हरि नृपने नवयाम क्रियाए, पांचमे अनुत्तर सिधोजी ॥ आदर० ॥ ४ ॥ चार कषाय मीटे संयम होय, किरियाए महा लब्धिजी ॥ दशार्रसिह सत्यकीने अधोगति, जो नहीं किरिया सबंधीजी ॥ आदर० ॥ ५ ॥ अक्रियावादी दशाचूर्णीमां, कृष्णपखीओ जीव नयमांजी ॥ क्रियावादी शुकल पखीओ, जिन उपदेशे महिमाजी ॥ आदर० ॥ ६ ॥ योग व्यापार नहि जो सिद्धने, तो किरिया किम व्यापेजी ॥ सघला नरनुं सार संयम छे, जीन गणधर कह्युं आपेजी ॥ आदर० ॥ ७ ॥ खर जिम चंदन भार वहे बहु, तस फल भोग न थावेजी ॥ दीपक सहस कर्यां पण अंधथी, कुण कारज सोहावेजी ॥ आदर० ॥ ८ ॥ दशार्णभद्रने नमीआ सुरपति, जो किरियाए गुणवंताजी ॥ मुज अवदात अनेक छे जगमां, धारो भवि जयवंताजी ॥ आदर० ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥ ७ ॥ कोइलो पर्वत धुंधलोरे ॥ ए देशी ॥

॥ एम निज निज मत थापता हो लाल, आव्या जिणेसर

पासरे ॥ वालेसर ॥ करुणाकारक उपदिशे हो लाल ॥ अनुपम वचन विलासरे ॥ वालेसर ॥ जयो जयो जिनवर जगद्गुरु हो लाल ॥ जेहथी मीटे भव पासरे ॥ वा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ दंसण सहित ज्ञानी कह्या हो लाल, देशविराधक साचरे ॥ वा० ॥ ज्ञान रहित किरिया करे हो लाल, तो पण विराधक वाचरे ॥वा०॥ ॥ ज० ॥ २ ॥ देश देश उपगारीआ हो लाल, समुदाय सिद्धि लहंतरे ॥ वा० ॥ तीन समूहे नेह उपजे हो लाल ॥ बिन्दु बिन्दु सरहुंतरे ॥ वा० ज० ॥ ३ ॥ त्रिण भुवनना योगथी हो लाल, पूरण लोक कहेवायरे ॥ वा० ॥ केम ते एकमां था- पीये हो लाल, एक सिथे तृप्ति न थायरे ॥ वा० ज० ॥ ४ ॥ ज्ञान समकित धोरी वहे हो लाल, संयम रथ सुविशालरे ॥ वा० ॥ बेसी जिनपंथे चढया हो लाल, थाशे ते परम नि- हालरे ॥ वा० ॥ ज० ॥ ५ ॥ निज निज पद प्राप्ति सुधी हो लाल, ज्ञानाचारादिक सेवरे ॥ वा० ॥ इम शुभ परिणामे करी हो लाल, वेगे होय शिववेदरे ॥ वा० ॥ ज० ॥ ६ ॥ दंसण ज्ञानमां भेलवी हो लाल, ज्ञान क्रियाये कही सिद्धरे ॥ वा० ॥ पंगु अंधो नर दो मले हो लाल, मनह मनोरथ कीधोरे ॥ वा० ॥ ज० ॥ ७ ॥ जेटला वचन विचार छे हो लाल, तेटला नयना वादरे ॥ वा० ॥ सहु अंतर प्रीति करे हो लाल, सुणी वीरना व- चन जे स्वादरे ॥ वा० ॥ ज० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ ८ ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ श्रीमहावीरजीना गुण गावो, संशय मनना मिटावोरे, मुक्ताफलनो थाल भरीने, प्रभुजीना ज्ञान वधावोरे ॥ श्री० ॥ ॥ १ ॥ आ समये श्रुतज्ञानी मोटा, शुद्ध स्वरुप समजावोरे ॥ ज्ञानीनो जे विनय सेवे, तो अतिचार न थावेरे ॥ श्री० ॥ २ ॥ आवश्यकादिक ग्रंथ अनुसारे, रचना करी मनोहाररे ॥ हिनाधिक निजबुद्धि कहेवाय, ते श्रुतधर सुधारीरे ॥ श्री० ३ ॥ मुनि कर सिद्धि चंद्रजी वरसे, आठम शुदी भले भावेरे ॥ त्रणसें त्रीस कल्याणक ए दिन, त्रीस चोवीसीना थावेरे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पेहेला पांच जीणंद नमि नेमि, सुव्रत पास सुपासरे । दश जिननां अगीयार कल्याणक, ए दिवसे थया खासरे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ अडसिद्धि बुद्धि दायक एदीन, स्तवन रच्युं प्रमाणरे ॥ भणशे गुणशे जेह सांभळशे, तस घर कोडि कल्याणरे ॥ श्री० ॥ ६ ॥

॥ कलश ॥ इम वीर जिनवर प्रमुख केरो, अढीलाख उदार ए, जिनबिंब स्थापी सुजस लीधो, दानसूरी सुखकार ए ॥ तस पाट परंपर तपागच्छे, सोभाग्य सूरी गणधार ए ॥ तास शिष्य लक्ष्मीसूरि पभणे, संघने जयजयकार ए ॥ १ ॥

॥ अथ श्री पांचकारणनुं स्तवन ॥

॥ दोहा ॥ सिद्धारथ सुत वंदीये, जगदीपक जिनराय ॥

वस्तु तत्त्व सवि जाणीये, जस आगमथी आज ॥ १ ॥ स्याद्वादथी संपजे, सकल वस्तु विख्यात ॥ सप्तभंगी रचना विना, बंध न बेसे वात ॥ २ ॥ वाद वदे सहु जूजुआ, आप आपणे ठाम ॥ पूरण वस्तु विचारतां, कोइ न आवे काम ॥ ३ ॥ अंध पुरुष एइ गज ग्रही, अवयव एकेक ॥ दृष्टिवंत लहे पूर्ण गज, अवयव मली अनेक ॥ ४ ॥ संगति सकल नये करी, जुगति योग शुद्धबोध ॥ धन्य जिनशासन जग जयो, जिहां नहि किश्यो विरोध ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ राग आशावरी ॥

॥ श्री जिनशासन जय जगकारी, स्याद्वाद शुद्धरूप रे ॥ नय एकांत मिथ्यात निवारण, अकल अभंग अनूपरे ॥ श्री० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कोइ कहे एक कालतणे वश, सकल जगत गति होय रे ॥ काले उपजे काले विणुंसे, अवर न कारण कोयरे ॥ ॥ श्री० ॥ २ ॥ काले गर्भ धरे जग वनिता, काले जन्मे पुतरे ॥ काले बोले काले चाले, काले झाले घरसुत्तरे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ काले दुधथकी दहीं थाये, काले फल परिपाकरे ॥ विविध पदारथ काल उपाये, काले सहुं थाय खाखरे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जिन-चोवीश बार चक्रवर्ति, वासुदेव बलदेवरे ॥ काले कवलित कोइ न दीसे, जसु करता सुर सेवरे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ उत्सर्पिणी अवसर्पिणी आरा, छए जुइ जुइ भातरे ॥ षट ऋतुकाल विशेष विचारो, भिन्न भिन्न दिन रातरे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ काले बाल विलास

मनोहर, यौवने काला केश रे ॥ वृद्ध पणं वली पली वपु अति दुर्बल, शक्ति नहि लव लेशरे ॥ श्री० ॥ ७ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ गिरुआ गुण वीरजी ॥ ए देशी ॥

॥ तव स्वभाववादी वदेजी, काल किस्युं करे रंक ॥ वस्तु स्वभावे नीपजे जी, विणसे तिमज निःशंक ॥ सुविवेक विचारी, जुओ जुओ वस्तु स्वभाव ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ छते योग जोबनवती जी, वांझणी न जणे बाल ॥ मुच्छ नहिं महिला मुखे जी, कर तल उगे न बाल ॥ सु० ॥२॥ विण स्वभाव नवि निपजे जी, केम पदारथ कोई ॥ आंब न लागे लींबडे जी, बाग वसंते जोय ॥ सु० ॥ ३ ॥ मोर पिच्छ कुण चीतरेजी, कोण करे संध्या रंग ॥ अंग विविध सवि जीवनां जी, सुंदर नयन कुरंग ॥ सु० ॥ ॥ ४ ॥ कांटा बोर बबुलना जी, कोणे अणीयाला कीध ॥ रुप रंग गुण जूजुआ जी' तरु फल फुल प्रसिद्ध ॥ सु० ॥ ५ ॥ विषधर मस्तक नित्य वसे जी, मणि हरे विष ततकाल ॥ पर्वत स्थिर चल वायरोजी, उर्ध्व अग्निनी ज्वाल ॥ सु० ॥ ६ ॥ मत्स्य तुंब जलमां तरे जी, बुडे काग पहाण ॥ पंखी जात गयणे फिरे जी, इणी परे सयल विनाण ॥ सु० ॥ ७ ॥ वायु सुंठथी उपशमेजी, हरडे करे विरेच ॥ सीजे नहिं कण कांगडुं जी, शक्ति स्वभाव अनेक ॥ सु० ॥ ८ ॥ देश विशेषे काष्ठना जीं, भूमिमां थाय पहाण ॥ शंख अस्थिनो नीपजे जी, क्षेत्र स्वभाव प्रमाण ॥ सु० ॥ ॥ ९ ॥ रवि तातो शशी शीतलोजी, भव्यादिक बहु भाव ॥ छप

द्रव्य आप आपणांजी, न तजे कोइ स्वभाव ॥ सु० ॥ १० ॥
इति स्वभाववाद ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ कपुर होय अति उजलोरे ॥ ए देशी ॥

॥ काल किस्युं करे बापडो जी, वस्तु स्वभाव अकज्ज ॥ जो नवि होय भवितव्यताजी, तो किम सीझे कज्जरे ॥ प्राणी मकरो मन जंजाल ॥ भावीभावनिहालरे ॥ प्रा० ॥ म ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जल निधि तरे जंगल फरेजी, कोडी जतन करे कोय, अण भावी होवे नहीं जी, भावी होयते होयरे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ आंबे मोर वसंतमांजी, डाले केई लाख ॥ केईखर्या केई खाखटीजो, केई आधां केई साखरे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ बाउल जेम भवितव्यताजी, जिण जिण दिशी उजाय ॥ परवश मन माणस तणुजो, तृण जेम पुंठे धायरे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ नियति वशे विण चिंतव्युंजी, आवि मले तत काल ॥ वरसा सोनुं चिंतव्युंजी, नियति करे विसरालरे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ ब्रह्मदत्त चक्री तणांजी, नयण हणे गोवाल ॥ दोय सहस्स जस देवताजी, देहतणा रखवालरे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ कोकुही कोयल करेजी, केम राखी शके प्राण ॥ आहेडी शर ताकीयोजी, उपर भमे सींचाणरे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ आहेडी नागे डश्योजी, बाण लाग्यो सिंचाण ॥ कोकुहो उडी गयोजी, जुओ जुओ नियति प्रमाणरे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ शस्त्र हण्यां संग्राममांजी, राने पड्या जीवंत ॥ मंदिरमांथी मानवीजी, राख्याही न रहंतरे ॥ प्रा० ॥ ९ ॥ इति भवितव्यता वाद ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ राग मारुणी मनोहर हीरजीरे ॥

॥ काल स्वभाव नियत मति कुडी, कर्म करे ते थाय ॥ कर्मे निरय तिरिय नर सुरगतिजी, जीव भवांतरे जाय ॥ चेतन चेतीयेरे कर्म समो नहीं कोय ॥ चेतन० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कर्मे राम वस्या वनवासे, सीता पामे आल ॥ कर्मे लंका पति रावणनुं, राज थयुं विसराल ॥ चे० ॥ २ ॥ कर्मे कीडी कर्मे कुंजर, कर्मे नर गुणवंत ॥ कर्मे रोग सोग दुःख पीडित, जनम जाय विलपंत ॥ चे० ॥ ३ ॥ कर्मे वरस लगे रिसहेसर, उदक न पामे अन्न ॥ कर्मे वीरने जुओ योगमांरे, खीला रोप्या कन्न ॥ चे० ॥ ४ ॥ कर्मे एक सुखपाले बेसे, सेवक सेवे पाय ॥ एक हय गय रथ चढया चतुरनर, एक आगळ उजाय ॥ चे० ॥ ५ ॥ उद्यम मानी अंधतणी परे, जग हींडे हा हुंतो ॥ कर्म बली ते ल्हे सकलफल, सुखभर सेजे सुतो रे ॥ चे० ॥ ६ ॥ उंदर एके कीधो उद्यम, करंडीयो कर कोले ॥ मांहे घणा दिवसनो भूख्यो, नाग रह्यो दुःख डोलेरे ॥ चे० ॥ ७ ॥ विवर करी मूषक तस मुखमां, दीये आपणो देह ॥ मार्ग लइ वन नाग पधार्या, कर्म मर्म जुओ एह ॥ चे० ॥ ८ ॥ इति कर्म विवाद ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥

॥ श्रावण शुद दिन पंचमी ए—ए देशी. ॥

॥ हवे उद्यम वादी भणे, ए चारे असमर्थ तो ॥ सकल पदार्थ साधवाए, एक उद्यम समर्थ तो ॥ १ ॥ उद्यम करतां मानवीए, शुं नवि सोझे काज तो ॥ रामे रयणायर तरीए, लीधुं लंका राज्य

तो ॥ २ ॥ कर्म नियत ते अनुसरे ए, जेहमां शक्ति न होय तो ॥ देउल वाघ मुखे पंखीयांए, पीयु पेसंता आयतो ॥ ३ ॥ विण उद्यम केम नीकले ए, तील मांहेथी तेल तो ॥ उद्यमथी ऊंची चढे ए, जुओ एकेंद्रिय वेल तो ॥ ४ ॥ उद्यम करतां एक समे ए, जे नवि सीझे काज तो ॥ तेह फरी उद्यमथी हुवेए, जो नवि आवे वाजतो ॥ ५ ॥ उद्यम करी ओरथा विना ए, नवो रंधाये अन्न तो ॥ आवी न पडे कोलीयोए, मुखमां पखे जतन तो ॥ ६ ॥ कर्म पुत्त उद्यम पिताए, उद्यमे कीधां कर्म तो ॥ उद्यमथी दुरे टले ए, जुओ कर्मनो मर्म तो ॥ ७ ॥ दृढप्रहारी हत्या करीए, कीधां पाप अनंत तो ॥ उद्यमथी खट मासमां ए, आप थयो अरिहंत तो ॥ ८ ॥ टीपि टींपे सर भरे ए, कांकरे कांकरे पाल तो ॥ गिरि जेवा गढ नीपजे ए, उद्यम शक्ति निहाळ तो ॥९॥ उद्यमथी जळ बिंदुओ ए, करे पाषाणमां ठाम तो ॥ उद्यमथी विद्या भणे ए, उद्यम जोडे दाम तो ॥ १० ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ ए छंडी कीहां राखी ॥

॥ ए पांचे नय वाद करंता, श्री जिन चरणे आवे ॥ अमिय सरस जिन वाणी सुणीने, आनंद अंग न मावे रे ॥ प्राणी समकित मति मन आणो॰ नय एकांत म ताणोरे ॥ प्रा० ॥ ते मिथ्यामति जाणोरे ॥ प्राणी समकित मति मन आणो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ ए पांचे समुदाय मिल्या विण, कोई काज न सीझे ॥ अंगुलीयोगे कर तणी परे, जे बुझे ते रीझेरे ॥ प्राणी ॥ स० ॥ २ ॥ आग्रह

प्राणी कोइ एकने, एहवां दीजे वडाइ ॥ पण सेना मिली सकल रणांगण, जीव सुभट लडाईरे ॥ प्राणी ॥ स० ॥ ३ ॥ तंतु स्वभावे पट उपजावे, काल क्रमे रे वणाये ॥ भवितव्यता होये तो नीपजे, नहीं तो विघ्न घणांयरे ॥ प्राणी ॥ स० ॥ ४ ॥ तंतु वाय उद्यम भोक्तादिक, भाग्य सकल सहकारी ॥ एम पांचे मलो सकल पदारथ, उत्पत्ति जुओ विचारीरे ॥ प्राणी ॥ स० ॥ ५ ॥ नियति वशे हलु करमो थईने, निगोद थकी नीकलीयो ॥ पुण्ये मनुज भवादिक पामी, सद्गुरुने जई मलीयोरे ॥ प्राणी ॥ स० ॥ ६ ॥ भव स्थितिनो परिपाक थयोतव, पंडित वीर्य उलसीयो, भव्य स्वभावे शिवगति पामी, शिवपुर जइने वसीयो रे ॥ प्राणी ॥ स० ॥ ७ ॥ वर्द्धमान जिन एणी परे विनये, शासन नायक गायो ॥ संघ सकल सुख होये जेहथी, स्याद्वाद रस पायोरे ॥प्राणी॥ स० ॥ ८ ॥

॥ कलश ॥ इम धर्म नायक, मुकितदायक, वीर जिनवर संथुण्यो ॥ सय सत्तर संवत वन्हि लोचन, वर्ष हर्ष धरी घणा ॥ श्री विजयदेव सुरिंद पटधर, श्री विजयप्रभ सुरिंद ए ॥ श्री कीर्तिविजय वाचक शिष्य इणिपरे, विनय कहे आणंद ए ॥ १ ॥

॥ अथ श्री चौद गुणस्थानकनुं स्तवन ॥

॥ प्रथम गोवाला तणे भवेजी—ए देशी. ॥

॥ श्री शंखेश्वरपुर धणीजी, प्रणमी पास जिणंद ॥ नाम जपतां तेहनुंजी, आपे परमानंद ॥ भविक जन सांभलो एह विचार ॥

कर्म ग्रंथ मांहे कह्योजी, ए सघलो अधिकार भविक० ॥ १ ॥ नाणावरणीय जाणीयेजी, बीजुं दर्शनी होय ॥ त्रीजुं वेदनीय भाखीयुंजी, मोहनीय चोथुं जोय ॥ भ० ॥ २ ॥ आयु कर्म वली पांचमुं जी, छठुं नाम विचार ॥ गोत्र कर्म ते सातमुं जी, आठमुं अंतराय ॥ भ० ॥ ३ ॥ मति श्रुत अवधि मन केवलुं जी, ज्ञानावरणीयरे भेद ॥ चक्खु अचक्खु अवधि केवलो जी, दर्शनना ए भेद ॥ भविक० ॥ ४ ॥ निद्रा पहेली निद्रानिद्र बीजी, त्रीजी प्रचला वखाण ॥ प्रचला प्रचला चोथी कहीजी, थिणद्धि पंचम जाण ॥ भ० ॥ ५ ॥ दर्शनावरणीय तणाजी, ए नव भेदज धार ॥ शाता अशाता वेदनीजी, जाणो ते निरधार ॥ भ० ॥ ६ ॥ भेद अट्ठावीस मोहनीजी, समकित मोह मिच्छत्त ॥ क्रोध मान माया सहीजी, लोभ ए सेवे नित ॥ भ० ॥ ७ ॥ संज्वलन प्रत्याख्यानीओजी, अप्रत्याख्यान विशेष ॥ चोथो अनंतानुं बंधियोजी, प्राणी-तूं उवेख ॥ भ० ॥८॥ प्रत्येके एक एकनाजी, भेद कह्या अरिहंत ॥ च्यार च्यार करतां सोल हूवेजी, टालो ते गुणवंत ॥ भ० ॥ ९ ॥ हास्य रति अरति भय परिहरजी, सोग दुगंछा टाल ॥ नर स्त्री नपुंसक वेदथीजी, प्राणी तूं मन वाल ॥ भ० ॥ १० ॥ देवता नर तिरि नारकीजी, आयुभेद विशाल ॥ कपुर विजय बुद्धराजथीजी, मणिविजय रंगरसाल ॥ भ० ॥ ११ ॥ इति चारकर्मपयडी प्रथम भाग ॥

॥ ढाल ॥ २.॥ बे कर जोडी तामरे ॥ ए देशी ॥

नाम करमनो भेदरे, एकसो त्रणसुं ॥ ते विवरी हवे कहुं ए ॥ चार गतिनां नामरे, एकेंद्रि आदि ॥ पंचेंद्रि पांच जाति कहीए ॥१॥ औदारिक वैक्रियरे, आहारक तैजस, पांचमुं कार्मण तनु सहीए ॥ अंग उपांग ते जाणीरे, अंगोपांग त्रीजुं, औदारिक पंच बंधना ए ॥ २ ॥ संघातन विचारीरे, पंचभेदे करी, औदारिक आदिगणो ए ॥ वज्रऋषभ नाराच रे, ऋषभनाराच, नाराच अर्ध कीलीका ए ॥ ३ ॥ छेवटुं संघेणरे छठुं भाखीउं, षट संस्थानज जीवना ए ॥ सम चउरस्त्र न्यग्रोध रे, सादिक कुब्ज, वामन हुंडक भाखीओ ए ॥ ४ ॥ कालो निलो रातोरे, पीलो उजलो, वर्ण पांचे जाणीएरे ॥ सुरभि दुरभि गंधरे, पंचरस कह्या, तीखो कडवो कसायलो ए ॥ ५ ॥ खाटो मीठो होयरे, फरस आठजे, गुरु लघु मृदु खर शीतलो ए ॥ उष्ण स्निग्ध रुक्षरे, अनुपुर्वी, चारे गतिनी जुजुवीरे ॥ ६ ॥ शुभ अशुभ गति दोयरे, ते वली वरणवी, पिंड प्रकृति चौदस हवीए ॥ हवे आठ प्रत्येक, पराघात उसास, आताप उद्योत अगुरुलहु ए ॥ ॥ ७ ॥ तीर्थंकर निर्माणरे, पराघात कर्म्म, त्रस दशको कहुं सुंदरु ए ॥ त्रस बादर पज्जनरे, प्रत्येक थीर शुभ, सुभग सुस्वर आदे यशा ए ॥ ८ ॥ थावर सुहूम अपज्जरे, साधारण अथिर ॥ असुभ दुभग सानसुं ए ॥ दुस्वर अनादेयरे, अयश ए दश, स्थावर इणिपरे जाणि ए ॥ ९ ॥ एटले त्राणुं भेदरे, बंधन पांचनां, सत्ताये, पन्नर भेद हुवे ए ॥ गोत्र करमना भेदरे, उंच अने नीच, अंतराय वली

आठमुं ए ॥ १० ॥ दान लाभ अंतरायरे; भोग उपभोग, वीर्यां-
तराय ए पांचमुं ए ॥ एकसो अठावनरे, पयडी कर्मनी, मणिविजय
बुध उपदीशी ए ॥ ११ ॥ इति श्रीकर्म पयडी द्वितीय भास ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ केवल नाणे जाणतोरे लोल ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञान दिवाकर भाखीओरे लोल ॥ गुणस्थानक विचाररे
॥ सुगुण नर ॥ लेश थकी हुं वरणवुं रे लोल, शास्त्र तणे अनुसार
रे सुगुण नर ॥१॥ वारो मिथ्यात्वने आवतोरे लोल, जेम सीझे सवि
कामरे ॥ सुगुण० ॥ प्रमादे करी जीवनेरे लोल, ओघ थकी बंध
होयरे ॥ सुगुणनर ॥ पयडी एकशत वीसनीरे लोल, ए परमारथ
जोयरे ॥सु०॥ वा० ॥२॥ एकसो बावीस आगलीरे, पयडी उदये थायरे
॥सु०॥ उदय नाव्यु जे होवेरे लोल, ते उदीरणा कहेवायरे ॥ सु०॥
॥ वा० ॥ ३ ॥ एहना भेद वळी तेटलारे लोल, सत्ताना वली भेदरे ॥
॥ सु० ॥ अट्ठावनने एकसोरे लोल, थायते भुवेदेशरे ॥ सु० ॥ वा०॥
॥ ४ ॥ पेहेले गुणठाणे हुवेरे लोल ॥ एकसो सत्तर बंधरे ॥ सु० ॥
तीर्थंकर नाम मेलतारे लोल, आहारक दोय अबंधरे ॥ सु० ॥ वा०
॥ ५ ॥ पयडी मिश्र समकित सुणोरे लोल, आहारक द्विक जिन नामरे
॥ सु० ॥ उदय नहीं ए पांचनोरे लोल, गुणठाणे पेहेले जामरे ॥सु०॥
॥ वा० ॥ ६ ॥ कर्म स्थिति सत्ता कहीरे लोल, पयडी शत अडचा-
लरे ॥ सु० ॥ गुणठाणे पेहेले सहीरे लोल, भाखी देव दयालरे ॥
सु० ॥ वा० ॥ ७ ॥ इणे गुणठाणे प्राणीयारे लोल, नरक निगोद
मोझार रे ॥ सु० ॥ कहेतां पार न उपजेरे लोल, ते जाणे किर-
तार रे ॥ सु० ॥ वा० ॥ ८ ॥ एह मिथ्यात्वथी टालियारे लोल,

श्री जिन जगदाधाररे ॥ सु० ॥ कर्पुरविजय गुरु रायथीरे लोल, लहीये भवजल पाररे ॥ सु० ॥ वा० ॥ ९ ॥ इति श्री प्रथम गुण स्थानक भास ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ कपुर होवे अति उजलुंरे ॥ ए देशी ॥

॥ बीजुं गुण ठाणुं सुणोरे, सास्वादान तस नाम ॥ समकित वमन पछी हूवेरे, जेहथी न सरे कामरे ॥ साजन छंडोए परिणाम, जिम लहो गुण अभिरामरे ॥ सा० ॥ १ ॥ नारयत्रिक जाति चउरे, थावर चउहुंड संस्थान ॥ आतप नपुंसक छेवठुंरे, मिच्छत ए सोल मानरे ॥ सा० ॥ २ ॥ एकसो एक पयडी तणोरे, बंधन एणे गुण ठाण ॥ सूक्ष्म त्रिक आतप वलीरे, मिथ्यात्व पंच वखाणरे ॥ सा० ॥ ३ ॥ नरकनी अनुपूर्वीरे, एकसो अगिआर प्रमाण, उदय कह्यो पयडी तणोरे, उदीरणा तिम जाणरे ॥ सा० ॥ ४ ॥ सत्ताए एकशत उपरेरे, पयडी सडतालीस ॥ जिननाम कर्म तणी तिहांरे, न कही सत्ता जगदीशरे ॥ सा० ॥ ५ ॥ सास्वादन गुण ठाणा तणारे, अर्थ कह्यो लव लेश ॥ मणिविजय बुध एम कहेरे, सुणजो छांडी कलेशरे ॥ सा० ॥ ६ ॥ इति द्वितीय गुण स्थानक भास ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ गणधर दशपूर्वधर सुंदर ॥ ए देशी ॥

॥ मिश्र गुणठाणुं हवे त्रीजुं, भाख्युं त्रिभुवनभाणरे ॥ अंतर मुहुर्त स्थिति कही जेनी, सुणज्यो चतुर सुजाणरे ॥ मिश्र० ॥ १ ॥ तिर्यंच त्रिक थिणद्धी त्रिक, दुर्भग त्रिक वली कहीयेरे ॥ च्यार अ-

नंतानुबंधी वीरुआ, संठाण च्यार मध्य लहीयेरे ॥ मिश्र० ॥ २॥ पेहेलुं छेलुं संघयण टाळी, निचगोत्र उद्योत नाम रे॥ अशुभ विहायो गति वेद स्त्रीनो, ए पयडीनां नाम रे ॥ मिश्र० ॥ ३ ॥ गुणठाणे त्रीजे ए पचवीस, पयडी बंध न थाय रे ॥ उदये चार अनंतानु बंधी, थावर एकेंद्रि कहायरे ॥ मिश्र० ॥ ४ ॥ विगलेन्द्रिय त्रिक तिरी नर सुरनी, अनुपुर्व्वी नवि लहीये रे॥ मिश्रोदय मिश्र पयडी अंतज, उदये एकसो कहीये रे ॥ मिश्र०॥ ५ ॥ उदीरणा वळी उदय तणी-परे, जाणो भविजन प्राणी रे ॥ सत्ताये सास्वादनतणी परे, भाखे केवल नाणी रे ॥ मिश्र० ॥ ६ ॥ भाव अनेक त्रीजे गुणठाणे, कहेतां पार न आवे रे ॥ कपूरविजय बुध चरण पसाये, मणिविजय आनंद पावे रे ॥ मिश्र० ॥ ७ ॥ इति श्री तृत्रीय गुण स्थानक भास ॥

॥ ढाल ॥ ६ ॥ सुण मेरी सजनी रजनी न जावेरे ॥ ए देशी ॥

॥ हवे गुणठाणुं समकित धरीये रे, शिवरमणी जिम सहेजे वरीये रे ॥ ते समकितनां पांचज भेद रे, बोले आगम जे ध्रुवेदरे ॥ हवे० ॥ १ ॥ जिन नामकर्म सुरनर आयु रे, बंधे सित्तोतेर कहेवाय रे ॥ समकित अनुपूर्वी चार रे, उदये एकसो चार विचार रे ॥ हवे० ॥ २ ॥ तेम उदीरणा आगम भाखी रे, सत्ता सुणज्यो जे हवे दाखी रे ॥ अपूर्वादिक चउगुणठाण रे, चार अनंतानुं बंधी जाण रे ॥ हवे० ॥ ३ ॥ तिरि नरयनुं आयु कहीये रे, एकसो बेतालीस सत्ता लहीये रे ॥ क्षपके समकित चार ठामरे, नरक तिरि

सुर आयु जाम रे ॥ हवे० ॥ ४ ॥ पयडी सोने पीस्तालीस रे, सातविना एकसो अडतीस रे ॥ नउमे अनिवृत्ति पेहेले भाग रे, सत्ता बोली श्री वीतरागरे ॥ हवे० ॥ ५ ॥ केवल नाणी भाख्यो धर्मरे, जेहथी लही शिवना शर्मरे ॥ ए त्रण तत्व सुधा जाणी रे, मणिविजय कहे आदरो प्राणीरे ॥ हवे० ॥ ६ ॥ इतिश्री चतुर्थ गुण स्थानक भास ॥

॥ ढाल ॥ ७ ॥ आज न हेजो रे दीसे नाहलो ॥ ए देशी ॥

॥ पंचमनाणी रे जिनवर इम कहे, देश विरति गुणठाण॥ सुधो श्रावक तेने जाणीये, जे धरे जिनवर आण ॥ पंचम० ॥ १ ॥ पेहेलुं संघयण नर त्रिक जाणीये, अप्रत्याख्यान कषाय ॥ तेहना भेद रे चार वखाणीये, औदारिक दो कहेवाय ॥ पंचम० ॥ २ ॥ ए दश पयडी रे बंधन नवि हुवे, देशविरति मोजार ॥ सतसट्ठि पयडी रे बंधज इहां सही, जोज्यो हृदय विचार ॥ पंचम० ॥ ३ ॥ उदय चार अपचखाणीया, अनुपूर्वी नर तिरियंच ॥ सुरत्रिक नरयत्रिक ते खट भण्या, वैक्रियदुग वली संच ॥ पंचम० ॥४॥ दुर्भग अनादेय अयश वली, सत्तर पयडी न होय ॥ सत्यासीनो रे उदय इहां कह्यो, तीम उदीरणा जोय ॥ पंचम० ॥ ५ ॥ सत्ता चोथा रे गुणठाणथी, जाणो चतुर सुजाण ॥ मणिविजय कहे नित्य जे ए धरे, तेने कोडी कल्याण ॥ पंचम० ॥ ६ ॥ इति पंचम गुणस्थानक भास ॥

॥ ढाल ॥ ८ ॥ कहे नायक सुणो महारी ॥ ए देशी ॥

॥ छठुं गुणठाणुं हवे, कहेतां हरख अपार रे, सुणो जिनवाणी रे ॥ प्रमत्तनाम छे जेहनुं, साधन कह्या निरधार रे ॥ सुणो भवी प्राणी रे ॥ १ ॥ बंध थकी निश्चय हुवे, त्रेसठी पयडी जाणिरे ॥ सुणो जिन वाणीरे ॥ प्रत्याख्याने चारनो, बंध नही इण ठाणेरे ॥ सुणो० ॥ २ ॥ उदयथकी हवे सांभळो, तिर्यंचगति तिरिआयु रे ॥ सुणो जिन० ॥ निच गोत्र उद्योतनो, प्रत्याख्यानी कषायरे ॥ सुणो० भ० ॥ ३ ॥ उदय नही ए आठनो, आहारक दोय उदार रे ॥ सुणो जि० ॥ ते भेळवतां एक्यासीनो, उदय कह्यो सुविचाररे ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ उदीरणाये अंत हुवे, साता असाता दोयरे ॥ सुणो जि० ॥ आहारक द्विक थीणद्धि त्रीक, नर आयु आठ ते जोयरे ॥ सु० ॥ ५ ॥ सत्ता समकितथी लहो, दाखी आगम साररे ॥ सुणो० ॥ कर्पुरविजय गुरुजी जयो, मणिविजय हितकाररे ॥ सुणो० भ० ॥६॥ इतिश्री छठुं प्रमत्त गुणस्थानक भास ॥

॥ ढाल ॥ ९ ॥ वसुधाधिपवंदी वळ्यो ॥ ए देशी ॥

श्री जिनवर इम उपदिशे, अप्रमत्त गुण ठाणरे ॥ सर्व विरति इहां कही, धारो मुनिगुण खाणरे ॥ श्री जिनवर इम उपदिशे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सोग अरति अथिर दुग, अयश अशाता केरोरे ॥ बंध नही इहां खटतणो, सुर आयुबंध अनेरोरे ॥ श्री० ॥२॥ एके उणो साठीनो, अहवा अट्ठावन बंधरे ॥ आहार युगल मांहि

मेलीए, बीजी पयडी अबंधरे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ उदय थकी छोतेर पयडी, थीणद्धी त्रिक दाखी रे ॥ आहाराद्विक ए पांचनो, उदय नही सूत्र साखी रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ अप्रमत्त आदि गुणठाणे, शाता अशाता नर आयरे, पयडी त्रण उणी करो, इम उदिरणा थायर ॥ श्री० ॥ ५ ॥ समकित चोथे गुण ठाणे, सत्ता तिहांथी पेखोरे ॥ मणिविजय बुध इम कहे, प्रमत्त गुणठाण उवेखोरे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ इति श्री सप्तम अप्रमत्त गुण स्थानक भास ॥

॥ ढाल ॥ १० ॥ पंथीडा संदेसडो ॥ ए देशी ॥

॥ गुणठाणुं हवे आठमुं, भाख्युं श्री जिनराज ॥ निवृत्ति नामे जाणीए, जेहथी सीझे काज ॥ १ ॥ साधु सहु तुमे चित्तधरो, आणी उलट अंग ॥ अध्यवसाय विशेषथी, हुवे एहसुं चंग ॥ साधु० ॥ २ ॥ सात भाग करी तेहना, पेहेले अट्ठावन ॥ निद्रा दोयनो अंत करे, पण भाग छपन्न ॥ सा० ॥ ३ ॥ सुरदुग पंचेंद्रिय शुभगति, त्रस नव निरधार ॥ चार शरीर उरलविना, दो अंगोपांग उदार ॥ सा० ॥ ४ ॥ सम चउरंस निर्माणने, जिननाम सुफार ॥ वर्णचार वळी कह्या, अगुरु लहु चार ॥ सा० ॥ ५ ॥ ए त्रीस पयडी अंतकरे, छठे भाग विचार ॥ बंध कह्यो छवीसनो, सातमो भाग मोझार ॥ सा० ॥ ६ ॥ हास्य रति भय दुगंछानो, अंत जिननें वयण ॥ उदय थकी समकित वली, छेल्लां त्रण संघयण ॥ सा० ॥ ७ ॥ उदय नहीं ए चारनो, बोहोतेर उदये जाण ॥ उदीरणा अप्रमत्तथी, भाखी केवल नाण ॥ सा० ॥ ८ ॥ चोथा समकित गुण

ठाणथी, सत्ता दिलमें आणी ॥ कर्पुरविजय गुरु राजथी, मणि वदे इम वाणी ॥ सा० ॥ ९ ॥ इतिश्री अष्टम निवृत्तिगुणस्थानक भास ॥

॥ ढाल ॥ ११ ॥ निदरडी वेरण हुइरही ॥ ए देशी ॥

॥ अनिवृत्ति नवमुं आदरु, गुणठाणुं हो मुनिवर सुखकार के ॥ अंतरमुहूर्त्त जेहनी, स्थिति जाणो हो शास्त्रने अनुसार के ॥ अनिवृत्ति नवमुं आदरुं ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ बंध कह्यो बावीसनो, वली कीजे हो एहना पंच भाग के ॥ पुरुषवेद संज्वलन चारे, एकेके हो कीजे ए त्याग के ॥ अनि० ॥ २ ॥ उदय हुवे छासठीनो, हास्य रतिने हो वली अरति निवारके ॥ भयसोग दुगंछा खटतणो, नवि लही हो उदये विंचार के ॥ अनि० ॥ ३ ॥ उदीरणा त्रिसठीनी, सत्ता दाखी हो बीजा भाग मझारके ॥ थावर तिरि नरय दुग, आतपदुग हो थीण त्रक निरधारके ॥ अनि० ॥ ४ ॥ एकेंद्रिय विगल साधारण, ए सोलेहो सत्ता नवी होयके ॥ एकसो बावीस उपरे, बीजे भागे हो सत्ता तुं जोय के ॥ अनि० ॥ ५ ॥ त्रीजे भागे सांभलो, क्षय थाय हो बीयतीय कसाय के ॥ चोथे पांचमे खटभागे, सात आठमे हो एकसो चार थायके ॥ अनि० ॥ ६ ॥ नउमे सो त्रीण उपरे, नपुंसक हो स्त्री वेद खट हासके ॥ पुरुषवेद संज्वलन ए त्रण्ये, क्षय होवे हो भागे अनुक्रमे जासके ॥ अनि० ॥ ७ ॥ नवमा भागने छेहडे, मायानो हो प्रभु भाख्यो अंत के ॥ कर्पूरविजय गुरु राजनो, शिष्य पभणे हो प्रभु निजमननी खंति के ॥ अनि० ॥ ८ ॥ इतिश्री नवम गुण स्थानक भास ॥

॥ ढाल ॥ १२ ॥ देवतणी ऋद्धि भोगवी आव्यो ॥ ए देशी ॥

॥ सूक्ष्म संपराय नामे दशमुं, गुणठाणुं ते जाणि ॥ वरते परिणामे ए होवे, भाख्युं जिनवर भाणरे ॥ मुनिवर जोज्यो हृदय विचारी ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ बंध कह्यो इहां सत्तर पयडी, दर्शन कहीयां चार ॥ उंच गोत्र यश नाणावरणी, अंतराय दशवारोरे ॥ मुनि० ॥ २ ॥ ए सोले पयडो इणे ठाणे, गाले ते निरधार ॥ उदय कह्यो इहां साठ ज पयडी ॥ वेद त्रण निवारीरे ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ संज्वलन त्रिक ए छ पयडी, उदय नहीं इण ठाय ॥ उदीरणा सत्तावन जाणो, सत्ता सतदुग थायरे ॥ मुनि ॥ ४ ॥ संज्वलननो लोभ अंत करे इहां, जुओ सूत्र अनुसार ॥ कर्पुरविजय पंडित सुपसाये, मणि विजय जयकाररे । मुनि० ॥ ५ ॥ इतिश्री सूक्ष्मसंपराय गुण स्थानक भास ॥

॥ ढाल ॥ १३ ॥ व्रतनी मनसा जागे आगी ॥ ए देशी ॥

॥ हवेसुणज्यो भवियण प्राणो, श्री जिनवर केरी वाणी ॥ उपशांत मोह गुण ठाणे, एकादशमु ए जाणे ॥ १ ॥ बंधे कहोवे पयडी एक, आगमे जोइ सुविवेक ॥ शातावेदनीय बंध उदार, बीजी पयडी नहीं निरधार ॥ २ ॥ उदय थकी हवे सुणीये, एके उणी साठीज गणीए। लोभ संज्वलन केरो अंत, एणे ठाणे एहजसंत ॥३॥ उदीरणा तणो अधिकार, सांभलनां हरख अपार ॥ भाखी पयडी छप्पन जेह, मनमांहि आणो तेह ॥ ४ । सकल पंडित शिरदार, कर्पूरविजय सुखकार ॥ तस चरण पसायज पामी, मणिविजय कहे

सीरनामी ॥ ६ ॥ इति उपशांत मोह गुणस्थानक एकादशम भाव ॥

॥ ढाल ॥ १४ ॥ धिग् धिग् धिग् धिग् काया ॥ ए देशी ॥

॥ श्री जिनवर एम बोले, वाणी जे अमृत तोले हो ॥ सुणो मुनि समभावी ॥ क्षीण मोह गुण ठाण, द्वादशमुं गुणमणि खाण हो ॥ सुणो० ॥ १ ॥ बंध कह्यो साता केरो, उदये ते भेद अनेरो हो ॥ सुणो० ॥ ऋषभ नाराच दुग टाली, सत्तावन उदये निहाली हो ॥ सुणो० ॥ २ ॥ उदये छेल्ले बे भागे, निद्रा प्रचला नवि लाग हो ॥ सु० ॥ उदीरणा चोपन केरी, सत्ताये पयडी अनेरी हो ॥ सु० ॥ ३ ॥ छेल्ला दुगसमे जोय, एकसो एक पयडी होय हो ॥ सु० ॥ निद्रा प्रचला इहां अंत, नवाणु भेद ए तंत हो ॥ सु० ॥ ४ ॥ दंसण चार पंच ज्ञान अंतराय, पण चउद जे मांन हो ॥ सु० ॥ अंत करे पहेलो छेडे, नविउपजे ते फिरे केडे हो ॥ सु० ॥ ५ ॥ सकल पंडित शिणगार, कपूरविजय शिरदार हो ॥ सु० ॥ तस सुपसाये भाव जाण्या, मणिविजय तेह वखाण्या हो ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति श्री क्षीणमोह गुणस्थानक भास ॥

॥ ढाल १५ ॥ भले पधार्या तुमे साधुजी रे ॥ ए देशी ॥

॥ गुणठाणुं हवे तेरमुंरे, भाख्युं श्रीजीनरायरे ॥ सयोगी नामे मनुंरे, ओळ्युं ते नवि जाय रे ॥ गुण० ॥ १ ॥ बंधे साता वेद-नी रे, उदय बयांलु निरधार रे ॥ नाणावरणीय पांचे सही रे, अंतराय पंचे विचार रे ॥ गुण० ॥ २ ॥ दर्शन चारे चउदशो रे, उदय नहीं

हणे ठाणरे ॥ तीर्थंकर नाम मेलतांरे, बेंतालिस उदय परिमाणरे ॥ गुण० ॥ ३ ॥ उरल थिर खगइ दुगरे, प्रत्येक त्रिक षट संठाणरे ॥ अगुरुलघु वर्ण चारनोरे, निर्माण तेजस जाणीरे ॥ गुण० ॥४॥ कार्मण पेहेलो संघयणनोरे, दुसर सुसर जोयरे ॥ साता असाता-एकनोरे, ए त्रीसनो अंत होयरे ॥ गुण० ॥ ५ ॥ एके उणी चाली-सनीरे, उदीरणा अवदातरे ॥ पंच्यासी पयडी तणी रे, सत्ता जेह विख्यातरे ॥गुण०॥६॥ संप्रति पंच विदेहमांरे, विचरे वीस जिणंदरे ॥ सयोगी ठाणे अलंकर्यांरे, सेवे सुरनर वृंदरे ॥ गुण० ॥ ७ ॥ दोय कोडी साधु केवली रे, वंदन तेने त्रिकाल रे ॥ कर्पूरविजय गुरु नामथी रे, मणिविजय मंगल मालरे ॥ गुण ॥ ८ ॥ इतिश्री सयोगी गुण स्थानक त्रयोदशम भास ॥

॥ ढाल ॥ १६ ॥ नयरी अयोध्याथी संचर्या ए ॥ ए देशी ॥

॥ अयोगी नामे चौदमुंरे, गुणठाण श्रीकार ॥ कहुं ए जिनव रुप, अ इ उ ऋ लृ माम ज रहवुं ए, जेहथी शिव सुखसार ॥ कहुं० ॥ १ ॥ बंध नहीं पयडी तणो ए, उदय तणो भाव जोय कहुं० ॥ सुभग आदेय यश वली ए, वेदनी त्रस त्रिक होय ॥ क० ॥ २ ॥ पंचेन्द्रिय जाति नर आउखुं ए, नरनी गति जिननाम ॥ कहुं० ॥ उंच गोत्र ए बारनो ए, अंत थाय छेहेले ठाम ॥ क० ॥ ॥ ३ ॥ उदीरणा इहां नवि कहे ए, सत्ता सुणो वीरतंत ॥ क० ॥ छेल्ला दुग समे जाणीए ए, बोहोतेर पयडी अंत ॥ क० ॥ ४ ॥ नाम थकी हवे ते कहुं ए, सुर खगई गंध दोय ॥ क० ॥ फरसं

आठ वर्ण पांचनी ए, रस तनु बंधन सोय ॥ क० ॥ ५ ॥ संघातन ए सवि तणी ए, पंच पंच पयडी जेह ॥ क० ॥ निर्माण नाम ते भेलतांए, चालीस पुरी एह ॥ क० ॥ ६ ॥ संघयण अथीर खटसही ए, संस्थान खट सुविवेक ॥ क० ॥ अगुरुलघु च्यार अपज्जता ए, अशाता शाता एक ॥ क० ॥ ७ ॥ प्रत्येक उपांग त्रिण त्रिण कह्यां ए ॥ सुस्वर नीच गोत्र जाण ॥ क० ॥ ए बोहोतेर पयडी तणो ए, अंत हुवे इग ठाण ॥ क० ॥ ८ ॥ छेह समे पयडी तेरनो ए, अंत करे गुणवंत ॥ क० ॥ आठ करम खेपवीए, पामी सुख अनंत ॥ क० ॥ ९ ॥ एम अनेक भेद सुंदरु ए, आगम शास्त्र मझार ॥ क० ॥ मणिविजय बुध उपदिशे ए, निज मतिने अनुसार ॥ क० ॥ १० ॥ इतिश्री अयोगी गुण स्थानक भास ॥

॥ ढाल ॥ १७ ॥ दीठो दीठोरे वामाको नंदन दीठो ॥ ए देशी ॥

॥पूजो पूजोरे प्रभु पासजीनेश्वर पूजो॥ संखेश्वर परमेश्वर साहेब, ए सम देव न दूजोरे प्रभु ॥ १ ॥ जेहने नामे नवनिधि पामे, मुक्ति वधु तस कामे ॥ सुरनर नारी बे कर जोडी, आवीने शीरनामेरे ॥ प्र० ॥ २ ॥ तेह तणे सुपसाय हरखे, गुणठाणा सुविचार ॥ बंध उदय उदीरणा सत्ता, भाखी पर उपगाररे ॥ प्रभु० ॥ ॥ ३ ॥ शापुर मंडण शांति जिणेश्वर, महिमा महियल गाजे ॥ पास चिंतामणि चिंता चूरे, सहस फणो जिनराजेरे ॥ प्रभु० ॥ केसर चंदन मृगमद घोळी, पूजे जे नरनारी ॥ भावना भावे

जिनवर आगे, तेहनी दुर्गति वारीरे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ तप गच्छना-यक पुण्येपुरो, श्री विजय देव सुरिंद ॥ तस पट्टधारक कुमति वा-रक, श्री विजयप्रभ मुणिंदरे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ सकल पंडित शिर मुगट नगीनो, कपुंरविजय गुरु शीस ॥ मणिविजय बुध इणिपरे जल्पे, पुरो संघ जगीसरे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ इति श्री चतुर्दश गुण स्थानक संपूर्ण ॥

अथ श्रीषट आरास्वरूपकथक श्रीमहावीर स्वामीनुं स्तवन.

॥ दुहा ॥ सकल जिणंद पाये नमी, पामी परमानंद ॥ दोय कर जोडी विनवुं, चोवीसमो जिणंद ॥ १ ॥ जंबुद्वीपे भरत खित्त, मगध देश मझार ॥ राजग्रही रळीआमणी, नयरी नाम उदार ॥२॥ तीहां कणे स्वामी समोसर्या, चोवीसमो जिणंद ॥ चोसठ इंद्रे मली रच्युं, समवसरण आणंद ॥ ३ ॥ सुरनर व्यंतर ज्योतिषी, विद्या-धरनी कोडाकाडी ॥ बारे पर्षदा तिहां सुणे, धर्म सर्वे करजोडी ॥ ४ ॥ गौतम स्वामी पुछीया, सुणे ते सुरनर कोडी ॥ काल चक्र केम नीपजे, बोले बेकर जोडी ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ फागनी ॥ हवे चरम जिणेसर इम भणे, सहु सुणो मन उल्लास ॥ काल चक्र इम नीपजे, प्रथम समय लीयो तास हवे० ॥ १ ॥ पोयणी पानज कुअलां, बत्रीस मेलो सोई ॥ सबल पुरुष सोये करी, मतिसुं विंधे कोई ॥ २ ॥ हवे० ॥

एक पान जब विंधाय, बीजा लगे सुइ जाय ॥ चरम जिणेसर इम भणे, असंख्य समय तिहां थाय ॥ हवे० ॥ ३ ॥ असंख्य समये हुए आवलि, आवलि केरु ए मान ॥ दोइसे छपन जब मेलीए, क्षुल्लक भव एक ताम ॥ हवे० ॥ ४ ॥ एक कोडी अति आगलि, उपरे सडसठ लाख ॥ सहस सत्योतर दोयसें, सोलकेरी भाख ॥ हवे० ॥ ५ ॥ एटली मेली आवलि, मुहुर्त तणुं एक मान ॥ दोय मुहुर्त बीजा अछे, तास क्षुल्लक भव ताम ॥ हवे० ॥ ६ ॥ त्रीस मुहुर्त जब मेलीए, अहोरात दिन एक थाय ॥ पनरे दिने पक्ष होइ, मासे वारे वरसे जाई ॥ हवे० ॥ ७ ॥ असंख्याता वरस जब मेलीए, पल्योपम एक कहाय ॥ चरम जिनेसर इम कहुं, ते सौ साधु सुहाय ॥ हवे० ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ देसी चोपाईनी ॥

॥ बादर परमाणु जाणु सही, तेणे आठ त्रस रेणु कही ॥ ते आठ त्रसरेणु विचार, आठ रेणु वालाग्र उदार ॥ १ ॥ वालाग्र आठे एक लीख, आठ लीखे जुका सीख ॥ जुका आठे एक जव कहुं, आठे जवे ते अंगुल भण्युं ॥ २ ॥ ए खट आंगुले पाव प्रमाण, बे पावे एक वेंतनुं मान ॥ बे वेंते एक हाथ प्रमाण, चिहुं हाथे एक धनुषनुं मान ॥३॥ बीहु सहस धनुष गाउ एक, चीहुं गाउए जोयण एक ॥ कुओ एक उंडो एटलो, पहोलो लांबो सम तेटलो ॥ ४ ॥ रोम खंडे कुवे वाले भरे, सिद्धांते बोल्युं तिम करे ॥ जुगल जण्या साते दिन बाल, तस आंगुल सीर लीजे वाल ॥ ५ ॥ तास

[illegible] आवे [illegible], [illegible] कीधा [illegible] संख्या [illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] बावन अधिक कहीश ॥ ६ ॥ केवल ज्ञानी [illegible] कह्या, [illegible] [illegible] असंख्याता भया ॥ [illegible] [illegible] संलेखना, [illegible] [illegible] कीजे [illegible] ॥ ७ ॥ ते लई [illegible] कुओ भर्यो, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] भेदि [illegible] आगे [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ८ ॥ वरस साए एक काढे अंश, यदा तदा ते होय [illegible] अंश ॥ [illegible] पल्योपम नाम उदार, कोडा कोडी दस [illegible] सागर [illegible] ॥ ९ ॥ ते सागर दस कोडा कोडी, एक उत्स-र्पिणी [illegible] जोडी ॥ काल चक्र दोइ एटले थयो, पुद्गल भाव अनेरो कह्यो ॥ १० ॥ पुद्गल केरा चार प्रकार, द्रव्य क्षेत्र काल भाव विचार ॥ त्रिहु तथा वली कीजे आठ, सूक्ष्म बादर तणो ए पाठ ॥ ११ ॥ बादरनो परे [illegible] सुणो, काल चक्र एहना स-मय सुणो ॥ एटला मरण करे जो सोय, बादर पुद्गल पुरा होय ॥ १२ ॥ चक्र ते पेहेले समे, बीजा मरण अनेरा गमे ॥ बीजो कालचक्र लगे यदा, बीजे समये मरण होय तदा ॥ १३ ॥ इम सहु समय पुरा करे, सूक्ष्म पुद्गल इणिपरे भरे ॥ चिहु तणी परे [illegible] सही, एवी वात जिणेसर कही ॥ १४ ॥ उत्सर्पिणी षट आरा होय, जिनवर देखाडे सोय ॥ ते पण सहु ए सुणो उल्लासे, गौतम पूछे जिनपासे ॥ १५ ॥

॥ ढाल ३ ॥ [illegible] ॥

॥ [illegible] आरो [illegible] [illegible] ए, कोडा कोडी सागर [illegible]-

रके ॥ सुसम सुसमो ए, त्रिण पल्योपम आउखुंए ॥ कोया गाउ त्रणनो मानके, युगलीयां जाणज्यो ए ॥ १ ॥ बीजो आरो सुसम जाणज्यो ए, कोडा कोडी त्रिणनो मानके ॥ सागर संख्या कहीए, दोय पल्योपम आउखुं ए ॥ काया गाउ दोयनो मानके, सहु सुख भोगवेए ॥ २ ॥ त्रीजो आरो सुसम दुसमोए, काया गाउ एकनो मान के ॥ पल्योपमनुं आउखु ए ॥ ३ ॥ दोय कोडा कोडी जे भलो ए, आविओ ते तणो अंत के ॥ पूर्व कोडी उणी थाकतां ए ॥ ४ ॥ प्रथम जिणंद तिहां जनमीया ए, नाभी कुलगर घरे चंद के, युगल तेणे वारीओ ए ॥ ५ ॥ राज नीति तेणे थापीओ ए, मांडाओ सुभ व्यवहार के, आरो त्रीजो ए सहीए ॥ ६ ॥ चोथो आरो दुसमसुसमो ए, कोडाकोडी एकनुं मानके, त्रेवीस जिन तीहां हुआ ए ॥ ७ ॥ बेतालीस सहस्स उणा अछे ए, बोलीया श्रीवर्द्ध-मानके, चरम जिन इम कहे ए ॥ ८ ॥ चडत पडत तीहां आउखां ए, कायानो एहज मान के, श्री जिनधर्म अतिभलो ए ॥ ९ ॥ चरम जिणेसर भाखीओ ए, पंचम आरानो मान के, दुःखम ते सहु कहे ए ॥ १० ॥ एकवीस सहस एवां जाणज्यो ए, काया सात हाथ जाणके, उंणो घणो आउखो ए ॥ ११ ॥ ठाकुर अति अन्याइयाए, मेले मन वरतशे लोक के, आरति मन सहु करे ए ॥ १२ ॥ लोक पाखंडे घणुं राचशे.ए, साधु उपर थोडलो भावके, बहुला मत व्यापशे ए ॥ १३ ॥ जिनधर्म वरतशे थोडलो ए, आ-गिया सुपन मानके, उत्तम जन थोडलाए ॥ १४ ॥ इस्ये मारग

सहु चालशे ए, दुप्सह लगे व्यवहार के, परंपरा ज्यां होशे ए ॥१५॥ तिहां एक साधु ने साधवीए, श्रावक श्राविका एकके, आगम एक वरतशे ए ॥ १६ ॥ अतिशय ज्ञान गुरुने नमो ए, टाले मनना संदेह के, सोय कल्पे पहोंचशे ए ॥ १७ ॥ इस्यो आरो जाशे पांचमो ए, आवशे तेह तणो अंत के, उत्पात घणा वरतशे ए ॥ १८ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ फागनी ॥ ए देशी ॥

आहे छट्ठो आरो एहवो आवशे, जाणे जिनवर तेह ॥ पृथ्वी प्रलय थायशे, वरससे विरुआ मेह ॥ आहे० ॥ १ ॥ तावडे तरडशे डुंगरा, वाये उडी उडी जाय ॥ सहु समी होयशे मेदिनी, खाडने सेवतरे ॥ आहे० ॥ २ ॥ त्यारे प्रभु गोयम बोलीया, विनव्या जिनवर राय ॥ किहां रहेशे माणस मेदिनी, पृथ्वी बीज केम थाय ॥ आहे० ॥ ३ ॥ तिहां इम जिनवरे भांखीउं, अमृत समानी वाण ॥ वैताढय गिरि छे शाश्वतो, गंगा सींधु नदी जाण ॥ आहे० ॥ ४ ॥ ते बील वासी तिहां रहे, मनुष्यां केरी वखाण ॥ बहोंतेर बील तिहां किण अछे, बीज तणुं ते ठाम ॥ आहे० ॥ ॥ ५ ॥ काया तेनी पुण हाथ छे, सोल वरसनो आय ॥ छ वरसे स्त्री गरभ धरे, दुःखमांहे दुःख थाय ॥ आहे० ॥ ६ ॥ अति घणा ताप घणा पडे, असराल वायशे वाय ॥ रात्रे ते बाहिर नीसरे, दिवसे बीलमांहे जाय ॥ आहे० ॥ ७ ॥ नव वार श्रोत तिहां रहे, विरुइ गधाशे काय ॥ सहु भक्षण करशे मांछलां, मरी ए

दुर्गति जाय ॥ आहे० ॥ ८ ॥ एकवीस सहस इहां होसे, दुख होसे इम जाणी ॥ उत्कृष्ट पांचे अढे, महाविदेह वखाण ॥ आहे० ॥ ९ ॥ तिहां सदा हुए केवली, जिन धर्म तणी नही हाण ॥ समवसरण सुखदाई, जिनवरतणी इसी वाण ॥ आहे० ॥ १० ॥ पूर्व कोडीसु आउखुं, पांचशे धनुषनी काया ॥ सरव जिनेसर इम भणे, सदीव एवुं चाल्युं जाय ॥ आहे० ॥ ११ ॥ वांभण इणि परे विनवे, वीर जीणंद अवधार ॥ प्रभु तोरे पाये नमुं, छठे आरे जन्म निवार ॥ आहे० ॥ १२ ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ उलालांनी ॥ ए देशी ॥

इम हर्ष धरीने स्तवीओ वीर जीणंद, राधणपुर मंडण पाय प्रणमे सुरनर वृंद ॥ १ ॥ मैं पुन्य पसाये पाम्या जिनवर पास, मुज पाप पडल सवि दुष्कृत दूरे जाय ॥ २ ॥ श्री तपगच्छनायक विजय दान सुरिंद, तस पाय प्रणमीने सेवे सुरनर वृंद ॥ ३ ॥ तस नामे मुजने, टाळोओ मुज मिथ्यात, सेवतां पाम्यो, जिन धर्म जगत विख्यात ॥ ४ ॥ संवत सय सोळह इग्यारीचरा मान, आसो सुद पुनम वार शुभ ध्यान ॥ ५ ॥

॥ कलश ॥ इम थुण्यो जिनवर वीर सुखकर, राधणपुर वर मंडणो ॥ तस पाय पामी सीस नामी, दुरीय दुरगति खंडणो ॥ सेवे सुरासुर, सुणे भासुर गर्भवास निरुत्तरो ॥ द्विज भणे देवीदास सेवक, सकल संघ मंगल करो ॥ १ ॥ इति षट आरास्वरूप कथक श्रीमहावीर स्तवन संपूण ॥

॥ अथ श्री बार आरानुं स्तवन ॥

॥ दुहा ॥ सरस्वती भगवती भारती, ब्रह्माणी करी सार ॥ आरा बारतणो वळी, कहीशुं सोय विचार ॥ १ ॥ वर्द्धमान जिनवर नमुं, जस अतिशय चोत्रीस ॥ समवसरण बेठा प्रभु, वाणि गुण पांत्रीस ॥ २ ॥ गौतम पूछे वीरने, पर उपगारी अकामी ॥ अनेक बोल विवरी करी, भाखे त्रिभुवन स्वामी ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ स्वामी वचन कहे सुकुमाल, आ कहीवे अवसर्पिणी काल ॥ दस कोडाकोडि सागर जोय, तिहां षट् आरा गौतम होय ॥ १ ॥ सुसम सुसमा पहेला सार, त्यारे जुगल धरे अवतार ॥ बीजो सुसमा आरो लहु, त्यारे जुगल जुगलणो कहुं ॥ २ ॥ सुसम दुसमा त्रीजो वळी, त्यारे जुगल कहे केवळी ॥ अंते कुलगर हुआ सात, नाभिहुआ आदिश्वर तात ॥ ३ ॥

॥ दुहा ॥ आदि धर्म जेणे थापिओ, सीखव्या पुरुष अनंत ॥ त्रीजा आरामांहे वलि, मुक्ति गया भगवंत ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ २ ॥ राग परशीओ ॥ मनोहरजोनी ॥ ए देशी ॥

॥पछी वली गौत्तम चोथे आरे, हुआ त्रेवीस जिनन्दो ॥ एकादश चक्रवर्ती तिहां हुआ, त्रीजे भरत नरिंदोरे ॥ १ ॥ गौतम सांभळोरे, दीन दीन पडतो काल ॥ ए आंकणी ॥ क्रोध लोभ मद मत्सर वधशे, है अणहुंतां आल ॥ गौ० ॥ दीन० ॥ २ ॥ चक्री

आठ गया नर मुक्ति, बे चक्री सुर मोटा ॥ सुभूमराय ब्रह्मदत्त गया नरके, पुन्यकाज हुआ खोटा ॥ गौ० ॥ दीन० ॥ ३ ॥ वासुदेव नव निश्चय हुआ, नरक तणी लही वाटयो ॥ जे भूपति संग्राम करंता, त्रिण सयांने साठयो ॥ गौ० ॥ दीन० ॥ ४ ॥ इह प्रतिवासुदेव नव नीका, नवि छंडे धन नारी ॥ वासुदेव तणे करे मारे, ते नरक तणा अधिकारी ॥ गौ० ॥ दीन० ॥ ५ ॥ नव बलदेव हूआ इणे आरे, नव नारद ते मोटा ॥ सुरगति मुक्ति तणा भजनारा, शियल वज्र कछोटा ॥ गौ० ॥ दीन० ॥ ६ ॥

॥ दुहा ॥ गौतम अंये हूं हवो, तव काया कर सात ॥ मुज शासनमांहे जेहवुं, हशे ते भाखो वात ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ ३ ॥ राग केदारो ॥ नगरका वणझारा ॥ ए देशी ॥

॥ भाखे वीर जिणेसर त्यारे, में संजम लीधो ज्यारे रे ॥ वरस त्रण गयां तिहांयशाले, त्यारे कुशिष्य मिल्यो गोशालोरे ॥ भाखे० ॥ १ ॥ तेजोलेश्या ते पण ग्रही तो, दोय मुनिवर जिन दहतु जाईरे ॥ अंते पातक आलोइने, बारमे स्वर्गे सुर होइरे ॥ ॥ भाखे० ॥ २ ॥

॥ दुहा ॥ वीर कहे केवली पछी, विचमांहे एतो काल ॥ चउद वरसे उपन्यो, निन्हव सोय जमाल ॥ १ ॥ तिक्षगुप्ति बीजो सही, सोले वरसे तेह ॥ अंते ते पाछा वले, समकित पामे जेह ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ ४ ॥ राग गोडी ॥ भावी पटधर वीरनो ए देशो ॥

॥ दुसम आरोरे आगले, वीस सो वरसनुं आयु छे ॥ होशे

वरस वीसनुं, दोय हाथनी काय ॥ कहुं तुज गौतम गणधर ॥ १ ॥ वळी कहे वीर जीणेसरु, माहरो सुधर्मा शिष्य ॥ छेहे होसे दुप्पसह मुनि, ते विचे उदय त्रेवीस ॥ कहे० ॥ २ ॥ युगप्रधान जिणे कह्या, जस एक अवतार ॥ पंचम आरे ते ते हशे, दोय सहसने चार ॥ कहे० ॥ ३ ॥ युग प्रधान सरिखा हशे, मुनिवर लाख अगीयार ॥ ते उपर अधिका कहुं, मुनेवर सोल हजार ॥ ॥ कहे० ॥ ४ ॥ जैन भूपति जगमां हशे, करशे धर्म उद्धार ॥ लाख अगीआरने उपरे, संख्या सोल हजार ॥ ५ ॥ वीर पछी गौतम जशे, बारे वरसे मोक्ष ॥ वीसे सिद्धिगते सुधर्मा, प्रणमी पातिक शोष ॥ कहे० ॥ ६ ॥

॥ दुहा ॥ वीर थकी वरस चोसठे, मुक्ति जंबु स्वामी ॥ जंबु जाते सही जशे, दसवानां तस ठाम ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ ५ ॥ राग आशावरो कानजी बजावे वांसली ॥ ए देशी ॥

॥ मनःपर्यव त्यारे नहींरे, परम अवधि ज्ञान ॥ पुलाक लब्धि आहारक तनुरे, क्षपक श्रेणी निधान ॥ १ ॥ उपशम श्रेणी जिन कल्पशुंरे, संजम त्रिण जाय । केवलज्ञान नवमुं लहेरे, तव मोक्ष पलाय ॥ २ ॥ वीर कहे वरस मुज पछीरे, चिउत्तरे थाय ॥ प्रभव स्वामी त्रीजे पाटेरे, परलोके जे जाय ॥ ३ ॥ शय्यंभवसूरि मुनिवरुरे, जे चोथे पाटे थाय ॥ वीरथी वरस अठाणुंएरे, लहे शुभ गति वाट ॥ ४ ॥ वीरथी वरस गयां घणांरे, एकसो अडताल ॥ यशोभद्र सुरलोकमांरे, नव [illegible]ा काल ॥ ५ ॥ छठे

पाटे संभूति विजयरे, हशे पंडित जाण ॥ वीरथी एकसो सिउरे रे, वरसे निरवाण ॥ ६ ॥

॥ दुहा ॥ नवपूर्व ओछा थया, सुण गौतम कहे वीर ॥ भद्रबाहु लगे ते हशे, जेहमां अर्थ गंभीर ॥ १ ॥

॥ दुहा ॥ ६ ॥ राग गोडी ॥ सिंह तणी परे एकलो ॥ ए देशी ॥

॥ वरस बसें चउदे वलीरे, निन्हव त्रीजो जे होय ॥ आषाढाचारज तणोरे, शिष्य कहो वली सोयरे ॥ गौतम सांभलो रे ॥ १ ॥ निन्हव सो वर्ष सहीरे, पामे समकित सार ॥ बसे पंदर वरस वलीरे, स्थुलिभद्र लहे पारो रे ॥ गौ० ॥ २ ॥ पूर्व अनुयोग त्यारे नहींरे, सूक्ष्म महा प्रणिधान ॥ पेहेलुं संघयण थाकीउंरे, वळी पेहेलुं संस्थानोरे ॥ गौ० ॥ ३ ॥ बसें वीस वरसे वलीरे, निन्हव चोथोरे जेह ॥ अश्वमित्र नाम जे हशेरे, पाछो वळशे नर तेहरे ॥ गौ० ॥ ४ ॥ वीर पछी वरस जशेरे, बसेंने अट्ठावीश ॥ तव निन्हव होसे पांचमोरे, धनगुप्तनो शिष्यरे ॥ गौ० ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥ गंगाचारज ते सही, ते मति आवे नाहि ॥ चारसेंने सितेरे, वीरथी विक्रम राय ॥ १ ॥ जे निज काळो थापशे, परदुःख भंजणहार ॥ जैन शिरोमणि ते हशे, शूरवीर दातार ॥ २ ॥

॥ ढाळ ॥ ७ ॥ राग धनाश्री ॥ पाट कुसुमनी न पुजरवे ॥ ए देशी ॥

॥ वीर कहे वरस सुजथी जाशे, पंचकल्यां चढंआळ ॥ हो-

होशुति निन्हव होय छठो, मानशे ते बहु काल हो ॥ गौतम दिन दिन कुमति वधशे ॥ १ ॥ भूपति नहीं कोइ संयम धारी, दान पचावी देसेहो गौतम ॥ पंचसयां चोरासी वरसे, होशे गोष्ठा-माहील ॥ सातमो निन्हव तेने कहीए, चाले भुंडी चाले हो ॥ गौ० ॥ २ ॥ पंचसयां चौरासी गौतम, वरस गयां तुं जोइ ॥ दसपूर्व थाकशे त्यारे, वयरस्वामी लगे होइ हो ॥ गौ० ॥ ३ ॥ वीरथी वरस छसे नव जाये, ताम दिगंबर थाय ॥ सर्व विसंवादी ए निन्हव, आठमो तेह कहाय हो ॥ गौ० ॥ ४ ॥ वरस छसेने सोलज अंते, पूव साडा नव छेद ॥ दुर्बलिका पुत्र ज लगे होई, पाछल सोयने खेद हो ॥ गौ० ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥ नवसें त्राणु वरसज गये, पुस्तकारुढ ज होय ॥ चोथे पर्युषण आणसे, कालिकाचाय साय ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ ८ ॥ राग परजोओ ॥ हितकारी हीरजीनुं ॥ ए देशी ॥

॥ अथ सिंधु ॥ वीरथी वरस हजार गया पछीरे, पूर्व होये तव छेदोरे ॥ तेरसयारे वरसे मत हशेरे, बोले नवनव भेदोरे ॥ इन्द्रभूति मोहोरे वीर वचन रसेरे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ दिन दिन काल पडतो सही हशेरे, पुन्यवंता नर कयांहारे ॥ नीच कुली रे नरपति बहु थशेरे, पापतणी मती माहेरे ॥ इंद्र० ॥ २ ॥ वास वैराग्य विनय थोडा थशेरे, न मले मन्य मकोरे ॥ सुमुलष छतो सहु सगपण छांडशेरे, वहालो होशे धनोरे ॥ इंद्र० ॥ ३ ॥ कलियुगमांहेरे मुनि लोभी हसेरे, विरला कही व्यवहारोरे ॥ धर्म

तजशे क्षत्री नर वलीरे, ब्रह्म धरे हथियारोरे ॥ इंद्र० ॥ ४ ॥

॥ दुहा ॥ गौतम वीर थकी जशे, वरस. सयां ओगणीस ॥ पांच मासने उपरे, भाषा बारज दीस ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ ९ ॥ राग रामगीरी ॥ राम भणे हरी उठीये ॥ ए देशी ॥

॥ ताम कलंकीरे उपजे, कुल चंडाल असार रे ॥ माता जसोदारे ब्राह्मणी, होशे तीहां अवतार रे ॥ दुर्गति गामी रे ते सही ॥ १ ॥ चैत्र सुदीरे आठम दिने, विष्णु जनम ते होयरे देहवरण तस उजलुं, पीलां लोचन दोइरे ॥ दु० ॥ २ ॥ रुद्र कलंकी चतुर्मुखा, ए होशे त्रणज नामो रे ॥ छासी वरसनुं आउखुं, पाटलीपुर जस गामरे ॥ दु० ॥ ३ ॥ छठो भागज भीखनो, लेशे कलंकी राय रे ॥ षट दरसणरे माने नहीं, दंड कुदंड थायरे ॥ दु० ॥ ४ ॥ इंद्र इहां पछे आवशे, धरसे विप्रनुं रुपरे ॥ वेगे हणशे रै रायरे, लेशे नरकनुं कूपरे ॥ दु० ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥ तेहनो सुत सुदर हशे, दत्त भूप अभिराम ॥ शत्रुंजय उद्धार करावशे, राखे जगमां नाम ॥ १ ॥

॥ढाल॥ १० ॥ राग रामगिरी ॥ प्रणमी तुज गुरुजी ॥ ए देशी ॥

॥ आगल आरे पांचमेजी, दुप्पसह मुनिवर होय ॥ सुर गति मांहेथी आवशेजी, आगल सुरपति सोय ॥ सोभागी छेहला मुनिवर एह ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ छेहेलो संघ दुप्पसह तणोजी, आण न खंडे तेह ॥ सोभागी० ॥ वीस वरसनुं आउखुंजी, बार वरस घर वास ॥ चार वरस मुनिवर पणुंजी, वरस चार गछ

धार ॥ सो० ॥ २ ॥ फुल्गुश्रीनामे साधवीजी, नायल श्रावक सोय ॥ सत्यश्री नामे श्राविकाजी, संघ चतुर्विध होय ॥ सो० ॥ ३ ॥ सुविहित संघ छेल्लो सहीजी, अल्प आउखुंरे त्यांही ॥ संघश्रुत श्रेय वलीजी, जाशे पोरज मांहे ॥ सो० ॥ ४ ॥ विमल वाहन नरपति जी, सुधर्म मंत्रीरे जेह ॥ न्याय नीति अग्नि जशेजी, वळी मध्यान्हे तेह ॥ सो० ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥ जैन धर्म एतां लगे, पछी नहीं पुण्य दान ॥ वायु मेघ भुंडा हशे, सुण गौतम तस मान ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ ११ ॥ राग सारंग ॥ मगध देशनो राजा राजेसर ॥ ए देशी ॥

॥ मान प्रकाशे मेघज केरु, पेहेलो ते जलधार ॥ बीजो अग्नितणो तिहां होशे, त्रीजो ते विषधार हो ॥ गौतम सुणतुं मधुरी वाण ॥ १ ॥ चोथो आंबिलनो घन वरसे, वीजलीनो वरसाद ॥ एकेको मेघ त्यांहि वरसे, वासर रातज सात हो गौ० ॥ २ ॥ बोतेर बील वैताढयज केरा, छे वळी शाश्वता त्यांय ॥ नरनारी पंखी हय हरणां, ते रेहशे ते मांहे हो ॥ गौ० ॥ ३ ॥ आगळ छठ्ठो आरो होशे, दुसम दुसमानाम ॥ एकवीस सहस वरसनो जाणो, नहीं नगरी नहीं गाम हो ॥ गौ० ॥ ४ ॥ गर्भ धरे खट वरसनी नारी, बिलवासी मछ खाय ॥ छेल्ले काया एक हाथनी होशे, सोल वरसनुं आयु हो ॥ गौ० ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥ आगल वली उत्सर्पिणी, त्यां षट आरा जोय ॥
पेहेलो छठ्ठो सारिखो, दुसम दुसमा सोय ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥ १२ ॥ राग केदारो ॥ वांदांयणाना ॥ ए देशी ॥

॥ आगल वीजो आरो सारो, त्यारे मेघ होशे वली चारो ॥
पुष्करावर्त्त खीर अमृत अपारो, चोथो वरसे घृतनी धारो ॥ १ ॥
वालशे वन वनस्पति बहु गामो, आगल साते कुलगर तामो ॥
दुसम सुसमा त्रिजो अभिरामो, त्रेवीस जिनना तीहां ठामो ॥ २ ॥
नव नारद चक्री अगीआरो, नव बलदेव हशे नीहां सारो ॥
वासुदेव नव तेणी वारो, नव प्रतिवासुदेव अपारो ॥ ३ ॥ सुसम
दुसमा चोथा मांहि, एक जिनवर एक चक्री त्यांही ॥ अंते
जुगल होशे बहु जांहि, आउ पल्योपम भद्रक प्राहिं ॥ ४ ॥
आगल सुसम पंचम आरो, जुगल देह बे गाउ धारो ॥ छठ्ठो
सुसम सुसमा संभारो, जुगल देह त्रण गाउ विचारो ॥ ५ ॥
पूछयां वचन कह्यां वली वीरे, चित्तमां धरीया गौतम धीरे ॥भणतां
सुणतां सुखह शरीरे, ऋद्धि रमणी घर भरी वीरे ॥ ६ ॥

॥ कलश ॥ भले स्तवन कीधुं, नाम दीधु, गौतम प्रश्नोत्तर
सही ॥ संवत सिद्धि मुनि अंग चंदे, भाद्रवा सुदी तियां तहिं ॥
तपगच्छ तिलक समान सोहे, गुरुश्री विजयानंद सूरिश्वरु ॥ सा-
गणनो सुत ऋषभ श्रावक, कहे गच्छ मंगल करू ॥ २ ॥ इतिश्री
बार आरानुं स्तवन ॥

श्री महावीर स्वामिना पंच कल्याणकनुं बार ढालनुं स्तवन*

॥ ढाल पेहेली ॥

॥ प्रभु चित धरीने अवधारो मुज वात ॥ ए देशी ॥

॥ सरसती भगवती[1] दीओ मति चंगी, सरस सुरंगी वाण ॥ तुज पसाय माय चित्त धरीने, जिन गुण रयणनी खाण ॥ १ ॥ गिरुआ गुण वीरजी, गायशुं त्रिभुवनराय ॥ जसनामे घर मंगल माला, तस घर बहु सुख थाय ॥ गि० ॥ २ ॥ जंबुद्वीप भरत क्षेत्रमांहे, नयर माहणकुंड ग्राम ॥ ऋषभदत्त वरविप्र वसे तिहां, देवानंदा तस प्रियानाम ॥ गि० ॥ ३ ॥ सुरविमान वर पुष्फोत्तर[2]थी, चवि प्रभु लीये अवतार ॥ तव ते माहणी रयणी[3] मध्ये, सुपन लहे दसचार[4] ॥ गि० ॥ ४ ॥ धुरे मयगल मलपंतो देखे, बीजे वृषभ विशाल ॥ त्रीजे केशरी चोथे लक्ष्मी, पांचमे कुसुमनी माल

---

*आ स्तवन हंसराज नामना कोइ सुनिपुण प्रतिभावंत गृहस्थ श्रावके रच्युं छे. तेमणे स्तवनने अंते गुरुवर्य श्री हीरसूरिश्वरजीनुं नाम जणाव्युं छे तेथी तेओ उक्त महात्माना समयमां थया होय एम निर्णय थाय छे. उक्त श्रावकवर्य श्रीऋषभदासजीना अगाउ थयेला होय एम जणाय छे, तेथी आ स्तवननी रचना प्राचीन छे तेमज भाषा घणी मृदुपेशल, मीठी—मधुरी अने हृदयंगम छे तेथी कंठाग्र करतां अने गातां बहुज मजा आपे तेवुं छे. १ देवी. २ पुष्पोत्तर. ३ रात्रि. ४ चौद.

॥ गि० ॥ ५ ॥ चंद सूरज ध्वज कलश पदमसर, देखे ए देवविमान ॥ रयणरेल रयणायर राजे, चौदमे अग्नि प्रधान ॥ गि० ॥ ॥ ६ ॥ आनंद भर जागी सा सुंदरी, कंतने कहे परभात ॥ सुणीय विप्र कहे तुम सुत होशे, त्रिभुवनमांहे विख्यात ॥ गि० ॥ ७ ॥ अति अभिमान कियो मरीयंच भवे, भवि जुओ कर्म विचार ॥ तात सुतावर[1] तिहां थया कुंवर, वली नीच कुले अवतार ॥ गि० ॥ ॥ ८ ॥ इणे अवसर इंद्रासन डोले, नाणे करी हरि[2] जोय ॥ माहणी[3] कुखे जग गुरु पेखे, नमी कहे अघटतुं होय ॥ गि० ॥ ९ ॥ ततक्षण हरिणगमेषी तेडावी, मोकलीओ तेणे ठाय ॥ माहणी गर्भ अने त्रिशलानो, बिहुं बदली सुर जाय ॥ गि० ॥ १० ॥ वली निशिभर ते देवानंदा, देखे ए सुपन असार ॥ जाणे ए सुपन त्रिशलाकर चढिया, जइ कहे निज भरतार ॥ गि० ॥ ११ ॥ कंत कहे तुं दुःख हर सुंदरी, मुज मन अचिरज एह ॥ मरुथलमांहे कल्पद्रुम दीठो, आज संशय[4] टल्यो तेह ॥ गि० ॥ १२ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ नयर क्षत्रिय कुंड नरपति, सिद्धारथ भलोए ॥ आण न खंडे तस कोयके, जग जस निरमलोए ॥ तस पटराणी त्रिशला

---

१ स्वपुत्री मृगवतीनो पति जे प्रजापति राजा तेना घरे पुत्र पणे त्रिपृष्ठ वासुदेव पणे उत्पन्न थया. २ इंद्र. ३ ब्राह्मणी. ४ रांक (भीखारी)ना घरे पुत्ररत्न होवा संबंध.

सती, कुखे जगपति ए ॥ परम हर्ष हियडे धरी, ठविया सुरपति ए ॥ १ ॥ सुख सज्जाये पोढी देवी तो, चउद सुपन लहे ए ॥ जागती जिन गुण समरती, हरखती गह गहे ए ॥ राजहंस गति चालती, पीउ कने आवती ए ॥ मह उगमते सूरके, वीनवे निजपति ए ॥ २ ॥ सुणीय वात राय रंजीओ, पंडित तेडीया ए ॥ तेणे शुभ सुपन विचारवा, पुस्तक छोडीयां ए ॥ बोले मधुरी वाणके, गुणनिधि सुत होसे ए ॥ सुख संपति घरे वाधशे, संकट भांजशे ए ॥ ३ ॥ पंडितने रायतुसीया,[1] लछी[2] दीए घणीए ॥ कहे एह वाणी सफल होजो, अमने तुम तणी ए ॥ निजपद पंडित संचर्या, राय सुखे रहेए ॥ देवी उदर गर्भ वाधतो, शुभ दोहला[3] लहेए ॥ ४ ॥ मातभक्ति जिनपति करे, गर्भ हाले नहि ए ॥ सात मास वोली[4] गया, माय चिंता लही ए ॥ सहीअरने कहे सांभलो, कोणे मारो गर्भ हर्यो ए ॥ हुं भोळी जाणुं नही, फोगट प्रगट कर्यो ए ॥ ५ ॥ सखी कहे अरिहंत समरतां, दुःख दोहग टले ए ॥ तवजिन ज्ञान प्रयुंजीयुं, गर्भथो सळसळे ए ॥ माता पिता परिवारनुं, दुःख निवारियुं ए ॥ संयम न लेउं माय ताय छतां, जिन निरधारियुं ए ॥ ६ ॥ अणुदीठे मोह एवडो, किम विछुओ[5] खमे ए ॥ नव मासवाडा[6] उपरे, दिन साडासातमें ए ॥ चैत्रशुक्ल दिन तेरशे, श्री जिन जनमिया ए ॥ सिद्धारथ भूपति भला, ओछव तव कीया ए ॥ ७ ॥

---

१ तुष्टमानथया. २ लक्ष्मी. ३ मनोरथ. ४ वीती. ५ वियोग. ६ महिना.

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ वस्तु–पुत्र जन्म्यो पुत्र जन्म्यो, जगत सणगार ॥ सिद्धारथ नृप कुल तिलो, कुल मंडण कुलतणो दीवो ॥ श्री जिनधर्म पसाउले, त्रिशला देवी सुत चिरंजीवो ॥ एम आशिष दीए भली, आवी छप्पन कुमार ॥[१] सुति कर्म करे ते सही, सोहे जीसी हरिनो नार[२] ॥ १ ॥

॥ ढाल चोथी ॥ नमणीनी देशी ॥

॥ चल्युंरे सिंघासन इंद्र, ज्ञाने निरखतां ए ॥ जाणी जनम जिणंद, इंद्र तव हरखतां ए ॥ १ ॥ आसनथी रे उठेव, भक्तिए थुणे ए ॥ वाजे सुघोषा घंट, सघळे रणझणे ए ॥ २ ॥ इंद्र भुवनपति वीश, व्यंतरतणा ए ॥ बत्रीश रवि शशि दोय, दश हरि कल्पना ए ॥ ३ ॥ चोसठ इंद्र आणंद, प्रणमी कहे ए ॥ रत्न गर्भा जिन मात, दुजी एसी नहीं ए ॥ ४ ॥ जन्म महोच्छवे देव, मविहु[३] आविया ए ॥ माय देइ निद्रा मंत्र, सुत लेइ मेरु गया ए ॥ ॥ ५ ॥ कंचन मणि भृंगार[४], गंधोदके भर्या ए ॥ किम सहशे लघुवीर, हरि संशय धर्या ए ॥ ६ ॥ वेहेशे नीर प्रवाह, केम ते नामिये ए ॥ न करे नमण सनात[५], जाण्युं स्वामीये ए ॥ ७ ॥ चरण अंगुठे मेरु, चांपी नाचीयो ए ॥ मुज शिर पग भगवंत, एम कही

---

१ दिक कुमारिकाओ. २ इंद्राणी–अप्सरा. ३ सर्वे. ४ विशाळ कळश. ५ स्नात्र.

माचीयो ए ॥ ८ ॥ उलट्या सायर सात, सरवे जळहळ्या ए ॥ पायाले नागेंद्र, सघळा सळसळ्या ए ॥ ९ ॥ गिरिवर त्रूटे ढुंक, गड गडी पडे ए ॥ तीन भुवनना लोक, सघळे लडथडे ए ॥ १० ॥ अनंत बल अरिहंत, सुरपतिए कह्युं ए ॥ हुं मूरख सहि मूढ, एटलुं नवि लह्युं ए ॥ ११ ॥ प्रदक्षिणा देइ खामेय, ओच्छव करे ए ॥ नाचे सुर गाये गीत, पुण्य पोते भरे ए ॥ १२ ॥ इणे सुखे स्वर्गनी लील, तृण सरखी गणे ए ॥ जिन मुकी मायने पास, पद गया[१] आपणे ए ॥ १३ ॥ माय जागी जूए पुत्र, सुरवरे पूजीओ ए ॥ कुंडल दोय देवदुष्य, अमीय[२] अंगुठे दीयो ए ॥ १४ ॥ जन्म महोच्छव राय, ऋद्धिये वाधियो ए ॥ सज्जन संतोषी नाम, वर्द्धमान थापीयो ए ॥ १५ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ प्रभु पासनु मुखडु जोवा ॥ ए देशी ॥

॥ प्रभु कल्पतरु सम वाधे, गुण महिमा पार न लाधे ॥ रूपे अद्भुत अनुपम अकल, अंगे लक्षण विद्या सकल ॥ १ ॥ मुख चंद्र कमल दल नयण, सास सुरभि गंध[३] मीठां वयण ॥ हेम वरणे प्रभु तनु शोभावे, अति निर्मल विण नवरावे[४] ॥ २ ॥ तप तेजे सूरज सोहे, जोतां सुर नरनां मन मोहे ॥ प्रभु रमे राजकुंवर शुं वनमा, मायतायने आनंद मनमां ॥ ३ ॥ बल अतुल वृषभगति वीर, इंद्रे सभामां कह्यो जिनधीर ॥ एक सुर मूढ वात न माने,

---

१ स्वस्थाने. २ अमृत. ३ सुगंधी श्वासोश्वास. ४ प्रभुनी काया वगर धोइ पण निर्मळ छे. ५ सज्जन—मित्रने.

आव्यो परखवा वन रमवाने ॥ ४ ॥ अहि थइ वृक्ष आमलीये राख्यो, प्रभु हाथे झाली दूरे नाख्यो ॥ वळी बालक थइ आवी रमिओ, हारी वीरने खांधे लइ गमिओ ॥ ५ ॥ मायताय दुःख धरी कहे मित्र, कोइ वर्द्धमानने लइ गयो शत्रु ॥ जातो सुर वाध्यो गगने मिथ्यानी, वीरे मुष्टीये हण्यो पडयो धरती ॥ ६ ॥ पाय नमी नाम दीधुं महावीर, जेहवो इंद्रे कह्यो तेवो धीर ॥ सुर वळिओ प्रभु आव्या रंगे, माय तायने उलट अंगे ॥ ७ ॥

॥ ढाल छट्ठी ॥

वस्तु—राय ओच्छव राय ओच्छव करे मनरंग, लेखकशाळाए सुत ठवे ॥ वीर ज्ञान राजा न जाणे, तत्र सौधर्म इंद्र आविया, पूछे ग्रंथ स्वामी वखाणे ॥ व्याकरण जैन तिहां कीओ, आनंद्यो सुर-राय ॥ वचन वदे प्रभु भारती, पंडयो विस्मय थाय ॥ १ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

यौवन वय जब आविया ए, राय कन्या जशोदा परणाविया ए ॥ विवाह महोच्छव शुभ किया ए, सर्वे सुख संसारना विलसियाए ॥ १ ॥ अनुक्रमे हुइ एक कुंअरी ए, त्रीश वर्ष जिनराज लीला करी ए ॥ मात पिता सदगति गया ए, पछे वीर वैरागे पूरिआ ए ॥ २ ॥ मयणरायसेन जोतीओए, वीरे अथीर संसार मन चिंतियोए ॥ राजरमणी ऋद्धि परिहरीए, कहे कुटुंबने लेशुं संयम सिरीए ॥ ३ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ पृथ्वी पाणी तेउ वाउ वनस्पती—ए देशी ॥

॥ पितरीओ सुपासरे, भाइ नंदि वर्धन ॥ कहे वच्छ एम न कीजीये ए ॥ १ ॥ आगे माय ताय विछोहरे, तुं वळी व्रत लीये ॥ चांदे खार न दीजीये ए ॥२॥ नीर विना जीम मच्छरे, वीर विना तिम ॥ टलवलतुं इम सहु कहे ए ॥ ३ ॥ कृपावंत भगवंतरे, एह विना वळी ॥ वरस बे जाजेरां रह्यां ए ॥ ४ ॥ फासु लीए अन्न-पानरे, पर घर नवि जमे ॥ चित्त चारित्र भावे रमे ए ॥ ५ ॥ न करे राजनी चिंतरे, सुर लोकांतिक[1] ॥ आवी कहे संयम समे ए ॥ ६ ॥ बूज बूज भगवंन रे, छोडी विषय सुख ॥ ए संसार वधा-रणो ए ॥ ७ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ आले आले त्रिशलानो कुंअर, राजा सिद्धारथनो नंदन, दान संवत्सरी ए ॥ एक कोडी आठ लाख दिन प्रत्ये ए, कनक रयण रुपा मोतीतो, मूठी भरी भरीए ॥ आले० ॥ १ ॥ धण कण गज रथ घोडला ए, गाम नयर पुर देश तो, मनवंछित वळीए ॥ निर्धनने धनवंत किया ए,[2] तस घर न ओलखे नारितो, समकरे[3] वळी वळीए ॥ आले० ॥ २ ॥ दुःख दारिद्र टाल्या जग तणांए, मेघपरे वरसीदान तो, पृथ्वी अऋण करीए ॥ बहु नरनारी ओ-

---

१ लोकांतिक देवता. २ कर्या. ३ सोगन खाय.

च्छव जूएए, सुरनर करे मंडाणतो, जिन दीक्षा वरीए ॥ आले० ॥ ३ ॥ विहार करम जगगुरु कीओए, केडे आव्यो माहण मित्रतो, नारी संतापियो ए ॥ जिन याचक हुं वीसर्योंए, प्रभु खंधथकी देवदुष्यतो, पट खंड करी दीओए ॥ आले० ॥ ४ ॥

॥ ढाल दसमी ॥

जस घर होये प्रभु पारणुं, सुर तिहां कंचन वरसे अति घणुं ॥ आंगणुं दीपे तेजे तेह तणुं ए ॥ देव दुंदुभि वाजे ए, तेणे नादे अंबर गाजे ए ॥ छाजे ए, त्रिभुवनमांहे सोहामणुं ए ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ सोहामणुं प्रभु तप तपे, बहु देश विदेश विचरता, भवि जीवने उपदेश देता, साते इति शमावता ॥ षट् मास वन काउस्सग्ग रही, जिन कर्म कठीन दहे सही ॥ गोवाल गौ भळावी गया, वीर मुखे बोले नहि ॥ २ ॥ ढाल ॥ गोरु[1] सवि दह दिसे गया, तेणे आवी कहुं मुनि किहां गया ॥ ऋषि राया ऊपर मुरख कोपियाए, चरण उपर रांधी खीर ॥ तेणे उपसर्गे न चल्या धीर, महावीर ॥ श्रवणे[2] खीला ठोकीया ए ॥ ३ ॥ त्रुटक ॥ ठोकीया खीला दुःखे पील्या, को न लहे[3] तेम करी गया ॥ जिनराजने मन शत्रु मित्र सरखा, मेरुपरे ध्याने रह्या ॥ ऊनही वरसे मेघ बारे, बीजली झबुके घणी ॥ बेहु चरण उपर डाभ उग्यो, इम सहे त्रिभुवन धणी ॥ ४ ॥ ढाल ॥ एक दिन ध्यान पुरुं करी, प्रभु नयरिये पोहोता गोचरी ॥ तिहां वैद्ये, श्रवणे खीला जाणीआए ॥ पारणुं करी काउस्सग्गे रह्या,

---

१ बळद (बधा चरवा गया)· २ कानमां. ३ जाणे·

तिहां वैद्ये संच[1] भेळा कीआ ॥ बांधीया वृक्षे दोर खीला ताणिया ए ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ ताणी काढ्या दोर खीला, वीर वेदन थइ घणी ॥ आक्रंद करतां गिरि थयो शत[2] खंड, जुओ गति कर्मह तणी ॥ बांधेरे जीवडो कर्म हसतां, रोवतां छूटे नहि ॥ धन्य धन्य मुनिवर रहे समचित्त, कर्म एम त्रूटे सहि ॥ ६ ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥

॥ जूओ जूओ करमे शुं कीधुं रे, अन्न वर्ष ऋषभे न लीधुं रे ॥ कर्म वश म करो कोइ खेद रे, मल्लीनाथ पाम्या स्त्री वेद रे ॥ ॥ १ ॥ कर्मे चक्री ब्रह्मदत्त नडियो रे, सुभूम नरकमांहे पडियो रे ॥ भरत बाहुबल शुं [4]भडीयो रे, चक्री हार्यो रायजस चडीयो रे ॥ २ ॥ सनतकुमारे सह्या रोग रे, नल दमयंती वियोगरे ॥ वासुदेव जरा कुमर मार्यो रे, बलदेव मोहनीए [5]धार्यो रे ॥ ३ ॥ भाइ शब मस्तके वहीयो रे, प्रतिबोध सुर मुखे लहीयो रे ॥ श्रेणिक नरके ए पोहोतो रे, वन गया दशरथ [6]पुत्तो रे ॥ ४ ॥ सत्यवंत हरिचंद धीर रे, डुंब घरे शिर वह्युं नीर रे ॥ कुबेर दत्तने कुयोग रे, बेहेन वली माता शुं भोग रे[7] ॥ ५ ॥ पर हथ्थे [8]चंदन बाल रे, चढिओ सुभद्राने आल रे ॥ मयण रेहा मृगांकलेखा रे, दुःख भोगविया ते अनेका रे ॥ ६ ॥ करमे चंद्र कलंकयो रे, राय रंक कोइ न मुकयो रे ॥ इंद्र अहल्या शुं लुब्धो रे, रयगादेवी रत्रि माउ

---

१ ओजार (सांढसी विगेरे). २ सो. ३ कर्मनी. ४ लडया. ५ घेरायो. ६ पुत्रो. ७ अढारनात्रा पैकी. ८ चंदनबाळा.

कीधो रे ॥ ७ ॥ [1]इश्वर नारीये नचाव्यो रे, ब्रह्मा ध्यानथी चूकाव्यो रे ॥ अइ अइ करम प्रधान रे, जीत्या जीत्या श्री वर्द्धमान रे ॥ ८ ॥

॥ ढाल बारमी ॥ दीन सकळ मनोहर ॥ ए देशी ॥

॥ इम कर्म हण्या सवि, धीर पुरुष महावीर ॥ बार वर्ष तप्यो तप, ते सघलो विणनीर[2] ॥ शालि वृक्ष तळे प्रभु, पाम्या केवल ज्ञान ॥ समोसरण रचे सुर, देशना दे जिन भाण ॥ १ ॥ अपापा नयरी, यज्ञ करे विप्र जेह ॥ सर्वे बूजवी दिख्या[3], वीरने वंदे तेह ॥ गौतम ऋषि आदे, चारशें चार हजार ॥ सहस्स चौद मुनीसर, गणधर वर इग्यार ॥ २ ॥ चंदन बाला मुख, साधवी सहस छत्रीश ॥ दोढ लाख सहस नव, श्रावक दे आशिष ॥ त्रण लाख श्राविका, अधिकी सहस अढार ॥ संघ चतुर्विध थाप्यो, धन्य धन्य जिन परिवार ॥ ३ ॥ प्रभु अशोक तरु तळे, त्रिगडे करे वखाण ॥ सुणे बारे परखदा, योजन वाणी प्रमाण ॥ त्रण छत्र सोहे शिर, चामर ढाळे इंद्र ॥ नाटक बद्ध बत्रीश, चोत्रीश अतिशय जिणंद ॥ ४ ॥ फूल पगर भरे सुर, वाजे दुंदुभि नाद ॥ नमे सकळ सुरासुर, छांडी सवि परमाद ॥ चिहु रुपे सोहे, धर्म प्रकाशे चार ॥ चोवीशमो जिनवर, आपे भवनो पार ॥ ५ ॥ प्रभु वर्ष बोहोंतेर, पाळी निर्मल आय ॥ त्रिभुवन उपगारी, तरण तारण जिनराय ॥

---

१ महादेव. २ पाणी विना–निर्जळ. ३ दीक्षित कर्या.

कार्तिक मासे दिन, दीवाली निरवाण ॥ प्रभु मुक्ते पोहोता, पामे नित्य कल्याण ॥ ६ ॥

॥ कलश ॥ इम वीर जिनवर, सयल सुखकर, नामे नव निधि संपजे ॥ घर ऋद्धि वृद्धि, सुसिद्धि पामे, एकमना जे नर भजे ॥ तपगच्छ ठाकुर, गुण वैरागर, हीरविजय सूरीश्वरो ॥ हंसराज वंदे, मन आणंदे, कहे धन्य मुज ए गुरो ॥ १ ॥

॥ अथ दीवाली कल्पनुं स्तवन ॥

॥ श्री श्रमण संघ तिलकोपमं गौतमं, सुगति प्रणिपत्य पादारविंदं ॥ इन्द्रभूति प्रभवमंहसो मोचकं, कृत कुशल कोटि कल्याण कंदं ॥ १ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ राग रामगिरि ॥

॥ मुनि मन रंजणो, सयल दुःख भंजणो, वीर वर्धमानो जीणंदो ॥ मुगति गति जीम लही, तिम कहुं सुण सही, जीम होएं हर्ष हइडे आणंदो ॥ मु० ॥ १ ॥ करीय उद्घोषणा, देश पुर पाटणे, मेघ जीम दान जल बहूल वरसी ॥ धण कणग मोतिया, झगमगे जोतिया, जीन देइ दान इम एक वरसी ॥ मु० ॥ २ ॥ दोय विण तोय[1] उपवास आदे करी, मागसिर कृष्ण दशमी दिहाडे ॥ सिद्धि साम्हा थइ वीर दीक्षा लेइ, पाप संताप मल दूर

---

१ जळ वगर.

काढे ॥ मु० ॥ ३ ॥ बहूल बंभण घरे पारणुं सांमिएं, पुण्य परमान्न[1] मध्यान्ह किधुं ॥ भुवन गुरु पारणा पुन्यथी बंभणे, आप अवतार फल सयल लिधुं ॥ मु० ॥ ४ ॥ कर्मचंडाल गोसाल संगम सुरो, जीणे जीन उपरे घात मंडयो ॥ एवडो वयर तें पापिया सें कर्यों, कर्म कोडि तुंहिज सबल दंडयो ॥ मु० ॥ ५ ॥ सहज गुण रोषिओ नामे चंडकोषिओ, जीनपदे स्वान जिम जेह विलगो ॥ तेहने बुझवि उद्धर्यों जगपति, किधलो पापथी अतिहें अलगो ॥ ॥ मु० ॥ ६ ॥ वेदयामा त्रियाम लगें खेदियो, भेदियो तुझ नवि ध्यान कुंभो ॥ शूलपाणि अन्नाणि अहो बुझव्यो, तुझ कृपा पार पामे न संभो ॥ मु० ॥ ७ ॥ संगमे पिडीओ प्रभु सजल लोयणे, चिंतवे छुटश्ये किम एहो ॥ तास उपरें दया एवडि शी करी, सापराधे जने सबल नेहो ॥ मु० ॥ ८ ॥ इम उपसर्ग सहेतां तरणि[2] मित वरस, सार्द्ध उपर अधिक पक्ष एके ॥ वीर केवल लह्युं कर्म दुःख सवि दह्युं, गहगह्युं सुर निकर[3] नर अनेके ॥ मु० ॥ ९ ॥ इंद्रभूति प्रमुख सहस चउदश मुनि, साहुणी सहस छत्रीस विहसी ॥ ओगणसठ सहस एक लाख श्रद्धालुआ, श्राविका त्रिलख अढार सहसी ॥ मु० ॥ १० ॥ इम अखिल साधु परिवारशुं परवर्यो, जलधि[4] जंगम जीश्यो गुहिर[5] गाजे ॥ विचरता देश परदेश निय देशना, उपदिशे सयल संदेह भांजे ॥ मु० ॥ ११ ॥

---

१ खीर. २ बार. ३ समुह. ४ समुद्र. ५ गंभीर.

॥ ढाल ॥ २ जी ॥ विवाहलानी देशी ॥

॥ हवे निय आय अंतीम समे, जाणिय श्री जिनरायरे ॥ नयरी अपापाएं आवीया ॥ राय समाजने ठायरे ॥ हस्तिपालग-राये दीठला, आवियडा अंगण बाररे ॥ नयण कमल दोय विह्-सीआ, हरसीला हइडा मझाररे ॥ १ ॥ भले भले प्रभुजी पधारीया, पावस पावन किधांरे ॥ जनम सफल आज अम तणो, अम्ह घरे पाउलां दीधारे ॥ राणी राय जिन प्रणमीया, मोटे मोतियडे वधा-विरे ॥ जिन सनमुख कर जोडीय, बेठला आगले आविरे ॥ २ ॥ धन अवतार अमारडो, धन दिन आजुनो एहोरे ॥ सुरतरु आंगणे मोरिओ, मोतियडे वूठलो मेहोरे ॥ आ श्युं अमारडे एवडो, पूरव पुन्यनो नेहोरे ॥ हैडलो हेजे हरसिओ, जो जिन मलिओ संजोगोरे ॥ ३ ॥ अति आदर अवधारिए, चरम चोमासलु रहियारे ॥ राय राणि सुरनर सवे, हियडला मांहे गहगहियारे ॥ अमृतथी अति मीठडी, सांभली देशना जिननीरे ॥ पाप संताप परो थयो, शाता थइ तन मननीरे ॥ ४ ॥ इंद्र आवे आवे चंद्रमा, आवे नर-नारीना वृंदरे ॥ त्रिण प्रदक्षणा देइ करी, नाटिक नव नवे छंदोरे ॥ जिन मुख वयणनी गोठडी, तिहां होये अति घणी मीठीरे ॥ ते नर तेहज वरणवे, जीणे निज नयणले दीठीरे ॥ ५ ॥ इम आणंदे अतिक्रम्या, श्रावण भाद्रवो आसोरे ॥ कौतिक कोडिलो अनुक्रमे, आवियडो कार्तिक मासोरे ॥ पाखि पर्व पन्होतलुं, पोहतलुं पुन्य प्रवाहिरे ॥ राय अ[illegible] तिहां मिल्या, पोसह लेवा उछांहिरे ॥ ६ ॥

त्रिभोवन जन सवि तिहां मिल्या, श्री जिन वंदन कामोरे ॥ सहेज संकिरण तिहां थयो, तिल पडवा नहि ठामोरे ॥ गोयम स्वामि समोवडी, स्वामि सुधर्मा तिहां बेठारे ॥ धन धन ते जिणे आपणे, लोयणे जिनवर दिठारे ॥ ७ ॥ पूरण पुन्यना ओषध, पोषध व्रत वेगे लिधांरे ॥ कार्तिक काली चउदशे, जिन मुखे पचखाण किधां रे ॥ राय अढार प्रमुख घणे, जिन पगे वांदणां दिधांरे ॥ जिन वचनामृत तिहां घणे, भवियणे घट घट पीधांरे ॥ ८ ॥

॥ ढाल ॥ ३ जी ॥ राग मारु ॥

॥ श्री जगदीश दयालु दुःख दूरे करेरे, कृपा कोडि तुज जोडी ॥ जगमांरे जगमांरे कहिएं केहने वीरजीरे ॥ १ ॥ जग जनने कुण देशे एहवी देशनारे, जाणि निज निरवाण ॥ नवरसरे नवरसरे सोल पहोर दिये देशनारे ॥ २ ॥ प्रबल पुन्य फल संसु- चक सोहामणारे, [1]अज्झायणां पणपन्न ॥ कहियांरे कहियांरे महियां सुख सांभलि होएरे ॥ ३ ॥ प्रबल पाप फल अज्झायणां तिम ते- टलां रे, अण पुछ्यां छत्रीस ॥ सुणतां रे सुणतां रे भणतां सवि सुख संपजेरे ॥ ४ ॥ पुण्य पाल राजा तिहां धर्म कथांनरेरे, कहो प्रभु प्रत्यक्ष देव ॥ मुजनेरे मुजनेरे सुपन अर्थ सवि साचलोरे ॥ ॥ ५ ॥ गज १ वानर २ खीर ३ द्रुम ४ वायस ५ सिंह ६ घडो रे, ७ कमलबीज ८ इम आठ ॥ देखिरे देखिरे सुपन सभय मुझ मन हुओरे ॥ ६ ॥ उखर बिज कमल अस्थांनके सिंहनुंरे, जीव

१ पंचावन अध्ययन.

रहित शरीर ॥ सोवनरे सोवनरे कुंभ मलिन ए शुं घटेरे ॥७॥ वीर भणे भुपाल सुणो मन थीर करीरे, सुपिण[1] अर्थ सुविचार ॥ हेडे रे हैडे रे धरज्यो धर्म धुरंधररे ॥ ८ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥

॥ श्रावक सिंधुर सारिखा, जीनमतना रागी, त्यागी सह गुरु देवधर्म, तत्वें मति जागि ॥ विनय विवेक विचारवंत, प्रवचन गुण पूरा, एहवा श्रावक होयसे, मतिमंत सनुरा ॥ १ ॥ लालचे लागा थोडिलें, सुख राचि रहिया, घरवासे आशा अमर, परमारथ दुहिया ॥ व्रत वैराग थकि नहि, कोइ लेशे प्राये, गज[2] सुपने फल एह, नेह नवि मांहोमांहे ॥ २ ॥ वानर चंचल चपल जाति, सरखा मुनि मोटा ॥ आगल होस्ये लालचि, लोभी मन खोटा ॥ आचारज ते आचारहिण, प्रायें परमादि ॥ धर्म भेद करस्ये घणा, सहजे स्वारथ वादी ॥ ३ ॥ को गुणवंत महंत संत, मोहन मुनि रुडा ॥ मुख मीठा मायाविणा, मनमांहे कुडा ॥ करस्ये मांहोमांहे वाद, पर वादें नासे ॥ बीजा सुपन तणो विचार, इम वीर प्रकाशे ॥ ४ ॥ कल्पवृक्ष सरिखा होस्ये, दातार भलेरा ॥ देव धर्म गुरु वासना, वरि वारिना वेरा ॥ सरल वृक्ष सरिने दीपें, मनमां गहगहता ॥ दाता दुर्लभ वृक्ष राज, फल फुले बहता ॥ ५ ॥ कपटी जिनमत लिंगिया, बली बबूल सरिखा ॥ खीर वृक्ष आडा थया, जीम कंटक तिखा ॥ ज्ञान देयंतां वारमी, अन्य पावन पात्री ॥ त्रिजा सुपन विचार

---

१ स्वप्न २ हाथी.

कह्यो, जिनधर्म विधाश्री ॥ ६ ॥ सिंह कलेवर सारिखो, जिन शासन सबलो ॥ अति दुर्दांत अगाह निय, जिनवायक जमलो ॥ परशासन सावज अज, ते देखी कंपे ॥ चउथा सुपन विचार इम, जिनमुखथी जंपे ॥ ७ ॥ गच्छ गंगाजळ सारीखो, मूकी मति हिणा ॥ मुनि मन राचे छिल्लरे, जीम वायस दीणा ॥ वंचक आचारज अनेक, तिणे भुळविया ॥ ते धर्मांतर आदरे, जडमति बहू भवियां ॥ ८ ॥ पंचम सुपन विचार एह, सुंणीयो राजाने ॥ छठे सोवन कुंभ दीठ, मइलो सुंणि कांने ॥ को को मुनि दरसण चारित्र, ज्ञान पूरण देहा ॥ पाळे पंचाचार चारु, छंडि निज गेहा ॥ ९ ॥ को कपटी चारित्र वेष, लेइ विप्रतारे[1] ॥ मइलो सोवन कुंभ जीव, पिंड पापे भारे ॥ छठा सुपन विचार एह, सातमे इंदिवर[2] ॥ उकरडे उतपति थइ, ते शुं कहो जिणवर ॥ १० ॥ पुण्यवंत प्राणि हुस्ये, प्राहिं मध्यम जाति ॥ दाता भोक्ता ऋद्धिवंत, निर्मल अवदात ॥ साधु असाधु जति वदे, तव सरीखा किजे ॥ ते बहु भद्रक भविगणे, स्यो उलंभो दीजे ॥ ११ ॥ राजा मंत्रिपरे सु साधु, आपोपुं गोपी ॥ चारित्र सुधु राखस्ये, सवि पाप विलोपी ॥ सप्तम सुपन विचार वीर, जिनवरे इम कहियो ॥ अठम सुपन तणो विचार, सुंणिमन गहगहिओ ॥ १२ ॥ न लहे जिनमतमात्र जेह, तेह पात्र न कहिए ॥ दिधानुं परभव पुण्य फळ, कांइ न लहिये ॥ पात्र अपात्र विचार भेद, भोळा नवि लहेस्ये ॥ पुण्य अर्थे ते अर्थ आथ, कुपात्रे देह-

१ छेतरे. २ कमळ.

स्ये ॥ १३ ॥ उखर भूमि दृष्ट बिज, तेहनो फळ कहियें ॥ अष्टम सुपन विचार ईम, राजा मन ग्रहियें ॥ एह अनागत सवि सरुप, जाणि तिणे काळे ॥ दीक्षा लीधी वीर पास, राजा पुन्यपाळे ॥१४॥

॥ ढाल पांचमी ॥ राग गोडि सुत सिद्धारथ सुपनोरे–ए देशी ॥

॥ इंद्रभूति अवसर लहि रे, पुछे कहो जिनराय ॥ स्युं आगळ हवे होयस्येरे, तारण तरण जीहाजोरे ॥ कहे जीन वीरजी ॥ १ ॥ मुज निर्वाण समय थकीरे, त्रिहू वरसे नव मास ॥ माठेरो तिहां बेसश्येरे, पंचम काल निरासोरे ॥कहे० ॥ २ ॥ बारे वरसे मुझ थकिरे, गौतम तुझ निरवाण ॥ सोहम वीशे पामशेरे, वरसे अखय सुख ठांणोरे ॥ कहे० ॥ ३ ॥ चउसठ वरसे मुझ थकीरे, जंबूने निरवाण ॥ आथमसे आदित्य थकिरे, अधिकुं केवळनांणो रे ॥ कहे० ॥ ४ ॥ मन पज्जव परमावधिरे, क्षपशोपशम मन आंण ॥ संयम त्रिण जिन कल्पनीरे, [1]पुळागाहारग हांणरे ॥ कहे० ॥ ५ ॥ सिज्जंभव अठाणवेरे, करस्ये दस वैआलिय ॥ चउद पूर्वि भद्र बाहूथारे, थास्ये सयळ विलिओरे ॥ कहे० ॥ ६ ॥ दोयशत पन्नरे मुझ थकिरे, प्रथम संघयण संठाण ॥ पूवणुं उगते नवि हूस्येरे, महामाण नवि झांणोरे ॥ कहे० ॥ ७ ॥ चउत्रयपने[2] मुझ थकिरे, होस्ये कालिक सूर ॥ करस्ये चउथी पजुसणेरे, वरगुण रयणनो पूरोरे ॥ कहे० ॥ ८ ॥ मुझथी पण चोराशियेरे,[4] होस्ये वयर कुंमार ॥ दस पूर्वि

---

१ पुळाक लब्धि अने आहारक लब्धिनी हांनी थशे. २ (४५३ वर्षे.) ४ (५८४ वर्ष वित्ये).

अधिकालिओरे, रहस्ये तिहां निरधारोरे ॥ कहे० ॥ ९ ॥ मुझ निर्वाण थकि छसेंरे,[1] विस पछी वनवास ॥ मुकी करसे नगरमांरे, आर्य रक्षित मुनि वासोरे ॥ कहे० ॥ १० ॥ सहसें वरसें मुझ थकिरे, चउद पूरव विच्छेद ॥ जोतिष अण मिळतां हूसेरे, बहूल मतांतर भेदोरे ॥ कहे० ॥ ११ ॥ विक्रमथी पंच[2] पंच्याशिएंरे, होस्ये हरिभद्र सूरि ॥ जिन शासन अजुवालसेरे, जेहथी दुरियां सवि दुरोरे ॥ कहे० ॥ १२ ॥ द्वादश[3] सत्त सत्तर समेंरे, मुझथी मुनि सुर हिर ॥ वप्पभट्ट सुरि होयसेरे, ते जिन शासन वीररे ॥ कहे० ॥ १३ ॥ मुझ प्रतिबिंब भरावस्येरे, आंमराय भूपाळ ॥ सार्द्ध त्रिकोटी सोवन तणोरे, तास वयणथी विशाळोरे ॥ कहे० ॥१४॥ षोडश[4] शत ओगणोतरेरे, वरसे मुझथी मुणिंद ॥ हेमसूरि गुरु होयस्येरे, शासन गयण दिणंदोरे ॥ कहे० ॥ १५ ॥ हेमसूरि पडिबोहीसेरे, कुमारपाल भूपाळ ॥ जीन मंडित करस्ये महीरे, जिन शासन प्रतिपालोरे ॥कहे०॥१६॥ गौतम नवळा समयथीरे, मुझ शासन मन मेळ ॥ मांहोमांहे नवि होस्येरे, मच्छ गलागल केलोरे ॥कहे०॥१७॥ मुनि मोटा मायावियारे, वेढोगारा विशेष॥ आप सवारथ वसी थयारे, ए विटंबस्ये वेषोरे ॥ कहे० ॥ १८ ॥ लोभि छत्रपति होयस्येरे, जम सरिखा भूपाळ ॥ सजन विरोधि जन हूसेरे, नवि लज्जालु दयालो रे ॥ कहे० ॥ १९ ॥ निर्लोभि निर-

---

१. (६२०) २. (५८५ वर्षे) ३. (१२१७ वर्षे.) ४. (१६६९ वर्षे.)

माइयारे, सुधा चारित्रवंत ॥ थोडा मुनि मढियले हूसेरे, सुण गौतम गुणवंतरे ॥ कहे० ॥ २० ॥ गुरु भगति शिष्य थोडलारे, श्रावक भगति विहीण ॥ मात पिताना सुत नहीरे, ते[1] महिलाना आधिनोरे ॥ कहे० ॥ २१ ॥ दुपसह सूरि फलगुसिरीरे, नायक श्रावक जांण ॥ सच्चसिरि तिम श्राविकारे, अंतिम संघ वखाण्योरे ॥ कहे० ॥ २२ ॥ वरस सहस एकवीसतेरे, जिन शासन विख्यात ॥ अविचल धर्म चलावशेरे, गौतम आगम वातोरे ॥ कहे० ॥ २३ ॥ दूषमे दूषमा कालनीरे, ते कहिये श्री वात ॥ कायर कंपे हैडलोरे, जे सुणतां अवदातोरे ॥ कहे० ॥ २४ ॥

॥ ढाल ६ ॥ पिउडो घरे आवे—ए देशी ॥

॥ मुझसुं अविहड नेह बांध्यो, हेज हैडा रंगे ॥ दृढ मोह बंधण सबल बांध्यो, वज्र जिम अभंग ॥ अलगा थया मुज थकि एहने, उपजसेरे केवल निय अंगके ॥ गौतमरे गुणवंता ॥ १ ॥ अवसर जाणि जिनवरे, पुछिया गोयम स्वांम ॥ दोहग दुखिया जीवने, आविये आपण काम ॥ देव सर्मा बंभणो, जइ बुझवोरे ओगे ढुंकडे गामके ॥ गौ० ॥ २ ॥ सांभली वयण जिणंदनुं, आणंद अंग न माय ॥ गौतम बे कर जोडि, प्रणम्या वीर जिनना पाय ॥ पांगरचा पूरव प्रीतथी, चउनांणिरे मनमां निरमायके ॥ गौ० ॥ ३ ॥ गौतम गुरु तिहां आविया, वंदाविओ ते विप्र ॥ उपदेश अमृत दीधलो, पीधलो तिणे क्षिप्र ॥ धसमस करतां बंभणे,

---

१ स्त्रीने वश पडेला.

बारि बागीरे थइ वेदन विमके ॥ गौ० ॥ ४ ॥ गौतम गुरुनां वयणडां, नवि धर्यां तिणे कान ॥ ते मरी तस शिर कृमि थयो, कामनीने एक तान ॥ उठिया गोयम जाणिओ, तस चरीयोरे पोताने ज्ञान के ॥ गौ० ॥ ५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥ राग रामगिरि ॥

॥ चोसठ मणनां ते मोति झगमगेरे, गाजे गुहिर गंभिर सिरेरे ॥ पुरां तेत्रीस सागर पूरवे रे, नादे लिणा लवसत्तमिया सुर रे ॥ वीरजी वखाणेरे जग जन मोहियोरे ॥ १ ॥ अमृतथी अधिकि मीठी बाणी रे, सुणतां सुखडो जे मनडे संपजेरे ॥ ते लहेस्ये जे पोहोचस्ये निर्वाणरे ॥ वी० ॥ २ ॥ वाणि पडछंदे सुर पडिबोहीयारे, सुणतां पामे सुख संपत्तिनी कोडरे ॥ बिजा अडल उलटथी घणारे, आवी बेठा आगल बे करजोड रे ॥ वी० ॥ ३ ॥ सोहम इंदो शासन मोहीयोरे, पूछे परमेश्वरने तुम आयरे ॥ बे घडि वधारो स्वाति थकी परहुं रे, तो भस्मग्रह सघलो दुरे जाय रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ शासन शोभा अधिकि वाधश्ये रे, सुखीआ होशे मुनिवरना वृंदरे ॥ संघ सयलने सवि सुख संपदारे, होशे दिन दिनथी परमानंदरे ॥ वी० ॥ ५ ॥ इदा न कदा रे कहिए केहनुं रे, केणे सांध्युं नवि जाए आयरे ॥ भावि पदारथ भावे निपजे रे, जे जिम सरज्यो ते तिम थायरे ॥ वी० ॥ ६ ॥ सोल पहोरनी देना देशनारे, परधानकनामा[1] रुअडो अज्जयणरे ॥ कहेनां काति वदि कहुं परगडिरे,

१ प्रधान.

वीरजी पोहोता पंचमी गति रयणरे[1] ॥ वी० ॥ ७ ॥ ज्ञान दीवोरे जब दूरे थयो रे, तव किधि देवे दीवानी श्रेणिरे ॥ तिमरे चिहुं बरणे दीवा किधळारे, दिवाली कहियें छे कारण तेणरे ॥ वी० ॥ ८ ॥ आंसू परिपूरण नयण आखंडलो रे, मूकि चंदननी चेहमां अंगरे ॥ दिधो देवे दहन सघले मिलिजी रे, हा धिग धिग संसार विरंगरे[2] ॥ वी० ॥ ९ ॥

॥ ढाल आठमी ॥ राग विराग सींधुचक्र पद वंदो—ए देशी ॥

॥ वंदेसु वेगे जइ वीरो, इम गौतम गहगहता ॥ मारगे आवतां सांभलिउं, वीर मुगति मांहे पोहतारे ॥ जिनजी तुं निसनेही मोटो, अविहड प्रेम हतो तुज उपरे, ते तें किधो खोटोरे ॥ जीनजी० ॥ १ ॥ हे हे वीर कर्यो अणघटतो, मुज मोकलिओ गामे ॥ अंतकाले बेठां तुज पासे, हुं स्ये नावत काम रे ॥ जी० ॥ २ ॥ चौद सहस मुज सरिखा ताहरे, तुज सरिखो मुज तुंहि ॥ विश्वासी वीरे छेतरीओ, ते इया अवगुण मुंहिरे[3] ॥ जी० ॥ ३ ॥ को केहने छेहडे नवि वळगे, जो मिलतो होए सवळो ॥ मिलतास्युं जेणे चित्त चोर्यो, ते तिणे कर्यो निबळो रे ॥ जी० ॥ ४ ॥ निठुर हैडा नेह न किजे, निसनेही नर निरखी ॥ हैडा हेजे मिळे जिहां हरखी, ते प्रीतलडि सरीखिरे ॥ जी० ॥ ५ ॥ तें मुझने मनडो नवि दीधो, मुज मनडो तें लीधो ॥ आप सवारथ सघळो किधो, मुगति जइने सिद्धोरे ॥ जी० ॥ ६ ॥ आज लगे तुज मुजसुं अंतर, सुपनंतर

१ रात्री. २. असार. ३ मारामां.

नवि हुतो ॥ ६॥ हेजे हियालि छंडी, मुजने मुक्यो रोवैतो रै ॥ जी० ॥ ७ ॥ को केहशुं बहु प्रेम म करश्यो, प्रेम विटंबण विरुइ ॥ प्रेमे परवश जे दुःख पामे, ते कथा घणुं गिरुइरे ॥ जी० ॥ ८ ॥ निसनेही सुखिया रहे सघले, स सनेही दुःख देखे ॥ तैल दुग्ध परे परनी पीडा, पामे नेह विशेषेरे ॥ जी० ॥ ९ ॥ समवसरण कहिएं हवे होसे, कहो कुंग नयणें जोशे ॥ दया धेनु पुरी कुंण दोहस्ये, वृष दधि कुंण विलोसेरे ॥ जी० ॥ १० ॥ इण मारग जे वाल्हा जावे, ते पाछा नवि आवे ॥ मुज हैडो दुःखडे न समाए, ते कहो कुण समावेरे ॥ जी० ॥ ११ ॥ द्यो दरिसण वीरा वालाने, जे दरिसणना तरस्या ॥ जो सुहणे केवारे देखसुं, तो दुःख दूरे करेशुं रे ॥ जी० ॥ १२ ॥ पुण्य कथा हवे कुण केलवशे, कुंण वाल्हा मेलवशे ॥ मुज मनडो हवे कुंग खेलवशे, कुमति जिम तिम लवशेरै ॥ जी० ॥ १३ ॥ कुण पुछयानो उत्तर देशे, कुण संदेह भांजशे ॥ संघ कमळ वन किम विकससे, हुं छद्मस्था वेसेरे ॥ जी० ॥ १४ ॥ हुं परापुर वसुं अजाण, में जिन वात न जाणि ॥ मोह करै सवि जग अनाणी, एहवी जनजीनी वाणीरे ॥ जी० ॥ ॥ १५ ॥ एहवे जिन वयणे मन वाप्यो, मोह सबळ बळ काप्यो ॥ इण भावे केवळ सुख आप्यो, इंद्रे जिनपद थाप्योरे ॥ जी० ॥ १६ ॥ इंद्रे जुहारया भट्टारक, जुहार भट्टारक तेणे ॥ पर्व पन्होतुं जगमां वाप्युं, ते किजे सवि केणेरे ॥ जी० ॥ १७ ॥ राजा नंदिवर्द्धन नुतरीओ, भाइ बहिनर बीजे ॥ ते भावड बीज हुइ जग सघळे, बेहेन बहुपरे किजेरे ॥ जी० ॥ १८ ॥

॥ ढाल नवमी ॥ विवाहलानी ॥

परिहरीए नवरंग फालडीए. मांडि मृगमद[1] केसर भालडीए ॥ झब झबके श्रवणे झालडाए, करी कंठे मुगताफल मालडीए ॥१॥ घर घर मंगल मालडीए, जपे गोयम गुण जपमालडीए ॥ पहोतला परव दीवालडीए, रमे रस भर रामत बालडीए ॥ २ ॥ शोक संताप सवि कापीओए, इंद्रे गोयम वीरपदे थपीओए ॥ नारी कहे सांभल कंतडाए, जपो गोयम नाम एकंतडाए ॥ ३ ॥ ल्यो लख लाभ लखेशरी ए, द्यो मंगल कोडी कोडेशरी ए ॥ जाप जपो यइ सुतपेसरी ए, जीम पामीए ऋद्धि परमेसरीए ॥ ४ ॥ लहिए दिवालडी दाडलो ए, एतो पुण्यनो टबको टालुओए ॥ सुकृत सिरि हव करो पालडीए, जिम घर होय नित्य दिवालडीए ॥ ५ ॥

॥ ढाल दसमी ॥

हवे मुनि सुव्रत सीसोरे, जेहनी सबल जगीसो ॥ ते गुरु गजपुरे आव्यारे, वादी सवि हार मनाव्या ॥ १ ॥ पावस चउमासुं रहियारे, भविगण हइडे गहगहीआरे ॥ नमुंचि चक्रवर्ति पधरे, जसु हियडे नवि ऋध्र ॥ २ ॥ नमुंचे नस नामे मधानरे, राजा दिये बहु मान ॥ निणे तिहां रिझवी रायरे, मागि मोटो पसाय ॥ ३ ॥ लिधो षट खंड राजरे, सात दिवस मांडि आज ॥ पूर्वे मुनिसुं विरोध्योरे, ते किणे नवि मतिबोध्यो ॥ ४ ॥ ते मुनि सुं कहे वंडोरे, मुझ धरति सवि छंडो ॥ विनविओ मुनि मोटो रे, नवि माने कर्मि खोटो

---

1 कस्तुरी.

॥ ५ ॥ साठसयां वर्ष तप तपिओरे, जे जिन करीयानो खपीओ॥ नामे विष्णु कुमाररे, सयल लब्धिनो भंडार ॥ ६ ॥ उठ क्रम भूमि छेवारे, जोवा भाइनी सेवा ॥ ल्यूं त्रिपदि भूमि दानरे, भले भले आव्या भगवान ॥ ७ ॥ इणे वयणे धडहडीओरे, ते मुनि बहु कोपे चढिओ ॥ किधो अद्भूत रुपरे, जोयण लाख सरूप ॥ ८ ॥ प्रथम चरण पूर्वे दीधोरे, बिजो पश्चिमे किधो ॥ त्रिजो तस पुंठे थाप्योरे, नमुंचि पाताळे चांप्यो ॥ ९ ॥ थरहरीओ त्रिभूवन्नरे, खलभलिओ सवि जन ॥ सळसलिओ सुर दिन्नरे, पडयो नवि सांभळिए कन्न ॥ १० ॥ ए उत्पात अत्यंतरे, दूरि करो भगवंत ॥ हे हे श्युं हवे थाशे रे, बोले बहु एक सासे ॥ ११ ॥ करणे किन्नर देवा रे, कडुया क्रोध समेवा ॥ मधुर मधुर गाए गीतरे, बे कर जोडी विनीत ॥ १२ ॥ विनय थकी वेगे वळिओरे, ए जिन शासन वळिओ ॥ दानव देवे खमाव्यो रे, नर नारीए वधाव्यो ॥ १३ ॥ गावळडी भस भडकी रे, जे देखी दुरे तडकी ॥ ते जतने ग्रहि छे रे, आरति उतारी मेरइए ॥ १४ ॥ नवले अवतारे आव्या रे, जीवित फळ लहि फाव्या ॥ शेव सुंहालि कंसार रे, फल ल्यू नवे अवतार ॥ १५ ॥ छगण तणो घरबार रे, नमुंचि लख्युं घर नारे ॥ ते जीम जीम खेरु थाय रे. तिम तिम दुःख दूरे जाय ॥ १६ ॥ मंदिर मंडाण मांडया रे, दालिद्र दुःख दुरे छांडया ॥ काति सुदि पडवे परवेरे, इम ए आदराओ सर्वे ॥ १७ ॥ पुण्ये नरभव पामि रे, धर्म पुन्य करो निरधामी ॥ पुन्ये ऋद्धि रसालि रे, नित नित्त पुन्ये दिवाळी ॥ १८ ॥

॥ कलश ॥ जिन तुं निरंजन सजल रंजण, दुख भंजण देवता ॥ द्यो सुख सामि मुगति गामि, वीर तुझ पाय सेवता, तपगच्छ गयण दिणंद दह दिसे, दीपनो जग जाणिए ॥ श्री हीरविजय सुरिंद सद्गुरु, तास पाट वखाणीये ॥ १ ॥ श्री विजयसेन सुरीस सद्गुरु, विजयदेव सूरिसरु ॥ जे जपे अहनिश नाम जेहनो, वर्द्धमान जिणेश्वरु ॥ निर्वाण स्तवन महिमा भवन, वीर जिननो जे भणे ॥ ते लहे लिलालब्धि लच्छी, श्री गुण हर्ष वधामणे ॥ २ ॥ इति श्री वीर निर्वाण महिमा दीपालिका स्तवन संपूर्ण ॥

सज्झायोनो संग्रह.

॥ अथ शियलविषे पुरुषने शिखामणनी सज्झाय ॥

॥ चाल ॥ सुण सुण कंतारे, शिख सोहामणी ॥ प्रित न कीजेरे. परनारीतणी ॥ उथलो ॥ परनारी साथे प्रित पियुडा, कहो किणिपरे कीजीये ॥ उंघ वेची आपणी, उजागरो केम लीजीये ॥ काछडीछुटो कहे लंपट, लोकमांहे लाजीये ॥ कुलविषय खंपण रखे लागे, सगामां केम गाजीये ॥ १ ॥ चाल ॥ प्रिति करंतांरे, पहेलां बीहीजीये ॥ रखे कोइ जाणेरे, मनशुं धुजीये ॥ उथलो ॥ धुजीये मनशुं झूरीये पण, जोग मळवो छे नहीं ॥ रात दिन विलपंतां जाये, अवटाइ मरवु सही ॥ निज नारीथी संतोष न वळ्यो, परनारीथी

कहों शुं हशे ॥ जो भरेभाणे तृप्ति न वळी, तो एठ चाटे शुं थशे ॥ २ ॥
॥ चाल ॥ मृगतृष्णाथीरे, तृष्णा नवि टळे ॥ वेळु पिल्यारे, तेल न
निकळे ॥ उथलो ॥ न निकळे पाणी वलोवतां, लवलेश माखणनो
वळी ॥ बूडतां बाचका भरिया केणे, ते तरथा वात न सांभळी ॥
॥ तेम नारी रमतां परतणी, संतोष न वळशे एक घडी ॥ चित्त
चटपटी उच्चाट थाये, नयणे नावे निंद्रडी ॥ ३ ॥ चाल ॥ जेवो
खोटोरे, रग पतंगनो ॥ तेवो चटकोरे, परस्त्री संगनो ॥ उथलो ॥ पर-
नारी साथे प्रेम प्रियुडा, रखे तु जाणे खरो ॥ दिन चार रंग सु-
रग रहो, पछी नहीं रहे निर्धरो ॥ जे घणा साथे नेह मांडे, छांड
तेहशुं वातडी ॥ एम जाणी म म कर नाहला, परनारी साथे प्रितडी
॥ ४ ॥ चाल ॥ जे पति व्हालोरे, वंचे पापिणी ॥ परशुं प्रेमेरे, राचे
सापिणी ॥ उथलो ॥ सापिणी सरखी वेणि निरखी, रखे शिळथकी
चळे ॥ आंखने मटके अंगने लटके, देव दानव ने छळे ॥ मनमांहे
काळि अति रसाळी, वाणी मिठी शेलडी ॥ सांभळी भोळा रखे
भुलो, जाणज्यो विषवेलडी ॥ ५ ॥ चाल ॥ संग निवारोरे, पर रामा
तणो ॥ शोक न कीजेरे, मन मळवातणो ॥ उथलो ॥ शोक शाने
करो फोगट, देखवुं पण दोहिलुं ॥ क्षण मेडिये क्षण शेरिये, गमतां
न लागे सोहिलुं ॥ उच्छासने निःश्वास आवे, अंग भांगे मन भमे ॥
वळि कामिनी देखी देह दाझे, अन्न दीठुं नवि गमे ॥ ६ ॥ चाल ॥
जाये कलापी रे, मनशुं कळमळे ॥ उन्मत्त थइनेरे, अळल पलल लवे
॥ उथलो ॥ लवे अळल पलल जाणे, मोहवेळो मन रहे ॥ महा

मदन वेदन कठिण जाणी, मरण वारुं त्रेवडे ॥ ए दश अवस्था कामकेरी ॥ कंत कायाने दहे ॥ एम चित जाणी तजे माणो, पारकी ते सुख लहे ॥ ७ ॥ चाल ॥ परनारीना रे, पराभव सांभळो ॥ कंता कीजेरे, भाव ते निर्मळो ॥ उथलो ॥ निर्मळे भावे नहि समजो, परवधु रस परिहरो ॥ चांपोयो कीचक भीमसेने, शिला हेठळ सांभळो ॥ रण पड्यां रावण दशे मस्तक, रडवड्यां ग्रंथे कह्यां ॥ तेमभुंजपति दुःख पुंज पाम्यो, अपजस जगमांहे लह्यो ॥ ८ ॥ चाल ॥ शियळ सलूणारे, माणस सोहीये ॥ विण आभरणेरे, जग मन मोहीये ॥ उथलो ॥ मोहीये सुर नर करे सेवा, विष अमिय थइ संचरे ॥ वेशरीसिंह शियाळ थाये, अनळ अति शितळ करे ॥ साप थाये फूलमाळा, लच्छी घर पाणी भरे ॥ परनारी परिहरि शियळ मन धरी, मुक्तिवधु हेला वरे ॥ ९ ॥ चाल ॥—ते माटे हुंरे, वालम विनवुं ॥ पाय लागानेरे, मधुर वयणे स्तवुं ॥ उथलो ॥ वयण म्हारुं मानीने, परनारीथी रहो वेगळा ॥ अपवाद माथे चढे म्होटा, नरके थइए दोहिला ॥ धन्य धन्य ते नरनारी जे जग, शियल पाळे कूळ तिलो ॥ ते पामशे जस जगतमांही, कुमुद वंद सम उजळो ॥ १० ॥

॥ अथ शियलविषे स्त्रीने शिखामणनो सज्झाय ॥

॥ चाल ॥ एक अनोपमरे, शिखामण खरी ॥ समजी लेज्योरे, सघळी सुंदरी ॥ उथलो ॥ सुंदरी सहेजे हृदय हेजे, पर सेजे नवि

बेसीये ॥ चित्तथकी चूकी लाभ मूकी, परमंदिर नवि पेसीये ॥ बहु घेर हींडे नारी निर्लज, शास्त्रे पण त्यजवी कही ॥ जेम प्रेत दृष्टे पडयुं भोजन, जमवुं ते जुगतुं नहीं ॥ १ ॥ चाल ॥ परशुं प्रेमेरे, हसीय न बोळीये ॥ दांत देखाडीरे, गुह्य न खोलीये ॥ उथलो ॥ गुह्य घरनुं परनी आगें, कहोने केम प्रकाशीये ॥ वळी वात जे विपरीत भासे, तेहथी दूरे नाशीये ॥ असुर सवारा अने अगोचर, एकळडा नवि जाइये ॥ सहसात्कारे वात करतां, सहेजे शियळ गमावीये ॥२॥ चाल ॥ नट विट नरशुं रे, नयण न जोडिये ॥ मारग जातां रे, आघूं ओढीये ॥ उथलो ॥ आघुं ते ओढी वात करतां, घणांज रुडां शोभीये ॥ सासू अने माना जण्या विण, पलक पास न थोभिये ॥ सुख दुःख सरज्युं पामिये पण, कुळाचार न मूकीये ॥ परवश वसतां माग जातां, शियळथी नवि चूकीये ॥ ३ ॥ चाल ॥ व्यसनी साथेरे, वात न कीजीये ॥ हाथो हाथेरे, ताळी न लीजीये ॥ उथलो ॥ ताळी न लीजे नजर न दीजे, चंचल चाल न चालीये ॥ एक विषय बुद्धे वस्तु केहनी, हाथे पण नवि झालीये ॥ कोटी कंदर्प रुप सुंदर, पुरुष पेखी न मोहीये ॥ तृणखला तोले गणी तेहने, फरिय सामुं न जोइये ॥ ४ ॥ चाल ॥ पुरुष पियारोरे, वळि न वखाणीये ॥ वृद्ध ते पितारे, सरखो जाणीये ॥ उथलो ॥ जाणीये पियुविण पुरुष सघळा, सहोदर समोवडे ॥ पतिव्रतानो धर्म जोतां, नावे कोइ तडोवडे ॥ कुरुप कुष्टि कुबडोने, दुष्ट दूर्बळ निर्गुणो ॥ भरतार पामी भामिनी ते, इंद्रथी अधिको गुणो ॥ ५ ॥ चाल ॥

अमर कुमारेरे, तजी सुरसुंदरी ॥ पवनंजयेरे, अंजना परिहरि ॥ ॥ उथलो ॥ परिहरी सिता रामे वनमां, नळे दमयंती वळी ॥ महासति माथे कष्ट पडयां पण, शियळथी ते नवि चळी ॥ कसोटीनी परे कसीय जोतां, कंतशुं विहडे नहीं। तन मन वचने शियल राखे, सति ते जाणो सही ॥ ६ चाल ॥ रुप देखाडी रे, पुरुष न पाडीये ॥ व्याकूळ थइनेरे, मन न बगाडीये ॥ उथलो ॥ मन न बगाडीये पर पुरुषनुं, जोग जोतां नवि मळे ॥ कलंक माथे चढे कूडां, सगां सहु दूरे टळे ॥ अणसरज्यो उच्चाट थाये, प्राण तिहां लागी रहे ॥ इहलोक पामे आपदा, परलोक पीडा बहु सहे ॥ ७ ॥ चाल ॥ रामने रुपेरे, सुर्पनखा मोही ॥ काज न सिधुंरे, वाळे इजत खाई ॥ ॥ उथलो ॥ इजत खोई देख अभया, शेठ सुदर्शन नवि चळयो ॥ भरतार आगळ पडी भोंठी, अपवाद सघळे उछळयो ॥ कामनी बुद्धे कामिनीये, वंकचुळ बाह्यो घणुं ॥ पण शियळथा चुक्यो नहीं, द्रष्टांत एम केता भणुं ॥ ८ ॥ चाल ॥ शियळ प्रभावेरे, जूओ सोळे सति ॥ त्रिभुवनमांहेरे, जे जे थइ छती ॥ उथलो ॥ सती थइने शियळ राख्युं, कल्पना कीधी नहीं ॥ नाम तेहनां जगत जाणे, विश्वमां व्यापी रही ॥ विविध रत्ने जडित भूषण, रुप सुंदर किन्नरी ॥ एक शियळविण शोभे नहीं, ते सत्य गणजो सुंदरी ॥ ९ ॥ चाल ॥ शियल प्रभावेरे, सहु सेवा करे ॥ नववाडेरे, जेह निर्मळ धरे ॥ ॥ उथलो ॥ धरे निर्मळ शियल उज्वळ, तास कीर्त्ति झळहळे ॥ मन कामना सवि सिद्धि पामे, अष्ट भय दूरे टळे ॥ धन्य धन्य ते

जाणो नरा जे, शियळ चारखुं आदरे ॥ आनंदना ते ओघ पामे, उदय महा जस विस्तरे ॥ १० ॥

॥ अथ स्त्रीने शीखामणनी सज्झाय ॥

॥ सांभळने तुं सजनी मारी रजनी क्यां रमीआवी जीरे–ए देशी ॥

॥ नाथ कहे तु सुणने नारी, शिखामण छे सारी जी ॥ वचन ते सघळां वीणी लेशे, तेहनां कारज सरशे ॥ शांणा थइएजो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जात्रा जागरण ने विवाहमां, माता साथे रहीयेजी ॥ सासरीयामां जळ भरवाने, सासु साथे जइए ॥ शां० ॥ २ ॥ दिशा अंधारी ने एकलडां, मारगमां नवि जइएजो ॥ एकली जाणी आळ चढावे, एवडुं शाने सहीयें ॥ शां० ॥ ३ ॥ वहाणामां वेलेरां ऊठी, घरनो धंधो करीएजी ॥ नणंद जेठाणी पासे जइने, सुख दुःख वात न करीए ॥ शां० ॥ ४ ॥ चाकामां चतुराइए रहीए, रांधतां नवि रमीएजी ॥ सहुकोने प्रसाद करावी, पाछळ पोते जमीए ॥ शां० ॥ ५ ॥ गांठे पहेरी घरमां रहीए, बहार पग नवि भरीएजो ॥ ससरा जेठनी लाज करीने, मों आगळथी टळीए ॥ शां० ॥ ६ ॥ छुटे केशे शिर उघाडे, आंगणमां नवि जइएजी ॥ पुरुषतणो पडछायो देखि, मों आगळ नवि रहीये ॥ शां० ॥ ७ ॥ एकांते दियरीया साथे, हाथे ताळी न लइएजी ॥ प्रेमतणी जो वात करे तो, मों आगळथी खशीए ॥ शां० ॥ ८ ॥ आभरण पहेरी अंग शोभावी, हाथे दर्पण न लइएजी ॥ पियुडो जो परदेश सधावे, तो काजळ रेख न दइए ॥ शां० ॥ ९ ॥ पियुडा साथे क्रोध न करीए, रिसाइ

नवि रहीएजी ॥ छैयां छोरु छोकरडांने, ताडन कदिय न करीए ॥ शां० ॥ १० ॥ उजड मंदिरमांही क्यारे, एकलडां नवि जइए-जी ॥ एकली जाणी आळ चढावे, एवडुं शाने सहीए ॥ शां० ॥ ॥ ११ ॥ फिरियल नारीनो संग न करीए, तम संगे नवि फरी-एजी ॥ मारग जातां विचार करीने, उंडो पात्र न धरीए ॥ शां० ॥ ॥ १२ ॥ उदयरतन वाचक इम बोले, जे नर नारी भणशेजी ॥ ते-हना पातक दूरे टळशे, मुक्ति पूरीमां मळशे ॥ शांणा थइएजी ॥१३॥

॥ श्री स्थुलीभद्रजीना सज्झाय ॥

॥ श्री स्थूलिभद्र मुनिगणमां शिरदार जो, चोमासु आव्या कोश्या आगार जो ॥ चित्रामणशाळाये तप जप आदर्यो जो ॥१॥ आदरियां व्रत आव्या छो अम गेहजो, सुंदरी सुंदर चंपकवरणी देहजो ॥ अम तुम सरिखो मेळो आ संसारमां जो ॥ २ ॥ संसारे में जोयुं सकळ सरुपजो, दर्पणनी छायामां जेवुं रुपजो ॥ सुपनानी सुखलडी भूख भागे नहीं जो ॥ ३ ॥ ना कहेशो तो नाटक करशुं आजजो, बार वरसनी माया छे मुनिराजजो ॥ ते छोडी केम जाउ हु आशाभरीजो ॥४॥ आशा भरियो चेतन काळ अनादीजो, भम्यो धरमने हीण थयो परमादीजो ॥ न जाणी में सुखनी करणी जोग-नीजो ॥ ५ ॥ जोगी तो जंगलमां वासो वसियाजो, वेश्याने मंदि-रिये भोजन रसियाजो ॥ तुमने दीठा एवा संयम साधताजो ॥६॥ साधशुं संयम इच्छारोध विचारीजो, कुर्मापुत्र थया नाणी घरबारी

जो ॥ पाणी मांहे पंकज कोरुं जाणियेजो ॥ ७ ॥ जाणीए तो सघ-
ळी तुमारी वातजो, मेवा मीठा रसवंता बहु जातजो ॥ अमर भूषण
नवनवली भांते लावताजो ॥ ८ ॥ लावता तो तुं देती आदरमान
जो, काया जाणुं रंग पतंग समानजो ॥ ठालीने शी करवी एवी
प्रीतडी जो ॥ ९ ॥ प्रितलडी करता ते रंगभर सेजजो, रमता ने
देखाडंता घणुं हेतजो ॥ रिसाणी मनावी मुजने सांभरेजो ॥ १० ॥
सांभरेतो मुनिवर मनडुं वाळेजो, ढांक्यो अग्नि उघाडयो परजाळे
जो ॥ संयम मांही ए छे दुषण मोटकुं जो ॥ ११ ॥ मोटकुं आव्युं
तुं नंदनुं तेडुंजो, जातां न वहे कांइ तुमारुं मनडुंजो ॥ में तुमने तिहां
कोल करीने मोकल्याजो ॥ १२ ॥ मोकल्या तो मारगमांही मळि-
याजो, संभूति आचारज ज्ञाने बळियाजो ॥ संयम दीधुं समकित
तेणे शिखव्युंजो ॥ १३ ॥ शिखव्युं तो कही देखाडो अमनेजो, ध-
रम करंता पुण्य वडेरुं तमनेजो ॥ समताने घेर आवी वेश्या इम
वदेजो ॥ १४ ॥ वदे मुनिश्वर शंकाने परिहारजो, समकित मूळे
श्रावकनां व्रत बारजो ॥ प्राणातिपातादिक स्थूलथी उच्चरे जो ॥ १५ ॥
उच्चरे तो वित्युं छे चोमासुंजो, आणा लेइने आव्या गुरुनी पासे
जो ॥ श्रुतनाणी कहेवाणा चौदे पूरवीजो ॥ १६ ॥ पूरवी थइने
तार्या प्राणि थोकजो, उज्वळध्याने तेह गया देवलोकजो ॥ ऋषभ
कहे नित्य तेहने करीए वंदनाजो ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री स्थूलिभद्रजीनी सज्झाय बीजी ॥

॥ भेखरे उतारो राजा भरथरी ॥ ए देशी ॥

॥ वेष स्वामी जोइ आपणो, लागी मारा तनडामां लायजी ॥ अणधार्युं रे स्वामी आ शुं कर्युं, लाजे सुंदर कायजी ॥ कोणरे धुतारे तमने भोळव्या ॥ १ ॥ आवी खबर जो होत तो, जावा देत नही नाथ जी ॥ छेतरी छेह दीधो मने, पण छोडुं नही साथजी ॥को०॥ ॥ २ ॥ बोध सुणी सुगुरु तणो, लीधो संजम भारजी ॥ मात पिता परिवार सहुं, जूठो आळ पंपाळजी ॥ नथीरे धुतारे मने भोळव्यो ॥ ३ ॥ एवुं जाणीरे कोश्या सुंदरी, धर्यो साधुनो वेषजी ॥ आव्यो गुरुनी आज्ञा लेई, देवा तुने उपदेशजी ॥ नथीरे० ॥ ४ ॥ काले सवारे भेगा रही, लीधां सुख अपारजी ॥ ते मने बोध देवा आविया, जोग धरीने आवारजी ॥ जोगरे स्वामीजी अहीं नहीं रहे॥ ॥ ५ ॥ कपट करीने मने छोडवा, आव्या तमे निरधारजी ॥ पण छोडुं नहीं कदी नाथजी, नथी नारी गमारजी ॥ जोगरे० ॥ ६ ॥ छोड्यां मात पिता वळी, छोड्यो सहु परिवार जी ॥ ऋद्धि सिद्धिरे मैंतो तजी दीधी, मानी सघळुं असारजी ॥ छेटी रहीरे कर वाततुं ॥ ७ ॥ जोग धर्योरे अमे साधुनो, छोड्यो सघळानो प्यार जी ॥ मात समान गणुं तने, सत्य कहुं निरधारजी ॥ छेटी० ॥ ८ ॥ बार वरसनी प्रीतडी, पळमां तुटी जायजी ॥ पस्तावो पाछळथी थशे, कहुं लागीने पायजी ॥ जोगरे० ॥ ९ ॥ नारी चरित्र जोइ नाथजी, तुरत छाडशो जोगजी ॥ माटे चेतो प्रथम तमे, पछी ह-

सशे लोकजी ॥ जोगरे० ॥ १० ॥ चाळा जोइरे तारा सुंदरी, डगुं नहीं हुं लगार जी ॥ काम शत्रु में कबज कर्यो, जाणी पाप अपारजी ॥ छेटे रहीरे गमे ते करो ॥ ११ ॥ छेटे रहीरे गमे ते करो, मारा माटे उपायजी ॥ पण तारा सामुं हूं जोउ नहीं, शाने करेछे हायजी ॥ छेटे० ॥ १२ ॥ माछी पकडे छे जाळमां, जळमांथी जेम मीनजी ॥ तेम मारा नेत्रना बाणथी, करीश हुं तमने आधीनजी ॥ ॥ जोगरे० ॥ १३ ॥ ढोंग करवा तजी दइ, मीते ग्रहो मुज हाथजी ॥ काळजुं कपाय छे माहरुं, वचनो सुणीने नाथजी ॥ जोगरे० ॥१४॥ बार वरस तुज आगळे, रह्यो तुज आवासजी ॥ विध विध सुख में भोगव्यां, कीधा भोग विलासजी ॥ आशारे तज हवे माहरी ॥१५॥ त्यारे हतो अज्ञान हुं, हतो कामनो अंधजी ॥ पण हवे ते रस में तज्यो, सुणी शास्त्रना बंधजी ॥ आशारे० ॥ १६ ॥ ज्ञानी मुनीने ऋषिओ, मोटा विद्वान भुपजी ॥ ते पण दास बनी गया, जोई नारीनुं रुपजी ॥ जोगरे० ॥ १७ ॥ साधुपणुं रे स्वामी नहीं रहे, मिथ्या वदू नहीं लेशजी ॥ देखीरे नाटारंभ माहरो, तजशो साधुनो वेषजी ॥ जोगरे० ॥ १८ ॥ विध विध भूषणो धारीने, सजी रुडा शणगारजी ॥ प्राण काढी नांखे ताहरो, कुदी कुदी आठारजी ॥ ॥ जोगरे० ॥ १९ ॥ तो पण सामुं जोवुं नहीं, गणुं विष समानजी ॥ सूर्य उगे पश्चिम कदी, तो पण छोडुं न मानजी ॥ आशारे० ॥ ॥ २० ॥ भिन्न भिन्न नाटक मे कर्यां, स्वामी आपनी पासजी ॥ तो पण सामुं जोइ तमे, पुरी नही मन आशजी ॥ हाथरे ग्रहो हवे

माहरो ॥ २१ ॥ हस्त जोडीरे हवे विनवुं, प्यारा प्राण जीवनजी ॥ बार वरसनी प्रीतडी, याद करो तुमे मनजी ॥ हाथरे० ॥ २२ ॥ चेत चेतरे कोश्या सुंदरी, शुं कहुं वारंवारजी ॥ आ संसार असार छे, नथी सार लगारजी ॥ सार्थक करो हवे देहनुं ॥ २३ ॥ जन्म धरी आ संसारमां, नहीं ओळख्यो धर्मजी ॥ विध विध वैभव भोगव्या, कीधा घणां कुकर्मजी ॥ सार्थक० ॥ २४ ॥ ते सहु भोगववुं पडे, मुआ पछी तमामजी ॥ अधर्मी प्राणीने मळे नहीं, शरणुं कोई न ठामजी ॥ सार्थक० ॥ २५ ॥ सिंधुरुपी आ संसारमां, मानव मीन रूप धारजी ॥ जंजाळ जाळ रुपी गणो, काळ रुपी मछी मारजी ॥ सार्थक० ॥ २६ ॥ विषय रस वाहालो गणी, कीधा भोग विलासजी ॥ धर्मनां कार्य कर्यां नहीं, राखी भोगनी आशजी ॥ उद्धार करो मुनी माहरो ॥ २७ ॥ व्रत चुकाववा आपनुं, कीधा नाच ने गानजी ॥ छेड करी रे मुनि आपनी, बनी छेक अज्ञानजी ॥ उद्धार० ॥ २८ ॥ श्रेय करोरे मुनिवर मुजने, बतावीने शुभ ज्ञानजी ॥ धन्य धन्य छे आपने, दीसो मेरु समानजी ॥ उद्धार० ॥ ॥ २९ ॥ बार वरस सुख भोगव्युं, खरच्यां खुब दीनारजी ॥ तो हुं तृप्त थई नहीं, धिक मुज धिकारजी ॥ उद्धार० ॥ ३० ॥ छोडी मोह संसारनो, धारो शियळ व्रत धारजी ॥ तो सुख शांति सदा मळे, पामो भवजळ पारजी ॥ सार्थक० ॥ ३१ ॥ धन्य छे मुनिवर आपने, धन्य शकडाळ तातजी ॥ धन्य संभूतिविजय मुनि, धन्य लाछनदे मातजी ॥ मुक्त करीरे मोह जाळथी ॥ ३२ ॥ आज्ञा दीयोरे

हवे मुजने, जाउं मुज गुरु पासजी ॥ चोमासुं पुरुं थया पछी, साधु छंडे आवासजी ॥ रुडी रीते शीयळ व्रत पाळजो ॥ ३३ ॥ दर्शन आपजो मुजने, करवा अमृत पानजी ॥ सूरि इंदुं कहे स्थुलिभद्रजी, बन्या सिंह समानजी ॥ धन्य छे मुनिवर आपने ॥ ३४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सीताजीनी सज्झाय ॥

॥ जनकसुता हुं नाम धरावुं, राम छे अंतरजामी ॥ पालव हमारो मेलने पापी, कुळने लागे छे खामी ॥ अडशो मांजो ॥ मांजो, मांजो, मांजो ॥ अ० ॥ म्हारो नावलीयो दुहवाय ॥ अ० ॥ मने संग केनो न सुहाय ॥ अ० ॥ म्हारुं मन मांहेथी अकुळाय ॥ अ० ॥ ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मेरु महीधर ठाम तजे जो, पथ्थर पंकज उगे ॥ जो जळधि मर्यादा मूके, पांगळो अंभर पूगे ॥ अ० ॥ २ ॥ तोपण तुं सांभळरे रावण, निश्चय शिळ न खंडु ॥ प्राण हमारो परलोक जाए, तोपण सत्य न छंडु ॥ अ० ॥ ३ ॥ कुण मणिधरनी मणि लेवाने, हैडे घाले हाम ॥ सति संगाथे स्नेह करीने, कहो कुण साधे काम ॥ अ० ॥ ४ ॥ परदारानो संग करीने, आखर कोण उगरियो ॥ कुडु कहूं तो जो आलोची, सही तुज दहाडो फरियो ॥ अ० ॥ ५ ॥ जनक सुता हुं जग सहु जाणे, भामंडळ छे भाइ ॥ दशरथ नंदन शिर छे स्वामी, लक्ष्मण करशे लडाइ ॥ अ० ॥ ६ ॥ हुं धणियाती पियु गुण राती, माहरे हाथ छे छाती ॥ रहे अळगो तुज वयणे न चळुं, कां कुळे वाहे छे काती ॥ अ० ॥ ७ ॥ उदयरतन

कहे धन्य ए अबला, सिता जेहनुं नाम ॥ सतियोमांहे शिरोमणि कहिये, नित्य नित्य होजो प्रणाम ॥ अडशो मांजो ॥ मांजो, मांजो, मांजो ॥ अ० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री एलाची कुमारनी सज्झाय ॥

॥ नाम एलापुत्र जाणीयें, धनदत्त शेठनो पुत्र ॥ नटवी देखीने मोहीयो, नवि राख्युं घरनुं सुत्र ॥ १ ॥ कर्म न छुटेरे प्राणीया, पूरव नेह विकार ॥ निजकुल छंडीरे नट थयो, नाणी शरम लगार ॥ कर्म० ॥ २ ॥ मात पिता कहे पुत्रने, नट नवि थइयेरे जात ॥ पुत्र परणावुं रे पदमिणी, सुख विलसो संघात ॥ कर्म० ॥ ३ ॥ कहेण न मान्युं रे तातनुं, पूरव कर्म विशेष ॥ नट थइ शीख्यो रे नाचवा, न मटे लख्यारे लेख ॥ कर्म० ॥ ४ ॥ एक पुर आव्यो रे नाचवा, उंचो वंश विशेक ॥ तिहां राय जोवाने आवियो, मळीया लोक अनेक ॥ कर्म० ॥ ५ ॥ ढोल बजावे रे नट्टवी, गावे किन्नर साद ॥ पाय तल घूंघरा घम घमे, गाजे अंबर नाद ॥ कर्म० ॥ ६ ॥ दोय पग पहेरी रे पावडी, वंश चढ्यो गज गेल ॥ नोधारो थइ नाचतो, खेले नव नवा खेल ॥ कर्म० ॥ ७ ॥ नटवी रंभारे सारिखी, नयणे देखेरे जाम ॥ जो अंतेउरमां ए रहे, जनम सफल मुझ ताम ॥ ॥ कर्म० ॥ ८ ॥ तव तिहां चिंते रे भूपति, लुब्ध्यो नटवीनी साथ ॥ जो नट पडेरे नांचतो, तो नटवी करुं मुज हाथ ॥ कर्म० ॥ ९ ॥ कर्म वशेरे हुं नट थयो, नाचुं छुं निराधार ॥ मन नवि मानेरे राय-

नुं, तो कोण करवो विचार ॥ कर्म० ॥ १० ॥ दान न आपे रे भू-पति, नटें जाणी ते वात ॥ हूं धन वांछुं छुं रायनुं, राय वंछे मुज घात ॥ कर्म० ॥ ११ ॥ दान लहुं जो हुं रायनुं, तो मुज जीवित सार ॥ एम मन मांहे चिंतवी, चढोओ चोथीरे वार ॥ कर्म० ॥ ॥ १२ ॥ थाल भरी शुद्ध मादकें, पदमणी उभी छे बार ॥ ल्यो ल्यो कहे ते लेता नथी, धन धन मुनि अवतार ॥ कर्म० ॥ १३ ॥ एम तिहां मुनिवर वोहोरता, नटें पेख्या महाभाग ॥ धिग् धिग् विषयारे जीवने, एम नट पाम्यो वैराग ॥ कर्म० ॥ १४ ॥ संवर भावेरे केवली, थयो ते कर्म खपाय ॥ केवल महिमा रे सुर करे, लब्धिविजय गुणगाय ॥ कर्म० ॥ १५ ॥ इति ॥

——:o:——

॥ अथ श्री मेतारजमुनिनी सज्झाय ॥

(जीव रे तुं शीलतणो कर संग–ए देशी.)

॥ सम दम गुणना आगरु जी, पंचमहाव्रत धार ॥ मासखमणने पारणे जी, राजगृही नगरी मझार ॥ मेतारज मुनिवर, धन धन तुम अवतार ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सोनीने घेर आवीया जी, मेतारज ऋषिराय ॥ जवला घडतो उठीयो जी, वंदे मुनिना पाय ॥ ॥ मे० । २ ॥ आज फल्यो घर आंगणे जी, विण काळे सहकार ॥ ल्यो भिक्षा छे सुझती जी, मोदकतणो ए आहार ॥ मे० ॥ ३ ॥ क्रौंचजीव जवला चण्यो जी, वहोरी वल्या ऋषिराय ॥ सोनी मन शंका थइ जी, साधुतणां ए काम ॥ मे० ॥ ४ ॥ रीस करी ऋषि-

ने कहे जी, द्यो जवला मुज आज ॥ वाधर शीशे विंटीयुं जी, तडके राख्या मुनिराज ॥ मे० ॥ ५ ॥ फट फट फुटे हाडकां जी, तड तड त्रुटे चाम ॥ सोनीडे परिसह दियोजी, मुनी राख्यो मन ठाम ॥ मे० ॥ ६ ॥ एहवा पण म्होटा यतिजी, मन्न न आणे रोष ॥ आतम निंदे आपणोजी, सोनी नो शो दोष ॥ मे० ॥ ७ ॥ गजसुकुमाल संतापीया जी, बांधी माटीनी पाळ ॥ खेर अंगारा शिर धर्याजी, मुगते गया ततकाल ॥ मे० ॥ ८ ॥ वाधणे शरीर वलूरियुंजी, साधु सुकोसल सार ॥ केवळ लही मुगति गया जी, इम अरणिक अणगार ॥ मे० ॥ ९ ॥ पालक पापी पीलियाजी, खंधकसूरिना शिष्य ॥ अंबड चेला सातशजी, नमो नमो ते निशदिश ॥ ॥ मे० ॥ १० ॥ एहवा ऋषि संभारताजी, मेतारज ऋषिराय ॥ अंतगड हुआ केवळीजी, वंदे मुनिना पाय ॥ मे० ॥ ११ ॥ भारी काष्टनी स्त्रीये तिहांजी, लावी नांखी तिणि वार ॥ धबके पंखी जागीयोजी, जवला काढ्या तिणे सार ॥ मे० ॥ १२ ॥ देखी जवला विष्टमाजी, मन लाज्यो सोनार ॥ ओघो मुहपति साधुनोजी, लेइ थयो अणगार ॥ मे० ॥ १३ ॥ आतम तार्यो आपणोजी, थिर करी मन वच काय ॥ राजविजय रंगे भणेजी, साधुतणी ए सज्झाय ॥ मेतारज० ॥ १४ ॥ इति ॥

——:०:——

॥ अथ श्री अरणिक मुनिनी सज्झाय ॥

अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी, तडके दाझे शिशोजी ॥ पाय अलवाणेरे वेलु परजळे, तनु सुकुमाळ मुनिशोजी ॥ अरणिक० ॥१॥ मुख करमाणुंरे मालती फूल ज्युं, उभो गोखनी हेठोजी ॥ खरे बपोरे रे दीठो एकलो, मोही माननी देठोजी ॥ अ० ॥ २ ॥ वयण रंगीलीरे नयणे वेंधीयो, ऋषि थंभ्यो तेणे ठाणोजी ॥ दासीने कहे जारे उतावळी, ऋषि तेडी घर आणोजी ॥ अ० ॥ ३ ॥ पावन कीजेरे ऋषि घर आंगणुं, वोहरो मोदक सारोजी ॥ नव जोवनरस काया कां दहो, सफळ करो अवतारोजी ॥ अ० ॥ ४ ॥ चंद्रावदनीये चारित्रथी चुकव्यो, सुख विलसे दिन रातोजी ॥ बेठो गोखेरे रमतो सोगठे, तव दीठी निज माताजी ॥ अ० ॥ ५ ॥ अरणिक अरणिक करती मा फरे, गलिये गलिये बजारोजी ॥ कहो कणे दीठोरे म्हारो अरणिको, पूछे लोक हजारोजी ॥ अ० ॥ ६ ॥ हुं कायर छुंरे म्हारी मावडी, चारित्र खांडानी धारोजी ॥ धिग धिग विषयारे माहारा जीवने, में कीधो अविचारोजी ॥ अ० ॥ ७ ॥ गोखथी उतरी रे जननीने पाय पड्यो, मनशुं लाज्यो अपारो जी ॥ वच्छ तुज न घटेरे चारित्रथी चूकवुं, जेहथी शिवसुख सारोजी ॥ अ० ॥ ८ ॥ एम समजावी रे पाछो वाळियो, आण्यो गुरुनी पासोजी ॥ सद्गुरु दीयेरे शिख भली परे, वैरागे मन वासो जी ॥ अ० ॥ ९ ॥ अग्नि धखंतीरे शीला उपरे, अरणिके अणसण कीधोजी ॥ रुपविजय कहे

धन्य ते मुनिवरु, जेणे मनवंछित लीधोजी ॥ अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ रहेनेमीनो सझाय ॥

काउस्सग ध्याने मुनि रहेनेमी नामे, रह्या छे गुफामां शुभ परिणामरे ॥ देवरिया मुनिवर ध्यानमां रहेजो ॥ ध्यानथकी होय भवनो पाररे ॥ देव० ॥ ए आंकणी ॥ वरसादे भींनां चीवर मोकळां करवा, राजुल आव्यां तेणे ठामरे ॥ देव० ॥ १ ॥ रूपे रतिरे वस्त्रे वर्जित बाळा, देखी क्षोभाणो तेणे कामरे ॥ देव० ॥ दिलडुं खोलाणुं जाणो राजुल भाखे, राखो स्थिर मन गुणना धामरे ॥ ॥ देव० ॥ २ ॥ जादवकूळमां जिनजी नेम नगीनो, वमन करी छे मुजने तेणरे ॥ देव० ॥ बंधव तेहना तमे शिवादेवी जाया, एवडो पटंतर कारण केणरे ॥ देव० ॥ ३ ॥ परदारा सेवी प्राणि नरकमां जाय, दुर्लभबोधी होय प्रायरे ॥ देव० ॥ साधवि साथे चूकी पाप जे बांधे, तेहनो छूटकारो कदीय न थायरे ॥ देव० ॥ ४ ॥ अशुची कायारे मळ मूत्रनी क्यारी, तमने केम लागी एवडी प्यारी रे ॥ ॥ देव० ॥ हुं रे संयमी तमे महाव्रत धारी, कामे महाव्रत जाशो हारीरे ॥ देव० ॥ ५ ॥ भोग वम्यारे मुनि मनथी न इच्छे, नाग अगंधन कूलना जेमरे ॥ देव० ॥ धिक् कूळ निचा थइ नेहथी निहाळे, न रहे संयम शोभा एमरे ॥ देव० ॥ ६ ॥ एवां रसीलां राजुल वयण सुणीने, बुझ्या रहेनेमी प्रभुजी पासरे ॥ देव० ॥ पाप आ-

लोय करी संयम लीधुं, अनुक्रमे पाम्या शिव आवासरे ॥ देव० ॥ ॥ ७ ॥ धन्य धन्य जे नर नारी शियळने पाळे, समुद्र लर्या सम व्रत छे एहरे ॥ देव० ॥ रुप कहे तेहना नामथी होवे, अम मन निर्मल सुन्दर देहरे ॥ देव० ॥ ८ ॥

—:o:—

॥ अथ श्री सहजानंदीनी सज्झाय ॥

(बीजी अशरण भावना ॥ ए देशी.)

॥ सहजानंदीरे आतमा, सूतो कांइ निश्चिंतरे ॥ मोहतणा र-णीया भमे, जाग जाग मतिवंतरे ॥ लूंटे जगतना जंतरे, नांखी वांक अत्यतरे ॥ नरकावास ठवंतरे. कोइ विरला उगरंतरे ॥ स० ॥ १ ॥ राग द्वेष परिणती भजी, माया कपट करायरे ॥ काश कुसुमपरे जी-वडो, फोकट जनम गमायरे, माथे भय जमरायरे, शो मन गर्व धरा-यरे, सहुं एक मारग जायरे, कोइ जग अमर कहायरे ॥ स० ॥ २ ॥ रावण सरिखा रे राजवी, नागा चाल्या विण धागरे ॥ दश माथां रण रडवडयां, चांच दीए शिर कागरे, देव गया सवि भागरे, न रह्यो माननो छागरे, हरि हाथे हरि नागरे, जोज्यो भाइओना रा-गरे ॥ स० ॥ ३ ॥ केइ चाल्या केइ चालशे, केता चालणहाररे ॥ मारग वहेतोरे नित्य प्रत्ये, जोतां लक्ष हजाररे, देश विदेश सधाररे, ते नर एणे संसाररे, जातां जम दरबाररे, न जुवे वार कुवाररे ॥ ॥ स० ॥ ४ ॥ नारायणपूरी द्वारिका, बळती मेली निराधाररे ॥ रोता रणमां ते एकलां, नाठा देव आकाशरे, किहां तरुछाया आवासरे,

जळ जळ करी गयो सासरे, बळभद्र सरोवर पासरे, मुणी पांडव शिव वासरे ॥ स० ॥ ५ ॥ राजी गाजीरे बोलता, करता हुकम हे-रानरे ॥ पोढया अग्निमां एकला, काया राख समानरे, ब्रह्मदत्त नरक पयाणरे, ए ऋद्धि अथिर निदानरे, जेवुं पींपळ पानरे, म धरो जूठ गुमानरे ॥ स० ॥ ६ ॥ वालेश्वर विना एक घडि, नवि सोहातुं लगाररे ॥ ते विण जनमारो वही गयो, नहीं कागळ समा-चाररे, नहीं कोइ कोइनो संसाररे, स्वारथियो परिवाररे, माता म-रुदेवी साररे, पहोत्या मोक्ष मोझाररे ॥ स० ॥ ७ ॥ माता पिता सुत बांधवा, अधिको राग विचार रे ॥ नारी असारीरे चित्तमां, वंछे विषय गमाररे, जूओ सूरिकंता जे नाररे, विष दीधो भरताररे, नृप जिनधर्म आधाररे, सज्जन नेह निवाररे ॥ स० ॥ ८ ॥ हसी हसी देतारे तालायो, शय्या कुसुमनी साररे ॥ ते नर अंते माटो थया, लोक चणे घरबाररे, घडता पात्र कुंभाररे, एहवुं जाणी असाररे, छोडो विषय विकाररे, धन्य तेहनो अवताररे ॥ स० ॥ ९ ॥ थावच्चा सुत शिव वर्या, वळी एलाचीकुमाररे ॥ धिक् धिक् विषयारे जीवने, लइ वैराग्य रसाळरे, म्हेली मोह जंजाळरे, घेर रमे केवळ बाळरे, धन्य करकंडू भूपालरे ॥ स० ॥ १० ॥ श्रीशुभविजय सुगुरु लही, धर्मरयण धरो छेकरे ॥ वीर वचन रस सेलडी, चाखे चतुर विवे-करे, न गमे ते नर भेकरे, धरता धर्मनो टेकरे, भव जळ तरिया अनेकरे ॥ स० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री भरतचक्रवर्तिनी सज्झाय ॥

॥ मनमें ही वैरागी भरतजी, मनमें ही वैरागी ॥ सहस बत्रीश मुकुटबंध राजा, सेवा करे वडभागी ॥ चोशठ सहस अंतेउरी जाके, तोहि न हुवा अनुरागी ॥ भरतजी मनमंही वैरागी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ लाख चोराशी तुरंगम जाके, छन्नु कोड हे पागी ॥ लाख चोराशी गजरथ सोहीये, सुरता धर्मशुं लागी ॥ भ० ॥ २ ॥ चार क्रोड मण अन्न नित सीझे, लूण दशलाख मण लागी ॥ तिन क्रोड गोकुल घर दूझे, एक क्रोड हळ सागी ॥ भ० ॥ ३ ॥ सहस बत्रीस देश वडभागी, भये सरवके त्यागी ॥ छन्नु क्रोड गामके अधिपति, तोहि न हुआ सरागी ॥ भ० ॥ ४ ॥ नवनिधि रतन चोगडा बाजे, मन चिंता सब भागी ॥ कनककीर्ति मुनिवर वंदत हे, देज्यो मुक्ति में मागी ॥ भ० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री आपस्वभावनी सज्झाय ॥

॥ आप स्वभावमांरे, अवधू सदा मगनमें रहेना ॥ जगत जीव हे करमाधिना, अचरिज कछुअ न लीना ॥ आप० ॥ १ ॥ तुम नहीं केरा कोइ नहीं तेरा, क्या करे मेरा मेरा ॥ तेरा हे सो तेरी पासे, अवर सबे अनेरा ॥ आप० ॥ २ ॥ वपु विनाशी तुं अविनाशी, अब हे इनकु विलासी ॥ वपु संघ जब दूर निकासी, तब तुम शिवका वासी ॥ आप० ॥ ३ ॥ राग ने रीसा दोय खवीसा, ए तुम दुःखका दीसा ॥ जब तुम उनकुं दूर करीसा, तब तुम जगका इसा

॥ आप० ॥ ४ ॥ पारकी आशा सदा निराशा, ए है जगजन पासा ॥ ते काटनकुं करो अभ्यासा, लहो सदा सुख वासा ॥ आप० ॥ ५ ॥ कबहीक काजी कबहीक पाजी, कबहीक हुआ अपभ्राजी ॥ कबहीक जगमें कीर्ति गाजी, सब पुदगलकी बाजी ॥ आप० ॥ ६ ॥ शुद्ध उपयोगने समताधारी, ज्ञान ध्यान मनोहारी ॥ कर्म कलंककुं दूर निवारी, जीव वरे शिवनारी ॥ आप स्वभावमांरे० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मूर्खप्रतिबोध सज्झाय ॥

॥ ज्ञान कदि नवि थाय, मुरखने ज्ञान कदि नवि थाय ॥ कहेतां पोतानुं पण जाय ॥ मूरखने० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ श्वान होय ते गंगाजळमां, सो वेळा जा न्हाय ॥ अडशठ तिर्थ फरी आवे पण, श्वानपणुं नवि जाय ॥ मूरखने० ॥ कहे० ॥ २ ॥ क्रूर सर्प पयपान करंतां, संतपणुं नवि थाय ॥ कस्तूरिनुं खातर जो कीजे, वास लसण नवि जाय ॥ मूरखने० ॥ कहे० ॥ ३ ॥ तृषा समे सुग्री ते पक्षी, कपि उपदेश कराय ॥ ते कपिने उपदेश न लाग्यो, सुग्री गृह विखाय ॥ मूरखने० ॥ कहे० ॥ ४ ॥ नदीमांहे निशिदिन रहे पण, पाषाणपणुं नवि जाय ॥ लोह धातु टंकण जो लागे, अग्नि तुरत झराय ॥ मूरखने० ॥ कहे० ॥ ५ ॥ काग कंठमां मुक्ताफळनी, माळा ते न धराय ॥ चंदन चर्चित अंग करीजे, गर्धव गाय न थाय ॥ मूरखने० ॥ कहे० ॥ ६ ॥ सिंह चरम कोइ शियाळ सुतने, धारे वेष बनाय ॥ शियाळ सुत पण सिंह न होवे, शियाळपणुं नवि

जाय ॥ मूरखने० ॥ कहे० ॥ ७ ॥ ते माटे मूरखथी अळगा, रहे ते सुखीया थाय ॥ उखरभूमि बीज न हावे, उलटुं बीज ते जाय ॥ ॥ मूरखने० ॥ कहे० ॥ ८ ॥ समकितधारी संग करीजे, भव भय भ्रांति मिटाय ॥ मयाविजय सद्गुरु सेवाथी, बोधिबीज सुख पाय ॥ मूरखने० ॥ कहे० ॥ ९ ॥

॥ अथ श्री उपदेशीनी सज्झाय ॥

॥ बिगरी कौन सुधारे, नाथ बिन बिगरी कौन सुधारे रे ॥ शासन नायक सब गुन लायक, वितराग जिनरायारे ॥ दायक खायक सम्मत सुहंकर, तारक बिरुद धरायारे ॥ भला तारक० ॥ बिगरी कौन सुधारे, नाथ बिन बिगरी कौन सुधारे रे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ साध सरोषी हुवो चंडकाशी, पन्नग परम दुःखदाइ रे ॥ डंक दियो तब प्रभु प्रतिबोध्यो, दियो स्वर्ग सुखदाइरे ॥ भला दियो० ॥ बिगरी० ॥ २ ॥ सति सुकुमाळा चंदनबाळा, पगमें जड दिया ताळारे ॥ दिनदयाळा संकट टाल्यां, कर दिया झाकझमालारे ॥ भला करदिया० ॥ बिगरी० ॥ ३ ॥ इंद्रभूति अन्य मत मेलीने, जिनसें वाद मचायारे ॥ मनके संशय मेट दिया तब, गणधरपदवो पायारे ॥ भला गणधर० ॥ बिगरी० ॥ ४ ॥ मगधदेश नरनाथ नगीनो, नियम व्रत विहीनो रे ॥ श्रेणिकनृपकुं निजपद दिनो, आप बरोबर कीनोरे ॥ भलाआप० ॥ बिगरी० ॥ ५ ॥ अर्जुनमाळी करत संहारी, षट नरने एक नारीरे ॥ प्रभु उपगारी कर्म विदारे, कर-

हियो खेवो पारी रे ॥ भला करदियो० ॥ विगरी० ॥ ६ ॥ संयमसे चळचित्त भयो तब, परभव वात सुनाईरे ॥ मेघकुंमरको मन थिर कीनो, जातिस्मरण उपाइरे ॥ भला जाति०॥ ॥ विगरी० ॥ ७ ॥ आजीवक मतमें अधिकारी, कुंभकाळ सकडाळो रे ॥ स्वामि सान्निध्य समकित पायो, त्याग दियो गोशाळोरे ॥ भला ॥ त्याग० ॥ विगरी० ॥ ८ ॥ भयो वैदूर दर्शनकुं कामी, निज पुष्करणी नंदोरे ॥ तियचभवमें तार्यो प्रभुजी, सुर हुवो सुखकंदोरे ॥ भला सुर० ॥ विगरी० ॥ ९ ॥ श्रेणिकनृप अरु चेलणाराणी, वीर वंदनकुं आयांरे ॥ अद्भुत रूप दंपतिको देखी, संयम चित्त चळायारे ॥ भला संयम० ॥ १० ॥ श्रमण श्रमणिये कियां नियाणां, तप संयम फळ हारी रे ॥ केवळ दिनकर सब जन सुखकर, दिया निदान निवारीरे ॥ भला दिया० ॥ विगरी० ॥ ११ ॥ क्या तारीफ करुं साहिबकी, सद्गुण सायर भरियारे ॥ खोडिदास करजोडी जंपे, जीव अनंत उद्धरियारे ॥ भला जीव० ॥ विगरी० ॥ १२ ॥

॥ अथ श्री आत्माने उपदेशनी सज्झाय ॥

जीव वारुं छुं मोरा वालमां, परनारीथी प्रित म जोड ॥ परनारीनी संगत नहीं भली, तारा कूळमां लागशे खोड ॥ जीव० ॥ १ ॥ जीव ए संसार छे कारमो, दीसे छे आळ पंपाळ ॥ जीव एहवुं जाणी चेतजे, आगळ माछीडे नांखी छे जाळ ॥ जीव० ॥२॥

जीव मात पिता भाइ बेहेनडी, सहु कुटुंबतणो परिवार ॥ जीव वेवीवारे सहु सहु, पछे लांबा कीधा जुहार ॥जीव०॥३॥ जीव देहली लगे सयुं आंगणुं, शेरी लगे सगी माय ॥ जीव सीमलगे सज्जन भलो, पछे हंस एकीलो जाय ॥ जीव० ॥ ४ ॥ जीव जातां तो नवि जाणीया, नवि जाण्यो वार कुवार ॥ जीव गाडुं भरीयुं ईंधणे, वळी खोखरी हांडली साथ ॥ जीव० ॥ ५ ॥ जीव आठम पाखी न ओळखी, जीव बहुलां कीधां पाप ॥ जीव सुमतिविजय मुनि एम भणे, जीव आवागमन निवार ॥ जी० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री उपदेशी सज्झाय ॥

प्रीतलडी बंधाणीरे अजित जिणंदस्युं—ए देशी.

॥ दिनदयाल प्रभु मुज एक विनती, दिल धरो करजोडी कहुं छुं आजजो ॥ अंतरजामि तुमथी हुं अळगो नथी, दास जाणीने म्हेर करो महाराजजो ॥ दिन० ॥ १ ॥ आप वियोगथकी ओ प्रभु माहेरा, पामे दुःख संसारीजीव अपारजो ॥ आगमरस चाख्याविण ते प्राणिया, रडवडीया ते चउगति मोझारजो ॥ दिन० ॥ २ ॥ जनम मरणना भयथकी ते छूटवा, हिंसा करता जीवतणी ते अपारजो ॥ धर्म गणीने निज देवोना आगळे, करता पापी अनाथनो संहार जो ॥ दिन० ॥३॥ असाधु साधु मुखे एम बोलता, ब्रह्मचारी पाळुं छुं आचारजो ॥ फोगटरे फुल्या फरे छे फुलमां, पण ते लेशे चार गतिनां द्वारजो ॥ दिन० ॥ ॥ ४ ॥ अज्ञानपणाना वश्यथकी कंइ जीवडा, तरवा माटे करे अनेक उपायजो ॥

जाणे छे उजळुं एटलुं ए दुध छे, सारासार विचार नहीं मनमांयजो ॥ दिन० ॥ ५ ॥ असरण सरण अनाथ कोइ प्राणिया, पामे दुःखडां चउगति मोझारजो ॥एकेंद्रि पंचेंद्रि केरा जीवनो, करे छे अज्ञानसंहारजो ॥ दिन० ॥ ६ ॥ भेद न जाण्यो धर्म अधर्मतणो, मत्तामत्त खेंची आप रहाय जो ॥ गरधवनुं पूछ पकडयुं ते मूके नहीं, लातो बमणी मुरखजन ते खायजो ॥ दिन० ॥ ७ ॥ आवी रीते प्रभुजी आ विश्वमां, पंथ घणा छे जोता मन मुझायजो ॥ जे मतमां जइ पुछुं ते मतमां कहे, धरम अमारो साचो छे सदायजो ॥ दिन० ॥ ८ ॥ चिंतामणि छांडीने कर कंकर ग्रहे, आ केवुं दिल मध्ये छे अज्ञानजो ॥ द्राक्ष मूकी मुखमां लींबोळि लीये, पक्षी मांही जूवो ते काग हेवानजो ॥ दिन० ॥ ९ ॥अरजी आ दिल धरजी प्रभु माहेरा, केवळना स्वामि छो अति करुणाळजो ॥ कृपानिधि कष्ट मारां कापजो, नित्य एवी करुणा आणी दयाळजो ॥ दिन० ॥ १० ॥

॥ अथ श्री आयंबिल तपनी सज्झाय ॥

॥ देशी रसीयानी ॥

॥ श्री मुनिचंद्र मुनिसर वंदीये, गुणवंता गणधार ॥ सुज्ञानी॥ देशना सरस सुधारस वरसता, ज्युं पुष्कर जलधार ॥ सुज्ञानी ॥ श्री मुनि० ॥ १ ॥ अतिशय ज्ञानी पर उपगारीया, संजम शुद्ध आचार ॥ सु० ॥ श्रो श्रीपाल भणी जीणे आपीयो, करी सीद्धचक्र उदार ॥ सु० ॥ श्रीमु० ॥ २ ॥ आंबील तप वीधी सोखी

आराधीये, पडिकमणां दोय वार ॥ सु० ॥ अरिहंतादीक पद एक एकनुं, गुणणुं दोय हजार ॥ सु० ॥ श्रीसु० ॥ ३ ॥ पडिलेहण दोय टंकनी कीजीए, जिनपूजा त्रण्य काल ॥ सु० ॥ ब्रह्मचारी वली भुंई संथारवुं, वचन न आल पंपाल ॥ सु० ॥ श्रीसु० ॥ ४ ॥ मन एकाग्रह करी आंबील करो, आसो चैतर मास ॥ सु० ॥ शुद सातमथी नव दिन कीजीये, पुनमें ओच्छव खास ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ एम नव ओली एक्याशी आंबिले, ओली पूरण हर्ष ॥ सु० ॥ उजमणुं पण उजमथी करो, साढाच्यारे रे वर्ष ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ एह आराधनथी सुख संपदा, कीरती जगमां रे थाय ॥ सु० ॥ रोग उपद्रव नासे एहथी, आपदा दूर पलाय ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ संपदा वाधे अतीय सोहामणी, आणा होय अखंड ॥ सु० ॥ मंत्र यंत्र तंत्रे करी शोभता, महिमा जास प्रचंड ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ चक्रेश्वरी तेहनी सेवा करे, विमलेसर वर देव ॥ सु० ॥ मन अभिलाषा पुरे तेहनी, जे करे नवपद सेव ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ इणीपरे श्री श्रीपाले आराधीयो, तीणे नाठा तस रोग सु० ॥ राजऋद्धि संपदाये वाधीयो, मनवंछित लह्यां भोग ॥ सु० ॥ श्री० ॥ १० ॥ नवमे भवे अनुक्रमे सीधसे, श्री सिद्धचक्र सुपसाय ॥ सु० ॥ इणीपरे जे भवियण आराधशे, तसजस वाद गवाय ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ११ ॥ संसारीक सुख विलसी अनुक्रमे, करी कर्मनो अंत ॥ सु० ॥ घाती अघाती क्षय करी भोगवे, शाश्वत सुख अनंत ॥ सु० ॥ श्री० ॥ १२ ॥ एम उत्तम गुरु वयण सुणी करी, पावन

हुआ बहु जीव ॥ सु० ॥ पद्मविजय कहे ए सुरतरु समो, आपे सुख सदैव ॥ सु० ॥ श्री० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शियलनी सज्झाय रसीयानी देशी ॥

॥ श्री जिनवाणी हो भवियण चित्त धरो, छंडो विषय विरूप ॥ चतुरनर ॥ नारीने देखी हो नयण न जोडीए, नवि पडीये भव कूप ॥ चतु० ॥ श्री जिन० ॥ १ ॥ सज्जन स्नेहे हो शियलथी सुख लहे, आतम निर्मल थाय ॥ चतु० ॥ व्रत सकलमां जेह शिरोमणी, जस गुण सुर नर गाय ॥ चतु० ॥ श्री जिन० ॥ २ ॥ चक्षु कुशीलेहो जे सुख माणता, विणसाडे निजकाज ॥ चतु० ॥ काचने कटके हो रत्न चिंतामणी, हारे निज कुल लाज ॥ चतु० ॥ श्री जिन० ॥ ३ ॥ रूपने जोवे हो राग वधे सहि, विषय वधे मन काय ॥ चतु० ॥ मनने पापे हो मच्छ तंदुलीओ, जुओ मरी सातमीए जाय ॥ चतु० ॥ श्री जिन० ॥ ४ ॥ धिग् धिग् सरशव सुखने कारणे, दुःख लहे मेरु समान ॥ चतु० ॥ अण भोगवतां हो भवसायर रुले, धरतां युवतीनुं ध्यान ॥ चतु० ॥ श्री जिन० ॥ ५ ॥ राजा रूपी हो नयण कुशिलथी, लक्ष्मणा मननेरे पाप ॥ चतु० ॥ कायाने जोगे हो सत्यकी प्रमुख बहु, पाम्या भव दव ताप ॥ चतु० ॥ श्री जिन० ॥ ६ ॥ संजम पाल्युं हो सहस वरस लगे, राजऋषि कुंडरीक ॥ चतु० ॥ उत्तराध्ययने हो भोगने चाखता, पाम्या नरकनी भीक ॥ चतु० ॥ श्री जिन० ॥ ७ ॥ सामग्री जोगे हो जे नथी जागना,

देशे भवनीरे वाट ॥ चतु० ॥ भाग्यो वाट ते मलवो दोहिलो, कामनुं मुखडुं रे डाट ॥ चतु० ॥ श्री जिन० ॥ ८ ॥ दीपक पकडी हो जे कूपे पडे, हरखे जे विष खाय ॥ चतु० ॥ अग्नि मुके हो निज आवासमां, तस कुण वारवा जाय ॥ चतु० ॥ श्री जिन० ॥ ९ ॥ देह अशुची हो मळमुत्रे भरी, नरकनी दीवीरे नार ॥ चतु० ॥ एम जाणीने हो नववाड पालजो, पामशो भवनो पार ॥ चतु० ॥ श्री जिन० ॥ १० ॥ शियल थकी हो जिन उत्तम पद लहे, रूप कला गुण ज्ञान ॥ चतु० ॥ किर्त्ती वाधे हो इह भव परभवे, जीव लहे बहु मान ॥ चतु० ॥ श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आठ मदनी सज्झाय ॥

॥ क्रीडा करी घरे आवीयो ॥ ए देशी ॥

॥ मद आठ महामुनि वारियें, जे दुर्गतिना दातारोरे ॥ श्री वीर जीणेसर उपदिशे, भाखे सोहम गणधारोरे ॥ मद० ॥ १ ॥ हांजी जातीनोमद पहेलो कह्यो, पूर्वे हरिकेशीये कीधोरे ॥ चंडाळ तणे कूळे उपन्यो, तपथी सविकारज सीधोरे ॥ मद० ॥ २ ॥ हांजी कुळ मद बीजो दाखियो, मरिची भवे कीधो प्राणिरे ॥ कोडा कोडी सागर भवमां भम्यो, मद म करो एम मन जाणी रे ॥ मद० ॥३॥ हांजी बळ मदथी दुःख पामीयां, श्रेणिक वसुभूति जीवोरे ॥ जइ भोगव्यां दुःख नरक तणां, मुख पाडंता नित रीवोरे ॥ मद० ॥ ४ ॥ हांजी सनत कुमार नरेसरु, सुर आगळ रूप वखाण्युं रे ॥

सिम रोम काया वणसी गई, मद चोथानु ए ठाणु रे ॥ मद० ॥५॥ हांजी मुनिवर संयम पाळतां, तपनो मद मनमांहे आवीरे ॥ थया कूरगडु ऋषि राजीया, पाम्या तपनो अंतरायोरे ॥मद०॥६॥ हांजी देश दशारणनो धणी, राय दशार्ण मद अभिमानीरो॥इंद्रनी ऋद्धि देखी बूझीयो, संसार तजी थया ज्ञानी रे॥मद०॥७॥ हांजी स्थूलभद्रे विद्या-नो करयो, मद सातमो जे दुःखदाई रे ॥ श्रुत पूरण अर्थ न पा-मीया, जूओ मान तणी अधिकाइरे ॥ मद० ॥ ८ ॥ राय सुभूम षट्खंडनो धणी, लोभनो मद कीधो अपारोरे ॥ हय गय रथ सब सायर गल्युं, गयो सातमी नरक मझारोरे ॥ मद० ॥ ९ ॥ इम तन धन जोबन राज्यनो, म धरो मनमां अहंकारोरे ॥ एह अथिर अस-त्य सवि कारमुं, विणसे क्षणमां बहुवारोरे ॥ मद० ॥ १० ॥ मद आठ निवारो व्रतधारीया, पाळो संयम सुखकारीरे ॥ कहे मानवि-जय ते पामशे, अविचळ पदवी नरनारीरे ॥ मद० ॥ ११ ॥ इति॥

॥ अथ श्री तपनी सज्झाय ॥

॥ इडर आंबा आंबलीरे ॥ ए देशी ॥

॥ कीधां कर्म निकंदवारे, लेवा मुक्तिनुं दान ॥ हत्या पातक छूटवा रे, नहिं कोई तप समान ॥ भविकजन, तप करजो मन शुद्ध ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ उत्तम तपना योगथी रे, सेवे सुर नर पाय ॥ लब्धि अठावीस ऊपजे रे, मनोवंछित फल थाय ॥ भवि० ॥ ॥ तप० ॥ २ ॥ तीर्थंकर पद पामियेरे, नासे सघला रोग ॥ रूप

लीला सुख साहिबीरे, लहियें तप संयोग ॥ भवि० ॥ तप० ॥ ३॥ ते शु छे संसारमां रे, तपथी न होवे जेह ॥ जे जे मनमां कामियेरे, सफल फले सहि तेह ॥ भवि० ॥ तप० ॥ ४ ॥ अष्ट कर्मना ओघने रे, तप टाले ततकाल ॥ अवसर लहीने तेहनो रे, तप करजो उजमाल ॥ भवि० ॥ तप० ॥ ५ ॥ बाह्य अभ्यंतर जे कह्या रे, तपना बार प्रकार ॥ होजो तेहनी चालमां रे, जेम धन्नो अणगार ॥ भवि० ॥ तप० ॥ ६ ॥ उदयरत्न कहे तप थकी रे, वाधे सुजस सनूर ॥ स्वर्ग हुवे घर आंगणे रे, दुर्गति जावे दूर ॥ भवि० ॥ तप० ॥ ७ ॥ इति ॥

—:o:—

॥ अथ श्री निद्रडीनी सज्झाय ॥

॥ अजित जिणंदशुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥

॥ निद्रडी वेरण हुइ रही, कीम कीजे हो सा पुरुष निदानके ॥ चोर फरै चिहुं पासथी, किम सूता हो कांइ दिनने रातके ॥ ॥ निद्र० ॥ १ ॥ वीर कहे सूणो गोयमा, मत करजो हो एक समय प्रमादके ॥ जरा आवे यौवन गले, किम सुता हो कांइ कवण सवादके ॥ निद्र० ॥ २ ॥ चउद पूरवधर मुनिवरा, निद्रा करता हो गया नरक निगोदके ॥ अनंतो अनंत काल तिहां रहे, इम बगडे हो कांइ धरमनो मोदके ॥ निद्र० ॥ ३ ॥ जोरावर घणा जालमी, यम राजा हो कांइ सबल करूरके ॥ निज सेन्या लइ चिहुं दिशे, किम जागतां हो नर कहियें शूरके ॥ निद्र० ॥ ४ ॥ जागतडां भंजे

नहिं, छेतराये हो नर सूतो नेटके ॥ सूतारीणी पाडा जण्या, किम कीजें हो शा पुरुषनी भेटके ॥ निद्र० ॥ ५ ॥ श्री वीरे इम भाखीयुं, पंखी भारंड हो न करे परमादके ॥ तेह तणी परे विचारजो, परिहरजो हो गोयम परमादके ॥ निद्र० ॥ ६ ॥ वीर वचन एम सांभळी, परिहरियो हो गोयमें परमादके ॥ लीलां सुख लीधां घणां, थीर रहियो हो जगमां जसवादके ॥ निद्र० ॥ ७ ॥ निंद निद्रडी मत आणजो, सूइ रहेजो हो सहुको सावधानके ॥ ध्यान धरम हिये धार जो, एम भाखे हो मुनि कनक निदानके ॥ निद्र० ॥ ८ ॥ इति ॥

——:०:——

॥ अथ श्री मायानी सज्झाय ॥

॥ समकितनुं बीज जाणीयेजी, सत्य वचन साक्षात ॥ साचामां समकित वसेजी, मायामां मिथ्यात्वरे ॥ प्राणि, म करो माया लगार ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मुख मीठो जूठो मनेजी, कुड कपटनोरे कोट ॥ जीभे तो जी जी करेजी, चित्तमां ताके चोटरे ॥ ॥ प्राणि० ॥ २ ॥ आप गरजे आघो पडेजी, पण न धरे विश्वास ॥ मनशुं राखे आंतरोजी, ए मायानो पासरे ॥ प्राणि० ॥ ३ ॥ जेहशुं बांधे पितडीजी, तेहशुं रहे प्रतिकूळ ॥ मेल न छंडे मन तणोजी, ए मायानुं मूळरे ॥ प्राणि० ॥ ४ ॥ तप कीधो माया करीजी, मित्रशुं राख्योरे भेद ॥ मल्लि जिनेश्वर जाणज्योजी, तो पाम्या स्त्री वेदरे ॥ प्राणि० ॥ ५ ॥ उदयरतन कहे सांभळोजी, मूको मायानी

शुद्ध ॥ मुक्तिपुरी जावातणोजी, ए मारग छे शुद्धरे ॥ माणि० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री लोभनी सज्झाय ॥

(इडर आंबा आंबलीरे.–ए देशी.)

॥ लोभ न करीए प्राणियारे, लोभ बूरो संसार ॥ लोभ समो जगमां नहींरे, दुर्गतिनो दातार ॥ भविकजन, लोभ बूरोरे संसार ॥ १ ॥ करजो तुमे निरधार ॥ भविक० ॥ जिम पामो भव पार ॥ भविक० ॥ लोभ० ॥ ए आंकणी ॥ अति लोभे लक्ष्मीपतिरे, सागर नामे शेठ ॥ पूर पयोनिधिमां पड्योरे, जइ बेठो तस हेठ ॥ भविक० ॥ लोभ० ॥ २ ॥ सोवनमृगना लोभथीरे, दशरथ सुत श्रीराम ॥ सिता नारी गमावीनेरे, भमियो ठामो ठाम ॥ भविक० ॥ लोभ० ॥ ३ ॥ दशमा गुणठाणा लगेरे, लोभतणुं छे जोर ॥ शिवपुर जातां जीवनेरे, एहज म्होटो चोर ॥ भविक० ॥ लोभ० ॥ ४ ॥ क्रोध मान माया लोभथीरे, दुर्गति पामे जीव ॥ परवश पडियो बापडोरे, अहोनिश पाडे रीव ॥ भविक० ॥ लोभ० ॥ ५॥ परिग्रहना परिहारथीरे, लहीये शिवसुख सार ॥ देव दानव नरपति थइरे, जाशे मुगति मझार ॥ भविक० ॥ लोभ० ॥ ६ ॥ भावसागर पंडित भणेरे, विरसागर बुध शिष्य ॥ लोभतणे त्यागे करीरे, पहोंचे सयळ जगीश ॥ भविक० ॥ लोभ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वणझारानी सज्झाय ॥

॥ नरभव नयर सोहामणुं ॥ वणझारारे ॥ पामीने करजे व्यापार ॥ अहो मोरा नायकरे ॥ सत्तावन संवरतणी ॥ व० पोठी भरजे उदार ॥ अ० ॥ १ ॥ शुभ परिणाम विचित्रता ॥ व० ॥ करियाणां बहु मूल ॥ अ० ॥ मोक्ष नगर जावा भणी ॥ व० ॥ करजे चित्त अनुकूल ॥ अ० ॥ २ ॥ क्रोध दावानल ओलवे ॥ व० ॥ मान विषय गिरिराज ॥ अ० ॥ ओलंघजे हळवे करी ॥ व० ॥ सावधान करे काज ॥ अ० ॥ ३ ॥ वंशजाल मायातणी ॥ व० ॥ नवि करजे विश्राम ॥ अ० ॥ खाडी मनोरथ भटतणी ॥ व० ॥ पूरणनुं नहीं काम ॥ अ० ॥ ४ ॥ राग द्वेष दोय चोरटा ॥ व० ॥ वाटमां करशे हेरान ॥ अ० ॥ विविध विर्य उल्लासथी ॥ व० ॥ ते हणजेरे ठाय ॥ अ० ॥ ५ ॥ एम सवि विघन विदारीने ॥ व० ॥ पहोंचजे शिवपुर वास ॥ अ० ॥ क्षय उपशम जे भावना ॥ व० ॥ पोठे भरया गुणराश ॥ अ० ॥ ६ ॥ खायकभावे ते थशे ॥ व० ॥ लाभ होशे ते अपार ॥ अ० ॥ उत्तम वणज जे एम करे ॥ व० ॥ पद्म नमे वारंवार ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥अथ श्री निंदावारकनी सज्झाय॥

॥ निंदा म करशो कोइनी पारकीरे, निंदानां बोल्यां महा पापरे ॥ वैर विरोध वाधे घणोरे, निंदा करतो न गणे माय बापरे

॥ निंदा० ॥ १ ॥ दूर बळंती कां देखो तुमेरे, पगमां बळती देखो सहु कोयरे ॥ परना मेलमां धोया लुगडांरे, कहो केम उजळां होयरे ॥ निंदा० ॥ २ ॥ आप संभाळो सहुको आपणोरे, निंदानी मूको पडी टेवरे ॥ थोडे घणे अवगुणे सहु भर्यारे, केहनां नळियां चूए केहनां नेवरे ॥ निंदा० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकीरे, तप जप कीधुं सहु जायरे ॥ निंदा करो तो करज्यो आपणीरे, जेम छुटकबारो थायरे ॥ निंदा० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहज्यो सहुको तणारे, जेहमां देखो एक विचाररे ॥ कृष्णपरे सुख पामशोरे, समयसुंदर सुखकाररे ॥ निंदा० ॥ ५ ॥

॥ अथ धोबीडानी सज्झाय ॥

धोबीडा तुं धोजे मननुं धोतीयुंरे, रखे राखतो मेल लगाररे ॥ एणेरे मेले जग मेलो कर्योरे, अणधोयुं न राखे लगाररे ॥ धो० ॥ १ ॥ जिनशासन सरोवर सोहामणुंरे, समकित तणी रुडी पाळरे ॥ दानादिक चारे बारणांरे, मांही नवतत्व कमळ विशाळरे ॥ धो० ॥ २ ॥ तिहां झिले मुनिवर हंसलारे, पिये छे तप जप नीररे ॥ शम दम आदे जे सिलारे, तिहां पखाले आतम चीररे ॥ धो० ॥ ३ ॥ तपवजे तप तडके करीरे, जाळवजे नवब्रह्म वाडरे ॥ छांटा उडाडे पाप अढारनारे, एम उजळुं होशे ततकाळरे ॥ धो० ॥ ४ ॥ आलोयण साबूडो सूधो करेरे, रखे आवे माया शेवाळरे ॥ निश्चे पवित्रपणुं राखजेरे, पछे आपणा नियम संभाळरे ॥ धो० ॥ ५ ॥

रखे मूकतो मन मोकळुंरे, पड मेलीने संकेलरे ॥ समयसुंदरनी शिखडीरे, सुखडी अमृतवेलरे ॥ धोबीडा० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ शिखामण कोने आपवी ? ते विषे सज्झाय ॥

कपुर होये अती उजळोरे—ए देशी.

॥ शिखामण देतां खरीरे, मूढ न माने मन्न ॥ शिलाये जळ सींचतांरे, उगे नही जेम अन्नरे ॥ बेहेनी, त्यां बोल न बोलो एक ॥ ज्यां नही विनय विवेकरे बेहेनी ॥ एवा माणस अनेकरे ॥ बे० ॥ त्यां बोल न बोलो एक ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ शिक्षा दीजे संतनेरे, जेहनी उत्तम जात ॥ काटे पण कीटे नहीं रे, जिम पडी पटोळे भातरे ॥ बे० ॥ त्यां० ॥ २ ॥ विघटाव्यां विघटे नहींरे, गाळे घेहेला थाय ॥ कसोटीये कुंदन परेरे, कसतां नवि क्षण सायरे ॥ बे० ॥ त्यां० ॥ ३ ॥ डग डग दीसे डुंगरारे, पग पग पाणी पूर ॥ हीरो ने अमृत बनेरे, शोध्या न मळे सनूररे ॥ बेहे० ॥ त्यां० ॥ ४ ॥ आवळ रुपे रुअडीरे, डमरो मरुओ सोय ॥ रुपरहित सहु आदरेरे, आवळ आदरे न कोयरे ॥ बे० ॥ त्यां० ॥ ५ ॥ आपमतिला आदमीरे, इच्छाचारी अपार ॥ हारयां दोरयां हारमांरे, नावे ते निरधाररे ॥ बेहे० ॥ ॥ त्यां० ॥ ६ ॥ पडसूदी वाळी वळेरे, वाळी वळे वळी वेल ॥ कुमाणस ने काठनीरे, वाळी न वळे वेलरे ॥ बेहे० ॥ त्यां० ॥ ७ ॥ उदयरतन उपदेशथीरे, रीझे जे पुरुष रतन्न ॥ तेहनां लिजीये भामणांरे, जे करे शियळ जतन्नरे ॥ बेहेनो० ॥ त्यां० ॥ ८ इति ॥

॥ अथ वैराग्यनी सज्झाय ॥

॥ उंचां ते मंदिर माळीयां, सोडय वाळीने सूतो ॥ कहाडो कहाडो रे एने सहू कहे, जाणे जनम्योज न्होतो ॥ एकरे दिवस एवो आवशे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मने सबळोजी साले ॥ मंत्री मल्या सर्वे कारमा, तेनुं कांइ नव चाले ॥ एकरे० ॥ २ ॥ साव सोनानांरे सांकळां, पहेरण नव नवा वाघा ॥ धोळुं वस्तर एना कर्मनुं, तेतो शोधवा लाग्या ॥ एक० ॥ ३ ॥ चरु कढाइआ अति घणा, बीजानुं नहीं लेखुं ॥ खोखरी हांडी एना कर्मनी, ते तो आगळ देखुं ॥ एक० ॥ ४ ॥ केना छोरु ने केना वाछरु, केनां माय ने बाप ॥ अंतकाळे जावुं (जीवने) एकलुं, साथे पुन्य ने पाप ॥ एक० ॥ ५ ॥ सगी रे नारी एनी कामिनी, उभी टगमग जूवे ॥ तेनुं पण कांइ चाले नहीं, बेठी धुसके रूवे ॥ एक० ॥ ६ ॥ व्हालां ते व्हालां शुं करो, व्हालां वोळावी वळशे ॥ व्हालां ते वननां लाकडां, ते तो साथे जी बळशे ॥ एक० ॥ ७ ॥ नहीं त्रापी नहीं तुंबडी, नथी तरवानो आरो ॥ उदयरतन प्रभु इम भणे, मने पार उतारो ॥ ॥ एकरे० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री जीव हितशीखनी सज्झाय ॥

॥ जोइ जतन कर जीवडा, आयु अजाण्युं जायरे ॥ लहे लाहो लक्ष्मीतणो, पछी त्यां कांइ नवि थायरे ॥ जोइ० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ दुलहो भव माणसतणो, दुलहो देह निरोगोरे ॥ दुलहो

ध्यानधर्म वासना, दुलहो सुगुरु संयोगो रे ॥ जोइ० ॥ २ ॥ दिन उगे दिन आथमे, न वळे कोइ दिन पाछो रे ॥ अवसरे काज न कीधलुं, तो मनमांहि पस्तासो रे ॥जोइ०॥३ ॥ लोभ लगे लख वंचिया, तें परधन हरि लीधां रे ॥ केडे न आवे कोइने, केडे करम रह्यां कीधां रे ॥ जोइ० ॥ ४ ॥ माता उदरे उंधो रह्यो, कोडिगमें दुःख दीठांरे ॥ योनि जन्म दुःख जे हुवे, ते तुज लागे छे मीठांरे ॥ ॥ जोइ० ॥ ५ ॥ हे हे भव एळे गयो, एको अरथ न साध्योरे ॥ सद्गुरु शिख सुणी घणी, तोपण संवेग न वाध्योरे ॥ जोइ० ॥६॥ मान मने कोइ मति करो, जम जीत्यो नवि केणेरे ॥ सुकृत काज न कीधलुं, बे भव हार्यो छे तेणेरे ॥ जोइ० ॥ ७ ॥ जप जगदीश्वना नामने, कांइ निचंतो तुं सूवेरे ॥ काज करे अवसर लही, सवि दिन सरिखा न हुवेरे ॥ जोइ० ॥ ८ ॥ जग जातो जाणी करी, तिम एक दिन तुज जावोरे ॥ कर करवो जे तुजने हुवे, पछी होशे पस्तावोरे ॥ जोइ० ॥ ९ ॥ तिथि परवे तप नवि कर्यो, केवळ काया तें पोषिरे ॥ परभव जातां इण जीवने, संबळ विण किम होसिरे ॥ ॥ जोइ० ॥ १० ॥ सुण प्राणि प्रेमे कही, लब्धि लहो जिनवाणीरे ॥ संबळ साथेरे संग्रहो, इम कहे केवळनाणी ॥ जोइ० ॥ ११ ॥

॥ अथ श्री उपदेशीनी सज्झाय ॥

आदीते अरिहंत अम घर आवो रे—ए देशी.

॥ घडी एकतणो विश्वास, श्वासनो नाणो रे ॥ अणचिंत्यो आवशे काळ, तणो ते आणो रे ॥ १ ॥ जेम तोरणे आव्यो विंद,

पाछो नहीं वळशेरे ॥ ल्हारा सज्जन कुटुंब परिवार, सहू टळवळशे रे ॥ २ ॥ ग्रहे साप उंदरने जेम, चिडी सिंचाणोरे ॥ जमराजा कोपे त्यांही, नथी ठेकाणो रे ॥ ३ ॥ जेम तेतरउपर बाज, मच्छ ने बग-लोरे ॥ ल्हारी नवल सुरंगी देह, करी देशे ढगलोरे ॥ ४ ॥ खावज मुखथी कुरंग, न शके नाशी रे ॥ अचानक आवी काळ, देशे गळे फांसी रे ॥ ५ ॥ वळे दळ वादळने पूर, विविधप्रकारेरे ॥ पण काळ ओचितो कोई, पाछो नांव वाळेरे ॥ ६ ॥ देव दानव मानव इंद्र, सू-रज ने चंदारे ॥ तिर्थंकर चक्रि केशव, राम मुणिंदारे ॥ ७ ॥ नृप शेठ सेनापति इभ्य, तलार टळाटी रे ॥ तेने बाळी कीधा राख, हुइ गइ माटी रे ॥ ८ ॥ हुती चोकी आडी सात, दैतने जुद्धारे ॥ भिडी बखतर पहेरी टोप, ग्रही आयुद्धारे ॥९॥ आव्यो काळसेन कोटवाळ, नांख्या सवि उंधारे ॥ तेणे भक्षा त्रण्ये लोक, लागी बहु क्षुधारे ॥ ॥ १० ॥ शुं धरवी आशा म्होटी, खोटी शुं थावुंरे ॥ तजी रमणी राज्य भंडार, अंते जावुंरे ॥ ११ ॥ धरीया केसरिया वेश, सोहे ले-रखडारे ॥ काने कुंडळ हैडे हार, बांहे बेरखडारे ॥ १२ ॥ कडां पोंची बाजुबंध, वेढ ने वींटी रे ॥ शिरपर बांधी रुडी पाग, सोनेरी लींटीरे ॥ १३ ॥ रुडी कुंकुमवरणी काय, छाया निरखेरे ॥ रुपे रंभा सरखी नार, देखी दिल हरखेरे ॥ १४ ॥ मुख आंखने मटके मोह्यो, करने लटकेरे ॥ अणतेड्यो आवी काळ, गळी जशे गटकेरे ॥ १५ ॥ ल्हारे सुंदर मंदिर म्होल, झळकती ज्योतिरें ॥ कांइ फूले गुंथी सेज, जडीयां मोती रे ॥ १६ ॥ पोढे ओढी पटकूळ, मुखमल धोतीरे ॥ पंखाया पवन झकोळ, निंद्रा होती रे ॥ १७ ॥ आव्यो जम दंडीदुत,

साथो गोती रे ॥ रही रडती पडती मात, रमणी रोतीरे ॥ १८ ॥ आ काची काया छाया, जसो बादलको रे ॥ जब उठ चलेगो हंस, माटी जंगलकी रे ॥ १९ ॥ जेवो खोटी संध्यावान, पिंपरपान रे ॥ काची माटीकेरो कुंभ, कुंजर कानरे ॥ २० ॥ ढंग रहित पतंगनो रंग, थाए भंगरे ॥ वळी काचना कूंपा रूप, एही अंगरे ॥ २१ ॥ प्राणि छंडो अनंगनो रंग, एहवुं जाणी रे ॥ अंजळी जळ आयु जेम, पुरनुं पाणी रे ॥ २२ ॥ अंते जावुं छे एकवार, मन समजावी रे ॥ खोडीदास गुरुने चरणे, शिश नमावीरे ॥ २३ ॥ संवत उगणीसें सोळ, आसो मासेरे ॥ करी जेतपुर मांहे जोड, रही चोमासेरे ॥ २४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आत्माउपर सज्झाय ॥

॥ रसीयानी देशी ॥

॥ सुमति सदा सुकुलिणी विनवे, सुणि चेतन महाराय सुगुणनर ॥ कुमति कुनारी दूरे परिहरो, जिम लहो सुख समुदाय सोभागी ॥ सुम० ॥ १ ॥ आवो रे रंगविवेक घरे प्रभु, करिये केलि अभंग पनोता ॥ ज्ञानपलंग बिछाव्यो अति भलो, बेशीजे तस संग रंगीला ॥ सु० ॥ २ ॥ निष्टा रुचि विहु चामर धारिका, वींजे पुण्य सुवाय सदाय ॥ उपसम रस खुसबोइ महमहे, किम नवि आवे ते दाय छबीला ॥ सु० ॥ ३ ॥ ह्रदय झरूके बेशी हौंसशुं, मुजरो लीजेरे सार सलूणा ॥ कायापुर पाटणनो तुं धणी, कीजे निजपुर सार सनेही ॥ सु० ॥ ४ ॥ जें तें चोकी करवा नयरनी, थाप्या

पांच सुभट्ट महाबल ॥ तेतो कुमति कुनारीशुं मल्या, तेणे लोपी कूळवट्ट करे छळ । सु० ॥ ५ ॥ पंच प्रमादनी मदिरा छाकथी, न करे नयर संभाळ महाराय ॥ मन मंत्रीसर जे तें थापियुं, गुंथे तेह जंजाळ अहोनिशि ॥ सु० ॥ ६ ॥ चौवटे चार फरे नित चोरटा, मूसे अति घणुं पुण्यतणुं धन ॥ वाहार बुंब खबर नहि तेहनी, गजपरे मम करो निंद महामन ॥ सु० ॥ ७ ॥ कपटी काळ अछे बहु रुपियो, हेरु परें फिरे नयन समीपे ॥ जोर जरा यौवन धन अपहरे, साहरीनी परे नित्य नछीपे ॥ सु० ॥ ८ ॥ वयण सुकोमळ सुमति तणा सुणी, जाग्यो चेतनराय रसीलो ॥ तेग संवेग ग्रही निज हाथमां, तेडयो शुद्ध समवाय वसीलो ॥ सु० ॥ ९ ॥ मन मंत्रीसर कबज कीयो घणुं, तब वश आव्यारे पंच महाभड ॥ चारे चोर चिहुंदिशी नाशिया, टाल्यो मोह प्रपंच महाजड ॥ सु० ॥ १० ॥ सुमति सुनारी साथे प्रितडी, जोर जडी जेम खीर अने जळ ॥ रंग विलास करे नित नवनवा, भेळी हियडानुं हीर हिलिमिल ॥ सु० ॥ ११ ॥ इणीपरे चतुर सनेही आतमा, झीले समरस पूर सदाई ॥ अनोपम अविचल आतम सुख लहे, दिन दिन अधिक सनूर भलाइ ॥ सु० ॥ १२ ॥ पंडित विनय विमल कवि राजियो, संवेगी शिरताज जयंकर ॥ धिरविमल पंडित पद पंकजे, सेवक नय भणे आज सुहंकर ॥ सु० ॥ १३ ॥ पाठांतर गाथा ॥ पंडित विनय विमल कविराजियो, धिरविमल कविराय जयंकर ॥ सेवक विनयी नयविमल कहे, सुमति शिवसुख थाय सुहकर ॥सुमति० ॥१४॥इति॥

———:०:———

॥ अथ श्री आत्मबोध सज्झाय ॥

॥ जीव क्रोध म करजे, लोभ म धरजे, मान म लाइश भाइ ॥ ॥ कुडां कर्म म बांधीश, धर्म म चूकीश, विनय म मूकीश ॥ भाइरे जीवडा ॥ दोहिलो मानव भव लाधो, तुमे कांइ करी तत्वने साधोरे भोळा ॥ दोहिलो० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ घर पछवाडे देरासर जातां, वीश विमासण थाय ॥ भूख्यो तरस्यो राउले रोक्यो, माथे सहेतो घायरे ॥ जीवडा दोहिलो० ॥ २ ॥ धर्मतणी पोशाळे चाल्या, सुणवा सदगुरु वाणी ॥ एक वात करे बीजो उठी जाये, नयणे निंद भराणी रे ॥ जीवडा० ॥ ३ ॥ नामे बेठो लोभे पेठो, चार पोहोर निशी जाग्यो ॥ बे घडीनुं पडिक्कमणुं करतां, चोखो चित्त न राख्यो रे ॥ जीवडा० ॥ ४ ॥ आठम चउदश पुनम पाखी, पर्व पर्युषण सारो ॥ बे घडीनुं पच्चक्खाण करंतां, एक बीजाने वारो रे ॥ जीवडा० ॥ ५ ॥ कीर्त्ति कारण पगरण मांडी, अरथ गरथ सवि लूंटे ॥ पुण्यने काजे पारकु पोतानुं, गांठडीए नवि छूटेरे ॥ जीवडा० ॥ ६ ॥ घर घरणीने घाट घडाव्या, पहेरण आछा वाघा ॥ दश आंगळी दश वेढज पहेरया, निर्वाणे जावुं छे नागारे ॥ जीवडा० ॥ ७ ॥ वांको अक्षर माथे मीडुं, निलवट आधो चंदो ॥ मुनि लावण्य समय इम बोले, जिम चिर काले नंदो रे ॥ जीवडा दोहिलो० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आत्मशिक्षा सज्झाय ॥

॥ आतमरामेरे मुनि रमे, चित्त विचारीने जोयरे॥ ताहरुं दीसे न कोयरे, सहु स्वारथी मल्युं तोयरे ॥ जन्म मरण करे लोयरे, पूंठे सवि मळी रोयरे ॥आ० ॥१॥ सज्जन वर्ग सवि कारिमुं, कूडो कुटुंब परिवाररे ॥ कोइ न करे तुज साररे, धर्म विण नहि कोइ आधाररे, जिणे पामे-भवपाररे ॥ आ० ॥ २ ॥ अनंत कलेवर मुकी-यां, तें कियां सगपण अनंतरे ॥ भव उद्वेगेरे तुं भम्यो, तोही न आव्यो तुज अंतरे ॥ चेतो हृदयमां संतरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ भोग अनंता तें भोगव्या, देव मणुए गतिमांहेरे ॥ तृप्ति न पाम्यो रे जीवडो, हजी तुज वांछा छे त्यांहिरे, आण संतोष चित्तमांही रे ॥ आ० ॥४॥ ध्यान करोरे आतमतणुं, परवस्तुथी चित्त वारी रे॥ अनादि संबंध तुज को नहि, शुद्ध निश्चे इम धारीरे, इणविध निज चित्तठारीरे, मणिचंद्र आतम तारीरे ॥ आतम० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ रात्रिभोजननी सज्झाय ॥

॥ पून्य संजोगे नरभव लाध्यो, साधो आतम काज ॥ विष-या रस जाणो विष सरिखो, इम भांखे जिनराज रे ॥ प्राणि रा-त्रिभोजन वारो ॥ आगम वाणी साची जाणी, समकित गुण सही नांणीरे ॥ प्राणि० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ अभक्ष बावीशमां रयणीभोजन, दोष कह्या परधान ॥ तेणे कारण रात्रे मत जीमो, जो हुवे हइडे शानरे ॥ प्राणि० ॥ २ ॥ दान स्नान आयुद्ध ने

भोजन, एटला रात्रे न कीजे ॥ ए करवां सुरजनी साखे, निति वचन समजीजेरे ॥ प्रा०॥३॥ उत्तम पशु पंखी पण रात्रे, टाळे भोजन टाणो ॥ तुमे तो मानवी:नाम धरावो, कीम संतोष न आणोरे ॥ प्रा० ४ ॥ मांखी जु कीडी कोलीआवडे, भोजनमां जो आवे ॥ कोढ जलोदर वमन विकलता, एहवा रोग उपावेरे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ छन्नु भव जीवहत्या करतां, पातिक जेह उपायो ॥ एक तळाव फोडंता तेटलो, दूषण सुगुरु बतायो रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ एकलोतर भव सर फोडया सम, एक दव देतां पाप ॥ अठलोतर भव दव दिधा जीम, एक कुवणज संतापरे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ एकसोने चुंमालीस भव लगे कीधा, कुवणजना जे दोष ॥ कूडुं एक कलंक दियंतां, तेहवो पापनो पोषरे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ एकसो एकावन भव लगे दीधां, कूडां कलंक अपार ॥ एकवार शिल खंडया जेहवो, अनरथनो विस्ताररे ॥ प्रा० ॥ ९ ॥ एकसो नवाणुं भव लगे खंडयां, शियल विषय संबंध ॥ तेहवो एक रात्रिभोजनमां, कर्म निकाचित बंध रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ रात्रिभोजनमां दोष घणा छे, स्यो कहीए विस्तार ॥ केवळी कहेतां पार न पावे, पूरव कोडी मझाररे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ रात्रे नित चोविहार करीने, शुभ परिणाम धरीजे ॥ मासे मासे पासखमणनो, लाभ एणे विधे लीजेरे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ मुनि वसतानी एह शिखामण, जे पाळे नर नारी ॥ सुरनर सुख विलसीने ते होवे, मोक्षतणा अधिकारीरे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मन ओगणत्रीशोनी सज्झाय ॥

॥ भोलीडा हंसारे, विषय न राचीए ॥ ए देशी ॥

॥ जीव म मेलेरे ए मन मोकळुं, मन मोकळडेरे हाण ॥ संकाच्याथीरे संवर नीपजे, लहिये परम कल्याण ॥ जीव० ॥ १ ॥ ए मन चंचल चिहुं दिशे डोलतुं, न गणे काम अकाम ॥ क्षण नरपतिनां रे क्षण सुरपति तणां, वंछे सुख अभिराम ॥ जीव० ॥ २ ॥ आगे भींतरे जाजरडी खडी, उपर दे वळी ठेलि ॥ तेहने पडतां रे वार लागे नहीं, तिम मन अथिर म मेल ॥ जीव० ॥ ३ ॥ जिम सुरगिरिनीरे सुंदर चूळीका, भांखी अचळ अडोल ॥ पवन प्रचंडेरे ठाम न चांतरे, तिम थिर मन निरमोल ॥ जीव० ॥ ४ ॥ जो मन म्हेल्युंरे अति घणुं मोकलुं, जुओ कुंडरिक अणगार ॥ चारित्र खोयुंरे सहस वरस तणुं, पड्यो यो नरक मझार ॥ जीव० ॥ ५ ॥ जुगबाहुनी रे धरणी कारणे, मणिरथ चूक्यो अपार ॥ बांधव हणियो रे निज हाथे करी, हे हे विषय विकार ॥ जीव० ॥ ६ ॥ लोक इम कहे रे राजा रावणो, त्रिभुवन केरो रे लाल ॥ सीता हरणेरे गति मति विसरी, रामे कियोरे बेहाल ॥ जीव० ॥ ७ ॥ द्रौपदी रुपेरे कीचक मोहीयो, वरज्यो न रह्योरे तेह ॥ भीमे कीधोरे जमनो प्राहुणो, पर नारीने रे नेह ॥ जीव० ॥ ८ ॥ जमुना तीरेरे पाराशर जती, तप जप करतो अपार ॥ मच्छगंधानेरे रुपे मोहीयो, तेहनो व्यास कुमार ॥ जीव० ॥ ९ ॥ सूरि कंतारे मनने मोकळे, कीधो कंत विनाश ॥ चूळणी राणीरे पुत्र विणासवा, लाखना

मंदिर पास ॥ जीव० ॥ १० ॥ मन संकोचीरे राख्युं आगणुं, चक्री सनतकुमार ॥ सहुं परिवारे रे वळि वळि वीनव्यो, नाण्यो नेह लगार ॥ जीव० ॥ ११ ॥ शेठ सुदर्शन पोसह पाळवा, राख्यो निश्चळ भाव ॥ शुळी फीटीरे सिंहासन हूओ, प्रगटयो पुण्य प्रभाव ॥ जीव० ॥ १२ ॥ परिसह आव्या रे मन नवि खंचीयुं, गज सुकुमाळ जगीश ॥ तत्क्षण हुवोरे अंतगड केवळी, और खंधक गुरु शिष्य ॥ जीव० ॥ १३ ॥ सघळा मांहीरे अति घणो दोहिलो, मन केरोरे व्यापार ॥ क्षण एक मांहेरे नरके मोकले, क्षणमां मोक्ष मझार ॥ जीव० ॥ १४ ॥ मनने पापेरे तंदूल माछलुं, अंतिम नरक मझार ॥ शुद्ध प्रणामीरे श्री भरतेसरु, पाम्या केवळ सार ॥ जीव० ॥ १५ ॥ मनथी बंधन मनथी मोक्ष छे, हियडे देखी विचार ॥ जेणे नयणेरे निरखे ब्हेनडो, तेणे नयणे निज नार ॥ जीव । १६ ॥ परिसह दोधारे जिनने आकरा, खीलाने अधिकार ॥ वैद्य उत्तम फळ सुख पामीयां, गोप भमेरे संसार ॥ जीव० ॥ १७ ॥ जिणही दांतेरे निज बालुअडां, बिल्ली ग्रहे मन खंत ॥ तेहीज दांतेरे उंदरने ग्रहे, मन परिणतिनीरे भ्रांत ॥ जीव० ॥ १८ ॥ मनने जेती रे भुमि देखाडीये, तिहां तिहां दोडयुं रे जाय ॥ अंकुशे करी जिम मातो हाथीयो, फेरंथाथी वश थाय ॥ जीव० ॥ १९ ॥ मननो सहजे रे नीचो ढाळ छे, नीर तणी परे जोय ॥ उंचो आवेरे सह उपायथी, इम जाणे सहुं कोय ॥ जीव० ॥ २० ॥ मन विण चारित्रको पाळे घणुं, देसूणां पूर्व कोडि ॥ मननी शुद्धिरे कोई एकज दिनां, अंतर बहुळो रे जोडि ॥ जीव० ॥ २१ ॥ बहु बहु भवनांरे

बहुळां संचीयां, पोढां पातक देख ॥ शुद्धे मने रे ते क्षणमें करे, ए जिन वचन विशेष ॥ जीव० ॥ २२ ॥ सोहलो पंचांग्निनो साधवो, सोहलो छे वनवास ॥ सोहलुं मौने रे रहेवुं जीवने, सोहलो ग्रंथ अभ्यास ॥ जीव० ॥ २३ ॥ दुकर हुई रे दुकर जेहथी, करणी जग अभिराम ॥ ते आदरवी रे नरने सोहली, पण दोहिलो शुद्ध परिणाम ॥ जी० ॥ २४ ॥ पराधीती डरती पंखणी, शंकाती रहे जेम ॥ तिम जे मननेर राखे तेहने, इह परलोके रे खेम ॥ जीव० ॥ २५ ॥ माथे घट धरी नटवी नाचती, वंश चढतारे जोय ॥ बाह्य प्रकारे जन मन रीझवे, मन घट उपर रे होय ॥ जीव० ॥ २६ ॥ इम जे प्राणी रे निश्चळ धरि रहे, जिन गुण उपर राग ॥ तस मन बाहिर जावा न पावही, जिम प्रवहणनो रे काग ॥ जीव० ॥ २७ ॥ साधु साध्वी श्रावक श्राविका, चउविह संघ उलास ॥ शुद्ध प्रणामे रे वरते तेहनो, हूं भव भवनो रे दास ॥ जीव० ॥ २८ ॥ मनगुण तीसी रे जे नर सांभळे, पावे सुख भरपूर ॥ पद्मसूरी शिष्य गुणसागर कहे, पाप पलासे रे दूर ॥ जीव० ॥ २९ ॥ इति ॥

॥ अथ कायारुपकामिनीनो जीवरुपस्वामिने उपदेशनो सज्झाय ॥ देशी रसीयानी ॥

॥ सुगुण सोभागी हो साहिब माहरा, सुण मुज आतमराम वाल्हेसर ॥ काया कामिनी कंथ प्रत्ये कहे, प्रितम तुं अभिराम सोभागी ॥ सु० ॥ १ ॥ रयण अमूल्कमं तुं संग्रह्यो, मत हुओ काच

समान चतुर नर ॥ धुर छेहडा लगे तेहने चाहतां, निपट खराखरी काम पन्होता ॥ सु० ॥ २ ॥ पूरव पुन्ये हु तुजने मळी, उत्तमकुळनी ए काय रंगिला ॥ अवसर मळियो लाहो लीजीये, क्षण लाखिणोरे जाय छबिला ॥ सु० ॥ ३ ॥ कामिनी कंततणो संबंध करी, पण नवि विसरे हेज हळीमळी ॥ हुं सोहागण सोहवि तुज छते, एम केम सरशे प्रित हेज सांभळ. ॥ सु० ॥ ४ ॥ कुमति कुचिंता प्रमुख कुरूप त्रिया, तेनी साथे विलसेरे नेह लगाय ॥ निज घर छडी परघर जायतां, कोय न कहेसेरे कंत भलाय ॥ सु० ॥ ॥ ५ ॥ तेह कुधरणी संगमथी कदा, विषय कषायारे अंगज होशे ॥ तबहुं दुःखदायक अति वांकडा, महेणां देइने सगण वगोशे ॥ सु० ॥ ६ ॥ वणज करवा शेठे धन दियो, कुमति कुधरणी रे ते सवि मुसे ॥ चोखे लेखे कहो किम पहोंचशे, स्वामि धर्म कहो किणपरे रहेशे ॥ सु० ॥ ७ ॥ पाळे प्रिति सदा परणी त्रिया, पण पर तरुणीरें प्रिति न पाळे ॥ हमणां मदवाळा नथी जाणता, निरति पडशेरे मोह सम गाळे ॥ सु० ॥ ८ ॥ कुळवंती कामिनी मुज समी, फिर नवि मळशेरे चित्त अवधारो ॥ पडछाया सुख त्यां लगे सांभळे, जवलगे लागे ताप निराळो ॥ सु० ॥ ९ ॥ सयण मळीने दुर्जन जव मिले, तव ते सांभळे सयण सुगुणनर ॥ कपट कुधरणीकेरां जाणशो, तव चित्त धरशोरे वयण चतुरनर ॥ सु० ॥ १० ॥ मुज वडपण थये तुम रसीया होशे ॥ श्यो रस माणसो त्यांय रंगीला ॥ ए उखाणो मळशे लोकनो, ऊंट बळद तणो न्याय ॥ सु० ॥ ॥ ११ ॥ हमणां सरखी जोडी विहुतणी, नवयौवन रस भुरि सलु-

णा ॥ अविचळ प्रिति करा प्रितम तुमे, होश हैया तणी पुर सनेहा ॥ ॥ सु० ॥ १२ ॥ प्रसन्न थइने मुजशुं विलसतां, होशे सुत सुविवेक सलुणो ॥ घडपणे सुखदायी तुमने होशे, धरशे जनकशुं नेक निदूणो ॥ सु० ॥ १३ ॥ सुप्रतिष्ठ प्रितमने जे भांखुं, तेह अत्रटतुंरे सुकुल वहुने ॥ शोकयवेश होवे अतिहि आकरा, वांछा सुखनीरे होये सहूने ॥ सु० ॥ १४ ॥ सुमति साहेली माहरी अति भली, ते पण प्रितम भोग तुमारे ॥ सहज सलूणा साहिब सेवतां, अविचळ सुख संयोग वधारे ॥ सु० ॥ १५ ॥ एम घरवटशुं प्रितम प्रिछवी, अतिहि अनोपम प्रेम लगाड्यो ॥ सुकृत सुकाम करीने वश कियो, जग जसवादशुं तेम वगाड्यो ॥ सु० ॥ १६ ॥ तप जप किरिया समकित सुखडी, विलसे कामिनी कंत सदारे ॥ धिरविमल कवि सेवक नय कहे, उत्तम संगति सुजस भलाये ॥ सुगुण० ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मौनएकादशीनी सज्झाय ॥

॥ आज म्हारे एकादशीरे, नणदल मौन करी मुख रहीए ॥ पुछयानो पडुत्तर पाछो, केहने कांइ न कहीए ॥ आज० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ म्हारो नणदोइ तुजने व्हालो, मुजने त्हारो वीरो ॥ धूमाडाना बाचका भरतां, हाथ न आवे हीरा ॥ आज० ॥ २ ॥ घरनो धंधो घणो कर्यो पण, एक न आव्यो आडो ॥ परभव जातां पालव झाले, ते मुजने देखाडो ॥ आज० ॥ ३ ॥ मागशर शुदि अगीयारस म्होटी, नेवुं जिननां निरखो ॥ दोढसो कल्या-

णक म्होटां, पोथी जोइने हरखो ॥ आज० ॥ ४ ॥ सुव्रतशेठ थयो शुद्ध श्रावक, मौन धरी मुख रहीयो ॥ पावकपुर सघळो परजाळयो, एहनो कांइ न दहीयो ॥ आज० ॥ ५ ॥ आठ पहोर पोसो ते करीए, ध्यान प्रभुनुं धरीए ॥ मन वच काया जो वश करीए, तो भवसायर तरीए ॥ आज० ॥ ६ ॥ इर्यासमिति भाषा न बोले, आडुं अवळुं पेखे ॥ पडिक्कमणांशुं प्रेम न राखे, कहो केम लागे लेखे ॥ आज० ॥ ७ ॥ कर उपर तो माळा फिरती, जीव फरे वनमांही ॥ चित्तडुं तो चिहुं दिशिये डोले, इण भजने सुख नाहि ॥ आज० ॥ ८ ॥ पौषधशाळे भेगां थइने, चार कथा वळी सांधे ॥ कांइक पाप मिटावण आवे, बार गणुं वळि बांधे आज० ॥ ९ ॥ एक उठंती आळस मोडे, बीजी उंघे बेठी ॥ नदियोमांथी कांइक निसरती, जइ दरियामां पेठी ॥ आज० ॥ १० ॥ आई बाई नणंद भोजाई, न्हानी म्होटी वहुने ॥ सासु ससरो मा ने मासी, शिखामण छे सहुने ॥ आज० ॥ ११ ॥ उदयरतन वाचक उपदेशे, जे नर नारी रहेशे ॥ पोसामांहे प्रेम धरीने, अविचळ लीला लहेशे ॥ आज म्हारे एकादशीरे० ॥ १२ ॥ इति॥

॥ अथ श्री कर्मपचीशीनी सज्झाय ॥

त्रीजे भव वरथानक तप करी–ए देशी.

॥ देव दानव तिर्थंकर गणधर, हरि हर नर वर सबळा ॥ कर्म संयोगे सुख दुःख पाम्या, सबळा हुआ मह्रा नबळारे ॥ प्राणि, कर्म समो नहीं कोय ॥ कीधां कर्म विना भोगवियां, छूटकवारो न

होयरे ॥ प्राणि० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ आदिश्वरने अंतराय विटं-ब्यो, वर्ष दिवस रह्या भूखे ॥ वीरने बार वरस दुःख दीधुं, उपन्या ब्राह्मणी कूखेरे ॥ प्राणि० ॥ २ ॥ साठ सहस सुत एक दिन मुआ, सामंत शूरा जेसा ॥ सगर हुओ महापुत्रे दुःखीयो, करमतणां फळ एसारे ॥ प्राणि० ॥ ३ ॥ बत्रीश सहस देशोनो साहेब, चक्री सन-तकुमार ॥ सोल रोग शरीरे उपन्या, करमे कियो तस खुवाररे ॥ प्राणि० ॥४॥ सुभूम नामे आठमो चक्री, कर्मे सायरमां नांख्यो ॥ सोल सहस यक्षे उभां दीठो, पण किणही नवि राख्योरे ॥ प्रा-णि० ॥ ५ ॥ ब्रह्मदत्त नामे बारमो चक्री, कर्मे कीधोरे अंधो ॥ एम जाणि प्राणि विण कामे, कर्म कोइ मत बंधोरे ॥ प्राणि० ॥ ६ ॥ वीश भुजा दश मस्तक हुतां, लक्ष्मणे रावण मार्यो ॥ एकलडे जग सहुने जीत्यो, कर्मथी ते पण हार्योरे ॥ प्राणि० ॥७॥ लक्ष्म-ण राम महा बळवंता, वळी सत्यवंती सिता ॥ बार वरस लगे वनमांहे भमिया, वीतक तस बहु वित्यांरे ॥ प्राणि० ॥ ८ ॥ छप्प-नक्रोड जादवनो साहेब, कृष्ण महाबळि जाणी ॥ अटवी कोशंबीमां एकलडो मुओ, वळवलतो विण पाणीरे ॥ प्राणि० ॥ ९ ॥ पांच पांडव महा झुझारा, हारी द्रौपदी नारी ॥ बार वरस लगे वन दुःख दीठां, भमिया जेम भिखारीरे ॥ प्राणि ॥ १० ॥ सतीय शिरोमणि द्रौपदी कहीये, पांच पुरुषनी नार ॥ सुकुमालिका भवे बांध्युं निया-णुं, पामी पांच भरताररे ॥ प्राणि० ॥ ११ ॥ कर्मे हलको कीधो हरिचंद्रने, वेची तारा राणी ॥ बार वरस लगे माथे आण्युं, डुंबतणे

घर पाणीरे ॥ प्राणि० ॥ १२ ॥ दधिवाहन राजानी बेटी, चावी चंदनबाळा ॥ चौपदनी परे चउटे वेचाणी, कर्मतणा ए चाळारे ॥ प्राणि० ॥ १३ ॥ समकितधारी श्रेणिकराजा, बेटे बांध्यो मुसके ॥ धर्मी नरपति कर्मे दबाणा, कर्मथी जोर न किसकेरे ॥ प्राणि० ॥ १४ ॥ ईश्वरदेवने पार्वती राणी, कर्त्ता पुरुष कहेवाय ॥ अहोनिश समशानमांहे वासो, भिक्षा भोजन खायरे ॥ प्राणि० ॥ १५ ॥ सहस्र किरण सूरज प्रतापी, रात दिवस रहे भमतो ॥ सोल कळा सशिहर जग जाचो, दिन दिन जाये घटतो रे ॥ प्राणि० ॥ १६ ॥ नळराजा पण जुवटे रमतां, अरथ गरथ राज्य हार्यो ॥ बार वरस लगे वन दुःख दीठां, तेने पण कर्मे भमाडयोरे ॥ प्राणि० ॥ १७ ॥ सुदर्शनने शूळीये दीधो, मुंजराजाए मागी भिख ॥ तमसगुफा मुख कोणिक बळियो, मानी न कोइनी शिखरे ॥ प्राणि० ॥ १८ ॥ गजमुनिना शिरउपर सघडी, सागरदत्त बल्युं शिश ॥ मेतारज वाधरे विंटाणा, क्षण न आणी रिशरे ॥ प्राणि० ॥ १९ ॥ पांचशें साधु घाणीमां पील्या, रोश न आण्यो लगार ॥ पूरव कर्मे ढंढणऋषिने, षट्मास न मल्यो आहाररे ॥ प्राणि० ॥ २० ॥ चौद पूरवधर कर्मतणे वश, पडया निगोद मझार ॥ आर्द्रकुमार अने नंदिषेणे, फरि वाश्यो घरबाररे ॥ प्राणि० ॥ २१ ॥ कळावतीना कर छेदाणा, सुभद्रा पामी कलंक ॥ महाबळमुनिनुं गात्र प्रजाल्युं, कर्मतणा ए वंकरे ॥ प्राणि० ॥ २२ ॥ द्रौपदी हेते पद्मनाभनुं, फोडयुं कृष्णे ठाम ॥ वीरने काने खीला ठोकाण्या, पगे रांधी खीर तामरे ॥ प्राणि० ॥ २३

॥ कर्मथी नाठा जाय पाताळे, पेसे अग्नि मझार ॥ मेरुशिखर उपर चढे पण, कर्म न मूके लगाररे ॥ प्राणि० ॥ २४ ॥ एवां कर्म जीत्यां नर नारी, ते पहोत्यां शिव ठाय ॥ प्रभाते उठी नित नित वंदो, भक्तिए तेहना पायरे ॥ प्राणि० ॥ २५ ॥ एम अनेक नर खंड्या कर्मे, भल भलेरा जे साज ॥ ऋद्धि हरष कर जोडिने कहे, नमो नमो कर्म महाराजरे ॥ प्राणि० ॥ २६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुगुरुपचीशीनी सज्झाय ॥

॥ सुगुरु पिछाणो एणे आचारें, समकित जेहनुं शुद्धजी ॥ ए आंकणी ॥ कहेणी करणी एकज सरखी, अहनिश धर्म विशुद्धजी ॥ सु० ॥ १ ॥ निरतिचारें महाव्रत पाळे, टाळे सघळा दोषजी ॥ चारित्रशुं लयलिन रहे नित्य, चित्तमां सदा संतोषजी ॥ सु० ॥ २ ॥ जीव सहुना जे छे पीयर, पीडे नहीं षटकायजी ॥ आप वेदन परवेदन सरखी, न हणे न करे घायजी ॥ सु० ॥ ३ ॥ मोहकर्मने जे वश न पडे, निरागी निरमायजी ॥ जयणा करतो हळुए चाले, पुंजी मूके पायजी ॥ सु० ॥ ४ ॥ अरहो परहो दृष्टि न देखे, न करे चालतां वातजी ॥ दूषणरहित सुझतो देखे, तो लीये पाणी भातजी ॥ सु० ॥ ५ ॥ भूख तृषा पीडा दुःख पीडे, छूटे जो निज प्राणजी ॥ तोपण अशुद्ध आहार न लेवे, जिनवर आण प्रमाणजी ॥ सु० ॥ ६ ॥ अरसं निरस आहार गवेषे, सरसतणा नहीं चाहजी ॥ इम करतां जो सरस मळे तो, हरष नहीं मनमांहजी ॥ सु० ॥ ७ ॥ शितकाळे शिते

तनु सूके, उनाळे रवि तारजो ॥ विकट परिसह घट अहीयासे, नाणे मन संतापजी ॥सु० ॥ ८॥ मारे कूटे करे उपद्रव, कोइ कलंक द्ये शिशजा ॥ कर्मतणां फळ जाणी उदीरे, पण नाणे मन रीशजी ॥ सु० ॥ ९ ॥ मन वच काया जे नवि दंडे, छंडे पंच प्रमादजो ॥ पंच प्रमाद संसार वधारे, जाणे ते निसवादजी ॥ सु० ॥ १० ॥ सरळ स्वभाव भाव मन रुडो, न करे वाद विवादजी ॥ चार कषाय करमनां कारण, वरजे मद उनमादजो ॥ सु० ॥ ११ ॥ पापस्थान अढारे वरजे, न करे तास प्रसंगजो ॥ विकथा मुखथी चार निवारे, समिति गुप्तिशुं रंगजी ॥ सु० ॥ १२ ॥ अंग उपांग सिद्धांत वखाणे, द्ये शुद्धो उपदेशजी ॥ शुद्धे मारगे चाले चलावे, पंचाचार विशेषजी ॥ सु० ॥ १३ ॥ दशविध यति धर्म जिन भांख्यो, तेहना धारणहारजी ॥ धरमथकी जे किमही न चूके, जो होय कोडि प्रकारजी ॥ सु० ॥ १४ ॥ जीवतणी हिंसा जे न करे, न वदे मृषावादजी ॥ तृणमात्र अणदीधुं न लीये, सेवे नहीं अब्रह्मजी ॥ सु० ॥ १५ ॥ नवविध परिग्रह मूळ न राखे, निशिभोजन परिहारजी ॥ क्रोध मान मायाने ममता, न करे लोभ लगारजी ॥ सु० ॥ १६ ॥ ज्योतिष आगम निमित न भांखे, न करावे आरंभजी ॥ औषध न करे नाडी न जवे, सदा रहे निरारंभजी ॥ सु० ॥ १७ ॥ डाकण शाकण भूत न काढे, न करे हळवो हाथजो ॥ मंत्र यंत्र ने राखडी करी ते, नवि आपे परमार्थजी ॥ सु० ॥ १८ ॥ विचरे गाम नगर पुर सघळे, न रहे एकण ठामजी ॥ चोमासा उपर चोमासुं, न करे एकज ग्रामजी ॥

सु० ॥ १९ ॥ चाकर नफर पासे नवि राखे, न करावे कोइ काजजी ॥ न्हावण धोवण वेष बनावण, न करे शरीरनी सारजी ॥ सु० ॥२०॥ व्याजवटानुं नाम न जाणे, न करे वणज व्यापारजी ॥ धर्म हाट मांडीने बेठा, वणज छे परउपगारजी ॥ सु० ॥ २१ ॥ ते गुरु तरे अवरांने तारे, सायरमां जिम जहाझजी ॥ काष्ट प्रसंगे लोह तरे जिम, तेम गुरु संगते पाम्याजी ॥ सु० ॥ २२ ॥ सुगुरु प्रकाशक लोचन सारिखा, ज्ञानतणा दातारजी ॥ सुगुरु दिपक घट अंतर केरा, दूर करे अंधकारजी ॥ सु० ॥ २३ ॥ सुगुरु अमृत सरिखा शिळा, दीये अमरगति वासजी ॥ सुगुरुतणी सेवा नित्य करतां, छूटे कर्मनो पासजी ॥ सु० ॥ २४ ॥ सुगुरुपचीशी श्रवण सुणीने, करज्यो सुगुरु प्रसंगजी ॥ कहे जिनहर्ष सुगुरु सुंपसाये, ज्ञानहर्ष उछरंगजी ॥सु०॥ ॥ २५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री कुगुरुनी सज्झाय ॥

॥ छोडो नांजी ॥ ए देशी ॥

॥ शुद्ध संवेगी किरिया धारी, पण कुटिलाइ न मुके ॥ बाह्य प्रकारे किरिया पाले, अभ्यंतरथी चूके ॥ १ ॥ कपटी कहिया एह जिणंदे॥दुष्टनुं नाम न लीजे॥कपटी०॥ ए आंकणी॥कालां कपडां खंभे धाबली, काख देखाडी बोले ॥ तरुणी सुंदर देखी विशेषे, पुस्तक वांचवा खोले ॥ कप० ॥ पेंडा देखी काढे पडघो, पडघां मान करावे ॥ खाजां वहोरे खांत करीने, पूरीने वोसिरावे ॥ कप० ॥३॥

ज्ञानमिषें उपदेश दइने, सूक्ष्म परिग्रह राखे ॥ ए कपटीनुं नाम न लीजे, इम उत्सूत्र जे भांखे ॥ कप० ॥ ४ ॥ ताळ कूटवा साथे हींडे, श्राविका छे दश बार ॥ यात्राने मिष एणी परें विचरे, दूर रह्या आचार ॥ कप० ॥ ५ ॥ पाशेर घीथी करे पारणुं, वळी खावे अधशेर॥तोही ताल इणि परं बोले, उपवासें आवे फेर ॥कप०॥६॥ बगलानी परें पगलां मांडे, आडुं डोंढुं जोवे ॥ महिला साथे बोले मीठुं, साधु वेष वगोवे ॥ कप० ॥ ७ ॥ आचारांगें वस्त्रनो भांख्यो, श्वेतने मानोपेते ॥ ते तो मारग दूरें मूक्यो, कपडा रंगें हेतें ॥ कप० ॥ ८ ॥ बाजीगर जेम बाजी खेले, धीवरे मांडी जाल ॥ ते संवेगी सूधा मत जाणो, ए सहुं आल जंजाल ॥ कप० ॥ ९ ॥ ऊंचुं घर अगोचर होवे, मास कल्प तिहां कीजें ॥ सुखशाताये पडिलेहण चाले, साधु जन्म फल लीजें ॥क०॥ ॥ १० ॥ राती जगाये महिला मलीने, गावे गीत रसाल॥ चार कथानां कर्मज बांधे, मनमां थइ उजमाल ॥ कप०॥ ११ ॥ मध्यान्हें महिलाने तेडे, हसीने पूछे वात ॥ अढारमो उपधान वहो तो, अम तुम मळशे घात ॥ कप० ॥ १२ ॥ तव ते कामिनी हसीने बोले, साचुं कहोछो स्वाम ॥ गच्छवासी गुरु आवीने वढशे, तव तुम जाशे महाम ॥ कप० ॥१३॥ नीचुं जोइने इणा परें भांखे, भणवानो खप कीजें ॥ नानी वयछे हजीय तुमारी, एक एक गाथा लीजें ॥ कप० ॥ १४ ॥ घोटकनी परें पंथें चाले, शहेरमां नीचूं जोवे ॥ गडबड गांडांनी परें चाले, जिनशासनने वगोवे ॥ कप०॥ ॥ १५ ॥ रुमाल पाठां रूडां वेचे, जूनां हाथमां जाले॥ तृष्णा तोये

किमहि न मूके, वली जाणे कोई आले ॥ कप० ॥१६ ॥ छकाय जीवनो दाह करावे, ठाम ठाम पाप बंधावे ॥ आंबिल तपनुं ओठुं लइने, कांइ अमने वहोरावे ॥ कप० ॥ १७ ॥ कदाग्रहमां पहेला व्रतनो, एहने लागे दोष ॥ मृषावादतो पग पग बोले, तेहनो न करे शोष ॥ कप० ॥ १८ ॥ अदत्त वस्तु अजाण थइने, साधारण सीरावे ॥ चोथा व्रतनी वात छे महोटी, तेहमां काम जगावे ॥ कप०॥ ॥ १९ ॥ विधवा पासे विन्हल थइने,काम कुसंगी मागे ॥ वायसनी परें मैथुन सेवे, चोथा व्रतने भांगे ॥ कप० ॥ २० ॥ मैथुन सेवे परिग्रह मांहे, मौढां पातक बांधे ॥ रासभनी परें लोटया हीडे, वली उघाडे खांधे ॥ कप० ॥ २१ ॥ छठ अठमादिने अठाई, नाम धरावे तपसी ॥ महिमा कारण रात्रें खावे, प्रगटे तव होय हांसी॥ ॥ कप० ॥ २२ ॥ नगर पिंडोलीया थइने निर्लज, पासथ्था थइ बेसे ॥ चोराशी गच्छ वहोरी खावे, म्होटा घरमां पेसे ॥कप०॥ ॥ २३ ॥ मुखें मुहपत्ती राखी बोले, आंखे करे छे चाला ॥ मांहो मांहे शानें समजे, आंखे करे छे टाला ॥ कप० ॥ २४ ॥ ए कपटीनो संग निवारो, जेणें ए भेख वगोयो ॥ भेख उथ्थापी महा ए भुंडो, मनुष्य जन्म फल खोयो ॥ कप० ॥ २५ ॥ आदि थकी अरिहंत आचारिज, उपाध्यायने साधु ॥ धोले भेखें सहु एम बोले, वाहने आराधुं ॥ कप० ॥ २६ ॥ मूल पंथ मिथ्यात्वें चालें, समजता नही लेश ॥ जिनमतनो मारग छांडीने, कलहो करे विशेष ॥ कप० ॥ २७ ॥ आप मतीनो संग तजीने, साधु वचने ये ॥

वाणी वाचक जस एम बोले, जिन आज्ञा शिर ग्रहीये ॥ कप० ॥ २८ ॥ इति ॥

॥ अथ सुगुरु गुणनी सज्जाय ॥

॥ पंच महाव्रत सूधां पाले, अंतरंग मल टाले ॥ व्रत दूषण क्षण क्षग संभाले, ज्ञान क्रिया अजुवाले ॥ १ ॥ सुसाधु गुरुशुं मेरो मन माने ॥ ए आंकणी ॥ आगम कसतां जे कस पहोंचे, ते कसने गुरू माने ॥ सोना तणी परें जे कस पहोंचे, दिन दिन चढते वानें॥ ॥ सुसा० ॥ २ ॥ सूत्र अरथशुं प्रीत करीने, आपणडुं मन रेहे ॥ उभय काल जे भाजन उपकरण, संभाली पडिलेहे ॥ सु० ॥ ३ ॥ खरारे बपोरे अतिथिनी वेला, गाचरीये मुनि जावे ॥ निर्दूषण आहारादिक न मले, तो मन ऊणो न आवे ॥ सु० ॥ ४ ॥ अणगालादिक दूषण पांचे, भोजन वेला टाले॥ आठे प्रवचन माता निरतें, जयणाशुं प्रतिपाले ॥ सु० ॥ ५ ॥ कर्म कथा जे विकथा चारे, आप णथी न प्रकाशे ॥ लोक तणा जे वचन परीसह, ते मनमांहे अहियासें ॥ सु० ॥ ६ ॥ धर्म तणुं कांइ कारण जाणी, निज शरीर पण छंडे ॥ उपसर्गादिक आवे हूंते, व्रत पच्चक्खाण न खंडे ॥ सु० ॥७॥ काल प्रमाणे संयमनें खप, जोइने गुण लीजें ॥ विनय विमल पंडित एम बोले, तसु पाय वंदन कीजे ॥ सुसाधु० ॥८॥इति ॥

॥ अथ श्री कलियुगनी सज्झाय ॥

॥ सरसति स्वामिनी पाय नमीने, उलट मनमांहे आयो ॥

तिरथ नहि कोइ इण संसारे, तेणे ए कळियुग आयो ॥ देखो बे यारो, कुडो कळियुग आयो ॥ ॥ ए आंकणी ॥ बावो कहे म्हारी न्हानडी बेटी, दिन दिन मूल सवायो ॥ बे यारो, कूडो कळियुग आयो ॥ १ ॥ राजा ते परजाने पीडे, कुनर काम भळायो ॥ बोल बंध नही मंत्रीने, गोचर क्षेत्र खेडायो ॥ बे० ॥ २ ॥ गुरुने गाळ दीये निज चेलो, वेद पुराण पढायो ॥ सामु चूले ने वहु खाटलडे, फूके शरीर जळायो ॥ बे० ॥ ३ ॥ एंशी वर्षनो हींडे होंशे, मूछे हाथ घलायो ॥ पंचतणी साखे परणीने, अबळा अर्थ गमायो ॥ बे० ॥ ॥ ४ ॥ जोगी जंगम ने संन्यासी, भांगे भखे मद व्हायो ॥ चोर चाड परधनने खाये, साधुजन सिदायो ॥ बे० ॥ ५ ॥ निर्धनने बहु बेटा बेटी, धनवंत एक न पायो ॥ निचतणे घर अति घणी लक्ष्मी, उत्तम जन सिदायो ॥ बे० ॥ ६ ॥ न मळे बाप संघाथे बेटो, घणेरे मनोर्थे जायो ॥ हाथ उपाडे मायने मारे, परणीशुं उमायो ॥ बे०॥ ॥ ७ ॥ घरडाने घेलो कहे बेटो, आपतणो मद वाह्यो ॥ वहु सूनीने वर हिंडोळे, सासरे सूवाने धरायो ॥ बे० ॥ ७ ॥ हळ खेडे ब्राह्मण गो जुत्ति, निर्दय नाक फडायो ॥ माबापे बेटी वेचीने, बेटाने परणायो ॥ बे० ॥ ९ ॥ रागतणे वश गुरु ने गुरुणी, काम करे परायो ॥ कांगानी परे कलहो मांडी, कूळगुरु नाम धरायो ॥ बे० ॥ १० ॥ बैयर बार वरसनी बेटो, दीठो गोद खेलायो॥ माग्या मेह न वरसे महियल, लोभे धख्यो सवायो ॥ बे० ॥ ११ ॥ कुडा कळियुगनी ए माया, देखी गीत गवायो॥ पभणे प्रीतिविमळ परमारथ, जिनवचने सुख पायो॥ बे यारो, कूडो कळियुग आयो ॥१२॥ इति ॥

॥ श्री मृगापुत्रनी सज्झाय ॥

॥ दोहा ॥ प्रणमी पास जिणंदने, समरी सरसति माय ॥ निज गुरु चरण नमी करी, भणशुं महा मुनिराय ॥ १ ॥ राज ऋद्धि लीला परिहरी, लीधो संयमभार ॥ तेह मृगापुत्र गायशुं, सुणज्यो सहु नरनार ॥ २ ॥ संक्षेपें करी वर्णवुं, सूत्रमां छे विस्तार ॥ भणतां सुणतां ध्यावतां, लहिये भवनो पार ॥ ३ ॥ भोगी नरमां भमरलो, ऋषिमांही शिरदार ॥ तसगुण वर्णवतां थकां, त्रूटे कर्म अपार ॥ ४ ॥

॥ ढाल १ ली ॥ प्रथम गोवाळा तणे भवेजी—ए देशी.

सुग्रीवनगर सोहामणुं जी, बलभद्र तिहां राय ॥ तस घर धरणी मृगावती जी, तस नंदन जुवराय ॥ हो मायडी, क्षण लाखेणो रे जाय ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ बळश्री नामे भलोजी, मृगापुत्र प्रसिद्ध ॥ माताने नामे करो जी, गुण निष्पन तस दीध ॥ हो मायडी० ॥ २ ॥ भणी गणी पंडित थयो जी, जोबनवय जव आय ॥ सुंदर मंदिर कराविआं जी, परणावे निज माय ॥ हो मायडी० ॥ ३ ॥ नव वय रुपे सारिखो जी, परण्या बत्रीश नार ॥ पंच विषयसुख भोगवे जी, नाटकना धमकार ॥ हो मायडी० ४ ॥ रत्नजडित सोहामणां जो, अद्भूत उंचा आवास ॥ देव दोगुंदकनी परे जी, विलसे लील विलास ॥ हो मायडी० ॥ ५ ॥ एक दिन बेठा माळिये जी, नारि ने परिवार ॥ मस्तक पग दाझे तळां जो, दीठा श्री अणगार ॥ हो मायडी० ॥ ६ ॥ मुनि देखी भव सांभर्यो

जी, वसियो मन वैराग ॥ उतर्यो आमण दूमणो जी, जननिने पाये लाग ॥ हो मायडी० ॥ ७ ॥ पाय लागीने विनवे जी, सुण सुण मोरी माय ॥ नटुवानी परे नाचियो जी, लख चोराशी माय ॥ हो मायडी० ॥ ८ ॥ पृथ्वी पाणी तेउमांजी, चोथी रे वाउकाय ॥ जन्म मरण दुःख भोगव्यां जी, तेम वनस्पति मांय ॥ हो मायडी० ॥ ९॥ विगलेंद्रि तिर्यंचमां जी, मनुष्य देव मझार ॥ धर्म विहुणो आतमा जी, रडवडियो संसार ॥ हो मायडी० ॥ १० ॥ साते नरके हुं भम्यो जी, अनंत अनंति रे वार ॥ छेदन भेदन त्यां सह्याजी, कहेतां न आवे पार ॥ हो मायडी० ॥ ११ ॥ सायरना जळथी घणां जी, में पीधां मायनां थान ॥ तृपति न पाम्यो आतमा जी, अधिक आरोग्यां धान ॥ हो मायडी० ॥ १२ ॥ चारित्र चिंतामणि समो जी, अधिक म्हारे मन थाय ॥ तन धन जोवन कारमां जी, क्षण क्षण खूटे आय ॥ हो मायडी० ॥ १३ ॥ माता अनुमति आपीये जी, लेइशुं संयम भार ॥ पंच रतन मुज सांभर्यां जी, करशुं तेहनी सार ॥ हो मायडी० ॥ १४ ॥ वयण सूणी बेटा तणां जी, जननी धरणी ढळंत ॥ चित्त वल्युं तव आरडे जी, नयणे नीर झरंत ॥ रे जाया, तुज विण घडी रे छ मास ॥ १५ ॥ वळती माता इम भणे जी, सुण सुण मोरा रे पूत्र ॥ मनमोहन तुं वाल्हो जी, कांइ भागे घरसूत्र ॥ रे जाया० ॥ १६ ॥ म्होटां मंदिर माळियां जी, रान समोवड थाय ॥ तुज विण सहु अळखामणां जी, किम बोले दिन जाय ॥ रे जाया० ॥ १७ ॥ नव मासवाडा उदर धर्यो जी, जन्म तणां दुःख दीठ ॥ कनक कचोळे पोषियो जी, हवे हुं थई अनीठ

॥ रे जाया० ॥ १८ ॥ जोबनवय नारीतणां जी, भोगवो वहोळा रे भोग ॥ जोबनवय वित्या पछे जी, आदरज्यो तप जोग ॥ रे जाया० ॥ १९ ॥ पड्यो अजाडी जिम हाथियो जी, मृगलो पडीयो रे पास ॥ पंखी पडयो जिभ पांजरे जी, तेम कुमर घरवास ॥ रे जाया० ॥ २० ॥ घर घर भिक्षा मागवी जी, अरस विरस होय आहार ॥ चारित्र छे वच्छ दोहिलुं जी, जेसी खांडानो धार ॥ रे जाया० ॥ २१ ॥ पंचमहाव्रत पाळवां जी, पाळवा पंच आचार ॥ दोष बेतालीश टाळीनेजी, लेवो सूझतो आहार ॥ रे जाया०॥२२॥ मेण दांते लोहमय चणा जी, किम चाविश कुमार ॥ वेलू समोवड कोळिया जी, जिन कह्यो संयमभार ॥ रे जाया० ॥ २३ ॥ पलंग तलाइए पोढतो जी, करवो भुमि संथार ॥ कनक कचोळां छांडवां जी, काचलीये व्यवहार॥ रे जाया०॥२४॥ माथे लोच कराववा जी, तुं सुकुमाल अपार॥ बावीश परिसह जितवा जी, करवा उग्र विहार॥ रे जाया ॥ २५ ॥ पाय अलवाणे चालवुंजी, शियाळे शीत वाय ॥ चोमासु वच्छ दोहिलुं जी, उनाळे लू वाय ॥ रे जाया० ॥ २६ ॥ गंगा सायर आदे करी जी, उपमा देखाडी रे माय ॥ दुक्कर चारित्र दाखियुं जी, कायर पुरुष ने थाय ॥ रे जाया० ॥ २७ ॥ कुंमर भणे सुण मायडी जी, संयम सुख भंडार ॥ चौदराज नगरीतणा जी, फेरा टाळणहार ॥ हो मायडी० ॥ २८ ॥ अनुमति तो लो आपु खरी जी, कुण करशे तुज सार ॥ रोग जब आवी लागशे जी, नहि औषध उपचार ॥ रे जाया० ॥ २९ ॥ वनमा रहे छे मृगलां जी, कुण करे तेहनी सार ॥ वनमृगनी परे विचरशुं जी, एकलडा निर-

धार ॥ हो मायडी० ॥ ३० ॥ अनुमति आपे मायडी जी, आव्या वनह मझार ॥ पंचमहाव्रत आदर्यां जी, पाळे संयम भार ॥ मुनिसर, धन धन तुम अवतार ॥ ३१ ॥ मृगापुत्र ऋषिराजीयो जी, षट्काया गोवाळ ॥ ए सम नहि वैरागियो जी, जिणे टाल्यो आतम साल ॥ मुनिसर० ॥ ३२ ॥ भण्यो अध्ययन ओगणीशमे जी, मृगापुत्र अधिकार ॥ तप जप कीरिया शुद्ध करी जी, आराधी आचार ॥ मुनिसर० ॥ ३३ ॥ संयम दुक्कर पाळियुं जी, करी एक मास संथार ॥ कर्म खपावी केवळ लही जा, पहोत्या मुक्ति मझार ॥ मुनिसर, धन धन तुम अवतार ॥ ३४ ॥ इति ॥

॥ अइमत्ता मुनिनी सज्झाय ॥

थांशु प्रेम बन्यो छे राज निरवहेशो तो लेखे ए देशी.

॥ वीरजिणंद वांदीने गौतम, गोचरीये संचरीया ॥ राजग्रही नयरीमांही गौतम, घर घर आंगण फरीया ॥१॥ आघा आम पधारो हो पूज्य, मुज घर वोहरण वेळा ॥ ए आंकणी ॥ इणि अवसर अइमत्ते रमते, मनगमता मुनि दीठा ॥ कंचन वरणि काया निरखी, मनमां लाग्यां मीठा ॥ आघा० ॥ २ ॥ बोल्यो कुंवर अमीरसवाणी, एक कहो अभिराम ॥ खरे बपोरे पाय अलवांणे, भमवो ते कीणकामे ॥ आघा० ॥ ३ सांभळ राजकुंवर सोभागी, शुद्ध गवेषण कीजे, निर्दुषण नें निरतीचारं, घरघर भिक्षा लीजे ॥ आघा० ॥ ४ ॥ आवो आज अमारे मंदीर, कहीसो ते विधि करशुं॥ जे जोइए

ते जूगते करीने, भावसुं भिक्षा देसुं ॥ आघा० ॥ ५ ॥ इम कही घर तेडी चाल्यो, आव्यो मुनि आनंदे ॥ अइमत्ता राणी देखीने, विधिसूं गौतम वांदे ॥ आघा० ॥६॥ आज हमारे रत्नचिंतामणी, मेह अमीरस वूठा ॥ आज अम आंगण सुरतरु फळीयो, जे गौतम नयणे दीठा ॥ आघा० ॥ ७ ॥ रे बालुडा बहु बुधीवंता, गणधर गौतम आव्या ॥ थाळ भरीने मोदक मोटा, भावईसुं वहोराव्या ॥ आ० ॥ ८ ॥ वांदी पाय कुंवर मुनिवरना, हाथ मेलाव्यो माथे॥ बोलावुं कही तो मुनिने, इम कही चाल्यो साथे ॥ आघा० ॥ ९ ॥ कुंवर कहे आ भाजन आपो, भार घणो प्रभु पासे॥ गौतम कहे तेहने आपुं, चारित्र लियें उलासे ॥ आघा० ॥ १० ॥ चारित्र लेइसुं हुं तुम्ह पासे, झोली दीयो मुज हाथे ॥ गौतम पुछे अनुमत केहनी, माय मोकल्या तुम साथे ॥ आ० ॥ ११ ॥ गुरु ज्ञानी गौतम मन आणी, दिक्षा दीधी तेहने ॥ वृद्धमुनिने भलावि दीधा, मुनिमारग दीयो तेहने ॥ आघा० ॥ १२ ॥ ते संघाते अइमतो चाल्यो, साधु संघाते वनमें ॥ नानोसो सरोवर नीरे भरीयो, ते देखि हरख्यो मनमें ॥ आघा० ॥ १३ ॥ नानोसो सरोवर नानो भाजन, नाव करी अइमत्तो ॥ वळतां साधुजीने देखे, बालक रमत करतो ॥ आघा० ॥ १४ ॥ बोलावीने मुनि बालकने, ए आपणे नवि कीजे॥ छकाय जीवनी विराधना करतां, दुरगतिनां फळ लीजे ॥ आघा० ॥ १५ ॥ लाज घणी मनमांही उपनी, समोसरणमें आव्यो॥ इरियावहि पडिक्कमतां अइमत्तो, ध्यान शुकल मन भाव्यो ॥ आघा० ॥ १६ ॥ केवळज्ञान तिहां उपन्यो, धन धन मुनि अइमुत्तो ॥ शुद्ध मने चारित्र

पाळोने, ते मुनि मुगति पहोत्यो ॥ आघा० ॥ १७ ॥ गौतम आदे अइमत्ता सरिखा, गुणवंता ऋषिराया ॥ लक्ष्मिरतन करजोडी वंदे, ते मुनिवरना पाया ॥ आघा० ॥ १८ ॥

॥ अथ श्री धन्नाजीनी सज्झाय ॥

॥ शियाळामां शित घणीरे धन्ना, उनाळे लू वाय ॥ चोमासे जल वादळां रे धन्ना, ए दुःख सह्युं न जाय ॥ हुं तो वारी रे धनजी, आज नहिं सो काळ ॥ १ ॥ वनमें तो रहेवुं एकलुं रे धन्ना, कोण करे तोरी सार॥ भूख परिसह दोहिलोरे धन्ना, मत कर एसी वातरे हो धनजी ॥ मत लीयो संयमभार ॥ २ ॥ वनमें तो मृग एकलोरे माता, कोण करे उनकी सार ॥ करणी तो जेसी आपकी रे माता, कोण बेटो कोण बापरे हो जननी ॥ हुं लेउं संयमभार ॥ ॥ ३ ॥ पंच महाव्रतको पाळवो रे धन्ना, पांच मेरु समान ॥ बावीस परिसह जीतवारे धन्ना, संयम खांडानी धाररे हो धनजी॥मत० ॥४॥ नीर वीनानी नदी कीसी रे धन्ना, चंदविना केसी रात ॥ पियु विना केसी कामिनी रे धन्ना, वदन कमळ विलखायरे हो धनजी ॥ मत० ॥ ५ ॥ दीपकविना मंदिर किस्यां रे धन्ना, कानविना केसो राग ॥ नयण विना किस्यु निरखवुंरे धन्ना, पुत्र विना परिवाररे हो धनजी ॥ मत० ॥६॥ तुं मुज अंधा लाकडी रे धन्ना, सा कोइ टेकोरे होय ॥ जो कोइ लाकडी तोडशेरे धन्ना, अंधो होशे खुवाररे हो धनजी ॥ मत० ॥ ७ ॥ रत्न जडितको पिंजरो रे माता, ते सूडो जाणे बंध ॥ काम भोग संसारनारे माता, ज्ञानीने मन फंदरे हो

जननी ॥ हुं लेउं संयमभार ॥ ८ ॥ आयु तो कंचन भर्योरे धन्ना, राइ परवत जेम सार ॥ मगर पचीशी असतरी रे धन्ना, नहिं संयमकी वात रे हो धनजी ॥ मत० ॥ ९ ॥ नित्य उठी घोडले फीरतोरे धन्ना, नित्य उठी बागमें जाय ॥ एसो खुबी परमाणेरे धन्ना, चमर ढोळायां जायरे हो धनजी ॥ मत० ॥ १० ॥ चोडी पालखीये पोढतो रे धन्ना, नित्य नइ खुबी माण ॥ एतो बत्रीश कामिनी रे धन्ना, उभी करे अरदासरे हो धनजी ॥ मत० ॥ ११ ॥ नारथ सकारा हुं गयो रे माता, काने आयो राग ॥ मुनिश्वरनी वाणी सुणी रे माता, आ संसार असार रे हो जननी ॥ हुं लेउ० ॥ १२॥ हाथमें लेनो पातरोरे धन्ना, घेर घेर मागवी भीख ॥ कोई गाळज दइ काढशेरे धन्ना, कोई देवेंगे शिखरे हो धनजी ॥ मत० ॥ १३ ॥ तज दीयां मंदिर माळियां रे माता, तज दियो सब संसार ॥ तज दीनी घरकी नारीयो रे माता, छोड चल्यो परिवार रे हो जननी ॥ हुं लेउं० ॥ १४ ॥ जूंठां तो मंदिर माळीयां रे माता, जुंठो ते सब संसार ॥ जीवतां चूंटे कालजूं रे माता, मुवां नरक लेई जायरे हो जननी ॥ हुं लेउं० ॥ १५ ॥ रात्रिभोजन छोडदे हो धन्ना, परनारी पच्चख्खाण ॥ परधनशुं दुरा रहोरे धन्ना, एहज संयमभार रे हो धनजी ॥ मत० ॥ १६ ॥ मात पिता वरजो नहि रे धन्ना, मत कर एसी वात ॥ एह बत्रीशे कामिनी रे धन्ना, एसा देगी शाप रे हो धनजी ॥ मत० ॥ १७ ॥ कर्मतणां दुःख में सह्यां रे माता, कोई न जाणे भेद ॥ राग द्वेषके पूंछडे रे माता, वाध्या

वैर विरोध रे हो जननी ॥ हुं लेउं० ॥ १८ ॥ साधु पणामें सुख घणां रे माता, नहि दुःखरो लवलेश ॥ मळशे सोई आवशुं रे माता, सोई साधु उद्देश रे हो जननी ॥ हुं लेउं० ॥ ॥ १९ ॥ एकलो उठी जायशे रे माता, कोई न राखणहार ॥ एक जीवके कारणेरे माता, क्युं करे एवो विलापरे हो जननी ॥ हुं लेउं० ॥ २० ॥ न कोई धन्नो मर गयो रे माता, न कोई गयो परदेश ॥ उग्या सोई आथमें रे माता, फूल्या सो करमाय रे हो जननी ॥ हुं लेउं० ॥ २१ ॥ काळ ओचिंतो मारशे रे माता, कोण छोडावण हार ॥ कर्म काट मुगते गया रे माता, देवलोक संसार रे हो जननी ॥ हुं लेउं० ॥ २२ ॥ जे जेसी करणी करे रे माता, तिन तेसां फल होय ॥ दयाधरम संयम विना रे माता, शिव सुख पामे न कोय रे हो जननी ॥ हुं लेउं० ॥ २३ ॥ इति ॥

——:०:——

॥ अथ श्री नेम राजुलनी सज्झाय ॥

विहरमान भगवान सुणो मुज विनती—ए देशी.

॥ पियुजी पियुजी रे नाम, जपुं दिन रातिया ॥ पियुजी चाल्या परदेश, तपे मोरी छातीयां ॥ पग पग जोती वाट, वाले सर कब मिले ॥ नीर विछोयां मिन, के ते ज्युं टळवळे ॥ १ ॥ सुंदर मंदिर सेज, साहिब विण नवि गमे ॥ जिहां रे वालेसर नेम तिहां मारुं मन भमे ॥ जो होवे सज्जन दूर, तोही पासे वसे ॥ किहां पंकज किहां चंद, देखी मन उल्लसे ॥ २ ॥ निःस्नेहीशुं मित, म करजो को सही ॥ पतंग जलावे देह, दिपक मनमें नहीं ॥ वा-

हाला माणसनो विजोग, म होजो केहने ॥ सालेरे साल समान हइयामां तेहने ॥ ३ ॥ विरह व्यथानी पीड, जोबन वय अति दहे ॥ जेनो पियु परदेश, ते माणस दुःख सहे ॥ झुरी झुरी पंजर कीध, काया कमलज जिसी ॥ हजिअ न आव्यो नेम, मलि न नयणें हसी ॥ ४ ॥ जेहने जेहशुं राग, टाल्यो ते नवि टळे ॥ चकवा रयणी विजोग, तेतो दिवशे मळे ॥ आंबाकेरो स्वाद, लिंबु ते नवि करे ॥ जे नाह्या गंगा नीर, ते छिल्लर किम तरे ॥ ५ ॥ जे रम्या मालती फूल, धंतूरे किम रमे ॥ जेहने घृतशुं प्रेम, ते तेले किम जिमे ॥ जेहने चतुरशुं नेह, ते अवरने शुं करै ॥ नव जोबन तजी नेम, वैरागी थइ फरे ॥ ६ ॥ राजुल रूपनिधान, पोहोती सहसावने ॥ जइ वांद्या प्रभु नेम, संयम लेइ एक मने ॥ पाम्यां केवळज्ञान, पहोती मननी रळी ॥ रूपविजय प्रभु नेम, भेटे आशा फळी ॥ ७ ॥ इति नेम राजुलनी सज्झाय ॥

॥ अथ श्री राजीमति अने रहेनेमिनो संवाद ॥

॥ रहनेमि अंबरविण राजुल देखीजो, मदनोदय मोह्या मुनि चित्त गवेषिजो ॥ कहे सुंदरि सुंदर मेळा संसारमां जो ॥ १ ॥ संसारे मेळा आवे शे काजजो, चिर धरी कहे राजुल तुमे मुनिराज-जो ॥ आज किशुं संभारो मेळा विसर्याजो ॥ २ ॥ विसरे नहीं रागीने पूरव मितजो, मित करी रहे दूर ए मूरख रीतजो ॥ चतुरशुं चित्त मेळावो चतुरने सांभरैजो ॥ ३ ॥ सांभरे पण हमशुं तुम

शो मेळापजो, दियर भोजाइपणानी जगमां छापजो ॥ तेमां शो चित्तमेळो फोगट रागनोजो ॥ ४ ॥ फोगट रागे रोतां तुमे घरमांहीजो, तजि तुमने मुज भाइ गया वनमांहीजो ॥ अमे तुम घेर नित वात विसामे आवताजो ॥ ५ ॥ आवता तो हुं देती आदरमानजो, प्रितम लघुबंधव मुज भाइ समानजो ॥ कंतवियोगे तुमशुं वात विसामतीजो ॥ ६ ॥ विसांमा वनिताने वल्लभ केराजो, अण परणी कन्याने कंत घणेराजो ॥ एकपखो जे राग ते धरवो नवि घटेजो ॥ ७ ॥ नवि धरे सतियो जे नाम धरावे जो, बीजो वर वरवा इछा नवि भावेजो ॥ न फरे पंचनी साखे जे तिलकें धर्योजो ॥ ८ ॥ तिलक धरे ते तो सामान्य ठरायजो, मंगळ वरत्ये करमेळापक थाय जो ॥ माय पछी वोळावे कन्या सासरे जो ॥ ९ ॥ सासरिये कुंवारी जमवा जायजो, वस्तु सामान्य विशेष लइ समवायजो ॥ करमेळावा पहेलां मनमेळा करेजो ॥ १० ॥ मेळा करवा अमे तुम घेर आवंताजो ॥ भूषण चिवरमेवा फल लावंता जो ॥ तुमे लेतां अमने थइ आशा मोटकी जो ॥ ११ ॥ म्होटी आशा शी थइ तुम दिलमांहीजो, देवर जाणी हुं लेती उछांहीजो ॥ ससरानुं घर लहि न धरी शंका अमे जो ॥ १२ ॥ अमे जाण्युं पति विण राजुल ओशीयाळीजो, एहने परणी सुखभर प्रितडी पाळीजो ॥ दंपति दिक्षा लेशुं जोवनमां नहींजो ॥ १३ ॥ नहिं ओशियाळी हुं जगमां कहेवाळीजो, त्रण्य जगतना राजानी हुं राणीजो ॥ भूतळ स्वर्गे गवाणी प्रभु चरणे

रहीजो ॥ १४ ॥ रही चरणे तो सुख संसार ठगाणीजो, चंपकवरणी तुज काया सोसाणीजो ॥ तप जप कष्ट जे करवुं ते वृद्धापणे जो ॥ १५॥ वृद्धापणे मुनिने नवि थाय विहारजो, थिरवासे एक ठामे रहे अणगारजो ॥ जे जे कारज साधवुं ते जोवन वयेजो ॥ १६ ॥ जोवनवय झगमगतो तुम हम जोगजो, चालो घेर जइ विलसियें सुखभोगजो ॥ वात बनी एकांते गुफामां पुण्यथीजो ॥ १७ ॥ पुण्ये दिक्षा लीधी प्रभुनी पासजो, संयमथी सुर मुगतितणां सुखवासजो ॥ विरुआं विषफळ खावा इछा शी करोजो ॥१८॥ शी करो तो पास प्रभु अणगार जो, उपदेशे घर छंडी थशे मुनि च्यारजो ॥ ते भव मोक्ष सुणीने किम जइ घेर वश्याजो ॥ १९ ॥ घेर वश्या पण मुनि दीठा तप करताजो, पश्चाताप करी फरी संयम धरताजो ॥ परिभ्राटन करी परमातम पदवी वर्याजो ॥ २० ॥ वरी पदवी पण मुक्त भोगी थइ तेहजो, तुम उपर अमने पूरवनो नेह जो ॥ अधुराने दुःखकर संयम साधन विधिजी ॥ २१ ॥ विधियें व्रत धरी थावच्चा कुमारजो, सिद्धगिरि सिध्या साथे साधु हजारजो ॥ वीरने वारे अइमुत्तो मुगते जशेजो ॥ २२ ॥ जशे खरा पण बाळपणामां जोगीजो, वात न नाणे सा संसारिक भोगीजो ॥ मुगत भोगी थइ अंते संयम साधशुंजो ॥ २३ ॥ साधशुं अंते संयम ते सवि खोटुंजो, जरापणानुं दुःख संसारे म्होटुंजो ॥ व्रत भांगीने जीव्या ते नरकें गयाजो ॥ २४ ॥ गया नरकें ते जेणे फरि व्रत नवि धरियांजो, भागे परिणामे संयम आचरियांजो ॥ चारित्रे चित्त ठरशे इच्छा

पूरणेजो ॥ २५ ॥ इछा पुरण कोइ काळे नवि थावेजो, स्वर्गतणां सुख वार अनंति पावे जो ॥ भव भय पामी पंडित दिक्षा नवि तजेजो ॥ २६ ॥ नवि तजे तो पूरवधर किम चुक्याजो, रही घरवासे तप जप वेषज मूक्याजो ॥ अरिहा वात एकांते शासन नवि कहेजो ॥ २७ ॥ कहे एकांते ब्रह्मचर्य जिन वरियाजो, व्रत तजि पूरवधर निगोदे पडियाजो ॥ ॥ विष खातां संसारे कुण सुखिया थयाजो ॥ २८ ॥ थया जिनेश्वर सुख विलसा संसारेजो, केवळ पामी पछी जगतने तारेजो ॥ दिक्षा लेशुं आपणे सुखलीला करीजो ॥ २९ ॥ किरिया संयम जिनआणा शिर धारोजो, चळचित्त करीने चरणतणुं फळ हारोजो ॥ वमन भखंतां श्वानपरे वांछा करोजो ॥ ३०॥ करयो अमने तुमे श्वान बरोबर साचोजो, तो तुमशुं हवे राग धरवो काचोजो ॥ लाग्यो तमाचो शिक्षानो मुजने घणोजो ॥ ३१ ॥ मुजने घणो छे दीयरियानो रागजो, तेणे कहुं छुं अगंधनकूळना नागजो ॥ अगनि पडे पण विष वमियुं चूसे नहीं जो ॥ ३२ ॥ चूसे नहीं तिर्यंच पशु विख्यातजो, तेथी भुंडो हुं नर क्षत्रि जातजो ॥ तुं गुरुमाता वात किहां करशो नहींजो ॥ ३३ ॥ करशो नहीं पण जाणे जिनवर ज्ञानी जो, ज्ञानी आगळ वातन जगमां छानीजो ॥ प्रभु पासे आलोयण लेइ निर्मळ थवुंजो ॥ ३४ ॥ निर्मळ थावा जइशुं प्रभुनी पासेजो, मिछामिदुक्कडं तुमशुं शुभ वासेजो ॥ कूप पडंतां तुम कर झाली राखियोजो ॥ ३५ ॥ राखे आतम पोतानो मुनिरायाजो, स्वामि सहोदर मात शिवाना जायाजो ॥ रहनेमि संयमे ठरिया इम सांभळीजो ॥ ३६ ॥ सांभळी जइ प्रभु चरणे शिश

नमावीजो, आलोयण लेइ उज्जवळ भावना भावीजो ॥ केवळ पामी शिवपदवी वरिया सुखेजो ॥ ३७ ॥ सुखे रही घरमां शत वरस ने च्यारजो, एक वरस छद्मस्थे राजुलनारजो ॥ एक विहूणां पांचशें वरसज केवळी जो ॥ ३८ ॥ केवळी थइने विचर्या देश विदेशजो, बहु जन तार्या देइ वर उपदेशजो ॥ शिवसुख सज्झाये पोढया अगुरु लघु गुणेजो ॥३९॥ गुणे करी दोइ गाया सुणज्यो सयणांजो, एक एक गाथा अंतर बेहुनां वयणांजो ॥ श्री शुभवीर विवेकी नित्य वंदन करेजो ॥ ४० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री गौतमस्वामिनी सज्झाय ॥

॥ हे इंद्रभुति ! ताहरा गुण कहेतां हरख न माय ॥ हे गुण दरिया ! सुर बधु करजोडी गुण गाय ॥ ए आंकणी ॥ जे शंकर विरंचिनी जोडी, वळी मोरलीधरने विछोडी ॥ तें जिनजी साथे प्रित जोडी ॥ हे इंद्र० ॥ १ ॥ वेदना अरथ सुणी साचा, वीरना चेला थया साचा ॥ कोइ लब्धिए न रह्या काचा ॥ हे इंद्र० ॥ २ ॥ परिग्रह नवविधमा त्यागी, तुमची जागरणदशा जागी ॥ धर्मध्यान शुकलध्याननां रागी ॥ हे इंद्र० ॥ ३ ॥ अनुजोग चारना बहु जाण, तेणे निर्मळ प्रबळ तुज नाण ॥ अमृतरस सम मीठडी वाण ॥ हे इंद्र० ॥ ४ ॥ जे कामनृपने रखवा दडी, त्रण गति त्रिवटे तेह पडी ॥ ते रमणी तुजने नहीं नडी ॥ हे इंद्र० ॥ ५ ॥ अति जागरणदशा ज्यारे जागी, भावठ सघळी त्यारे भागी ॥ कहे धर्मजित नोबत वागी ॥ हे इंद्रभूति० ॥ ६ ॥

॥ श्री पजुषणनी सज्झाय ॥

॥ आबु अचल रलीआमणोरे लाल–ए देशी. ॥

॥ पर्व पजुषण आवीयांरे लाल, कीजे घणुं धर्म ध्यानरे ॥ ॥ भविकजन ॥ आरंभ सकळ निवारीएरे लाल, जीवोने दीजे अभयदानरे ॥ भ० ॥ पर्व० ॥ १ ॥ सघळा मासमांहे शिरेंरे लाल, भाद्रव मास सुमासरे ॥ भ० ॥ तेहमां आठ दिन रुअडारे लाल, कीजे सुकृत उल्लासरे ॥ भ० ॥ पर्व० ॥ २ ॥ खांडण पीसण गारनांरे लाल, न्हावण धोवण जेहरे ॥ भ० ॥ एहवा आरंभने टालोएरे लाल, उत्सव करीये अनेकरे ॥ भ० ॥ पर्व० ॥ ३ ॥ पुस्तकवासी न राखीयेरे लाल, ओच्छव करीए अनेकरे ॥ भ० ॥ धर्म सारु वित्त वावरोरे लाल, हइडे आणी विवेकरे ॥ भ० ॥ पर्व० ॥ ४ ॥ पूजो अर्चीने आणीएरे लाल, श्री सद्गुरुनी पासरे ॥ भ० ॥ ढोल ददामां फेरीयारे लाल, मंगळिक गावो भासरे ॥ भ० ॥ पर्व० ॥ ५ ॥ श्रीफळ सरस सोपारीयोरे लाल, दीजे साहामिने हाथरे ॥ भ० ॥ लाभ अनंता बतावीयारे लाळ, श्रीमुख त्रिभूवन नाथरे ॥ भ० ॥ पर्व० ॥ ॥ ६ ॥ नव वांचना कल्पसूत्रनीरे लाल, सांभलो शुद्धे भावरे ॥ भ० ॥ स्वामिवत्सल कीजीएरे लाल, भवजळ तरवा नावरे ॥ भ० ॥ पर्व० ॥ ७ ॥ चित्ते चैत्य जुहारीएरे लाल, पूजा सत्तर प्रकाररे ॥ भ० ॥ अंगपूजा सद्गुरुतणीरे लाल, कीजीए हर्ख अपाररे ॥ भ० ॥ पर्व० ॥ ८ ॥ जीव अमारी पळावीयेरे लाल, तेहथी शिवसुख होयरे ॥ ॥ भ० ॥ दान संवत्सरी दीजीएरे लाल, इण समो पर्व न कोइरे ॥

॥ भ० ॥ पर्व० ॥ ९ ॥ काउसग्ग करी सांभळोरे लाल, आगम आपणे कानरे ॥ भ० ॥ छठ अठम तपश्चा करोरे लाल, कीजे उज्वल ध्यानरे ॥ भ० ॥ पर्व० ॥ १० ॥ इण विध पर्व आराधशेरे लाल, लेशे सुखनी कोडरे ॥ भ० ॥ मुक्तिमंदिरमां मालशेरे लाल, मति हंस नमे करजोडरे ॥ भ० ॥ पर्व० ॥ ११ ॥

॥ अथ श्री बीजनी सज्झाय. ॥

॥ कपुर होय अती ऊजलोरे—ए देशी ॥

बीज तणे दिन दाखवुं रे, द्विविध धर्म प्रकार; पंच महाव्रत साधुरे, श्रावकने व्रत बार रे, प्राणी धर्म करो सहु कोइ ॥ १ ॥ प्राणातिपात व्रत जे कह्युं रे, जावज्जीव ते जाण; बीजुं मृषावाद जाणीए रे, मोटुं तेह वखाण रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ जावज्जीव त्रीजुं वळी रे, नामे अदत्तादान; चोथुं व्रत घणुं पाळतां रे, जगमां वाधे मान रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ नव विध परिग्रह छांडतां रे, पंचमी गति सुठाम; व्रत सुधां ए पाळतां रे, अणगारी कह्यो नाम रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ पांचे व्रत पाळे सदा रे, साधुना ए आचार; पडिक्कमणां बेहु टंकना रे, राखे धर्मशुं प्यार रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ एहवा व्रत पाळे सदा रे, ग्रंथतणे अनुसार; आराधक एहने कह्यो रे, ते पामे भव पार रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ मिथ्यात्वमां भूलो भम्यो रे, एह अनादिनो जीव; सार धर्म नवि ओळख्यो रे, जेहथी मोक्ष सदीव रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ आरंभ छांडी आतमारे, करो सुमति धरो नीति; आठे मद दूरे तजी रे, करो धर्म सुविनीत रे. ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ पाळा

जिननी आणने रे, जो चाहो शिवराज; श्री विजयरत्न सूरींद्रना रे, देवनां सर्यां सवि काज रे ॥ मा० ॥ ९ ॥

॥ अथ श्री पंचमीनी सज्झाय ॥

॥ ढाल १ ली ॥ आलम जोगीडा रे–ए देशी ॥

॥ श्री वासुपूज्य जिनेश्वर वयणथी रे, रुपकुंभ कंचनकुंभ मुनि दोय; रोहिणी मंदिर सुंदर आवीआ रे, नमी भव पूछे दंपती सोय ॥ चउनाणी वयणे दंपती मोहीआ रे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ राजा राणी निज सुत आठनो रे, तप फळ निज भाव धारी संबंध; विनय करी पूछे महाराजने रे, चार सुताना भव प्रबंध ॥ च० ॥ २ ॥ रुपवती शीळवती ने गुणवती रे, सरस्वती ज्ञान कळा भंडार; जन्मथी रोग शोक दीठो नथी रे, कुण पुण्ये लीधो एह अवतार ॥ च० ॥ ३ ॥

॥ ढाल २ जी ॥ वालाजी वागे छे वांसळी रे–ए देशी ॥

॥ गुरु कहे वैताढ्य गिरिवरु रे, पुत्री विद्याधरी चार ॥ निज आयु ज्ञानीने पूछीओ रे, करवा सफळ अवतार ॥ अवधारो अम विनति रे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ गुरु कहे ज्ञान उपयागथी रे, एक दिवसनुं आय; एवां वचन श्रवणे सुण्यां रे, मनमां वीमासण थाय ॥ अ० ॥ २ ॥ थोडामां कार्य धर्मनां रे, कोम करीए मुनिराज; गुरु कहे जोग असंख्य छे रे, ज्ञानपंचमी तुज काज ॥ अ० ॥ ३ ॥

क्षण आराधे सवि अघ टळे रे, शुभ परिणामे; साध्य; कल्याणक नव जिनतणां रे, पंचमी दिवसे आराध ॥ अ० ॥ ४ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ जइने कहेजो माहरा वाहालाजी रे—ए देशी ॥

॥ चैतर वदि पंचमी दिने, सुणो प्राणीजी रे; चवीआ चंद्रप्रभ स्वामी, लहे सुख ठाम, सुण प्राणीजी रे ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अजित संभव अनंतजी, सुणो प्राणीजी रे; पंचमी शुदि शिव धाम, शुभ परिणाम, सुणो० ॥ १ ॥ वैशाख शुदि पंचमी दिने, ॥ सु० ॥ संजम लीए कुंथुनाथ, बहु नर साथ ॥ सु० ॥ जेठ शुदि पंचमी वासरे ॥ सु० ॥ सुगति पाम्या धर्मनाथ, शिवपुरी साथ ॥ ॥ सु० ॥ २ ॥ श्रावण शुदि पंचमी दिने ॥ सु० ॥ जन्म्या नेमि सुरंग, अति उछरंग ॥ सु० ॥ मागशर वदि पंचमी दिने ॥ सु०॥ सुविधि जन्म शुभ संग, पुण्य अभंग ॥ सु० ॥ ३ ॥ कार्तिक वदि पंचमी तिथि ॥ सु० ॥ संभव केवळज्ञान, करो बहु मान ॥ सु० ॥ दश क्षेत्रे नेवुं जिना ॥ सु० ॥ पंचमी दिनना कल्याण, सुखना निधान ॥ सु० ॥ ४ ॥

॥ ढाळ ४ थी ॥

॥ हांरे मारे जोबनीयानो लटको दाहडा च्यार जो—ए देशी. ॥

हांरे मारे ज्ञानी गुरुना वयण सुणी हितकार जो; चार विद्याधरी पंचमी विधिशुं आदरे रे लोल ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ हांरे मारे शासन देवना पंच ज्ञान मनोहार जो; टाळी रे आशातना देव

वंदन सदा रे लोल ॥ २ ॥ हांरे मारे तप पूरणथी उजमणानो भाव जो; एहवे विधुत योगे सुर पदवी वर्या रे लोल ॥ ३ ॥ हांरे मारे धर्म मनोरथ आळस तजतां होय जो; धन्य ते आतम अव- लंबी कारज कर्यां रे लोल ॥ ४ ॥ हांरे मारे देवथकी तुम कुखे लीओ अवतार जो; सांभळ रोहिणी ज्ञान आराधन फळ घणां रे लोल ॥ ५ ॥ हांरे मारे चारे चतुरा विनय विवेक विचार जो; गुण केता आळखीए तुम पुत्रीतणा रे लोल ॥ ६ ॥

॥ ढाळ ५ मी ॥ आसणना रे जोगी—ए देशी ॥

ज्ञानीनां वयणथी चारे बेहनी, जातिसमरण पामी रे, ज्ञानी गुणवंता; त्रीजा भवमां धारण कीधी, सिध्यां मननां कामो रे, ज्ञानी गुणवंता ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ श्री जिन मंदिर पंच मनो- हर, पंच वर्ण जिन पडिमा रे ॥ ज्ञा० ॥ जिनवर आगमने अनु- सारे, करीए उजमणानो महिमा रे ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ पंचमी आरा- धनथी पंचम, केवळनाण ते थाय रे ॥ ज्ञा० ॥ श्री विजयलक्ष्मी सूरि अनुभव नाणे, संघ सकळ सुखदाय रे ॥ ज्ञा० ॥ ३ ॥

॥ अथ श्री अष्टमीनी सज्झाय ॥

॥ आबु अचल रलीआमणो रे लाल—ए देशी ॥

अष्ट कर्म चूरण करी रे लाल, आठ गुणे प्रसिद्ध मेरे प्यारे रे; क्षायिक समकितना धणी रे लाल, वंदु वंदु एवा सिद्ध मेरे० अष्ट०

॥ १ ॥ अनंत ज्ञान दर्शनधरा रे लाल, चोथुं वीर्य अनंत मेरे० ॥ अगुरुलघु सुखमय कह्या रे लाल, अव्याबाध महंत मेरे० अ० ॥२॥ जेहनी काया जेहवी रे लाल, उणी त्रीजे भाग मेरे०॥सिद्धिशिलाथी जोयणे रे लाल, अवगाहना वीतराग मेरे० अ० ॥ ३ ॥ सादि अनंता तिहां घणां रे लाल, समय समय तेह जाय मेरे० ॥ मंदिर मांही दीपालिकारे लाल, सघळा तेज समाय मेरे० अ० ॥ ४ ॥ मानवभवथी पामीए रे लाल, सिद्धतणा सुख संग मेरे० ॥एहनुं ध्यान सदा धरो रे लाल, एम बोले भगवती अंग मेरे० अ० ॥ ५ ॥ श्री विजय देव पटोधरु रे लाल, श्री विजयसेन सूरीश मेरे० सिद्ध-तणा गुण ए कह्या रे लाल, देव दीए आशीष मेरे० अ० ॥ ६ ॥

श्री सार्थप्रकाश सज्झाय ॥

॥ नमोरे नमो श्री शत्रुंजय गिरिवर-ए देशी ॥

॥ साधुजी संयम सूधो पाळो, व्रत दूषण सविटाळोरे ॥ दश-वैकालिक सूत्र संभाळो, मुनि मारग अजुवाळो रे ॥ साधुजी० ॥१॥ रोगांतिक परिसह संकट, परसंगे पण धार रे ॥ चारित्रथी चूको मति प्राणी, इम भांखे जिन सार रे ॥ साधु० ॥ २ ॥ भ्रष्टाचारी भूंडो कहावे, इहभव परभव हारी रे ॥ नरक निगोद तणां दुःख पामे, भमतो बहु संसारी रे ॥ साधु० ॥ ३ ॥ चित्त चोखे चा-रित्र आराधे, उपशम नीर अगाधे रे ॥ झीले सुंदर समता दरिये, ते सुख संपति साधे रे ॥ साधु० ॥ ४ ॥ कामधेनु चिंतामणि सरि-

खुं, चारित्र चितमें आणो रे ॥ इह परभव सुखदायक ए सम, अवर न कांइ जाणो रे ॥ साधु० ॥ ५ ॥ सिज्जंभव सूरीये रच्यां, दश अध्ययन रसाळां रे ॥ मनकपुत्र हेते ते भणतां, लहिये मंगळमाळा रे ॥ साधु० ॥ ६ ॥ श्री विजय प्रभ सूरिने राज्ये, बुद्ध लाभ विजयना शिष्य रे ॥ वृद्धिविजय विबुध आचार, ए गायो सकळ जगीश रे ॥ साधु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ श्री समकितनी सज्झाय ॥

॥ आप स्वभावमांरे अवधु सदा मगनमे रहेना–ए देशी ॥

॥ समकित नवि लहुंरे, एतो रुल्यो चतुर्गति मांहे ॥ ए आंकणी ॥ त्रस थावरकी करुणा कीनी, जीव न एक विराध्यो ॥ तीन काळ सामायिक करतां, शुद्ध उपयोग न साध्यो ॥ समकित० ॥ १ ॥ जूठ बोलवाको व्रत लीनो, चोरीको पण त्यागी ॥ व्यवहारादिक महानिपुण भयो, पण अंतर दृष्टि न जागी ॥ सम० ॥ २ ॥ ऊर्ध्व बाहु करी उंधो लटके, भस्म लगा धूम घटके ॥ जटा जूट शिर मुंडे जूठो, विण श्रद्धा भव भटके ॥ सम० ॥ ३ ॥ निज परनारी त्यागज करके, ब्रह्मचारी व्रत लीनो ॥ स्वर्गादिक याको फळ पामी, निज कारज नवि सिध्यो ॥ सम० ॥ ४ ॥ बाह्य क्रिया सब त्याग परिग्रह, द्रव्य लिंग धर लीनो ॥ देवचंद्र कहे या विध तो हम, बहुत वार कर लीनो ॥ सम० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री रोहिणीनी सज्झाय ॥

॥ भरत नृप भावशुं ए–ए देशी ॥

॥ श्री वासुपूज्य जिणंदनो ए, मघवा सुत मनोहार, जयो तप रोहिणी ए ॥ रोहिणी नामे तस सुता ए, श्रीदेवी मात मल्हार ॥ जयो तप० करे तस धन्य अवतार, जयो तप रोहिणी ए. ॥ १ ॥ पद्म प्रभुना वयणथी ए, दुर्गंधी राजकुमार, ज० रोहिणी तप क-रतां भवे ए, सुजस सुगंध विस्तार. ज० ॥ २ ॥ नरदेव सुरपद भोगवीए, ते थयो अशोक नरिंद, ज० रोहिणी राणी तेहनी ए, दोयने तप सुख कंद. ज० ॥ ३ ॥ दुरभिगंधा कामिनी ए, गुरु उपदेश सुणंत, ज० रोहिणी तप करी दुःख हरीए, रोहिणी भव सुखवंत. ज० ॥ ४ ॥ प्रथम पारणा दिन ऋषभनो ए, रोहिणी नक्षत्र वास, ज० द्विविधे करी तप उच्चरो ए, सात बरस सात मास. ज० ॥ ५ ॥ करो उजमणुं पूर्ण तपे ए, अशोक तरु तळे ठाय, ज० बिंब रयण वासुपूज्यनुं ए, अशोक रोहिणी समुदाय. ज० ॥ ६ ॥ एकसो एक मोदक भला ए, रुपा नाणुं समेत, ज० सात सत्तावीश कीजीए ए, वेश संघभक्ति हेत. ज० ॥ ७ ॥ आठ पुत्र चारे सुता ए, रोग सोग नवि दीठ, ज० प्रभु हाथे संजम लह्यो ए, दंपती केवल दीठ. ज० ॥ ८ ॥ कांति रोहिणीपति जीसी ए, रोहिणी सुत समरुप, ज० ए तप सुखसंपत्ति दीए ए, विजयलक्ष्मी सूरि भूप. ज० ॥ ९ ॥

——:०:——

॥ श्री वीश स्थानकनी सज्झाय ॥

॥ श्री सीमंधर साहिब आगे—ए देशी ॥

॥अरिहंत पहेले स्थाने गणीए, बीजे पद सिद्धाणं; त्रीजे प्रवचन आचाय चोथे, पांचमे पद थेराणं रे ॥ १ ॥ भवीआं वीश स्थानक तप कीजे, ओळी वीश करीजे रे, भ० गणणु एह गणीजे रे, भ० जिम जिन पद पामीजे रे, भ० नरभव लाहो लीजे रे, भ० ॥ए आंकणी॥ उपाध्याय छट्ठ सव्व साहूणं, सातमे आठमे नाण; नवमे दर्शन दशमे विणयस्स, चारित्र अग्यारमे जाण रे, भ० ॥२॥ बारमे ब्रह्मव्रत धारीणं, तेरमे कीरीयाणं; चौदमे तप पंदरमे गोयम, सोलसमे नमो जिणाणं रे. भ० ॥ ३ ॥ चारित्तस्स सत्तरमे जपीए, अढारसमे नाणस्स; ओगणीसमे नमो सुयस्स संभारो, वीशमे नमो तित्थस्स रे, भ० ॥ ४ ॥ एकासणादि तप देववंदन, गुणणुं दोय हजार; सत्यविजय बुध शिष्य सुदर्शन, जंपे एह विचार रे. भ० ॥५॥

॥ चरण सित्तरी करण सित्तरीनी सज्झाय ॥

॥पंच महाव्रत दश विध यति धर्म, सत्तर संजम भेद पाळे जी; वैयावृत्य दश नवविध ब्रह्मचर्य, वाड भली अजवाळे जी ॥ १ ॥ ज्ञानादिक त्रण बारे भेदे, तप करी जेह निदान जी; क्रोधादिक चारनो निग्रह, ए चरण सित्तरी मान जी. ॥ २ ॥ चउ विध पिंड वसति वस्त्र पात्र, निर्दूषण ए लेवे जी; समिति पांच वळी पडिमा बारे, भावना बारे सेवे जी. ॥ ३ ॥ पच्चीश पडिलेहणा पण इंद्रिय,

विषयविकारने वारो जी; त्रण गुप्ति वळी चार अभिग्रह, द्रव्यादिकथी संभाळो जी. ॥ ४ ॥ करण सित्तरी इणविध सेवे, गुण अनेक वळी धारे जी; संजमी साधु तेहने कहीए, बीजा सवि नाम धारी जी. ॥ ५ ॥ ए गुण विण प्रव्रज्या बोली, आजीविकाने तोले जीं; ते षट काय असंजमी जाणो, धर्मदास गणी बोले जी ॥ ॥ ६ ॥ ज्ञानविमळ गुरु आणा धरीने, संजम शुद्ध आराधेजी; जिम अनुपम शिव सुख साधे, जगमां सुजस ते वाधे जी. ॥ ७ ॥

॥ सुडताळीश दोष निवारक सज्झाय ॥

॥ सलुणानी देशी ॥

॥ दोष आहारना सांभळो रे, मुनि टाळे जेह नाम, सलुणा; आधाकर्मादिक कह्या रे, पृथक् पृथक् तेह जाण. स० ॥ १ ॥ आरंभ करी षट् कायनो रे, मुनि अर्थे निपजाय, स० आधाकर्मी ते कह्यो रे, मुनि त्रिविधे नहीं खाय. स० ॥ २ ॥ नाम लेइने जे कीओ रे, ते उद्देशक आहार, स० शुद्धाशुद्ध मिलायकेरे, पूति कर्म ते वार. स० ॥ ३ ॥ गृहीयति अर्थे नीपज्यो रे, मिश्र दोष ते जाण, स० साधु अर्थे स्थापीए रे, ठवणा दोष ते जाण. स० ॥ ॥ ४ ॥ आघा पाछा प्राहुणा रे, करतां प्राभृत होय, स० प्रकाश करी अंधारमां रे, प्रादुष्कृत ते जोय. स० ॥ ५ ॥ मूल्य लइ दीए साधुने रे, वळी उधारे आण, स० अदल बदल करी जे दीए रे, ते अकल्पित जाण. स० ॥ ६ ॥ सन्मुख आण्यो नवि लाए रे,

मुद्रिका भेदी देत, स० भेदी बाळने वर्जीए रे, निर्बळ ए वळी लेत. स० ॥ ७ ॥ बे स्वामानो आहार जे रे, एक निसंबे जेह, स० मुनि आगमन जाणके रे, हांडी पूरव तेह. स० ॥ ८ ॥ सोळे उद्गम दोष ए रे, गृही हाथे जे होय, स० उत्पादना सोळ वळी रे, वज्र ते मुनि सोय. स० ॥ ९ ॥ बाळकने रमाडके रे, दूति कर्म वळि हेत, स० ज्योतिष बवी प्रकाशीए रे, जाति जणावी न लेत. स० ॥ १० ॥ दीनपणे नवि लीजीए रे, वैदक नवि करंत, स० क्रोध मान माया करी रे, लोभ वळो तेम हरंत. स० ॥ ११ ॥ पूरव पच्छा संस्तवो रे, ज्ञान भणावी न लेत, स० मंत्र चूर्ण वळी वर्जवा रे, जोग मीलाइ पादलेप. स० ॥ १२ ॥ मूळ कर्म गर्भपातने रे, ए सोळे उत्पाद, स० शंका उपजे आहारमां रे, खरडत सूचित हाथ. स० ॥ १३ ॥ सचित्त वस्तु पर मूकीनेरे, वळी सचित्त ढांक, स० बीजे ठामे संहारके रे, अंध प्रमुख जे देए. स० ॥ १४ ॥ सचित्ताचित्त जे एकठो रे, ते आहार न लेय, स० शस्त्र नहीं जे परगम्यो रे, भूमि लिप्त तत्काळ. स० ॥ १५ ॥ नीचे नांखतो जे दीए रे, ते आहार न लेत, स० साधारण दश दोष ए रे, सर्व बताळीश चेत. स० ॥ १६ ॥ दोष वळी पांच जाणजो रे, मांडलिना जे होय, स० संजोग मीला कर खावतो रे, अप्रमाण वळी जोय. ॥ १७ ॥ श्लाघा निंदा करी खावतो रे, कारण विण आहार करंत, स० ए सुडताळीश दोष छे रे, जे शुद्ध पंथ मुनि चरंत. स० ॥ १८ ॥ संवत ओगणीश सप्त भलो रे, उपर तेरह वर्ष, स० फागण शुदि द्वितीया दिने रे, मुज मनमें बहु हर्ष. स० ॥ १९ ॥

कळश.

ए दोष सुडताळीश निरखत, टाळता जे मुनिवरा,
सुगुण संचत पाप वंचत, संघ शुद्ध पिंड जे करा;
व्रतराज मुनिवर पेख हरखीत, दधिखंडित निशाकरा,
ए दोष वर्जित सिद्ध गर्जित, संयमे वृद्धिकरा. ॥२०॥

॥ पंचमहाव्रतनी पचीश भावनानी सज्झाय ॥

॥ पहेला महाव्रतनी सज्झाय. ॥

॥ अरणीक मुनीवर चाल्या गौचरी–ए देशी ॥

॥ महाव्रत पहेलुं रे मुनिवर मन धरो, एम जंपे श्रीवीरोजी; त्रिविध त्रिविधशुं रे हिंसा परिहरो, तो पामो भवपारोजी. महा० ॥ १ ॥ भावना पांच छे तेहनी, जे कही पहेले अंगेजी; ते भावंतां रे मुनिवर जाणीए, चारित्र अधिके रंगेजी. महा० ॥ २ ॥ इर्यासमिति रे जोइने चालवुं, धुंसरा प्रमाणे तेहोजी; प्राणीनो वध मनशुं न चिंतवे, बीजी भावना एहोजी. म० ॥ ३ ॥ वचन सावद्य रे नवि बोले करे, जेहथी होय जीवघातोजी; त्रीजी भावना एणीपरे भावतां, जगमां होवे विख्यातोजी. म० ॥ ४ ॥ पुंजी लेतां रे पुंजी मूकतां, वस्त्र पात्र प्रमुखोजी; आदान निक्षेप ए चोथी कही, टाळे भवनां दुःखोजी. म० ॥ ५ ॥ अन्नपान अजवाळे वावरे, भाजन मोटे जोयजी; पंचमी भावना एणीपरे भावतां, शिवपंथगामी होयजी. म० ॥ ६ ॥ एह भावना जेहने मन वसी, महाव्रत स्था-

नक त्यांहोजी; श्रीगुरु खीमाविजय प्रसादथी, जस वाधे जगमांहोजी. म० ॥ ७ ॥

॥ बीजा महाव्रतनी सज्झाय. ॥

महाव्रत बीजुं आदरो मुनिरायारे, जंपे श्री वर्धमान भव दुःख जायरे; अलिक वचन नवि बोलवुं मु० छांडो मृषावाद, मन वच कायारे. ॥ १ ॥ भावना पंच छे तेहनी मु० जुओ हृदय मोझार जेम सुख थायरे; अणविचार्युं न बोलवुं मु० मृषा भाषा होय दुःख उपायरे. ॥ २ ॥ क्रोधे करीने बोलतां, मु० व्रतने लागे दोष पाप पोष थायरे; लोभे जूठुं बोलतां, मु० धर्मनो थाये हाण कीर्ति जायरे. ॥ ३ ॥ भय मनमां आणी करो, मु० जुठ न बोलो कोय दुर्गति जायरे; हांसी फरसी जाणीए, मु० टाळो तेहनो दोष व्रत न पलायरे. ॥ ४ ॥ एणी पेरे भावना भावतो, मु० पामे :भवनो पार वंदु पायारे; श्रीगुरु खीमाविजयतणो, मु० महिमां महिमा सार जग जस गायारे. ॥ ५ ॥

॥ त्रीजा महाव्रतनी सज्झाय ॥

॥महाव्रत त्रीजुं मुनितणुं रे हां, जंपे श्रीजिनराय, मुनिवर सांभळो; अदत्त वस्तु लेवी नही रे हां, जेथी विणसे काज. मु० ॥१॥ भावना पंच छे तेहनी रे हां, भावो मन धरी प्रेम, मु० पहेला अंगथी जाणोए रे हां, जेम होय व्रतने क्षेम. मु० ॥ २ ॥ निर्दोष वस्तु जाचवो रे हां, जिम न होय जिनअदत्त, मु० गुरुनी आज्ञाए वावरे रे हां, आहार पाणी एक चित्त. मु० ॥३॥ एहवा अभि-

ग्रहमां रहे रे हां, जाचे फरी वारंवार, मु० स्वामीअदत्त लागे नहीं रे हां, वाधे दिल उदार. मु० ॥ ४ ॥ साधर्मीकनो तिम वळी रे हां, अवग्रह मागे एह, मु०; अप्रीति कारण नवि होवे रे हां, अदत्त न लागे तेह. मु० ॥ ५ ॥ व्रततरुने सिंचवा रे हां, भावना छे जळ-धार, मु० समकित सुरतरु महमहे रे हां, शिवपद फळ मनोहार. मु० ॥ ६ ॥ एणी विधशुं आराधतां रे हां, होये कर्मनो नाश, मु० श्रीगुरु खीमाविजय सेवतां रे हां, जसनी पहोंचे आश. मु० ॥ ७ ॥

॥ चोथा महाव्रतनी सज्झाय ॥

॥ पूछे श्रेणिकराय—ए देशी ॥

॥महाव्रत चोथुं मन धरो, भाखे श्री वर्धमान रे, मुनिवर दिल धरो; नवविध विशुद्धे पाळतां, लहीए वंछित स्थान रे. मु० ॥१॥ भावना पंच छे तेहनीं, भावो एकाग्र चित्त रे, मु० पहेला अंगथकी कही, आणी मनमां हित रे. मु० ॥ २ ॥ स्त्रीकथा कहेवी नहीं, पहेली भावना एह रे, मु० मन विकार न उपजे, वाधे व्रत गुण-गेह रे. मु० ॥ ३ ॥ सराग दृष्टि जोवे नहीं, स्त्रीनां अंग उपांग रे, मु० बीजी भावना ए कही, करे व्रत शुद्ध जेम गंग रे. मु० ॥४॥ पूर्व क्रीडा कहेवी नहीं, जेथी विव्हळ चित्त रे, मु० त्रीजी भावना जाणवी, जिनशासननी रीत रे. मु० ॥ ५ ॥ अति मात्राए न वा-वरे, आहार पाणी जे सरस रे, मु० चोथी भावना भावतो, करे विषय गुण नीरस रे. मु० ॥ ६ ॥ स्त्री पशु पंडक रहित वळी, वसे वसति जोय रे, मु० पंचमी भावना भावतां, चारित्र निर्मळ होय

रे. मु० ॥ ७ ॥ क्षमा गुणे करी सोभतुं, श्रीगुरु क्षमाविजय नाम रे, मु० तास चरण नित्य सेवतां, लहीए जस बहु मान रे. मु० ॥८॥

॥ पांचमा महाव्रतनी सज्झाय ॥

॥ सीता रूपे रुयडी–ए देशी ॥

॥हवे महाव्रत पंचमुं कहीए, जेहथी भवपार लहीए हो, मुनिवर सोभागी; सांभळो कहे जिनवर वाणी, भावना पंच छे तस जाणी हो. मु० ॥ १ ॥ श्रोत्रेंद्रिय विषय न ग्रहवो, सुरभि दुरभि सम सेहेवो हो, मु० चक्षुइंद्रिय विषयमां न राचो, पुद्गळ देखी नवि माचो हो, मु० ॥२॥ रसना रस वश नवि आणो, जिन आणाए बोलवुं जाणो हो, मु० रसइंद्रिय दोष निवारो, चोथी भावनाए आतम तारो हो. मु० ॥ ३ ॥ स्पर्शेंद्रिय विष विषय निरोध, करे थाये निर्मळ बोध हो, मु० एम जाणी विषयने छंडो, पंचमी भावनामें दिल मंडो हो. मु० ॥ ४ ॥ एकेकी इंद्रिय वश पडीआ, मृग अलि मत्स्य पतंग गय नडीया हो, मु० जे पांचे वश नवि राखे, तेहने दुःख जिनवर भाखे हो. मु० ॥ ५ ॥ ए भावना एम दिल धरतो, दुष्कृत कर्मने क्षय करतो हो, मु० शुद्ध निर्मळ ज्ञान ते पावे, आतमने शिवपद ठावे हो. मु० ॥ ६ ॥ पंच महाव्रतनी पचवीश, भावना कही लवलेश हो, मु० श्री खीमाविजय गुरुराया, जसवाधे सेवतां पाया हो. मु० ॥ ७ ॥

॥ श्री बळभद्रनी सज्झाय ॥

शा माटे बंधव मुखथी न बोलो, नयणे आंसुडानी धार, मुरारि रे: पुण्य जोगे दहियो एक पाणी, जड्यो छे जंगल जोता, मुरारि रे. शा० ॥ १ ॥ त्रिकम रीस चडी छे तुजने, वनमांहे वनमाळी, मु० वडी वारथी मनावुं छुं वहाला तुने, वचन न बोल फरी वार. मु० शा० ॥ २ ॥ नगरी दाझीने शोध न लागी, मारी वाणी नीसुणी वहाला, मु० आ वेळामां लीधा अबोला, कानजी कां थया काला. मु० शा० ॥ ३ ॥ शी शी वातो कहुं शामळीआ, विठ्ठलजी आ वेळा; मु० शाने काजे मुजने संतापो, हरि हसी बोलोने हेळा. मु० शा० ॥ ४ ॥ प्राण अमारा जाशे पाणी विना, अवघडीने अणबोले, मु० आरती सघळी जाये अळगी, बांधव जो तुं बोले. मु० शा० ॥ ५ ॥ कुटुंब संहार थयो माता पिता देवलोके, वलवलता विस्मित वाट मु० संकट पड्युं सहाय नथी कोइनी, एकलडा निराधार. मु० शा० ॥ ६ ॥ त्रण खंड नमावीने वैर वसाव्युं, नथी उभा रहेवानुं ठेकाणुं, मु० पांडवने देशनिकालो कीधो, नथी कोइ बांहे ग्रहणहार. मु० शा० ॥ ७ ॥ जरकशीना जामा पहेरता, पीळा पीतांबर सोहे, मु० माथे मुगट शिर छत्र धरंता, चढता स्वारी श्रीकार. मु० शा० ॥ ८ ॥ रसवती रस भोजन करतां, मुखवासमन गमतां, मु० गलवट गादी सुंवाळी चादर, पोढतां सेज पलंग. मु० शा० ॥ ९ ॥ भरी कचेरीमां जइ धसमसता, कोडी परिजन सेवा सारे, मु० सोळ हजार राणी साथे सुख विलसता, रुक्मिणी मुख्य

पटराणी. मु० शा० ॥ १० ॥ एहवा संसारमां लीला करतां, दैव दाट शिर वाळी, मु० मातापिताने वियोगे विलखित, पूरव करम विपाक. मु० शा० ॥ ११ ॥ भूख तृषानी वेदना सहेतां, ए दुःखथी सहु दिलगीर, मु० एक हुंकारे हजारो उठतां, आज रह्यो एकाकार. मु० शा० ॥ १२ ॥ आकुळ व्याकुळ चित्त उचाटन, शूरवीरनी मत कुटी, मु० बळवंत बळभद्र हारण सांनिध्य, कांइ करो करुणाय. मु० शा० ॥ १३ ॥ जंगल वास वन अटवीमां भमतां, भ्रात शाणा चतुर थइ चूको, मु० मुज उपर शुं कोप करीने, एक वार दुःख मूको. मु० शा० ॥ १४ ॥ चारे तरफनी दिशाओ देवाणी, दुःखमां नथी रही खामी, मु० आगळ पथरा पाछळ छे कांटा, वेलुमां करी पथारी. मु० शा० ॥ १५ ॥ सांज वेळा जराकुमरे त्यां आवी, मृगनी भ्रांते बाण मार्युं, मु० कृष्ण कहे ए कोण मुज वेरी, विण अपराधे बाण मार्युं. मु० शा० ॥ १६ ॥ कहे जराकुमार हुं नहीं तुज वैरी, नेमनां वचन केम थाय खोटां, मु० कृष्ण कहे आ ल्यो कौस्तुभ मणि, जाओ पांडव चरणे धाइ. मु० शा० ॥ १७ ॥ धरतीनी धारणा आभना आधारे, पाणी विना विलविलता, मु० एम रुदन करतां बलभद्रजी, कृष्णने खंधे चढावी. मु० शा० ॥ १८ ॥ षट मास लगे पाळ्यो छबीलो, हैया उपर अति हेते, मु० सिंधुतटे सुरने संकेते, हरि दहन कर्म शुभ रीते. मु० शा० ॥ १९ ॥ संयम लइ गया देवलोके, कवि उदय रत्न एम बोले, मु० संसारमांहि बळदेव मुनिने, कोइ न आवे तोळे. मु० शा० ॥ २० ॥

॥ विनयनी सज्झाय ॥

॥ कपूर होवे अति उजलुंरे—ए देशी ॥

श्री जंबूमुनि विनव्यारे, श्री सोहम गणधार; भाखे उत्तराध्ययनमांरे, पहेलुं विनय विचाररे; प्राणी० विनय धरो गुण अंग. ॥ १ ॥ जेथी उपजे ज्ञान तरंगरे, प्राणी० तेथी दर्शन चरण प्रसंगरे, प्राणी० ते शिवसुखहेतु अभंगरे. प्राणी० विन० ॥ए आंकणी॥ गुरु आज्ञा नित्य धारवीरे, पाळवी गुरुनी शिख; निज छंदे नवि वर्तवुंरे, तो होये सफळी दीक्षरे. प्रा० ॥ २ ॥ शिष्य विनीतनी उपरेरे, गुरु मन होय सुप्रसन्न; आपे तेहने उजमेरे, आगम वचन रतनरे. प्रा० ॥ ३ ॥ गुरुद्रोही मत्सर भर्यारे, न करे गुरु बहुमान; ते अपमान लहे घणुंरे, जिम कोह्या काननो श्वानरे. प्रा० ॥ ४ ॥ शुकर जिम तजी शाळनेरे, अशुचि करे आहार; तिम अविनीतने वाल्होरे, अविनयनो आचाररे, प्रा० ॥ ५ ॥ गुरु अविनय कुलवालुओरे, पडीओ गणिकापास; भवमांहे भमशे घणुंरे, बांधा कर्मनी राशरे, प्रा० ॥ ६ ॥ गुरुवचने रुषे नहींरे, जाणे आपणो वांक; ते नवदीक्षितनी परेरे, साधे साध्य निःशंकरे. प्रा० ॥ ७ ॥ विनयथी गुण वधे घणांरे, जगमां लहे जसवाद; धर्मनुं मूळ विनय कह्योरे, सेवो तजी प्रमाद रे. प्रा० ॥ ८ ॥ विनयथी रीझे देवतारे, विनयथी दानव वश थाय; विनयथी इहभव परभवेरे, कार्य सिद्धि सवि थायरे. प्रा० ॥ ९ ॥ विनयने वश छे गुण सवेरे, ते मार्दवथी थाय; माटे विनीत सरलाशयीरे, पामे सुजश सवाइरे. प्रा० ॥ १० ॥ वाचक रामविजय

कहेरे, विनय करे ते धन्य; अध्ययने पहेले कह्यांरे, साचां वीरनां वचनरे. प्रा० ॥ ११ ॥

॥ श्री जीवदयानी सज्झाय ॥

॥ कपूर होय अति उजळोरे ॥ ए देशी ॥

गजभवें ससलो उगारीयो रे, करुणा आणी अपार ॥ श्रेणिकने घेर उपन्यो रे, अंगज मेघकुमार ॥ चतुरनर, जीवदया धर्मसार ॥ जेथी पामीये भवनो पार ॥ चतुरनर, जीव० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ वीर वांदी वाणी सुणीरे, लीधो संयम भार ॥ विजय विमाने उपन्यो रे, सिधशे महाविदेह मझार ॥चतु० जीव०॥ २ ॥ नेमि प्रभु गया परणवारे, सुणि पशुडांनो पोकार ॥ पशुडांनी करुणा उपनीरे, तज्या राजीमती नार ॥ च० जीव० ॥ ३ ॥ शरणे पारेवो उगारीयोरे, जुओने मेघरथ राय ॥ शांतिनाथ चक्री थयारे, दया तणे सुपसाय ॥ च० जीव० ॥ ४ ॥ मास खमणने पारणेरे, धर्मरुची अणगार ॥ कीडियोनी करुणा उपनीरे, कीधो कडवा तुंबानो आहार ॥ च० जीव० ॥ ५ ॥ सर्वार्थ सिद्धमां उपन्यारे, सिध्या विदेह मोझार ॥ धर्मघोषना शिष्य थया रे, रुडी दया तणा ए पसाय ॥ च० जीव० ॥ ६ ॥ अर्जुनमाळी जाणजो रे, लीधो संयम भार ॥ कर्म छ मासे क्षय करी रे, पहोत्या मुगति मझार ॥ च० जीव० ॥ ७ ॥ देवकी नंदन सोहामणा रे, नामे ते गजसुकुमाळ ॥ धग धगती सघडी सही रे, आणी दया रे अपार ॥

च० जीव० ॥ ८ ॥ ए धर्म छे सुरतरु समो रे, जेहनी शीतळ छांय ॥ सेवकजन नित सेवजो रे, एह छे मुगतिनो दाय ॥ च० जीव० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ श्री वैरागी सज्झाय ॥

॥ शियालामां शित घणी रे धन्ना, उनाळे लुजाळ—ए देशी ॥

ए संसार असार छे रे जीवडा, बूझे विरलो कोय ॥ ए संसार तजी गयारे जीवडा, ते नर सुखीया होय ॥ चतुर नर, चेतो रे चित्तमांहि ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ डाभ अणी जळ बिंदुओ रे जीवडा, जेहवो संध्यानो वान ॥ इणिपरे चंचळ आउखुं रे जी०, जागी शके तो जाग ॥ चतुर० ॥ २ ॥ धन धन रामा कांइ करे रे जी०, कारमो एह संसार ॥ सोवनमय नव डुंगरी रे जी०, नंदे तजी निरधार ॥ चतुर० ॥ ३ ॥ माता मयंगळनी परे रे जी०, मन्मथ थयो रे अपार ॥ नरक निगोदमां जायशोरे जी०, तेहवो जाणी संसार ॥ चतु० ॥ ४ ॥ जोवन वय वही जायशे रे जी०, घडपण पणानी वार ॥ खूणे घाल्यो खाटलो रे जी०, कोइ न पूछे सार ॥ चतु० ॥ ५ ॥ अंग गळ्युं ने माथु फरतुं रे जी०, जाजरी हुए देह ॥ सगा सणीजां इम कहे रे जी०, डांसो करावे वेठ ॥ चतु० ॥ ६ ॥ मगधदेशनो राजीयो रे जी०, श्रेणिक नामे नरेश ॥ काष्टपिंजरे कोणिक करी रे जी०, सात वैरी सुवेस ॥ चतु० ॥ ७ ॥ आदीसर अंगज उपन्या रे जी०, भरत बाहुबळ भाइ ॥ मांहोमांहे झूझिया रे जी०, ए संसारनी सगाइ ॥ चतु० ॥ ८ ॥

परमेश्वर नित पूजीए रे जी०, नित्य जपीए नवकार ॥ सुगुरु शीखामण मन धरो रे जी०, जिम पामो भवपार ॥ चतु० ॥ ९ ॥ अरिहंत निशदिन ध्याइए रे जी०, पूगे मनना कोड ॥ पंडित शियळ विजय तणो रे जी०, शिष्य कहे करजोड ॥ चतु० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ श्री दश श्रावकनी सज्झाय ॥

॥ साहीबा वासुपूज्य जिणंदा मोहना वासुपूज्य ॥ ए देशी ॥

सयळ उपासकमां शिरदारा, सूत्र उपासक मध्य विचारा ॥ नाम स्तवत मुज लागत प्यारा, तिणे थुणशुं दश समकित धारा ॥ साहिबा दश श्रावक एहा, मोहना गुण गेहा ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ गाथापति आणंद विचारी, चउ गोकुळ शिवानंदा नारी ॥ द्वादश कोडी हिरण्य धनवंता, अवधिनाण कहे भगवंता ॥ साहिबा० ॥२॥ कामदेव शुभभद्रा नार, षट गोकुळ धन कोढी अढार ॥ गोकुळ आठ सुशामा जोडी, चुलणि पिया धन चोवीश कोडी ॥ सा० ॥ ३ ॥ सूरादेव वनिता जस धन्ना, चुल्लशतक बहुला एक मन्ना ॥ कुंडकोळिक पुंसा सम धर्मे, ए त्रण्य श्रावकने अनुक्रमे ॥ सा० ॥ ४ ॥ कोडी अढार हिरण्य जस हर्मे, षट गोकुळ अनुकुळ जिनधर्मे ॥ सकडाळ पुत्र कह्या कुंभकार, एक गोकुळ तीनकोडी दीनार ॥ अग्निमित्रा छे घर नार ॥ सा० ॥ ५ ॥ महाशतक अड गोकुळ घेर, रेवति आदे कही वधु तेर ॥ चोवीश कोडी हिरण्य परिमाण, अंते पाम्या

अवधिनाण ॥ स्व० ॥ ६ ॥ अश्विनी नारीने नंदणी पिया, फल्गुणी वल्लभ सालणी पिया ॥ ए दोइ श्रावकने घर बार, बारकोडी धन गोकुळ चार ॥ सा० ॥ ७ ॥ धेनु दश हजारज जाण, एक गोकुळनुं ए परिमाण ॥ दंसण वय आदि अगीयार, पडिमा श्रावकनी वही सार ॥ सा० ॥ ८ ॥ वीश वरस श्रावक घर जाय, दश श्रावक सोहम सुर थाय ॥ जंबू सुणे इम सोहम वाणी, दे शुभ वीरविजय शिवराणी ॥ सा० ॥ ९ ॥ इति ॥

म्होटी होंश न करवानी सज्झाय ॥

॥ मेंकीनो नही वो बीन ओरशुं राग ॥ ए देशी ॥

होंशीडा भाइ, होंश न कीजे म्होटी, वावी छे बंटी बाजरी तो, शालि केम लहिये म्होटी रे ॥ होंशीडा० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जेणे दीधुं तेणे लीधुं, जे देशे ते लेशे ॥ जेणे नवि दीधुं तेणे नवि लीधुं, दीधा विना केम लेशे रे ॥ होंशी० ॥ २ ॥ वाव्या विना केम कर्षण लहिये, सेव्या विना केम ठरिये ॥ पुण्य विना मनोरथ म्होटा, दीधा विण केम करिये रे ॥ होंशी० ॥ ३ ॥ शीसांनी अकोटी आपी, आपी तरुआनी त्रोटी ॥ ते सोनार कने केम मागीश, सोनानी करी म्होटी रे ॥ होंश० ॥ ४ ॥ शालिभद्र धन्नो कयवन्नो, मूळदेव धनसार ॥ पुन्य विशेषे प्रत्यक्ष पाम्या, अलवेशर अवतार रे ॥ होंशी० ॥ ५ ॥ एवुं जाणी रुडु पामी, करजो धर्म सखाइ ॥ साधु हर्ष करजोडी विनवे, दीधुं लेशे भाइ रे ॥ होंशी० ॥६॥ इति॥

॥ अथ श्री अढार नातरांनी सज्झाय ॥

॥ ढाळ १ ली ॥ मारु मन मोह्युं रे श्री सिद्धाचळेरे ॥ ए देशी ॥

॥ पेहेलांने समरुं पास पंचासरो रे, समरी सरसती माय ॥ निज गुरु केरां रे चरण नमी करी रे, रचशुं रंगे सझाय ॥ १ ॥ भवि तुमे जोजो रे संसार नातरां रे ॥ ए आंकणी ॥ एक भवे हुआं अढार ॥ एहवुं जाणीने दूरे निवारजो रे, जिम पामो सुख अपार ॥ भ० ॥ २ ॥ नगरमां मोटुं रे मथुरा जाणिये रे, तिहां वसे गणिका एक ॥ कुबेरसेना रे नाम छे तेहनुं रे, विलसे सुख अनेक ॥ भ० ॥ ३ ॥ एकदिन रमतां प्रश्युं प्रेममां रे, उदरे रह्युं ओधान ॥ पूरणमासे प्रसव्युं जोडलुं रे, एक बेटो बेटी सुजाण ॥ भ० ॥ ४ ॥ वेश्या विमासे आपणने घरे रे, कुण जाळवशे ए बाळ ॥ क्षण क्षण जोवां धोवां ने धवराववां रे, कुण करे सार संभाळ ॥ भ० ॥ ५ ॥ एहवुं विमासी रे पेटीमां लइ रे, घाल्यां बाळक दोय ॥ मांहे ते मेली नामांकित मुद्रिका रे, नदीमां चलावे सोय ॥ भ० ॥ ६ ॥ जमुनामां वहेती रे आवी सौरीपुरे रे, वाणुं ते वाह्युं ते वार ॥ तव तिहां आव्या रे दोय व्यवहारीया रे, नदी कांठे हर्ष अपार ॥ भ० ॥ ७ ॥ दूरथी दीठी रे पेटी आवती रे, हैडे विमासे दोय ॥ एहमां जे होशे रे ते आपण बिहु रे, वहेंची लेशुं सोय ॥ भ० ॥ ८ ॥ बोलबंध कीधा दोय व्यवहारीये रे, काढी पेटी ते वार ॥ पेटी उघाडी रे छानी सोडमां रे, लेइ आव्या नगर मझार ॥ भ० ॥ ९ ॥ पेटी उघाडी रे निहाळतां रे, दीठां बाळक दोय ॥ मनमां विचारे रे

दोय व्यवहारीया रे, शुं जाणे पुर कोय ॥ भ० ॥ १० ॥ जेने सुत नहिं हतो तेणे बेटो लीयो रे, बीजे बेटी हो लीध॥मुद्रिकामेले रे नाम कुबेरदत्त दियो रे, कुबेरदत्ता वळी दीध ॥ भ० ॥ ११ ॥ अनुक्रमे वाध्यां रे दोय भण्यां गुण्यां रे, पाम्यां जोवन सार ॥ माता तात जोईने परणावियां रे, विलसे सुख अपार ॥ भ०॥ १२ ॥

॥ ढाळ २ जी ॥ आबु अचळ रळीयामणो रे लाल–ए देशी ॥

एकदिन बेठा माळीये रे लाल, नरनारी मळी रंग रे॥ रंगीला कंत ॥ आवोने पियुडा आपण खेलिये रे लाल ॥ करुं छुं घणी मनोहार रे ॥ रं० ॥ आ० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ हास्य विनोद करे घणां रे लाल, माने निज धन्य अवदात रे ॥ रं० ॥ सार पासे रमीये सोगठे रे लाल, आणी मनमां उमंग रे ॥ रं० ॥ आ० ॥२॥ रमत रमे खुशीमां घणां रे लाल, दाव नांखे भरतार रे ॥ रं० ॥ दीठी नामांकित मुद्रिका रे लाल, हियडे विमासे नार रे ॥ रं० ॥ आ० ॥ ३ ॥ बेहु रुपे बेहु सारिखां रे लाल, सरखां वींटीमां नाम रे ॥ रं० ॥ नारी विचारे चित्तमां रे लाल, में ए कीधो अकाम रे ॥ रं० ॥ आ० ॥ ४ ॥ रमत मेली पीयरमां गइ रे लाल, पूछे माताने वात रे ॥ रं०॥मात कहे हुं जाणुं नहीं रे लाल, जाणे ताहरो तात रे ॥ रं० ॥ आ० ॥ ५ ॥ तात कहे सुणजो सुता रे लाल, संक्षेप सघळी वात रे ॥ रं० ॥ पेटीमांहेथी वहेंचीयां रे लाल, बाळक दोय विख्यात रे ॥ रं० ॥ आ० ॥ ६ ॥ कुबेरदत्ता मन चिंतवे रे लाल, में कीधो अपराध रे॥ रं० ॥ भाइ वर्यो ने भाइ भोगव्यो रे

लाल, ए सवि कर्मनी वात रे ॥ रं० ॥ आ० ॥ ७ ॥ एम चिंतवीने संयम लीयो रे लाल, पाळे पंचाचार रे ॥ रं० ॥ समिति गुप्तिनो खप करे रे लाल, छकाय रक्षा सार रे ॥ रं० ॥ आ० ॥ ८ ॥ कुबेरदत्त मन चिंतवे रे लाल, ए नगर मांहे न रहेवाय रे ॥ रं० ॥ बेन वरीने बेन भोगवी रे लाल, घर घर ए कहेवाय रे ॥ रं० ॥ आ० ॥ ९ ॥ कुबेरदत्त तिहांथी चालियो रे लाल, आव्यो मथुरा मांय रे ॥ रं० ॥ वेश्या मंदीरमां आवीयो रे लाल, करे वेश्याशुं अन्याय रे ॥ रं० ॥ आ० ॥ १० ॥ कुबेरदत्त नीज मातशुं रे लाल, सुख विलसे दिन रात रे ॥ रं० ॥ एम करतां सुत जनमीयो रे लाल, ए सवि कर्मनी वात रे ॥ रं० ॥ आ० ॥ ११ ॥ तप जप संयम साधतां रे लाल, पाळतां किरिया सार रे ॥ रं० ॥ ज्ञान अवधि तिहां उपन्युं रे लाल, दिये तिहां ज्ञानविचार रे ॥ रं० ॥ आ० ॥ १२ ॥ अवधिज्ञाने साधवी रे लाल, दीठो मथुरा मझार रे ॥ रं० ॥ निज जननी सुख विलसतो रे लाल, धिक धिक तस अवतार रे ॥ रं० ॥ आ० ॥ १३ ॥ गुरुणीने पूछी करी रे लाल, आवी मथुरां जाम रे ॥ रं० ॥ वेश्यामंदिर जइ उतरी रे लाल, करवा धर्मनुं काम रे ॥ रं० ॥ आ० ॥ १४ ॥

॥ ढाळ ३ जी ॥ साहेब सीव वसीया—ए देशी ॥

॥ इण अवसर नानो बाळुडो रे कांइ, पाळणे पोढयो जेह ॥ गाउं हालरुआं ॥ हालो हालो कही हुलरावती रे, कांइ साधवी चतुर सुजाण ॥ गा० ॥ १ ॥ सगपण छे ताहरे माहरेरे, कांइ सांभळ

साची वात ।। सुण तुं बालुडा ।। काको भत्रीजो पीतरो रे, कांइ दीकरो देवर जेठ ।। सु० ।।२।। सगपण छे ताहरे माहरेरे, कांइ खट बीजां कहुं तेह ।। सु० ।। बंधव पिता वडत्रोरे कांइ, ससरो सुत भरतार ।। सु० ।। ३ ।। सगपण छे ताहरे माहरेरे, कांइ खट त्रीजां कहुं तेह ।। सुण तुं माताजी ।। माता कहुं सासू कहुं रे कांइ, वळी कहुं शोकय भोजाइ ।। सु० ।। ४ ।। वडीआइ वळी मुज सगपण बहु रे कांइ, तुज मुज सगपण एह ।। सु० ।। एह संबंध सवि सांभळी रे कांइ, घरमांथी आव्यां दोय ।। सुण तुं श्रमणी जी ।। ५ ।। अछतां आळ न दीजीए रे कांइ, तुम मारग नहिं एह ।। सु० ।। श्रमणी कहे सुणो दोय जणां रे कांइ, खोटुं नहिंय लगार ।। सु० ।। ६ ।। पेटीमां घाली मूंकियां रे कांइ, जमुनाये वहेती जोय ।। तुम सांभळजो ।। सौरीपुरी नगर तिहां वळी रे कांइ, पेटी काढी सोय ।।तुमे० ।। ७ ।। इम निसुणी ते दोय जणे रे कांइ, संयम लीधो तेणि वार ।।तुमे० ।। संयम लेइ तप आदरी रे कांइ, देवलोके पहोतां तेणि वार रे ।। मन रंगीला ।। ८ ।। तपथी सवि सुख संपजे रे कांइ, तपथी पामे ज्ञान रे ।। म० ।। तपथी केवळ उपजे रे कांइ, तप महोटुं वरदान रे ।। म० ।। ९ ।। तपगछपति गुण गावतां रे कांइ, ऋद्धि वृद्धि घर थाय ।।म०।। पंडित दानविजय तणो रे कांइ, हेतविजय गुण गाय ।। म० ।। १० ।।

।। इति अढारनात्रानी सज्झाय संपूर्ण ।।

——:०:——

॥ अथ श्री चंदन बालानुं त्रीढालियुं ॥

॥ढाल १ ली॥ अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी ॥ ए देशी ॥

श्री सरसतिनारे पाय प्रणमी करी, शुणशुं चंदनबाळा जी ॥ जेणे वीरनो रे अभिग्रह पूरियो, लाधी मंगळ माळा जी ॥ दान उलट धरी भवियण दीजिये ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जेम लहिये जग मानो जी ॥ स्वर्गतणां सुख सहेजे पामीये, नासे दुर्गति थानो जी॥ दान० ॥ २ ॥ नयरी कोसंबी रे राज्य करे तिहां, नामे संचानिक जाणुं जी ॥ मृगावती राणी रे सहियर तेहनी, नंदी नाम बखाणुं जी ॥ दान० ॥ ३ ॥ शेठ धनावो रे तिण नगरी वसे, धनवंतमां सिरदारो जी ॥ मूळा नामे रे गृहिणी जाणिये, रुपे रति अवतारो जी ॥ दान० ॥ ४ ॥ एणे अवसर श्री वीर जिणेसरु, करता उग्र विहारो जी ॥ पोस वद पडवे रे अभिग्रह मन धरि, आव्या तिण पुर सारो जी ॥ दान० ॥ ५ ॥ राजसुता होय मस्तक क्षुर करी, कीधा त्रण्य उपवासो जी ॥ पगमां बेडी रे रोती दुःख भरे, रहेती पर घर वासो जी ॥ दान० ॥ ६ ॥ खरे रे बपोरे रे बेठी ऊमरे, एक पग बाहिर एक मांहि जी ॥ सुपडाने खूणे रे अडदना बाकळा, मुजने आपे उच्छाहे जी ॥ दान० ॥ ७ ॥ एहवुं धारी रे मन मांहे प्रभु, फरता आहारने काजे जी ॥ एक दिन आव्या रे नंदीना घरे, इर्यासमिति बिराजे जी ॥ दान० ॥ ८ ॥ तव सा देवी रे मन हर्षित थइ, मोदक लेइ सारो जी ॥ वोहरावे पण प्रभुजी नवि लिये, फिरी गया तेणीवारो जी ॥ दान० ॥ ९ ॥ नंदी जइने रे सहियरने कहे, वीर जिनेसर आव्या जी ॥ भिक्षा काजे रे पण

लेवा नथी, मनमां अभिग्रह लाव्या जी ॥ दान० ॥ १० ॥ तेहनां वयण सुणी निज नयरमां, घणा रे ऊपाय करावे जी ॥ एक नारी तिहां मोदक लेइ करी, एक जणि मीतज गावे जी ॥ दान० ॥ ११ ॥ एक नारी शृंगार सोहामणा, एक जणी बाळक लेइ जी ॥ एक जणी मूके रे वेणज मोकळी, नाटक एक करेइ जी ॥ दान० ॥ १२ ॥ एणिपरे रामा रे रमणा रंग भरी, आणी हरख अपारो जी ॥ वोहरावे बहु भाव भक्ति करी, तो हि न लीये आहारो जी ॥ दान० ॥ १३ ॥ धन्य धन्य प्रभुजी वीर जिनेसरू, तुम गुणनो नहीं पारो जी ॥ दुक्कर परिसह चित्तमां आदर्यो, एह अभिग्रह सारो जी ॥ दान० ॥ १४ ॥ एणीपरे फिरतां रे मास पंचज थया, ऊपर दिन पचवीशो जी ॥ अभिग्रह सरखो रे जोग मळे नहीं, विचरे श्री जगदीशो जी ॥ दा० ॥ १५ ॥

॥ ढाल २ जी. नमो नमो मनक महामुनि–ए देशी ॥

तेणे अवसर तिहां जाणिये, राय संतानिक आव्यो रे ॥ चंपा नगरीनी ऊपरे, सेना चतुरंग दळ लाव्यो रे ॥ तेणे अवसर तिहां जाणिये ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ दधिवाहन निबळो थयो, सेना सघळी नाठी रे ॥ धारणी धूआ वसुमती, बांद पडया थइ माठी रे ॥ तेणे० ॥ २ ॥ मारगमां जातां थकां, सुभटने पूछे राणी रे ॥ शुं करशो अमने तमे, करशुं घरणी गुणखाणी रे ॥ तेणे० ॥ ३ ॥ तेह वचन श्रवणे सुणी, सतीय शिरोमणि ताम रे ॥ ततक्षण प्राण तज्या सही, जोजो कर्मनां काम रे ॥ तेणे० ॥ ४ ॥ वसुमती कुमरी

लेइ करी, आव्यो निज घर मांही रे ॥ कोप करी घरणी तिहां, देखी कुमरी उत्साही रे ॥ तेणे० ॥ ५ ॥ प्रातःसमय गयो वेचवा, कुमरीने निरधारो रे ॥ वेश्या पूछे मूल तेहनो, कहे शत पंच दिनारो रे ॥ तेणे० ॥ ६ ॥ एहवे तिहां कणे आवियो, शेठ धनावो नाम रे ॥ ते कहे कुमरी लेशुं अमे, खासा आपीश दाम रे ॥ तेणे० ॥ ७ ॥ शेठ वेश्या झगडे तिहां, मांहो मांहे विवादो रे ॥ चकेसरी सान्निध्य करी, वेश्या ऊतारयो नादो रे ॥ तेणे० ॥ ८ ॥ वेश्याथी मूकावीने, शेठ तेडी घेर आवे रे ॥ मनमां अति हर्षित थको, पुत्री कहीने बोलावे रे ॥ तेणे० ॥ ९ ॥ कुमरी रुपे रुयडी, शेठतणुं मन मोहे रे ॥ अभिनव जाणे सरस्वती, कळा चोसठ सोहे रे ॥ तेणे० ॥ १० ॥ कामकाज घरनां करे, बोले अमृत वाणी रे ॥ चंदनबाळा तेहनुं, नाम दीधुं गुण जाणी रे ॥ तेणे० ॥ ११ ॥ चंदनवाळा एक दिने, शेठतणा पग धावे रे ॥ वेणी ऊपाडी शेठ जी, मूळा बेठी जोवे रे ॥ तेणे० ॥ १२ ॥ ते देखीने चिंतवे, मूळा मन संदेह रे ॥ शेठजी रुपे मोहिया, करशे घरणी एह रे ॥ तेणे० ॥ १३ ॥ मनमां क्रोध करी घणो, नावीने तेडावा रे ॥ मस्तक भद्र करावीयुं, पगमां बेडी जडावी रे ॥ तेणे० ॥ १४ ॥ ओरडा मांहि घालीने, तालुं देइने जावे रे ॥ मूळा मन हर्षित थइ, बीजे दिने शेठ आवे रे ॥ तेणे० ॥ १५ ॥ शेठ पूछे कुमरी किहां, घरणीने तिण काळे रे ॥ ते कहे हुं जाणुं नहीं, एम ते उत्तर आले रे ॥ तेणे० ॥ १६ ॥ एम करतां दिन त्रण्य थया, तो ही न जाणे वात रे ॥ पाडोशण एक डोकरी, सघळी कही तेणे वात रे ॥ तेणे० ॥ १७ ॥ काढी बार उघाडीने,

ऊमरा विचे बेसारी रे ॥ आप्या अडदना बाकळा, सूपडा मांहे तिण वारी रे ॥ तेणे० ॥ १८ ॥ शेठ लुहार तेडण गयो, कुमरी भावना भावे रे ॥ इण अवसर वोहोराविये, जो कोइ साधुजी आवे रे ॥ तेणे० ॥ १९ ॥

॥ ढाल ३ जी. ॥ बेडले भार घणो छे राज,
वातां केम करो छो.—ए देशी. ॥

एणे अवसर श्री वीर जिनेसर, जंगम सुरतरु आया ॥ अतिभावे ते चंदनबाळा, वांदे जिन सुखदाया ॥ आघा आम पधारो पूज्य, अम घर वोहोरण वेळा ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ आज अकाळे आंबो मोरयो, मेह अमीरस वूठया ॥ कर्मतणा भय सर्वे नाठा, अमने जिनवर तूठ्यां ॥ आघा आम पधारो वीर, मुजने पावन कीजे ॥ २ ॥ एम कहीने अडदना बाकुळा, जिनजीने वोहोरावे ॥ योग्य जाणीने प्रभुजी वोहोरे, अभिग्रह पूरण थावे ॥ आघा० ॥ ३ ॥ बेडी टळीने झांझर हुआं, मस्तक वेणी रुडी ॥ देव करे तिहां वृष्टि सोवननी, साडीबारह कोडी ॥ आघा० ॥ ४ ॥ वात नगरमां सघळे व्यापी, धन लेवा नृप आवे ॥ मूळाने पण खबर थइ छे, ते पण तिहां कणे जावे ॥ आघा० ॥ ५ ॥ शासनदेवी सान्निध्य करवा, बोले अमृत वाणी ॥ चंदनबाळानुं छे ए धन, सांभळ गुणमणि खाणी ॥ आघा० ॥ ६ ॥ चंदनबाळा संयम लेशे, तव ए धन खरचाशे ॥ राजाने एणी परे समजावे, मनमां धरी उल्लासे ॥ आघा० ॥ ७ ॥ शेठ धनावो कुमरी तेडी, धन लेइ घर आवे ॥ सुखे समाधे तिहां कणे रहेवां, मनमां हर्ष न मावे ॥ आघा० ॥ ८ ॥ हवे तेणे-

काळे वीर जिणंदजी, हूआ केवळनाणी ॥ चंदनबाळा वात सुणीनें, हैडामां हर्षाणी ॥ आघा० ॥ ९ ॥ वीर कने जइ दीक्षा लीधी, ततक्षण कर्म खपाव्यां ॥ चंदनबाळा गुणह विशाळा, शिवमंदिर सिधाव्यां ॥ आघा० ॥ १० ॥ एहवुं जाणी रुडा प्राणी, करजो शियळ जतन्न ॥ शियळ थकी शिवसंपद लहीए, शियळे रूप रतन्न ॥ आघा० ॥ ११ ॥ नयन वसु संजमने भेदे, संवत (१७२८) सुरत मझारे ॥ वदि आषाढ तणी छठ्ठ दिवसे, गुण गाया रविवारे ॥ आघा० ॥ १२ ॥ श्री विद्यासागरसूरि शिरोमणि, अचळगच्छ सोहाया ॥ महियळ महिमा अधिक बिराजे, दिन दिन तेज सवाया ॥ आघा० ॥ १३ ॥ वाचक सहजसुंदरनो सेवक, हरख धरी चित्त आणी ॥ शील भलीपरे पाळो भवियण, कहे नित्यलाभ ए वाणी ॥ आघा० ॥ १४ ॥ इति. ॥

अथ श्री झांझरियामुनिनुं चोढालियुं.

॥ ढाल १ ली. ॥ सुण बहेनी पियुडो परदेशी॥ ए देशी. ॥

॥ सरसती चरणे शीश नमावी, प्रणमी सदगुरु पाया रे ॥ झांझरिया ऋषिना गुण गातां, उलट अंग सवाया रे ॥ भवि जन वंदो मुनि झांझरीयो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ संसार समुद्र जे तरीया रे ॥ शीयळ सन्नाह पहेरी मन शुद्धे, निर्मळ रयणे करी भरियो रे ॥ भ० ॥ २ ॥ पइठाणपुरे मकरध्वज राजा, मदनसेना तस राणी रे ॥ तस सुत मदनब्रह्म बाळुडो, कीर्त्ति ज स कहेवाणी रे ॥भ०॥३॥

३ ॥ बत्रीश नारी सुकोमळ परण्यो, भरजोबन रस लीनो रे ॥ इंद्र महोत्सवे उद्याने पहोत्यो, मुनि देखी मन भीनो रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ चरणकमळ प्रणमी साधुना, विनय करीने बेठो रे ॥ देशना धर्मनी दे साधुजी, वैरागे मन पेठो रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ मात पितानी अनुमति मागी, संसार सुख सवि छंडी रे ॥ संयम मारग सुधो लीधो, मिथ्यामति सवि छंडी रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ एकलडो वसुधा तळ विचरे, तप तेजे करी जीपे रे ॥ जोवन वय जोगीसर बळियो, कर्म कटकने जीपे रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ शीयळ सन्नाह पहेरी जेणे सबळी, सुमति गुपति चित्त धरतो रे ॥ आप तरे ने परने तारे, दरिसणे दुर्गति हरतो रे ॥ भ० ॥ ८ ॥ त्रंबावती नगरी मुनि पहोत्यो, उग्र-विहार करंतो रे ॥ मध्याने गोचरी संचरतो, नगरीमां मुनि भमतो रे ॥ भ० ॥ ९ ॥

॥ ढाल २ जी. ॥

(आघा आम पधारो पूज्य, अम घर वोहरण वेळा. ए देशी.)

॥ एणे अवसर तरुणी तातरणी, गोरडी गोखे बेठी ॥ निज पति चाल्यो छे परदेशे, विषय समुद्रमां पेठी ॥ विरुइ मदन चढाइ राज, जेणे तेणे जीती न जावे ॥ १ ॥ ए आंकणी. ॥ शोळ शृंगार सजीसा सुंदरी, भरजोवन मदमाती ॥ चपळ नयन चिहुं दिशि फेरवती, विषयारस रंग राती ॥ वि० ॥ २ ॥ चाचरे चोवटे चिहुं दिशि जोतां, आवंतो ऋषि दीठो ॥ मलपंतो ने मोहनगारो, मनशुं लाग्यो मीठो ॥ वि० ॥ ३ ॥ राजकुमर कोइक छे रुडो, रुपे अनोपम दीशे ॥ जोवन वय मलपंतो जोगीसर, ते देखी चित्त हीसे ॥

वि० ॥ ४ ॥ तव दासी खासी तेडावी, लावो एहने बोलावी ॥ शेठाणीनां वयण सुणीने, दासी तेडण आवी ॥ वि० ॥ ५ ॥ एणे घरे आवोने साधु जी, वोहरण काजे वेळा ॥ भोळे भावे मुनिवर आवे, शुं जाणे मन मेला ॥ वि० ॥ ६ ॥ थाळ भरी मोदक मीठाइ, मुनिवरने कहे वोहरो ॥ मेलां कपडां ऊतारीने, आछा वाघा पहेरो ॥ वि० ॥ ७ ॥ आ मंदिर माळियां म्होटां, सुंदर सेज बिछाइ ॥ चतुर नारी मुज साथे मुनिवर, सुख विलसो लय लाइ ॥ वि० ॥ ८ ॥ विरह अग्नियें करी हुं दाझी, परम सुधारस सींचो ॥ म्हारां वयण सुणिने मुनिवर, वात आघी मत खींचो ॥ वि० ॥ ९ ॥ विषय वयण सुणी वनितानां, समता रसमां बोले ॥ चंदनथी पण शीतळ वाणी, मुनि अंतरथी खोले ॥ वि० ॥ १० ॥ तुं बाळक दीसे छे भोळी, बोलंतां नवि लाजे ॥ उत्तम कुळमां जेह ऊपन्या, तेहने ए नवि छाजे ॥ वि० ॥ ११ ॥ ए आचार नही अम कुळमां, कुळ दूषण केम दीजे ॥ निज कुळ आचारे चालीजे, तो जगमां जस लीजे ॥ वि० ॥ १२ ॥ वात अछे जगमां बे म्होटी, जारी ने एक चोरी ॥ एणे भव अपजश बहु पामे, परभव दुःख अघोरी ॥ वि० ॥ १३ ॥ शियळ चिंतामणी सरिखुं छंडी, विषया रस कोण रीझे ॥ वर्षाकाळे मंदिर पामी, ऊघाडो कोण भींजे ॥ वि० ॥ १४ ॥ मन वचन कायाये करीने, व्रत लीधुं नवि खंडूं ॥ ध्रुअ तणी परे अविचळ पाळुं, अमे घरवास न मंडूं विरुइ० ॥ १५ ॥

॥ ढाल ३ जी. ॥ ॥ विंछीयानी देशी. ॥

॥ हां रे लाल शीख साधुनी अवगुणी, जाणे वही गइ वह-

नाळ रे लाल ।। कामवशे थइ आंधळी, करे साधु तणी ते आळ रे लाल ।। मुनि पाये झांझर रणझणे ।। १ ।। ए आंकणी ।। आवी पेठुं साधुने पाय रे लाल ।। वेल तणी परे सुंदरी, वळगे साधुने बांह रे लाल ।। मु० ।। २ ।। हां रे लाल जोर करी जोरावरं, निकळयो तिहांथी मुनिराय रे ।। लाल ।। तव पोकार पूंठे सुण्यो, धाओ एणे कीधो अन्याय रे लाल ।। मु० ।। ३ ।। हां रे लाल तिहांथी मुनिवर चालीयो, पाये झांझरनो झमकार रे लाल ।। लोक बहु निंदा करे, माठो छे ए अणगार रे लाल ।। मु० ।। ४ ।। हां रे लाल चोबारे बेठो राजवी, नजरे जोवे अवदात रे लाल ।। दीधो देशवटो नारीने, मुनि जस तणी थइ वात रे लाल ।। मु० ।। ५ ।। हां रे लाल तिहांथी मुनिवर चालीया, आव्या कंचनपुर गाम रे लाल ।। राजा राणी बे प्रेमशुं, बेठा गोखे आराम रे लाल ।। मु० ।। ६ ।। हांरेलाल राणी मुनिवर देखीने, आंसुडे वूठी धार रे लाल ।। राजा देखी मन कोपियो, सही एहनो पूरव जार रे लाल ।। मु० ।। ७ ।। हां रे लाल राजा गयो रयवाडीये, तेडाव्यो ऋषिने त्यांहि रे लाल ।। खाड खणी ऊंडी घणी, बेसाड्यो ऋषिने मांहि रे लाल ।। मु० ।। ८ ।।

।। ढाल ४ थी. ।। ।। देव तणी ऋद्धि भोगवी आव्यो,

(अथवा) सिद्धचक्र पद वंदो रे भविका ।।ए देशी.।।

।। अणसण खामण करे मुनि तिहां कणे, समता सायरमां झीले ।। चोराशी जीवायोनी खमावे, पाप कर्मने पीले रे ।। मुनि-

वर तुं मोरे मन वसियो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ उदय आव्यां निज कर्म आलोइ, ध्यान जिनेश्वर ध्यावे ॥ खडग हणंतां केवळ पामी, अविचळ ठामे जावे रे ॥ मु० ॥ २ ॥ शरीर साधुनुं असिये हण्याथी, हाहाकार त्यां पडियो ॥ ओघो वस्त्र लोहीए रंगाणां, अति अन्याय राये करीयो रे ॥ मु० ॥ ३ ॥ समळि ओघो लेइ ऊडंती, राणी आगळ पडियो ॥ बंधव केरो ओघो देखीने, हृदयकमळ थरहरीयो रे ॥ मु० ॥ ४ ॥ अति अन्याय जाणीने राणी, अणसण पोते लीधो ॥ परमारथ जाण्यो राजाए, हा हा ए शुं में कीधो रे ॥ मु० ॥ ५ ॥ ऋषिहत्यानुं पातक लाग्युं, ते केम छूटयुं जावे ॥ आंसूडां नांखंतो राजा, मुनि कळेवर खमावे रे ॥ मु० ॥ ६ ॥ गद स्वरे रोवंतो राजा, मुनिवर आगळ बेठो ॥ मान मेलीने खमावे रे भूपति, समता सायरमां पेठो रे ॥ मु० ॥ ७ ॥ फरी फरी उठीने पायेज लागे, आंसूडे पाप पखाळे ॥ भूपति उग्र भावना भावतो, कर्म पडळ सवि टाळे रे ॥ मु० ॥ ८ ॥ केवळज्ञान लह्युं राजाए, भवो भव वैर खमावे ॥ झांझरिया ऋषिना गुण गातां, पाप करमने समावे रे ॥ मु० ॥ ९ ॥ संवत सत्तर छप्पन केरा, आषाढ शुद बीज सोहे ॥ सोमवारे सज्झाय ए कीधी, सांभळतां मन मोहे रे ॥ मु० ॥ १० ॥ श्री पूनमगच्छ गुरु विराजे, महिमा प्रभु सुरिंदा ॥ भावरत्न सुशिष्य एम पभणे, सांभळजो सहु वृंदा रे ॥ मु० ॥ ११ ॥

—:०:—

॥ अथ श्री स्त्रीयोना कथलानी सज्झाय ॥

(आघा आम पधारो पूज्य, अम घर वोहरण वेळा. ए देशी)

आठम पाखी परव दिवसे, उपाशरामां आवे ॥ नारी वीश पचीश मळीने, वखाण सुणवा भावे ॥ रुडे रंग धरीने राज, सुणजो वात सयाणी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ पाटे बेसी पूज्य तिवारें, धर्म कथा उपदेसे ॥ श्राविका मळिने मांहो मांहे, कथलो करवा बेसे ॥ रु० ॥ २ ॥ एक कहे सांभळ रे सजनी, महारी सासु महोटी ॥ महारा ऊपर मन नवि राखे, ए वातो छे खोटी ॥ रु० ॥ ३ ॥ बीजी नारी कहे सुण बाइ, मुज सासु मुख मीठी ॥ पण सारी वस्तु संग लेइ, आपे जइने बेटी ॥ रु० ॥ ४ ॥ त्रीजो नारी तुरत कहे तव, मुज सासु सुकुलीणी ॥ महारी उपर कदिय न कोपे, जतन करे मन झीणी ॥ रु० ॥ ५ ॥ चोथी नारी बोले बाइ, मुज वहुअर गुणवंती ॥ घरनुं काम उपाडी लीधुं, मुजने करी निर्चिंति ॥ रु० ॥ ६ ॥ पांचमी नारी प्रेम धरीने, बोले सांभळ बाइ ॥ विनयवती छे महारी वहुअर, रोस नहीं तिल राइ ॥ रु० ॥ ७ ॥ छट्टी नारी बोले छानी, तुज वहुअर गुण भारी ॥ वातो करती किमहि न थाके, बेसे पर घर बारी ॥ रु० ॥ ८ ॥ सातमी नारी कहे मुण सजनी, शी कहुं मुज घर वातो ॥ माहारी सासु माहारी साथे, वढ्या करे दिन रातो ॥ रु० ॥ ९ ॥ आठमी नारी कहे मुण वाइ, मुज प्रितमने नचावे ॥ मुज सासु छे अति अणखीली, ते देखी दुःख पावे ॥ रु० ॥ १० ॥ नवमी नारी बोले नेहे, मुज सुत मुजने

ठारे ॥ वहुअर क्यारे वढे करे तो, आवी तेहने वारे ॥ रु० ॥ ११॥ दशमी दयिता बोले देखी, बाइ तुम बलिहारी ॥ वहुअरने हुं रीश करुंतो, पुत्रथी थाऊं खारी ॥ रु० ॥ १२ ॥ एकादशमी इणिपरे भाखे, मुज वहुअर विकराळी ॥ शीख देयंतां शूळी दे छे, चपळ महा चंडाळी ॥ रु० ॥ १३ ॥ द्वादशमी इम बोले बाळा, मुज वहु घणिज सयाणी ॥ सघळी घरनी त्रेवड समजे, पण आंखे छे कांणी ॥ रु० ॥ १४ ॥ एक कहे सांभळरे अंबा, मुज पाडोशण पापी ॥ विना सवारथ वेढ करावे, थोथी वातो थापी ॥ रु० ॥ १५ ॥ एक कहे बाइ हुं शुं आवुं, उपाशरे इणि वेळा ॥ भूख्यो छैयो भोजन मागे, टळे जो रांधण वेळा ॥ रु० ॥ १६ ॥ एक कहे मुज वहुअर भोळी, हठ घणी ते ताणे ॥ एकण हाथे कामज करवुं, ते परमेश्वर जाणे ॥ रु० ॥ १७ ॥ एक कहे सुण सजनी माहारी, दुखनी शी कहुं वातो ॥ सासु शूळी नणद हठीली, तिम दियरीयो तातो ॥ रु० ॥ १८ ॥ एक कहे सुण महारी माता, में हवे केम रहेवाय ॥ सासू ससरो पियु पनोतो, सघळां खावा धाय ॥ रु० ॥ १९ ॥ एक कहे सुण साथण आपणे, एकज लगने परणी ॥ महारे छैया छाकम छोळा, महारे नहीं अत्ररणी ॥ रु० ॥ २० ॥ एक कहे महारे पाडो आव्यो, एक कहे महारे पाडी ॥ बाइ तुं लेवाने आवजे, छाश करेशुं जाडी ॥ रु० ॥ २१ ॥ एक कहे इम महारी सासु, मुजने लाड लडावे ॥ वरे वावरे सारो सुघरो, मुज विण मूळ न भावे ॥ रु० ॥ २२ ॥ एक कहे तुं वहुअर वारु, तुजने भलेज जाइ ॥ महारी वहुअर मुजने विगोवे, खटरस भोजन खाइ॥ रु० ॥२३॥

एक कहे सांभळ तुं फोइ, सखरबाइनी वातुं ॥ महारे लहाणुं ओछुं मळियुं, मैं जोवराव्युं खातुं ॥ रु० ॥ २४ ॥ एक कहे सुण अमुकी बाइ, आघरणीने खोळे ॥ सात सोपारी मुजने नापी, में आपीती सोळे ॥ रु० ॥ २५ ॥ जोइतीबाइये जमवां तेडयां, शीरो सबळो खूटयो ॥ साठ दिवसनी सुखडी आणी, खबरावी करी कूटो ॥ रु० ॥ २६ ॥ एक कहे मुज मांचो त्रूटयो, पायो एकज भांग्यो ॥ सज्ज करया विण केम सुवाये, अणचिंत्यो दुःख लाग्यो ॥ रु० ॥ २७ ॥ एक कहे मुज अंग अकळाये, आळस अधिकी आवे ॥ मांकड मूआ करडे राते, तेहथी ऊंघज नावे ॥ रु० ॥ २८ ॥ एक कहे मुज चूलो भांग्यो, ते जइ करवो रुडो ॥ एक कहे मुज पितम प्यारे, चूंपे आण्यो चूडो ॥ रु० ॥ २९ ॥ एक कहे महारे रेंटीयडानो, त्राकलडो त्रटकाणो ॥ एक कहे मुज माळज कापी, किशुं नहीं कंताणो ॥ रु० ॥ ३० ॥ एक कहे उपाशरे आव्यां, कहो किशुं कोइ आले ॥ बे कोकडी कातुं जो बाइ, घरमां शाकज चाले ॥ रु० ॥ ३१ ॥ एक कहे धोवाने जइए, जो बाइ तुं आवे ॥ एक कहे मुज धान्य सव्यो ते, घर धंधे मन धावे ॥ रु० ॥ ३२ ॥ एक कहे हे महारी साथण, जो तुं मुज घर आवे ॥ माथुं गुंथीने मन गमती, करशुं वातो भावे ॥ रु० ॥ ३३ ॥ एक कहे में कुळथी रांधी, एक कहे में चोळा ॥ एक कहे में वाल वघारया ते थया छाकम छोळा ॥ रु० ॥ ३४ ॥ एक कहे मुज घेवर मीठां, एक कहे दळ खाजां ॥ एक कहे मुज लाडु भावे, सखर जलेबी झाजां ॥ रु० ॥ ३५ ॥ एक कहे देश माळव मोठो, एक गुजरात वखाणे ॥ एक

कहे छे मरुधर महोटो, सोरठ सकळ सुजाणे ॥ रु० ॥ ३६ ॥ एक तो आपणुं राज्य वखाणे, अपर राज्य एक निंदे ॥ एक कहे राजातो तेहज, नहीं वरो नहीं दंडे ॥ रु० ॥ ३७ ॥ एहवे एक बुधिवंती बोली, शुं बाइयो तुम कहिये ॥ कचपच करीने कानज फोडया, वखाण केणीपरे सुणिये ॥ रु० ॥ ३८ ॥ धर्मथानके आवो धाइ, वातो करवा मांडो ॥ पाप पोटला बांधो माये, कार्य धर्मनां छांडो रु० ॥ ३९ ॥ एहवे अकाळ थयो इम जाणी, उपदेश पूरो कीधो ॥ श्राविका सरवे वांदि गुरुने, मारग घरनो लीधो ॥ रु० ॥ ४० ॥ रे बाइओ तमे इण विध आवी, विकथा वातज वारो ॥ मनशुद्धि विण मुगतिपुरिनो, कारज किणि विध सारो ॥ रु० ॥ ४१ ॥ वळि कहे गुरुजी सुणो श्राविका, कथलो कांइ न कीजे ॥ श्रुतवाणी मत शुद्धे सुणतां, सघळां कारज सीझे ॥ ४२ ॥ परनो दोष देखाडी पोते, निज आतम नवि वंचो ॥ दोष पोतानो देखी द्रष्टे, सुकृत इणिपरे संचो ॥रु०॥ ४३॥ दश दृष्टांते दुर्लभ एहवो, मनुष्यपणो जे पायो ॥ देव गुरु धर्म तत्व ए त्रण्ये, सेवो सदा सुखदायो ॥ रु० ॥ ४४ ॥ कथलो सुणीने कथलो वारो, गुरु वाणी रस चाखो ॥ परनिंदाथी दुर्गति पामे, निज मन निर्मळ राखो ॥ रु० ॥ ४५ ॥ त्रिकरण शुद्धे तीर्थंकरनी, शुद्ध कथा जे सुणशे ॥ महानंद कहे मनने रंगे, ते भवसागर तरशे ॥ रु० ॥ ४६ ॥ संवत अढारशत दशने वर्षे, आसो मास उदारो॥ पाळणपुरमां मीते कीधो, विकथानो विस्तारो ॥ रु० ॥ ४७॥ इति० ॥

॥ अथ तेर काठियानी सज्झाय. ॥

॥ झांझरिया मुनिवर, धन्य धन्य तुम अवतार ॥ ए देशी ॥

॥ सोभागी भाई, काठीया तेर निवार ॥ उत्तम पदवी तो लहोजी, जय जय जंपेरे संसार ॥ सोभा० ॥ काठी० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ साधु समीपें आवतां जी, आळस आणे अंग ॥ धर्मकथा नवि सांभलेजी, मोडे अंग बहु भंग ॥ सोभा० ॥ २ ॥ बीजो मोह महा बलीजी, पुत्र कलत्रशुं लीन ॥ प्राणी धर्म न आचरे जी, घर धनने आधीन ॥ सोभा० ॥ ३ ॥ त्रीजो अवज्ञा काठीयो जी, शुं जाणे गुरु एह ॥ व्यापारें सुख संपजे जी, कीजे हर्षे तेह ॥ सोभा० ॥ ४ ॥ चोथे मान धरै घणुं जीं, मुझसम अवर न कोई ॥ केम वंदुं जण जण प्रत्ये जी, एम महोटी माम मन होई ॥ सोभा० ॥ ५ ॥ पांचमें क्रोध वशें करी जी, छांडे धर्मनां स्थान ॥ धर्म लाभ मुजने नवि दीयोजी, नवि दीयो गुरु सन्मान ॥ सोभा० ॥ ६ ॥ छठे जीव प्रमादथी जी, करै मदिरादिक सेव ॥ गुरुवाणी नवि सद्दहेजी, नवि माने जिनदेव ॥ सोभा० ॥ ७ ॥ सातमें कृपण पणा थकीजी, नावे साधु समीप ॥ धर्म कथा नवि सांभले जी, मंडाशे धन टीप ॥ सोभा० ॥ ८ ॥ आठमे गुरु भय उपन्योजी, कहेशे नरकनां दुःख ॥ के कहेशे केम नावियाजी, पामशो कहो केम मोक्ष ॥ सोभा० ॥ ९ ॥ नवमे देहरे आवतांजी, दाखवे शोक विशेष ॥ घरनां कारज सवि करेजी, धर्मनां काज उवेख ॥ सोभा० ॥ १० ॥ अज्ञान दशमे काठियेजी, देव तत्त्व गुरु तत्व ॥ धर्म तत्त्व गुरु सद्दहोजी, एम आणे मिथ्यात्व ॥ सोभा०

॥ ११ ॥ अभ्याक्षेपक अग्यारमे जी, झलपलतो दिन रात ॥ प्राणी धर्म न ओलखेजी, समझाव्यो बहु भांत ॥ सोभा० ॥ १२ ॥ बारमे धर्म कथा तजीजी, कौतुक जोवा जाय ॥ रात दिवस उभो रहेजी, नयणे निंद न भराय ॥ सोभा० ॥ १३ ॥ विषय तेरमो काठियोजी, विषय शुं राता लोक ॥ विषय साकर लेखवेजी, अवर सवे जी फोक ॥ सोभा० ॥ १४ ॥ सिद्ध क्षेत्र जाता थकांजी, काठिया ए अंतराय ॥ द्रव्य भावथी टालियेंजी, तो मनोवंछित थाय ॥ सोभा० ॥ १५ ॥ तेर काठिया जिने कह्याजी, समजी वर्जो एह ॥ कुशल सागर वाचक तणो जी, उत्तम कहे गुणगेह ॥ सोभा० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री कृत कर्म उपर सज्झाय ॥

॥ कपूर होये अति ऊजलोरे ॥ ए देशी ॥

॥ सुख दुःख सरज्या पामीयेंरे, आपद संपद होय ॥ लीला देखी परतणीरे, रोष म धरजो कोयरे ॥ प्राणी मन नाणो विषवाद ॥ ए तो कर्म तणा परसादरे प्राणी मन० ॥ १ ॥ फलने आहारे जीवीओरे, बारवरस वन राम ॥ सीता रावण लइ गयोरे, कर्म तणा ए काम रे प्राणी० ॥ २ ॥ नीरपाखें वन एकलोरे, मरण पाम्यो मुकुंद ॥ नीच तणे घर जल वह्योरे, शीस धरी हरिचंद रे ॥ प्राणी० ॥ ३ ॥ नले दमयंती परिहरिरे, रात्री समय वन बाल ॥ नाम ठाम कुल गोपवी रे, नले निरवाह्यो कालरे ॥ प्राणी० ॥

४ ॥ रूप अधिक जग जाणीयेंरे, चक्री सनतकुमार ॥ वरस सातशे भोगवी रे, वेदना सात प्रकार रे ॥ प्राणी० ॥ ५ ॥ रूपें वली सुर सारिखारे, पांडव पांच विचार ॥ ते वनवासें रडवड्या रे, पाम्या दुःख संसार रे ॥ प्राणी० ॥ ६ ॥ सुरनर जस सेवा करे रे, त्रिभुवन पति विख्यात ॥ ते पण कर्म विटंबीया रे, तो माणस केइ मातरे ॥ प्राणी० ॥ ७ ॥ दोष न दीजें केहने रे, कर्म विटंबण हार ॥ दान मुनि कहे जीवने रे, धर्म सदा सुखकार रे ॥ प्राणी मन नाणो विषवाद ॥ ८ ॥ इति ॥

श्री वर्द्धमान तपनी सज्झाय. ॥

॥ मोरा साहिबहो श्रीशीतलनाथके अरजसुणो एक माहरी ॥ ए देशी ॥

॥ मोरा चेतन हो कहुं अनुभव वातके, सांभळ स्थिर थई मित्र तुं ॥ जिम पामे हो तुं शिवसुख सारके, क्षणमां होय पवित्र तुं ॥ १ ॥ तप आंबिल हो करजे वर्द्धमान के, विघ्न विदारण केसरी ॥ अष्टसिद्धि हो अणिमादिक थायके, प्रगटे ऋद्धि परमेश्वरी ॥ २ ॥ भय साते हो सहुं दूर पलायके, आंबिले वली नहीं द्वारिका ॥ देव सांनिध्य हो करे हरे सौ कष्ट के, मंत्र तंत्र फल कारका ॥ ३ ॥ मयणा सुंदरी हो श्रीपाल नरेश के, ए तपथी सुखीया थया ॥ ए सेव्या हो तप सुरवृक्षके, मुक्ती पदवी लह्या ॥ ४ ॥ नवकारशी हो तोडे एकसो वर्षके, नरकायु सुरनुं करे ॥ तो तोडे पोरसी हो वष एक हजार के, आयु ते साढ पोरसी हरे ॥ ५ ॥ एक लाख हो

पुरिमड्ढ हरंतके, एकासण दस लाखनुं ॥ नीवी करतां हो एक क्रोड कपायके, एकलठाणा दस क्रोडनुं ॥ ६ ॥ कापे सो क्रोड हो वर्ष एकलदातिके, हजार क्रोड वरस आंबिले ॥ उपवासे हो दस सहस क्रोडके, नरक आयुषतुं कापले ॥ ७ ॥ ए वाख्या हो मध्यम फल जाण के, केवल लहे उत्कृष्टथी ॥ दस धारो हो ए असि सूर्य हास-के, मुष्टि ज्ञाने ग्रही मुष्टिथी ॥ ८ ॥ नमो तवस्सहो गणो दोय हजारके, खमासमणा बार छे ॥ गणो लोगस्स हो बार काउस्सग रुपके, साचो कर्म कुठार छे ॥ ९ ॥ यथा शक्ति हो करो तप अनु-कुलके, संयम श्रेणी आदरो ॥ तप वर्द्धमान हो वर्द्धमान परिमाणके, धर्म रत्न पद अनुसरो ॥ १० ॥ इति वर्द्धमान तप सज्झाय. ॥

अथ श्री निंदावारकनी सज्झाय.

॥ भोलीडा हंसारे विषय न राचीये–ए देशी ॥

म म कर जीवडा रे निंदा पारकी, म म करजे विषवाद ॥ अव गुण ढांकी रे गुण प्रगट करे, मृगमद जिम रे जवाप ॥ म म० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ गुण छे पूरा रे श्री अरिहंतना, अवर न दूजो रे कोय ॥ जग सहु चाले रे जिम मादळ मढ्युं, गुणवंत विरलो रे कोय ॥ म म० ॥२॥ पूंठ न सूझे रे प्राणी आपणी, किम सूझे पर पूंठ ॥ मरमने मोसो रे केहनो न बोलीए, लाख लहे बांधी मूठ ॥ म म० ॥ ३ ॥ रागे द्वेषे रे स्वामी हुं भर्यो, भरियो विषय कषाय ॥ रोस घणेरी रे मुज मन ऊपजे, किम पामुं भव पार ॥

म म० ॥ ४ ॥ सेवा कीजे रे सूधा साधुनी, वहिये जिनवर आण ॥ पराणे जइने रे तेहशुं बोलीये, जे होय तत्वना जाण ॥ म म० ॥ ५ ॥ जेहमां जेटला रे गुण ल्यो तेटला, जिम रायणनी रे कोळि ॥ सहज करो जीव सुंदर आपणो, सहजसुंदरना रे बोल ॥म म०॥६॥

[1]उपदेशकारक अने वैराग्य-कारक पदो.

॥ पद पहेलु ॥ राग धनाश्री ॥

॥ केशरीयाने डुबत जहाज तीरायो—ए देशी ॥

॥ परम प्रभु सब जन शब्दे ध्यावे ॥ जबलग अंतर भरम न भांजे, तबलगे कोउ न पावे ॥ परम० ॥ १ ॥ सकळ अंश देखे जो जोगी, जो खिनुं समता आवे ॥ ममता अंध न देखे याको, चित्त चिहुं ओरे ध्यावे ॥ परम० ॥२॥ सहज शक्ति और भक्ति सुगुरुकी, जो चित्त जोग जगावे ॥ गुण पर्याय द्रव्यसुं अपने, तो लय कोउ लगावे ॥ परम० ॥३॥ पढत पूराण वेद अरु गीता, मूरख अर्थ

१ आ पदो सज्झायना ठेकाने पण कहेवाय छे.

नवि पावे ॥ इत उत फरत ग्रहत रसनाही, ज्यों पशु चर्वित खावे ॥ परम० ॥ ४ ॥ पुदगलसें न्यारो प्रभु मेरो, पुदगल आप छिपावे ॥ उनसें अंतर नहीं हमारे, अब कहां भागो जावे ॥ परम० ॥ ५ ॥ अकळ अलख अर अजर निरंजन, सो प्रभु सहज सुहावे ॥ अंतर-जामी पूरन प्रगट्यो, सेवक जस गुण गावे ॥ परम० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद बीजुं ॥ राग उपर प्रमाणे ॥

॥ चेतन जोतुं ज्ञान अभ्यासी ॥ आपहि बांधे आपहि छोडे, निजमति शक्ति विकासी ॥ चेतन० ॥ १ ॥ जो तुं आप स्वभावमें खेले, आशा छोरी उदासी ॥ सुरनर किन्नर नायक संपत्ति, तो तुज घरको दासी ॥ चेतन० ॥ २ ॥ मोह चोर जन गुण धन लूटे, देत आस गले फांसी ॥ आसा छोर उदास रहेजो, सो उत्तम संन्यासी ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ जोग लइ पर आस धरतहे, याही जगमें हांसी ॥ तुं जाने में गुनकुं संचुं, गुनतो जावे नासी ॥ चेतन० ॥ ४ ॥ पुदग-लकी तुं आस धरतहे, सो तो सबहि विनासी ॥ तुं तो भिन्नरुप हे उनतें, चिदानंद अविनासी ॥ चेतन० ॥ ५ ॥ धन खरचें नर बहुत गुमाने, करवत लेवे कासी ॥ तोभी दुःखको अंत न आवे, जो आसा नहिं घासी ॥ चेतन० ॥ ६ ॥ सुखजल विषम विषय मृग तृष्णा, होत मूढमति प्यासी ॥ विभ्रम भूमि भइ पर आसी, तुं तो सहज विलासी ॥ चेतन० ॥ ७ ॥ याको पिता मोह दुःख भ्राता, होत विषय रति मासी ॥ भव सुत भरता अविरति प्रानी, मिथ्या-मति हे हांसी ॥ चेतन० ॥ ८ ॥ आशा छोड रहे जो जोगी, सो

होवे शिव वासी ॥ उनको सुजस बखाने ज्ञाता, अंतर दृष्टि प्रकाशी ॥ चेतन० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ पद श्रीजुं ॥ राग धन्याश्री ॥ कंत बिन रही अकेली मोरी जान—ए देशी ॥

॥ जैन कहो क्यौं होवे ॥ परमगुरु ॥ जैन कहो क्यौं होवे ॥ गुरु उपदेश बिना जन मूढा, दर्शन जैन विगोवे ॥ परमगुरु० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कहत कृपानिधि समजल झीले, कर्म मयल जो धोवें ॥ बहुल पापमल्ल अंग न धारे, शुद्ध रूप निज जोवे ॥ परम० ॥ २ ॥ स्यादवाद पूरन जो जाणे, नय गर्भित जस वाचा ॥ गुण पर्याय द्रव्य जो बुझे, सोइ जैन है साचा ॥ परम० ॥ ३ ॥ क्रिया मूढमति जो अज्ञानी, चालत चाल अपुठी ॥ जैनदशा उनमेही नाही, कहेसो सबही जूठी ॥ परम० ॥ ४ ॥ पर परनति अपनी कर माने, किरिया गर्वे घेहेलो ॥ उनकुं जैन कहो क्युं कहियें, सो मूरखमें पहिलो ॥ परम० ॥ ५ ॥ ज्ञान भाव ज्ञान सबमांही, शिव साधन सर्दहिए ॥ नाम भेखसें काम न सीझे, भावउदासे रहिए ॥ परम० ॥ ६ ॥ ज्ञान सकल नय साधन साधो, क्रिया ज्ञानकी दासी ॥ क्रिया करत् धरतुहे ममता, याहि गलेमें फांसो ॥ परम० ॥ ७ ॥ क्रिया बिना ज्ञान नहिं कबहुं, क्रिया ज्ञान बिनुं नांही ॥ क्रिया ज्ञान दोउ मिलत रहतु हे, ज्यौं जल रस जलमांही ॥ परम० ॥ ८ ॥ क्रिया मगनता बाहिर दीसत, ज्ञान शक्ति जस भांजे ॥ सदगुरु शीख सुणे नहीं कबहुं, सो जन जनते लाजे ॥ परम० ॥ ९ ॥ तत्व बुद्धि जिनकी परणति

हे, सकल सूत्रकी कूंची ॥ जग जसवाद वदे उनहींको, जैन दशाजस ऊंची ॥ परम० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ पद चोथुं ॥ राग धन्याश्री ॥ विनतडी अवधार जगत्पती विन० ॥ ए देशी ॥

॥ आवे नहिं मन ठाम ॥ जबलग ॥ आवे नहिं मन ठाम ॥ ए आंकणी ॥ तबलग कष्ट क्रिया सब निष्फल ॥ ज्यौं गगने चित्राम ॥ जब० ॥ १ ॥ करनी बिन तुं करे मोटाइ, ब्रह्मव्रति तुझ नाम ॥ आखर फल न लहेगो ज्यौं जग, व्यापारी बिनु दाम ॥ जबलग० ॥ २ ॥ मुंड मुंडावत सबहि गडरिया, हिरण रोझ बन धाम ॥ जटाधार वट भस्म लगावत, रासभ सहतु हे धाम ॥ जबलग० ॥ ३ ॥ एते पर नहीं योगकी रचना, जो नहि मन विश्राम ॥ चित्त अंतर पर छलवेकुं चिंतवत, कहा जपत मुख राम ॥ जबलग० ॥४॥ बचन काय गोपें दृढ न धरे, चित्त तुरंग लगाम ॥ तामे तुं न लहे शिवसाधन, जिउ कण सुने गाम ॥ जबलग० ॥ ५ ॥ पढो ज्ञान धरो संजम किरिया, न फिरावो मन ठाम ॥ चिदानंद घन सुजस विलासी, प्रगटे आतमराम ॥ जबलग० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद पांचमुं ॥ राग सारंग ॥

कंत बिनु कहो कौन गति नारी ॥ ए आंकणी ॥ सुमति सखा जइ वेगी मनावो, कहे चेतन सुन प्यारी ॥ कंत० ॥ १ ॥ धन कन कंचन महेल मालिए, पिउ बिन सबहि उजारी ॥ निद्राजोगन लहु सुख नांही, पियु बियोग तनु जारी ॥ कंत० ॥ २ ॥ तोरे प्रीत

पराइ दुरिजन, अछते दोष पुकारी ॥ घर भंजनके कहन न कीजें, कीजे काज बिचारी ॥ कंत० ॥ ३ ॥ विभ्रम मोह महामद बिजुरी, माया रेन अंधारी ॥ गर्जित अरति लवे रति दादुर, कामकी भइ असवारी ॥ कंत० ॥ ४ ॥ पिउ मिलनेकुं मुझ मन तलफे, में पिउ खिजमत गारी ॥ झुरकी देइ गये पिउ मुझकुं, न लहे पीर पीयारी ॥ कंत० ॥ ५ ॥ संदेश सुनी आये पिउ उत्तम, भइ बहुत मनुहारी ॥ चिदानंद घन सुजस विनोदें, रमे रंग अनुसारी ॥ कंत० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद छठ्ठुं ॥ राग रामकली ॥

॥ ए व्रत जगमां दीवो मेरे प्यारे–ए देशी ॥

॥ अब क्युं न होत उदासी, हो आतम ॥ अब क्युं० ॥ ए आंकणी ॥ उलट पलट घट घेरी रही है, क्युं तुम आशा दासी ॥ हो आत० ॥ १ ॥ निसि बासर उनसुं तुम खेलो, होत खलकमां हांसी ॥ छोरो विषम विषयकी आशा, ज्युं निकसें भव फांसी ॥ हो० ॥ २ ॥ पूरण भइ न कबहीं किसकी, दुरमति देत विसासी ॥ जोछोरी नहीं सोबत इनकी, तो कहा भये सन्यासी ॥ हो० ॥ ३ ॥ रूठ रही सुमति पटराणी, देखो हृदय विमासी ॥ मुझ रहे हो क्या मायामें, अंते छोरी तुम जासी ॥ हो० ॥ ४ ॥ आश करो एक विनय विचारी, अविचल पद अविनासी ॥ आशा पूरण एक परमेसर, सेवो शिवपुर वासी ॥ हो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद सातमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ केशरीयाने डुंबत जहाज तीरायो-ए देशी ॥

॥ साधु भाइ सोहे जैनका रागी, जाकी सुरत मूज धुन लागी ॥साधु०॥ए आंकणी॥ सो साधु अष्ट करमसुं झगडे, सुन बांधे धर्मशाला ॥ सोहं शब्दका धागा सांधे, जंपे अजंपा माला ॥ साधु० ॥ १ ॥ गंगा यमुना मध्य सरसति, अधरं वहे जलधारा ॥ करीअ स्नान मगन हुइ बेठे, तोडया कर्म दल भारा ॥ साधु० ॥ २ ॥ आप अभ्यंतर ज्योति बिराजे, अंकनाल ग्रहे मूला ॥ पछिम दिशाकी खडकी खोलो, तो बाजे अनहद तूरा ॥ साधु० ॥ ३ ॥ पंच भूतका भरम मिटाया, छठे मांहि समाया ॥ विनय प्रभुसुं ज्योत मिलि जब, फिर संसार न आया ॥ साधु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद आठमुं ॥ राग आशावरी ॥ देशी उपर प्रमाणे ॥

॥ अवधू सुता क्यां इस मठमें ॥ अवधू० ॥ ए आंकणी ॥ इस मठका हे कवन भरोंसा, पड जावे चठ पटमें ॥ छिनमें ताता छिनमें शीतल, रोग शोग बहु मठमें ॥ अव० ॥ १ ॥ पानी किनारे मठका वासा, कवन विश्वास ए तटमें ॥ सूता सूता काल गमायो, अजहुं न जाग्यो तुं घटमें ॥ अवधू० ॥ २ ॥ घरटी फेरी आटो खायो, खरची न बांधी वटम ॥ इतनी सुनी निधि चारित्र मिलकर, ज्ञानानंद आए घटमें ॥ अवधू० ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पद नवमुं ॥ राग नायकी कनडो ॥

॥ चेतन ममता छांड परीरी, दूर परीरी ॥ चेतन० ॥ ए

आंकणी ॥ पर रमनिसुं प्रेम न कीजें, आदरी समता आप वरीरी ॥ चेतन० ॥ १ ॥ ममता मोह चंडालकी बेटी, समता संयम नृप कुमरीरी ॥ ममता मुख दुर्गंध असत्थें, समता सत्य सुगंध भरीरी ॥ चेतन० ॥ २ ॥ ममतासें लरते दिन जावे, समतां नहिं कोउ साथ लरीरी ॥ ममता हेतु बहुतहे दुश्मन, समताके कोऊ न अरीरी ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ ममताको दुर्मति हे आली, डाकिनी जगन अनर्थ करीरी ॥ समताकी शुभमति हे आली, पर उपगार गुणे समरीरी ॥ चेतन० ॥ ४ ॥ ममता पुत्तभये कुल खंपन, सोक वियोग महा मत्सरीरी ॥ समना सुत होवेगे केवल, रहे दिव्य निशान धुरीरी ॥ चेतन० ॥ ५ ॥ समता मग्न रहे जो चेतन, जो ए धारे शीख खरी-री ॥ सुजस विलास लहेगो तो तुं, चिदानंद घन पदवि वरीरी ॥ चेतन० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ पद दसमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ केशरीयाने डुबत जहाज तीरायो—ए देशी ॥

॥ अवधु वैराग्य बेटा जाया ॥ वाने खोज कुटुंब सब खाया ॥ अव० ॥ ए आंकणी ॥ जेणे ममता माया खाइ, सुख दुःख दोनो भाइ ॥ काम क्रोध दोनोकुं खाई, खाई तृष्णा बाई ॥ अव० ॥१ ॥ दुर्मति दादी मत्सर दादा, मुख देखतही मुआ, मंगल रुपी वधाई वांची, ए जब बेटा हुवा ॥ अव० ॥ २ ॥ पुण्य पाप पाडोशी खाये, मान काम दोउ मामा ॥ माहनगरका राजा खाया, पीछेहीं प्रेम ते गाया ॥ अव० ॥ ३ ॥ भाव नाम धर्यो बेटाको, महिमा वरण्या

न जाइ ॥ आनंद धन प्रभु भाव प्रगट करो, घट घट रह्यो समाइ ॥ अवधु० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद इग्यारमुं ॥ राग आशावरी ॥

॥ माया महा ठगणीमें जानी ॥ माया महा० ॥ ए आंकणी ॥ त्रिगुन फांसा लेईकर दोरत, बोलत अमृत बानी ॥ माया० ॥ १ ॥ केसव घर कमला होइ बेठी, संभु घर भवानी ॥ ब्रह्माघर सावित्री होइ बेठी, इंद्र घर इंद्राणी ॥ माया० ॥ २ ॥ पंडितकुं पोथी होइ बेठी, तीरथीयाकुं पानी ॥ योगी घर भभूत होइ बेठी, राजाके घर रानी ॥ माया० ॥ ३ ॥ किनें माया हीरो कर लीनो, किने ग्रही कोरी जानी ॥ कहत विनय सुनो अब लोको, उनके हाथ बिकानी ॥ माया० ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ पद बारमुं ॥ राग मारु ॥

॥ निशदिन जोउं तारी वाटडी, घरे आवो रे ढोला ॥ निश०॥ मुज सरिखा तुज लाख है, मेरे तूही ममोला ॥ निश० ॥ १ ॥ जवहरी मोल करे लालका, मेरा लाल अमोला ॥ ज्याके पटंतर को नहीं, उसका क्या मोला ॥ निश० ॥ २ ॥ पंथ निहारत लोयणे, द्रग लागी अडोला ॥ जोगीं सुरत समाधिमें, मुनि ध्यान झकोला ॥ निश० ॥ ३ ॥ कौन सुनै किनकुं कहुं, किम मांडुं मै खोला ॥ तेरे मुख दीठे टले, मेरे मनका चोला ॥ निश० ॥ ४ ॥ मित्त विवेक वातें कहैं, सुमता सुनि बोला ॥ आनंदघन प्रभु आवशे, सेजडी रंग रोला ॥ निश० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद तेरमुं ॥ राग भैरव ॥

॥ विरथा जनम गमायो ॥ मूरख विरथा० ॥ ए आंकणी ॥ रंचक सुख रस वश होय चेतन, अपनो मूलनसायो ॥ पांच मिथ्यात धारतुं अजहुं, साच भेद नवि पायो ॥ मूरख० ॥ १ ॥ कनक कामिनी अरु एहथी, नेह निरंतर लायो ॥ ताहुथी तुं फिरत सोरांनो, कनकबीज मानुं खायो ॥ मूर० ॥ २ ॥ जनम जरा मरणादिक दुःखमें, काल अनंत गमायो ॥ अरहट घटिका जिम कहो याको, अंत अजहुं नवि आयो ॥ मूर० ॥ ३ ॥ लख चोराशी पेहेरया चोलना, नव नव रूप बनायो ॥ बिन समकित सुधारस चाख्या, गिणती कोउ न गिणायो ॥ मूर० ॥ ४ ॥ एतीं पर नवि मानत मूरख, ए अचरिज चित आयो ॥ चिदानंद ते धन्य जगत में, जिणे प्रभु शुं मन लायो ॥ मूर० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ पद चौदमुं ॥

॥ क्या पोथी ले पढत दीवाने—ए देशी ॥ परभवमें मेरो कोइ न साथी, इणभव सब दुःखदायी हे ॥ प० ॥ १ ॥ धन देखी धन धन जग करता, अधिकी प्रीत लगाई हे ॥ प० ॥ २ ॥ मात पिता नारी नेह धरती, जब लग संपत सवाई हे ॥ प० ॥ ३ ॥ विपत पडयां कोइ मुखसें न बोले, ए जगमें अधिकाई हे ॥ प० ॥ ४ ॥ तन धन जोबन कनक कामिनी, पुण्यजोगें सब पाई हे ॥ प० ॥५॥ पाप प्रभावें हाथमेंसुं जावे, पल भरमांही पराई हे ॥ प० ॥ ६ ॥

जां देखुं जां गमका गरजी, मनमें घणी कपटाइं है ॥ प० ॥ ७ ॥ स्वारथीयो संसार निरख कर, जीनदास गम खाई हे ॥ प० ॥८॥

॥ पद पंदरमुं ॥

॥ राग आशावरी झींझोटी ॥ अवधू साजोगी गुरु मेरा ॥ ए देशी ॥ शिवरमणीके वासी ॥प्रभुतुम॥ शिवरमणीके वासी ॥ चिहुं गति सेज तजी कुमतीरी, सुमति नारी अभ्यासी ॥ मुगतिपुरी दूरी नहि तुमसें, केवल ग्यानविलासी ॥ प्र० ॥ १ ॥ परम धाम निज नाम उपायो, तज निगोदकी रासी ॥ गिरि गुग ग्यान गरज सब सारी, काटी कालकी फांसी ॥ प्र० ॥ २ ॥ ए संसार खारको घर हे, मिल करता हे हांसी ॥ करे जिन दास आस चरणांकी, समकितको मति खासी ॥ प्र० ॥ ३ ॥ इति ॥

छंदोनो संग्रह

॥ चोवीश जिनेश्वरना छंद ॥

॥ चोपाइ ॥ आर्या ब्रह्मसुता वाणी गिर्वाणी । सुमति विमल आपो ब्रह्माणी । कमल कमंडल पुस्तक पाणी । हुं प्रणमुं जोडी जुग पाणी ॥ १ ॥ दुहा ॥ चोवीसे जिनवर तणा । छंद रचूं चोसाल । भणतां शिवसुख संपजे । सुणतां मंगल माल ॥ २ ॥

॥ छंद जाति सवैया ॥

॥ आदि जिणंद, नमे नरइंद, सपुनमचंद, समान मुखं ॥ समामृत कंद, टाले भवफंद, मरूदेवीनंद, करत सुखं ॥ लगे जस पाय, सुरिंद निकाय, भला गुण गाय, भविक जनं ॥ कंचन काय, नहि जस माय, नमे सुख थाय, श्री आदिजिनं ॥ १ ॥ अजित-जिणंद, दयाल मयाल, विसाल नयन, कृपाल जुगं। अनुपम गाल, महामृग चाल, सुभाल सुजानग, बाहु जुगं ॥ मनुष्यमे बलीह, मुनिसरसींह, अबीह निरीह, गये सुगती। कहे नय चित्त, धरी बहु भक्ति, नमे जिननाथ, भली जुगती ॥ २ ॥ कहे संभवनाथ, अनाथको नाथ, सुगतिको साथ, मिल्यो प्रभु मेरो। भवोदधिपाज, गरिबनिवाज, सबे शिरताज, निवारत फेरो ॥ जितारीको जात, सुसेना मात, नमे नर जात, मिली बहु घेरो। कहे नय शुद्ध, धरि बहु बुद्ध, जिनावन नाथ हुं, सेवक तेरो ॥ ३ ॥ अभिनंदन स्वाम, लिधे जश नाम, सरे सवि काम, भविक तणो ॥ वनिता जस गाम, निवासको ठाम, करे गुण ग्राम, नरिंद घणो ॥ मुनीश्वर रूप, अनुपम भूप, अकल स्वरूप, जिनंद तणो। कहे नय खेम, धरी बहु प्रेम, नमे नर पावत, सुख घणो ॥ ४ ॥ मेघ नरिंद, मल्हार विराजित, सोवनवान, समान तनु। चंद सुचंद, वदन सुहावत, रूपविगर्जित, कोम तनु। कर्मकी कोडी, सबे दुख छोडी, नमे करजोडी, करि भक्ति। वंश इक्षवाकु, विभूषण साहिब, सुमति जिनंद, गए मुक्ति ॥ ५ ॥ हंसपाद तुल्य रंग, रति अर्ध रागरंग, अढिसे

धनुष चंग, देहको प्रमाण हे। उगतो दिणंद रंग, लालकेसु फुल रंग, रूप हे अनंग भंग, अंग केरो वान हे ॥ गंग को तरंग रंग, देवनाथहि अभंग, ज्ञानको विसाल रंग, शुद्ध जाको ध्यान हे। निवारीए क्लेश संग, पद्मप्रभस्वामि धींग, दिजिए सुमति संग, पद्म-केरो जाण हे ॥ ६ ॥ जिणंद सुपास, तणा गुण रास, गावे भवि भास, आणंद घणे। गमे भविपास, महिमा निवास, पूरे सवि आस, कुमति हणे ॥ चींहु दिसे वास, सुगंध सुवास, उसास नीःसा-स, जिनेंद्र तणो । कहे नय खास, मुनींद्र सुपास, तणो जस वास, सदैव भणो ॥ ७ ॥ चंद्र चंद्रिका समान, रूप सैलसे समांन, दोढसो धनुषमान, देहको प्रमाण हे। चंद्रप्रभु स्वामी नाम, लीजीये प्रभात जाम, पामीये सुख ठाम ठाम, गामज समान हे ॥ महासेन अंग-जात, लक्ष्मणाभिधान मात, जगमां सुजसख्यात, चिहुं दिसे थात हे। कहे नय छोडी तात, ध्याइये जो दिनरात, पामीयेनो सुखसात, दुखकोडी जात हे ॥ ८ ॥ ढोलो दुधफेन पींड, उजलो कपुर खंड, अमृत सरस कुंड, शुद्र जाको तुंड हे। सुविधि जिनंद संत, कीजीये दुःकर्म अंत, शुभ भक्ति जासदंत, श्वेत जाको वान हे ॥ कहे नय सुणो संत, पूजीये जो पुष्पदंत, पामीये तो सुख संत, शुद्ध जाको ध्यान हे ॥९॥ शितल शितल वाणी घनाघन, चाहेत हे भविकोक किशोरा। काक दिणंद प्रजासु नरींद, वली जिम चाहत चंद चकोरा ॥ विंध गयंद सुचि सुरिंद, सति निज कंत सुमेघ मयूरा ॥ कहे नय नेह धरी गुण गेह, तथा हु ध्यावत साहेब मेरा

॥ १० ॥ विष्णु भूपको मल्हार, जग जंतु सुखकार, वंशको शृंगार हार, रूपको आगार हे। छोडि सवि चित्तखार, मान मोहको विकार, काम क्रोधको संचार, सर्व वैरी वार हे ॥ आदर्यो संजमभार, पंच महाव्रत धार, उतारे संसारपार, ज्ञानको भंडार हे। इग्यारमो जिणंद सार, खडगी जित्र चिन्हधार, कहे नय वारोवार, मोक्षको दातार हे ॥ ११ ॥ लाल केसु फुल लाल, रति अर्ध रंग लाल, उगतो दिणंद लाल, लालचोल रंग हे। केसरीकी जीह लाल, केसरको घोल लाल, चूनडीको रंग लाल, लाल पान रंग है ॥ लाल कीर चंचू लाल, हींगलो प्रवाल लाल, कोकिलाकी दृष्टि लाल, लाल धर्म रंग हे। कहे नय तेम लाल, बारमो जिणंद लाल, जयादेवि मात लाल, लाल जाको अंग हे ॥ १२ ॥ कृतवर्म नरिंद, तणो एह नंद, नमत सुरेंद्र, प्रमोद धरी। गमे दुख दंद, दीये सुखवृंद, जाको पद सोहत्त, चित्त धरी ॥ विमल जिनंद, प्रसन्न वदन, जाके शुभ मन्न, सुगंग परि। नमे एक मन्न, कहे नय धन्य, नमो जिनराज, जिणंद सुप्रीत धरी ॥ १३ ॥ अनंत जिणंद देव, देवमां देवाधिदेव, पूजो भवी नितमेव, धरी बहु भावना। सुर नर सारे सेव, सुख कीऊ स्वामी हेव, तुज पाखे और देव, न करुं हुं सेवना ॥ सिंहसेन अंग जात, सुजसाभिधान मात, जगमां सुजस ख्यात, चौहुं दिशे व्यापतो ॥ कहे नय तास वात, कीजीए जो सुप्रभात, नित्य होइ सुख सात, किर्ति कोडी आपतो ॥ १४ ॥ जाके प्रताप पराजित निर्बल, भूतल थइ भमे भानु आकासे ॥

सौम्य वदन विनिर्जित अंतर, श्याम शशी नवि होत प्रकासे। भानु महिपति वंसे कुसय, बोध न दीपत भानुप्रकासे ॥ नमे नय नेह धरी नितु साहिब, धर्म जिणंद त्रिजग प्रकासे ॥ १५ ॥ सोलमा जिणंद नामे, शांति होय ठामो ठामे, सिद्धि होय सर्व कामे, नाम के प्रभावथे ॥ कंचन समान वान, चालीस धनुष मान, चक्रवतिको भिधान, दीपतो ते सूरथे ॥ चौद रयण समान, दीपता नव निधान, करत सुरेंद्र गान, पुण्यके प्रभावथे ॥ कहे नय जोडी हाथ, अब हुं थयो सनाथ, पाइओ सूमती साथ, शांतिनाथके दिदारथे ॥ १६ ॥ हे कुंथु जिणंद, दयाल मयाल, विशाल नयन, कृपाल युगं। भव भीम महार्णव, पूर अगाह, अथाग उपाधि, सुनीर घणो। बहु जन्म जरा, मरणादि विभाव, निमिस घणादि, कलेस घणो ॥ अवतारकतार, क्रिपा कर साहिब, सेवक जाणी अछे अपणो ॥१७॥ अरदेव सुदेव, करे नर सेव, सवे दुख दोहग, दुर करे ॥ उपदेश घनाघन, नीर भरे भवि, मानसमान, भूरीतरे ॥ सुदर्शन नाम, नरेसर अंगज, भव्य मने प्रभु, जास वसे ॥ तस संकट शोक, वियोग कुयोग, दरिद्र कुसंगति, न आवत पासे ॥ १८ ॥ नील कोर पंखी नील, नागवलि पत्र नील, तरुवर राजि नील, नील नील द्राख हे ॥ काचको सुगोल नील, इंद्र नील रत्ननील, पत्रनील चास हे॥जमुना प्रवाह नील, भंगराज पंखी नील, जेहवो अशोक वृक्ष नील नील रंग हे। कहे नय तेम नील, रागये अतिव नील, मल्लीनाथ देव नील, जाको अंग नील हे ॥ १९ ॥ सुमित्र नरींद, तणो वर-

नंद, सुचंद्र वदन, सोहावत हे। मंदर धीर, सेवे नरहीर, सुश्याम शरीर, बिराजित हे ॥ कज्झलवांन, सुकछपयान, करे गुणगान, नरिंद घणो ॥ मुनिसुव्रत स्वामी, तणो अभिधान, लहे नय मांन, आनंद घणो ॥ २० ॥ अरीहंत सरूप अनुपम रूपके, सेवक दुःखने दुर करे ॥ निज वाणी सुधारस मेघ जले, भवी मानस मान भूरी भरे ॥ नमी नाथको दर्शन सार लही कुंग, विष्णु महेश धरे जों परे ॥ अब मानव मुढ लहि कुंण सकर, छोडके कंकर हाथ धरे ॥ २१ ॥ जादववंश विभूषण साहिब, नेमि जिणंद महानंदकारी ॥ समुद्र विजय नरिंद तणो सुत, उज्वल शंख सुलक्षण धारी ॥ राजुल नार मुकी निरधार, गये गिरनार कलेस निवारी ॥ कज्झल काय शिवा देवी माय, नमे नय पाय महा व्रतधारी ॥ २२ ॥ पार्श्वनाथ, अनाथको नाथ, सनाथ भयो, प्रभु देखतथे। सवि रोग विजोग, कुजोग महा दुःख, दुर गए प्रभु, ध्यावतथे ॥ अश्वसेन नरेश, सपुत बिराजित, घनाघन वान, समान तनु॥ नय सेवक वंछीत, पूरण साहिब, अभिनव कांम, करि रमनु॥२३॥कमठ कुळंठ उलंठ हठी हठ, भंजन जास प्रताप बिराजे। चंदन वाणी सूवामानंदन, पुरुसादाणी बिरुद जस छाजे ॥ जस नामके ध्यान थको सवि दोहग, दारिद्र दुःख महा भय भांजे ॥ नय सेवक वंछित पूरण साहिब, अष्टमहा सिद्धि नित्य नीवाजे ॥२४॥ सिद्धारथ भूप, तणा प्रतिरूप, नमे नर भूप, आनंद धरी ॥ अचिंत्य स्वरूप, अनुपम रूपके, लंछन सोहत, जास हरी ॥ त्रिसला नंदन, समद्रुम कंदन, लघुपणे कंपित, मेरु गिरि ॥ नमे नय चंद, वदन बिराजित, वीर जिणंद, सुप्रीत धरी ॥ २५ ॥ चोवीस जिनंद, तणां एह

छंद, भणे भविवृंद, जे भाव धरी॥ तस रोग वियोग, कुजोग भोग, सवि दुख्क दोहग, दुर टळे॥ तस अंगण बार, न लाभे पार, सुमति तोखार, हेखार करे। कहे नय सार, सुमंगल चार, घरे तस संपद, भूरी भरे ॥ २६ ॥ संवेगी साधु विभूषण, वंस विराजित, श्री नय विमल, जनानंदकारी ॥ तस सेवक संजम, धार सुधीरके, धीर विमल गणी, जयकारी ॥ तास पदांबुज, भृंग समान, श्रीनयविमल, महाव्रत धारी॥ कहे एह छंद, सुणो भविवृंद, के भाव धरीने, भणो नरनारी ॥ ॥ २७ ॥ संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री संभवजिन विज्ञप्ति छंद ॥

॥ सुणो संभव स्वामी अरदास मोरी, लही भाग्यथीआज में भेट तोरी ॥ महा पुण्यना पूरथी नाथ पायो, हवे कष्ट भव दुष्ट दुरें नसायो ॥ १ ॥ गयो काल बालपणामां अनंतो, वस्यो मोहनी आणमां हूं भमंतो ॥ देखी मुख ताहरुं थयो उजमाल, लह्यो धर्मनो आज तारुण्य काल ॥ २ ॥ मिल्यो चर्म आवर्त मोटो सखाइ, पडयों पातलो मोह माहा दुःखदाइ ॥ ग्रंथि भेदनी तत्वनी दृष्टि पाइ, प्रभु ओलख्यो तुं अमोही अमाही ॥ ३ ॥ मेटयो आज मिथ्यात्वनो अंधकार, थयो शुद्ध सम्यकत्वनो ज्ञातकार ॥ रह्या वेगला काठिया कर्मकाठा, अनंतानु बंधी सवे दूर नाठा ॥ ४ ॥ हवे उल्लसी आपथी योगशक्ति, जागी चित्तमां ताहरी जोर भक्ति॥गयो आप आपें सहु भर्मजाल, भण्यों देव तुं एक जगमां दयाल ॥ ५ ॥ थयुं समरसें

चित्त शीतल सुचंग, भली वासना सेहेज संवेगरंग ॥गयो ताप निःपाप मारग निहाली, मिली चेतना सहचरी महारसाली ॥ ६ ॥ मिल्या सत्य संतोष आदें सुमित्र, शुभ ध्यान कल्लोल वाध्या विचित्र ॥ थयो गोपद प्राय संसार सिंधु, वश्यो तुं मन मंदिरे विश्वबंधु ॥ ७ ॥ जिहां गरुड तिहां नागनो नहिं प्रचार, समय दाव आवे तिहां मेघ-धार ॥ देखो केसरी गज घटा दूरें नासे, तुज ध्यानथी तेम संसार त्रासे ॥ ८ ॥ प्रभु तुं मिल्याथी हवे हुं सनाथ, कृपानाथ ते जन्म कीधो कृतार्थ ॥ टली आपदा संपदा सर्व आवी, प्रभु ताहरी भक्ति जो चित्त भावी ॥ ९ ॥ विराजो महाराज जो मुज्ज मन, न मागूं पछे तेहथी कांइ अन्य ॥ प्रथो वांछितो छेह देवो न किहांरे, महा पुरुष ते शरण आव्या सुधारे ॥ १० ॥ घणुं शुं कहूं स्वामी सर्वज्ञ आगें, तथापि प्रभुने कहूं भक्तिरागें ॥ अभेदें मिल्यो खीरने जिम नीर, जेहथी हंसनुं चित थाये सुधीर ॥११ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथनो छंद ॥

॥जय जय जगनायक पार्श्वजिनं, प्रणताखिल मानवदेवगणं ॥ जिनशासन मंडन स्वामि जयो, तुम दरिसण देखो आनंद भयो ॥ १ ॥ अश्वसेन कुलं वरभानुनिभं, नव हस्तशरीर हरि-तप्रतिभ ॥ धरणिंद्र सुसेवित पादयुगं, भर भासुरकांति सदा सुभगं ॥ २ ॥ निज रूपविनिर्जित रंभपतिं, वदनोद्युति शारद सोमततिं ॥ नयनांबुज दीप्ति विशालतरा, तिल कुसुम सन्निभ नासा प्रवरा ॥३॥

रसनामृत कंद समान सदा, दशनावलि अनार कली सुखदा ॥अध-रारुण विद्रुम रंगधनं, जय शंखपुराभिध पार्श्वजिनं ॥ ४ ॥ अवि चारु मुकुट मस्तक दीपे, कानें कुंडल रवि शशि झीपे ॥ तुम महिमा महि मंडल गाजे, नित्य पंच शब्द वाजां वाजे ॥ ५ ॥ सुर किन्नर विद्याधर आवे, नर नारी तोरा गुण गावे ॥ तुझ सेवे चोसठ इंद्र सदा, तुझ नामें नावे कष्ट कदा ॥ ६ ॥ जे सेवे तुझने भाव घणे, नवनिधि थाये घर तेह तणे ॥ अडवडियां तुं आधार कह्यो, समरथ साहिब में आज लह्यो ॥ ७ ॥ दुखियाने सुखडां तुं दाखे, अशरणने शरणे तुं राखे ॥ तुझ नामें संकट विकट टले, वीछडीयां वालां आवि मले ॥ ८ ॥ नट विट लंपट दूरें नासे, तुझ नामे चोर चरड त्रासे ॥ रण राऊल जय तुज नाम थकी, सघले आगल तुझ सेव-थकी ॥ ९ ॥ यक्ष राक्षस किन्नर सवि उरगा, करी केशरी दावानल विहगा ॥ वध बंधन भय सघलां जाये, जे एक मनां तुझने ध्याये ॥ १० ॥ भूत प्रेत पिशाच छली न शके, जगदीश तवाभिध जाप थके ॥ महोटा जोटिंग रहे दूरे, दैत्यादिकनां तुं मद चूरे ॥ ११ ॥ डायणी सायणी जाए हटकी, भगवंत थाय तुझ भजनथकी ॥ कपटी तुझ नाम लीया कंपे, दुर्जन मुखथी जीजी जंपे ॥ १२ ॥ मानी मछराला मुह मोडे, तेपण आगलथा कर जोडे ॥ दुर्मुख दुष्टादिक तुंही दमे, तुझ जापे महोटाम्लेच्छ नमे ॥ १३ ॥ तुझ नामे माने नृप सबला, तुज जश उज्ज्वल जेम चंद्रकला ॥ तुझ नामे पामे ऋद्धि घणी, जय जय जगदीश्वर त्रिजग धणी ॥ १४ ॥ चिंतामणि कामगवी पामे, हयगय रथ पायक तुझ नामे॥ जन पद ठकुराइ तुं आपे, दुर्जन

जननां दारिद्र कापे ॥ १५ ॥ निर्धनने तुं धनवंत करे, तुठो कोठार भंडार भरे ॥ घर पुत्र कलत्र परिवार घणो, ते सहुं महिमा तुम नाम तणो ॥ १६ ॥ मणि माणक मोती रत्न जड्या ॥ सोवन भुषण बहू सुघड घड्या ॥ वली पेहेरण नवरंग वेश घणा, तुम नामे नवि रहे कांइ मणा ॥ १७ ॥ वैरी विरुओ नवि ताकि सके, वली चाड चुगल मनथी चमके ॥ छल छिद्र कदा केहनो नलगे, जिनराज सदा तुझ ज्योति जगे ॥१८॥ ठग ठाकुर सवि थरहर कंपे, पाखंडी पण को नवि फरके ॥ लुंटादिक सहूं नासी जाए, मारग तुझ जपतां जय थाए ॥ १९ ॥ जड मूरख जे मति हीन वली, अज्ञान तिमिर तसु जाय टली ॥ तुझ समरणथी डाह्या थाये, पंडित पद पामी पूजाये ॥ २० ॥ खस खांशि खयन पीडा नासे, दूर्बल मुख दीनपणुं त्रासे ॥ गड गुंबड कुष्ट जिके सबलां, तुज झापें रोग समे सघला ॥ २१ ॥ गहिला गूंगा वहिरा य जिके, तुझ ध्यानें गतदूख थाय तिके ॥ तनु कांति कला सुविशेष वधे, तुज समरणशुं नवनिधि सधे ॥ २२ ॥ करि केसरी अहि रण बंध सया, जल जलण जलोदर अष्ट भया ॥ रांगण पमुहा सवि जाय टली, तुज नामे पामें रंग रली ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीँअर्हं श्रीपार्श्व नमो, नमिऊण जपंतां दुष्ट दमो ॥ चिंतामणि मंत्र जिके ध्याये, तिण घर दिन दिन दोलत थाये ॥ २४ ॥ त्रिकरण शुद्धें जे आराधे, तश जश कीर्ति जगमां वाधे ॥ वली कामित काम सवे साधे, समहित चिंतामणि तुझ लाधे ॥ २५ ॥ मद मच्छर मनथी दूर तजे, भगवंत भली परे

जेह भजे ॥ तसघर कमला कल्लोल करे, वली राज्य रमणी बहु लील वरे ॥ २६ ॥ भय वारक तारक तुं त्राता, सज्जन मन गति मतिनो दाता ॥ मात तात सहोदर तुं स्वामी, शिवदायक नायक हितकामी ॥ २७ ॥ करुणाकर ठाकुर तुं महारो, निशिवासर नाम जपुं ताहारो ॥ सेवकशुं परम कृपा करजो, वालेसर वंछित फल देजो ॥ २८ ॥ जिनराज सदा तुं जयकारी, तुज मूर्त्ति अति मोहन गारी ॥ गुज्जर जनपदमांहे राजे, त्रिभुवन ठकुराई तुझ छाजे ॥ २९ ॥ इम भाव भले जिनवर गायो, वामासुत देखी बहु सुख पायो ॥ रवि मुनि शशि संवच्छर रंगे, जयदेवसुरमां सुख संगे ॥ ३० ॥ जय शंखपुराभिध पार्श्व प्रभो, सकलार्थ समीहित देहि विभो ॥ बुध हर्ष- रुचि विजयाय मुदा, तप लब्धिरुचि सुख दाय सदा ॥ ३१ ॥ कलश ॥ इच्छं स्तुतः सकलकामितसिद्धिदाता, यक्षाधिराजनतशं- खपुराधि राजः ॥ स्वस्ति श्री हर्षरुचिपंकजसुप्रसादात्, शिष्येण ल- ब्धरुचिनेति मुदा प्रसन्नः ॥ ३२ ॥ इति श्रीपार्श्व० ॥

॥ श्री पार्श्वनाथनो छंद ॥

॥ आपण घर बेठा लील करो, निज पुत्र कलत्रशुं प्रेम धरो ॥ तुमे देश देशांतर कांइ दोडो, नित्य पास जपो श्री जिन रुडो ॥१॥ मन वांछित सघळां काज सरे, शिर उपर छत्र चामर धरे ॥ कल- मल आगल चाले घोडो ॥ नित्य० ॥ २ ॥ भूत प्रेत पिशाच वळो, सायणि डायणि जाय टळी ॥ छळ छिद्र न कोइ लागे जूडो ॥

नित्य० ॥ ३ ॥ एकांतर ताव सियो दाह, औषध विण जाये क्षण मांह ॥ नवि दुःखे माथुं पग गुडो ॥ नित्य० ॥ ४ ॥ कंठमाळा गड गुंबड सबळा, तस उदर रोग टळे सघळा ॥ पीडा न करे फिन गळ फोडो ॥ नित्य० ॥ ५ ॥ जागतो तीर्थंकर पास बहु, एम जाणे सघळो जगत सहु ॥ ततक्षण अशुभ कर्म तोडो ॥ नित्य० ॥ ६ ॥ पास वाणारशि पुरि नगरी, तिहां उदयो जिनवर उदय करी ॥ समय सुंदर कहे करजोडी ॥ नित्य पास जपो श्री जिन रुडो ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीभीडभंजन पार्श्वनाथनो छंद ॥

॥ झुलणा छंद ॥ राग प्रभाती ॥ मात पृथ्वी सुत प्रात उठी नमो—ए देशी ॥

॥ भीड भंजन प्रभु, भीड भंजन सदा, नहिं कदा निष्फल थाय सेवा ॥ भविजन भावशुं, भजनमांही भजे, परमपद संपदा तखत लेवा ॥१॥ काशीं वणारशी, जिनपद पुरे जयो, वामा अश्वसेन सुत विश्व दीवो ॥ सेढी वत्रक तटे, खेटक पुर तपे, कलयनी कोड कृपाल जीवो ॥ २ ॥भीड भव भिति भय, भावठ भंजणो, भक्ति जन रंजणो, भावे भेटयो ॥ आज जिनराज मुज, काज सिद्धांसवे, मोह राजाननो मान मेटयो ॥ ३ ॥ कोडि मन कामना, सुजस बहु ठामना, शिव सुख धामना आज साध्यां ॥ मंगल मालिका, आज दीपालिका, मुज मन मंदिरें मोज वाध्या ॥ ४ ॥ पाठकें ठाठमें, कान्ति

वद आठमें, सत्तर अठयोत्तरें पास गायो॥ उदय निज दासनी, एह अरदास सुणि, हित धरी नाथजी हाथ साह्यो ॥५॥इति॥

॥ अथ श्री महावीरजिन छंद ॥

॥ त्रिभंगी छंद. ॥ जिनशासन स्वामी, अंतरजामी, शिवगति गामी, सुखकारी ॥ जगमें जसवंता, श्री भगवंता, सुगुण अनंता, उपगारी ॥ सिद्धारथ कुळ आया, जगत सुहाया, शुभपळ जाया, गुणधारी ॥ धन त्रिशला नंदन, कुळध्वज स्यंदन, जिन चरणनकी बलिहारी ॥ १ ॥ आसन कंपाया, सुरपति आया, शीश नमाया, शुभ भावे ॥ वैक्रियकी पासे, मेली उलासे, ले जिन तासें, गिरि आवे ॥ तिहां प्रभुजोनो, महोच्छव कीनो, फिर मुक दीनो, ज्यां महत्तारी ॥ धन त्रिशला० ॥ २ ॥ युग वंदणा करके, निद्रा हरके, स्तवन उचरके, घर जावे ॥ भइ रवि उगाइ, भूधव तांइ, दासी वधाइ, दरसावे ॥ नृप महोच्छव कोनो, दान ज दीनो, हर्षत हैयो, नीहारी ॥ धन० ॥ ३ ॥ योवन वय मांही, नारी व्याही, अवसर पाही, जोग ग्रहे ॥ तपस्या तन तावे, सम दम भावे, ध्यान सुध्यावे, कष्ट सहे ॥ प्रभु क्षमासागर, ज्ञान उजागर, गुण रत्नागर, अघ वारी ॥ धन० ॥ ४ ॥ शुद्ध संयम पाळे, दूषण टाळे ॥ शिवमग चाले, जग त्राता ॥ क्रोध मान ने माया, लोभ हठाया, मोह भगाया, अ-रिघाता ॥ शूकळ मम ध्याया, कर्म खपाया ॥ केवळ पाया, जिन-वारी ॥ धन० ॥ ५ ॥ सुणि नाथ वडाइ, मन अकडाइ, आया ब-

लाइ, प्रभु पासे ।। विस्मय अति पाया, चित्त लजाया, गर्व गमाया, वीमासे ।। प्रभु भर्म मिटाया, जिन मग आया, संजम ठाया, तिण सारी ।। धन० ।। ६ ।। परथम इंद्रभूति, पूरवधर श्रुति, त्रिपदि संयुति, फरमाया ।। गणधर पद लीना, परम प्रवीना, समदम भीना, तन ताया ।। चुम्मालीशे लारा, गणधर इग्यारा, भये अणगारा, व्रतधारी ।। धन० ।। ७ ।। चार तीरथ थाप्यां, पाप उथाप्यां सुव्रत आप्यां, नर नारी ।। केइ स्वर्ग सिधाया, केइ शिव पाया, श्री जिनराया, हितकारी ।। शैलेशी भावे, प्रभु शिव पावे, जगमे नावे, अविकारी ।। धन० ।। ८ ।। प्रभु अलख निरंजन, भवदुःख भंजन, भविजन रंजन, किरपाळा ।। जे शुद्ध मन ध्यावे, दुःख पुलावे, सुख उपावे, प्रतिपाळा ।। कहे ऋषि तिलोका, नीरत थोका, देजो शिव थोका, भव पारी ।। धन० ।। ९ ।। इति. ।।

।। अथ श्री महावीर स्वामीनो छंद ।।

।। वीर जिनेश्वर केरो शिष्य—ए देशी ।।

।। श्री सिद्धारथ कुळ शणगार, त्रिशलादे सुत्त जग आधार ।। शोभे सुंदर सोवन वान, शरण तमारु श्री वर्द्धमान ।।१।। तुम नामे लहिये संपदा, तुम नामे मन वंछित मुदा ।। तुम नामे लहिये सनमान, शरण० ।। २ ।। दुर्जन दुष्ट वैरि विकराळ, तुम नामे नासे ततकाळ ।। तुम नामे दिन दिन कल्याण, शरण० ।। ३ ।। तुम नामे नावे आपदा, भूत प्रेत व्यंतर नहि कदा ।। रोग शोग चिंता नवि

जाण, शरण० ॥ ४ ॥ ग्रहादिक पीडा नवि करे, नाम तमारुं जे अनुसरे ॥ धर्मसिंह मुनि भाव प्रधान, शरण तमारुं श्री वर्द्धमान ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शांतिनाथस्वामीनो छंद. ॥

॥ वीर जिनेशर केरोशिष्य—ए देशी ॥

॥ शांतिनाथको कीजे जाप, कोड भवोना कापे पाप ॥ शांतिनाथजी म्होटा देव, सुर नर सारे जेहनी सेव ॥ १ ॥ दुःख दारिद्र जावे दूर, सुख संपति होवे भरपूर ॥ ठग फांसीगर जावे भाग, बळती होवे शीतळ आग ॥ २ ॥ राजलोकमां कीर्ति घणी, शांति जिनेश्वर माथे धणी ॥ जो ध्यावे प्रभुजीनुं ध्यान, राजा देवे अधिकुं मान ॥ ३ ॥ गड गुंबड पीडा मिट जाय, देखी दुश्मन लागे पाय॥ सघळो भाग्यो मननो भर्म, पाम्यो समकित काट्यां कर्म ॥ ४ ॥ सुणो प्रभु मोरी अरदाश, हुं सेवक तमे पूरो आश ॥ मुज मन चिंतित कारज करो, चिंता आरति विघ्नज हरो ॥ ५ ॥ मेटो म्हारां आळ जंजाळ, प्रभु मुजने तुं नयण निहाळ ॥ आपनो कीर्ति ठामो ठाम, सूधारो प्रभु म्हारां काम ॥ ६ ॥ जो नित्य नित्य प्रभुजोने रटे, मोतीबंधा फूला कटे ॥ चेप लावण दोनुं जळ जाय, विण औषध कट जावे छाय ॥ ७ ॥ शांतिनाथना नामथी थाय, आंखे टूट पडळ कट जाय ॥ कमळो पीळो जळ जळ झरे, शांति जिनेश्वर शाता करे ॥८॥ गरमी व्याधि मिटावे रोग, सज्जन मित्रनो मळे

संयोग ॥ एहवो देव न दीसे ओर, नहि चाले दूश्मनको जोर ॥९॥ लुंटारा सब जावे नास, दुर्जन फीटो होवे दास ॥ शांतिनाथनी कीर्त्ति घणी, कृपा करो तमे त्रिभुवन धणी ॥१०॥ अरज करुं छुं जोडी हाथ, आपथुं नहि कोई छानी वात ॥ देखि रह्या छो पोते आप, काटो प्रभुजी म्हारां पाप ॥ ११ ॥ मुज मन चिंतित करिये काज, राखो प्रभुजी म्हारी लाज ॥ तुम सम जगमांहि नही कोय, तुम भजवाथी शाता होय ॥ १२ ॥ तुम पास चले नहि मरको रोग, ताव तेजरो नांखे तोड ॥ मारि मिटाइ कोधी प्रभु संत, तुज गुणनो नहि आवे अंत ॥ १३ ॥ तुमने समरे साधु सती, तुमने समरे जोगी जती ॥ काटो संकट राखो मान, अविचळ पदनुं आपो थान ॥१४॥ संवत अढार चोराणुं जाण, देश माळवो अधिक वखाण ॥ शेहेर जावरा चैतर मास, हुं प्रभु तुम चरणांको दास ॥ १५ ॥ ऋषि रूगनाथजी कीधो छंद, काटो प्रभुजी म्हारा फंद ॥ हुं जोउं प्रभुजी-नी वाट, मुज आरति चिंता सवि काट ॥१६॥इति॥

॥ अथ श्री वीतरागाष्टकं छंद ॥

॥ भुजंग प्रयातं ॥

॥ शिवं शुद्धबुद्धं परं विश्वनाथं, न देवो न बंधुर्न कर्म न कर्त्ता ॥ न अंगं न संगं न चेच्छा न कामं, चिदानंदरूपं नमो वीतरागं ॥१॥ न बंधो न मोक्षो न रागादि लोकं, न योगं न भोगं न व्याधिर्न शोकं ॥ न क्रोधं न मानं न माया न लोभं ॥ चि० ॥ २ ॥ न

हस्तौ न पादौ न घ्राणं न जिव्हा, न चक्षुर्न कर्णं न वक्त्रं न निद्रा ॥ न स्वामी न भृत्यं न देवो न मर्त्यं ॥ चिं० ॥ ३ ॥ न जन्मं न मृत्युर्न मोदं न चिंता, न क्षुद्रो न भीतो न कृश्यं न तंद्रा॥न स्वेदं नखेदं न वर्णं न मुद्रा ॥ चि० ॥४॥ त्रिदंडे त्रिखंडे हरे विश्वनाथं, हृषीकेश विध्वस्तकर्मारिजालं, न पुण्यं न पापं न चाक्षादि प्राणं ॥ चि० ॥ ५ ॥ न बालो न वृद्धो न तुच्छो न मूढो, न खेदं न भेदं न मूर्तिर्न मेघ, न कृष्णं न शुक्लं न मोहं न तंद्रा ॥ चि० ॥ ६ ॥ न आद्यं न मध्यं न अंतं न मान्या, न द्रव्यं न क्षेत्रं न कालो न भावाः, न गुर्वो न शिष्यो न हीनं न दीनं ॥ चि० ॥ ७॥ इदं ज्ञानरूपं स्वयं तत्व, वेदी, न पूर्णं न शून्यं न चैत्यस्वरूपी ॥ न अन्योऽन्य भिन्नं न परमार्थमेकं ॥ चि० ॥ ८ ॥ शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ॥ आत्मारामगुणाकरं गुणनिधिं, चैतन्यरत्नाकरं, सर्वे भूतगतागते सुखदुःखे, ज्ञाते त्वया सर्वगे ॥ त्रैलोक्याधिपते स्वयं स्वमनसा, ध्यायंति योगीश्वरा, वंदे तं हरिवंशहर्षहृदयं, श्रीमान् हृदाम्युन्नतं ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री गौतम स्वामीनो छंद ॥

॥ देशी उपरनी ॥

॥ जयो जयो गौतम गणधार, म्होटी लब्धी तणो भंडार ॥ समरे वांछित सुख दातार, जयो जयो गौतम गणधार ॥ १ ॥ वीर वजीर वडो अणगार, चौद हजार मुनि शिरदार ॥ जपतां नाम हुवे जयकार ॥ जयो० ॥ २ ॥ गय गमणी रमणी जग सार, पुत्र

कलत्र सज्जन परिवार ॥ आपे कनक कोडी विस्तार ॥ जयो० ॥ ३ ॥ घेर घोडा पायक नही पार, सुखासन पालखी उदार ॥ वैरी विकट थाये विसराळ ॥ जयो० ॥ ४ ॥ मह उठी जपीये गणधार, ऋद्धि सिद्धि कमळा दातार ॥ रुप रेख मयण अवतार ॥ जयो० ॥ ५ ॥ कवि रुपचंद गुण केरो शिष्य, गौतम गुरु प्रणमो निश दिश ॥ कहे चंद ए सुमतागार ॥ जयो० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पांसठिया यंत्रनो छंद ॥

॥ वीर जिनेश्वर केरो शिष्य—ए देशी ॥

॥ श्री नेमीश्वर संभव शाम, सुविधि धर्म शांति अभिराम ॥ अनंत सुव्रत नमिनाथ सुजाण, श्री जिनवर मुज करो कल्याण ॥१॥ अजि नाथ चंद्रप्रभ धीर, आदीश्वर सुपास गंभीर ॥ विमळनाथ विमळ जग जाग, श्री जिनवर मुज करो कल्याण ॥ २ ॥ मल्लिनाथ जिन मंगळ रुप, पचवीश धनुष सुंदर स्वरुप ॥ श्री अरनाथ नमुं वर्द्धमान, श्री जिनवर० ॥ ३ ॥ सुमति पद्मप्र अवतंम, वासुपूज्य शीतल श्रेयांस ॥ कुंथु पार्श्व अभिनंदन भाण, श्रीजिनवर० ॥ ४ ॥ इणिपरै जिनवर संभारीये, दुःख दारिद्र विघ्न निवारीये ॥ पचीशे पांसठ परिमाण ॥ श्री जिनवर० ॥ ५ ॥ इम भणतां दुःख नावे कदा, निज पासे जो

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

राखो सदा ॥ धरिये पंचतणुं मन ध्यान, श्री जिनवर० ॥ ६ ॥ श्री जिनवर नामे वंछित मळे, मन वंछित सहु आशा फळे ॥ धर्मसिंह मुनि नाम निधान, श्री जिनवर मुज करो कल्याण ॥७॥इति॥

॥ अथ श्री तावनो छंद ॥

॥ दोहा ॥ नमो आनंदपुर नगर, अजयपाळ राजान ॥ माता अजया जनमियो, ज्वर तुं कृपानिधान ॥ १ ॥ सात रुप शक्ति हुओ, करवा खेल जगत्त ॥ नाम धरावे जूजूवां, प्रसर्यो तुं इत उत्त ॥ २ ॥ एकांतरो बेयांतरो, त्रइयो चोथो ताम ॥ शीत उष्ण विषमज्वरो, ए साते तुज नाम ॥ ३ ॥

॥ छंद ॥ ए साते तुज नाम सुरंगा, जपतां पूरे कोडि उमंगा ॥ तें नाम्या जे जालिम जुंगा, जगमां व्यापी तुज जस गंगा ॥४॥ तुज आगे भूपति सब रंका, त्रिभुवनमां वाजे तुज डंका ॥ माने नहि तुं केहनी शंका, तूठ्यो आपे सोवन टंका ॥ ५ ॥ साधक सिद्ध-तणा मद मोडे, असुर सुरा तुज आगळ दोडे ॥ दुष्ट धिठ्ठनां कंधर तोडे, नमि चाले तेहने तुं छोडे ॥ ६ ॥ आवंतो थरहर कंपावे, डाह्याने जिम तिम बहकावे ॥ पहिलो तुं केडमांथी आवे, सात शिखर पण शीत न आवे ॥ ७ ॥ हीं हीं हुं हुंकार करावे, पांसळियां हाडां कडडावे ॥ उनाळे पण अमल जगावे, तापे पहिरणमां मुतरावे ॥ ८ ॥ आसो कार्तिकमां तुज जोरो, हठ्यो न माने धागो दोरो ॥ देश विदेश पडावे सोरो, करे सबळ तु तातो तारो ॥ ९ ॥ तुं

हाथीनां हाडां भंजे, पापीने ताडे कर पंजे ॥ भक्तवत्सळ भावे जो रंजे, तो सेवकने कोय न गंजे ॥ १० ॥ फोडक तोडक डमरु डाकं, सुरपति सरिखा माने हाकं ॥ धमके धूसड धासड धाकं, चढतो चाले चंचळ चाकं ॥ ११ ॥ पिशुन पछाडण नही को तोथी, तुज जस बोल्या जाय न कोथी ॥ सी अणखील करोए थोथी, महेर करी अलगा रहो मोथी ॥ १२ ॥ भक्त थकी एवडी कां खेडो, अवल अमिना छांटा रैडो ॥ लाखा भक्तनो ए निवेडो, महाराज मूको मुज केडो ॥ १३ ॥ लाजवशो मा अजया राणी, गुरु आण मानो गुणखाणी ॥ घरे सिधावो करुणा आणी, कहुं छुं नाके लीटी ताणी ॥ १४ ॥ मंत्र सहित ए छंद जे पढशे, तेहने ताव कदी नवि चढशे ॥ कांति कळा देही निरोग, लहेशे लखमी लीला भोगं ॥१५॥

॥ कलश छप्पय ॥ ॐ ॥ नमो धरि आदि, बीज गुरु नाम वंदीजे ॥ आनंदपुर अवनीश, अजयपाळ आखीजे ॥ अजया जात अढार, वांचिये साते बेटा ॥ जपनां एहिज जाप, भक्तशुं न करे मेटा ॥ उतरे चढियो अंग, पळमें तुज वयणे मुदा ॥ कहे कांति रोग नावे कदो, सार मंत्र गहिये सदा ॥ १६ ॥ इति. ॥ ए छंद सात वार, चौद वार अथवा एकवीश वार सांभळे अथवा गणे, तो ताव जतो रहे. इति तावनो छंद संपूर्ण ॥

॥ अथ नवकारनो छंद ॥

॥ दोहा ॥ वंछित पूरे विविध परें, श्री जिन शासन सार ॥ निश्चें श्री नवकार नित, जपतां जय जयकार ॥ १ ॥ अडसठ अक्षर

अधिक फल, नव पद नवे निधान ॥ वीतराग स्वयंमुख वदे, पंच परमेष्ठि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समरयां संपति थाय ॥ संचित सागर सातनां, पातक दूर पलाय ॥ ३ ॥ सकल मंत्र शिर मुकुटमणि, सद्गुरु भाषित सार ॥ सो भविया मन शुद्धशुं नित जपिएं नवकार ॥ ४ ॥ छंद हाटकी ॥ नवकारथकी श्रीपाल नरशेर, पाम्यो राज्य प्रसिद्ध ॥ समशान विषे शिव नाम कुमरनें, सोवन पुरिसो सिद्ध ॥ नव लाख जपंतां नरक निवारै, पामे भवना पार ॥ सो भवियां भक्तें चोखें चितें, नित्य जपीये नवकार ॥ ५ ॥ बांधि वड शाखा शिंके बेसि, हेठल कुंड हुंताश ॥ तस्करनें मंत्र समप्यों श्रावकें, ऊड्यो ते आकाश ॥ विधिरीते जप्यो विषधर विष टाले, ढाले अमृत धार ॥ सो० ॥ ६ ॥ बीजोरा कारण राय महाबल, व्यंतर दुष्ट विरोध ॥ जेणें नवकारें हत्या टाली, पाम्यो यक्ष प्रतिबोध ॥ नव लाख जपंतां थाए जिनवर, इस्यो छे अधिकार ॥ सो० ॥ ७ ॥ पल्लिपति शिख्यो मुनिवर पासे, महा मंत्र मन शुद्ध ॥ परभव ते राजसिंह पृथिवीपति, पाम्यो परिगल ऋद्ध ॥ ए मंत्रथकी अमरापुर पोहोतो, चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ॥ ८ ॥ संन्यासी काशी तप साधंतो, पंचाग्नि परजाले ॥ दीठो श्रीपास कुमारें पन्नग, अधबलतो ते टाले ॥ संभलाव्यो श्री नवकार स्वयंमुख, इंद्रभुवन अवतार ॥ सो० ॥ ९ ॥ मनशुद्धें जपतां मयणासुंदरी, पामी प्रिय संयोग ॥ इण ध्याने कष्ट टल्युं उंबरनुं, रक्त पित्तनो रोग ॥ निश्चेशुं जपतां नवनिधि थावे, धर्म तणो आधार ॥ सो० ॥ १० ॥ घटमांहि

कृष्ण भुजंगम घाल्यो, घरणी करवा घात ॥ परमेष्ठि प्रभावे हार फूलनो, वसुधामांहि विख्यात ॥ कमलावतीयें पिंगल कीधो, पाप तणो परिहार ॥ सो० ॥ ११ ॥ गयणांगण जाति राखी ग्रहिने, पाडी बाण बहार ॥ पद पंच सुणंतां पांडुपति घर, ते थई कुंता नार ॥ ए मंत्रअमुलक महिमां मंदिर, भव दुःख भंजण हार ॥सो० ॥ १२ ॥ कंबलने संबल कादव काढ्यां, शकट पांचशें मान ॥ दीधे नवकारें गया देवलोकें, विलसे अमर विमान ॥ ए मंत्रथकी संपति वसुधातलें, बिलसे जैन विहार ॥ सो० ॥ १३ ॥ आगें चोवीशी हुई अनंती, होशे वार अनंत ॥ नवकार तणी कोइ आदि न जाणे, इम भांखे अरिहंत ॥ पुरव दिशि चारें आदि प्रपंचे, समर्यां संपति सार ॥ सो० ॥ १४ ॥ परमेष्ठि सुरपद ते पण पामे, जे कृतकर्म कठोर ॥ पुंडरगिरि उपर प्रत्यक्ष देख्यो, मणिधरने एक मोर ॥ सह गुरुने सन्मुख विधि समरतां, सफल जन्म संसार ॥ सो० ॥ १५ ॥ शूलिका रोपण तस्कर कीधो, लोहखरो परसिद्ध ॥ तिहां शेठे नवकार सुणाव्यो, पाम्यो अमरनी ऋद्ध ॥ शेठने घर आवी विघ्न निवार्यो, सुरें करी मनोहार ॥ सो० ॥ १६ ॥ पंच परमेष्ठि ज्ञानज पंचह, पंच दान चारित्र ॥ पंच सज्झाय महाव्रत पंचह, पंच सुमति समकित्त ॥ पंच प्रमादह विषय तजो पंच, पालो पंचाचार ॥ सो० ॥ १७ ॥ कलश छप्पय ॥ नित जपीये नवकार, सारसंपति सुखदायक ॥ शुद्ध मंत्र ए शाश्वतो, इम जंपे श्री जगनायक ॥ श्री अरिहंत सुसिद्ध, शुद्ध आचार्य भणीजे ॥ श्री उवज्झाय सुसाधु, पंच परमेष्ठि थुणीजें ॥

नवकार सार संसार छे, कुशल लाभ वाचक कहे ॥ एकचित्त आराधतां, विविध रूद्धि वंछित लहे ॥ सा० ॥ १८ ॥ इति नवकार छंद ॥

॥ अथ श्री शोल सतीनो छंद ॥

॥ आदि नाथ आदें जिनवर वंदी, सफल मनोरथ कीजियें ए ॥ प्रभातें उठी मंगलिक कामे, शोल सतीनां नाम लीजोयें ए ॥ १ ॥ बाल कुमारी जग हितकारी, ब्राह्मी भरतनी बेहेनडी ए॥ घट घट व्यापक अक्षर रूपें, सोळ सतीमांहि जे वडी ए ॥ २ ॥ बहुबल भगिनीं सतीय शिरोमणि, सुंदरी नामें ऋषभ सुता ए ॥ अंग स्वरूपी त्रिभुवनमांहि, जेह अनुपम गुणजुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला बालपणाथी, शीयलवती शुद्ध श्राविका ए ॥ अडदना बाकुला वीर प्रती लाभ्यां, केवल लही व्रत भाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुआ धारिणी नंदनी, राजिमती नेम वल्लभा ए ॥ जोबन वेशें कामने जीत्यो, संयम लेइ देव दुल्लभा ए ॥ ५ ॥ पंच भरतारी पांडव नारी, द्रुपद तनया वखाणीए ए ॥ एक शो आठें चीर पूराणां, शियल महिमा तस जाणिएं ए॥६॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम, कौशल्या कुलचंद्रिका ए॥ शियल सलुणी राम जनेता, पुण्य तणी परनालिका ए ॥७॥ कोशंबिक ठामें संतानिक नामें, राज्य करे रंग राजीयो ए॥ तस घर घरणी मृगावती सती, सुरभुवनें जश गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची शियलें न काची, राची नही विषयारसें ए ॥ मुखडुं जोतां पाप पलाए, नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी

तेहनी कामिनी, जनकसुता सीता सती ए ॥ जगसहुं जाणे धीज करंतां, अनल शीतल थयो शीयलथी ए ॥ १० ॥ काचे तांतणे चालणी बांधो, कूवा थकी जल काढीयुं ए ॥ कलंक उतारवा सतीय सुभद्रा, चंपा बार उघाडीयुं ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शियल अखंडित, शीवा शिवपद गामिनी ए ॥ जेहने नामें निर्मल थइयें, बलिहारी तस नामनी ए ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुरें पांडुरायनी, कुंता नामे कामिनी ए ॥ पांडव माता दशें दशारनी, बेहेन पतिव्रता पदमिनी ए ॥ १३ ॥ शीलवती नामे शीलव्रत धारिणी, त्रिविधें तेहने वंदीयें ए ॥ नाम जपंतां पातक जाए, दरिसण दुरित निकंदीये ए ॥ १४ ॥ निषिधा नगरी नलह नरिंदनी, दमयंती तस गेहिनी ए ॥ संकट पडतां शीयलज राख्युं, त्रिभुवन कीर्ती जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजिता जगजन पूजिता, पुष्पचूला ने प्रभावती ए ॥ विश्वविख्याता कामित दाता, शोलमी सती पदमावती ए ॥ १६ ॥ वीरें भांखी शास्त्रे सांखी, उदय रतन भांखे मुदा ए ॥ वाहाणुं वातां जे नर भणशे, ते लेहेशे सुख संपदा ए ॥ १७ ॥ इति शोलसतीनो छंद ॥

॥ अथ श्री शीखामणनो छंद ॥

॥ त्रोटकवृत्तम् ॥ वरदायक माय सलाम करी, कहुं सार शिखामण एक खरी ॥ नर नारि सहु हैडे धरिये, जिम आपद संकट उद्धरिए ॥ १ ॥ परभात समे गुरु देव नमो, जिम दारिद्र दोहग दूर गमो ॥ भगवंत सदा चरणां भजिये, कुळ रीति कछु कबु ना

तजिये ॥ २ ॥ लडिये नहि मायने बाप थकी, वडिये नहि कोयथी बांधि जकि ॥ विशवास न कीजे नारितणो, गुरुराज समीपथी ज्ञान भणो॥ ३ दरबार अलीकन ना भखिये,घरभींतर साक्षी नहि लिखिए॥ रखिये नहि चाड पडोश सदा, तरीये नहि नोर सजोर कदा ॥४॥ व्यवसाय सहु विधिसें करिये, ठग दाव रमी धन ना भरिये ॥ परदेशमां गाफल ना फरिये, नरपति थकी डरता रहिये ॥ ५ ॥ जुगटा व्यसनी परि ना रमिये, ऋषि साध अनाथकुं ना दमिये ॥ करिये नहि आळ अगन्नी तणी, वळि दीजिये शीख सुमित्त भणी ॥ ६ ॥ गुरु आसन उपर ना धसिये, दुर्जननी संगते ना वसिये ॥ वळि धीज न कीजिये जूठ किसी, घणी वार न कीजिये वात हसी ॥७॥ वयणां मुख बोल्हह ते पळिये, सज्जनथी स्नेह धरी मळिये ॥ परनारीनी संगत दूर तजो, परमारथ कारज नित्य भजो ॥ ८ ॥ सुखकार शिखामग एम कहे, कवि उत्तम ते जयमाळ लहे ॥ गुरुचार लहु अठ दीह धरो, इम त्रोटक नामह छंद खरो ॥ ९ ॥ इति ॥

लावणीयोनो संग्रह.

॥ श्री आदिनाथजीनी लावणी पहेली ॥

॥ श्री आदिनाथ निर्वाणी, नमुं में ध्यानी ॥ नमुं० ॥ भवि

जीव तरनके काज, बनाई वानी ॥ तुम नाभि राय कुलधारी, बडे अवतारी ॥ बडे० ॥ खुल रही खलकमें खूब, केसरकी क्यारी ॥ तुम ममता मनकी मारी, आतमा तारी ॥ आत० ॥ तज दीनी मीत विषयनकी जान कर खारी॥तुम करी मुक्ति पद राणी, जगतमें जानी ॥ जग० ॥ भवि० ॥ १ ॥ जाण्या सुर नर सुखराशि, हुआ हे उदासी ॥ हु०॥ जल गई जबर जंजाल, जगतकी फांसी ॥ तुम जगतपति अविनासी, मुक्तिके वासी ॥ मु० ॥ शिवमंदिरमें सुख सेज, बिछाई खासी ॥ तुम करी सफल जिंदगानी, मेरे मन मानी ॥मेरे० भवि०॥२॥ बडे ज्योतिवंत जिनराज, जगतमें वाजे॥जगत०॥ तेरो दरिसन हे सुखदायि, सुधारे काजे ॥ तेरी धुनी गगनमें गाजे, वे सुरपति लाजे ॥ वे सु० ॥ गल गया गरव पाखंड, कामना भाजे ॥ नाटक नाचे इंद्राणी, अधिक धुनि आणी ॥ अधिक० ॥ भवि० ॥ ३ ॥ तेरी महिमा कहिय न जावे, पार नहिं पावे ॥ पार० ॥ गंधर्व सुरपति सब देव, तेरे गुन गावे ॥ तेरे चरनुमें लपटाइ, सरस लय लावे ॥ सरस० ॥ नर नार हियाके मांहे, भक्ति तेरी चहावे ॥ तेरी तृष्णा सब विरलाणी, मुक्तिकुं ठाणी ॥ मु० ॥ भवि० ॥ ४ ॥मरु देवी कूखका जाया, अमर पद पाया ॥ अमर० ॥छपन्न कुमारी नारी, मिली जस गाया ॥ दुर्गतिका दुःख विरलाया, सफल करी काया ॥ सफल० ॥ जिनदास निरंजन देख, सरन तेरे आया ॥ समकितकी महेज पीछान, मिली मोहे ठाणी ॥ मिली० ॥ भविजीव तरन० ॥ ५ ॥ ॥ १ ॥

—:०:—

॥ अथ श्रीशांतिनाथजीनो लावणी बीजी ॥

॥ श्री शांतिनाथ महाराज महाराज बिराजे, मांडवगढ मांहि॥ सरव धातुकी मूरत खासी, दरसनणे त्यांहिं ॥ शांति० ॥१॥ ओलु दोलु बावन देरा, बीच जिनेसरजो ॥ मानभद्र महाराज खडा हे, शोभा दर्शनकी ॥ शां० ॥ २ ॥ देश देशके आवे जातरा, दर्शनके त्यांहि ॥ सुंदर मूरत खूब रचना, मांडव गढमांहि ॥ शांति० ॥३॥ देख सुपना तेरे दर्शन आया, मांडव गढमांहि ॥ शो मण तो घी चढाया, दीपकके मांहिं ॥ शांति० ॥ ४ ॥ ऊडुथ सीका पंच आया, मांडवगढ मांहि ॥ अष्ट दरवकी पूजा करकें, गिनात जमवाई ॥ ॥ शांति० ॥ ५ ॥ सेवक अरज करे कर जोडी, मूरति में मागी ॥ शांतिनाथ दुर्बलके दाता, जनम मरण त्यागी ॥ शांति० ॥ ६ ॥

——:०:——

॥ अथ श्रीनेमजीनी लावणी त्रीजी ॥

॥ नेमजीकी जान बनी भारी, देखनकुं आये नर नारी ॥ ए आंकणी ॥ अनंता घोडा ओर हाथी, मनखरी गिनती नहीं आती ॥ ऊंट पर धजा जो फरराती, गमकसें फिरती फरराती ॥ दोहा ॥ समुद्रविजयका लाडिला, नेम ऊनूंका नाम ॥ राजूलदेकु आये परणवा, उग्रसेन घर ठाम ॥ प्रसन भई नगरी सब सारी ॥ नेमजीकी जान बनी भारी ॥ १ ॥ कसुंबल वाघा अति भारी, काने कुंडल छबि हे न्यारी ॥ कलंगी तूरा सुखकारी, माल गले मोतीयनकी डारी ॥ दोहा ॥ काने कुंडल झगमगे, शीश खूब झलकार ॥ कोडि

भानुंकी करूं उपमा, शोभा अधिक अपार ॥ बाज रह्यां वाजां टक-सारी ॥ नेम० ॥ २ ॥ छूट रही ऊनकी वरराई, ब्याहनमें आये बडे भाई ॥ झरूखे राजुलदे आई, जानकुं देखी सुखपाई ॥ दोहा ॥ उग्रसेनजी देखकें, मनमें करे विचार ॥ बहोत जीव करि एकठा, वाडो भरयो अपार ॥ करी सब भोजनकी त्यारी ॥ नेम० ॥ ३ ॥ नेमजी तोरण पर आये, पशुजीव सबही कुरलाये ॥ नेमजी वचन फरमाये, पशु जीव कायेकूं लाये ॥ दोहा ॥ याको भोजन होवसी, जान वासते एक ॥ एह वचन सुनी नेमजी, थरथर कांपे देह ॥ भावसें चढ गये गिरनारी ॥ नेम० ॥ ४ ॥ पीछेसुं राजुलदे आइ, हाथ जब पकड्यो छिनमांही ॥ कांहां तु जावे मेरी जाइ, और वर है तुझ मोकलाई ॥ दोहा ॥ मेरे तो वर एकही, हो गया नेम कुमार ॥ और भुवनमें वर नहिं, कोटी करो विचार ॥ दीक्षा जद राजुलने धारी ॥ नेम० ॥ ५ ॥ साहेल्यां सबही समजावे, हिये राजुलके नहिं आवे ॥ जगत सब जुठो दरसावे, मेरे मन नेम कुमर भावे ॥ दोहा ॥ तोड्या कंकण दोरडा, तोड्यो नवसर हार ॥ काजल टीकी पान सोपारी, त्याग्यो सब सणगार ॥ साहेल्यां सबही विलखाणी ॥ नेम० ॥६॥ तज्या सब सोले सिणगारा, आभूषण रत्नजडित सारां ॥ लगे मोहे सबही सुख आरा, छोड कर चाली निरधारा ॥ दोहा ॥ मात पिता परिवारकूं, तजतां न लागी वार ॥ विजोग कर चली आपथुं, जाय चढी गिरनार ॥ झूरती छोडी मा प्यारी ॥ नेम० ॥ ७ ॥ दया दिल पशुअनकी आई, त्याग जब कीनो छिनमांई ॥ नेम जिन

गिरनारे जाई, पशुके बंधन छुडवाई ॥ दोहा ॥ नेम राजुल गिरनारपें, लीनो संजम दान ॥ नवलराम करी लावनी, उपन्यो केवल ज्ञान ॥ जिनोकी किरिया बुद्धि सारी ॥ नेम० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीगोडी पारसनाथनी लावणी चोथी ॥

॥ जगत भविककज महेर अनंत गुण, तेज तपत हे श्री जिनको ॥ प्रगट प्रबल प्रताप परम गुण, सुणतां सुख दिये तन मनको ॥ नील कमल दल नव कर दीपे, देह हे गुणगणके वृंदा ॥ नमो निरंजन फणिपति सेवित, पास गोडीचा सुखकंदा ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मोह करी कुंभस्थल भेदन, कंठें रव प्रभु तुं सच्चा ॥ हरि हर इंद्र विरंचि देव गण, कर्म कीचमें पड कच्चा ॥ तुम सम ओर ठोर कुण जगमे, देव दूसरो जे वंदा ॥ नमो० ॥ २ ॥ तुं अकलंक सरूपी अरूपी, परमानंद पद तुं दायी ॥ तुं शंकर ब्रह्मा जगदीश्वर, वीतराग तु निर्मायी, अनुपम रूप देख तुझ रीज्या, सुर नर नारीके वृंदा ॥नमो० ॥ ३ ॥ जलहल ज्वाल बलत चिहुं कोरे, धूम घटागगनें चाली ॥ जलत काठ कोटर सर सर्पन, दरपत मरण दिशा आली ॥ जगत सरण दुःख हरण प्रबल प्रभु, कहत कमठ सुण जोगिंदा ॥ नमो० ॥ ४ ॥ तप जप करत धरत नहिं करुणा, वासें दुःख दोहंग पावे ॥ कहत कमठ नव अरुण नयन करी, जोग बात तुमकुं नावे ॥ पावक अंतर जलत नागकुं, वक हाथे निकसंदा ॥ न० ॥ ५ ॥ सुणी नवकार नाग जिन मुखसें, धरणींद्र पदवी पावे ॥ चंद कीरण उ-

ज्ज्वल जस पसरित, पास प्रभु निज घर आवे ॥ तजी संसार चरण प्रभु लीनो, ध्यान धरत मन आनंदा ॥ नमो० ॥ ६ ॥ ध्यान धरत प्रभु देखी कमठसुर, आय करी परिसह भारी ॥ गगन भाग चिहुं ओर घनाघन, घीर घटा उलटी धारी ॥ चंचल चपला होत चिहुं ओर, चंचल चंपलाके वृंदा ॥नमो०॥७॥ कटट काटका होत गगनमें, गडड गडड चिहुं दिशि गाजे ॥ फरर फरर घन पवन फुरत हे, तरुवर करड मरड भांजे ॥ छनन छनन पावस जड लागी, मूशल धारे वरसंदा ॥ नमो० ॥ ८ ॥ खलल खलल जगतीजल पसरत, छिनभर नाक तोडे आला ॥ मेरु परें प्रभु धीर रही तव, ध्यानरसें रहे मतवाला ॥ ततक्षण धरणरायको आसन, कपटी ध्यान ज्युं चालंदा ॥ नमो० ॥ ९ ॥ ततक्षण धरण राय अरु धरणी, आय नमत जिनकुं रंगें ॥ शिरपर छत्र धरे फणिगणको, शेष नाग डोलत अंगें ॥ हांक्यो कमठ सरण करि प्रभुको गयो निज स्थानक हर्षंदा ॥ नमो० ॥ १० ॥ नाचत धरणरायकी ललना, ठमक ठमक पग ठमकंती ॥ छमक छमक वींछुआ छमकावत, घम घम घुघरी घमकंती॥ ताल तान लयमान प्रकारं, नव नव छंदे नाचंदा ॥ नमो० ॥११॥ थप मप थप मप मादल धमके, करड करड करताल करे ॥ रण रण रणके रण रणकंती, जल्लरी नाद रसें पसरे ॥ दडड दडड दुकडां वाजे, भुंगल भेरीना वृंदा ॥ नमो० ॥ १२ ॥ वाजे श्रीमंडल सरणाई, वीणा ताळ कंसाल छटा ॥ टुक टुक मिलन मिलत एक एकुसें, जोर बनी तव रंग घटा ॥ प्रभु पण ज्ञान ध्यान लय लीना, मोडे कर्म अरिवृंदा ॥ नमो० ॥ १३ ॥ केवल ज्ञान लही प्रभु नि-

मेल, स्थापन चऊविह संघ करे ॥ चरण कमल सुररचित कमल शिर, धरत धरणि जन तिमिर हरे ॥ शत सम आयु करी प्रभु पूरग, सिद्ध वधू कर पकरंदा ॥ नमो० ॥ १४ ॥ अजर अमर अविनाशि निरंजन, सिद्ध बुद्ध समरो रंगें ॥ परम महोदय परमातम पद, लहियें जिन सेवन संगें ॥ रोग सोग दोहग दुःख जावे, पावे सोहग सुखकंदा ॥ नमो० ॥ १५ ॥ अरि करी जलण जलोदर जल भय, नाम जप्यां सहु दूर टले ॥ प्रभुपद पद्म सेवनसे कमला, रंग रसाला आय मिले ॥ रूपविजय कहे सुनत लावनी, पामे चित्त परमानंदा ॥ नमो० ॥ १६ ॥

॥ अथ श्रीवीरभगवाननी लावणी पांचमी ॥

॥ अनंतबली जिनराज जगतपति, चरण अंगुठे मेरु कंपाया ॥ देव देवी मिल करे वीनति, सब सुरपति आनंद पाया ॥ ए आंकणी ॥ तेरे गुणको महिमा अब पाइ, इतना गुनो बगसीस करो ॥ खमो अपराध प्रभु पापको, प्रेम नजर हम उपर धरो ॥ करि स्तुति उठे सुरि सुर सब, जन्म मोच्छव अब करणो खरो ॥ अधिक अधिक धरि हर्ष हियेमें, आलस अपने तनको हरो ॥ सुद्ध तन मनसें करो महोत्सव, शिव रमणाकुं सिताब वरो ॥ भगतिसें भर धर्यो हीयाकुं, अब दुर्गतिसुं काहेकुं डरो ॥ जनम मरनकुं मेट दिया है, सो जिन भक्तिसें नहाया ॥ देव० ॥ १ ॥ सुरनकी संपत सुख दायक, जिनवरकी ए भक्ति भली ॥ दोहिलो तुं मत होय जीवडा, अण तेडी

ऋद्ध आवे चली ॥ उठाय कलश हाथोमें लीना, सुरपतिका मन हुवा रली ॥ जय जय शब्द मुखसें सब बोले, विषय गये तस दूर टली ॥ हरख वदन कर सुर सब गावे, आनंद घडी मुझ आय मिली ॥ जन्म हमारो लेखे लग्यो हे, सुखकी सेज सुरलोक ढली ॥ धन धन हे जिनकी जिंदगानी, जिनवरका गुण मुख गाया ॥ देव०॥२॥ करे निरत जिनवरके आगें, वाजांकी धुन वाज रही ॥ सुरतका सुर नर हे सबला, महिमा मोसें न जाय कही ॥ अंग मोड हित जोड करे सब, सफल घडी मेरी आज भई ॥ उदय आनंद दिनकर घर उग्यो, कुमति कलेसण अलगी गई ॥ सुर नरका सुखकी नहीं गिनती, अमरापुर पद जाय लही ॥ छपन कुमारी जिनगुन गावे, मुखसूं कथन कर कीरति कही ॥ ऐसो उलट धरि करतां महोत्सव, हिरदे हरख अधिका आया ॥ देव० ॥ ३ ॥ मेरु शिखर पर कलस ढाल कर, हाथ जोड सुर आगें खडे ॥ में चरणोंका चाकर तेरा, अरज करे युं खडे खडे ॥ छत्र चमर ढाले जिनवर पर, ललि ललि सब सुर पाय पडे ॥ हुकम करो तो नीर नमणको, सब सुरपतिके सीस चडे ॥ इण विधिसें भक्ति जे करता, भव भवका सब पाप जडे ॥ तुम गुनको सुर पार नहिं ले, जिनदास कैसो कैसो रडे ॥ फूल सुगंधी नीर छटकता, सुर सब प्रभुकुं घर लाया ॥ देव० ॥ ४ ॥

॥ अथ श्रीसुगुरुनी लावणी छठी ॥

॥ नमुं नमुं में गुरु निग्रंथकुं, वे जिन मुद्राधारी हे ॥ पुद्गल ऊपर प्रेम न करता, मनकी ममता मारी हे ॥ न० ॥ १ ॥ गर्व गाल कर गुप्ति गोपवे, गति निर्ग्रंथकी न्यारी हे ॥ कनक कामिनीके नहिं भोगी, वे पूरा ब्रह्मचारी हे ॥ न० ॥ २ ॥ छकायाके जीव अनाथी, उनके वे हितकारी हे ॥ करम काट कर केवल पावे, ज्ञान गरथ गुण भारी हे ॥ न० ॥ ३ ॥ शुद्ध श्रद्धासें सुमति सेवी, निज आतमकु तारी हे ॥ जिनवरकुं जिनदास वीनवे, उनके चरण बलहारी हे ॥ न० ॥ ४ ॥

॥ कुगुरुनी लावणी सातमी ॥

॥ तजुं तजुं में उन कुगुरुकुं, कनक कामिनी धारी हे ॥ ज्ञान ध्यानकी बात न जाने, अष्ट करमसें भारी हे ॥ त० ॥ १ ॥ करी कपालें भभूत लपेटी, शिर पर जटा बधारी हे ॥ कान फाड कर मुद्रा पहेरता, उनके घरमे नारी हे ॥ त० ॥ २ ॥ जोगलेइ कर जीव विणासे, वे मद्य मांस आहारी हे ॥ कूडा पंथी जगतकुं करता, मुखसें कहे आचारी हे ॥ त० ॥ ३ ॥ कहुं आगुण कुगुरुका कब लग, साध नहिं संसारी हे ॥आप डुबे ओरकुं डुबावे, दुर्गतिका अधिकारी हे ॥ त० ॥ ४ ॥ समकित श्रद्धा जैनधर्मकी, नहिं कुगुरुको प्यारी हे ॥ जिनवरकुं जिनदास विनवे, कुगुरु संग खूवारी हे॥तजुं०॥५॥

॥ मिथ्यात्वीवर्णन लावणी आठमी ॥

॥ कंकरकुं शंकर करि माने, ए कुमतिकी बाता है ॥ आक धतूरा वेल पांतशुं, पूजन शिव रंग राता है ॥ कं० ॥ १ ॥ चंडी जीवका गला कटावे, लोक कहे ए माता है ॥ ताकुं पूज मगन मन मोहन, सो नर नरकै जाता है ॥ कं० ॥ कुगुरुशुं परभव दुःख पामे, नहिं तिलभर एक शाता है ॥ कुदेवकूं चेतन युं सेवत, हिंसा धर्म दुःखदाता है ॥ कं० ॥ ३ ॥ कुगुरु त्याग सुगुरु निज सेवे, नित्य निर्ग्रंथ गुण गाता है ॥ जिनवर गुण जिनदास वखाने, ए मुक्तिका खाता है ॥ कं० ॥ ४ ॥

॥ अथ सुमति कुमतिनी लावणी नवमी ॥

॥ हांरे तु कुमति कलेसण नार, लगी क्युं केडे ॥ लगी० ॥ चल सरक खडी रहे दूर, तुझे कुण छेडे ॥ ए आंकणी ॥ हारे तु सुमतिको भरमायो, मुझे क्युं छोडी ॥ मुझे० ॥ मेरी सदा शाश्वती प्रीत छिनकमे तोडी ॥ तुझ विन सूनी मेरी सेज, कहुं कर जोडी ॥ कहुं० ॥ उठ चलो हमारे संग, सुखे रहो पहोढी ॥ युं झुर झुर कुमति आंसु, आंखसें रेडे ॥ आंख० ॥ चल० ॥ १ ॥ हांरे तेरी नरक निगोदकी सेहेज, सेंति में रूट्यो ॥ सेंति० ॥ पकड्यो साचो जिनराज, संग तेरो छूट्यो ॥ तेरी मूरख माने बात, हैयाको फूट्यो ॥ हैया० में सहेज हुवो हुं दूर, तार तेरो त्रूट्यो ॥ तुं कर दूरसें बात, आव मत नेडे ॥ आ० ॥ चल० ॥ १ ॥ मेरी अनंत

कालकी प्रीत, पलक नहि पाली ॥ पल० सुमतिके लागो संग, मुझे क्यों टाली ॥ तुं सुमतिको सिरदार, सुणावे गाली ॥ सु० ॥ तेरी हम दोनुं हे नार, गोरी ओर काली ॥ तुं हमकुं ठेले दूर, सुमतिकुं तेडे ॥ सुम० ॥ चल० ॥ ३ ॥ अब कुमतिको ललचायो, रति नहि डगियो ॥ रति० ॥ सुन कर सूत्रोंकी शीख, साच होय लगियो ॥ चेतन कुमतिके सहेज, दूरसुं भगियो ॥ दूर० ॥ जिनराज बचनको ग्यान, हैयेमें जगियो ॥ जिनदास कुमति तुं बात, खोटी मत खेडे ॥ खोटी० ॥ चल० ॥ ४ ॥

॥ अथ स्वार्थविषे लावणी दसमी ॥

॥ कोन जगतमें तारा चेतन, कोन जगतमें तारा रे ॥ अपने अपने स्वारथके सब, बिन स्वारथ होय न्यारा रे ॥ कोन० ॥१॥ ए आंकणी ॥ स्वारथें मात सपुत्त बोलावे, जीजी कर कहे दारा रे ॥ वीर कहे भगिनी निज स्वार्थे, लागे पिताकुं प्यारा रे ॥ कोन० ॥ २ ॥ हय गय रथ पायक धन परधन, कोइ न राखनहारा रे ॥ काल बेहाल सबहीकुं करते, करता मुख पोकारा रे ॥ कोन० ॥३॥ इंद्रजाल सुपनां सम जाना, जूठा जगत पसारा रे ॥ सेवो चरण कोइ संत जनोके, जीव होवे निस्तारा रे ॥ कोन० ॥ ४ ॥

॥ अथ जीव उपदेश लावणी अगीआरमी ॥

॥ निर्धनका धनवान हुवा तब, दानपुण्य करनां चइयें ॥ श्रावक हो के हो भवि प्राणी, द्वादश व्रत धरनां चइयें ॥ कनुण

जनम मिल गया तेरे तांइ, दया धरम करनां चइयें ॥ तीन रतनकुं ओर समकिनकुं, शुद्धसमकित मान्या चइयें ॥ बडी फजरमें कुमति तजकें, जिनमंदिर जानां चइयें ॥ विषफल तजके अमृत फलको, चतुग तुम खानां चइयें ॥ सात व्यसनकुं छोड नीम दस, नित्य करनां चइयें ॥ आ० ॥ १ ॥ उत्तम कुलकी तरिया हो कें, पतिव्रत रखनां चइयें ॥ पंडित हुई भविप्राणि, मिजलसमे भखनां ना चइयें ॥ उपशम उग्या वृक्ष जिनोका, अमृतफल खानां चइयं ॥ सुकृत करणी करो सखी तुम, अकृतसे डरनां चइयें ॥ आ० ॥२॥ सीस मुंडा कर चेला हुवा तब, सुगुरु बचन मान्यां चइयें ॥ भोजन हो के हो भवि प्राणी, अभक्ष खाना नहिं चइयें ॥ जिनशासनका भेख लिया तब, आचारसे चलनां चइयें ॥ काम क्रोध माया लोभ, उनकुं दूर तजनां चइयें ॥ आ० ॥ ३ ॥ ज्यां ज्यां तीरथ हे जिनवरका, त्यां सबकुं चलनां चइयें ॥ कायाशक्ति हो भवि प्राणी, तुमकु व्रत करनां चइयें ॥ बार बार नरभव नहिं मिलता, ए याद रखनां चइयें ॥ सत्तगुरुकी शीख सुनके, खिजमतमे रहेनां चइये ॥ दीपचंद कर जोडी कहे मेरी, शीख रुदे धरनां चइये ॥ आ० ॥४॥

॥ अथ श्री उपदेशनी लावणी बारमी ॥

॥ बिगरी कौन सुधारे नाथ विन ए देशी ॥

॥ सिद्ध सरूपी सदा पदतेरो, तुं मूरख कां भूले रे ॥ ए आंकणी ॥ व्याज नफो पहे नहिं बांध्यो, खामी लगाई मूलें रे ॥

नरक निगोद कुमतका शिरपर, आप बन्यो हे झूले रे ॥ सिद्ध० ॥ १ ॥ सब संपतका सुख देखकर, चेतन मनमें फूले रे ॥ जिनदास तें दुनियामांहे, जन्म लियो सो धूलेंरे ॥ सिद्ध० ॥ २ ॥

॥ अथ उपदेशनी लावणी तेरमी ॥

॥ आप समजका घर नहिं पाया, दूजाकुं क्या समजावे ॥ बाका फिरे जिनदास जगतमें, हियो हाथमें नहिं आवे ॥ ए आंकणी ॥ दरस सवाद चाहनकी चितमें, चानक अधिकी आय लगे ॥ इंद्रीके परवशमें पडियो, ग्यानकला कहो कैसें जगे ॥ तृष्णांने जग लूट लियो हे, कपट करी परधनकुं ठगे ॥ खाय खाय लोही मांस वधारयो, प्राणी किसविध चले पगें ॥ विषय विपतकी करे चूंथणी, चर्चासूं चित्त नहिं लावे ॥ आ० ॥ १ ॥ अपने अवगुनकुं नहिं देखे, दूजाका अवगुन भांखे ॥ हिंसाहीमें हूओ हजूरी, दया दूर दिलसें नाखे ॥ गुणवंतका गुण लोपे मेरो मन, अवगुणके रसकुं चाखे ॥ तिनुही प्रणमे रागधरामें, सरणे जिनवर किम राखे ॥ ठग फांसीगर चोर अन्यायी, धन मीसें इनकुं ध्यावे ॥ आ० ॥ २ ॥ अवगुनकी मेरी खान आतमा, अजान होय सो मोहे पूजे ॥ नहिं गाममें रूख अंबको, एरंड अंब सरिखो सूजे ॥ पारख नहिं हे हिये ग्यानकी, गुन अवगुनकु कुण बूजे ॥ गाडर देख कहे मुज घरमें, कामधेनु इतनी दूजे ॥ ऐसी मेरी अवनीत आतमा, अवगुन किम गाया जावे ॥ आप० ॥ ३ ॥ क्रोध मान मायामें मातो, लो-

भमांहे लपट्यो रहेतो ॥ गरथ गुमानी गमको गरजी, पीड पारकी नांहि लेतो ॥ भक्ति नहीं गुरु देव धर्मकी, कठण वचन मुखसें केतो ॥ ॥ अंतर आंट न खुले हियाकी, पूंठ परमपद कुंदेतो ॥ स्वांग सजी जिनदास जैनको, माल मुलकको ठग खावे ॥ आप० ॥ ४ ॥

॥ अथ उपदेशनी लावणी चैादमी ॥

॥ खबर नहीं या जुगमें पलकी रे ॥ खबर० ॥ सुकृत करनां होय तो करले प्यारे, कोन जाने कलकी ॥ ए आंकणीं ॥ या दोस्ती हे जंगलवासकी, काया मंडलकी ॥ काया० ॥ सास उसास समर ले साहिब, आयु घटे पलकी ॥ खबर० ॥ १ ॥ तारामंडल रवि चंद्रमा, सब हे चलनेकी ॥ दिवस चारका चमत्कार ज्युं, वीजलियां झलकी ॥ खबर० ॥ २ ॥ कूड कपट कर माया जोडी, करि बातां छलकी ॥ पापकी पोटली बांधी सिरपर, कैसें होय हलको ॥ खबर० ॥ ३ ॥ या जुग हे सुपनेकी माया, जैसो बुदां जलकी ॥ विणसंतां तो वार न लागे, दुनीयां जाय खलकी ॥ खबर० ॥ ४ ॥ मात तात सुत बंधव बाइ, सब जग मतलबकी ॥ काया माया नार हवेली, ए तेरी कबकी ॥ खबर० ॥ ५ ॥ मन मावत तन चंचल हस्ती, मस्ती हे बलकी ॥ सत गुरु अंकुश धरी सीरपर, चल मारग सतको ॥ खबर० ॥ ६ ॥ जब लग हंसा रहे देहमें, खुशीयां मंगलकी ॥ हंसा छोड चल्या जब देही, मटीयां जंगलकी ॥ खबर० ॥ ७ ॥ पर उपकार समो नहि सुकृत, धर

समता सुखकी ॥ पाप नहिं पर प्राणी पीडन, हर हिंसा दुःखकी ॥ खबर० ॥ ८ ॥ कोइ गोरा कोइ काला पीला, नयणे निरखनकी ॥ ए देखी मत राचो प्राणी, रचना पुद्गलकी ॥ खबर० ॥ ९ ॥ अनुभवज्ञानें आतम बूझी, कर बाता घरकी ॥ अमरपद अरिहंतकुं ध्यायां, पदवि अविचलकी ॥ खबर० ॥ १० ॥ दया धरम साहिबको समरन, ए बातां सतकी ॥ राग द्वेष उपजे नहिं जिनकु, बिनती अखमलकी ॥ खबर० ॥ ११ ॥

॥ अथ उपदेशनी लावणी पंदरमी ॥

॥ तुम तजो जगतका ख्याल, इसकका गानां ॥ इस० ॥ तेरी अल्प उमर खुट जाय, नरक उठ जानां ॥ ते दिनां चार युग बीच, लिया हे वासा ॥ लिया० ॥ तेरे सिरपर बेठा काल, करत हे हांसा ॥ में बोलुं साची बात, जूठ नहिं मासा ॥ जूठ० ॥ तुं सूता हे कुण निंद, कीसी कर आसा ॥ अब सेव देव जिनराज, खलकमें खासा ॥ खल० ॥ तेरा जोबन पतंगका रंग, जूठ सब आसा ॥ अब हिये धरो मेरी सीख, समज रे दीवाना ॥ सम० ॥ तुम० ॥ ॥ १ ॥ अब बूरी भली सब बात, मौन कर रीजें ॥ मौन० ॥ ए सुख मीठा संसार, भेद नहिं दीजें ॥ कर वीतराग विसवास, हिये धर लीजे ॥ हिये० ॥ पण नीच नारका संग, मांहे मत भींजे ॥ अब सात व्यसनको संग, प्रीत मत कीजे ॥प्रीत०॥ वोहे दुरगत दे पहोंचाय, तेरो तन छीजे ॥ तुं सुख दुःखका सिरदार, रंक नहि राना

॥ रंक० ॥ तुम० ॥ २ ॥ तुं विसर गया जुग बीच, नाम जिनवरका ॥नाम०॥ पच रह्या कुटुंबके काज, किया फंद घरका ॥ तैं दयाधरम बिन खोया, जनम सब नरका ॥ जनम० ॥ तैं पल्ले बांध्यां पाप, कसाई सरखा ॥ अब लिया नहिं तें लाभ, बखत पर करका ॥ ॥ बखत० ॥ तेरी बीति बात सब जाय, जनम ज्युं खरका ॥ अब सुणो सीख सुतरको, सुलट रे शाणा ॥ सुलट० ॥ तुम० ॥ ३ ॥ तेरी चरणसेज पर पोढ्या, आनंद दिल आया ॥ आनं० ॥ मेरी भगी भूख सब प्यास, सुधारस पाया ॥ मेरे सिरपर तुम सिरदार, जिनेसर राया ॥ जिने० ॥ में चाहुं चरणकी सेव, सफल कर काया ॥ अब द्यो दोलत दरसनकी, मेरे एही माया ॥ मेरे० ॥ युं अरज करे जिनदास, अल्प गुन गाया ॥ अब बुरा कुगुरु उपदेश, धरो मत काना ॥ धरो० ॥ तुम० ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री तस्करपच्चीशी ॥

(रघुपति राम हृदयमां रहेजो रे॰ ए देशी)

चोरी चित्त ना धरो नर नारी रे, पंचमें परतीत तुमारी ॥ चोरी० ॥ ए आंकणी ॥ चोरनी चौटे चरचा थाय रे, फिट फिट लोकोमां निंदाय रे ॥ कलंके कुळ लजवाई जाय, चोरी चित्त ना धरो नर नारी रे ॥ १ ॥ चोरनो कोई न थाय सखाई रे, मात तात सज्जन सुत भाई रे ॥ हडछड थाय विगोवाई ॥चोरी० ॥२॥ तस्कर नर तरणा तोले रे, आदर देइ कोइ न बोले

रे ॥ घेर आवे द्वार न खोले ॥ चोरी०॥३॥ तिरस्कार तेने सहु ठामे रे, कोइ तेडे नही शुभ कामे रे ॥ माल धीरे नही विण दामे ॥चोरी० ॥ ४ ॥ सहु लोक छंडे विश्वास रे, कोई बेसारे नहीं पास रे ॥ जेनी सारो नही सुवास ॥ चोरी० ॥ ५ ॥ जेने तस्करनी पडी टेव रे, अगदत्त ग्रहे अहमेव रे ॥ गणे नही गुरु धर्म देव ॥ चोरी० ॥ ६ ॥ सात व्यसन वशे जडबुद्धि रे, करे केफ न कांई शुद्धि रे ॥ कपटी कूटीलनी मति ऊंधी ॥ चोरी० ॥ ७ ॥ मुखे बोले ते मीठुं मीठुं रे, मेले नही नजरे दीठुं रे ॥ दया रहितनुं दिलडुं खोटुं ॥चोरी० ॥ ८ ॥ निशाचारी यारी मळी भेळा रे, शुकनावळी साधी वेळा रे ॥ जइ राजभंडार उखेळा ॥ चोरी० ॥ ९ ॥ मळी माणस मारे गाम रे, वाट पाडे विणासे दाम रे ॥ संग्राममां आवे काम ॥ चोरी० ॥ १० ॥ संधी छेदीने खातर पाडी रे, लीधा माल अमुल्य उपाडी रे ॥ जामें जूठ अनय करे दहाडी ॥ चोरी० ॥ ११ ॥ पगी पंडित पगलां जोतो रे, पापिष्टनी पासे पहोत्यो रे ॥ पकड्यो परपंची रोतो ॥ चोरी० ॥ १२ ॥ कर केश बांध्या कशी ताणी रे, पापणथी पडे पूर पाणी रे ॥ आवी आप कीधी जे कमाणी ॥ चोरी० ॥ १३ ॥ पग बेडी गळामां तोक रे, जोवा मळ्या हजारो लोक रे ॥ मळ्या मानवी थोके थोक ॥ चोरी० ॥ १४ ॥ सहु मुखथी उच्चरे एम रे, जनेताये जण्यो तुने केम रे ॥ न्हानो कां न मूओ रह्यो क्षेम ॥ चोरी० ॥ १५ ॥ बोले कुवचन कडवा बोल रे, फिट फीट रे फूटल ढोल रे ॥ निर्दयी निगुण निटोल ॥ चोरी० ॥ १६ ॥ कोटवाळ सेनापति दास रे, छेदी छरपले कर्णने नास रे ॥ लेइ चाल्या एहने उदास ॥

चोरीं० ॥ १७ ॥ मारता कोरडा छडीदंड रे, ढींचण कोंणी पाडु प्रचंड रे ॥ मारे लात इटयोना खंड ॥ चोरी० ॥ १८ ॥ श्रवे श्रोणित त्रोडे मांस रे, हेळे निंदे हणे करे हांस रे ॥ दीन हीन पीड्यो भूख प्यास ॥ चोरी० ॥ १९ ॥ कोपे नृप लिये घर लूंटी रे, जाभ नेत्रने काढे खूंटी रे ॥ बांधे तोये ते न शके छूटी ॥ चोरी० ॥ २० ॥ मारे शूळ मुसळ कूहाडे रे, मुदगर मुष्टिथी ताडे रे ॥ नेत्र नरकनां दुःख देखाडे ॥ चो० ॥ २१ ॥ शीश मूंडीने चूनो लगावे रे, अवळे गरधव चडावे रे ॥ कुसुम करेणानी माळ पहेरावे ॥ चो० ॥ २२ ॥ वाजे वाजांने फेरवे चोर रे, पूंठे न्हाना माणसनो नोर रे ॥ ऊडे खेहने सोर बकोर ॥ चो० ॥ २३ ॥ तेने दीये शूळी गळे पास रे, मरीने जावे ते जम पास रे ॥ छंडो चोरी कहे खोडीदास ॥ चो० ॥ २३ ॥ चोरी अवगुण केता प्रकासु रे, ओगणीशे सोळनो आसु रे ॥ जोडी पुरफत्ते चोमासु ॥ चो० ॥ २५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सत्यबावीशी ॥

॥ आंखडीएरे मे आज शत्रुंजय दीठो रे–ए देशी ॥

॥ टेक म मूको रे, धरिये धर्म विवेक के सत्य न चूको रे ॥ सत्य थकी सहु जन सनमाने, प्यारा मारा ॥ ध्यान धरे धरणिंदो॥सोम वदन सुधारस वरसे, हिम करण जिम चंदो रे ॥ टेक० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सत्य वायक लायक नर जगमां, प्यारा० ॥ दायक बुद्धि निधान ॥ पद पद संपद नवनिधि पामे, महिमा मेरु समान

रे ॥ टेक० ॥ २ ॥ दूध सरीखी कीरति प्रसरे, प्यारा० ॥ जगमांही जशनो डंको ॥ वैरी तो वनवासे नासे, वाळ न होवे वंको रे ॥ टेक० ॥ ३ ॥ सत्य थकी सहु जग वश्य थावे, प्यारा० ॥ अहो-निशि एहने ध्यावे ॥ सुर नर पंडित शीश नमावे, इंद्र आपे गुण गावे रे ॥ टेक० ॥ ४ ॥ सत्य पुरुषे प्रतिज्ञा पकडी, प्यारा० ॥ प्राण छतां नवि मूके ॥ चातुर टेक धरी धन जळथुं, अन्य उदकथी न ढूके रे ॥ टेक० ॥ ५ ॥ मीन मराळ सरोवर मेली, प्यारा० ॥ छि-लर दिलमां न आणे ॥ सत्यवादी तेम टेकने थेकी, मृषावाद न ठाणे रे ॥ टेक० ॥ ६ ॥ शूर सुभट संग्रामे सनमुख, प्यारा० ॥ आयुद्ध युद्ध मचावे ॥ प्राणनी हाण गणे नही मनमां, चरण पाछा नवि ठावे रे ॥ टेक० ॥ ७ ॥ रणमां शूरा संसारे घणा छे, प्यारा० ॥ कोइ न सत्यने तोले ॥ कष्ट पडे कायरता नाणे, बोली वचन नवि डोले रे ॥ टेक० ॥ ८ ॥ सीता माता जगत विख्याता, प्यारा० ॥ शियळ रयण गुणखाणी ॥ सत्य राखणने पावक पेठां, अग्निथी पसर्यो पाणी रे ॥ टेक० ॥ ९ ॥ गजसुकुमाळ मुनीसर मोटा, प्यारा० ॥ टेकथी ध्यानज धरीया ॥ अग्नि दहन सहन करीने, शिवरम णीने वरीया रे॥ टेक० ॥१०॥ उदधिमां अरणिक श्रावकने, प्यारा०॥ देवे परिसह दीधो ॥ पोते उठाई ऊंचो लीधो, तन मन निश्चळ कीधो रे ॥ टेक० ॥११॥ हरख धरी हरिचंद नरेसर, प्यारा० ॥ कष्ट सह्यां सत्य माटे ॥ तात टेक राखण रघुराया, परवरिया वनवाटे रे॥ टेक० ॥ १२ ॥ दळ बळ लेई दशारणभद्रे, प्यारा० ॥ वांद्या श्री वर्द्ध मान ॥ इंद्र संगाथे अहिंगो कीधो, लीधो संयम धरी मान रे ॥ टेक०

॥ १३ ॥ एम अनेक नर टेक ग्रहीने, प्यारा० ॥ ग्राहक धर्म सधीर ॥ सत्य सुधारस स्वादमां लीना, ज्युं वन कोयल कीर रे ॥ टेक० ॥ १४ ॥ कुंजनमं करि केळि करंता, प्यारा० ॥ आरामे अवनीश ॥ जळमांही मीन मराळ सरोवर, मुक्तिध्याने मुनीश रे ॥ टेक० ॥ १५ ॥ तिमहिज सत्य सुगंधे रसीया, प्यारा० ॥ कसिया शीळ कछोटा ॥ मनमथ मथन करी मन जीत्यो, महिमंडळमां मोटा रे ॥ टेक० ॥ १६ ॥ वसु वसुधापति वसुधा वदिता, प्यारा० ॥ सत्यवादी ते समेतो ॥ असत्य वचन उच्चार करयाथी, मातमी पुढविये पहोत्यो रे ॥ टेक० ॥ १७ ॥ कमळप्रभगणि गुणनो दरियो, प्यारा० मन मातंगे चडियों ॥ विपरीत वचन प्ररूप्यो भारी, भव अटवी रडवडियो रे ॥ टेक० ॥ १८ ॥ असत्यथी अवगुण अनंता, प्यारा० ॥ गुण सरवे जाय ऊडी ॥ सत्य विवेकना टेकने थेकी, गया दुःख दरिये बूडी रे ॥ टेक० ॥ १९ ॥ सत्य सरोवर समता जळमां, प्यारा० ॥ केळि करो मन भावे ॥ आतम अंतर निर्मळ थावे, कर्म मलीन मळ जावे रे ॥ टेक० ॥ २० ॥ लेश्या शोभ शुभ पुण्यना भागी, प्यारा० ॥ असमंजस विश्व त्यागी ॥ पूज्य पूंजाजी स्वामी सोभागी, तस चरणे लय लागी रे ॥ टेक० ॥ २१ ॥ तेह गुरु गुण गेह पसाये, प्यारा० ॥ सत्यबावीशी बनावी ॥ खोडाजी कहे खांत धरीने, भव्य जीवोने समजावी रे ॥ टेक० ॥ २२ ॥ इति. ॥

॥ अथ अक्षर बत्रीशी शिखामण प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥

॥ ककाते किरिया करो, कर्म करो चक चूर ॥ किरिया विणरे जीवडा, शिव नगरछे दूर ॥ १ ॥ खखा कर्मज क्षयकरो, क्षमाकरो मनमांहि ॥ खांतकरी सेवो सदा, श्री जिनदेव उछांहि ॥ ॥ २ ॥ गगा गर्व न कीजियें, गर्व किये जस हाण ॥ गर्व कियाथी गुण गले, गर्व म करो अजाण ॥ ३ ॥ घघा घर घरणी तजो, घट घट राखो प्यार ॥ कुटुंब सहू स्वारथ लगें, जिणसेंति व्यवहार ॥ ॥ ४ ॥ ङङा नमण करो सदा, नमतां नवनिधि होय ॥ देव गुरु माता पिता, हित धरिने सहु कोय ॥ ५ ॥ चचा चोरी परिहरो, चोरी कर्म चंडाल ॥ विजय चोर चोरी थकी, नरक गयो ततकाल ॥ ॥ ६ ॥ छछा छल नवि कीजियें, छल मायानो मूल ॥ छलें करी साताहरी, दश शिर छेद्या शूल ॥ ७ ॥ जजा जोर न कीजियें, जोर करें जसहाण ॥ जोर किया जुगतो नही, आखे दुनिया जाण ॥८॥ झझा झूठ न बोलिये, झूठें अपजस होय ॥ वसुराजा झूठज थकी, दुर्गति जातो जोय ॥ ९ ॥ ञञा वरत करो सदा, वरत धरो मन सोय ॥ व्रत विनारे प्राणिया, सुखियन दीठा कोय ॥ १० ॥ टटा टेक न छांडियें, धर्म ध्यान एह रीत ॥ काम देव टेकें करी, देवें परीक्षा दीठ ॥ ११ ॥ ठठा ठीक मांहे रहो, ठीकनां ठाम न होय ॥ ठीकथी चूक्या जीवडा, शिव पुर कदिय न होय ॥ १२ ॥ डडा डापण राखसी, तृष्णा ते घट मांय ॥ तृष्णा तें नवि राचाया, ते

स्वर्गपुरीमां जाय ॥ १३ ॥ ढढा ढाकण जगतनो, जग गुरु माया राख ॥ परदेशी गुरुनी परे, रायपसेंणी साख ॥ १४ ॥ णणा नित नवकार गुण, चौद पूरवनुं सार ॥ सुदर्शन नवकारथी, शेठ कुलें अवतार ॥ १५ ॥ तता तीनज आदरो, त्रण्य तत्व शिरदार ॥ देव गुरु धर्म निर्मलो, राखो हीया मझार ॥ १६ ॥ थथा थिर मन राखिये, आत्म विषे अभिराम ॥ व्यसन साते परिहरो, पामो शिव पुर ठाम ॥ १७ ॥ ददा दानज दीजियें, दया धरो चित्तधार ॥ गजभवं शशलो राखियो, मेघकुमर अवतार ॥१८॥ धधा धर्मज कीजियें, धर्मथकी धन होय ॥ धर्मविनारे माणिया, सुखी न दीठा कोय॥१९॥ नना नरभव तें लह्यो, वली ए आरज खेत ॥ मानव भवते दोहिलो, चेत शकेतो चेत ॥२०॥ पपा पाप न कीजियें, अलगा रहेजो आप ॥ जो करशे सो पावशे, कोण बेटा कुण बाप ॥ २१ ॥ फफा फेर न कीजियें, खान पान धन धाम ॥ फेर कियो फीको पडे, सीजे न कोइ काम ॥ २२ ॥ बबा बारुं मुक्तिनुं, कीजे धर्मसुं हेत ॥ बीजा बारा सहु तजो, पामो शिव पुर खेत ॥ २३ ॥ भभा भर जोवन समे, मनसा राखो ठाम ॥ शील रत्न धर्म गांठडी, वश कर इंद्रिय जाण ॥ २४ ॥ ममा माया परिहरो, ममता मूको दूर ॥ नंद राजा ममता थकी, पोहोतो नरक हजूर ॥ २५ ॥ यया जोर न कीजियें, जोरें योद्ध विनाश ॥ दूर्योधन ए जोरथी, जाव कीधो कुलनाश ॥ ॥ २६ ॥ ररा रीश न कीजियें, रीश कीये तन हाण ॥ रीश कटारी लइ मरे, हित अहित नवि जाण ॥ २७ ॥ लला लालच परिहरो, खान पान वस दैव ॥ लालच लाग्या जीवडा, शिव पुर कदिए न-

हेव ॥ २८ ॥ ववा व्रत धरो सदा, व्रतसुं कीजे हेत ॥ सुव्रतने पाली करी, पामो शिवपुर खेत ॥ २९ ॥ शशा शीयलज पालियें, शीयल रथ सिणगार ॥ शीयल आभूषणे शोभति, चंदना सति निरधार ॥ ॥ ३० ॥ षषा क्षमाज कीजियें, कीणही न कहियें कुबोल ॥ अरजुन मालिनी परे, जगतमां तो वधे तोल ॥ ३१ ॥ ससा सांसो मत करो, जिन भाख्यो परिमाण ॥ सांसा मांहे जे पड्या, ज्ञान विना नवि जाण ॥३२॥ हहा हित वंछो सदा, षट् जीव हितकार ॥ हितथकी हित उपजे, आखे सहु संसार ॥ ३३ ॥ अक्षर बत्रीशी ए कही, संबोधन अधिकार ॥ दोहा अर्थ विचारशे, पामे भव तणो पार ॥ ॥ ३४ ॥ संवत सतर पच्चासमां, समकित कियो वखाण ॥ उदयापुरे उद्यमकियो, ते मुनि हेमत जाण ॥ ३५ ॥ इति श्री अक्षर बत्रीशी समाप्तः ॥

॥ मुक्ति जाणेकी डीगरी ॥

॥ दूहा ॥ तीर्थंकर महावीरने, कौशल गणधर साज ॥ कानून प्ररुप्या हे दया, सब जीवन हित काज ॥ १ ॥ दान शियल तप भावना, असल खुलासा सार ॥ जिण पुरुषे धारण किया, पहोंच्या मुक्ति मझार ॥ २ ॥ चउद सहस साधु हुआ, साध्वी छत्रीश हजार ॥ लाखां श्रावक श्राविका, पाम्या भवजल पार ॥ ३ ॥

॥ जिनराजा ताजा, मल्लि विराजे भोयणी गाममें ॥ ए देशी ॥

॥ मेरी अदालत प्रभूजी कीजीये ॥ जिन शासन नायक मुक्ति

जाणेकी डिगरी दीजीये ॥ (ए आंकणी) खुद चेतन [1]मुदई बना है, आठो कर्म [2]मुदायला ॥ दावा रस्ता मुक्ति मारगको, धोखा दे जाय टालाजी ॥ जिन शासन० ॥ १ ॥ तप कागद इष्टाम लियो, तलत्राणा खिमा विचारी ॥ सज्झाय ध्यान मजमुंन बनाकर, अरजी आन गुजारीजी ॥ जिन० ॥ २ ॥ मे जाताथा मुक्ति मारगको, कर्मोंने आय घेरा ॥ धोखा दे कर राह भूलाया, लुंट लिया सब डेरा जी ॥ जिन० ॥ ३ ॥ बहोत खराब कियां कर्मोंने, चौराशीके मांहे ॥ दुःख अनंता पाया मैंने, अंत पार कछु नाही जी ॥ जिन० ॥४॥ सचे मिले वकील कानूनी, पंच महाव्रत धारो ॥ सूत्र देख मसूदा कीना, तब मे अरजी डारीजी जिन० ॥ ५ ॥ पांचे समिति तिनुं गुप्ति ए, आठु गवाह बुलावो ॥ शियल अग्रेसर बडा चौधरी, उसकुं पुछ मंगावो जी ॥ जिन० ॥ ६ ॥ अरजी गुजरी चेतन तेरी, हुवा सफाना जारी ॥ हाजर आवो जुवाव लिखावो, लावो साबूती सारो जी ॥ जिन० ॥ ७ ॥ आठु मुदायले हाजर आये, मोह मुगत्यार बुलाये ॥ च्यार कषाय और आठ मदकुं, साथ गवाईमें लाये जी ॥ जिन० ॥ ८ ॥ (जुवाप मुदायलेका) जिन शासन नायक, झूटा दावा है चेतन जीवका ॥ (ए टेक) हमने नहि भखाया ईसकुं, एह मेरे घर आया ॥ करजा लेकर हमसे खाया, ऐसा फरैब मचाया जी ॥ जिन० ॥ झूटा० ॥ ९ ॥ विषय भोगमे राच्यो चेतन, घटा नफा नहि जाना ॥ करजदार जब लारे लागा, तब

---

१ दावो करनार (वादी) २ जुबाप आपनार (प्रतिवादी)

लागा पिस्ताना जी ॥ जिन० झूटा० ॥ १० ॥ हाजर खडे गवाह हमारे, पूछीये हाल ज्युं सारा ॥ विना लियां करजा चेतनसे, कैसे करे किनारा जी ॥ जिन० ॥ झूटा० ॥ ११ ॥ (जुबाप मुदइका) चेतन कहे सताबी मांहे, सुनो शासन शिरदार ॥ इमानदार है गवाह हमारे, जाणे सब संसार जी ॥ जिन० ॥ मुक्ति० ॥ १२ ॥ मै चेतन अनाथ प्रभुजी, कर्म फिरेवी भारी ॥ जीव अनंते राहा चलतकुं, लुंट चौरासीमें डारीजी ॥ जिन० ॥ मुक्ति० ॥ १३ ॥ बडे बडे पंडित इण लुंटे, ऐसा दम बतलाया ॥ धर्म कहा और पाप कराया, ऐसा करज चढाया जी ॥ जिन० ॥ मुक्ति० ॥ १४ ॥ हिंसा मांहे धर्म बताया, तपस्या सेती डिगाया ॥ इन्द्रिय सुखमें मगन करीने, झूटा जाल फैलाया जी ॥ जिन० ॥ मुक्ति० ॥१५॥ ऐसा करो इन्साफ प्रभुजी, अपील होन न पावे ॥ हक रसी चेतनकी होवे, जनम मरण मिट जावै जी ॥ जिन० ॥ मुक्ति० ॥१६॥ (इन्साफ अदालतका) ज्ञान दर्शन करी मुनसफी, दोनोकुं समझाया ॥ चेतनकी डिगरी कर दीनी, कर्मोंका करजा बताया जी ॥ जिन० मुक्ति० ॥ १७ ॥ असल करज जो था कर्मोका, चेतनसे दिलवाया ॥ शुद्ध संजम जद करी जमानत, आगेका दुःख मिटायाजी ॥ जिन० ॥ मुक्ति० ॥ १८ ॥ आश्रव छोड संवरकुं धारो, तपस्यासे चित्त लावो ॥ जलदी करज आदा कर चेतन, सिधा मुक्तिकुं जावोजी ॥ जिन० मुक्ति० ॥ १९ ॥ शुद्ध संजम जद करी जमानत, चेतन डीगरी पाई ॥ फागुण शुद दशमी दिन मंगल, सन ओगणीसे अठोईजी ॥ जिन० मुक्ति० ॥ २० ॥ इति ॥

॥ श्री नवकारनो रास. ॥

॥ सरसती स्वामिनी द्यो मुज माय तो, गौतम गणधर लागुंजी पाय तो ॥ ते फल जाणजो श्री नवकार तो, रास भणुं श्री नवकारनो ॥ १ ॥ पेहेलां लीजे श्री अरिहंतनुं नाम तो, साधु सर्वने करुं प्रणाम तो ॥ सद्गुरु वाणी तुमे सांभलो, भुल्या जो अक्षर लीखज्यो जोगमतो ॥ चौद पूर्व पेहेलां कह्यां, ते पछी पुरशे मन तणी आश तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ २ ॥ एणे मंत्रे बांध्यो बीज आकाश तो, अमावास्या पुनिम कहे ॥ वृक्ष उपाडी चलावियो साथे तो, त्रिवे वाघ वासो वसे, डाकणी साकणी लागेजी पाय तो ॥ते०॥ ॥ रा० ॥ ३ ॥ मंत्र मांहि कीधो वडोरे नवकार तो, गुणतां आणंदजी लागे पाय तो ॥ ए रत्नरुप ए निरमलां, कर्म रहित थया मोक्ष द्वार तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ ४ ॥ सुरनर नारी तुमे सांभलो वात तो, गावा पुरशे मन तणी आश तो ॥ ध्यायतां सर्व संकट टली जाय तो ॥ वैरी विरोध दुर टले, सुगुणीनो हित मुक्तिनो साथ तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ ५ ॥ एहनो एक अक्षर संभारे तो, पाप खपावे सागर सात तो ॥ पुरे पद आगल कहुं दुरित हरे, सागर पचास तो ॥ पांचसे पूर्णता लहु, वही उपधान भणे नवकार तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ ६ ॥ सूत्र सिद्धांत तोहि एणे प्रकाश तो, तोहि पण एणे समो काइ नहीं, जिनवरे भाखीओ ए लेलाट तो ॥ साधु श्रावक एम जपिया ॥ मोक्षनुं कारण लहुं भव पार तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ ७ ॥ बावना पद ए जगमां जाणतो, तोही पण एणे समें कोइ नहीं ॥

एक शियल बीजो नवकार तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ ८ ॥ केरडा चा-
रंतो बोळे बेसतो, नदी जल उलट आविया शेठ तो ॥ बालक साथे
चलावियो नावतो, तेणे समयों मनमां नवकारतो ॥ नदी जल फाटी
हुइरे द्वार तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ ९ ॥ एहना मांहे सुरतरु रंगे तो,
रंग फाटे फीटे नहीं ॥ गायंता ततक्षग सहु परिवार तो ॥ अवरमां
कोइ सांसो नहीं ॥ कोहे वणारसी कुने पसाय तो ॥ ते० ॥ रा०॥
॥ १० ॥ रत्न जडित गले पेहेरीयो हार तो, तप तणी मुद्रिका ज-
लहले ॥ खेमा तो खटकण राखीयो हार तो, पंचमी गतिनो एह
दातार तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ ११ ॥ रत्नमूलानो हाथ परिमाण
तो, शियळ अनोपम जगमां जाणुं तो ॥ जे नरनारी नीर वखां,
अनुभव सुरतरु जय जयकार तो ॥ ते० परभव पामशे मोक्ष द्वार
तो ॥ रा० ॥ १२ ॥ कन्या घुघर तणी सांभलो वात तो, कुडी न
पुरशो कोइ तणी साख्य तो ॥ थापण मोसो मत करो, गंधरपनी
परे उपनो रोग तो ॥ दुष्कृतनी परे जाणीए ॥ जीभ सडेने पडेरे
वियोग तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ १३ ॥ चंपापुरी नगरीतणी सांभलो
वात तो, सतीने कलंक आव्यां अपरीघ तो ॥ नाम सुभद्रा जाणजो,
कुडुं न भांख्युं रतिय लगार तो ॥ ते० रा० ॥१४॥ जितशत्रु राजा
पालशे राज्य तो ॥ दीन दीन एक एक बीजोरु खाय तो ॥ जीभ
तणे रसे इंद्रीए चोरतो, एह बीजोरे राखीओ हारतो ॥ ते० ॥
रा० ॥ १५ ॥ एक दिने चिठी आवी जिनदास तो, राये बोलावी
आपण पास तो ॥ उठो शेठजी बीजोरु लावज्यो, शेठने उठतां लागी
छे वार तो, तेणे समयों मनमां नवकार तो ॥ देवता उठीने ला-

ग्योजी पाय तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ १६ ॥ एक पूरवतणी सांभलो वात तो, राजाने खोळे विश्रम्यो रास तों, लोक मांहि महिमा घणो ॥ अनुभव सुरतरु जय जय कारतो ॥ परभव पामशो मोक्षद्वार तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ १७ ॥ पोतनपुरतणी सांभलो वात तों, मदन नामे एक श्रावक सारतो, तेहनी बेटी छे श्रीमति, परणीछे मिथ्यात्विने घेर तो, धर्म उपर द्वेष छे घणो, तेणे राखीया घडा माहि सापतो, नवकार प्रभावे थइ फूलनी मालतो॥ते०॥रा० ॥१८॥ रत्न पुरी नगरे यशोभद्र राय तो, तेहनो बेटो शिवकुमार तो, सात व्यसननो सेवन हार तो, पर वचन सेवे घणुं, मात पिता कुटुंब सहु परिवार तो, केण न माने कोय तणुं, संकट पडे समर्या नवकार तो, फरश्याथी उठी नीकळ्यो बहार तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ १९ ॥ मथुरा नगरी तणी सांभळो वात तो ॥ अधिक चोर वसे ते मांहि तो ॥ खातर पाडी धन लावे घणुं ॥ मथुरां नगरी तणो कहुं अवदात तो ॥ कुलवंती वेश्याए मांड्यो वाद तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ ॥ २० ॥ हार पड्यो चोर झालीओ एक तो, ते लेई नांख्यो केरडानी पास तो ॥ शुली उपरे जो रोपीओ, पाणीनी तृषा लागी अपार तो ॥ हाथ साने जल मागीओ ॥ ते० ॥ रा०॥२१॥राजाने भये कोय पाणी न पायतो, जिनदास शेठे एम कह्युं,पाणी लावुं त्यां लगी गणे नवकार तो ॥ तिणे समर्यो मनमां नवकार तो, तेह मरी थयो यक्ष कुमार तो॥ शत्रुंजयेशा निघत्ते करे ॥ते०॥रा०॥२२॥ चारुदत्त नामे शेठनो पुत्र तो ॥ वेश्याने संगे हार्यो वित्ततो, द्रव्य उपरे उद्यम करे, अनुक्रमे आव्यो दरीआनी तीरतो ॥ काउसग्ग अणसण उच्चरे,

सुणी नवकारने गयो देव लोक तो, देवता आवीने करे प्रणाम तो ॥ ते० ॥ रा० ॥ २३ ॥ चंद्रावती नगरी मनोहार तो, वीरधवल राजा करे राज्य तो ॥ बेटी मलयासुंदरी कर्म वशे गई देश नेपाल तो ॥ दुख सह्यां कीधां अपार तो, पंखी थकी जलधर पडे, तीहाँ समर्यो मनमांही नवकार तो ॥ जलधर तरी उतर्या पारतो ॥ ते० ॥ ॥ रा० ॥ २४ ॥ फोफलपुर नगरी जस दीप मोजार तो, दमण सागर ऋषि रह्या चोमासुं तो ॥ त्यां बेसी बेहु शीख्यां नवकार तो, राजकुमार रत्नावली, चारित्र पाली गया मोक्ष दुवार तो ॥ ॥ ते० ॥ रा० ॥ २५ ॥ त्रिभुवनमां हुओ जयजय कार तो, तेफल जाण ज्यो श्रीनवकार तो ॥ रास भणुं नवकारनो रास भणुं श्रीअरिहंतनो ॥ रास भणुं श्री गौतम स्वामीनो, राम भणुं सर्व साधुनो ॥ ते फल जाणज्यो श्री नवकार तो, रास भणुं श्री नवकारनो ॥ ते० ॥ रा० ॥ २६ ॥ संपूर्ण ॥

स्तवनोनो संग्रह.

॥ श्री सीमन्धरस्वामीनुं स्तवन ॥

॥ श्री सीमंधरस्वामीजी, जीवन जगदाधार ॥ वाहाला सुणो एक विनति, मारा प्राण आधार ॥ प्रभुजी मानोए महाराज ॥ १ ॥

हियडु ते मुज हे जालुओ, संशय भर्या उभराय ॥ एक पलक धीरज नवी धरी, कहुं कवण आगल जाय ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ क्षण क्षण मनोरथ नवनवा, उपजे ते मनडामांहि ॥ फीरी से मनमां वीरमे, कांइ जेम कुवानी छांहि ॥ प्र० ॥ ३ ॥ एक घडी अथवा अधघडी, जो प्रभु मले एकांत ॥ तो वात सवी मननी कहुं, भांजो ते सघली भ्रांत ॥ प्र० ॥४॥ भले सरज्यां पंखेरुआं १ मन चिंतवे तिहां जाय ॥ माणसने न सरजी पांखडी, तीणे रहुं मन अकलाय ॥ प्र० ॥ ५ ॥ कुण मित्र जग एहवो मिले, जे लहे मननी वात ॥ वेधे नही मन जेह शुं, कीम मिले तेह सुघात ॥ प्रभुजी० ॥ ६ ॥ नवनवा रंगी जीवडा, अति विषम पंचम काल ॥ आप आपणा मन रंगमां, सहुको थइ रह्या लाल ॥ प्रभुजी० ॥ ७ ॥ कहुं कुण आगल वातडी, कुण सांभले वली तेह ॥ टाले ते कुण प्रभु तुम विना, मनडातणा संदेह ॥ प्रभुजी० ॥ ८ ॥ संसार सघला जोवतां, मुज मन न रुचे कांही ॥ जीम कमल वननो भमरलो, तेने अवर न गमे कांही ॥ प्र० ॥ ९ ॥ धन्य महाविदेहना लोकने, जे रहे सदा प्रभु पास ॥ मुखचंद देखी तुम तणो, पुरजो मननी आश ॥ प्रभुजी० ॥ १० ॥ तुम वयणा अमृत सरीखा, श्रवणे सुणो नित्यमेव ॥ संदेह पुछी मन तणो, निर्णयकरी नित्यमेव ॥ ११ ॥ शे गुनहे अमने अवगुणी, प्रभुजी कर्या अतिदुर ॥ शी भक्ति एवी ते हुंति, जे कर्या आप हजुर ॥ १२ ॥ जो गुनहा लाख गमे करी, सेवक लहीता जेह ॥ तो पण पोताना त्रेवडी, साहेब दाखी छेह ॥ प्रभुजी० ॥ १३ ॥ वळी वळी शुं कहीए घणुं, प्रभु विनति मन मांही

॥ इम भक्तने उवेखतां, नहीं भला दीसो कांही ॥ प्रभुजी० ॥ १४ ॥ मुज सरिखा कोडी गमे, सेवक तुमारे स्वाम ॥ पण मारे प्रभु तुम विना, नहीं अवर मन वीसराम ॥ प्रभुजी० ॥ १५ ॥ ए अरज मारी सांभळी, करुणा करी मन साथ ॥ कहे हंस प्रभु हेजे हवे, दरीसण दीजे नाथ ॥ प्रभुजी० ॥ १६ ॥

श्री सीमंधर जिन स्तवन.

समेत शिखरपर जिन वंदीये-ए देशी

कुमति एम सकळ दूरे करी, धारीए धर्मनी रीत रे; हारीए नवि रिपु बळ थकी, पामीए जगतमां जीत रे. स्वामी सीमंधर तुं जयो. ॥ १ ॥ ए आंकणी० भाव जाणे सकळ जंतुना, भव थकी दासने राख रे; बोलीया बोल जे ते घणुं, सफळ जो छे तुज शाख रे. स्वा० ॥ २ ॥ एक छे राग तुज उपरे, तेह मुज शिवतरु कंद रे, नवि गणुं तुज परे अवरने, जो मीले सुर नर वृंद रे; स्वा० ॥ ३ ॥ तुज विना में बहु दुःख लह्यां, तुज मील्ये ते केम होय रे; मेघ विण मोर नाचे नहीं, मेघ देखी नाचे सोय रे. स्वा० ॥ ४ ॥ मन थकी मिलन में तुज कीयो, चरण तुज भेटवा सांइ रे; कीजीए जतन जिन ए विना, अवर न वांछिए कांइ रे. स्वा० ॥ ५ ॥ तुज वचन राग सुख आगळे, नवि गणुं सुर नर शर्म रे; कोडा जो कपट कोइ दाखवे, नवि तजुं तोए तुज धर्म रे. स्वा० ॥ ६ ॥ तुं मुज हृदयगिरिमां वसे, सिंह जो परम निरीह रे; कुमत मातंगना

सुथथी, तो कीशा प्रभु मुज बीह रे. स्वा० ॥ ७ ॥ कोडी छे दास प्रभु ताहरे, माहरे देव तुं एक रे; कीजीए सार सेवक तणी, ए तुज उचित विवेक रे. स्वा० ॥ ८ ॥ भक्ति भावे इशुं भाखीए, राखीए एह मनमांही रे; दासना भव दुःख वारीए, तारीए मुज ग्रही बांहो रे. स्वा० ॥ ९ ॥ बाळ जेम तात आगळ कहे, विनवुं हुं तेम तुज रे; उचित जाणो तेम आचरो, नवि रखुं तुज किस्युं गुज रे. स्वा० ॥ १० ॥ मुज होजो चित्त शुभ भावथी, भव भव ताहरो सेव रे; याचीए कोडो यत्ने करी, एह तुज आगळ देव रे. स्वामी० ॥ ११ ॥

॥ श्री सीमंधर जिन स्तवन ॥

॥ राग काफी मनमोहनालाल—ए देशी ॥

॥ श्री सोमंधर साहिबा, जन रंजनालाल ॥ अतिशय वंत उदार हो, दुःखभंजनालाल ॥ सुणीये सेवक विनति, मन मोहना लाल ॥ सत्यकी मात मल्हार हो, जगसोहना लाल ॥ १ ॥ ज्युं चातक जलधर विना ॥ मन० ॥ अवर न याचे कांय हो ॥ जग० तुम विण अवर न प्रारथुं, गुण रोहणा लाल ॥ दृढ प्रतीत मुज एह हो, भविबोहना लाल ॥ २ ॥ एक तारी करी जे रहे ॥ मन० ॥ ते किम कीजे दुरे हो ॥ जग० ॥ इम शोभा नवि संपजे ॥ मन० ॥ सेवक इच्छित पूरे हो ॥ जग० ॥ ३ ॥ श्री श्रयांस नृप कुल तिलो ॥ मन० ॥ सज्जन नयणानंद हो ॥ जग० ॥ रूखमणी

राणी नाहलो ॥ मन० वृषभ लांछन सुख कंदहो ॥ जग० ॥ ४ ॥ पूर्व विदेहे सुखल्लइ ॥ मन० ॥ नयरी अयोध्या भूप हो ॥ जग० ॥ विजया मांहि विराजता ॥ मनु० ॥ ज्ञानविमल गुण रुप हो ॥ जग० ॥ ५ ॥ इति ॥

श्री सीमंधर जिन स्तवन ॥

॥ ते दिन क्यारे आवशे–ए देशा ॥ राग–वेलाउल.

॥ श्री सी मंधर विनती, सुण साहिब मेरा ॥ अहनिश तुम ध्याने रहुं, में फरजन तेरा ॥ श्री सी० ॥ १ ॥ भाव भक्ति शुं वंदना, करुं उठी सवेरा ॥ भवदुःख सागर तारीये, जिम होय तुम नेरा ॥ श्रीसी० ॥ २ ॥ अंतर रवि जब प्रगटीया, प्रभु तुम गुण केरा ॥ तव हम मन निर्मळ भया, मिथ्या मोह अंधेरा ॥ श्रीसी० ॥ ३ ॥ तारक तुम विण अवरको, कहो कवण भलेरा ॥ ते प्रभु हमकुं दाखवो, करुं तास निहोरा ॥ श्रीसी० ॥ ४ ॥ नय नितु नेहे निरखीये, प्रभु अबकी वेरा ॥ बोधि बीज मोहे दीजीये, कहुं कहा बहु तेरा ॥ श्रीसी० ॥ ५ ॥ इति ॥

—:o:—

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन प्रारंभः ॥

॥ देशी गरबानी ॥

॥ साहिबा सकल मंगल सुखसिंधु के, जगबंधु जगो रे लो ॥ सा० ॥ सिद्धाचल शणगार के, जोवा अलजयो रे लो ॥ १ ॥

॥ सा० ॥ हैयामां घणी होंश के, भगवंत भेटवा रे लो ॥ सा० ॥ जन्म जरानां जोर के, माहादुःख मेटवा रे लो ॥ २ ॥ सा० ॥ हृदयमांहे दिनरात के, चाहुं चाकरी रे लो ॥ सा० ॥ लगन लागी तुझ नाम के, मुझ मन आकरी रे लो ॥ ॥ ३ ॥ सा० ॥ हुं आवुं एकवार जो, राज्य हजूरमां रे लो ॥ सा० ॥ तो नावुं निरधार के, भवदुःख भूरमां रे लो ॥ ४ ॥ सा० एकतानें एकवार के, दर्शन देखवा रे लो ॥ सा० ॥ मानवभव माहाराज के, लेखें लेखवा रे लो ॥ ५ ॥ सा० ॥ शुं करुं हुं संसार के, मुक्तें मोहियो रे लो ॥ सा० ॥ प्रभुपदपंकज मुझमन, मधुप आरोहिगो रे लो ॥ ६ ॥ सा० ॥ न गमे बीजुं नाम के, ऋषभ हृदय वस्यो रे लो ॥ सा० ॥ न मले बीजो नाथ के, जिनजी तुझ जिम्यो रे लो ॥ ७ ॥ ॥ सा० ॥ दीठो नही देदार के, तारक ताहरो रे लो ॥ ॥ सा० ॥ एलें गयो अवतार के, त्यां लगें माहरो रे लो ॥ ॥ ८ ॥ सा० ॥ मानव ते पशुरूप के, जिणें नवि जोइयो रे लो ॥ सा० ॥ तुं त्रण भुवननो नाथ के, भव तेणें खोइयो रे लो ॥ ९ ॥ सा० ॥ शत्रुंजय गिरनार के, सोरठ देशमां रे लो ॥ सा० ॥ निरखे जे नर नार के, नयण प्रदेशमां रे लो ॥ १० ॥ सा० धन्य तेहनो अवतार के, धन ते तारिका रे लो ॥ सा० ॥ सफल गणुं संसार के, भवजल तारिका रे लो ॥ ११ ॥ सा० ॥ धन्य घडी दिन मास के, वार वरस वली रे लो ॥ सा० ॥ वांद्या जिहां वितराग के, भांखे केवली रे लो ॥ १२ ॥ सा० ॥ आप

तणा अधिकार के, साधुं जोइने रे लो ॥ सा० ॥ देखाडो देदार के, सन्मुख होइने रे लो ॥ १३ ॥ सा० ॥ लोचन लेहेजामांहे के, कोड शुं कामना रे लो ॥ सा० ॥ साधो तम तत्काल के, सुख शिवधामना रे लो ॥१४॥ सा० ॥ मरुदेवी निज मात के, मुक्तें मोकली रे लो ॥ सा० वली तारो एक दुर्गता, नापें डोसली रे लो ॥ १५ ॥ सा० ॥ दुरितकारि महा दीन के, आपे केइ उद्धरी रे लो ॥ सा० ॥ मेहेल्यां मुक्तिमझार के, कर्मक्षयें करी रे लो ॥ १६ ॥ सा० ॥ आवी लाग्यो बांहे के, ते तं तारीयो रे लो ॥ सा० ॥ मुजने तो शामाटे, वाला विसारीयो रे लो ॥ १७ ॥ सा० ॥ यात्रानो मल्यो योग तो, आव्यो उम्मही रे लो ॥ सा० ॥ भांगुं भवजंजाल के, दुःख सवऔं दही रे लो ॥ १८ ॥ सा० ॥ मान तजी महाराज के, मागुं सेवना रे लो ॥ सा० ॥ दरिसन दीयो दयाल के, देव छो देवना रे लो ॥ १९ ॥ सा० ॥ वदि तेरश भृगुवार के, पोसह मासमां रे लो ॥ सा० सत्तर अठ्या-शिये स्वामी के, गायो उल्लासमां रे लो ॥ २० ॥ सा० ॥ वाचक उदयनी वाणी के, जे नर सांभले रे लो ॥ सा० ॥ पामे ते भवपार के, भगवंतमां भले रे लो ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

॥ आदिजिणेसर विनति हो राज, कहुं त्रिविधें करजोड रे ॥

सलूणा मीठा साहेबा ॥ मुझ मन तुझ पाय भेटवा हो राज, हेजें होंश करे लख कोड रे ॥ सलू० ॥ १ ॥ बहु दिननो हुं अलजीयो हो राज, जोवाश्री शेत्रुंजो गिरिराय रें ॥ स० ॥ पण तुझ दरिसननो सही हो राज, वचमा दीसे छे अंतराय रे ॥ स० ॥ २ ॥ कहोने उद्यम शुं करे हो राज, ज्यारें कर्म करे बहुजोर रे ॥ स० ॥ आतम कर्मे आधीन छे हो राज, जगमां जेम पडाइने दोर रे ॥ स० ॥ ॥ ३ ॥ प्राप्ति विण केम पामीयें हो राज, चित्तमां चाहे जे अभिप्राय रे ॥ स० ॥ भाविपदार्थ नीपजे हो राज, पण न फले अणसरज्यो उपाय रे ॥ स० ॥ ४ ॥ जेहवे समे जेहवुं लख्युं हो राज, सहेजें उदय आवे फल तेह रे ॥ स० ॥ लख्या विना लाभे नहिं हो राज, प्राणी सुख दुःखनां फल बेह रे ॥ स० ॥ ५ ॥ सूत्रसिद्धांतें एहवुं कह्युं हो राज, कीधां कर्म न छूटे कोय रे ॥ स० ॥ भारे कर्मी जीवडा हो राज, तेने तुझ दरिसण किम होय रे ॥ स० ॥ ॥ ६ ॥ कर्मे उद्यम उपजे हो राज, धर्मे आलस आवे अंग रे ॥ स० ॥ चंचल भ्रमर तणा परें हो राज, मनडुं न रहे एक ढंग रे ॥ स० ॥ ७ ॥ जन्म अफल जाये अछे हो राज, कांइक पूर्व कर्मना भोग ॥ स० ॥ ते दिन लेखे लेखशुं हो राज, जे दिन मलशे ताहरो जोग रे ॥ स० ॥ ८ ॥ कर्मविवर देशे जदा हो राज, त्यारे आवीशुं नाथ हजूर रे ॥ स० ॥ तिहा लगें जाणज्यो वंदना हो राज, नित्य उगमते सूर रे ॥ स० ॥ ९ ॥ जाणुं छुं निश्चें करी हो राज, आखर फलशे सेवा नेट रे ॥ स० ॥ पण विनति मनमां धरी हो

राज, प्रभुजी वेली देजो भेट रे ॥ स० ॥ १० ॥ तुझ मुख देखण कारणें हो राज, पंथें ओलंघ्या बहु घाट रे ॥स०॥ वन अटवीनां दुःख सह्यां हो राज, लेवा मुगति पुरीनी वाट रे ॥ स० ॥ ॥ ११ ॥ सत्तरशें छपनने समे हो राज इम पटणी संघे कीधी अरदास रे ॥ स० ॥ प्रसन्न थया त्रिभुवनधणी हो राज, वेगें पूरी मननी आश रे ॥ स० ॥ १२ ॥ भवियण भावें भेटज्यो हो राज, स्वामी सिद्धाचल शणगार रे ॥ स० ॥ उदय रतननो साहेबो हो राज, तेतो त्रिभुवनो आधार रे ॥ स० ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ श्री सिद्धाचल स्तवन. ॥

॥ भवि तुमे वंदोरे, सुरीश्वर गच्छराया–ए देशी ॥

॥ नाभिनंदन पूर्व नवाणुं, श्री आदीश्वर आव्या ॥ अजित शांति चोमासुं रहीया, सुरनरपति मन भाव्या, भवि तुमे वंदोरे, सिद्धाचल सुविचारी ॥ पाप निकंदोरे, गिरि गुण मनमां धारी ॥१॥ चैत्र सुद पुनमने दिवसे, गुण रयणायर भरीया ॥ पांच कोडीसुं पुंडरिक गणधर, भव सायरने तरिया ॥ भवि० ॥ २ ॥ पोतरा प्रथम प्रभुजी केरा, द्राविड वारिषेण जाणो ॥ कार्त्तिक सुदी पुनमने दिवसे, दस कोडी गुण खाणो ॥ भवि० ॥ ३ ॥ कुंता माता सती शिरोमणी, यदुवंशी सुखकारी ॥ पांडव वीस कोडीशुं सिद्धा, अशरीरी अणहारी ॥ भवि० ॥ ४ ॥ फागण सुदी दशमीने दिवसे, नमि विनमी बे कोडि ॥ आतम गुण निर्मल निपजाव्या, नावे एहनी

जोडी ॥ भवि० ॥ ५ ॥ चैत्र वदीं चौदशे शिव पामी, नमि पुत्री चोसठ ॥ रत्न त्रयी संपूर्ण साधी, पामी ए परमठ ॥ भवि० ॥६॥ फागण सुदी तेरसे शिव पाम्या, शांब प्रद्युम्न गुण खाणी ॥ साडी आठ कोडीशुं मुनिवर, परणी शिव पटराणी ॥ भवि० ॥ ७ ॥ राम भरत त्रण कोडी मुनिशुं, अचळ थया अरिहंत ॥ छेहेला नारद लाख एकाणुं, समरो मन करी शांत ॥ भवि० ॥ ८ ॥ एक सहसशुं थावच्चासुत, पंच सया सेलगजी ॥ एक हजारसुं शुक परिव्राजक, पाम्या पद अविचळजी॥भवि०॥९॥अतीत चोवीशीना चोत्रीसमा प्रभु,तेहना गणधर वंदो॥कदंब गणधर एक कोडीशुं, सिद्ध थया सुखकंदो॥भवि०॥१०॥एक हजारने आठ संघाते,बाहुबली मुनि मोटा ॥ त्रण कोडि शुं राम ऋषीश्वर, सिद्ध थया नहीं खोटा ॥ भवि०॥ ॥ ११ ॥ अंधक विष्णुपिता माता धारणी, तेह तणा दस पुत्र ॥ गौतम समुद्र विजय प्रमुख शिव पाम्या, राख्युं घरनुं सूत्र ॥भवि० ॥ १२ ॥ वळी तेहना आठ पुत्र वखाणो, अक्षोभ आदि कुमारा ॥ सोळ वरस संजम आराधी, पाम्या भवनो पारा ॥ भवि० ॥१३॥ अनाधृष्टिने दारुग मुनि दोय, आत्म शक्ति समारी ॥ ऋषभ सेनादिक तीर्थंकर पण, इहां वरीया शिवनारी ॥ भवि० ॥ १४ ॥ भरत वंशी राजादि घणेरा, आतम धर्मने साध्यो ॥ शुक राजन शोकागत मुणीओ, मुक्ति निलय गुण वाध्यो ॥ भवि० ॥ १५ ॥ जालि मयालिने उवयालि, देवकी षट सुत वारू ॥ सिद्ध थया मंडुक मुनि वळी, नमतां मन होय चारु ॥ भवि० ॥ १६ ॥ अतीत काले सिद्धा अनंता, सीद्धशे वळी अनंता ॥ संप्रतिकाळे मोटुं तीरथ, इम भाखे

भगवंता ॥ भवि० ॥ १७ ॥ धन्य ए तीरथ मोटो महिमा, पामी पातिक जाये ॥ क्षमाविजय जस तीरथध्याने, शुभ मन सिद्धि थाये ॥ भवि० ॥ १८ ॥ इति श्री सिद्धाचल स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचल स्तवन. ॥

॥ हरणी जव चरे ललनां ॥ ए देशी ॥

॥ कर जोडी कहे कामिनी ललना, लालाहो प्रीतमजी अवधार, एह गिरिवारु रे ललना ॥ सफल करो लही आपणो ललना, लालाहो मानवनो अवतार ॥ एह गिरि० ॥ १ ॥ नव लखो टीलोस्युं करु ललना, लाला होशे जवाली जोडावे ॥ एह० ॥ सुनंदानो नाहलो ल०, लालाहो त्रिभुवन तिलक भेटावी, ॥ एह० ॥ २ ॥ ऋषभ सेनादिक जिनवरा ललना, लालाहो मुक्ति गया इणे ठाम ॥ एह० ॥ जिनतणी फरसी भूमिका ललना, लालाहो सिद्ध अनंतानो ठाम ॥ एह० ॥ ३ ॥ इणी चोवीशी सिद्धाचले ललना, लालाहो नेमि विना त्रेवीस ॥ एह० ॥ भावी चोवीशी आवशे ललनां, लालाहो पद्मनाभादि जिनेश, ॥ एह० ॥ ४ ॥ आदि जिणंद समोसर्या ललना, लालाहो पूर्व नवाणुं वार, ॥ एह० ॥ चोमासु अजित जिनेश्वर ललना, लाला हो शान्ति चोमासुं सार ॥ एह० ॥ ५ ॥ पांच कोडि परिवारशुं ललना, ला-

आ स्तवनमां केटलीक गाथाओमां चरणो वधारे ओछा छे तेम अर्थ संगति पण बरोबर जणाती नथी.

लाहो ऋषभसेना पुंडरीक, ॥ एह० ॥ चत्री पुनमे शिव सपदा ललना, लालाहो पांमी थया नीरभीक, एह० ॥ ६ ॥ कार्तिक पुनम कामित वर्या ललनां, लालाहो द्राविड वारिषेण दोय ॥ एह० ॥ दस कोडि मुनि महंतशुं ललनां, लालाहो प्रणमी पातक धोय ॥ एह० ॥ ७ ॥ नमि विनमि विद्याधरा ललना, लाला हो बे कोडी साधु संगाते ॥ एह० ॥ फागण सुदी दशमी शमी ललना, लाला हो कीधो कर्मनो घात, एह॥८॥ रुषभ वंश नरपति घणां ललना, लाला हो भरत अंगज केई पाट, ॥ एह० ॥ सिद्धक्षेत्र श्रेणि चढी ललना, लाला हो रोप्या धर्मना घाट ॥ एह० ॥ ९ ॥ नारद एकाणुं लाखशुं ललना, लाला हो राम भरत त्रण कोटी, एह० ॥ वीश कोटिशुं पांडवा ललना, लाला हो देवकी सुत षट कोटि, ॥एह०॥१०॥ हरिनंदन दोय वंदिए ललना, लाला हो श्याम प्रद्युम्नकुमार, ॥ एह० ॥ साढी आठ कोडि साथे थया ललना, लाला हो शिव सुंदरी भरथार, ॥ एह० ॥ ११ ॥ थावच्चा सुत संयमी ललना, लाला हो सहसशुं अणसण लीध, ॥ एह० ॥ नेमी सिस नंदिषेणजी ललना, लाला हो अजित शान्ति स्तव कीध, ॥ एह० ॥ १२ ॥ सुव्रत सहस मुणिंद शुं ललना, लाला हो शुक परिव्राजक सिद्ध ॥ एह० ॥ पंचसया सेलकसूरि ललना, लाला हो मंडुक मुणिसुप्रसिद्ध, ॥ एह० ॥ १३ ॥ सिद्धाचल विमलगिरि ललनां, लाला हो मुक्ति निलय सिद्ध ठाम ॥एह०॥ शत्रुंजय आदि जेहनां ललना, लाला हो उत्तम एकवीस नाम ॥ एह० ॥ १४ ॥ भवसायर तरीए जिणे ललना, लाला हो तीरथ तेह कहाय ॥ एह० ॥

कारण सकल सफल होय ललना, लाला हो आतम वीर्य सहाय, ॥ एह० ॥ १५ ॥ कीर्त्ति स्थंभ ए जैननो ललना, लालाहो शिव-मंदिर सोपान, ॥ एह० ॥ क्षमाविजय गुरुथी लही ललना, लाला हो सेवक जिनधरे ध्यान ॥ एह० ॥ १६ ॥ इति श्री सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ जीरे मारे श्री सिद्धाचल तीर्थ, शास्वतुं प्रायः जाणीये ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे नाभिनरेश्वर नन्द, ऋषभ जिणंद बखाणीये ॥ जीरे जी॥जीरे मारे पूर्वनवाणुं वार,गिरि दर्शनने आवीया॥जीरे जी ॥ जीरे मारे आद्य आठमथी जाण, फागण सुदी मन भावीया ॥ जीरे जी ॥ १ ॥ जीरे मारे रायण ऋषभ मनोहार, ते चरणे पावन करी ॥ जीरे जी ॥ जीरे मारे हुं वन्दु त्रण काल, भावघणो मनमां धरी ॥ जीरे जी ॥ जीरे मारे भरतेश्वर निजनंद, पुछे प्रभु बहु मानथी ॥ जीरे जी ॥ जीरे मारे तुम सरीखा जगनाथ, पूज्य कहे कुण कामथी ॥ जीरे जी ॥ २ ॥ जीरे मारे कृपावन्त भगवन्त तीर्थ महिमा अति दाखीयो ॥ जीरे जी ॥ जीरे मारे आठ उपर सो नाम, रस स्वाद करी चाखशो ॥ जीरे जी ॥ जीरे मारे सांभ-ळी जिनवर वाण, ऋषभसेन प्रमुख वली ॥ जीरे जी ॥ जीरे मारे चोरासी गणधार, तीर्थ स्थापे मन रुली ॥ जीरे जी ॥ ३ ॥ जीरे मारे ऋषभसेन पुंडरीक, पुछे प्रभु चरणे नमी ॥ जीरेजी ॥ जीरे

मारे कीहां होशे मुज सिद्धि, भाख्यो पूज्य केवल गमी॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे कहे केवली जिनराज,नाण निर्वाण साधशो जीरेजी॥ जीरे मारे ए तीर्थे महा भाग्य, गुण अतिशय वाधशो ॥ जीरेजी ॥४॥ जीरे मारे पांच कोडी अणगार, फागण सुदी पूनम भली ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे करी संलेखन सार, चैत्र सुदी पूनम वली ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे पामी केवल नाण, अजरामर सुख पामीया ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे सादि अनंत निवास, जन्म जरा दुःख वामीया ॥ जीरेजा ॥ ५ ॥ जीरे मारे द्राविड ने वारिषेण, दशकोडी मुनि परिवारशुं ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे कात्तिक पुनम दिनसार, हुं वदु भला भावशुं ॥ जीरेजी ॥ जोरे मारे विद्याधर मुनि दोय, नमि विनमि वखाणीये ॥ जीरेजीं ॥ जीरे मारे वे कोडी मुनि संजुत्त, अव्याबाध सुख पामीथा ॥ जीरेजी ॥ ६ ॥ जीरे मारे सागरचंद मुनिराय, त्रण कोडि परिवारशुं ॥ जीरेजी ॥जीरे मारे सोमजय अणगार, तेर कोडि भलाभावशुं ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे दमी तारी नीसल्ल, चउद सहमसुं सिद्ध थया ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे बाहुबली बलवंत, एक सहस आठशुं शिव गया ॥ जीरेजी ॥ ७ ॥ जीरे मारे पांडव पांच झूझार, वीश कोडि परिवारशुं ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे आसो पुनम दिन सार, मुक्ति वर्या भले भावसुं॥जीरेजी ॥जीरे मारे इत्यादिक अनेक, कांकरे कांकरे सिद्ध थया॥ जीरेजी॥ जीरे मारे ए तीरथ आधार, कर्म खपावी मोक्षे गया ॥ जीरेजी ॥ ८ ॥ जीरे मारे जात्रा नवाणुं एह, जे करशे भला भावशु ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे ते तरशे संसार, न पडे भवना दावशुं ॥ जीरेजी ॥

जीरे मारे जिन उत्तम महाराज, पाय पद्म तस नामीये ।।जीरेजी।।
जीरे मारे रूप विजय कविराय, शिव सुख लक्ष्मी पामीये।।जीरेजी।।
।। ९ ।। इतिश्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन संपूर्ण ।।

श्रीसिद्धचक्रजीनुं स्तवन.

।। वीर जोनेश्वर साहेब मोरा ।। ए देशी ।।

।। सकल कुशल कमलानुं मंदिर, सुंदर महीमारे जास ।। नवपदमां नव निधिना दाता, सिद्ध अनेकमां वासरे ।। भविका सिद्ध चक्र सुखकारी ।। तुमे आराधो नरनारीरे भविका० ।। प्रथम पदे अरिहंत आराधो, स्फटीक रत्न सम वान।।पद्म एक मणिनी परें राता, बीजे सिद्धनुं ध्यानरे भविका०।। २ ।। त्रीजे आचारज अनुसरीए, कंचन कांति अनोप ।। पद चोथे उवझायने प्रणमो, इंद्र नील सम वानरे ।। भविका० ।। ३ ।। सर्व साधु पद पंचम प्रणमो, श्याम वरण सुखकार ।। छट्ठे दरिसण ज्ञान सातमे, आठमे चारित्र साररे ।। भविक० ।। ४ ।। तपनुं आराधन पद नवमे, चारए उज्वल वरणा ।। इह लोगोतमे एहीज मंगल, करवा एहनुं शरणरे ।। भविका० ।।५।। आसो चैत्री अट्ठाइमांहि, नव आंबिल नव ओळी ।। सिद्धचक्रजीनी पूजा करतां ।। दुःख सवि नाखो ढोळीरे ।। भविका० ।। ६ ।। सिद्धचक्र पूजाथी सघळी, संपदा निज घेर आवे ।। दुष्ट कुष्ट प्रमुख जे रोगा, ते पण दुरे जायरे ।। भविका० ।। ७ ।। पृथ्वी निरुपम नयरी उज्जेण, दोय पुत्री तस सारी ।। सुरसुंदरी मिथ्यात्विने पेखी,

मयणा जिन मत धारीरे ॥ भविका० ॥ ८ ॥ सुरसुंदरी कहे सवि सुख अमने, छे निज तात पसाय ॥ मयणा कहे ए फोगट कुमत, सुख दुःख कर्म पसायरे ॥ भविका० ॥ ९ ॥ तव वचन नृप कोप्या एह, आव्यो उंबर इण समे ॥ ज्ञानसें कोढिनो ते अधिपति, तेणे मागी कन्यायरें ॥ भविका० ॥ १० ॥ नृप कहे मयणा तुम कर्मे, आण्यो ए वर रसाल॥ तव मयणा मन धीरज धरीने, कंठे ठावे वरमालरे ॥ भविका० ॥ ११ ॥ शुभवेला परणी दोय पहोच्यां, श्री-जिनवर प्रासाद ॥ ऋषभदेव पूजा गुरुपासे, आव्या धरि उल्लासरे ॥ भविका० ॥ १२ ॥ प्रणमी मयणा कहे गुरुने, हवे भांखो कोई उपाय ॥ जेहथी तुम श्रावकनी काया, सर्वनीरोगी थायरे ॥ भवि-का० ॥ १३ ॥ गुरु कहे अमने मंत्र जंत्रादिक, कहेवा नहि आचार ॥ योग्य पणुं जाणी अमे कहेशुं, करवाने उपगाररे ॥ भविका० ॥ ॥ १४ ॥ नव दीन नव आंबिल तप करीने, सिद्ध चक्र नित्य पूजो ॥ न्हवण तणु जल छांटो अंगे, रोग सकल ताहां ध्रुजे रे ॥भविका०॥ ॥ १५ ॥ गुरु वचन आंबिल तप करीने, सिद्धचक्र आराध्यो ॥ उंबर कोढ गयो तस दूरे, रूप अनुपम वाध्योरे॥ भविका० ॥१६॥ श्री श्रीपाल नरेंद्र थयो जे, परण्यो बहु कन्याय ॥ प्रजापाल पण थयो श्रावक, श्री जिनधर्म पसायरे ॥ भविका० ॥ १७ ॥ अनुक्रमे चंपा राज्य लइने, पाले अखंडित आण ॥ जगमांहे जसवाद थयो बहु, नित्य नित्य रंग मंडाणरे ॥ भविका० ॥ १८ ॥ महामंत्र पर-मेष्टी तणोए, भवदुख नासे सविळंत ॥ सकल सिद्धि वश करवाने, एह अनोपम यंत्ररे ॥ भविका० ॥ १९ ॥एहनो महिमा केवली जाणे,

किम छद्मस्थ प्रकाशे ॥ ते माटे ए सकल धर्मथी, सारो भासे जिन धर्मरे ॥ भविका० ॥ २० ॥ ते माटे भवियण तुमे भावो, सिद्धचक्र करो सेवा ॥ आ भव परभव बहु सुख संपदा, जिम लहिये शिव मेवारे ॥ भविका० ॥२१॥ सुरत बंदर रही चोमासुं, स्तवन रच्युं एवारी ॥ सतरसें बासठ वरसें, संघ सकल हित कारीरे ॥भविका०॥ ॥ २२ ॥ सिद्धचक्रनो महिमा सुणतां, होवे सुख विस्तार ॥ श्री विजयसेनसूरिश्वर विनवे, दान विजय जयकारीरे ॥भविका०॥२३॥

श्री अष्टापदजीनुं स्तवन.

॥ नींदरडी वेरण हुई रही ॥ ए देशी. ॥

॥ श्रीअष्टापद उपरे, जाणी अवसर हो आव्या आदिनाथके॥ भावे चोसठ इंद्रशुं, समवसरण हो मल्या मोटा साथके ॥श्री०॥१॥ विनीतापुरथी आवियो, बहु साथे हो वली भरत भूपाल के॥ वांदी हीयडा हेजसुं, तात सुरतीहो निके नयणे निहालके ॥ श्री० ॥२॥ लई लाखीणा भामणी, कहे वयणा हो मोरा नयणा धन्नके ॥ विण सांकल विण दोरडे, बांधी लीधुं हा वाहाला तें मन्नके ॥श्री०॥३॥ लघु भाईए लाडका, ते तो तातजी हो राख्या हीयडा हजुरके ॥ देशना सुणी वांदी वदे, धन्य जीवडाहो जे तर्या भवपुरके॥श्री०॥४॥ पूछे प्रेमे पुरीयो, आ भरते हो आगल जगदीशके ॥ तीर्थंकर केता होशे, भणे ऋषभजी हो अम पछी त्रेवीसके॥ श्री० ॥ ५ ॥ माघनी सामळी तेरसे, प्रभु पाम्या हो पद परमानंदके ॥ जाणी भरतेश्वर

भणी, ससनेहा हो नाभिरायाना नंदके ॥ श्री० ॥ ६ ॥ मनमोहन दीन एटला, मुज साथ हो रुषणा नविलीधके ॥ हेज हियरो पर हरी, आज उंडी हो अबोलडा लीधके ॥ श्री० ॥ ७ ॥ विण वांके कांइ विरसिया, ते तोडया हा प्रभु प्रेमना त्रागके॥ इन्द्र भरतने बुझ-व्या, दोस म दीयो हो ए जिन वीतरागके॥श्री०॥ ८॥ शोक मुकी भरतेसरु, वारधिकने हो वली दीध आदेशके ॥ थुभ करो जिण जिण थानके, संसकार्याहो तातजी रीसहेसके ॥ श्री० ॥ ९ ॥ वली बंधव बीजा साधुना, तीहां कीधाहा त्रण थुभ अनुपके॥ उंचो स्फटिकनो फुटडो, देखी डुंगरहो हरख्या भणे भूपके॥ श्री०॥१०॥ रतन कनक थुभ ढुंकडो, करो कंचन हो प्रसाद उत्तंगके ॥श्री०॥ ॥ चोवारा चूंपे करी, एक जोयण हो मान मनरंगके ॥ श्री० ॥ ११ ॥ सिंह निषिद्या नामनो, चोरासी हो मंडप प्रसादके ॥ त्रण कोश उंचो कनकमें, ध्वज कलशे हो करे मेरुमुं वादके ॥ श्री० ॥ १२ ॥ वान प्रमाणे लंछने, जिन सरखीहो तीहां प्रतिमा कीधके ॥ दोयचार आठ दस भणी, ऋषभादिक हो पूखे परसिद्धके ॥श्री० ॥१३॥कंचन मणी कमले ठवि, प्रतिमानी हो आणी नासिका जोडके ॥ देव वदे रंग मंडपे, नीलां तोरण हो करी कोरणीकोडके ॥श्री०॥१४॥ बंधव बेन माता तणी, मोटी मुरताहो मणी रतने भरायके ॥ मरुदेवा मयगल चढी, सेवा करतीहो निज मुरतीनो पायके ॥ श्री० ॥ १५ ॥ पा-डिहारज छत्र चामरा, जक्षादिक हो कीधा अनिमेषके ॥ गोमुख चतुर चक्केसरी, गढवाडीहो कुंड वाव्य विशेष के ॥ श्री० ॥ १६ ॥ प्रतिष्ठा प्रतिमा तणी, करावेहो राजा मुनिवर हाथके ॥ पूजा स्नात्र

प्रभावना, संघ भक्ति हो खरची खरी हाथके ॥ श्री० ॥१७॥ पडते आरे पापीया, मत पाडोहो कोई वारुइ वाटके ॥ एक एक जोयण आंतरे, इम चिंतवीहो करे पावडियां आठके ॥ श्री० ॥ १८ ॥ देव प्रभावे ए देहरां, रहेशे अविचलहो छठा आरा सीमके ॥ वांदे आप लब्धिने तरे, नर तेणे भवहो भवसागर सीमके ॥ श्री० ॥१९॥ कैलासगिरिना राजीआ, दीओ दरीसण हो कांई म करो ढीलके॥ अरथी होये उतावला, मतराखोहो अमशुं अडखीलके ॥श्री०॥२०॥ मन मान्याने मेलवे, (आवा मइहो ते न मले मित्तके ॥) आवा स्थाने हो कोइ न मले मित्र के, अंतरजामी मीलया पछी, किम चालेहो रंग लाग्यो मजीठ ॥ श्री० ॥ २१ ॥ ऋषभजी सिद्धि वधु वर्या, चांदलिया हो ते देउल देखाडके ॥ भले भावे वांदि करी, मागुं मुक्तिना हो मुज बार उघाडके ॥ श्री० ॥ २२ ॥ अष्टापदनी जातरा, फल पामेहो भावे भणे भासके ए श्रीभावविजय उवझायनो, भाण भाखेहो फले सघलो आशके ॥ श्री० ॥ २३ ॥ इति ॥

श्री वीश स्थानकनुं स्तवन.

॥ हांरे मारे प्रणमुं सरस्वती मागुं वचन विलासजो, वीशरे तप स्थानक महिमा गाईशुंरे लोल ॥ हांरे मारे प्रथम अरिहंत पद लोगस्स चोवीसजो, बीजेरे सिद्ध स्थानक पन्नर भावशुंरे लोल ॥१॥ हां० ॥ त्रीजे पवयणसुं गणशो लोगस्स सातजो, चउथेरे आयरियाणं छत्रीसनो सहारे लोल ॥हां०॥ थेराणं पद पंचमे दस उदा-

रजो, छट्ठेरे उवज्झायाणं पचवीसनो सहीरे लोल ॥ २ ॥ हां० ॥ सातमे नमोलोए सव्वसाहु सत्तावीसजो, आठमे नमो नाणस्स पंचे भावशुंरे लाल ॥ हां० ॥ नवमे दरिसण सडसठ मनने उदारजो, दशमे नमो विणयस्स दस वखाणीएरे ॥ ३ ॥ हां० अगीआरमे नमो चारित्तस्स लोगस्स सत्तरजो, बारमे नमो बंभस्स नवगुणे सहीरे लो० ॥ हां० ॥ कीरियाणं पदतेरमे वली पचवीसजो, चउदमे नमो तवस्स बार गुणे सहोरै लो० ॥ ४ ॥ हां० पंदरमे नमो गोयमस्स अट्ठावीसजो, नमो जिणाय चउवीस गणशुं सोलमेरे लो०॥हां० सत्तरमे नमो चारित्त लोगस्स सित्तेर जो, नाणस्सनो पद गणशुं एकावन अढारमेरे लो० ॥ ५ ॥ हां० ओगणीसम नमो सुअस्स वीस पीस्तालीसजो, वासमे नमो तित्थस्स वीस भावसुंरे लो० ॥ हां० ए तपनो महिमा चारसें उपर वीसजो, पटमासे एक ओली पूरी कीजीएरे लो० ॥ ६ ॥ हां० तप करतां वळी गणीये दोयहजार जो, नवकारवाली वीसे स्थानक भावसुंरे लो० ॥ हां० प्रभावना संघ स्वामी वच्छल सारजो, उजमणां विधि कीजीए विनय लीजीएरे लो० ॥७॥ हां० तपनो महिमां कहो श्री वीर जिनरायजो, विस्तारे इम संबंध गोयम स्वामिनेरे लो० ॥ हां० तप करतां वली तीर्थंकर पद होयजो, देवगुरु इम कांति स्तवन सोहामणोरे लो० ॥ ॥ ८ ॥ इतिश्री वीस स्थानक स्तवन संपूर्ण ॥

अथ एकादशीनुं स्तवन.

॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ समवसरण बेठा भगवंत, धर्म प्रकाशे श्रीअरिहंत ॥ बारे परखदा बेठी रुडी, मागसर सुदी अ ीयारम्स वडी ॥ १ ॥ मल्लि-नाथनां तीन कल्याण, जन्म दीक्षाने केवल ज्ञान ॥ अर दीक्षा लीधा रुडी ॥ मागमर मुदी अगीआरस वडी ॥ २ ॥ नमीने उप-न्यु केवल ज्ञान, पांच कल्याणक अति प्रधान ॥ ए तिथिनी महि-मा वडी, ॥ मा० ॥ ३ ॥ पांच भरत ऐरवत इमहीज, पांच कल्या-णक हुवे तिमहीज ॥ पचासनी संख्या परगडी, ॥ मा० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत गणतां एम, दोढसो कल्याणक थाय तेम ॥ कुण तिथि छे ए तिथि जेवडी ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनंत चोविशी इण परे गणो, लाभ अनंत उपवास त ो ॥ ए तिथि सहुशीर ए खडी, ॥ मा० ॥ ६ ॥ मौन प े रह्या श्रीमल्लिनाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ॥ मौन तणा परे व्रत इम वडो ॥ मा० ॥ ७ ॥ आठ पोहोरी पोसो लीजीये, चौविहार विधिशुं कीजीए ॥ पण प्रमाद न कीजे घडी ॥ मा० ॥ ८ ॥ वर्ष इग्यार कीजे उपवास, जावजीव पण अधिक उल्लास ॥ ए तिथि मोक्षतणी पावडी, ॥ मा० ॥ ९ ॥ उजमणुं कीजे श्रीकार, ज्ञाननां उपगरण इग्यार इग्यार ॥ करो काउसग्ग गुरु पाये पडी॥ मा० ॥१०॥ देहेरै स्नात्र कीजे वली, पोथी पूजो जे मन रळी ॥ मुक्ति पुरी कीजे ढूंकडी ॥ मा० ॥ ११ ॥ मौन अगीआ-रस मोटुं पर्व, आराध्यां सुख लहीए सर्व ॥ व्रत पचखाण करो

आखडी ॥ मा० ॥ १२ ॥ जेसल सोल इक्यासी समे, कीधुं स्तवन सहु मनगमे ॥ समय सुंदर कहे दाहडी ॥ मा० ॥ १३ ॥

॥ अथ एकादशी स्तवनं ॥

॥ एकादशी तिथि सेवीयेरे लाल, उलट आणी अंग मेरे प्यारे रे ॥ कल्याणक दिन ए वडोरे लाल, कहे जिनजी मनरंग ॥ मेरे प्यारे रे ॥ एका० ॥ १ ॥ ऋषभ अजित संभव वलीरे लाल, अर मल्लि नमिनाथ ॥ मेरे प्या० ॥ पार्श्वनाथ दीक्षा वलीरे लाल, सेवो शिवपुर साथ ॥ मेरे प्या० ॥ एका० ॥ २ ॥ मौन एकादशा एवडीरे लाल, कल्याणक एकसो पचास, ॥ मेरे प्या० ॥ शत उपवास आराधतांरे लाल, होइ धरी लिल वास ॥ मेरे ॥ प्या० ॥ एका० ॥ ३ ॥ केवलज्ञानी ज्ञानशुंरे लाल, महिमा भाख्यो उदार ॥ मेरे० ॥ कृष्ण प्रभु मुखे आदर्योरे लाल, उजव्यो विधि मनोहार ॥ मेरे० ॥ ॥ एका० ॥ ४ ॥ मिथ्यात्वी माने घणुंरे लाल, जिनशासन दिन एह ॥ मेरे० ॥ आदरीये आदर घणा रे लाल, धणकण कंचन गेह ॥ मेरे० ॥ एका० ॥ ५ ॥ मौन पणे पोसह करीरे लाल, विकथा नो परिहार ॥ मेरे० ॥ गणणुं गणीए नेहशुंरे लाल, होई अल्प संसार ॥ मेरे० ॥ एका० ॥ ६ ॥ एकादशी महिमा कहुंरे लाल, गौतम आगले वीर ॥ मेरे० ॥ श्री मेरुविजय सुपसाउलेरे लाल, मेरु लहे भव तीर ॥ मेरे० ॥ एका० ॥ ७ ॥ इति एकादशी स्तवनम् ॥

श्री ऋषभदेव जिननुं पारणुं.

आहे जस घरे जावेजी वहोरवा, होय आनंद अंग न माय ॥ ऋषभ घेर आवे छे. ॥ १ ॥ आहे मणि रे माणेक मोति भर्यां, कोइ रत्न भरी भरी थाळ॥ ऋष० ॥२ ॥ आहे कोइरे घोडा कोइ पालखी, कोइ आपे हाथी केरा दान॥ ऋष० ॥३ ॥ आहे कोइज पुत्री वल्लभा, कोइ आपे कन्या केरा दान॥ ऋष० ॥४ ॥ आहे कोइ नवि आपे सूजतो, कोइ व्होरावे नहीं आहार॥ ऋष० ॥५॥ आहे तेणे समे स्वप्नज पेखीओ, आहे दश भव केरो स्नेह॥ ऋष० ॥ ६ ॥ अहे इक्षुरे रस वहोरावीओ, तिहां ऋषभने उपजी छे लब्धि॥ ऋ० ॥ ७ ॥ आहे त्यांरे उभा कार्धुं पारणुं, एक वरसे मळीयेलो आहार॥ ऋ० ॥ ८ ॥ आहे पंच दिव्य रे प्रगट थयां, तिहां अहोदान महोदान गवाय॥ ऋ० ॥ ९ ॥ आहे त्यां कने वृष्टि सुवर्णतणी, थइ साडा बार क्रोड॥ ऋ० ॥१०॥ आहे मेरु शिखर रे खशी गया, श्रेयांसे दीधा छे थंभ॥ ऋ० ॥ ११॥ आहे त्यारे जातिसमरण पामतां, तिहां फरी नावे संसार॥ ऋ० ॥१२ ॥ आहे हीरविजय गुरु हीरलो, तिहां माणेक विजय गुण गाय॥ ऋ० ॥ १३ ॥

श्री सुमतिनाथ स्तवन.

॥ सजना मोरी सुमति जिनेसर सेवोरे ॥ स० ॥ नरभवना ए मेवोरे ॥ स० ॥ सारंगपुर शणगाररे ॥ स० ॥ आपे भवनो पाररे ॥ स० ॥ विनतडी अवधारोरे ॥ स० ॥ निज आतमने तारोरे

॥ १ ॥ स० ॥ भोग कर्म क्षय जाणीरे ॥ स० ॥ परण्या संजम राणीरे ॥ स० ॥ पुद्गल अनुभव छांड्योरे ॥ स० ॥ करमशुं झघडो मांड्योरे ॥ २ ॥ स० ॥ संवर कोट श्रीकाररे ॥ स० ॥ चोकी भावना बाररे ॥स०॥ धीरज ढाल पर सिद्धरे॥स०॥क्षमा खडग कर लीधरे ॥ ३ ॥ स० ॥ शियल सन्नाह धरी धीररे ॥ स० ॥ तप तिरकस भरी तीररे ॥ स० ॥ ज्ञानना गोला चलावीरे ॥ स० ॥ ध्यान अनल सलगावीरे ॥ ४ ॥ स० ॥ मोह रायने मार्योरे ॥ स० ॥ निज आतमने तार्योरे ॥ स० ॥ करम कटक सवि भाग्युंरे ॥ स० ॥ जीत नगारुं वाग्युंरे ॥ ५ ॥ स० ॥ केवल कमला वरियारे ॥ स० ॥ ज्ञानादिक गुण दरियारे ॥ स० ॥ आतम सुखना भोगीरे ॥ स० ॥ पुद्गल भाव वियोगीरे ॥ ६ ॥ स० ॥ सुमति जिन सुमात आपेरे ॥ स० ॥ आप समोवड थापेरे ॥ स० ॥ ए सम अवरन कोइरे ॥ स० ॥ त्रण भुवनमां जोइरे ॥ ७ ॥ स० ॥ आप थया शिव गामीरे ॥ स० ॥ करमशुं करशे हरामीरे ॥ स० ॥ सादि अनंते भागेरे ॥ स० ॥ ए पद कुण न मागेरे ॥ ८ ॥ स० ॥ शुं विषया रस राचोरे ॥ स० ॥ भवसुख जाणो काचोरे ॥ स० ॥ घरनो धंधो छोडोरे ॥ स० ॥ धर्मशुं ममता जोडोरे ॥ ९ ॥ स०॥ मणि उद्योत प्रभु पामीरे ॥ स० ॥ किम थाये विषयारामीरे ॥ स० ॥ कुण पीये खाटी छाशरे ॥ स० ॥ मुकी अमृत सुवासरे ॥ १० ॥ इति श्री सुमतिनाथ स्तवन ॥

श्री शांतिनाथनुं स्तवन.

जीरे मारे शांति जिनेश्वर देव, अरज सुणो एक माहरी जीरेजी ॥ए आंकणी॥ जीरे मारे भवमां भमतो रे सार, सेवा पाम्यो ताहरी जीरेजी. ॥ १ ॥ जीरे मारे मानुं सारुं देव, हरि हर दीठे लोयणा जीरेजी॥ जीरे मारे दीठे लाग्यो रंग, तुम उपर एके मना जीरेजी. ॥ २ ॥ जीरे मारे जेम पंथी मन धाम, सीताने मन रामजी जीरेजी ॥जीरे मारे विषयीने मन काम, लोभी चिंते दाम शुं जीरेजी. ॥ ३ ॥ जीरे मारे जीव मंदो दंभ नाग, नित्य ए ज्ञान दिशाथकी जीरेजी॥ जीरे मारे एवो प्रभु शुं रंग, ते तो तुम कृपाथकी जीरेजी. ॥ ४ ॥ जीरे मारे शांतिकरण शांतिनाथ, शांतितणा अर्थे सदा जीरेजी ॥जीरे मारे ऋद्धि वृद्धि तुम पास, अमृत पद आपो सदा जीरेजी. ॥ ५ ॥

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथनुं स्तवन.

चालो सखी सिद्धाचळ जइए ए देशी.

सुणो सखी शंखेश्वर जइए, विश्वंभरने शरणे रहीए; दुःख छंडीने सुखीयां थइए, सुणो सखी शंखेश्वर जइए. ॥ १ ॥ नमीए देवाधिदेवा,साचे शुद्धे करुं सेवा; चित्त वसे साचुंज कहेवा, सुणो० ॥ २ ॥ आणी कष्टथकी तो आरे, सेवक साहिब दिल धारे; भरावी दामोदर वारे, सुणो० ॥ ३ ॥ पडिमा पार्श्वनाथ तणी; गंगा जमना मांहे घणी- काळ असंख्य जिनेंद्र भणी, सुणो० ॥ ४ ॥ लवणोदधि व्यंतर नगरे, भुवनपतिमां एम सघळे; पूजी भाव घणेरे

अमरे, सुणो० ॥ ५ ॥ चंद्र सूर्य विमाने, कल्पे सौधर्म इशाने; अच्चीं बारमा गीर्वाणे, सुणो० ॥ ६ ॥ जादव लोक जरा वासी, राम हरि[1] रह्या उदासी; अठ्ठम ध्यान धरे आसी, सुणो० ॥ ७ ॥ पद्मावती देवी तुठी, शंखेश्वर प्रतिमा दीधी; जादव लोकनी जरा नीठी, सुणो० ॥ ८ ॥ पार्श्व प्रभुजीनो जश व्यापे, शंखेश्वर नगरी थापे; सेवकने वंछित आपे, सुणो० ॥ ९ ॥ गाम गामे ओच्छव थावे, थोके गुणीजन गुण गावे; शंखेश्वर नगरी पावे, सुणो० ॥ १० ॥ ते प्रभु भेटणने कामे, शा. मूळचंद सुत श्री पामे; संघवी माणेकशा नामे, सुणो० ॥ ११ ॥ वंशे वडा छे श्रीमाळी, इच्छा-चंद माणेक जोड झाली; गुर्जर देशनो संघ मळी, सुणो० ॥ १२ ॥ अढार सो सीतोतेर वरसे, मागशर .वद पडवा दिवसे; विश्वंभर भेटथा छे उलसे, सुणो० ॥ १३ ॥ साहिब मुख देखी हसता, श्री शुभवीर विघ्न हरता; प्रभु नामे कमळा वरता, सुणो० ॥ १४ ॥

॥ स्तुतिओनो संग्रह ॥

॥ अथ श्री वर्द्धमान तपनी स्तुति ॥

॥ वर्द्धमान आली करो, भव भव पातिक त्यारे हरो ॥ वर्द्धमान जिन पामीने, दूर करो सहु स्वामीने ॥ १ ॥ वर्द्धमानादिक

---

१ बळदेव, वासुदेव.

जिन तर्या, पूर्वे भवे जे तप कर्या ॥ ते तप मुजने फल आपो, आहारादिक संज्ञा कापो ॥ २ ॥ अंतगड आचार दिन, श्री चंद्र चरित्र आदरुं, तप कुलकादि ग्रंथजे, तप साधनना पंथ छे ॥ ३ ॥ तपगच्छ नंदन सुरतरु, श्री विजय धर्म सुरीसरु ॥ रत्न विजय सुखदायिका, सहायकरे सिद्धायिका ॥ ४ ॥ इति थोयो. ॥

॥ नवपदना आंबीलनी स्तुति ॥

॥ वीर जिणेसर, भवन दिणेसर, जगदीसर जयकारीजी ॥ श्रेणीक नरपति, आगळ जंपे, सिद्धचक्र तप सारीजी ॥ समकित दृष्टि, त्रिकरण शुद्धे, जे भवियण आराधेजी ॥ श्री श्रीपाल, नरिंद परें तस, मंगळ कमला वाधेजी ॥ १ ॥ अरिहंत विचें, सिद्ध सूरि पाठक, साहु चिहुं दिशि सोहेजी ॥ दंसण नाण, चरण तप विदिशें, एह नवपद मन मोहेजी ॥ आठ पांखडी, हृदयांबुज रोपी, लोपी रागने रीशजी ॥ ॐ ह्रीं पद, एकनी गणिये, नवकार वाली वीशजी ॥ २ ॥ आशो चैत्र, शुदि सातमथी, मांडी शुभ मंडाणजी ॥ नव निधि दायक, नव नव आंबिल, एम एकाशी प्रमाणजी ॥ देव वंदन, पडिकमणुं पुजा, स्नात्र महोत्सव चंगजी ॥ एह विधि सघलो, जिहां उपदेश्यो, प्रणमुं अंग उपांगजी ॥ ३ ॥ तप पुरे, उजमणुं कीजें, लीजे नवभव लाहोजी ॥ जिनगृह पडिमा, स्वामी वत्सळ, साधु भक्ति उत्साहजी ॥ विमलेसर, चक्केसरी देवी, सान्निध्य कारी राजेजी ॥ श्री गुरु खिमाविजय सुपसाये, मुनि जिन महिमा छाजेजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नवपदजीनी स्तुति ॥

॥ वीर जिणेसर अति अलवेसर, गौतम गुणना दरियाजी ॥ एक दिन वीरनी आणा लेइने, राजग्रही संचरीयाजी॥ श्रेणिक राजा वंदण आवे, उलट मनमें आणीजी ॥ परखदां बारे मांहे विराजे, सुणो भविक तुमे प्राणीजी ॥ १ ॥ मानव भव तुमे पुन्ये लाधो, सिद्धचक्र आराधोजी ॥ अरिहंत सिद्ध सूरि उवझाया, साधु देखी गुण वांदोजी ॥ दर्शनज्ञान चारित्र तप जाणो, नवपद जाप जपीजेजी ॥ धुर आसूथी करिये आंबिल, सुख संपदा पामीजेजी ॥२॥ श्रेणिक गौतमने इम पूछे, ए तप प्रभु केणे कीधोजी ॥ नव आंबिल स्वामी विधिस्यूं करतां, सुख संपद केणे लीधोजी ॥ मधुरी वाणी बोल्या गौतम, सुणो श्रेणिक तुमे वयणाजी ॥ रोग गयो ने संपदा पामी, श्री श्रीपालने मयणाजी ॥ ३ ॥ रमझम करतां चरणे नेपूर, देवी दीसे रूपालीजी ॥ नाम चक्केसरीने सिधाई, आदि वीर रखवालीजी ॥ विघन कोड हरै सहु संघना, जे सेवे ए पायोजी ॥ नयविजय सीस भाण विजयने, सानिध करजो मायोजी ॥ ४ ॥ इति ॥

—:०:—

॥ अथ दीवाळीनी स्तुती ॥

॥ मनोहर मुर्ति महावीर तणी, जिणे शोल पहोर देशना पभणी ॥ नव मल्ली नव लच्छी नृपति सुणी, कहि शिव पाम्या त्रिभुवन धणी ॥ १ ॥ शिव पोहोता रूषभ चउदश भक्तें, बावीश लह्या शिव मास थीते॥ छठ्ठे शिव पाम्या वीर वली, कार्त्तिक वदी अमा-

वस्या निरमली ।।२।। आगामी भावि भाव कह्या, दीवाली कल्पें जेह लह्या ।। पुण्य पाप फल अज्झयणें कह्यां, सवि तहत्ति करीने सद्दह्या ।। ३ ।। सवि देव मली उद्योत करे, परभाते गौतम ज्ञान वरें ।। ज्ञान विमल सद्गुण विस्तरै, जिन शासनमां जयकार करे ।। ४ ।। इति ।।

।। अथ श्री दीवाळी पर्वनो स्तुति ।।

।। सिद्धारथ ताता, जगत विख्याता, त्रिशला देवी माय ।। तिहां जग गुरु जनम्या, सवि दुःख विरम्या, महावीर जिनराय ।। प्रभु लेई दिक्षा, कर हित शिक्षा, देई संवच्छरी दान ।। बहु करम खपेवा, शिवसुख लेवा, कीधो तप शुभ ध्यान ।। १ ।। वर केवल पामी, अंतरजामी, वदि काती शुभ दीस ।। अमावस जातें, पाछली रातें, मुगति गया जगदीस ।। वलि गौतम गणधर, मोटा मुनिवर, पाम्या पंचम ज्ञान ।। थया तत्व प्रकासी, शील विलासी, पहोता मुगति निदान ।। २ ।। सुरपति संचरिया, रतन उधरिया, रात थई तिहां काली ।। जन दीवा कीधा, कारज सीधा, निसा थई उजवाली ।। सहु लोके हरखी, नजरे निरखी, परब कियो दीवाली ।। वलि भोजन भगतें, निज निज सगतें, जीमें सेव सुहाली ।। ३ ।। सिद्धायिका देवी, विघन हरेवी, वंछित दे निरधारी ।। करे संघने साता, जिम जगमाता, एहवी शक्ति अपारी ।। जिनगुण इम गावे, शिवसुख पावे, सुणज्यो भविजन प्राणी ।। जिनचंद्र जतीसर, महा मुनीसर, जंपे एहवी वाणी ।। ४ ।। इति ।।

॥ अथ उपदेशनी स्तुति ॥

॥ शासन नायक वीरजी ए, पामी परम आधार तो ॥ रात्री जीमण मत करो ए, जाणी पाप अपार तो ॥ घुअड[1] कागने नागना ए, ते पामे अवतार तो ॥ नियम नोकारशी नित्य करो ए, सांजे करो चौविहार तो ॥ १ ॥ वाशी बोळोने रींगणां ए, कंदमूळ तुं टाल तो ॥ खातां खोट घणी कही ए, ते माटे मन वाळतो ॥ काचुं दूधने छाशमां ए, कठोळ जमवां नीवारतो ॥ ऋषभादिक जिन पुजता ए, राग धरे शिवनार तो ॥ २ ॥ होली बलेवने नोरतां ए, पींपल पाणी म रेडतो ॥ शिल सातमनां. वासी वडां ए, खातां म्होटी खोट तों ॥ सांभली समकित दृढ करो ए, मिथ्या पर्व निवार तो ॥ सामायिक पडिकमणुं नित्य करो ए, जिन वाणी जग सारतो ॥ ३ ॥ ऋतुवंती अडके नहीं ए, न करे घरनां काम तो ॥ तेहना वंछित पुरशे ए, देवी चक्केसरी नाम तो ॥ हित उपदेशे हरख धरो ए, कोई म करशो रीस तो ॥ कीर्त्ति कमला पामशो ए, जीव कहे तस शिष्य तो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अध्यात्म स्तुति ॥

॥ उठी सवारे सामायेक लीधुं, पण बारणुं नवि दीधुंजी ॥ कालो कुतरो घरमां पेठो, घी सघलुं तेणे पीधुं जी ॥ उठो वहुअर

---

१ आ थोयना पहेली थोयमां त्रीजा चरणमां कोइ ठेकाणे (जो ढोकड देवा न मले पण तो पामो अपमान तो) आम पण लखेलुं छे.

आलस मूकी, ए घर आप संभालोजी ॥ निज पतिने कहा वीरजिन पूजो, समकितने अजुवालो जी ॥ १ ॥ बले बीलाडे जडप जडपावी, उत्रोड सर्व फोडी जी ॥ चंचल छैयां वारयां न रहे, त्राक भांगी माळ त्रोडी जी ॥ तेह विना रेंटियो नवि चाले, मौन भलो केने कही येंजी ॥ ऋषभादिक चोवीश तीर्थंकर, जपीयें तो सुख लहीयें जी ॥ २ ॥ घर वाशीदूं करोने वहूअर, टालो ओजीशालुं जी ॥ चोरटो एक करे छे हेरु, ओरडे घोने तालुं जी ॥ लबके महुणा चार आव्या छे, ते उभा नवि राखो जी ॥ शिवपद सुख अनंतां लहीये, जो जिनवाणी चाखोजी ॥ ३ ॥ घरनो खुणो कोल खणे छ, वहू तुमें मनमां लावोजो ॥ पोहाळे पलंगे प्रीतम पोढया, प्रेम धरीने जगावो जी ॥ भावप्रभ सूरि कहे नहीं ए कथलो, अध्यात्म उपयोगी जी ॥ सिद्धाइका देवी सान्निध्य करेवी, साधे ते शिवपद भोगीजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्री अध्यात्मनी स्तुति ॥

(मंगळ आठ करी जस आगळ—ए देशी.)

सोवन वाडी फूलडे छाइ, छाब भरी हुं लावुंजी, फूलज लावुं ने हार गुंथावुं, प्रभुजीने कंठे सोहावुंजी; उपवास करुं तो भूखज लागे, उनुं पाणी नवि भावेजी, आंबिल करुं तो लुखुं न भावे, नीवीए ठूमा आवेजी ॥ १ ॥ एकासणुं करुं तो भुखे रही न शकुं, सुखे खाउं त्रण टंकजी, सामायिक करुं तो बेसी न शकुं, निंदा करुं सारी रातजी; देरे जाउं तो खोटीज थाउं, घरनो धंधा चूकुंजी

वाम दई तो हाथज धूजे, हैये कंप वछूटेजी ॥ २ ॥ जीवने जमडानुं तेडुंज आव्युं, सर्व मेलीने चालेजी, रहो रहो जमडाजी आजनो दहाडो, शेत्रुंजे जइने आवुंजी; शेत्रुंजे जइने द्रव्यज खरचुं, मोक्ष मार्ग हुं मागुंजी, घेला जीवडा घेलुं शुं बोले, एटला दिवस शुं कीधुंजी ॥ ३ ॥ जाने जे जीवे पाछळ भातुं, शुं शुं साथे आवेजी, काची कुलेर खोखरी हांडी, काष्टना भारा साथेजी; ज्ञानविमळ सूरि एणी पेरे भाखे, ध्याओ अध्यात्म ध्यानजी, भाव भक्ति शुं जिनजीने पूजो, समकितने अजवाळोजी ॥ ४ ॥

॥ अथ दश त्रिकनी स्तुति ॥

॥ निसिही त्रण प्रदाक्षिणा त्रिणे, प्रणाम त्रिण करीजेजी ॥ त्रण प्रकारी पूजा करीने, अवस्था त्रिण धरीजेजी ॥ त्रण दिशि वर्जि जिनजोवो, भूमि त्रण पूजीजेजी ॥ आलंबन मुद्रा त्रण प्रणिधान, चैत्यवंदन त्रण कीजेजी ॥ १ ॥ पहेले भावजिन बीजे द्रव्य जिन, त्रीजे एक चैत्य धारोजी ॥ चोथे नाम जिन पांचमे, सर्व लोक चैत्य जूहारोजी ॥ विहरमान छठे जिन वंदो, सातमे नाण निहालोजी ॥ सिद्ध वीर ऊर्जित अष्टापद, शासन सुर संभालोजी ॥ २ ॥ शक्रस्तवमां दोय प्रकार, अरिहंत चेइआणुं त्रीजेजी ॥ चोविसथ्थामां दोय प्रकार, स्तुत स्तव दोय लीजेजी ॥ सिद्ध स्तवमां पांच प्रकार, ए बारे अधिकारोजी ॥ जित निर्युक्तिमांहे भाख्या, तेहमां ए विस्तारोजी ॥ ३ ॥ तंबोल पाण भोयण वाहण, मेहुण एक चित्त धारोजी ॥ थुंक सलेषम वडी लघुनिती, जुवटे रमवुं वा-

रोजी ॥ ए दश आशातना महोटी, वर्जो जिनवर द्वारोजी ॥ क्षमा विजय जिन एणीपरे जंपे, शासन सुर संभालोजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री समवसरण भाव गर्भित स्तुति ॥

॥ मिल चौविह सुरवर, विरचे त्रिगडो सार ॥ अढी गाऊं ऊंचो, पहुलो जोयण बार ॥ विच कनक सिंहासण, पद्मासन सुखकार ॥ श्री तीरथ नायक, बेसे चौमुख धार ॥ १ ॥ तीनछत्र शिरोवरी, चामर ढाले इंद ॥ देव दुंदुभि वाजे, भांजे कुमति फंद ॥ भामंडल पूठे, झलके जाण दिणंद ॥ तिहुअण जनमन, मोहे सयल जिणंद ॥ २ ॥ द्रव्य भावसु ठवणा, नाम निखेपा च्यार ॥ जिण गणहर भाख्या, सूत्र सिद्धांत मझार ॥ जिनवरनी पडिमा, जिन सरिखी सुखकार ॥ सुभ भावे वंदो, पूजो जग जयकार ॥ ३ ॥ दुःख हरणी मंगल, करणी जिनवर वाणी ॥ भवच्छेद कृपाणी, मोठी अमिय समाणी ॥ मन सुद्धे आणी, प्रतिबूझो भवि प्राणि ॥ सुयदेवि पसायें, पामें जयति सुनांणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ रोहिणीनी स्तुति ॥

॥ जयकारी जिनवर, वासुपूज्य अरिहंत । रोहिणी तपनो फळ, भाखे श्री भगवंत ॥ नरनारी भावे, आराधे तप एह । सुख संपत्ति लीला, लक्ष्मी पामे तेह ॥ १ ॥ ऋषभादिक जिनवर, रोहिणी तप सुविचार । निज मुखे प्रकाशे, बेठी पर्षदा बार ॥ रोहिणी दिन कीजे, रोहिणीनो उपवास । मन वंछित लीला, सुंदर भोग

विलास ॥ २ ॥ आगममांहि एहनो, बोल्यो लाभ अनंत । विधिशुं परमारथ, साधे सुद्धा संत ॥ दिन दिन वळी अधिको, वाधे अधिको नूर । दुःख दोहग तेहना, नासी जाये दूर ॥ ३ ॥ महिमा जग मोटो, रोहिणी तपनो जाण । सौभाग्य सदाये, पामे चतुर सुजाण ॥ नित्य नित्य घेर महोत्सव, नित्य नवला शणगार । जिन शासन देवी, लब्धि रुचि जयकार ॥ ४ ॥

॥ अथ चैत्री पुनमनी स्तुति ॥

॥ त्रिमला चल भूषण, ऋषभ जिनेश्वर देव ॥ तस आण लहीने, ऋषभसेन गणदेव ॥ ते तीरथमां मुख्य, परणी शिववहु सार ॥ चैत्री पुनम दिन, आणी हर्ष अपार ॥ १ ॥ विमलाचल महिमा, जिनवर कोडी अनंत ॥ उपदेशे पंडित, परिषद मांहि अनंत ॥ ते जिनवर देजो, मंगळ माला ऋद्धि ॥ चैत्री पूनम तप, आराधकने सिद्धि ॥ २ ॥ अष्टापद पमुहा, तीरथ कोडी अनेक ॥ तेहमां ए राजा, एम कहे आगम छेक ॥ ते आगम निसुणो, आणी हृदय विवेक ॥ चैत्री पूनम दिन, जिन होय पुण्य विवेक ॥ ३ ॥ चक्केसरी देवी, जिनशासन रखवाली ॥ सिंहासन बेठी, सिंहलंकी लटकाळी ॥ चैत्री पुनम तप, विघ्न हरजो माय ॥ श्री विजयराज सूरि, दान मान वरदाय ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचमीनी स्तुति ॥

॥ उत्तरदिशि अनुत्तरथी चवीआ, सौरीपुर अवतरीयाजी ॥ समुद्र विजय नृप परणी धरणी, उयरे गुण गण तरीयाजी ॥ श्रुचि शित पंचमी पंच रूपधर, प्रमुदित शुचिपति आवेजी ॥ पंच वरण

कलसे कनकाचल, शिखरे प्रभु न्हवरावे जी ॥ १ ॥ पंच कल्याणक चोवीश जिनना, दश खेत्रे सय बारजी ॥ अविरति बार तजीने आदरे, पंच महाव्रत भारजी ॥ पंचाचारे सोभित विचरे, पंचानन उपमान जी ॥ पंच प्रमाद मतंगज भेदी, पाम्या पंचम ज्ञानजी ॥ २ ॥ सूत्र (१) निर्युक्ति (२) टीका (३) चुरणी, (४) भाष्य(५) पंचांगी प्रमाणजी ॥ सांप्रत लखी गुणचालीश, सहस त्रणसय षष्टि मानजी ॥ तस अनुसारें गीतारथ कृत, वृत्यादिक विस्तारजी ॥ पंच प्रकारे सज्झाय करें मुनि, पाले पण व्यवहारजी ॥ ३ ॥ देश विरति पंचम गुण ठाणे, पंच प्रकारे तरीयाजी ॥ मानव गति चौदश गुणठाणा, पंचदश भुमिज त्ररियाजी ॥ पंचवीस भेदें सुर भाख्या, साचा समकीत धारीजी ॥ शक्ती अनुसरे सघला करज्यो, जिनशासन रखवाली जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ ज्ञानपंचमीनी स्तुति ॥

॥ श्री तीर्थंकर वीर जिणंदा, सिद्धारथ कुल गगन दिणंदा, त्रिशला राणी नंदा ॥ कहे ज्ञानपंचमी दिन सुखकंदा, मति श्रुतावरणी मटे भव फंदा, अज्ञाण कुंभी मयंदा ॥ दूग चउ भेद अठावीश वृंदा, समकित मतिथी उल्लसे आनंदा, छेदे दुरमति दंदा ॥ चउद भेदे धारो श्रुत चंदा, ज्ञानी दोयना पद अरविंदा, पुजो भाव अमंदा ॥ १ ॥ अवतरिया सत्रि जगदाधार, अवधिनाण सहित निरधार, पामे परम करार ॥ मागशिर शुदि पंचमी दिनसार, श्रावण सुदि पंचमी सुभवार, सुविधि नेम अवतार ॥ चैत्र वदि पंचमी घणी श्रीकार, चंद्रप्रभ च्यवन मंगल विस्तार, वर्त्यो जय जयकार ॥ त्रीजा ज्ञान दर्शन भंडार,

देखे प्रगट द्रव्यादिक चार, पुण्य अनंत अधिकार ॥ २ ॥ वैशाख वदि पंचमी मन आणी, कुंथुनाथ संयम गुणठाणी, थया मनः पर्यव नाणी ॥ दीक्षा महोत्सव अवसर जाणी, आवे सुरपति घणी इंद्राणी, वंदे उलट आणी ॥ विचरे पावन करता जग प्राणी, अध्यात्म गुण श्रेणी वखाणी, स्वरूप रमण सही नाणी ॥ अप्रमादि ऋद्धिवंता प्राणी, नमो नाणी ते आगम वाणी, सांभळी लहो शिवराणी ॥ ३ ॥ कार्तिक वदि पंचमी दिन आवे, केवळ ज्ञान संभव जिन पावे, प्रभुता पूरण थावे ॥ अजित संभव जिन अनंत सोहावे, चैत्र शुदि पंचमी मुक्ति कहावे, जेष्ट शुदि ते तिथि दावे ॥ धर्मनाथ परमानंद पद पावे, शासन सूरि पंचमी वधावे, गीत सरस कोई गावे ॥ संघ सकल भणी कुशल बनावे, ज्ञान भक्ति बहु मान जणावे, विजय लक्ष्मी सूरि पावे ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमीनी स्तुति ॥

अष्टमी वासर मज्झिम रयणी, आठ जाति दिशि कुमरीजी ॥ जन्म घरे आवें गहगहती, निज निज कारज समरी जी, अढार कोडा कोडि सागर अंतर, तुझ तोलें कूण आवें जी ॥ ऋषभ जगत गुरु दायक जननी, इम कही गीत सुणावे जी ॥ १ ॥ आठ करम मद पुरण जाणी, कलसा आठ प्रकार जी ॥ आठ इंद्राणी नायक अनुक्रमे, आठना वर्ग उदार जी ॥ अष्ट प्रकारी पुजा करीने, मंगळ आठ आलेखे जी ॥ दाहीण उत्तर दश जिनवरनो, जन्म महोत्सव लेखे जी ॥ २ ॥ प्रवचन माता आठ आराधो, आठ प्रमादने बांधो जी ॥ आठ आचार विभुषित आगम, भणतां शिवसुख साधो जी

॥ आठमें गुण ठाणें चढी अनुक्रमें, क्षेपक श्रेणि मंडाण जी ॥ आठमें अंगे अंतगड केवली, परिपामो निर्वाण जी ॥ ३ ॥ वैमानक (१) ज्योतिक (२) भुवनाधिप, (३) व्यंतरपति (४) सुरनारीजी ॥ क्षुद्रादिक अडदोष निवारी, अडगुण समकित धारी जी ॥ आठमें द्वीपे अठाई महोच्छव, करता भक्ति विशाल जी ॥ खीमाविजय जिनवरनी ठवणा, चोसठि सय अडयाल जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

॥ नेमीसरने श्रानारायण, प्रश्न करे पाय वंदी जी ॥ सकळ पर्वमां जेह महाफल, ते मुज कहो आणंदी जी ॥ जिन कहे जे एक मौन एकादशा, वर्षों वर्ष आराधे जी ॥ चउविहार उपवास पोसहशुं, ते शिव संपद साधेजी ॥१॥ दश क्षेत्रे पांच पांच कल्याणक, सर्व मली पंचास जी ॥ त्रिहुं काळें ते त्रिगुणाकरता, थाये दोढसो विलास जी ॥ मागसिर शुदि एकादशीने दिने, ते जपमाली गणियें जी ॥ संपदा सघळी सन्मुख थाये, आपदा सवि अविगणियें जी ॥ ॥ २ ॥ प्रतिमा ज्ञान पूजा उपगरणा, प्रत्येकं अगीयारजी ॥ फल पक्कान्न मेवा बहु ढोवा, स्वामी वत्सल सार जी ॥ गुरु वचने एम मौन एकादशी, उजमणुं जे करशे जी ॥ सुव्रत श्रेष्टी तणी परें ते नर, शिवकमला सुख वरशे जी ॥ ३ ॥ देव देवा जे सम्यक् दृष्टि, शासन सान्निध्य कारा जी ॥ संघना सकल समीहित पुरो, दोहग दुःख निवारी जी ॥ एकादशी तप आराधकने, मन कामित सुख आपोजी ॥ हंस कहे श्री जिन आणामां, मन भवि स्थिर करी थापो जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथ स्तुति ॥

॥ अश्वसेन नरेसर, वामादेवी नंद ॥ नवकर तनु निरुपम, नील वरण सुखकंद ॥ अहि लंछण सेवित, पउमावइ धरणिंद ॥ मह ऊठी प्रणमुं, नित प्रति पास जिणंद ॥ १ ॥ कुलगिरि वेयड्डइ, कणयाचल अभिराम ॥ मानुषोतर नंदी, रुचिक कुंडल सुखठाम ॥ भवणेसर व्यंतर, जोइस वेमाणीय धाम ॥ वरते जे जिनवर, पूरो मुझ मन काम ॥ २ ॥ जिहां अंग इग्यारे, बारे उपांग छ च्छेद ॥ दश पइन्ना दाख्या, मूल सूत्र चउभेद ॥ जिन आगम षट द्रव्य, सत पदारथ जुत्त ॥ सांभलि सरदहतां, तूटे करम तुरत ॥ ३ ॥ पउमावइ देवी, पार्श्वयक्ष परतक्ष ॥ सहु संघना संकट, दूर करेवा दक्ष ॥ ते समरो जिनभक्ति, सूरि कहे एकचित्त ॥ सुख सुजस समांपो, पुत्र कलत्र बहु वित्त ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शंखेश्वर पार्श्वजिन स्तुति ॥

॥ कल्याण कारक, दुःख निवारक, सकल सुख आवास ॥ संसार तारक, मदन मारक, श्री शंखेश्वर पास ॥ अश्वसेन नंदन, भविया नंदन, विश्ववंदन देव ॥ भवभीत भंजन, कमठ गंजन, नमीजे नित्य मेव ॥ १ ॥ त्रयलोक दीपक, मोह झीपक, शिव सरोवर हंस ॥ मुनि ध्यान मंडन, दूरित खंडन, भुवन शिर अवतंस ॥ द्रव्यभाव थापन, नाम भेदी, जक्ष निखेपा चार ॥ते देव देवा, मुक्ति लेवा, नमो नित्य सुखकार ॥ २ ॥ षट द्रव्य गुण, परजाय नयगम, भेद विसद वखाणी॥ संसार पारा,वार तरणी,कुमति कंद कृपाणी ॥

मिथ्यात भूधर, शिखर भेदन, वज्र सम जेह जाणी ॥ अति भगति आणी, भवि प्राणी, सुणो ते जिनवाणी ॥ ३ ॥ जश वदन सारद, चंद सुंदर, सुधा सदन विशाल ॥ निकलंक सकल, कलंक तमहर, अंग अति सुकुमाल ॥ पद्मावती सा, भगवती सवी, विघ्न हरण सुजाणी ॥ श्री संघने, कल्याण कारणी, हंस कहे हित आणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सीमंधर प्रमुख विचरता जिननी स्तुति ॥

॥ श्री सीमंधर सेवित सुरवर, जिनवर जग जयकारीजी ॥ धनुष्य पांचशें कंचन वरणी, मूरति मोहन गारीजी ॥ विचरता प्रभु माहाविदेहें, भवि जिनने हितकारीजी ॥ प्रह ऊठी नित्य नाम जपीजें, हृदय कमलमां धारीजी ॥ १ ॥ सीमंधर युग बाहु सुबाहु, सुजात स्वयंप्रभ नामजी ॥ अनंत सूर विशाल वज्रंधर, चंद्रानन अभिरामजी॥चंद्र भुजंग इश्वर नेमि प्रभ,वीरसेन गुणधामजी॥महाभद्रने देवयशा वली,अजित करुं प्रणामजी॥२॥प्रभुमुख वाणी बहु गुण खाणी, मीठी अमीय समाणीजी ॥ सूत्र अने अर्थे गुंथाणी, गणधरथी वीर वाणीजी ॥ केवळनाणी बीज वखाणी, शिवपुरनी नीशाणीजी ॥ उलट आणी दिलमांहें जाणी, व्रत करो भवि प्राणीजी ॥ ३ ॥ पहेरी पटोली चरणां चोली, चाली चाल मरालीजी ॥ अति रूपाली अधर प्रवाला, आंखडली अणीयालीजी ॥ विघ्न निवारी सान्निध्यकारी,शासननी रखवालीजी॥धीरविमल कविरायनो सेवक,बोले नय निहालीजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ श्री कल्लाणकंदं पाद पूर्ति स्तुति ॥

॥ भावा नयाणेग नरिंद विंदं, सविद संपुज्ज पयार विंदं ॥ वंदे जसो निज्जिय चारुचंदं, कल्लाण कंदं पढमं जिणंदं ॥ १ ॥ चितंगहारं रिउदप्प दारं, दुखग्गिवारं समसुख्खकारं ॥ तिथ्थेसरा दिंतुसया नीवारं, अपार संसार समुद्दपारं ॥ २ ॥ अन्नाणस तुखलगे सूवप्प, सज्जुतिसंही लियकोहदप्पं ॥ संसेमिसिद्धंत महो अणप्पं, निवाण मग्गे वरजाण कप्पं ॥ ३ ॥ हंसाधिरुढा वरदाण धन्ना, वाईसरी नाण गुणो ववन्ना ॥ निश्चं पिअह्महव उपसन्ना, कुंदिंदु गोख्खीर तुसार वन्ना ॥ ४ ॥

॥ श्री सिद्धाचलजीनी स्तुति ॥

॥ श्री शत्रुंजय गिरी आदीजन आव्या, पुर्वं नवाणुं वार जी॥ अनंत लाभ तिहां जिनवर जाणी, समोसरया निरधारजी॥ विमल गिरीवर महिमा मोहोटो, सिद्धाचलने ठामजी ॥ कांकरे कांकरे अनंता सिद्धा, एकसोने आठ गीरी नामजी ॥ १ ॥ इति ॥

श्री नवपदजीनी थोयो.

॥ प्रथम अरिहंत पद थुइ ॥

सकल द्रव्य पर्याय प्ररुपक, लोकालोक स्वरुपोजी ॥ केवलज्ञानेनी ज्योति प्रकाशक, अनंत गुणे करी पूरोजा ॥ त्रीजे भव

थानक आराधी, गोत्र तीर्थंकर नूरोजी ॥ बारे गुणे करी एहवा अरिहंत, आराधो गुण भूरोजी ॥ १ ॥

॥ द्वितिय सिद्ध पद थुइ ॥

अष्ट करमकुं दमन करीने, गमन कीधो शिववाशीजी ॥ अव्याबाध सादि अनादि, चिदानंद चिदराशीजी ॥ परमातम पद पूरण विलासी, अघघन दान विनाशीजी ॥ अनंत चतुष्टय शिवपद ध्यावो, केवळज्ञानी भाषीजी ॥ १ ॥

॥ तृतीय आचार्यपद थुइ ॥

पंचाचारकुं पाळे उजवाळे, दोष रहित गुण धारीजी ॥ गुण छत्तीसे आगम धारी, द्वादश अंग विचारीजी ॥ प्रबल सबल धन मोह हरणकुं, अनिल समोगुण वाणोजी ॥ क्षमासहित जे संयम पाळे, आचारज गुण ध्यानीजी ॥ १ ॥

॥ चतुर्थ उपाध्याय पद थुइ ॥

अंग अग्यारे चउदे पूरण, गुण पचवीशना धारीजी ॥ सूत्र अर्थधर पाठक कहीए, जोग समाधि विचारीजी ॥ तप गुण सूरा आगम पूरा, नय निक्षेपे तारीजी ॥ मुनि गुण धारी बुध विस्तारी, पाठक पूजो अविकारीजी ॥ १ ॥

॥ पंचम साधु पद थुइ ॥

सुमति गुपति कर संजम पाळे, दोष बयालीश टाळेजो ॥ षट्काया गोकुल रखवाले, नवविध ब्रह्मव्रत पाळेजो ॥ पंच महाव्रत

सूधा पाले, धर्म शुक्ल अजवालेजी ॥ क्षपकश्रेणि करी कर्म खपावे, दमपद गुण उपजावेजी ॥ १ ॥

॥ षष्टम दर्शनपद थुइ ॥

जिनपन्नत्त तत्त सुधारसें, समकित गुण उजवालेजी ॥ भेद छेद करी आतम नीरखी, पशु टाळी शूर पावेजी ॥ प्रत्याख्याने सम-तुल्य भाख्यो, गणधर अरिहंत सूराजी ॥ ए दरशन पद नित्य नित्य वंदो, भवसागरको तीराजी ॥ १ ॥

॥ सप्तम ज्ञानपद थुइ ॥

मति श्रुत इंद्रिय जनित कहीए, लहीए गुण गंभीरोजी ॥ आ-नम धारी गणधर विचारी, द्वादश अंग विस्तारोजी ॥ अवधी मन पयव केवळ वली, प्रत्यक्ष रूप अवधारोजी ॥ ए पांच ज्ञानकुं वंदा पूजो, भविजनने सुखकारोजी ॥ १ ॥

॥ अष्टम चारित्र पद थुइ ॥

कर्म अपचय दूर खपावे, आतम ध्यान लगावेजी ॥ बारे भा-वना सूधी भावे, सागर पार उतारेजी ॥ षट् खंड राजकुं दूर तजीने चक्री संजम धारेजी ॥ एहवो चारित्रपद नित वंदो, आतम गुण हीतकारेजी ॥ १ ॥

॥ नवम श्री तपपद थुइ ॥

इच्छारोधन तप ते भाख्यो, आगम तेहमां साखीजी ॥ द्रव्य-भावसें द्वादश दाखी, जोग समाधि राखीजी ॥ चेतन निजगुण परणित पेखी, तेहीज तपगुण दाखीजी ॥ लब्धी सकळनो कारण देखी, इश्वरसें सुख भाखीजी ॥ १ ॥ इति ॥

॥अथ श्री नवपदना चैत्यवंदनो॥

॥ अथ श्री अरिहंत पद चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय श्री अरिहंत भानु । भवि कमल विकाशी । लोकालोक अरूपि रूपि । समस्त वस्तु प्रकाशी ॥ १ ॥ समुद्घात शुभ केवलें । क्षय कृत मल राशी ॥ शुक्ल चमर शुचि पादसें । भया बर अविनाशी ॥ २ ॥ अंतरंग रिपु गण हणीए । हुय अप्या अरिहंत॥ तसु पद पंकजमें रहित । हीर धरम नित संत ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धपद चैत्यवंदन ॥

॥ श्री शैलेशी पूर्वप्रांत । तनु हिनन भागी॥ पुव्वपआगपसंगमें । ऊरधगत जागी ॥ १ ॥ समय एकमें लोकप्रांत । गये निगण निरागी ॥ चेतन भूपें आत्मरूप । सुदिसा लही सागी ॥ २ ॥ केवल दंसण नाणथीए । रूपातीत स्वभाव ॥ सिद्ध भये तसु हीर धर्म । वंदे धरि शुभ भाव ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीयपद चैत्यवंदन ॥

॥ जिन पदकुल सुखरस अनिल । मितरस गुणधारी ॥ प्रबल सबल घन मोहकी । जिणते चमुहारी ॥ १ ॥ रुज्वादिक जिनराज गीत । नयतन विस्तारी ॥ भव कूपै पापें पडत । जगजन निस्तारी

॥ २ ॥ पंचाचारी जीवके । आचारज पदसार ॥ तिनकुं बंदे हीर धर्म । अठोत्तर सो वार ॥ ३ ॥ इति आचार्यपद चैत्यवंदन ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थपद चैत्यवंदन ॥

॥ धन धन श्री उवझाय राय । झठता घन भंजन ॥ जिनवर दिसत दुवालसंग । कर कृत जनरंजन ॥ १ ॥ गुणवण भंजण मण गयंद । सुय शणि कियगंजण ॥ कुणागंध लोच लोयणें । जथ्थ य सुय मंजण ॥ २ ॥ महा प्राणसें जिन ल्यो ए । आगमसें पद तुर्य ॥ तिनपें अहिनिश हीर धर्म । वंदे पाटक वर्य ॥ ३ ॥ इति उपाध्याय चैत्यवंदन ॥ ४ ॥

॥ अथ पंचमपद चैत्यवंदन ॥

॥ दंशण नाण चरित्त करी । वर शिवपद गामी ॥ धर्म शुक्र-शुचि चक्रसें । आदिम खय कामी ॥ १ ॥ गुण पमत्त अपमत्ततें । भये अंतरजामी ॥ मानस इंद्रिय दमनभूत । शम दम अभिरामा ॥ २ ॥ [illegible] मुनिराज ॥ [illegible] हीर धर्मके काज ॥ ३ ॥ इति साधुपद चैत्यवंदनम ॥ ४ ॥

॥ अथ दर्शनपद चैत्यवंदन ॥

॥ हुय पुग्गल परियट्ट । अद्ध परमित संसार ॥ गंठिभेद तब करि लहै । सब गुण आधार ॥ १ ॥ क्षायक वेदक शशि असंख।

उवशम पण वार ॥ विना जेण चारित्र नाण । नहो हुवै शिव दातार ॥ २ ॥ श्रीसुदेव गुरु धर्मनी ए । रुचि लच्छन अभिराम ॥ दरशनकुं गणि हीर धर्म । अहनिश करत प्रणाम ॥ ३ ॥ इति दर्शनपद चैत्यवंदन ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥

॥ क्षिप्रादिक रस राम वन्हि । मित आद्म नाण ॥ भाव मिलापसें जिन जनित । सुय बीश प्रमाण ॥ १ ॥ भवगुण पज्जव ओहि दोय । मण लोचन नाण ॥ लोकालोक सरूप जाण । इक केवल भाण ॥ २ ॥ नाणावरणी नासथी ए । चेतन नाण प्रकाश ॥ सप्तम पदमें हीर धर्म । नित चाहत अवकाश ॥ ३ ॥ इति ज्ञानपद चैत्यवंदन ॥ ४ ॥

॥ अथ अष्टमपद चैत्यवंदन ॥

॥ जस्स पसायें साहु पाय । जुग जुग समितेंद ॥ नमन करै शुभ भाव ल्हाय । फुण नरपति वृन्द ॥ १ ॥ जंपै धरि अरिहंतराय । करि कर्म निकंद ॥ सुमति पंच तीनगुप्तियुत । दै सुख अमंद ॥ २ ॥ इषु कृति मान कषायथी ए । रहित लेश सुचिवंत ॥ जीव चरित्तकुं हीरधर्म । नमन करत नित संत ॥ ३ ॥ इति चारित्रपद चैत्यवंदनम ॥ ४ ॥

॥ अथ तपपद चैत्यवंदन ॥

॥ श्री रुषभादिक तीर्थनाथ । तद्भव शिव जाण ॥ विहिअंतै रपि बाह्य । मध्य द्वादश परिमाण ॥ १ ॥ बसु कर मित आमो सही । आदिक लब्धि निदान ॥ भेदै समतायुत खिर्णे । दृग्घन कर्म वि-मान ॥ २ ॥ नवमो श्री तपपद भला ए । इच्छारोध सरूप ॥ बंद-नसें नित हीरधर्म । दूर भवतु भवकूप ॥ ३ ॥ इति तपपद चैत्य-वंदनम् ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री सिद्धचक्रजीनुं चैत्यवन्दन ॥

॥ श्री अरिहंत उदार कांति, अति सुंदर रुप ॥ सेवो सिद्ध अनंत शांत, आत्म गुण भूप ॥ १ ॥ आचारज उवझाय साधु, सम-ता रस धाम ॥ जिन भाषित सिद्धांत शुद्ध, अनुभव अभिराम ॥२॥ बोध बीज गुण संपदाए, नाण चरण तव शुद्ध ॥ ध्यावो परमानंद पद, ए नवपद अविरुद्ध ॥ ३ ॥ इह परभव आनंद कंद, जगमांहि प्रसिद्धो ॥ चिंतामणि सम जास जोग, बहु पुण्ये लद्धो ॥४॥ तिहु-अण सार अपार एह, महिमा मन धारो॥ परिहर पर जंजाल जाल, नित्य एह संभारो ॥ ५ ॥ सिद्धचक्र पद सेवतां, सहजानंद स्वरुप॥ अमृतमय कल्याणनिधि, प्रगटे चेतन भूप ॥ ६ ॥ इति ॥

श्री सिद्धचक्रजीनुं चैत्यवंदन.

जैनेंद्रमिंदमहितं गतसर्वदोषं, ज्ञानाद्यनंत गुणरत्नविशालकोषं॥

कर्मक्षयं शिवमयं परिनिष्ठितार्थं, सिद्धं च बुद्धमविरुद्ध मर्हं च वंदे ॥ १ ॥ गच्छाधिपं गुणगणं गणिनं सुसौम्यं ॥ वंदामि वाचकवरं श्रुतदानदक्षं ॥ क्षांत्यादिधर्मकलितं मुनिमालिकां च, निर्वाण साधनपरं नरलोकमध्यं ॥ २ ॥ सद्दर्शनं शममयं श्री जिनोक्तसत्यं तत्त्वप्रकाशकुशलं सुखदं सुबोधं॥छिन्नाश्रवं सुमतिगुप्तिमयं चरित्रं, कर्माष्टकाष्टदहनं सुतपं श्रयामि॥३॥पापौघनाशनकरं वरमंगलं च, त्रैलोक्यसारमुपकारपरं गुरु च ॥ आत्मातिशुद्धिवरकारणमुत्तमानां, श्रीमोक्षसौख्यकरणं हरणं भवानां ॥ ४ ॥ भव्याब्जबोधतरणिं भव सिंधुनावं, चिंतामणेः सुरतरोरधिकं सुभावं ॥तत्त्वत्रिपादनवकं नवकाररूपं, श्रीसिद्धचक्रसुखदं प्रणमामि नित्यं ॥ ५ ॥

अथ श्रीमौन एकादशीना देववंदनमानां चैत्यवंदनो
(अरनाथजीनुं)

॥ अवधिज्ञाने आभोगिनें, निज दीक्षा काल ॥ दान संवच्छरी जिन दीये, मनो वंछित ततकाल ॥ १ ॥ धन कण कंचन कामिनी, राज ऋधि भंडार ॥छोडी संयम आदरे, सहस पुरुष परिवार ॥ २ ॥ मृगशिर शुदि एकादशी ए, संयम लीये महाराज ॥ तस पद पद्म सेवन थकी, सीझे सघला काज ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ बीजुं चैत्यवंदन ॥ (मल्लिनाथजीनुं)

॥ जय जय मल्लि जिणंद देव, सेवा सुरपति सारे ॥ मृग-

शिर सुदि एकादशी, संयम अवधारे ॥ १ ॥ अभ्यंतर परिवारमें, संयति त्रणशें जास ॥ त्रणशे षट नर संयमे, साथे व्रत लीये खास ॥ २ ॥ देव दुष्य खंधे धरी ए, विचरे जिनवर देव ॥ तस पद पद्म नी सेवना, रूप कहे नित्य मेव ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ त्रीजुं चैत्यवंदन ॥ (नमीनाथनुं)

॥ सकल समीहित सुख करण, सुरतरु उपमान ॥ तरुण तरणी परें तेजवंत, जग तिलक समान ॥ १ ॥ भक्ति धरी सुर सुंदरा, करे जस गुन गान ॥ ध्याये सुरनर असुर नाथ, जस शुभ अभिधान ॥ २ ॥ शुदि मागशिर एकादशी ए, पाम्युं ज्ञान अनंत ॥ दान सुहंकर एम वदे, ते नमि जिन जयवंत ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ गौतमस्वामीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ बीरुद धरी सर्वज्ञनुं, जिन पासें आवे ॥ मधुरे वयण शुं वीरजी, गौतम बोलावे ॥ १ ॥ पंचभूत मांही थकी, ए उपजें वीणसें ॥ वेद अरथ विपरीतथी, कहो किम मन वरसे ॥ २ ॥ दान दया दम त्रिनु पदे ए, जाने तेहज जीव ॥ आनन्दिघन धन आतमा सुख चेतना सदैव ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ रोहिणी तपनुं लिख्यते ॥

॥ रोहणी तप आराधीए, श्री श्री वासुपूज्य ॥ दुःख दोहग

दूरे टले, पूज्यक होयें पूज्य ॥ १ ॥ पहेला काजें वास खेप, भह उठीनें प्रेम ॥ मध्याने करी धोतीयां, मन वचन काय खेम ॥ २ ॥ अष्ट प्रकारनी रचीए, पूजा नृत्य वाजींत्र ॥ भावे भावना भावीए, कीजें जन्म पवीत्र ॥ ३ ॥ त्रीहुं कालें लेइ धूप दीप, प्रभु आगल कीजें ॥ जिनवर केरी भगतीसुं, अवीचल सुख लीजें ॥ ४ ॥ जिनवर पूजा जिन स्तवन, जिननो कीजें जाप ॥ जिनवर पदने ध्याइए, जीम नावे संताप ॥ ५ ॥ कोड कोड गुणे फल दीए, उत्तर उत्तर भेद ॥ मान कहे ए वीध करो, ज्युं होय भवनो छेह ॥६॥इति॥

॥ श्री पार्श्वनाथनुं चैत्यवंदन ॥

स्तुवे पार्श्वं जिनाधीशं-पार्श्वक्षोभसुसेवितं ॥ प्रणतानल्प संकल्प, दानकल्पद्रुमोपमं ॥ १ ॥ पुजीतत्वजनः पूज्य स्थानं, सर्व जगतामपि ॥ हिलीतत्वांतु नैवेति, दुःखोच्छेदः कदाचन* ॥ २ ॥ नाथीकृत्य त्वया देव, भवारिजीयतेक्षणा ॥ हर्षाध्विक्षति तुभ्यं च, स्पृहयेनमुक्ति कामिनी ॥ ३ ॥ न तत् पुरुषादोषो, रोषादायांति दूरतः ॥ सम्यकूध्यात तवस्वामिन्, सिध्यन्ति च मनोरथाः ॥ ४ ॥ स्तुतत्वैनरे नाथ, विलसंत्यखिलाः कलाः ॥ उपमानोपमेयत्वं, चिरं जियाजू जिनेश्वरं ॥ ५ ॥ युष्मदू पदानि पद गौरवसुप्रयोगैः, स्तुत्वेति पार्श्वजिन सद्गुणभाजनत्वात् ॥ एकं प्रभुं त्रिभुवनेऽपि भवे भवे हं, याचे शिवं प्रतिभवं ननु बोधिलाभं ॥ ६ ॥

---

* आ श्लोकमां अशुद्ध जणाय छे ग्रन्थमां जेम छे तेम छाप्युं छे.

॥ परमेष्टि स्तोत्र ॥

॥ ॐ परमेष्ठी नमस्कारं, सारं नव पदात्मकं ॥ आत्मरक्षा करं वज्रं, पंजराभ्यस्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं, शिरस्कं शिर शिस्थतं ॥ ॐ नमो सिद्धाणं, मुखे मुख पटंबरं ॥ २ ॥ ॐ नमो आयरियाणं, अंगरक्षातिशायनी ॥ ॐ नमो उवझायाणं, आयुधं हस्त योर्दृढं ॥ ३ ॥ ॐ नमोलोएसव्वसाहूणं, मोचके पादयोशुभे ॥ एसो पंच नमुक्कारो, सिला वज्रमयीतले॥४॥सव्वपावप्पणासणो, वप्रौवज्र भयोर्व्वहि ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं,खादि रांगार खातिका॥५॥स्वाहा तंच पदं ज्ञेयं, पढमं हवइ मंगलं ॥ वप्रोपरि वज्रमयं, पिधानं देह रक्षणे ॥६॥ महाप्रभव रक्षेयं,क्षुद्रोपद्रव नाशिनी ॥ परमेष्ठी पदोद्भुता, कथिता पूर्वसूरिभि ॥७॥ यश्चेवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठि पदैःसदा ॥ तस्य नस्यादूभये व्याधि, राधिश्चापि कदाचनं ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ पंचषष्टि यंत्र स्तोत्र ॥

॥ आदौ नेमिजिनं नौमि, संभवं सुविधिं तथा ॥ धर्मनाथं महादेवं, शांतिशांतिकरं सदा ॥१॥ अनंतं सुव्रतं भक्त्या, नमिनाथं जिनोत्तमं ॥ अजितं जितकंदर्प्पं, चंद्रचंद्र समप्रभं ॥२॥ आदिनाथं महा देवं, सुपार्श्वं विमलंजिनं॥ मल्लिनाथ गुणो पेतं, धनुषां पंचविंशति॥३॥ अरनाथं महावीरं, सुमतिंच जगद्गुरु॥ श्रीपद्मप्रभ नामानां, वासुपूज्यं सुरैर्नतं॥४॥शीतलं शीतलं लोके,श्रेयांसं श्रेयसे स्तव॥कुंथुनाथंच वामेयं, श्री अभिनंदनं विभु ॥ ५ ॥ जिनानां नामभिर्बद्धं, पंचषष्टि

समुद्भवं ॥ यंत्रोयंराजते यत्र, तत्र सौख्यं निरंतरं॥६॥यस्मिन् गृहे महामक्त्या, यंत्रोयं पुज्यते बुधैः ॥ भूत प्रेत पीशाचाद्यै, भेयं तत्र न विद्यते ॥७॥ सकल गुण निधानं, यंत्रमेनं विशुद्धं । हृदय कमल कोशे, धीमतां ध्येय रूपं ॥ श्रीजयतिलक गुरु, सूरी राजस्य शिष्यो। वदति सुख निधानं, मोक्ष लक्ष्मी निवासं॥ ८ ॥

ॐघंटाकर्णो महावीर । सर्वव्याधि विनाशक ॥
विस्फोटक भयप्राप्त । रक्ष रक्ष महाबल ॥ १ ॥
यत्र त्वं तिष्ठसे देव । लिखितोक्षरपंक्तिभिः ॥
रोगास्तत्र प्रणश्यन्ति । वातपित्तकफोद्भवाः ॥ २ ॥
तत्र राजभयं नास्ति । यांति कर्णोज पाक्षयं ।
शाकिनीभूतवैताल । राक्षसा प्रभवंति न ॥ ३ ॥
नाकाले मरणं तस्य । न च सर्पेण दश्यते ॥
अग्निचोरभयं नास्ति ॥ ॐ ह्रीं घंटाकर्णो नमोऽस्तु ते
ठः ठः ठः । स्वाहाः ॥ ४ ॥

ॐह्रीं श्रीं क्लीं वाग्वादिनि सरस्वति मम,
जिह्वाग्रे वासं कुरु कुरु स्वाहाः ॥

॥ दीन २९ ॥ वार १०८ जपवो एटले विद्या आवशे.

॥ अथ श्री आदिजिन आरती ॥

॥ अपच्छरा करती आरती जिन आगें ॥ हांरे जिन आगें रै प्रभु आगें ॥ हांरे एतो अविचल सुखडां मागे ॥ हांरे नाभी नंदन पास ॥ अप० ॥ १ ॥ ता थेइ नाटक नाचती पाय ठमके ॥ हांरे दोय चरणे झांझर झमके ॥ हांरे सोवन घूघरी घमके ॥ हांरे लेती फूदडी बाल ॥ अप० ॥ २ ॥ ताल मृदंगने बांशली डफ वेणा ॥ हांरे रूडा गावंती स्वर झीणा ॥ हांरे मधुर सुरासुर नयणां ॥ हांरे जोती मुखडुं निहाल ॥ अप० ॥ ॥ ३ ॥ धन्य मरुदेवा मातने प्रभु जाया ॥ हांरे तोरी कंचन वरणी काया ॥ हांरे मेंतो पूरव पुण्ये पाया ॥ हांरे देख्यो तोरो देदार ॥ अप० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन परमेश्वर प्रभु प्यारो ॥ हांरे प्रभु सेवक हुं छुं तारो ॥ हांरे भवो भवनां दुःखडां वारो ॥ हांरे तुमें दीन दयाल ॥ अप० ॥ ५ ॥ सेवक जाणी आपणो चित्त धरजो ॥ हांरे मोरी आपदा सघली हरजो ॥ हांरे मुनि माणक सुखीयो करजो ॥ हांरे जाणी पोतानो वाल ॥ अप० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ चार मंगळनुं पद ॥ राग सामेरी ॥

॥ कीजे मंगळ चार, आज घेर नाथ पधारघा ॥ कीजे० ॥ (टेक) पेहेलुं मंगळ प्रभुजीकुं पूजुं, घसी केसर घन सार ॥ आज० ॥ १ ॥ बीजुं मंगळ अगर उखेवुं, कंठे ठवुं फूलनो हार ॥ आज० ॥ २ ॥ त्रीजु मंगळ आरती उतारुं, घंट बजावुं रणकार ॥ आज० ॥ ३ ॥ चोथुं मंगळ प्रभु गुण गावुं, नाचुं ते थै थैकार ॥ आज०

॥ ४ ॥ रूपचंद कहे नाथ निरंजन, चरण कमळ जाउंवार ॥ आज०
॥ ५ ॥ इति ॥

॥ श्रीदेवगुरु नमस्कार स्तुति ॥

॥ शार्दुल विक्रिडित ॥

श्री आदिश्वर शांति नेमी जिनने, श्री पार्श्ववीर प्रभो ॥ ए पांचे जिनराज आज प्रणमुं, हेते धरी हे विभो ॥ कल्याणे कुमला सदैव विमला, वृद्धि पमाडो अति ॥ एवा गौतम स्वामी लब्धी भरीया, आपो सदा सन्मति ॥ १ ॥

अस्वाध्याय काळे स्वाध्याय करवो नहि.

ते विषे (उपदेश प्रासाद भाषांतर भाग ४ थो पानुं २६९).

अस्वाध्याय क्षणेस्वज्ञः स्वाध्यायं कुरुते सदातयतः क्रियाफलन्त्येव, यथोक्त समय कृताः १

भावार्थः—मूर्ख माणस हमेशां अनध्याय वखते स्वाध्याय करे छे परंतु योग्य वखते करेली क्रियाओज फळाभूत थाय छे.

अनध्यायनो समय घणा प्रकारनो छे तेनुं यथार्थ स्वरूप आवश्यक निर्युक्तिनी वृत्तिमां प्रतिक्रमण अध्ययनथी तथा प्रवचन सारोद्धारना बसें अडसठमा द्वारथी जाणी लेवुं. अहींपण तेनुं कांइक स्वरूप लखीए छीए.

१ ज्यारे आकाशमांथी सूक्ष्म रज पडे त्यारे जेटलो काळ पडे तेटलो अस्वाध्याय काळ जाणवो तेमज धुंअर के धुवाड जेटलो काळ पडे तेटलो अस्वाध्याय काळ जाणवो. तेमां विशेष एटलुं के-धुंअर पडतो होय तेटलो वखत मुनीए अंगोपांगनी चेष्टा कर्या विना मकानमांज बेसी रहेवुं.

२ गंधर्व नगर (आकाशमां नगर जेवुं देखाय छे ते.) उल्कापात, दिशाओनो दाह अने विद्युत्पात थाय त्यारे तेटला वखत उपरांत एक पहोर सुधी अस्वाध्याय काळ जाणवो.

३ अकाळे (वर्षाऋतु विना) विद्युत्ना चमकारो थाय अथवा अकाळे मेघनो गर्जना थाय तो बे पहोर सुधी अस्वाध्याय काळ जाणवा.

४ अषाड चोमासानुं तथा कार्तीक चोमासानुं प्रतिक्रमण कर्या पछी प्रतिपदा (एकम=पडवा)सुधी अस्वाध्याय काळ जाणवो.

५ आसो तथा चैत्रसुदी पांचमना मध्यान्ह समयथी आरंभीने कृष्णपक्षनी प्रतिपदा सुधी अस्वाध्याय काळ जाणवो. बीजने दिवसे स्वाध्याय करवो योग्य छे.

६ राजा अने सेनापति विगेरेनुं परस्पर युद्ध थतुं होय तो ते वखत अस्वाध्याय काळ जाणवो.

७ होळीना पर्वमां ज्यां सुधी रज शांत न थाय त्यां सुधी अस्वाध्याय जाणवो.

८ गामनो राजा मरण पामे तो ज्यांसुधी बीजा राजानो अभिषेक थाय नहि त्यां सुधी अस्वाध्याय जाणवो.

९ उपाश्रयथी सात घर सुधी कोई प्रसिद्ध माणस मृत्यु पाम्यो होय तो एक अहो रात्रिनो अस्वाध्याय काळ जाणवो.

१० उपाश्रयथी सो हाथ सुधीमां कोई अनाथ मृत्यु पाम्यो होय तो तेनुं शब ज्यां सुधी लइ न जाय त्यां सुधी अस्वाध्याय जाणवो.

११ स्त्रीना रुदननो शब्द ज्यां सुधी संभळाय त्यां सुधी स्वाध्याय करवो नहि.

१२ जळचर, तिर्यंच, पंचेद्रिय, मत्स्य विगेरे (विकेंद्रिय नहि)नां रुधिर मांस के हाडकां उपाश्रयथी साठ हाथ सुधीमां पड्यां होय, तो ते तथा कोई पक्षीनुं इंडुं पडयुं होय, पण भांग्युं न होय तो ते काढी नांख्या पछी स्वाध्याय थइ शके, अने जो इंडुं फुटी गयुं होय तो त्रण पोरसी सुधी स्वाध्यायकल्पे नहि. तेमां पण जो इंडुं फुटेलुं होय अने तेमांथी रसनुं बिंदु भूमि उपर पडयुं तो ते साठ हाथनी बहार लई जइने ते भूमि धोया पछी स्वाध्याय कल्पे.

१३ माखीना पग जेटलुं पण इंडाना रसनुं अथवा लोहीनुं बिंदु भूमिपर पडयुं होय, तो स्वाध्याय कल्पे नहि.

१४ गाय विगेरेनुं जरायु ज्यांसुधी लागेलुं होय, त्यांसुधी अस्वाध्याय जाणवो, अने जरायु पडया पछी त्रण पोरसी सुधी अस्वाध्याय जाणवो.

१५ बिलाडी विगेरेए उंदर विगेरे मार्यो होय तो एक अहोरात्री अस्वाध्याय जाणवो. तेटलो काळ नंदिसूत्र विगेरे भणवुं नहि.

१६ एज प्रमाणे मनुष्यना संबंधमां पण जाणवुं, विशेष एटलुं के उपाश्रयथी सो हाथ सुधीमां मनुष्यना अवयवो अथवा चर्म, मांस, रुधिर, हाडकुं विगेरे पड्यां होयतो अस्वाध्याय जाणवो. पण जो उपाश्रय अने ते अवयव विगेरे पडेला स्थाननी वच्चे मार्ग होय, तो स्वाध्याय थई शके.

१७ स्त्रीओने ऋतु आवे त्यारे त्रण दिवस सुधी स्वाध्याय कल्पे नहि. पण जो प्रदरनो रोग थयो होय तो अधिक काळ सुधी स्वाध्याय कल्पे नहि.

१८ कोई गर्भवंतीने पुत्र प्रसव थयो होय, तो सात दिवस सुधी अस्वाध्याय अने जो पुत्री थई होय तो, अथवा रक्त अधिक जतु होय तो आठ दिवस सुधी अस्वाध्याय जाणवो. नवमे दिवसे कल्पे.

१९ सो हाथ सुधीमां कोई बाळक विगेरेनो दांत पड्यो होय, तो ते शोधवो. अने जो दांत जोवामां ना आवे "तो दंत ओहडावणियं करेमि काउस्सगं" एम कहीने एक नवकारनो कायोत्सर्ग करवो. त्यारपछी स्वाध्याय कल्पे.

२० दांत विना बीजा कोई अंग, अथवा उपांगनुं हाडकुं सो हाथ सुधीमां पडयुं होय, तो बार वर्ष सुधी वाचनादिक स्वाध्याय कल्पे नहि. (इति बहुश्रुत गम्यं) पण मनमां अर्थनी विचारणानो कोई स्थाने निषेध नथी.

२१ आर्द्रा नक्षत्रथी आरंभीने स्वाति नक्षत्र सुधी, विद्युत् तथा मेघ गर्जना थाय तो स्वाध्यायनो निषेध नथी.

२२ भूमि कंप थयो होय तो आठ पहोर सुधी स्वाध्याय कल्पे नहि.

२३ अग्निनो उपद्रव थयो होय तो ते उपद्रव रहे तेटलो वखत स्वाध्याय कल्पे नहि.

२४ चंद्रग्रहणमां उत्कृष्ट बार पहोर सुधी अने सूर्यग्रहणमां उत्कृष्ट सोळ पहोर सुधी अस्वाध्याय जाणवो.

२५ पाखीनी रात्रिए पण स्वाध्याय सूझे नहि. इत्यादि अस्वाध्यायनुं स्वरूप संप्रदायने अनुसारे जाणीने स्वाध्याय करवो. केमके अयोग्य काळे वांचनादिक करवाथी मूर्खपणुं प्राप्त थाय छे.

साधुनी अवश्य करणीना १५ भेद प्रायश्चित साथे लख्या छे.

१ पडिक्कमणुं नित्य न करे तो फरी उठामण करे.

२ बेठां पडिकमणुं करे तो उपवास आवे.

३ काळवेळा पडिकमणुं न करे तो चोथ भक्त आवे.

४ संथारा उपर पडिकमणुं करे तो उपवास आवे.

५ मांडले पडिक्कमणुं न करे तो उठामण फरी करे.

६ कुशिलिआने पडिकमे तो उपवास आवे.

७ संघने खमाव्या पछी जो वळी पडिकमे तो उठामण करे.

८ पोरसी भणाव्या पहेलां सुवे तो उपवास आवे.

९ दिवसे सुवे तो उपवास आवे.

१० वस्ति अणपलेवे आदेश माग्या विना सज्झाय करे तो चोथ-
भक्त आवे.

११ अविधिए पडिलेहण करे तो उपवास आवे.

१२ नित्य पडिलेहण न करे तो उपवास आवे.

१३ अणपडिलेह्यां वस्त्र पात्र वापरे तो उठामण फरी करे.

१४ काजो अणउद्धर्यो पडिक्कमणुं करे तो उठामण आवे.

उपरना बोल महानिशीथ सूत्रमां कह्यां छे.

॥ स्थापनाचार्यजीनी पडि लेहणना तेर बोल ॥

(१) शुद्ध स्वरुपना धारक गुरु. (२) ज्ञानमय. (३) दर्शन मय. (४) चारित्र मय. (५) शुद्ध श्रद्धामय (६) शुद्ध प्ररुपणामय. (७) शुद्ध फरसनामय. (८) पंचाचार पाळे. (९) पंचाचार पळावे. (१०) पंचाचार पाळताने अनुमोदे. (११) मनगुप्ति. (१२) वचन गुप्ति. (१३) काय गुप्तिए गुप्ता ॥ इति ॥

पख्खी, चौमासी, अने संवत्सरी प्रतिक्रमणमां कोइने छींक आवे तो काउसग्ग करवानो विधि.

जो पाक्षिक अतिचार शरु थवाना अगाउ छींक आवे तो इरिआवही पडिकमी सकलार्हतना चैत्यवंदनथी मांडीने प्रति-क्रमण फरीने करवुं. त्यार पछी वृद्धशांति सुधीमां छींक आवे तो दुक्खक्खओनो काउसग्ग कर्या अगाउ इरिआवही पडि-कमी लोगस्स कही खमासमण दइ इच्छा० क्षुद्रोपद्रव उहडावणार्थ

काउसग्ग करुं ? इच्छं कही अन्नत्थ० कही चार लोगस्सनो काउसग्ग सागरवर गंभिरा सुधी करवो. ते नीचेनी गाथा कहीने पारवो.

सर्वे यक्षांबिकाद्या ये, वैयावृत्यकराः सुराः ॥
क्षुद्रोपद्रवसंघातं, ते द्रुतं द्रावयंतु नः ॥ १ ॥

पछी प्रगट लोंगस्स कहेवो.

बोधवचन.

१ तुं पैसापात्र थाय नहीं तो तेनी चिंता करीश मां, पण प्रमाणिकपणुं कदी छोडीश नहीं.

२ वखत सारो नथी एम कहेवा करतां आपणुं आचरण सारुं नथी एम कहेवुं ए वधारे शोभे छे.

३ विद्याभ्यास ए आजीविकाने माटे छे, एम समजवुं नहीं पण सद्गुणनेज माटे छे.

४ कार्य करवामां हमेश प्रविण थवुं, पण दीर्घसूत्री थवुं नहीं.

५ तारी प्रकृतिने लीधे ताराथी सारुं काम थाय नहीं तो तेनी चिंता करीश नहीं, पण तुं आखी जीन्दगीमां माठुं कार्य करीश नहीं, के जेथी तारी लोकमां निंदा थाय के माणसो तने हशी जाय.

६ मारे आ दुनियामांथी सर्व परिवार तजीने जवुं छे एटलुं समजाय तो पछी तुं थोडुं समज्यो छे एम नथी, कारण के जे मुकवुं छे, तेना उपर मोह नथी.

७ तने सारो वखत मळयो छे, ते भूलीश मां. कारण के मनुष्यनो जन्म; सूत्रनुं सांभळवुं अने तेना उपर श्रद्धा अने पछाथी वीर्य फोरववुं, ए महान् पुरुषोए दुर्लभ कह्युं छे.

८ आ मनुष्यना देहमां ज्यां सुधी प्राण छे, त्यां सुधीज विचार करवानो छे के मारो वखत केवी रीते चाल्यो जाय छे.

९ छे, छे, ने छे; नथी, नथी, ने नथी; छे, ने नथी; नथी, ने छे. आ चार प्रश्न समजी जाय तो बस छे. जेणे पूर्वे कर्युं छे ते पाम्यो छे, अने हाल करे छे माटे पाछो पण पामशे.

१० जेणे पूर्वे कर्युं नथी, ते पाम्यो नथी अने पामशे पण नहीं, कर्युं छे तेथी पाम्यो छे, अने करतो नथो माटे पामवानो नथी.

११ कर्युं नथी तेथी पाम्यो नथी, पण करे छे तेथी पामशे.जो के आ जन्ममां दान दीधुं नहीं अने कोइ पण वखत भावना भावी नहीं तो पछी आ मनुष्यजन्म फोकटज गमाव्यो एम कहेवामां शुं खोटुं छे ? कंइज नहि.

१२ मृत्यु पामेला शरीरने लाकडाना अथवा माटीना ढेपांनी माफक पृथ्वी उपर छोडी जइ बांधवो विमुख थाय छे ते नें जोया नथी ? पण धर्म तेम छोडी जतो नथी, ते तो साथेज आवे छे, माटे आत्माहितेच्छुने धर्मनी अवश्य जरुर छे.

१३ पहेली वयमां एवुं काम कर के जेथी वृद्धपणामां सुखी थवाय.

१४ आखी जींदगीमां एवुं कार्य कर के जेथी परलोकमां सुख मळे.

१५ जे काले करवानुं छे ते आज कर अने आज करवुं होय ते हमणा कर, कारण के मृत्युं जोतुं नथी के आ पुरुषे कार्य कर्युं छे अने आनुं काम अधुरुं छे.

१६ आ जगतमां तमाम वस्तु नाशवंत छे, एम तुं जाणे छे, ते

छतां पण तेमां विश्वास राखे छे, ते थोडी मुर्खाइ नथी. पण घणीज गाफेली छे.

१७ अंतावस्थामां धर्म शिवाय कोइपण माणस अथवा देवदेवेंद्र शरणे राखवा समर्थ नथी, एम समजवा छतां धर्मकार्यमां केम प्रवर्ततो नथी ?

१८ आ असार संसारमां शुं सुख छे, के जेमां तुं मोही रह्यो छे. सुखनी पराकाष्टानुं स्थान मोक्ष शिवाय बीजुं छेज नहीं.

१९ आ अपार संसारमां तुं एकलो आव्यो छे, अने एकलो जइश, तारुं कोइ नथी अने तुं कोइनो पण नथी. एम शुं तुं जाणतो नथी ?

२० आ भूतळ उपर जेटली वस्तु तुं जुवे छे तेमां तारुं शुं छे.तेनो विचार कर, तारा आत्मा शिवाय बीजुं कांइ पण तारुं नथी.

२१ आ देह मळमूत्र, मांस, रुधीर, चरबी, परु, पेच वगेरे अशुचिथी भरेलुं हाडपींजर छे, तेमां ममत्व राखवो ए उत्तम पुरुषनुं लक्षण नथी.

२२ आ दुनियामां अनेक पापना आरंभ समारंभ थयां करे छे तेमां इच्छा शिवाय पण पाप लाग्या करे छे, ते तारे रोकवां जोइए.

२३ रोकायलो पापनो क्रमे क्रमे जेम उदय थाय, तेम तेम शाना वेदनीए भोगववां जेथी नवो बंध पडे नहीं.

२४ धर्मध्यान करीश तो ते धर्म तने दुर्गतिमां पडतां धारण करशे.

२५ आ लोकमां एवी कइ जग्या छे के जेमां तुं गयो नथी. लव, सुतम, सूर अने मोक्ष शिवाय एक तलभार जग्या बाकी रही नथी के जे तुं पाम्यो नथी.

२६ समकीत शिवाय बीजो कयो मोटो लाभछे ? एक पण लाभ मोटो नथी जे समकीत पाम्यो ते सर्वस्व पाम्यो एम कहेवामां कांइ पण खोटुं नथी.

२७ मारा परमस्नेही मारे जे कांइ तने कहेवानुं हतुं ते कह्युं छे. अने तुं पण गुणग्राही छे, जेथी हवे कांइ बोलवानुं नथी, तोपण—

२८ स्वाभाविक रीते जुवानीनुं जे अंधापणुछे ते सूर्यना किरणथी के दीवानी ज्योतथी भेदी न शकाय एवा अंधकारथी भरपूर छे.

२९ लक्ष्मीनो मद कदी पण शांत न थाय तेवो भयंकर छे विषयरुप विषना आस्वादथी उपजेलो मोह कोइ पण जडीबुटीथी शांत थाय तेवो नथी.

३० गर्भश्रीमंत, नवी जुवानी,अने साधारण माणसना दरज्जाथी वधेली शक्ति, ए मोटा अनर्थनी परंपरा छे, अने एटला माटेज नीतिना बोधनी जरुर छे

३१ केटलाक माणसो जुगारने विनोद, परस्त्रि गमनने चातुर्य वेश्या पर आसक्तिमां रसीकपणुं, भांग भुरकीमां विलास, अने नृत्य गीतने शोखीनपणुं माने छे. पण ए बधो अज्ञाननो प्रताप छे.

३२ नीचला अमुल्य वाक्यो तारा अतःकरण रुपा भंडारमां भरी राख.

३३ मन अने वाणी वश कर.

३४ मान अने अपमाननी वात बाजा पासे करीश मां.

३५ निरंतर नम्रता राख.

३६ सर्व साथे संप राख. कारण के संप विना सुख मागे ते सुता शत्रुने जगाडे छे.

३७ सर्वनो यथायोग्य विनय कर. ३८ अति हास्य करीश मां.

३९ अभिमान तो लेश पण करीश मां.

४० बीजानी आघा पाछी करवानी टेव छोडी दे.

४१ गुरुनावचनने अंगीकार कर. ४२ उद्धत वस्त्रने धारण करीश मां.

४३ स्वच्छता अने सादाइ राख. ४४ स्वपरनुं हित थाय तेम कर.

४५ सुखमां अधिक सुखवाळाने जो.

४६ दुःखमां धारणा राख, अने दुःखी तरफ दृष्टि कर.

४७ शक्तिमां संतोष राख.

४८ कोइनी स्वप्नामां पण निंदा करीश मां. कारण के सर्व जीव कर्मने वश छे.

४९ गुणग्राही था. ने काळक्षेप करीश मां.

५० कार्य करवामां कायर थइश नहीं.

५१ आळस जेवो बीजो दुश्मन नथी.

५२ उद्यम जेवो बीजो बंधु नथी. ५३ सुख मात्र समजणमां छे.

५४ कृतघ्नी उपर पण बने तो उपकार करवो.

५५ स्वप्नामां पण देवगुरुने विसारवा नहीं.

इति श्री चैत्यवंदन स्तुति स्तवनादि भाग बीजो समाप्त.